अज्ञानान्धविनाशाय नभोमणितुलां वहन् ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ "विश्वविजय पंचाङ्गं." सदाऽस्तु विदुषां मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।

राजा चन्द्र

मंत्री शनि

अ.भा.ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष

82

नवीः प्राचीमर्मीमीखिलनिगमाधीरपि तथा । सम्मानीतास्सारह् गणितमनल्पं वहति यः ॥

बृहत्पृथ्वीयाक्षवृत्तीयं केतकीचित्रापक्षीयं सार्वदैशिकं धर्मशास्त्रसम्मतम्

श्रीविश्वविजय पञ्चांगम्

मतासेव्यः प्राचीविचिम्पणितचैरपि मतः । सुरम्यं पंचाङ्गं भुवि विजयते 'विश्वविजयः' ॥

महोअर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति ॥

श्रीसनातनधर्म-प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चांगम

श्री विक्रम संवत् २०६४ शकः संवत् १९२९ सन् २००७-२००८ भारतीय गणराज्य संवत् ५८-५९

आद्य सम्पादक - स्व० श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी-ज्योतिषाचार्य, सम्पादक - Er. श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी, सह-सम्पादक - रोहिताश्व त्रिवेदी

मूल्य रु. ५८/-

ज्योतिष्मती निकेतन सोलन
हिमाचल प्रदेश १७३२१२
वर्ष ६३

श्री:

श्रीविश्वविजय पंचांग को ब्रह्मा-विष्णु-शिव स्वरूप ब्रजमंडल के त्रिदेवों का स्नेहासीर्वाद
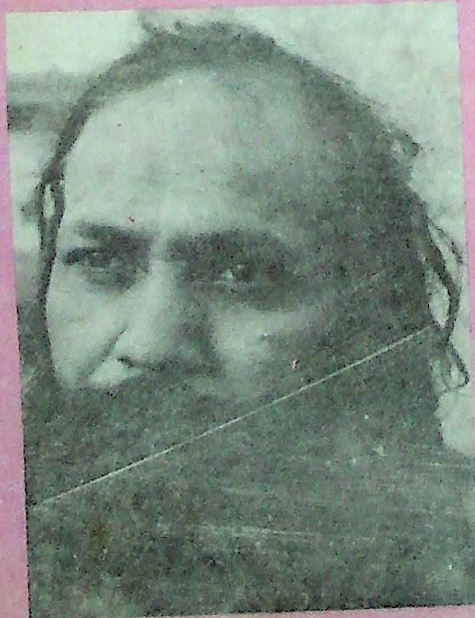
परमपूज्य अनन्त श्रीविभूषित ब्रह्मलीन श्री देवरहा बाबा

योगिराज तप:पूत श्री १०८ श्रीपादबाबा

योगिराज श्री १०८ स्वामी कार्ष्णि गुरुशरणानन्द जी महाराज

विश्व की तीन महान् दैवी विभूतियों का स्नेहाशीर्वाद एक साथ प्राप्त करने का सौभाग्य "श्रीविश्वविजयपंचांग" को ४५वें वर्ष में प्राप्त हुआ। यह पंचांग प्रेमियों के लिए परम हर्ष का विषय है।

पहले हैं- विश्व विख्यात तप:पूत आध्यात्मिक जगद् के अधिनायक: भीष्मपितामह ब्रह्मलीन योगिराज परम् सन्त अनन्त श्री विभूषित श्री देवराहा बाबा जो अनेक वर्षों से गंगा-यमुना तट पर घास फूस काष्ठ निर्मित ऊंचे मचान पर दिगम्बर रूप में निवास करते थे। कब वे मचान से उतर कर गंगा स्नान करने जाते और वापस लौटते थे यह कोई देख नहीं पाया। राष्ट्रपति पद तक के सभी छोटे-बड़े अधिकारी मंत्रिगण आपके श्रीचरणों के दर्शन को लालायित रहते हैं। गत गुरुपूर्णिमा दि. २१ जुलाई १९८८ को अपराह्न काल में वृन्दावनधाम यमुनापार पवित्र मचान पर आपके दर्शनार्थ पंचांग सम्पादक पहुंचा। जब "श्रीविश्वविजयपंचांग" और "ज्योतिष्मती" का नववर्षांक मचान पर आपकी सेवा में पहुँचा तो बाबा ने अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। त्रिवेदी जी के प्रार्थना करने पर कि "नेत्र-व्याधि के कारण ३ वर्ष बाद मैं अब दूर से श्रीचरणों के दर्शन ठीक नहीं कर पा रहा हूँ। तो स्नेहार्दभाव से तत्काल दिगम्बर रूप में खड़े होकर बोले- "ले कर ले, अच्छी तरह दर्शन, हम तुम्हारे कार्य से बड़े प्रसन्न हैं।" इतना कहकर अपने कर-कमलों से एक अमूल्य उपवस्त्र और पुष्फल-फल प्रसाद प्रदान कर पंचांग-कर्ता को स्नेहाशीर्वाद दिया।

दूसरे हैं- भारत के महान् सन्त, ब्रज अकादमी वृन्दावन के संस्थापक, अनन्त श्रीविभूषित योगिराज श्रीपादबाबा जिनके श्रीचरणों में रंक से राजा, राष्ट्रपति तक साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हैं।१८वर्ष पूर्व गुरु पूर्णिमा पर आपने भी श्रीविश्वविजय पंचांगकर्ता को अपने कर-कमलों से उपवस्त्र पहना कर पूजा का विशेष श्रीफल, कदली फल प्रसाद प्रदान कर उपकृत किया। आपका हस्तलिखित स्नेहाशीर्वाद विगत वर्ष के सं. २०४७ वि. के श्रीविश्वविजयपंचांग में पृष्ठ १५८ पर अंकित है।

तीसरे हैं- ब्रजमण्डल के प्रसिद्ध विद्वान सन्त श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम श्रीरमणरेती महावन के अध्यक्ष तपपूत कार्ष्णि स्वामी श्री गुरुशरणानन्द जी महाराज से आपका हस्तलिखित शुभाशीर्वाद सं. २०४७ वि. के पंचांग पृ. १५८ पर प्रकाशित है। आप न्यायदर्शनवेदान्तादि के आचार्य हैं, "सन्तहृदय नवनीत समाना" की प्रतिकृति परमदयालु परदु:खकातर महापुरुष के साथ स्वयं कठोर तपस्वी भी हैं। १९ वर्ष पूर्व आपने गोवर्धन-क्षेत्रस्थ श्रीपारसी गंगा का जीर्णोद्धार महीनों तक स्वयं सैकड़ों भक्तों के साथ खड़े रहकर करवाया। विगत वर्ष गिरिराज गोवर्धन की दण्डवती परिक्रमा का कष्टसाध्य पावनयज्ञ पूर्ण किया। ऐसे तपस्वी सन्तों का स्नेहाशीर्वाद "श्रीविश्वविजयपंचांग" के लिए गौरव की वस्तु है।

''श्रीविश्वविजयपंचांग''

भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों की दृष्टि में

आपका यह प्रिय पंचांग ज्योतिर्विज्ञानाचार्यों, धर्माचार्यों एवं वरिष्ठ विद्वानों का ही कृपा पात्र नहीं, अपितु रंक से लेकर राजा तक के हृदय में अपना स्थान बना चुका है। (भू०पू० राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जी, भू०पू० प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी, श्री लालबहादुर शास्त्री जी, श्रीमती इंदिरा गाँधी, श्री चौ० चरण सिंह एवं अनेक प्रांतों के राज्यपालों तथा मुख्यमंत्रियों के उद्‌गार यथा समय पंचांग व पत्रिका में प्रकाशित होते रहे हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू जी को पंचांग से विशेष प्रेम था और वे अपने पंडित कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। इसका प्रमाण ४८ वर्ष पूर्व सोलन में घटी एक घटना प्रत्यक्षदर्शियों को अब भी स्मरण है। १६ जुलाई १९५९ को श्री पंडित नेहरू जी शिमला से लौटते समय कुछ देर नागरिकों का अभिनन्दन स्वीकार करने के लिए सोलन में रुके थे। श्री त्रिवेदी जी ने पुष्पमाला के साथ संवत् २०१६ वि० का ''विश्वविजयपंचांग'' भेंट किया तो बोले- 'धन्यवाद, इस वर्ष अभी तक मैंने आपका पंचांग खरीदा नहीं था। इस पर त्रिवेदी जी ने पूछा- ''क्या आप भी पंचांग खरीदते हैं?'' तत्काल उत्तर मिला- ''क्या आप मुझे पंडित नहीं मानते।'' उस समय श्री नेहरू जी के साथ श्रीमती इन्दिरा गाँधी और तत्कालीन उपराज्यपाल राजा बजरंग बहादुर सिंह भी थे। ३७ वर्ष पूर्व श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अपने जन्म दिवस पर १९ नवम्बर १९६९ को प्रधानमंत्री निवास में श्री त्रिवेदी जी से संवत् २०२६ विक्रमी का ''श्रीविश्वविजयपंचांग'' अभिवादन पूर्वक सस्नेह ग्रहण किया- उस समय का एक स्मृतिचित्र यहाँ प्रस्तुत है।
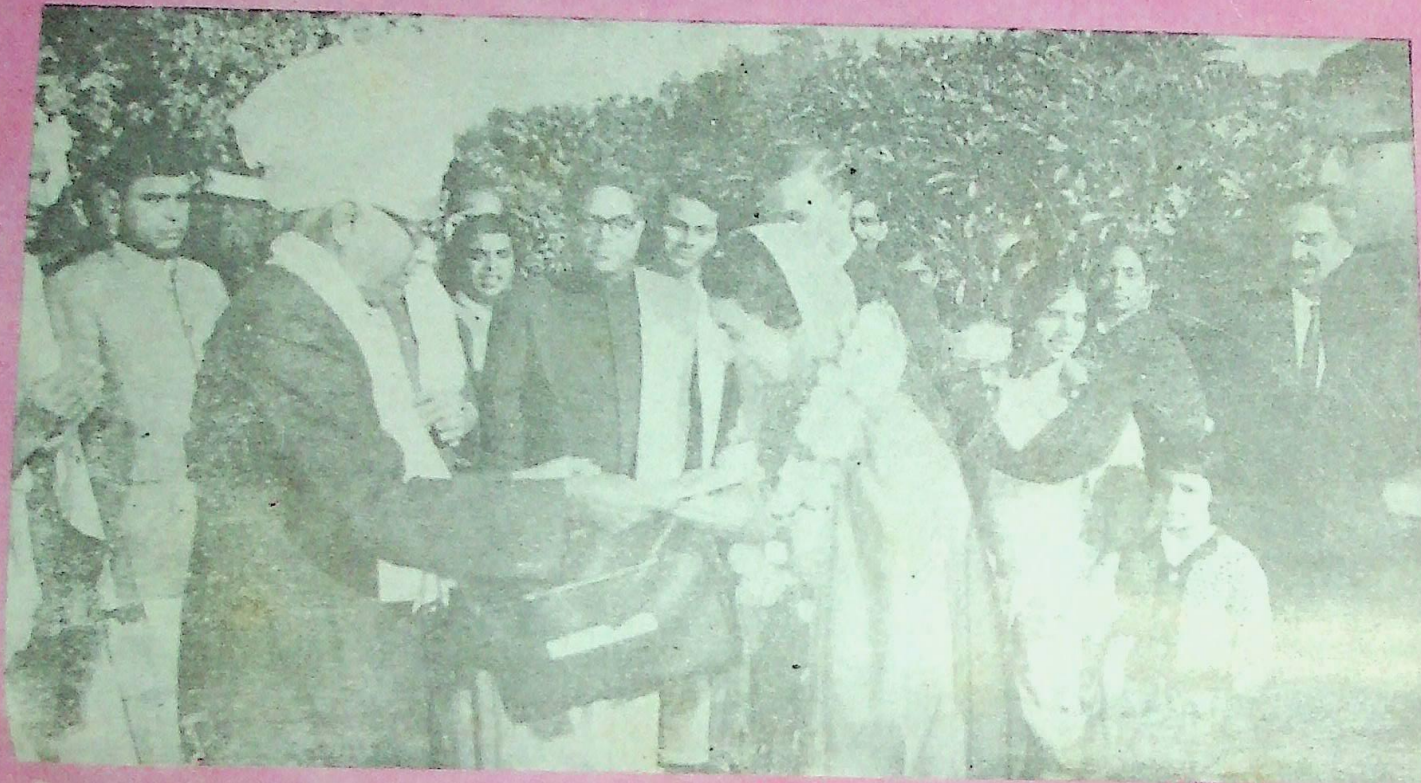
अज्ञानान्धविनाशाय नभोमणितुलां वहन्॥ ॥श्री गणेशाय नमः॥ "विश्वविजय पंचाङ्ग" सदाऽस्तु विदुषां मुदे

श्री महासरस्वत्यै नमः।

राजा चन्द्र

मंत्री शनि

अ.भा. ज्योतिष-परिषद् के मुख्य अध्यक्ष

महोऽर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति॥

श्रीसनातनधर्म-प्रतिनिधिसभया सम्मानितम्

श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

श्रीविश्वविजय-पञ्चांगम

श्री विक्रम संवत् २०६४ शकः संवत् १९२९ सन् २००७-२००८ भारतीय गणराज्य संवत् ५८-५९

आद्य सम्पादक- स्व. श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी- ज्योतिषाचार्य, सम्पादक- श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन, हि. प्र.
फोन/ फैक्स- ०१७९२-२२०५९६ e-mail : rohitashw@gmail.com
गणितकर्त्ता- पं० विनोद कुमार बिजल्वाण, एम. एस. सी., ९१, अद्वैतानन्द मार्ग, ऋषिकेश फोन- २४३५४०१

वर्ष ६३

मुद्रक एवं वितरक :- ...केशन्स
459, खारी बावली, दि... (.) 25721403
प्रमुख विक्रेता :- अग्रवाल बुक डिपो
460, खारी बावली, दिल्ली-110 006 ☎ 23943254

विशेष नोट : टाइटल पर हॉलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें। बगैर होलोग्राम के पंचांग नकली समझा जाएगा।

।। श्री ।।

प्रकाशकीय प्राक्कथन

जगत् जननी माँ भगवती की प्रेरणा से एवम् पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी के शुभाशीर्वाद से मैंने आपके समक्ष श्रीविश्वविजयपंचांग प्रस्तुत किया। आप सबने मुझ को भरपूर प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया जिसके कारण अगामी श्रीविश्वविजयपंचांग संवत् २०६४ वि. का आपके सामने प्रस्तुत करने में मुझे हार्दिक हर्ष हो रहा है। आगे भी आप सब लोग मुझे इसी प्रकार का सहयोग और सुझाव देते रहें जिससे पंचांग अपनी गरिमा को बनाये रखे।

इस पंचांग के प्रकाशन, मुद्रण और वितरण नववर्षारम्भ से चार मास पूर्व पहुँचाने के कार्य में श्री वीरेन्द्र प्रताप गर्ग एवं श्री संजय कुमार गर्ग ने अपना पूर्ण सहयोग दिया इनका मैं आभारी हूँ।

माँ की कृपा रही तो आगामी नव वर्ष संवत् २०६५ वि. का श्रीविश्वविजयपंचांग संवत् २०६४ वि. के नवरात्रों तक प्रकाशित हो सकेगा। आगे जैसी माँ की इच्छा होगी वही होगा।

गीता जयंती, मार्गशीर्ष शुक्ल ११ संवत् २०६३ — *मातृचरणचंचरीक*

दिनांक: १-१२-२००६ई. — *सुधाकर शर्मा त्रिवेदी*

विषय सूची

आरम्भिका

या विद्या शिवकेशवादि जननी या वै जगन्मोहिनी
या पञ्चप्रणवद्विरेफनलिनी या चित्कलामालिनी।
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्ततनुषुप्रोता जगत्साक्षिणी
सा पातात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी।।

ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष फलदायक है। इसमें सन्देह नहीं, किन्तु इस शास्त्र पर सूक्ष्म अध्ययन और अनुशीलन की आवश्यकता है। इस शास्त्र का सृष्टि के आदि काल में भारतीय महर्षियों ने ही आविष्कार किया। भारतीय लोगों की असावधानता और उपेक्षा वृत्ति से यह विज्ञान विदेशियों के हाथ लगा, उन्होंने इसको अपनाकर अद्भुत नाम एवं यश प्राप्त किया। अनेकों मुसलमान और अंग्रेजों ने ज्योतिष सम्बन्धी ग्रन्थ लिखे और आज का समस्त पश्चिमी संसार इस विद्या के प्रभाव से लोगों को आश्चर्यचकित कर रहा है। ग्रीनविच की संसार प्रसिद्ध वेधशाला को कौन नहीं जानता ? वहां की जनता एवं सरकार अब भी प्रतिवर्ष करोड़ों रु० व्यय कर इस शास्त्र के अनुसंधान में लगी हुई है। पर, इसी शास्त्र के उद्गम स्थान भारत की दशा बड़ी शोचनीय है। यहां इस विज्ञान को कोई किसी प्रकार की सहायता तो पहुंचाता नहीं, पर आक्षेप या कुठाराघात करने पर सब प्रस्तुत हो जाते हैं। इन सब कारणों से व्यथित होकर यथाशक्ति इस वैज्ञानिक शास्त्र के द्वारा भारतीय संस्कृति के समुत्थान की शुभकामना से ही हम गत ६३ वर्षों से "श्रीविश्वविजय-पंचांग" के माध्यम से जनता जनार्दन की सेवा कर रहे हैं।

केतकी चित्रापक्षीय पंचांगों की सब ओर से संपुष्टि

उत्तर-भारत में केतकी चित्रापक्षीय पंचांग का जो कार्य हमने ६२ वर्ष पूर्व प्रारंभ किया था उसके प्रचार में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही है। प्रायः सभी प्राचीन पंचांगकारों ने सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव, मकरन्द और ब्रह्मपक्षीय ग्रहों के स्थान में चित्रापक्षीय (ज्योतिर्गणित केतकी आदि से) शुद्ध दृक्तुल्य ग्रह ग्रहणोदयास्तादि लगाने प्रारम्भ कर दिये हैं। विद्वान् सहयोगियों ने अनुभव किया है कि इस समय जब सूर्य परम मंदफल और चन्द्रमा के संस्कार फलों में कई कलाओं का अन्तर प्रत्यक्ष सिद्ध है तब सूर्य चन्द्रमा से निष्पन्न तिथिमान में भी १०-१५ घटी तक का अन्तर स्वाभाविक है। केतकी गणित के आधार पर दिये हुए "श्रीविश्वविजय-पंचांग" के तिथ्यादि धर्मशास्त्रीय निर्णय व्रतोपवासादि के लिए उपयोगी है, इसमें अब किसी प्रकार की शंका नहीं है।

भारत-सरकार के 'राष्ट्रीय पंचांग' और 'कैलेण्डर' -- रिफार्म कमेटी की रिपोर्ट' में भी यही तिथि स्वीकार की गई और इसके आधार पर राष्ट्रीय पंचांगों और राजकीय कैलेण्डरों में पर्व त्यौहार एवं छुट्टियां लगाई जाती हैं। आज से ४४ वर्ष पूर्व विगत सं० २०१६ के चैत्र मास में कुम्भ महापर्व पर भगवती भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्रीसनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब के आमंत्रण पर उत्तर-भारतीय ज्योतिर्विदों का सम्मेलन हुआ था, उसमें सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि अगले वर्ष सं० २०२० वि० से उत्तर-भारत के सभी पंचांगकार अपने-अपने पंचांगों में तिथि नक्षत्र योग के घट्यादि का मान भी नवीन दृक्पक्ष (केतकी ज्योतिर्गणित वैजयन्ती आदि) से ही लगायेंगे। तदनुसार पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश के प्रसिद्धपंचांगों में विगत वर्ष सं० २०२० वि० से तिथ्यादि भी नवीन सूक्ष्म गणित से लगानी प्रारम्भ कर दी, यह उत्तर-भारत में पंचांग एकीकरण के लिए परम हर्ष का विषय है।

इससे कुछ वर्ष पहले वैष्णव-सम्प्रदाय के धर्माचार्य श्री १०८ गो० गोकुलनाथ जी महाराज, जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी योगेश्वरानन्दजी तीर्थ महाराज पुरीमठ, श्री १०८ जगद्गुरुशंकराचार्य सेकेश्वर करवीर मठ, जगद्गुरु श्री १०८ अनन्ताचार्य महाराज काञ्ची कामकोटि मठ आदि के शंकराचार्यचरणों ने भी सूक्ष्म तिथि से ही धर्मनिर्णय करने के आज्ञा पत्र निकाले हैं। वल्लभ-सम्प्रदाय की प्रधानपीठ श्रीनाथद्वारा के तिलकायत गोस्वामी श्री १०८ गोविन्दलालजी महाराज की आज्ञानुसार गत ४४ वर्षों से 'श्रीनाथपंचांग' का भी केतकी चित्रापक्ष से ही निर्माण हो रहा है और नवलगढ़ के 'सरस्वती पंचांग' में भी अब तिथ्यादि मान, सूक्ष्म केतकी गणित से ही छपने लगा है। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य और जैन-धर्म के आचार्यों के धर्म कृत्य भी सूक्ष्म गणित प्रत्यक्ष पंचांग दृग्गणितानुसार प्रकाशित होने लगे हैं।

कुछ सज्जन तिथिमान को अदृश्य या अप्रत्यक्ष कहकर उसे आधुनिक काल के लिए अप्रत्यक्ष स्थूल गणित मकरन्द ग्रहलाघव सूर्यसिद्धान्त ब्रह्मपक्षादि से बनाने का आग्रह करते हैं -- यह वर्तमान काल के लिए उपयुक्त नहीं। इस विषय में तैत्तिरीय संहिता, सिद्धान्त कामधेनु, विष्णुधर्मोत्तरपुराण, नारदीय-पुराण आदि प्राचीन आर्ष ग्रन्थों के अनेक प्रमाण गत वर्षों के पंचांग की आरम्भिका में हम प्रकाशित कर चुके हैं। स्थानाभाव के कारण यहाँ केवल दो आप्तवचन दे रहे हैं --

यस्मिन् पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यकम्।
दृष्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादि निर्णयम्।। (वशिष्ठः)
तेभ्यः स्याद् ग्रहणादि दृक्समयिं प्रोक्ता मया सा तिथिः।
ग्राह्या मंगल धर्मनिर्णयविधावेषा यतो दृक्समा।। (ति० चि०)

भारत सरकार के मौसम-विभाग और अखिल-भारतीय-ज्योतिषपरिषद् के संयुक्त तत्वावधान में दि० १९-२० नवम्बर ६८ को विज्ञानभवन, नई दिल्ली में विशाल पंचांग गोष्ठी का आयोजन किया गया -- उसमें समस्त भारत के नवीन प्राचीन पद्धति के शताधिक प्रसिद्ध विद्वान् पंचांगकार सम्मिलित हुए थे। दो दिन के विचार विमर्श के अनन्तर भारी बहुमत से दृक्पक्षीय (चित्रापक्षीय अयनांश) पंचांग गणना को ही शास्त्र सम्मत प्रमाणित किया गया।

गत १७ वर्षों से इस पंचांग ने दैनिक चन्द्र का उदय-अस्त भारतीय स्टैंडर्ड टाइम घण्टा-मिनटों में एवं साम्पातिक काल (दिल्ली, बम्बई, मद्रास और कलकत्ता) के दिये गये हैं। इस वर्ष के पंचांग में अन्य कई उपयोगी विषय बढ़ाये गये हैं।

विदुषामनुचर :--
सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

ज्योतिष्मती निकेतन
सोलन (हि० प्र०)

पंचांग देखने की विधि

१. इस पंचांग (श्रीविश्वविजय) का सभी गणित दिल्ली के अक्षांश २८।३८ रेखांश ७७।१७ पर किया गया है। तिथि नक्षत्र के घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से समाप्ति काल के हैं। तिथि नक्षत्र योग करण के घण्टा मिनट भा.स्टे.टा. से समाप्ति काल के है, जो भारत में सर्वत्र उसी टाईम से होंगे।

२. सूर्योदय सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली के है। सूर्योदय सूर्यास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट घटावें और सूर्यास्त में दो मिनट बढ़ावें।

३. इस पंचांग में करण सूर्योदय कालीन दिये गये है। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

४. सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा पंचक, ग्रहों के उदय अस्त वक्रमार्ग आदि भारतीय स्टें.टा. में है जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम मे होगें। यह इस पंचांग की विशेषता है।

५. महीनों में अष्टमी पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः घं.५ मि. ३० के है। नीचे उस दिन की गति और वक्री मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्रचरण दिये हैं। ग्रह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

६. तिथ्यादि तथा चन्द्रमा भद्रा ग्रहाचार आदि में २४-२५-२६ आदि अंक लिखें है उनका अर्थ यह है कि २४ को रात्रि के बारह बजे, २५ को रात्रि के १ बजे, २६ को रात्रि के २ बजे समझें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी २४ घटाकर अर्द्ध रात्रि बाद के अगली तारीख में समझेंगे।

७. इस पंचांग का गणित आचार्यों ऋषियों द्वारा ग्राह्य और भारत सरकार द्वारा स्वीकृत सूक्ष्म दृश्य पद्धति से किया है। जहां सायन गणना की गई है वहां अयनांश चित्रा पक्षीय शुद्ध मानकर ग्रहण किये गये है। यहां निरयन पद्धति को सर्वत्र मान्य की है।

८. दैनिक लग्न सारिणी में समय का उल्लेख स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार दिल्ली का है। और लग्न का समाप्ति काल लिखा गया है।

९. लस्टर में ABC... आदि चिन्ह दिये है, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह जहाँ लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाईन में लगाकर शेष मैटर लिखा है- नीचे लिखी संकेतावली को पंचांग देखने में काम लेने से संपूर्ण विषय समझ में आ जावेंगे -

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग) अग्नि (पंचक), अक्टूबर, अगस्त, अप्रैल (मास)
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान यो., आषा. आश्विन
उ.षा. = उत्तराषाढ़ (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपद (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि) कला
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ.फा. = उत्तर फाल्गुनी (नक्षत्र)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र) भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई मास
का. = कार्तिक (मास)
क्रां. सा. = क्रांति साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र) कृष्ण पक्ष
कु. = कुंभ (राशि)
गु. = गुरु (वार) गुरु ग्रह
गु. दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घण्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार) चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
जू. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि.ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि), धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धुलिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
निं. = निंबार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग) पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारंभ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वाफाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपद (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न) मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहिणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल. = लग्न
व. = वज्र, वरियान, यो. वणिज क. वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग) वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशाखा (नक्षत्र), विष्कंभ (योग), विकला
वि.मु. = विवाह मुहूर्त्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा नक्षत्र
शि. = शिव योग
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास-तारीख)

अवकाश दिन (छुट्टियाँ तातीलें)

विक्रम संवत् २०६४ सन् २००७-२००८ ई० में
भारत सरकार द्वारा मान्य अवकाश दिन
(२० मार्च २००७ ई० से ६ अप्रैल २००८ ई० तक)

अवकाश	तिथि
१. श्री राम नवमी	२६ मार्च सन् २००७ ई. सोमवार
२. महावीर जयंती	३१ मार्च सन् २००७ ई. शनिवार
३. ईद-ए-मिलाद (वै.)*	१ अप्रेल सन् २००७ ई. रविवार
४. गुडफ्राइडे	६ अप्रेल सन् २००७ ई. शुक्रवार
५. अम्बेडकर जयंती, बैशाखी (पंजाब)	१४ अप्रेल सन् २००७ ई. शनिवार
६. मई दिवस	१ मई सन् २००७ ई. मंगलवार
७. बुद्ध पूर्णिमा	२ मई सन् २००७ ई. बुधवार
८. गंगा दशहरा	२५ जून सन् २००७ ई. सोमवार
९. जन्म श्री हजरत अली (वै.)*	११ जुलाई सन् २००७ ई. शनिवार
१०. गुरु पूर्णिमा	२९ जुलाई सन् २००७ ई. रविवार
११. स्वतंत्रता दिवस, श्री कृष्ण जन्माष्टमी	१५ अगस्त सन् २००७ ई. बुधवार
१२. रक्षाबंधन	२८ अगस्त सन् २००७ ई. मंगलवार
१३. गणेश चतुर्थी व्रत	१५ सितंबर सन् २००७ ई. शनिवार
१४. अनन्त चतुर्दशी	२५ सितंबर सन् २००७ ई. मंगलवार
१५. गांधी जयंती	२ अक्टूबर सन् २००७ ई. मंगलवार
१६. श्री अग्रसेन जं.	१२ अक्टूबर सन् २००७ ई. शुक्रवार
१७. ईदुल-फितर *	१३ अक्टूबर सन् २००७ ई. शनिवार
१८. विजयादशमी	२१ अक्टूबर सन् २००७ ई. रविवार
१९. श्री बाल्मीकी जयंती	२६ अक्टूबर सन् २००७ ई. शुक्रवार
२०. दीपावली, श्री महावीर निर्वाण	९ नवंबर सन् २००७ ई. शुक्रवार
२१. विश्वकर्मा पूजा दिवस	१० नवंबर सन् २००७ ई. शनिवार
२२. भैया दूज	११ नवंबर सन् २००७ ई. रविवार
२३. श्री गुरुनानक जयंती	२४ नवंबर सन् २००७ ई. शनिवार
२४. गुरुतेग बहादुर बलिदान दिवस	२४ नवंबर सन् २००७ ई. शनिवार
२५. क्रिसमस डे	२५ दिसंबर सन् २००७ ई. मंगलवार
२६. अंग्रेजी नव वर्ष प्रारम्भ (वै.)	१ जनवरी सन् २००८ ई. मंगलवार
२७. श्रीगुरुगोविन्दसिंह जी जन्म	५ जनवरी सन् २००८ ई. शनिवार
२८. लोहड़ी (पंजाब) (वै.)	१३ जनवरी सन् २००८ ई. रविवार
२९. मकर सक्रांति (वै.)	१४ जनवरी सन् २००८ ई. सोमवार
३०. गणतंत्र दिवस	२६ जनवरी सन् २००८ ई. शनिवार
३१. बसंत पंचमी (वै.)	११ फरवरी सन् २००८ ई. सोमवार
३२. श्री महाशिवरात्री	६ मार्च सन् २००८ ई. गुरुवार
३३. होली	२१ मार्च सन् २००८ ई. शुक्रवार
३४. धुलैंडी	२२ मार्च सन् २००८ ई. शनिवार

नोटः (क) * मुस्लिम त्योहार की छुट्टियों में कभी कहीं स्थानीय चन्द्रदर्शन के अनुसार जिलाधीश फिर से निर्धारित कर एक दिन का अन्तर डाल सकते हैं।

(ख) उपर्युक्त छुट्टियों को सरकारी गजट से मिला लेना आवश्यक है। किसी भूल या फेरबदल का दायित्व सम्पादक अथवा प्रकाशक पर नहीं है।

(ग) (वै.) शब्द जहाँ लिखा है उन्हें वैकल्पिक छुट्टियां समझें।

भारतीय अन्य विशेष पर्व त्योहार आदि

पर्व	तिथि	पर्व	तिथि
१. नवरात्र, नववर्षारम्भ	१९ मार्च, सोमवार	२३. हरितालिका तीज	१४ सितम्बर, शुक्रवार
२. गणगौरी पूजन	२१ मार्च, बुधवार	२४. ऋषि पंचमी	१६ अगस्त, रविवार
३. नवरात्र समाप्त	२७ मार्च, मंगलवार	२५. जलझूलनी मेला	२३ सितम्बर, रविवार
४. वैशाख स्नानारंभ	२ अप्रैल, सोमवार	२६. वामन जयंती	२३ सितम्बर, रविवार
५. श्री वल्लभाचार्य ज.	१४ अप्रैल, शनिवार	२७. श्राद्धारंभ	२६ सितम्बर, बुधवार
६. श्री परशुराम जयंती	१९ अप्रैल, गुरुवार	२८. शारदीय नवरात्र प्रा.	१२ अक्टूबर, शुक्रवार
७. श्री नृसिंह चौदस	३० अप्रैल, सोमवार	२९. श्री अग्रसेन जं.	१२ सितम्बर, शुक्रवार
८. वैशाख स्नान समाप्त	२ मई, बुधवार	३०. करवा चौथ	२९ अक्टूबर, सोमवार
९. टैगोर ज.	९ मई, बुधवार	३१. अहोई अष्टमी	१ नवंबर, गुरुवार
१०. वट् सावित्री व्रत	२६ मई* शुक्रवार	३२. गोवत्स द्वादशी	६ नवंबर, मंगलवार
११. गंगा दशहरा	२५ जून, सोमवार	३३. गोपाष्टमी	१८ नवंबर, रविवार
१२. निर्जला एकादशी	२६ जून, मंगलवार	३४. प्रबोधिनी एकादशी व्रत	२१ नवंबर, बुधवार
१३. कबीर जयंती	३० जून, शनिवार	३५. कार्तिक स्नान मेला	२४ नवंबर, शनिवार
१४. श्री गुरु हरगोविंद सिंह ज.	१ जुलाई, रविवार	३६. मोक्षदा एकादशी व्रत	२० दिसंबर, गुरुवार
१५. श्री जगदीश रथयात्रा	१६ जुलाई, सोमवार	३७. अन्नपूर्णा जयंती	२३ दिसंबर, रविवार
१६. देवशयनी ११ व्रत	२६ जुलाई, गुरुवार	३८. शाकम्भरी जयंती	२२ जनवरी, मंगलवार
१७. गुरु पूर्णिमा	२९ जुलाई, रविवार	३९. मकर संक्रांति	१४ जनवरी, सोमवार
१८. मधुश्रवा तीज	१५ अगस्त, बुधवार	४०. लाला लाजपत राय जं.	२८ जनवरी, सोमवार
१९. नागपंचमी	१८ अगस्त, शनिवार	४१. मेला जैसलमेर ३ दिन का	१९ फरवरी, मंगलवार
२०. कज्जली तृतीया	३१ अगस्त, शुक्रवार	४२. मेला खाटू श्याम जी (२ दिन का)	१७ से १८ मार्च सोमवार-मंगलवार
२१. श्री गणेश ४ व्रत	३१ अगस्त, शुक्रवार		
२२. गोगा नवमी	५ सितम्बर, बुधवार		

पंचांग में किसी भी प्रकार की लेखकीय एवं संपादकीय त्रुटि की जिम्मेदारी मुद्रक, वितरक एवं प्रमुख विक्रेता की नहीं होगी।

श्रीविश्वविजय पंचांग-निर्माता को राज्य सरकार एवं सार्वजनिक संस्थाओं से अनेक गौरवपूर्ण उच्चस्तरीय सम्मानोपाधियां

"श्रीविश्वविजय पंचांग" और "ज्योतिष्मती" के प्रधान सम्पादक संचालक पूज्य पिताश्री पं. श्रीहरदेव शर्मा त्रिवेदीजी को अर्द्धशताब्दी से अधिक उनकी अनवरत साहित्य-साधना से संतुष्ट होकर राजस्थान सरकार ने विगत ४ अगस्त, १९८२ को संस्कृत-दिवस समारोह पर जयपुर में तत्कालीन महामहिम राज्यपाल श्री ओ.पी. मेहरा ने अभिवादन कर आपको पुरस्कार प्रशस्ति-पत्र पुष्पमाला के साथ शाल भेंट कर सम्मानित किया। तदनन्तर गत २४ मार्च १९८५ को महाराणा-मेवाड़ फाउण्डेशन उदयपुर ने राजमहल में आपको ५००१/- रुपये, उत्तरीय (शाल) और रजत मण्डित प्रशस्ति पत्र प्रदान कर हारीत ऋषि पुरस्कार से सम्मानित किया। इससे पूर्व भी पिताश्री को उनकी लम्बी निःस्वार्थ साधना एवं विद्वता से प्रभावित होकर भारत-धर्म-महामण्डल, काशी (वाराणसी) सनातन धर्म-दिग्विजयमण्डल, अखिल भारतीय संस्कृत-प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय निम्बार्काचार्य पीठ निम्बार्क तीर्थ (सलेमाबाद) आदि अनेक धार्मिक पीठों से पंडितभूषण, ज्योतिषमार्तण्ड, ज्योतिर्विज्ञानाचार्य, दैवज्ञ-शिरोमणि, समाजशिरोमणि आदि अनेक मानद उपाधियों एवं अभिनन्दन-पत्र प्राप्त हो चुके हैं। गत कुछ वर्षों से आपने नागरिक अभिनन्दन एवं उपाधि ग्रहण करना तथा सभा सम्मेलन में उपस्थित होना बन्द कर दिया है। फिर भी जो सार्वजनिक संस्थाएं आपके दिव्य गुणों से परिचित हैं वे बिना आपकी स्वीकृति के भी अभिनन्दन करते रहते हैं। गत दिसम्बर से अप्रेल ८७ तक आप जयपुर (मुख्यमंत्री निवास में) अस्वस्थ थे। उस समय पश्चिम बंगाल की विश्व उन्नयन संसद ने आपको "डॉ. ऑफ एस्ट्रोलॉजी" के सर्वोच्च मानद उपाधि से सम्मानित किया। इसकी सूचना हिन्दी अंग्रेजी की कई पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी है। गत १४ अगस्त १९८७ को इंडियन कौंसिल ऑफ एस्ट्रोलॉजीकल साइंसेज मद्रास की दिल्ली शाखा ने भारतीय विद्या भवन नई दिल्ली में केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन सिंह जी द्वारा एक बहुमूल्य शाल, एक प्लेक और सुन्दर थैली में श्री फल पुरस्कार भेंट कर के सम्मानित किया।

दिनांक १ दिसम्बर, १९९० ई. को "अखिल भारतीय ज्योतिष स्वाध्याय संस्था, दिल्ली" में आयोजित एक विशाल भव्य समारोह में श्रीविश्वविजय पंचांग कर्त्ता (पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदीजी) को उनकी ज्योतिष एवं भारतीय संस्कृति की पत्र-पत्रिकाओं द्वारा की जाने वाली अद्भुत सेवा से प्रसन्न होकर भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री ज्ञानीजैल सिंह जी ने 'ज्योतिष सम्राट' की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित किया।

दि. २८ फरवरी, १९९२ ई. को कुरुक्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय ब्राह्मण सम्मेलन के मंच से जगद्गुरु श्री रामानन्दाचार्य स्वामी रामनरेशाचार्य जी महाराज ने "ब्रह्मर्षि" के सर्वोच्च अलंकरण से सम्मानित किया।

— पं. सुधाकर शर्मा त्रिवेदी

'श्रीविश्वविजय पंचांग' के प्रशंसक महापुरुष

'श्रीविश्वविजय पंचांग' पर भारत के प्रायः सभी गणमान्य विद्वानों, नेताओं, उच्चराज्याधिकारियों, धर्माचार्यों और पत्र-पत्रिकाओं ने अपना अभिमत व्यक्त करके इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उन अनेक सम्मान्य महापुरुषों में से कुछ विशिष्ट महानुभावों के शुभ नाम मात्र यहां प्रकाशित कर रहे हैं—

महामहिम भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. डॉ. सम्पूर्णानन्द जी। उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय भूतपूर्व रेलमंत्री वयोवृद्ध राष्ट्र-नेता स्व. श्री कमलापति त्रिपाठीजी, भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री चौधरी चरण सिंह जी। रा. स्व. सं. के भूतपूर्व सरसंघचालक स्व. श्री मा.सा. गोलवलकरजी। भूतपूर्व अजमेर मेरवाड़ राज्य के मुख्यमंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व वित्त एवं शिक्षामंत्री स्व. श्री हरिभाऊजी उपाध्याय। भारत सरकार के भूतपूर्व राज्यमंत्री और संसद के सचेतक मध्य प्रदेश के भूतपूर्व राज्यपाल स्व. श्री सत्यनारायण सिंह जी। लोक सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. श्री अनन्तशयनम् आयंगर। राजस्थान के दिवंगत भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री जयनारायण जी व्यास एवं राजस्थान के भूतपूर्व यशस्वी मुख्यमंत्री श्री हरिदेवजी जोशी, राजस्थान के पूर्व शिक्षा स्वास्थ्य वाणिज्य मंत्री एवं भूतपूर्व उद्योग पर्यटन विद्युत आदि के वरिष्ठ मंत्री श्री हीरालाल जी देवपुरा, उदासीन सम्प्रदाया आचार्य विश्व भर में वेद मंदिरों के प्रतिष्ठापक ११४ वर्षीय वयोवृद्ध विद्वान् सर्वतंत्र स्वतंत्र महामंडलेश्वर श्री १०८ स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज, अनन्तश्री विभूषित जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर "श्रीजी" श्री राधा सर्वेश्वर शरण देवाचार्यजी महाराज, वृन्दावन के परम तपस्वी संत वृज अकादमी के संस्थापक योगीराज परमपूज्य श्री १०८ श्रीपाद बाबा महाराज, बृजधाम गोकुल महावन रमणरेती श्री कार्ष्णिआश्रम के महान् विद्वान् तपस्वी संत महामण्डलेश्वर श्रद्धेय श्री १०८ स्वामी गुरु शरणानन्दजी महाराज, ब्रह्मलीन द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य अनन्त श्री विभूषित अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ महाराज, परमहंस परिब्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी स्व. अखंडानन्दजी सरस्वती महाराज, ब्रह्मलीन ज्योतिपीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री १०८ स्वामी कृष्णबोधाश्रमजी महाराज, श्री पीताम्बरापीठ दतिया के महान् संत योगीराज राष्ट्रकुलगुरु अनन्त श्री विभूषित परमशक्त मणिपुर वासी श्री स्वामीजी महाराज, श्री भुवनेश्वरी पीठाधीश गोंडल के मणिद्वीप वासी श्री १०८ आचार्य श्री चरणतीर्थ जी महाराज, स्व. महामहोपाध्याय पं. श्री गिरिधर शर्माजी चतुर्वेदी, कविकुलगुरु महामहोपाध्याय स्व. श्री पं. नारायण शास्त्री खिस्ते वाराणसी, स्व. श्री पं. गणपतिदेवजी शास्त्री पंचांगकर्त्ता काशी, स्व. त्यागमूर्ति १०८ गो. गणेशदत्तजी महाराज, रामभक्त स्व. श्री पं. कपीन्द्र जी महाराज, स्व. पद्मभूषण डॉ. सूर्यनारायणजी व्यास ज्योतिषाचार्य, स्व. श्री हनुमान प्रसादजी पोद्दार आद्य सम्पादक 'कल्याण' स्व. पं. सीतारामजी झा ज्योतिषाचार्य वाराणसी आदि।

ग्रहण विवरण विक्रम संवत् २०६४

संवत् २०६४ विक्रमी में भूमण्डल पर कुल चार ग्रहण होंगे, जिनमें दो सूर्यग्रहण होंगे तथा दो चन्द्र ग्रहण होंगे। दोनों सूर्यग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे।

१. खण्डग्रास सूर्य ग्रहण :- यह सूर्य ग्रहण भाद्रपद कृ. ३० मंगलवार दि. ११ सितम्बर २००७ ई. को होगा तथा भारत में कहीं पर भी दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण उत्तर पूर्वी अण्टार्कटिका, दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप, दक्षिण पश्चिमी अन्धमहासागर तथा दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के साथ लगते पश्चिमी प्रशान्त महासागर में दिखाई देगा। यह खण्डग्रास सूर्य ग्रहण उत्तरी भाग के अतिरिक्त शेष, ब्राजील, दक्षिणी पेरू, बोलीविया, प्राग्वे, उरुग्वे, अर्जेन्टीना, चिली, पाकलैण्ड द्वीप में दृश्य होगा।

भारतीय समयानुसार इस खण्डग्रास सूर्य ग्रहण का आरम्भ १५ घं. ५५ मि., अधिकतम ग्रास १८ घं. १ मि. तथा समाप्ति २० घं. ६ मि. पर होगी। भारत में दृश्य नहीं होने के कारण इसका धार्मिक महात्म्य नहीं है। इस ग्रहण के भूमण्डलीय मानचित्र के लिए देखें परिलेख संख्या- १।

२. ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण :- यह चन्द्र ग्रहण श्रावण पूर्णिमा, मंगलवार दि. २८ अगस्त २००७ ई. को होगा। यह खग्रास चन्द्र ग्रहण भारत में अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, आसाम, मेघालय, अधिकांश पूर्वी बांगला देश में कुछ मिनटों के लिए चन्द्रग्रस्तोदय के पश्चात दिखाई देगा। शेष भारत में कहीं पर भी यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा। परिलेख संख्या- २ में क ख रेखा के दाहिनी ओर के पूर्वी भाग में यह ग्रहण दृश्य होगा। क-ख रेखा के बायीं ओर के पश्चिमी भू-भाग (अधिकांश भारत) में ग्रहण नहीं दिखेगा।

अधिकांश भारत में जहाँ ग्रहण दृश्य नहीं है, इसका धार्मिक महत्व नहीं है।

ग्रहण स्पर्श	**१४ घं.**	**२१ मि.**	**सम्मीलन**	**१५ घ.**	**२२ मि.**
ग्रहण मध्य	**१६ घं.**	**७ मि.**	**उन्मीलन**	**१६ घं.**	**५३ मि.**
ग्रहण मोक्ष	**१७ घं.**	**५४ मि.**	**पर्वकाल**	**३ घं.**	**३३ मि.**

ग्रहण का राशिफल :- शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भ राशि में होने से, इस राशि वाले व्यक्तियों को यह चन्द्र ग्रहण नहीं देखना चाहिए।

इस खग्रास चन्द्र ग्रहण का सूतक प्रात: ८ घं. ३७ मि. से आरम्भ होगा। ग्रहण के सूतक काल में समर्थजनों को भोजनादि का निषेध है, बालक, वृद्ध रोगियों के लिये यह नियम नहीं है।

भारत के कुछ प्रमुख नगरों में चन्द्रग्रस्तोदय तथा पर्वकाल की सारणी (२८ अगस्त २००७ ई.)

क्रम	नगर	चन्द्रग्रस्तोदय		पर्वकाल	क्रम	नगर	चन्द्रग्रस्तोदय		पर्वकाल
		घं.	मि.	मि.			घं.	मि.	मि.
१.	पोर्ट ब्लेयर	१७	३०	२४	१७.	जोरहाट	१७	३६	१८
	(मेघालय में)				१८.	शिवसागर	१७	३५	१९
२.	नोंगस्तोइन	१७	४७	०७	१९.	डिब्रूगढ़	१७	३४	२०
३.	चेरापूंजी	१७	४५	०९	२०.	डिगबोई	१७	३१	२३
४.	शिलांग	१७	४४	१०	२१.	सिल्चर	१७	४१	१३
	(त्रिपुरा में)					(अरुणाचल में)			
५.	अगरतल्ला	१७	४६	०८	२२.	इटानगर	१७	३७	१७
	(मिजोरम में)				२३.	तवांग	१७	४७	०७
६.	आइजोल	१७	४०	१४	२४.	बोमडिला	१७	४४	१०
	(मणिपुर में)				२५.	तेजु	१७	२९	२५
७.	इम्फाल	१७	३५	१९	२६.	ब्रुइनी	१७	३१	२३
८.	चूड़ाचान्दपुर	१७	३६	१८		(भूटान में)			
९.	उंखरूल	१७	३३	२१	२७.	देवनगिरी	१७	५०	०४
	(नागालैण्ड में)				२८.	थिम्पू	१७	५३	०१
१०.	कोहिमा	१७	३४	२०	२९.	पुनाखा	१७	५३	०१
११.	त्वेनसांग	१७	३२	२२		(बांग्लादेश में)			
	(आसाम में)				३०.	ढाका	१७	४८	०६
१२.	दिसपुर	१७	४७	०७	३१.	मुशीगंज	१७	४८	०६
१३.	गुवाहाटी	१७	४५	०९	३२.	चिटगांव	१७	४२	१२
१४.	कोकराझार	१७	५१	०३	३३.	रंगामाटी	१७	४१	१३
१५.	बारपेटा	१७	४९	०५	३४.	गैबन्दा	१७	५२	०२
१६.	दीमापुर	१७	३७	१७					

विभिन्न राशि वाले व्यक्तियों के लिए इस ग्रहण का फल निम्नानुसार है:-

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	लाभ	शुभ	अशुभ	कष्ट	स्त्री/पति कष्ट	शुभ	चिन्ता	कष्ट	लाभ	हानि	भय	हानि

परिलेख १ : खण्डग्रास सूर्यग्रहण, दि. ११ सितम्बर, 2007 ई०
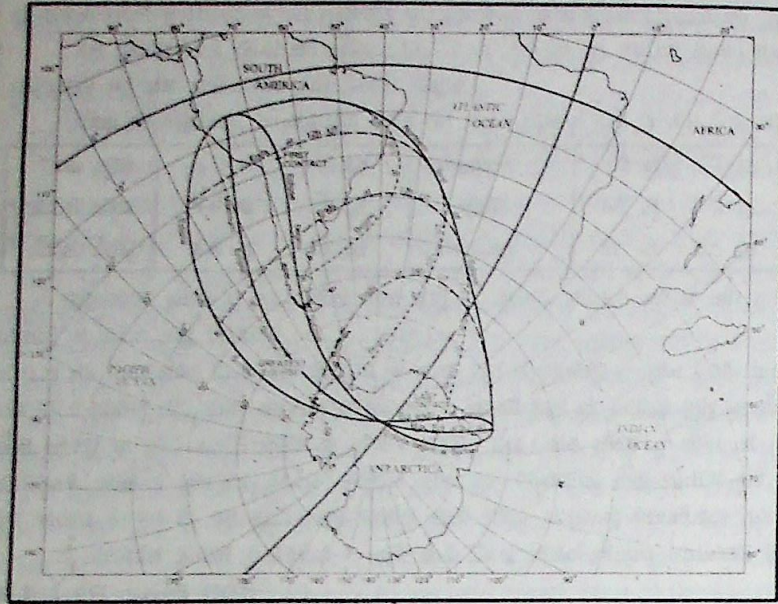
३. कङ्कण सूर्य ग्रहण :- यह सूर्य ग्रहण माघ अमावस्या, गुरुवार दि. ७ फरवरी २००८ ई. को होगा एवं भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण दक्षिण पूर्वी आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, दक्षिणी प्रशान्त महासागर तथा अण्टार्कटिका में दिखाई देगा। इस ग्रहण की कङ्कणाकृति अण्टार्कटिका तथा अण्टार्कटिका के समीपस्थ दक्षिणी प्रशान्त महासागर में दृष्य होगा। भारत में दिखाई नहीं देने के कारण इस ग्रहण का धार्मिक महत्व नहीं है। भारतीय समयानुसार ग्रहण आरम्भ ८ घं. ५० मि. तथा ग्रहण समाप्ति १० घं. ०१ मि. पर होगा। इस ग्रहण के भूमण्डलीय मानचित्र के लिए देखें परिलेख- ३

४. ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण :- यह चन्द्र ग्रहण माघ पूर्णिमा, गुरुवार दि. २१ फरवरी २००८ ई. को होगा। भारत में यह ग्रहण चन्द्रास्त के आसन्न काल में पश्चिमोत्तरी जम्मू, काश्मीर, पश्चिमी राजस्थान तथा पश्चिमी गुजरात में कुछ समय के लिए खण्डग्रास रूप में दिखाई देगा। शेष भारत में यह ग्रहण दृश्य नहीं होगा अत: वहाँ पर इसका धार्मिक महत्व नहीं है। इस ग्रहण का सूतक २० फरवरी बुधवार को सूर्यास्त के समय आरम्भ हो जायेगा। समर्थजनों को ग्रहण के सूतक काल में भोजन आदि का निषेध है। मघा नक्षत्र

परिलेख २ : ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण, दि. २८ अगस्त २००७ ई.
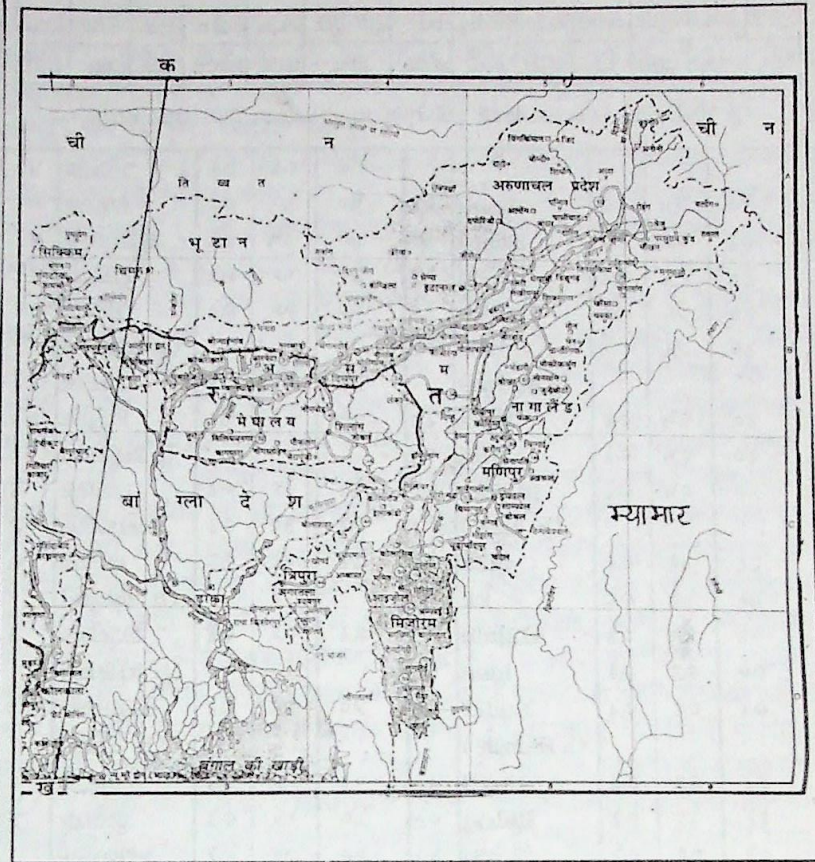
एवं सिंह राशि में ग्रहण होने से इस राशि नक्षत्र वालों को यह ग्रहण नहीं देखना चाहिए अन्य राशि वालों के लिए ग्रहण का फल इस प्रकार है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	चिन्ता	कष्ट	लाभ	हानि	पीड़ा भय/	हानि	लाभ	शुभ	अशुभ	कष्ट	पति/स्त्री कष्ट	शुभ

परिलेख ३ : कङ्कण सूर्य ग्रहण, दि. ७ फरवरी २००८ ई.

परिलेख ४ :
ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण
गुरुवार दि. २१ फरवरी २००८ ई.
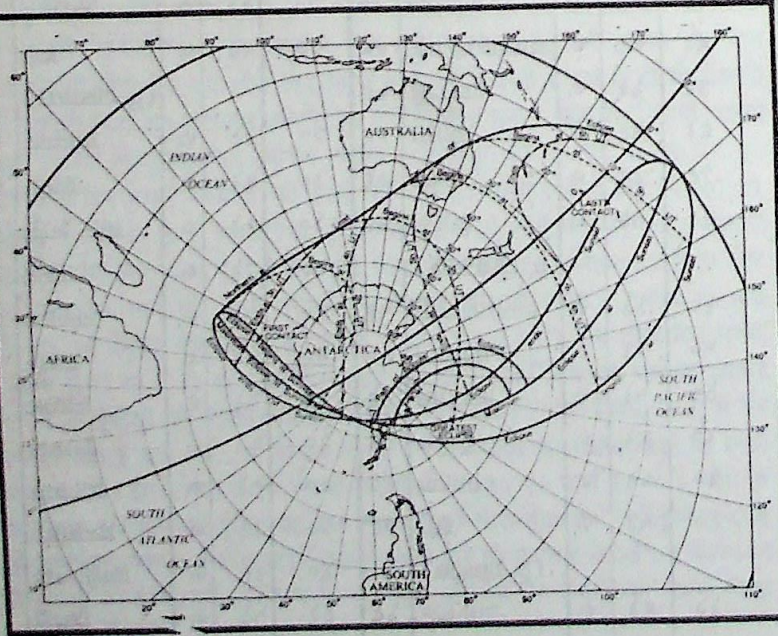
इस खग्रास चन्द्र ग्रहण के स्पर्श मोक्षादि काल भारतीय स्टै. टाईम में इस प्रकार है:-

ग्रहण स्पर्श	७ घं.	१३ मि.	सम्मीलन	८ घं.	३० मि.
ग्रहण मध्य	८ घं.	५६ मि.	उन्मीलन	९ घं.	२२ मि.
ग्रहण मोक्ष	१० घं.	३९ मि.	पर्वकाल	३ घं.	२६ मि.

भारत में जिन स्थानों पर चंद्रास्त ७ घं. १३ मि. के बाद होगा वहीं यह ग्रहण दृष्टिगोचर होगा।

परिलेख सं. ४ में ग घ रेखा के बायीं ओर के पश्चिमी भाग में यह चन्द्र ग्रहण ग्रस्तास्त रूप में दिखाई देगा, शेष भारत में ग घ रेखा के दाहिनी ओर के पूर्वी भाग में ग्रहण दृष्टिगोचर नहीं होगा।
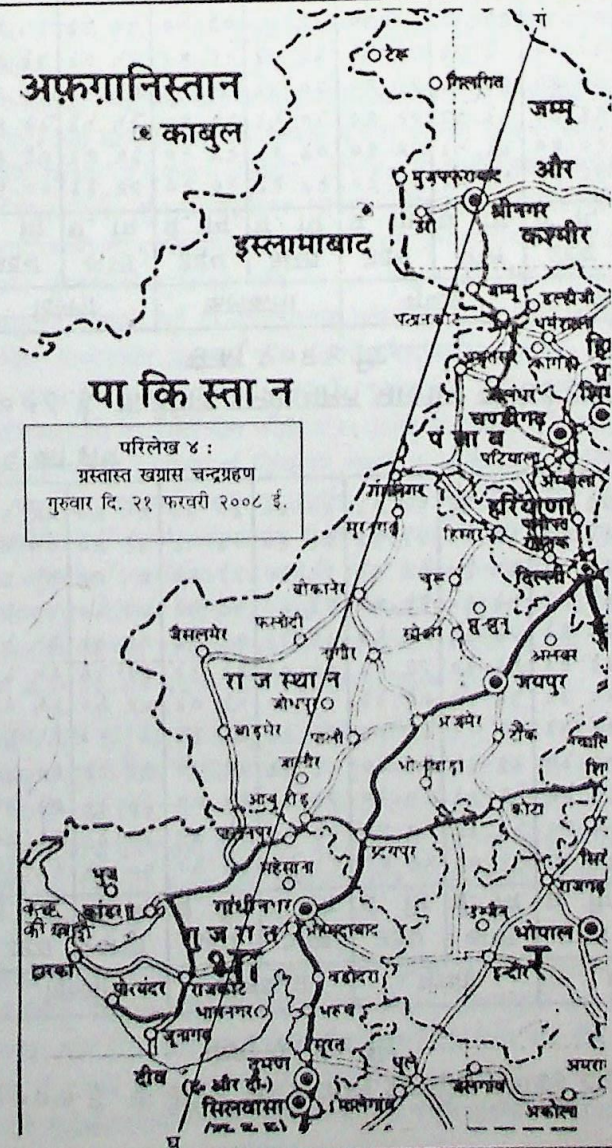
प्रस्तास्त चन्द्र ग्रहण (२१ फरवरी २००८ ई.)
भारत के कुछ प्रमुख नगरों में चन्द्रास्त तथा पर्वकाल का विवरण-

क्रम	नगर	चन्द्रास्त		पर्वकाल	क्रम	नगर	चन्द्रास्त		पर्वकाल
		घं.	मि.	मि.			घं.	मि.	मि.
	(गुजरात में)				२२.	म्याज्लर	७	२३	१०
१.	भुज	७	२२	०९	२३.	रामगढ़ (जैसलमेर)	७	२३	१०
२.	मुन्द्रा	७	२२	०९	२४.	तनोट	७	२५	१२
३.	मान्डवी	७	२४	११	२५.	घोटारू	७	२५	१२
४.	लखपत	७	२७	१४	२६.	सन्चोर (जालौर)	७	१५	०२
५.	कांडला	७	२१	०८	२७.	बाड़मेर	७	१८	०५
६.	पोरबन्दर	७	२२	०९	२८.	पोखरण	७	१७	०४
७.	द्वारका	७	२५	१२	२९.	अनूपगढ़	७	१४	०१
८.	खम्भालिया	७	२२	०९		(काश्मीर में)			
९.	नवीबन्दर	७	२१	०८	३०.	पुंछ	७	१५	०२
१०.	सोमनाथ	७	१७	०४	३१.	गुलमर्ग	७	१४	०१
११.	अमरेली	७	१४	०१	३२.	राजौरी	७	१४	०१
१२.	जसदन	७	१५	०२	३३.	बारामूला	७	१५	०२
१३.	गौंडल	७	१७	०४	३४.	गिलगित	७	१८	०५
१४.	राजकोट	७	१७	०४	३५.	मुजफ्फराबाद	७	१९	०६
१५.	जूनागढ़	७	१८	०५		(पाकिस्तान में)			
१६.	सुरेन्द्र नगर	७	१४	०१	३६.	कराची	७	३५	२२
१७.	ध्रांगध्रा	७	१४	०१	३७.	क्वेटा	७	४१	२८
१८.	जामनगर	७	२१	०८	३८.	पेशावर	७	२६	१३
	(राजस्थान में)				३९.	हैदराबाद	७	२९	१६
१९.	दीव	७	१४	०१	४०.	डेरा इस्माइलखां	७	२७	१४
२०.	जैसलमेर	७	२१	०८	४१.	लरकाना	७	३४	२१
२१.	मुनाबाव	७	२३	१०	४२.	कलात	७	४२	२९

पृष्ठ २११ का शेष

सन् २००७ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

मार्च	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००७	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
२०	०७ ००	२० ०६	०६ १८	१९ १३	०७ २४	२० १५	०६ ५६	१९ ३८
२१	०७ ३७	२१ १६	०६ ५९	२० २०	०८ ०७	२१ १९	०७ ४२	२० ४०
२२	०८ १७	२२ २८	०७ ४३	२१ २८	०८ ५३	२२ २५	०८ ३२	२१ ४३
२३	०९ ०३	२३ ३८	०८ ३१	२२ ३५	०९ ४३	२३ ३१	०९ २५	२२ ४७
२४	०९ ५५	- -	०९ २५	२३ ४०	१० ३९	- -	१० २२	२३ ५०
२५	१० ५२	०० ४४	१० २४	- -	११ ३७	०० ३६	११ २१	- -
२६	११ ५३	०१ ४३	११ २४	०० ४०	१२ ३८	०१ ३५	१२ २१	०० ५०
२७	१२ ५६	०२ ३४	१२ २४	०१ ३२	१३ ३७	०२ २८	१३ १८	०१ ४४
२८	१३ ५६	०३ १७	१३ २२	०२ १८	१४ ३३	०३ १५	१४ १३	०२ ३३
२९	१४ ५५	०३ ५४	१४ १८	०२ ५८	१५ २७	०३ ५६	१५ ०४	०३ १६
३०	१५ ५०	०४ २६	१५ १०	०३ ३३	१६ १८	०४ ३२	१५ ५२	०३ ५५
३१	१६ ४४	०४ ५४	१६ ०१	०४ ०४	१७ ०६	०५ ०५	१६ ३८	०४ ३१

पृष्ठ २१६ का शेष

सन् २००८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

अप्रैल	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०३ ००	१३ ४८	०२ ०२	१३ १२	०२ ५९	१४ २३	०२ १८	१४ ०१
२	०३ ३७	१४ ४९	०२ ४२	१४ १०	०३ ४०	१५ १९	०३ ०२	१४ ५५
३	०४ ११	१५ ५१	०३ १९	१५ ०९	०४ २०	१६ १५	०३ ४४	१५ ४८
४	०४ ४३	१६ ५३	०३ ५५	१६ ०८	०४ ५८	१७ १३	०४ २५	१६ ४२
५	०५ १६	१७ ५८	०४ ३२	१७ ०९	०५ ३६	१८ ११	०५ ०६	१७ ३८
६	०५ ५१	१९ ०६	०५ १०	१८ १२	०६ १६	१९ १३	०५ ५०	१८ ३६

विक्रमी सं. २०६४ के संदिग्ध व्रत पर्व निर्णय

श्री रामनवमी- चैत्र शुक्ल पक्ष की मध्यान्ह व्यापिनी नवमी के दिन श्रीरामनवमी होती है। यदि दोनों दिन नवमी मध्यान्ह व्यापिनी हो या न हो तो वैष्णवों को अष्टमी विद्धा का त्यागकर अगले दिन श्री रामनवमी मनानी चाहिये। "नवमी चाष्टमी विद्धा त्याज्या विष्णुपरायणैः। उपोषणं नवम्यां च दशम्यां चैव पारणम्"।। २६ एवं २७ मार्च दोनों दिन नवमी मध्यान्ह को स्पर्श कर रही है। मध्यान्ह दोनों दिन लगभग ११ बजकर १४ मिनट से १ बजकर ३८ मिनट तक है। २६ मार्च को नवमी ११ बजकर ३२ मिनट पर आरम्भ हो रही है तथा २७ मार्च को नवमी ११ बजकर ३७ मिनट तक ही है अत: २६ मार्च को नवमी लगभग पूरे मध्यान्ह काल में व्याप्त है जबकि २७ मार्च को मात्र २३ मिनट तक नवमी है। शास्त्र में यह वाक्य भी है कि दोनों दिन नवमी मध्यान्ह में हो या न हो तो दूसरे दिन नवमी का व्रत करें। **"दिन द्वये मध्यान्ह व्याप्तौ तदभावै वा पूर्वदिने पुनर्वसृक्षयुक्तामपि त्यक्त्वा परैव कार्या"** जहाँ निर्णय सिन्धु में यह वाक्य लिखा है वहीं आगे वह वाक्य लिखा है कि वैष्णवों को अष्टमी विद्धा का त्याग करना चाहिये। इससे स्पष्ट है कि स्मार्त्तों का रामनवमी व्रत २६ मार्च २००७ ई. को एवं वैष्णवों का २७ मार्च को होगा। यह इस वाक्य से भी सिद्ध होता है। **"पूर्वेद्युरेव मध्यान्ह योगे कर्मकाल व्याप्तेः सैव ग्राह्या।"** अर्थात पहले दिन ही मध्यान्ह के योग में कर्मकाल की व्याप्ति ही ग्रहण करें। (निर्णय सिन्धु) अत: स्पष्ट है कि स्मार्तों को अष्टमी विद्धा नवमी ग्राह्य है।

श्री गंगा दशहरा - ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष की दशमी के दिन श्री गंगा दशहरा होता है। इस वर्ष ज्येष्ठ मास अधिक मास है अत: एक अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष है एवं दूसरा शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष है। निर्णय सिन्धु में लिखा है कि कृत्यरत्नावली के मत से शुद्ध ज्येष्ठ में गंगा दशहरा मनायें **"कृत्यरत्नावल्यां शुद्धेऽपिकार्येत्युक्तम्"** तिथिव्रत चिन्तामणि के अनुसार भी गंगा दशहरा शुद्ध ज्येष्ठ मास में ही शास्त्र सम्मत है। **"दशहरासु नोत्कर्षश्चतुर्ष्वपि युगादिषु। उपाकर्म महाषष्ठ्यो ह्येतदिष्टं वृषादितः"।।** ऋष्यश्रृंग के इस वाक्य को प्रमाण रूप में उद्धृत करते हुए कुछ विद्वान मलमास में गंगा दशहरा मानते हैं। किन्तु इस प्रमाण से यह सिद्ध नहीं होता कि गंगा दशहरा मलमास में मनाया जाये शुद्ध ज्येष्ठ में नहीं। इस विषय को तिथिव्रत चिंतामणिकार ने इस प्रकार स्पष्ट किया है-

इति ऋष्यश्रृंगवचनं दर्शयन्ति। तदसदर्थो परिज्ञानात्। प्रथमं त्वेतद्विचारणीयम्। कस्मिन् प्रकरणे हेमाद्रिणा किमुक्तम्। प्रथमत उपाकर्मकालनिर्णयप्रकरणे-पुनर्युगादि-काल निर्णय प्रकरणे च। उपाकर्मकालनिर्णयप्रकरणे तु कात्यायनेनाप्युपाकर्मोत्कर्षो दर्शितः। यथा-

"उत्कर्षः कालवृद्धौ स्यादुपाकर्मादि कर्मणि। अभिषेकादिवृद्धीनां न तूत्कर्षो युगादिषु।।

अस्यार्थः यदा ग्रहसंक्रान्तिदूषिता श्रावणी पूर्णिमा स्यात्तदा उत्कर्षः कार्यः। अर्थात् कालवृद्धावपि सिंहेर्क एवोपाकर्म। तथाह गोभिलः प्रौष्ठपदीं हस्तेनोपाकरणमिति। पुनर्युगादिप्रकरणे तु ऋष्यश्रृंग वचनं प्रदर्श्य हेमाद्रिणोक्तम्। तदसन्मूलत्वादुपलक्षणत्वादुपेक्षणीयमिति। तथापि ऋष्यश्रृंगवचनस्यार्थो विचारणीयः। युगादिप्रकरणे ह्येतयुक्तं वृषादित इति पाठः। वृषादिशब्देन वृषादिराशिगतरवौ, अर्थाद्वृषमिथुनादि राशिगते सूर्ये या युगादयस्तासु उत्कर्षो न भवति तथैव दशहरासु अत्र बहुवचनेनान्येषां तिथीनामपि ग्रहणम्। यथा ग्रहसंक्रान्तिदूषितायां श्रावण्यां तां त्यक्त्वा कालवृद्धिं कृत्वा प्रौष्ठपद्यामुपाकर्म क्रियते तदुत्कर्षः। तथैव दशहरादिषु न। ऋष्यश्रृंगवचनान्मलमासे दशहराकार्येति न प्राप्नोति। अत्रोत्कर्षः शब्दः स तु कालवृद्धावेव न तु पूर्वकालप्रतिपादकः। कालात्पूर्वं क्रियमाण कार्य्ये तु अपकर्षः शब्दो भवति। यथा अपकृष्य प्रकुर्वीत द्वादशाहे सपिण्डनमिति। पुनश्च मलमासनिर्णये श्रुतिस्मृति पुराणोक्तवचनैर्देवकर्मपितृकर्म पर्वोत्सवादि सर्वाणि निषिद्धानि। अतो दशहरादि मलमासे कथमपि भवितुंनार्हति।" उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि गंगा दशहरा शुद्ध ज्येष्ठ में ही शास्त्र सम्मत है। वैसे भी गंगादशहरा निर्जला एकादशी से प्राय: एक या दो दिन पूर्व आता है। मलमास में गंगा दशहरा मनाने से यह निर्जला एकादशी से एक माह पूर्व ही हो जायेगा। अत: २५ जून २००७ को गंगा दशहरा शास्त्र सम्मत है।

तृतीया एवं चतुर्थी का श्राद्ध - आश्विन कृष्ण पक्ष में किया जाने वाला पार्वण श्राद्ध अपरान्ह व्यापिनी तिथि में किया जाता है। २९ सितम्बर २००७ को अपरान्ह काल दिन के १ बजकर २३ मिनट से ३ बजकर ४५ मिनट तक है। इस दिन दिन के २ बजकर ४२ मिनट तक तृतीया तिथि तथा २ बजकर ४२ मिनट के उपरान्त चतुर्थी तिथि है। अत: दोनों तिथियां २९ सितम्बर २००७ को अपरान्ह काल में व्याप्त होने से तृतीया-चतुर्थी का श्राद्ध इसी दिन होगा।

भीष्म पंचक- कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक पांच दिन भीष्म पंचक व्रत होते हैं किन्तु त्रयोदशी तिथि का क्षय होने के कारण भीष्म पंचक व्रत २० नवम्बर से २४ नवम्बर तक होंगे। शास्त्र में स्पष्ट निर्देश है कि यदि तिथि क्षय होने से ५ दिन नहीं होते हैं तो दशमी विद्धा एकादशी में भीष्म पंचक व्रत आरम्भ करें।

"यदि शुद्धैकादश्यामारम्भे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मक व्रत समाप्तिर्न घटते तदा विद्धैकादश्यामप्यारम्भः" *(धर्मसिन्धु)*

संवत् २०६४ वि. के विवाहादि मुहूर्त्त

समय शुद्धि

यहाँ मुहूर्तों के निर्णय में लात, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य तथा दग्धा तिथि आदि १० दोषों का विचार किया गया है। इन विवाहादि मुहूर्तों में जहाँ कहीं युति, वेध, दग्धा तिथि आदि दोषों का परिहार मिला है वे विवाहादि मुहूर्त लगाये गये हैं। यहाँ महापात (क्रान्तिसाम्य) दोष सूक्ष्म गणना द्वारा लिया गया है। इस वर्ष शुक्रास्त का दोष वृद्ध-बाल्यत्वकाल सहित ६ अगस्त २००७ से २७ अगस्त २००७ ई. तक है तथा गुर्वस्त दोष वृद्ध-बाल्यत्व सहित ८ दिसम्बर २००७ ई. से ९ जनवरी २००८ ई. तक रहेगा। यहाँ गुरु-शुक्र के उदयास्त में सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति द्वारा गणना की गई है। २ चन्द्रग्रहण जो कि भारत के केवल सुदूर पूर्वी एवं सुदूर पश्चिमी भागों में ही दृश्य है उनका यहां विचार नहीं किया गया है। ३१ जुलाई से १२ अगस्त तक १३ दिन का घस्र पक्ष है इसमें शुभ मुहूर्तों का अभाव होता है। इन सबका विचार मुहूर्तों में किया गया है। यहाँ अश्विनी, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रों में भी विवाह मुहूर्त्त लगाये गये हैं क्योंकि पारस्कर ग्राह्य सूत्र में इन नक्षत्रों को विवाह में ग्राह्य माना है। आगे पंजाब एवं द्विगर्त देशों के विवाह मुहूर्त अलग शीर्षक के अन्तर्गत दिये गये हैं।

सपरिहार शुद्ध विवाह मुहूर्त्त (सब देशों के लिए)

वैशाख शु. २ गुरौ (१९ अप्रैल) रोहिणी ।।ऽ।।।।।।। ल.१२
वैशाख शु. ३ शुक्रे (२० अप्रैल) रोहिणी ।।ऽ।।।।।।। दिवा ल. ३, मृग. ऽ।।।ऽऽऽऽ।। ल. १२
वैशाख शु. ५ शनौ (२१ अप्रैल) मृगशीर्ष ऽ।।।ऽऽऽऽ।। दिवा ल. ३, आवश्यके, गो.
वैशाख शु. १० गुरो (२६ अप्रैल) मघा ।ऽ।।।ऽ।ऽ।। दिवा ल. २, ३ (९/३३ तक) महापात (९/३३ से)
वैशाख शु. १२ शनौ (२८ अप्रैल) उ.फा.।।।।।ऽऽ।।। दिवा ल. २ (८/१४ से), ३, गो. १२,
वैशाख शु. १२ रवौ (२९ अप्रैल) उ.फा. ।।।।।।ऽ।।। दिवा ल. २ गुरु. ७ पू., ३
वैशाख शु. १२ रवौ (२९ अप्रैल) हस्त ऽऽ।।।।।।।। गो. १२, चं. ७. पू.
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त ऽऽ।।।ऽ।।।। दिवा ल. २, ३
शुद्ध ज्ये. कृ. ३ शनौ (५ मई) मूल ।।।ऽ।।ऽ।। ल. १२, २७/१३ से (२५/७२ वह्नि तक)
शुद्ध ज्ये. कृ. ४ रवौ (६ मई) मूल ।।।।ऽ।।ऽ।। दिवा ल. ३, चं. ७, पू., गो. १२
शुद्ध ज्ये. कृ. ६ भौमे (८ मई) उ.षा. ऽऽ।।।।।।।ऽ दिवा ल. ३, गो. (दग्धापरिहार है)
शुद्ध ज्ये. शु. ५ भौमे (१९ जून) मघा।ऽ।।।ऽ।।।। ल. गो. २, (गुरु ७ पू., नृप. २०/२३ से)
शुद्ध ज्ये. शु. ६ बुधे (२० जून) मघा ।ऽ।।।ऽ।।।। ल. गो. (नृप. २१/३२ तक)
शुद्ध ज्ये. शु. ७ शुक्रे (२२ जून) हस्त ।।।।।।ऽ।ऽ ल. १२, (चं. ७ पू.) दग्धापरिहार है, २ (गु. ७ पू.) शुक्रदान, (चौर २३/४९ तक)
शुद्ध ज्ये. शु. ८ शनौ (२३ जून) हस्त ।।।।।।ऽ।। ल. गो. १२ (रोग २४/५९ से)
शुद्ध ज्ये. शु. १२ बुधे (२७ जून) अनु. ऽऽ।।।ऽ।।।। ल. गो. १२, २ (वह्नि २९/४० तक)
आषाढ़ कृ. १ रवौ (१ जुलाई) उ.षा. ।।।।।ऽ।।।। ल. १२ (२३/५६ तक)
आषाढ़ कृ. ६ शुक्रे (६ जुलाई) उ.भा.ऽ।।।।ऽऽ।।। ल. २ (गु.७ पू.)(मृत्यु १५/०६ तक)
आषाढ़ कृ. ७ शनौ (७ जुलाई) रेवती ऽ।।।।।।ऽ।ऽ ल. गो. २ (दग्धापरिहार है)
आषाढ़ कृ. १२ बुधे (११ जुलाई) रोहिणी ऽऽ।।।ऽचौ.।ऽऽ। ल. १२ (२३/३३ तक) आवश्यके, (चौर २०/५७ तक)
कार्तिक शु. ११ बुधे (२१ नवम्बर) रेवती ।।।।ऽऽनृ.।।।। ल. गो. ४, ६ (चं. ७ पू.) (नृप. २१/४९ तक)
कार्तिक शु. १५ शनौ (२४ नवम्बर) रोहिणी ।।।।ऽऽरो.।ऽ।। ल. ६ (रोग २१/०६ से)
कार्तिक कृ. १ रवौ (२५ नवम्बर) मृगशीर्ष ऽ।।।।।ऽ।।। ल. ४, ६ (रोग २०/५१ तक)
मार्गशीर्ष कृ. २ चन्द्रे (२६ नवम्बर) मृगशीर्ष ऽ।।।।।ऽ।।। ल. गो. (१७/३९ तक)
मार्गशीर्ष कृ. ७ शुक्रे (३० नवम्बर) मघा ऽ।ऽ।।ऽबृ.।ऽ।। ल. गो. (१७/३२ से), (वैधृति १८/५८ से) (नृप १९/२५ तक)
मार्ग.कृ. ९ रवौ (२ दिस.) उ.फा.।।।।।ऽ।ऽ।। ल. गो. (१६/५९ से) ४, ७ (१८/४६ तक चौर)
मागशीर्ष कृ. ९ चन्द्रे (३ दिसम्बर) उ.फा. ।।।।।।।ऽ।ऽ ल. गो. हस्त ।।।।।ऽरो।ऽ।ऽ ल. ४ (२१/४३ तक) दग्धापरिहार (रोग १८/२६ से)
मार्गशीर्ष कृ. १० भौमे (४ दिसम्बर) हस्त ।।।।।।।ऽ।। ल. गो. ४ (रोग १८/०६ तक)
पौष शु. १२ शनौ (१९ जनवरी) रोहिणी ऽ।।।।ऽ।।।ऽ दिवा ल. १२ (दग्धा परिहार है)
माघ कृ. २ गुरो (२४ जनवरी) मघा ।।ऽ।ऽ।ऽ।। दिवा ल. १, गो. (मृत्यु बाण १९/५७ से) (सूर्य वेध १९/५६ से)
माघ कृ. ४ शनौ (२६ जनवरी) उ.फा. ।।।।।ऽ।ऽ।। दिवा ल. १ (१९/१० तक वह्नि) सिंह चन्द्र उ.फा. ल. गो. ७ (कन्या चन्द्र)
माघ कृ. ५ रवौ (२७ जन.) उ.फा.।।।।।।।ऽ।। दिवा ल. १२ (चं ७ पू.)(१८/४७ से नृप)
माघ कृ. ५ रवौ (२७ जनवरी) हस्त ।।।।।।ऽऽ।। ल. गो. ७ (नृप १८/४७ से)
माघ कृ. ६ चन्द्रे (२८ जनवरी) हस्त ।।।।।ऽऽऽ।। दिवा ल. १२ (१८/२४ तक नृप)
माघ कृ. ९ गुरौ (३१ जन.) अनु.ऽ।।।।ऽऽऽ।। ल. ६ (२२/१२ से), ७ (१७/१७ से रोग)

माघ कृ. १० शुक्रे (१ फरवरी) अनुराधा ऽ।।।ऽऽऽ।। दिवा ल. १२, १ (अष्टम चन्द्र नीच का परिहार है।)

माघ कृ. १२ रवौ (३ फरवरी) मूल ।।।ऽऽऽऽ।ऽ ल. ६, ७, (मृत्यु १६/१३ तक)

माघ शु. ४ रवौ (१० फरवरी) उ.भा.।।।।ऽ।।।। दिवा ल. १ गो. (१७/०८ तक), (रोग १३/५६ तक)

माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती ।ऽ।।।ऽऽ।। दिवा ल. १ (मृत्यु १३/३८ से)

माघ शु. १० शनौ (१६ फरवरी) मृगशीर्ष ।ऽऽऽ।ऽ।ऽ।। दिवा ल. १ (१०/२६ से), गो., (शुक्रपाद वेध १०/२६ तक)

माघ शु. १४ बुधे (२० फर.) मघा।।ऽऽऽऽ।ऽ।। ल. ६ (२१/१५ से), ७ (चौर ११/३० तक)

फाल्गुन कृ. १ शुक्रे (२२ फरवरी) उ.फा. ।।।।।ऽ।।। ल. ६, ७ (रोग १०/०९ तक)

फा.कृ. २ शनौ (२३ फर.) उ.फा.।।।।।ऽ।।। दिवा ल. १२ (चं. ७ पू.), (मृत्यु १०/५९ से)

फाल्गुन कृ. ७ गुरौ (२८ फरवरी) अनुराधा ऽ।।।।ऽऽ।। दिवा ल. १२, १, (चं. ८ नीच परिहार है), २ (चं. ७ पू.) गो. ६, ७ (चौर १०/१३ से)

फाल्गुन कृ. ८ शुक्रे (२९ फरवरी) अनुराधा ऽ।।।।ऽऽ।। दिवा ल. १२, १ (चं. ८ नीच परिहार है) (९/२१ तक) (चौर १०/१३ तक)

फाल्गुन कृ. ९ शनौ (१ मार्च) मूल ।।ऽ।ऽऽ।। ल. गो. ६, ७ (रोग १०/०७ से)

फाल्गुन कृ. १० रवौ (२ मार्च) मूल ।।।ऽऽऽऽ।। दिवा ल. १२, १

फाल्गुन शु. २ रवौ (९ मार्च) उ.भा. ।।।।ऽ।।। दिवा ल. १ (चौर ९/४६ तक)

फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती ।।।।ऽ।।। दिवा ल. १ (९/४६ से)

सब देशों के नक्षत्र चतुष्टयी के विवाह मुहूर्त्त

शुद्ध ज्ये. कृ. ७ बुधे (९ मई) श्रवण ।।।।ऽचौ।ऽ।। ल. गो.

शुद्ध ज्ये. शु. ९ रवौ (२४ जून) चित्रा ।।।।ऽरो.ऽ।।। ल. गो. (१३/५७ तक परिघार्द्ध दोष) (२६/०९ तक रोग)

आषाढ़ कृ. २ चन्द्रे (२ जुलाई) श्रवण।ऽ।।।।।।। ल. १२ (२४/१५ से), २ (गु.७पू.)

मार्ग. कृ. १० भौमे (४ दिसम्बर) चित्रा ।।ऽ।।ऽऽ।। ल. ७, (रोग १८/०६ तक) शुक्र युति परिहार है।

माघ कृ. ६ चन्द्रे (२८ जनवरी) चित्रा ऽ।।।ऽनृ।।।। ल. गो.

माघ कृ. ७ भौमे (२९ जनवरी) चित्रा ऽ।।।।।।।। दिवा. ल. १

फाल्गुन कृ. ४ चन्द्रे (२५ फरवरी) चित्रा ।ऽ।।ऽ व ।ऽ।ऽ दिवा ल. १२ (दग्धापरिहार) (चं. ७ पू.) गो. ६ (१०/४२ तक)

फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) अश्विनी ।।।।ऽरो.।।ऽ ल. गो. ७ (९/४६ से रोग)

केवल पंजाब एवं द्विगत देशों के शुभ विवाह मुहूर्त्त

आषाढ़ शु. ५ गुरौ (१९ जुलाई) उ.फा. ।।।।ऽव।।ऽ ल. १२ परिघार्द्ध २१/४६ तक, दग्धा १८/२६ से, २ (गु. ७ पू.), ३

आषाढ़ शु. ६ शुक्रे (२० जुलाई) हस्त।।।।।।।।। ल. १२ (चं. ७ पू.), (दग्धा २०/२७ तक)

आषाढ़ शु. ७ शनौ (२१ जुलाई) चित्रा ।।।।ऽ नृ.ऽऽ।। ल. गो. १२ (२२/४६ तक), (चं. ७ पू.), (नृप ७/१९ से)

आषाढ़ शु. १० भौमे (२४ जुलाई) अनु. ऽ।ऽ।ऽ।।ऽ।। ल. १२, २ (१०/४५ तक चौर)

आषाढ़ शु. ११ गुरौ (२६ जुलाई) मूल ऽ।।ऽबु.।।।।। ल. २ (चं. ७ पू.) पादात् बुधवेधाभाव

आषाढ़ शु. १३ शनौ (२८ जुलाई) उ.षा. ।।।ऽऽ व ।ऽ।। ल. ३ (चं. ७ पू.) (१५/१६ तक मृत्युबाण)

आषाढ़ शु. १४ रवौ (२९ जुलाई) उ.षा. ।।।ऽ।।ऽ।। ल. १२

भाद्रपद कृ. २ गुरौ (३० अगस्त) उ.भा. ।।।।।।।।। दिवा ल. ६, गो.

भाद्रपद कृ. ७ चन्द्रे (३ सितम्बर) रोहिणी ।ऽऽ।।ऽ।ऽ।। ल. ३, ४ (चन्द्र उच्च युति परिहार), (२०/३९ से रोगबाण)

भाद्र. कृ. ८ भौमे (४ सित.) रोहिणी।ऽऽ।।ऽ।ऽ।। ल. ६ गो., (१८/३१ तक), (रोग २६/५६ तक)

भाद्रपद शु. १ बुधे (१२ सित.) उ.फा.।ऽ।।।।।।। ल. ३ (२४/१४ तक), (२४/१४ से महापात)

भाद्रपद शु. २ गुरौ (१३ सितम्बर) हस्त ।।ऽ।।ऽरो.ऽ।।। दिवा ल. ९, (शुक्र ८ परिहार है) ३ (एकार्गल २५/०१ तक)

भाद्रपद शु. २ गुरौ (१३ सितम्बर) चित्रा ।।।।ऽरो.ऽ।।। ल. ४ (समयाल्प)

भाद्रपद शु. ३ शुक्रे (१४ सितम्बर) चित्रा ।।।।।ऽ।।। दिवा ल. ९, (शुक्र ८ परिहार है), (रोग ९/१५ तक)

भाद्रपद शु. ३ शुक्रे (१४ सितम्बर) चित्रा।।।।।ऽ।।। ल. गो. (१६/५६ से), ३, ४

भाद्रपद शु. ६ चन्द्रे (१७ सितम्बर) अनुराधा ऽ।।।।।।।। ल. गो. २ (गु. चं. ७ पू.), ४ (संक्रांति दोष १७/३१ तक)

भाद्रपद शु. ६ भौमे (१८ सित.) अनुराधा ऽ।।।।।।। दिवा ल. ७ (मृत्युबाण ११/४३ से)

भाद्रपद शु. ८ गुरौ (२० सितम्बर) मूल ।।।।ऽऽ व ।ऽ।ऽ दिवा ल. ७ (दग्धापरिहार है)

भाद्रपद शु. ११ रवौ (२३ सितम्बर) धनिष्ठा ऽ।।ऽ शु. ऽऽ चौ. ऽ।।। ल. २, ४ (चं. ७ पू.) (२६/२२ से, शुक्रपाद वेध)

भाद्रपद शु. १२ चन्द्रे (२४ सितम्बर) धनिष्ठा ऽ।।ऽ शु. ऽऽ चौ. ऽ।।। ल. ७ (८/०८ तक) पादात् शुक्रवेधाभाव, (चौर १५/०४ तक)

भाद्रपद शु. १२ चन्द्रे (२४ सितम्बर) धनिष्ठा ऽ।।ऽ शु. ऽऽ चौ. ऽ।।। ल. ७ (८/०८ से), गो., (पादात् शुक्र वेधाभाव)

आश्विन शु. ३ रवौ (१४ अक्टूबर) अनुराधा ऽ।।।ऽ रो. ।।।। ल. २ (गु. चं. ७ पू.), ४ (रोगबाण २२/२८ तक)

आश्विन शु. ४ चन्द्रे (१५ अक्टू.) अनु.ऽ।।।।।।।। ल. २ (२०/२३ से) (चं. गु. ७ पू.)

आश्विन शु. ८ शुक्रे (१९ अक्टूबर) उ.षा. ।।।।ऽ व ।ऽ।। ल. ४ (२३/२६ से) (चं. ७ पू.), ६ (२९/४५ तक), मृत्यु २३/२६ तक

आश्वि. शु. १२ भौमे (२३ अक्टू.) उ.भा.।।।।ऽचौ.।।।। ल. ६ (चं. ७ पू.)(चौर २३/५८ से)

आश्विन शु. १३ बुधे (२४ अक्टूबर) उ.भा. ऽ।।।ऽचौ. ऽ।।। ल. गो. २ (गु. ७ पू.), ४ (२४/०१ तक) (लात, एकार्गल १६/४३ से)

आश्विन शु. १३ बुधे (२४ अक्टूबर) रेवती ।ऽ।।।।।।। ल. ४ (२४/०१ से), ६ (चं. ७ पू.) (चौर २४/०५ तक)

आश्विन शु. १४ गुरौ (२५ अक्टूबर) अश्विनी ।।।ऽ शु. ऽऽ रो. ऽऽ।। ल. ४ (२४/१७ से) आवश्यके, पादात् शुक्रवेधाभाव, (रोग २४/११ से)

कार्तिक कृ. ३ रवौ (२८ अक्टूबर) रोहिणी ।।।।।।।।। ल. ४ (२४/२३ से), (२६/१६ से परिघार्द्ध) (मृत्यु २४/२३ तक)

कार्तिक कृ. ४ चन्द्रे (२९ अक्टूबर) मृगशीर्ष ऽ।।ऽऽ च ऽऽ।। ल. गो., ४ चन्द्र मिथुन में, (वह्नि २४/२५ तक)

कार्तिक कृ. ९ शनौ (३ नवम्बर) मघा ।।ऽ।।।।।।। ल. गो. ४, ६ (२८/०९ तक) के. श. युति परिहार है, (रोग २४/२४ से)

कार्तिक शु. २ रवौ (११ नवम्बर) अनुराधा ऽ।।।ऽ चौ. ।।।। ल. २ (गु. चं. ७ पू.) ४, ६ (२७/५२ तक) चौरबाण २३/४१ तक

कार्तिक शु. ३ भौमे (१३ नवम्बर) मूल ।।।।ऽ रो. ।।।। ल. गो. रोग २३/२३ तक

संवत् २०६४ के अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त

१४ अप्रैल तक सूर्य मीन राशि में

वैशाख शु. ९ बुधे (२५ अप्रैल) मघा लग्नाभाव
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) चित्रा भौमवेध
वैशाख शु. १४ भौमे (१ मई) चित्रा भौमवेध
वैशाख शु. १४ भौमे (१-२ मई) स्वाती राहुवेध
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. १ गुरौ (३ मई) अनुराधा सूर्यवेध
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ८ गुरौ (१० मई) श्रवण क्रान्तिसाम्य
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ८ गुरौ (१० मई) धनिष्ठा शनिवेध
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. १० शनौ (१२ मई) उ.भा. लग्नाभाव
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. १२ चन्द्रे (१४ मई) रेवती मासान्त
शुद्ध ज्ये. कृ. १३ भौमे (१५ मई) अश्विनी क्षीण चन्द्र संक्रान्ति

१७ मई से १५ जून तक अधिकमास

शुद्ध ज्येष्ठ शु. ७ गुरौ (२७ जून) मघा व्यतिपात
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५-२६ जून) स्वाती राहुवेध
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १३ गुरौ (२८ जून) अनुराधा लग्नाभाव
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १४ शुक्रे (२९ जून) मूल लग्नाभाव
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १५ शनौ (३० जून) मूल लग्नाभाव
आषाढ़ कृ. २ चन्द्रे (२ जुलाई) उ.षा. वैधृति
आषाढ़ कृ. ३ भौमे (३ जुलाई) श्रवण भद्रा
आषाढ़ कृ. ३ भौमे (३-४ जुलाई) धनिष्ठा शनिवेध
आषाढ़ कृ. ७ शनौ (७ जुलाई) उ.भा. लग्नाभाव
आषाढ़ कृ. ८ रवौ (८ जुलाई) रेवती लग्नाभाव
आषाढ़ कृ. ८ रवौ (८-९ जुलाई) अश्विनी केतुवेध
आषाढ़ कृ. १३ गुरौ (१२ जुलाई) रोहिणी-मृग. क्षीण चन्द्र
आषाढ़ शु. ३ भौमे (१७ जुलाई) मघा व्यतिपात
आषाढ़ शु. ६ शुक्रे (२० जुलाई) उफा. लग्नाभाव
आषाढ़ शु. ७ शनौ (२१ जुलाई) हस्त लग्नाभाव
आषाढ़ शु. ८ रवौ (२२ जुलाई) चित्रा लग्नाभाव-भद्रा
आषाढ़ शु. ८ रवौ (२२-२३ जुलाई) स्वाती राहुवेध
आषाढ़ शु. ११ बुधे (२५ जुलाई) अनुराधा लग्नाभाव
आषाढ़ शु. १२ शुक्रे (२७ जुलाई) मूल लग्नाभाव, वैधृति
आषाढ़ शु. १४ रवौ (२९-३० जुलाई) श्रवण शनिवेध

३१ जुलाई से १२ अगस्त तक घस्त्र पक्ष है।

५ अगस्त से २७ अगस्त तक शुक्रास्त दोष

श्रावण शु. १४ चन्द्रे (२७-२८ अगस्त) धनिष्ठा मृत्युबाण
भाद्र.कृ. ३ शुक्रे (३१ अगस्त-१ सितम्बर) अश्विनी सूर्यवेध
भाद्रपद कृ. ८ भौमे (४-५ सितम्बर) मृगशीर्ष रेखाल्प
भाद्रपद कृ. १३ रवौ (९-१० सितम्बर) मघा क्षीण चन्द्र
भाद्रपद शु. १ बुधे (१२ सितम्बर) हस्त महापात लग्नाभाव
भाद्रपद शु. ४ शनौ (१५-१६ सितम्बर) स्वाती राहुवेध
भाद्रपद शु. ७ बुधे (१९ सितम्बर) मूल लग्नाभाव
भाद्रपद शु. ९ शुक्रे (२१-२२ सितम्बर) उ.षाढ़ा भौमवेध
भाद्रपद शु. १० शनौ (२२-२३ सितम्बर) श्रवण भद्रा, केतु-शनिवेध

२६ सितम्बर से ११ अक्टूबर तक श्राद्ध

आश्विन शु. १ शुक्रे (१२ अक्टूबर) चित्रा वैधृति
आश्विन शु. १ शुक्रे (१२-१३ अक्टूबर) स्वाती राहुवेध
आश्विन शु. ५ भौमे (१६-१७ अक्टूबर) मूल मासान्त
आश्विन शु. ७ गुरौ (१८ अक्टूबर) उ.षा. भद्रा
आश्विन शु. ८ शुक्रे (१९-२० अक्टूबर) श्रवण शनिवेध
आश्विन शु. १४ गुरौ (२५ अक्टूबर) रेवती भद्रा
आश्विन शु. १५ शुक्रे (२६ अक्टूबर) आश्विन लग्नाभाव
कार्तिक कृ. ४ चन्द्रे (२९ अक्टूबर) रोहिणी परिघार्द्ध
कार्तिक कृ. ५ भौमे (३० अक्टूबर) मृगशीर्ष लग्नाभाव
कार्तिक कृ. १० रवौ (४ नवम्बर) मघा भद्रा

कार्तिक कृ. ११ चन्द्रे (५-६ नवम्बर) उफा. वैधृति
कार्तिक कृ. १२ भौमे (६ नवम्बर) हस्त मृत्युबाण
कार्तिक कृ. १३ बुधे (७-८-९ नवम्बर) हस्त-चित्रा-स्वाती क्षीण चन्द्र
कार्तिक शु. १ शनौ (१० नवम्बर) अनुराधा क्षीण चन्द्र
कार्तिक शु. ४ बुधे (१४ नवम्बर) मूल भद्रा
कार्तिक शु. ५ गुरौ (१५ नवम्बर) उ.षाढ़ा मासान्त भु.पा.
कार्तिक शु. ६ शुक्रे (१६ नवम्बर) उ.षा. श्रवण संक्रान्ति
कार्तिक शु. ७ शनौ (१७ नवम्बर) श्रवण केतुवेध
कार्तिक शु. ७ शनौ (१७-१८ नव.) धनि., मृत्युबाण भद्रा
कार्तिक शु. ११ बुधे (२१ नवम्बर) उ.भा. भद्रा लग्नाभाव
कार्तिक शु. १२ गुरौ (२२ नव.) अश्विनी व्यतीपात, शनिवेध
मार्ग. कृ. १ रवौ (२५ नवम्बर) रोहिणी लग्नाभाव
मार्ग. कृ. ८ शनौ (१ दिसम्बर) मघा वैधृति
मार्ग. कृ. ११ बुधे (५ दिसम्बर) चित्रा लग्नाभाव
मार्गशीर्ष कृ. ११ बुधे (५-६ दिसम्बर) स्वाती राहुवेध
मार्गशीर्ष कृ. १४ शनौ (८-९ दिसम्बर) अनुराधा क्षीण चन्द्र

८ दिसम्बर से १० जनवरी तक गुर्वस्त दोष

१६ दिसम्बर से १४ जनवरी तक सूर्य धनु राशि में
पौष शु. ७ भौमे (१५ जनवरी) रेवती भद्रा लग्नाभाव
पौष शु. ७ भौमे (१५-१६ जनवरी) अश्विनी शनिवेध
पौष शु. १० शुक्रे (१८ जनवरी) रोहिणी लग्नाभाव
पौष शु. १२ शनौ (१९-२० जनवरी) मृग. सूर्य वेध
माघ कृ. ११ शनौ (२ फरवरी) मूल मृत्युबाण, लग्नाभाव
माघ कृ. ७ भौमे (२९-३० जनवरी) स्वाती, भुजंगपात
माघ कृ. १३ भौमे (५-६-७ फरवरी) उषा, श्रवण, धनि. क्षीण चन्द्र
माघ शु. ६ भौमे (१२ फरवरी) अश्वि. मासान्त
माघ शु. ८ गुरौ (१४ फरवरी) रोहिणी मृत्युबाण
माघ शु. ९ शुक्रे (१५ फर.) रोहिणी-मृग. वैधृति-मृत्युबाण
फाल्गुन कृ. ३ रवौ (२४ फरवरी) चित्रा लग्नाभाव
फाल्गुन कृ. ४ चन्द्रे (२५-२६ फरवरी) स्वाती सूर्य वेध
फाल्गुन कृ. ११ चन्द्रे (३-४ मार्च) उषा. भौम वेध
फाल्गुन कृ. १२ भौमे (४ मार्च) श्रवण क्षीण चन्द्र, परिघार्द्ध
फाल्गुन कृ. १३ बुधे (५-६-७ मार्च) श्रवण, धनि. शत., क्षीण चन्द्र
फाल्गुन शु. १ शनौ (८ मार्च) उभा क्षीण चन्द्र
फाल्गुन शु. २ रवौ (९ मार्च) रेवती लग्नाभाव
फाल्गुन शु. ४ भौमे (११ मार्च) अश्विनी भद्रा
फाल्गुन शु. ६ गुरौ (१३ मार्च) रोहिणी मासान्त

१४ मार्च से मीन राशि में सूर्य

संवत् २०६४ के विभिन्न शुभ मुहूर्त्त

कुछ मुहूर्त्त केवल उत्तरायण में होते हैं तथा कुछ अन्य मुहूर्त्त चैत्र-मीनार्क में भी होते हैं। गृहारम्भ भाद्रपद में भी हो सकता है यह मुहूर्त्त चिंतामणि में लिखा है। शुक्रास्त का दोष ६ अगस्त से २७ अगस्त २००७ तक, गुर्वस्त दोष ८ दिसम्बर २००७ से ९ जनवरी २००८ तक, घस्रपक्ष ३१ जुलाई से १२ अगस्त तक, श्राद्ध पक्ष २७ सितम्बर से ११ अक्टूबर तक होगा। यह अवधि शुभ मुहूर्त्त के लिए वर्जित है।

चूड़ाकर्म मुहूर्त्त

वैशाख शु. ७ चन्द्रे (२३ अप्रैल) पुनर्वसु
वैशाख शु. ५ शनौ (२१ अप्रैल) मृगशीर्ष (वैश्यों को शनिवार शुभ)
वैशाख शु. १२ रवौ (२९ अप्रैल) हस्त (ब्राह्मणों को रविवार शुभ)
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ३ शनौ (५ मई) ज्येष्ठा (८।२० तक)
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ७ बुधे (९ मई) श्रवण (१०।४० के बाद) (बुध वेधाभाव)
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ८ गुरौ (१० मई) श्रवण-धनिष्ठा
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ३ रवौ (१७ जून) पुनर्वसु (ब्राह्मणों को रविवार शुभ)
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ८ शनौ (२३ जून) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ९ रवौ (२४ जून) चित्रा (ब्राह्मणों को रविवार शुभ) (१०।२१ के बाद)
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५ जून) चित्रा
आषाढ़ कृ. ८ रवौ (८ जुलाई) रेवती
पौष शु. ७ भौमे (१५ जनवरी) रेवती (क्षत्रियों को मंगलवार शुभ)
पौष शु. १३ रवौ (२० जनवरी) मृगशीर्ष (आवश्यके)
माघ कृ. ५ रवौ (२७ जनवरी) हस्त (११।४४ के बाद)
माघ कृ. ७ भौमे (२९ जनवरी) चित्रा (८।१० के बाद) (मंगलवार क्षत्रियों में शुभ)
माघ कृ. ८ बुधे (३० जनवरी) स्वाती
माघ कृ. ११ शनौ (२ फरवरी) ज्येष्ठा (शनिवार वैश्यों को शुभ)
माघ शु. १ शुक्रे (८ फरवरी) शतभिषा
माघ शु. २ शनौ (९ फरवरी) शतभिषा
माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती
माघ शु. १० शनौ (१६ फरवरी) मृगशीर्ष १०/२७ के बाद (शनि वैश्यों को शुभ, शुक्र वेध १०/२६ तक)
माघ शु. १२ चन्द्रे (१८ फरवरी) पुनर्वसु (१२/१० के बाद)
माघ शु. १३ भौमे (१९ फरवरी) पुष्य (१०।४४ तक) (क्षत्रियों को मंगलवार शुभ)
फाल्गुन कृ. ४ चन्द्रे (२५ फरवरी) चित्रा (११।४६ के बाद)
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त

वैशाख शु. ७ चन्द्रे (२३ अप्रैल) पुनर्वसु
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५ जून) चित्रा
माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती

विद्यारम्भ मुहूर्त्त

चैत्र शु. ७ रवो (२५ मार्च) मृगशीर्ष
चैत्र शु. १० बुधे (२८ मार्च) पुष्य
चैत्र शु. ११ गुरौ (२९ मार्च) आश्लेषा (१३।४४ से)
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ३ रवौ (१७ जून) पुनर्वसु
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ९ रवौ (२४ जून) चित्रा (१०।२१ से)
माघ शु. १ शुक्रे (८ फरवरी) शतभिषा
फाल्गुन शु. १० रवौ (१६ मार्च) पुनर्वसु

गृहारम्भ मुहूर्त्त

वैशाख शु. २ गुरौ (१९ अप्रैल) रोहिणी वृष चक्र अशुद्ध
वैशाख शु. १२ शनौ (२८ अप्रैल) उ.फा. वृष चक्र शुद्ध
आषाढ़ शु. ७ शनौ (२१ जुलाई) हस्त वृष चक्र अशुद्ध
आषाढ़ शु. ११ बुधे (२५ जुलाई) अनुराधा वृष चक्र शुद्ध
भाद्रपद शु. २ गुरौ (१३ सितम्बर) हस्त वृष चक्र अशुद्ध आवश्यके
भाद्रपद शु. ३ शुक्रे (१४ सितम्बर) चित्रा वृष चक्र अशुद्ध आवश्यके
कार्तिक शु. ११ बुधे (२१ नवम्बर) रेवती वृष चक्र शुद्ध
पौष शु. १२ शनौ (१९ जनवरी) रोहिणी वृष चक्र शुद्ध
माघ शु. १० शनौ (१६ फरवरी) मृगशीर्ष (१०।२७ के बाद), वृष चक्र शुद्ध है, बाण दोष १२।२० तक
माघ शु. १२ चन्द्रे (१८ फरवरी) पुष्य, वृष चक्र शुद्ध
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च), रेवती, वृष चक्र अशुद्ध

नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख शु. ७ चन्द्रे (२३ अप्रैल) पुनर्वसु कलश चक्र शुद्ध
वैशाख शु. १२ शनौ (२८ अप्रैल) उ.फा. कलश चक्र शुद्ध
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त कलश शुद्ध
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ८ गुरौ (१० मई) धनिष्ठा कलश शुद्ध (१०।२४ के बाद)
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ८ शनौ (२३ जून) हस्त कलश शुद्ध (७।५४ तक)
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५ जून) चित्रा कलश शुद्ध (७।१३ तक)
कार्तिक कृ. ११ चन्द्रे (५ नवम्बर) उ.फा. कलश शुद्ध (१०।३७ से १३।३० तक)
कार्तिक शु. ६ शुक्रे (१६ नवम्बर) उ.षा. कलश शुद्ध संक्रांति आवश्यके
कार्तिक शु. ७ शनौ (१७ नवम्बर) श्रवण कलश शुद्ध
कार्तिक शु. ११ बुधे (२१ नवम्बर) रेवती कलश शुद्ध
मार्गशीर्ष कृ. ९ चन्द्रे (३ दिसम्बर) उ.फा. कलश शुद्ध (८।३९ के बाद)
मार्गशीर्ष कृ. ११ बुधे (५ दिसम्बर) चित्रा कलश शुद्ध
माघ कृ. १० शुक्रे (१ फरवरी) अनुराधा कलश शुद्ध
माघ शु. १० शनौ (१६ फरवरी) मृगशीर्ष (१०।२७ से) कलश शुद्ध शुक्रवेध १०।२७ तक पादवेध है
माघ शु. १२ चन्द्रे (१८ फरवरी) पुनर्वसु कलश शुद्ध

जीर्ण गृह प्रवेश मुहूर्त्त

वैशाख कृ. ३ गुरौ (५ अप्रैल) स्वाती
वैशाख शु. ५ शनौ (२१ अप्रैल) मृगशीर्ष
वैशाख शु. ७ चन्द्रे (२३ अप्रैल) पुनर्वसु
वैशाख शु. १२ शनौ (२८ अप्रैल) उ.फा.
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ७ बुधे (९ मई) श्रवण (१०।४० के बाद) बुधपाद वेधाभाव
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ८ गुरौ (१० मई) धनिष्ठा
कार्तिक कृ. ६ बुधे (३१ अक्टूबर) पुनर्वसु
कार्तिक कृ. ७ गुरौ (१ नवम्बर) पुष्य ११।२६ तक ११।२७ से गुरुपाद वेध है
कार्तिक कृ. ११ चन्द्रे (५ नवम्बर) उ.फा. (१३।३० तक)
कार्तिक शु. ६ शुक्रे (१६ नवम्बर) उ.षा. संक्रांति
कार्तिक शु. ७ शनौ (१७ नवम्बर) श्रवण
कार्तिक शु. ११ बुधे (२१ नवम्बर) रेवती
मार्गशीर्ष कृ. २ चन्द्रे (२६ नवम्बर) मृगशीर्ष
मार्गशीर्ष कृ. ६ गुरौ (२९ नवम्बर) पुष्य
मार्गशीर्ष कृ. ९ चन्द्रे (३ दिसम्बर) उ.फा. (८।३९ से)
मार्गशीर्ष कृ. ११ बुधे (५ दिसम्बर) चित्रा
मार्गशीर्ष शु. ५ शुक्रे (१४ दिसम्बर) श्रवण
माघ कृ. १ बुधे (२३ जनवरी) पुष्य (महापात दोष)
माघ कृ. ६ चन्द्रे (२८ जनवरी) हस्त
माघ कृ. ८ बुधे (३० जनवरी) स्वाती
माघ कृ. १० शुक्रे (१ फरवरी) अनुराधा
माघ शु. १ शुक्रे (८ फरवरी) शतभिषा
माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती
माघ शु. १० शनौ (१६ फरवरी) मृगशीर्ष १०।२७ से (शुक्रपाद वेध १०।२७ तक)
फाल्गुन कृ. २ शनौ (२३ फरवरी) उ.फा.
फाल्गुन कृ. ४ चन्द्रे (२५ फरवरी) चित्रा (११।४६ से)
फाल्गुन कृ. ७ गुरौ (२८ फरवरी) अनुराधा
फाल्गुन कृ. ८ शुक्रे (२९ फरवरी) अनुराधा
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती

उपनयन मुहूर्त्त

चैत्र शु. १० बुधे (२८ मार्च) पुष्य
वैशाख कृ. २ बुधे (४ अप्रैल) चित्रा
वैशाख कृ. ३ गुरौ (५ अप्रैल) स्वाती
वैशाख शु. १२ रवौ (२९ अप्रैल) उ.फा.
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ३ रवौ (१७ जून) पुनर्वसु
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५ जून) चित्रा
माघ कृ. ५ रवौ (२७ जनवरी) उ.फा.
माघ शु. १ शुक्रे (८ फरवरी) शतभिषा
माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती
फाल्गुन कृ. ४ चन्द्रे (२५ फरवरी) चित्रा (११।४६ से) (आवश्यके)
फाल्गुन शु. २ रवौ (९ मार्च) उ.भा.
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती ९।४६ से रोग

फाल्गुन शु. १० रवौ (१६ मार्च) पुनर्वसु
फाल्गुन शु. ११ चन्द्रे (१७ मार्च) पुष्य
चैत्र कृ. २ रवौ (२३ मार्च) चित्रा ११।१५ तक रोग
चैत्र कृ. ३ चन्द्रे (२४ मार्च) चित्रा
चैत्र कृ. ५ गुरौ (२७ मार्च) अनुराधा

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त

वैशाख शु. ५ शनौ (२१ अप्रैल) मृगशीर्ष
वैशाख शु. ७ चन्द्रे (२३ अप्रैल) पुनर्वसु
वैशाख शु. १२ शनौ (२८ अप्रैल) उ.फा.
वैशाख शु. १२ रवौ (२९ अप्रैल) उ.फा.-हस्त
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ३ रवौ (१७ जून) पुनर्वसु
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ९ रवौ (२४ जून) चित्रा (१०।२१ से)
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५ जून) चित्रा
माघ शु. १ शुक्रे (८ फरवरी) शतभिषा
माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती
माघ शु. १० शनौ (१६ फरवरी) मृगशीर्ष (१०।२७ से)
शुक्रपाद वेध १०।२७ तक
माघ शु. १२ चन्द्रे (१८ फरवरी) पुनर्वसु
फाल्गुन शु. २ रवौ (९ मार्च) उ.भा.
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती

विपणिकरण मुहूर्त्त

वैशाख शु. ५ शनौ (२१ अप्रैल) मृगशीर्ष
वैशाख शु. १२ शनौ (२८ अप्रैल) उ.फा.
वैशाख शु. १२ रवौ (२९ अप्रैल) उ.फा.
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ११ रवौ (१३ मई) उ.भा.
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ७ बुधे (९ मई) श्रवण (बुधपाद वेधाभाव)
शुद्ध ज्येष्ठ शु. ९ रवौ (२४ जून) चित्रा (१०।२१ से)
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५ जून) चित्रा
आषाढ़ कृ. ७ शनौ (७ जुलाई) उ.भा.
आषाढ़ कृ. १२ बुधे (११ जुलाई) रोहिणी
आश्विन शु. १० रवौ (२१ अक्टूबर) धनिष्ठा
आश्विन शु. १३ बुधे (२४ अक्टूबर) उ.भा.
कार्तिक कृ. ३ रवौ (२८ अक्टूबर) रोहिणी
कार्तिक कृ. ७ गुरौ (१ नवम्बर) पुष्य ११।२७ तक (११।२७ से गुरुपाद वेध)
कार्तिक कृ. ११ चन्द्रे (५ नवम्बर) उ.फा.
कार्तिक शु. १ रवौ (११ नवम्बर) अनुराधा
कार्तिक शु. ७ शनौ (१७ नवम्बर) श्रवण
कार्तिक शु. ११ बुधे (२१ नवम्बर) रेवती
मार्गशीर्ष कृ. २ चन्द्रे (२६ नवम्बर) मृगशीर्ष
मार्गशीर्ष कृ. ९ चन्द्रे (३ दिसम्बर) उ.फा. (८।३९ से)
मार्गशीर्ष कृ. ११ बुधे (५ दिसम्बर) चित्रा
पौष शु. १२ शनौ (१९ जनवरी) रोहिणी
माघ कृ. ५ रवौ (२७ जनवरी) उ. फा. - हस्त
माघ कृ. १० शुक्रे (१ फरवरी) अनुराधा
माघ कृ. १२ रवौ (३ फरवरी) मूल
माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती
माघ शु. १० शनौ (१६ फरवरी) मृगशीर्ष १०।२७ से (शुक्र वेध भौम युति गुरु दृष्ट)
फाल्गुन कृ. २ शनौ (२३ फरवरी) उ.फा.
फाल्गुन कृ. ४ चन्द्रे (२५ फरवरी) चित्रा (११।४६ से)
फाल्गुन कृ. ७ गुरौ (२८ फरवरी) अनुराधा
फाल्गुन कृ. १० रवौ (२ मार्च) मूल
फाल्गुन शु. २ रवौ (९ मार्च) उ.भा.
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती-अश्विनी

द्विरागमन मुहूर्त्त

वैशाख शु. २ गुरौ (१९ अप्रैल) रोहिणी (२७।४६ से)
वैशाख शु. ३ गुरौ (२० अप्रैल) रोहिणी (६।२५ तक)
वैशाख शु. ७ चन्द्रे (२३ अप्रैल) पुनर्वसु
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ कृ. ७ बुधे (९ मई) श्रवण १८।३५ तक तिथि क्षय दोष आवश्यके
कार्तिक शु. ११ बुधे (२१ नवम्बर) रेवती
मार्गशीर्ष कृ. २ चन्द्रे (२६ नवम्बर) मृगशीर्ष
मार्गशीर्ष कृ. ४ बुधे (२८ नवम्बर) पुनर्वसु ७।३५ से ८।३३ तक (८।३३ से गुरुपादवेध)
मार्गशीर्ष कृ. ६ गुरौ (२९ नवम्बर) पुष्य
मार्गशीर्ष कृ. ९ चन्द्रे (३ दिसम्बर) उ.फा. (८।३९ से)
मार्गशीर्ष कृ. ११ बुधे (५ दिसम्बर) चित्रा
माघ शु. १२ चन्द्रे (१८ फरवरी) पुनर्वसु (१२।१० से)
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती

अन्नप्राशन मुहूर्त्त

नोट:- अन्नप्राशन मुहूर्त्त में गुरु-शुक्रास्त दोष नहीं होता क्योंकि यह आयु के मासों से जुड़ा है।
चैत्र शु. १५ चन्द्रे (२ अप्रैल) हस्त
वैशाख शु. ७ चन्द्रे (२३ अप्रैल) पुनर्वसु
वैशाख शु. १३ चन्द्रे (३० अप्रैल) हस्त
शुद्ध ज्येष्ठ शु. १० चन्द्रे (२५ जून) चित्रा
आषाढ़ शु. ५ गुरौ (१९ जुलाई) उ.फा. (०६/५३ से)
भाद्रपद शु. २ गुरौ (१३ सितम्बर) हस्त
भाद्रपद शु. ३ शुक्रे (१४ सितम्बर) चित्रा
भाद्रपद शु. १२ चन्द्रे (२४ सितम्बर) धनिष्ठा (०९/२७ से)
आश्विन शु. १३ बुधे (२४ अक्टूबर) उ.भा.
आश्विन शु. १५ शुक्रे (२६ अक्टूबर) अश्विनी ०७/३६ से (०७/३६ तक शुक्र पाद वेध)
मार्गशीर्ष शु. ५ शुक्रे (१४ दिसम्बर) श्रवण
मार्गशीर्ष शु. १० बुधे (१९ दिसम्बर) रेवती आवश्यके
पौष शु. २ गुरौ (१० जनवरी) श्रवण आवश्यके
पौष शु. ३ शुक्रे (११ जनवरी) धनिष्ठा आवश्यके
माघ शु. १ चन्द्रे (८ फरवरी) शतभिषा (०८/३३ से)
माघ शु. ५ चन्द्रे (११ फरवरी) रेवती
फाल्गुन शु. ३ चन्द्रे (१० मार्च) रेवती
फाल्गुन शु. १५ शुक्रे (२१ मार्च) उ.फा. (११/४३ से) आवश्यके

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक संवत् २०६४ वि.

सुविधानुसार किसी विशेष माह में विवाह दिन ज्ञात करने के लिए विगत वर्षों से यह सूर्य, चन्द्र, गुरु शुद्धि का (त्रिबल शुद्धि) कोष्ठक देते आ रहे हैं। जिसमें वर के लिए सूर्य की पूजा तथा कन्याओं के लिए गुरु पूजा के दिन भी दर्शाये रहते हैं अतः ज्योतिषियों को पृथक से त्रिबल शुद्धि का परिश्रम नहीं करना पड़ता। किन्तु यहाँ एक बात सदैव स्मरण रखना चाहिए कि मात्र इसके आधार पर विवाह दिन निश्चित नहीं करना चाहिए। साथ में यह भी देखना आवश्यक है कि जिस दिन विवाह निश्चित कर रहे हैं उस दिन वर तथा कन्या के जन्म लग्न तथा जन्मराशि से आठवीं राशि विवाह लग्न नहीं होना चाहिए तथा जन्म लग्न एवं जन्मराशि के शत्रु राशि का लग्न नवांश भी नहीं होना चाहिए क्योंकि किसी विशेष दिन में विवाह लग्न अत्यन्त सीमित होते हैं। अतः विवाह दिन निश्चित करने से पूर्व इन सभी बातों का विचार कर लेना आवश्यक होता है। यहाँ ४/८वाँ चन्द्रमा वर्जित किया है तथा १२वाँ चन्द्रमा ग्राह्य माना गया है। वर्तमान में कन्याओं का विवाह अधिक आयु में होने से ४-८-१२वाँ गुरु जो कि नेष्ट होता है पूज्य गुरु की श्रेणी में ही रखा गया है।

राशि	वर	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या	कन्या के लिए पूज्य गुरु
मेष	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २२, २३, २४, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, फरवरी- ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २५, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- सित.- ३, ४, १२, १३, १४, २०, २३, २४, अक्टू.- १९, २३, २४, २५, २८, २९ नव.- ३, १३	१३ अप्रैल से १३ जून १६ अग. से १५ सित. १६ अक्टू. से १४ नव.	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५ ६, ८, ९, जून १९, २०, २२, २३, २४, जु.- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन. १९, २४, २६, २७, २८, २९, फर.- ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २५, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, २०, २३, २४, अक्टू.- १९, २३, २४, २५, २८, २९ नव.- ३, १३	२१ नवम्बर तक
वृष	जून- २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, दिस.- ३, ४, जन.- १९, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, १०, ११, १६, २३, २५, २८, २९, मार्च- ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २९, सित.- १७, १८, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९, नव.- ११	१४ मई से १५ जुलाई १६ सित. से १६ अक्टू. १५ नव. से १४ दिस. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- , १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई- ९, जून- २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, दिस.- ३, ४, जन.- १९, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, १०, ११, १६, २३, २५, २८, २९, मार्च- ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९, नव.- ११	२१ नवम्बर से
मिथुन	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, मई- ५, ६, ८, जून- १९, २०, २४, २७, जुलाई- १, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, फर.- १६, २०, २२, २८, २९ मार्च- १, २, ९, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- २४, २६, २८, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १४, अक्टू.- २३, २४, २५, २८, २९, नव.- ३, ११, १३	१४ जून से १५ अग. १६ अक्टू. से १४ नव. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, मई- ५, ६, ८, जून- १९, २०, २४, २७, जुलाई- १, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, जन.- १९, २४, २६, २९, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २८, २९ मार्च- १, २, ९ पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- २४, २६, २८, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १४, १७, १८, २०, २४, अक्टू.- १४, १५, २३, २४, २५, २८, २९, नव.- ३, ११, १३	—
कर्क	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, नव.- २१, २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५	१६ जुला. से १५ सित. १५ नव. से १४ दिस. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २२, २३, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २५, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९, नव.- ३, ११, १३	—
सिंह	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, जून- १९, २०, २२, २३, २४, जुलाई- १, २, ११, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, फर.- ३, १६, २०, २२, २३, २५, मार्च- १, २, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- सित.- ३, ४, १२, १३, १४, २०, २३, २४, अक्टू.- १९, २५, २८, २९, नव.- ३, १३	१३ अप्रैल से १३ मई १६ अग. से १६ अक्टू. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- १९. २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २२, २३, २४, जुलाई- १, २, ११, नव.- २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, फर.- ३, १६, २०, २२, २३, २५, मार्च- १, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २६, २८, २९, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, २०, २३, २४, अक्टू.- १९, २१, २५, २८, २९, नव.- ३, १३	२१ नवम्बर तक

राशि	वर	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या	कन्या के लिए पूज्य गुरु
कन्या	जून- १९, २०, २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, ३ ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २५, २८, २९, मार्च- ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २९, सित.- १७, १८, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २८, २९. नव.- ३, १३	१४ मई से १३ जून १६ सित. से १४ नव. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ९, १३, जून- १९, २०, २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २५, २८, २९, मार्च- ९, १०, पंजाब- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २९, अग.- ३०, सित. ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २३, २४, अक्टू. १४, १५, १९, २३, २४, २८, २९, नव.- ३, ११	२१ नवम्बर से
तुला	अप्रैल- २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, जून- १९, २०, २२, २३, २४, २७, जुलाई- ७, १६, नव.- २१, २६, ३०, दिस.- २, ३, ४, फरवरी- १६, २०, २२, २३, २६, २८, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अगस्त- ३०, सित.- १२, १३, १४, अक्टू.- २३, २४, २५, नव.- ३, ११, १३	१४ अप्रैल से १३ मई १४ जून से १५ जुलाई १६ अक्टू.से १४ दिस. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, जून- १९, २०, २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, ६, ७, नव.- २१, २६, ३०, दिस.- २, ३ ४, जन.- २४, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २५, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, अग.- ३०, सित.- १२, १३, १४, १७, १८, २०, २४, अक्टू.- १४, १५, २३, २४, २५, नव.- ३, ११, १३	—
वृश्चिक	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, नव.- २१, २४, २५, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, पंजाब एवं द्विगर्त देश के मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५	१४ मई से १३ जून १६ जुलाई से १५ अग. १५ नव. से १४ दिस.	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, ३१, फरवरी- १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३, २५, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९, नव.- ३, ११, १३	—
धनु	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ११, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, ३, १६, २०, २२, २३, २५, २८, २९, मार्च- १, २, १०, पंजाब- सित.- ३, ४, १२, १३, १४ १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २५, २८, २९, नव.- ३, ११, १३	१३ अप्रैल से १३ मई १४ जून से १५ जुलाई १६ अग. से १५ सित. १३ जन. से ११ फर.	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून.- १९, २०, २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ११, नव.- २४, २५, २६, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, ३, १६, २०, २२, २३, २५, २८, २९, मार्च- १, २, १०, पंजाब- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २५, २८, २९, नव.- ३, ११, १३	२१ नवम्बर तक
मकर	जून- २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २ ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, दिस.- ३, ४, जन.- १९, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, १६, २३, २५, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, सित.- १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २८, २९, नव.- ११, १३	१४ मई से १३ जून १६ जुलाई से १५ अग. १६ सित. से १५ अक्टू १३ जन. से १३ मार्च	अप्रैल- १९, २०, २१, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून- २२, २३, २४, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, २६, दिस.- ३, ४, जन.- १९, २६, २७, २८, २९, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, १६, २३, २५, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २८, २९, नव.- ११, १३	२१ नवम्बर से
कुम्भ	अप्रैल- २६, २८, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २४, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, नव.- २१, २६, ३०, दिस.- २, फर.- १६, २०, २२, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- २४, २६, २८, २९, अगस्त- ३०, सित.- १४, अक्टू.- १९, २३, २४, २५, नव.- ३, ११, १३	१४ जून से १५ जुलाई १६ अग. से १५ सित. १६ अक्टू से १४ नव. १२ फर. से १३ मार्च	अप्रैल- २६, २८, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २४, २७, जुलाई- १, २ ६, ७, नव.- २१, २६, ३०, दिस.- २, जन.- २४, २६, २९, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- २४, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २५, नव.- ३, ११, १३	—
मीन	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, नव.- २१, २४, २५, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, पंजाब एवं द्विगर्त देश के वि. मु.- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अगस्त ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४	१३ अप्रैल से १३ मई १६ जुलाई से १५ अग. १६ सित. से १६ अक्टू १५ नव. से १४ दिस.	अप्रैल- १९, २०, २१, २६, २८, २९, ३०, मई- ५, ६, ८, ९, जून- १९, २०, २२, २३, २७, जुलाई- १, २, ६, ७, ११, नव.- २१, २४, २५, ३०, दिस.- २, ३, ४, जन.- १९, २४, २६, २७, २८, ३१, फर.- १, ३, १०, ११, १६, २०, २२, २३. २५, २८, २९, मार्च- १, २, ९, १०, पंजाब- जुलाई- १९, २०, २१, २४, २६, २८, २९, अग.- ३०, सित.- ३, ४, १२, १३, १४, १७, १८, २०, २३, २४, अक्टू.- १४, १५, १९, २३, २४, २५, २८, २९, नव.- ३, ११, १३	—

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चार संवत् २०६४ वि. (सन् २००७-२००८ ई.)

सूर्य चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२१	मार्च	उभा.	२
२५	''	''	३
२८	''	''	४
३१	''	रेवती	१
४	अप्रैल	''	२
७	''	''	३
११	''	''	४
१४	''	अश्वि.	१ मेष
१७	अप्रैल	''	२
२१	''	''	३
२४	''	''	४
२८	''	भरणी	१
१	मई	''	२
५	''	''	३
८	''	''	४
११	''	कृतिका	१
१५	''	''	२ वृष
१८	''	''	३
२२	''	''	४
२५	''	रोहिणी	१
२९	''	''	२
१	जून	''	३
५	''	''	४
८	''	मृगशिर	१
१२	''	''	२
१५	''	''	३ मिथुन
१९	''	''	४
२२	''	आर्द्रा	१
२६	''	''	२
२९	''	''	३
३	जुलाई	''	४
६	''	पुन.	१
१०	''	''	२
१३	''	''	३
१७	''	''	४ कर्क
२०	''	पुष्य	१
२४	''	''	२

सूर्य चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२७	जुलाई	पुष्य	३
३१	''	''	४
३	अग.	आश्ले.	१
७	''	''	२
१०	''	''	३
१३	''	''	४
१७	''	मघा	१ सिंह
२०	''	''	२
२४	''	''	३
२७	''	''	४
३१	''	पू.फा.	१
३	सित.	''	२
७	''	''	३
१०	''	''	४
१४	''	उ.फा.	१
१७	''	''	२ कन्या
२०	''	''	३
२४	''	''	४
२७	''	हस्त	१
१	अक्टू.	''	२
४	''	''	३
७	''	''	४
११	''	चित्रा	१
१४	''	''	२
१७	''	''	३ तुला
२१	''	''	४
२४	''	स्वाती	१
२८	''	''	२
३१	''	''	३
३	नवम्बर	''	४
७	''	विशाखा	१
१०	''	''	२
१३	''	''	३
१६	''	''	४ वृश्चि.
२०	''	अनु.	१
२३	''	''	२
२६	''	''	३

सूर्य चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
३०	नवम्बर	अनु.	४
३	दिसम्बर	ज्येष्ठा	१
६	''	''	२
१०	''	''	३
१३	''	''	४
१६	''	मूल	१ धनु
१९	''	''	२
२३	''	''	३
२६	''	''	४
२९	''	पू.षाढ़ा	१
१	जन. २००८	''	२
५	''	''	३
८	''	''	४
११	''	उ.षाढ़ा	१
१५	''	''	२ मकर
१८	''	''	३
२१	''	''	४
२४	''	श्रवण	१
२८	''	''	२
३१	''	''	३
३	फर.	''	४
६	''	धनिष्ठा	१
१०	''	''	२
१३	''	''	३ कुम्भ
१६	''	''	४
२०	''	शत.	१
२३	''	''	२
२६	''	''	३
१	मार्च	''	४
४	''	पू.भा.	१
७	''	''	२
११	''	''	३
१४	''	''	४ मीन
१७	''	उ.भा.	१
२१	''	''	२
२४	''	''	३
२७	''	''	४

सूर्य - मंगलचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
३१	मार्च	रेवती	१
३	अप्रैल	''	२
६	''	''	३
मंगलचार			
२१	मार्च	धनि.	१
२५	''	''	२
२९	''	''	३ कुंभ
३	अप्रैल	''	४
७	''	शत.	१
११	''	''	२
१६	''	''	३
२०	''	''	४
२४	''	पू.भा.	१
२९	''	''	२
३	मई	''	३
७	''	''	४ मीन
१२	''	उ.भा.	१
१६	''	''	२
२१	''	''	३
२५	''	''	४
२९	''	रेवती	१
३	जून	''	२
७	''	''	३
१२	''	''	४
१६	''	अश्वि.	१ मेष
२१	''	''	२
२५	''	''	३
३०	''	''	४
५	जुलाई	भरणी	१
९	''	''	२
१४	''	''	३
१९	''	''	४
२४	''	कृतिका	१
२९	''	''	२ वृष
३	अगस्त	''	३
८	''	''	४
१३	''	रोहिणी	१

मंगल - बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१८	अगस्त	रोहिणी	२
२४	''	''	३
२९	''	''	४
४	सितम्बर	मृग.	१
१०	''	''	२
१६	''	''	३ मिथुन
२३	''	''	४
३०	''	आर्द्रा	१
८	अक्टू.	''	२
१७	''	''	३
२९	''	''	४
१	दिसम्बर	''	३
१२	''	''	२
२१	''	''	१
३०	''	मृग.	४
९	जन.	''	३
२४	फरवरी	''	४
६	मार्च	आर्द्रा	१
१५	''	''	२
२४	''	''	३
१	अप्रैल	''	४
बुधचार			
२१	मार्च	शतभिषा	१
२२	''	''	२
२५	''	''	३
२८	''	''	४
३१	''	पू.भा.	१
२	अप्रैल	''	२
५	''	''	३
७	''	''	४ मीन
९	''	उभा.	१
११	''	''	२
१३	''	''	३
१५	''	''	४
१७	''	रेवती	१
१९	''	''	२
२१	''	''	३

बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२२	अप्रैल	रेवता	४
२४	''	अश्विन	१ मेष
२६	''	''	२
२७	''	''	३
२९	''	''	४
१	मई	भरणी	१
२	''	''	२
४	''	''	३
५	''	''	४
७	''	कृतिका	१
८	''	''	२ वृष
१०	''	''	३
११	''	''	४
१३	''	रोहिणी	१
१५	''	''	२
१६	''	''	३
१८	''	''	४
२०	''	मृग.	१
२२	''	''	२
२४	''	''	३ मिथुन
२७	''	''	४
२९	''	आर्द्रा	१
१	जून	''	२
५	''	''	३
११	''	''	४
२१	''	''	३
२७	''	''	२
४	जुलाई	''	१
१६	''	''	२
२०	''	''	३
२३	''	''	४
२६	''	पुन.	१
२८	''	''	२
३०	''	''	३
१	अगस्त	''	४ कर्क
३	''	पुष्य	१
५	''	''	२

बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
६	अगस्त	पुष्य	३
८	''	''	४
१०	''	आश्ले.	१
११	''	''	२
१३	''	''	३
१५	''	''	४
१६	अगस्त	मघा	१ सिंह
१८	''	''	२
२०	''	''	३
२१	''	''	४
२३	''	पूफा.	१
२५	''	''	२
२७	''	''	३
२९	''	''	४
३१	''	उफा.	१
२	सितम्बर	''	२ कन्या
४	''	''	३
६	''	''	४
८	''	हस्त	१
१०	''	''	२
१२	''	''	३
१५	''	''	४
१७	''	चित्रा	१
२०	''	''	२
२२	''	''	३ तुला
२५	''	''	४
२८	''	स्वाती	१
२	अक्टूबर	''	२
६	''	''	३
१७	''	''	२
२१	''	''	१
२३	''	चित्रा	४
२६	''	''	३
३०	''	''	२ कन्या
४	नवम्बर	''	३ तुला
९	''	चित्रा	४
१२	''	स्वाती	१

ग्रहों के निरयण राशि नक्षत्र चार संवत् २०६४ वि. (सन् २००७-२००८ ई.)

बुधचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१४	नवम्बर	स्वाती	२
१६	''	''	३
१९	''	''	४
२१	''	विशाखा	१
२३	''	''	२
२५	''	''	३
२७	''	''	४ वृश्चिक
३०	''	अनु.	१
२	दिसम्बर	''	२
४	''	''	३
६	''	''	४
८	''	ज्ये.	१
१०	''	''	२
१२	''	''	३
१४	''	''	४
१७	''	मूल	१ धनु
१९	''	''	२
२१	''	''	३
२३	''	''	४
२५	''	पूषा.	१
२७	''	''	२
२९	''	''	३
३१	''	''	४
२	जनवरी	उषा.	१
४	''	''	२ मकर
६	''	''	३
८	''	''	४
१०	''	श्रवण	१
१२	''	''	२
१५	''	''	३
१७	''	''	४
१९	''	धनि.	१
२२	''	''	२
४	फरवरी	''	१
७	''	श्रवण	४
९	''	''	३
१३	''	''	२

बुध-गुरुचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२६	फरवरी	श्रवण	३
१	मार्च	''	४
४	''	धनि.	१
७	''	''	२
१०	''	''	३ कुम्भ
१३	''	''	४
१५	''	शत.	१
१७	''	''	२
२०	''	''	३
२२	''	''	४
२४	''	पूभा.	१
२६	''	''	२
२८	''	''	३
३०	''	''	४ मीन
१	अप्रैल	उभा.	१
३	''	''	२
५	''	''	३
६	''	''	४
गुरुचार			
२१	मार्च	ज्ये	३
१७	मई	''	२
१३	जून	''	१
१६	जुलाई	अनु.	४
२८	अगस्त	ज्ये.	१
२९	सितम्बर	''	२
१९	अक्टूबर	ज्ये.	३
६	नवम्बर	''	४
२२	''	मूल	१ धनु
७	दिसम्बर	''	२
२१	''	''	३
५	जनवरी	मूल	४
२०	''	पूषा.	१
४	फरवरी	''	२
२१	''	''	३
११	मार्च	''	४
६	अप्रैल	उषा.	१

शुक्रचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
शुक्रचार			
२१	मार्च	अश्वि.	४
२४	''	भरणी	१
२६	''	''	२
२९	''	''	३
१	अप्रैल	''	४
४	''	कृतिका	१
७	''	''	२ वृष
१०	''	''	३
१२	''	''	४
१५	''	रोहिणी	१
१८	''	''	२
२१	''	''	३
२४	''	''	४
२७	''	मृग.	१
३०	''	''	२
३	मई	''	३ मिथुन
६	''	''	४
९	''	आर्द्रा	१
१२	''	''	२
१५	''	''	३
१८	''	''	४
२१	''	पुन.	१
२४	''	''	२
२७	''	''	३
३०	''	''	४ कर्क
३	जून	पुष्य	१
६	''	''	२
१०	''	''	३
१३	''	''	४
१७	जून	आश्लेषा	१
२१	''	''	२
२५	''	''	३
२९	''	''	४
४	जुलाई	मघा	१ सिंह
९	''	''	२
१६	''	''	३

शुक्रचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
७	अगस्त	मघा	२
१४	''	''	१
१९	''	आश्ले.	४ कर्क
२५	''	''	३
२	सितम्बर	''	२
१५	''	''	३
२४	''	''	४
३०	''	मघा	१ सिंह
४	अक्टूबर	''	२
९	''	''	३
१३	''	''	४
१७	''	पूफा	१
२०	''	''	२
२४	''	''	३
२७	''	''	४
३१	''	उफा.	१
३	नवम्बर	''	२ कन्या
६	''	''	३
९	''	''	४
१२	''	हस्त	१
१५	''	''	२
१८	''	''	३
२१	''	''	४
२४	''	चित्रा	१
२७	''	''	२
३०	''	''	३ तुला
३	दिसम्बर	''	४
६	''	स्वाती	१
९	''	''	२
१२	''	''	३
१४	''	''	४
१७	''	विशाखा	१
२०	''	''	२
२३	''	''	३
२५	''	''	४ वृश्चिक
२८	''	अनु.	१
३१	''	''	२

शुक्रचार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
३	जनवरी	अनु.	३
६	''	''	४
८	जनवरी	ज्ये.	१
११	''	''	२
१४	''	''	३
१६	''	''	४
१९	''	मूल	१ धनु
२२	''	''	२
२५	''	''	३
२७	''	''	४
३०	''	पूषा.	१
२	फरवरी	''	२
४	''	''	३
७	''	''	४
१०	''	उषा.	१
१३	''	''	२ मकर
१५	''	''	३
१८	''	''	४
२१	''	श्रवण	१
२३	''	''	२
२६	''	''	३
२९	''	''	४
२	मार्च	धनि.	१
५	''	''	२
८	''	''	३ कुम्भ
११	''	''	४
१३	''	शत.	१
१६	''	''	२
१९	''	''	३
२१	''	''	४
२४	''	पूभा.	१
२७	''	''	२
२९	''	''	३
१	अप्रैल	''	४ मीन
४	''	उभा.	१
६	''	''	२

शनि-राहु-केतु-ह.-ने.-प्लू.चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
शनिचार			
२१	मार्च	आश्लेषा	३
१३	जून	''	४
१६	जुलाई	मघा	१ सिंह
१२	अगस्त	''	२
७	सितम्बर	''	३
६	अक्टूबर	''	४
१२	नवम्बर	पूफा.	१
२६	जनवरी	मघा	४
१०	मार्च	मघा	३
राहु चार			
२१	मार्च	पूभा.	१ कुंभ
१९	अप्रैल	शत.	४
२०	जून	''	३
२२	अगस्त	''	२
२४	अक्टूबर	''	१
२६	दिसम्बर	धनिष्ठा	४
२७	फरवरी	''	३
केतु चार			
२१	मार्च	पूफा.	३ सिंह
१९	अप्रैल	''	२
२०	जून	''	१
२२	अगस्त	मघा	४
२४	अक्टूबर	''	३
२६	दिसम्बर	''	२
२७	फरवरी	''	१
हर्षल चार			
२४	अप्रैल	पूभा.	२
२६	अगस्त	पूभा.	१
१४	फरवरी	पूभा.	२
नेपच्यून			
१४	अगस्त	धनिष्ठा	१
१२	जनवरी	धनिष्ठा	२
प्लूटोचार			
२	जुलाई	मूल	१
१०	नवम्बर	मूल	२
१८	फरवरी	मूल	३

मार्गी-वक्री

मंगल वक्री १५ नवम्बर
मंगल मार्गी ३१ जनवरी
बुध वक्री १६ जून
बुध मार्गी १० जुलाई
बुध वक्री १२ अक्टूबर
बुध मार्गी २ नवम्बर
बुध वक्री २९ जनवरी
बुध मार्गी १९ फरवरी
गुरु वक्री ६ अप्रैल
गुरु मार्गी ७ अगस्त
शुक्र वक्री २७ जुलाई
शुक्र मार्गी ८ सितम्बर
शनि मार्गी २० अप्रैल
शनि वक्री १९ दिसम्बर
हर्षल वक्री २३ जून
हर्षल मार्गी २४ नवम्बर
नेपच्यून वक्री २५ मई
नेपच्यून मार्गी १ नवम्बर
प्लूटो वक्री १ अप्रैल २००७
प्लूटो मार्गी ७ सितम्बर
प्लूटो वक्री २ अप्रैल २००८

ग्रहों के उदयास्त

मंगल पूरे वर्ष उदय रहेगा।
बुध २१ अप्रैल पूर्वास्त
बुध १५ मई पश्चिमोदय
बुध १९ जून पश्चिमास्त
बुध ८ जुलाई पूर्वोदय
बुध ३ अगस्त पूर्वास्त
बुध २९ अगस्त पश्चिमोदय
बुध १७ अक्टूबर पश्चिमास्त
बुध ३० अक्टूबर पूर्वोदय
बुध २३ नवम्बर पूर्वास्त
बुध ९ जनवरी २००८ पश्चिमोदय
बुध ३१ जनवरी पश्चिमास्त
बुध १३ फरवरी पूर्वोदय
बुध ३ अप्रैल पूर्वास्त
गुरु ११ दिसम्बर पश्चिमास्त
गुरु ७ जनवरी पूर्वोदय
शुक्र ८ अगस्त पश्चिमास्त
शुक्र २४ अगस्त पूर्वोदय
शनि ३ अगस्त पश्चिमास्त
शनि ९ सितम्बर पूर्वोदय

संवत् २०६४ वि. के सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि तथा रवियोग, द्विपुष्कर, रविपुष्य एवं गुरुपुष्य योग

तारीखों पर से स्टैं. टाईम के अनुसार लिखे हैं। इस समय में शुभ कार्यारम्भ करना सिद्धिदायक होता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अमृत सिद्धि योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
२०	मार्च	२५/०८	से	२१	मार्च	सूर्योदय	तक
२४	मार्च	सूर्योदय	से	२४	मार्च	१६/५९	तक
१	अप्रैल	सूर्योदय	से	२	अप्रैल	सूर्योदय	तक
६	अप्रैल	१७/०३	से	७	अप्रैल	सूर्योदय	तक
८	अप्रैल	२१/२९	से	९	अप्रैल	सूर्योदय	तक
१५	अप्रैल	१७/५६	से	१६	अप्रैल	सूर्योदय	तक
१७	अप्रैल	१२/११	से	१८	अप्रैल	सूर्योदय	तक
२३	अप्रैल	२४/०६	से	२४	अप्रैल	सूर्योदय	तक
२४	अप्रैल	२५/११	से	२५	अप्रैल	सूर्योदय	तक
२९	अप्रैल	सूर्योदय	से	३०	अप्रैल	सूर्योदय	तक
३	मई	२२/५६	से	४	मई	२५/१४	तक
६	मई	सूर्योदय	से	६	मई	२८/४७	तक
१३	मई	सूर्योदय	से	१३	मई	२५/११	तक
१५	मई	सूर्योदय	से	१५	मई	१९/५५	तक
१६	मई	१७/०६	से	१७	मई	सूर्योदय	तक
२१	मई	८/३३	से	२२	मई	सूर्योदय	तक
२२	मई	८/५९	से	२३	मई	सूर्योदय	तक
२७	मई	सूर्योदय	से	२७	मई	२०/५५	तक
३०	मई	२९/१७	से	१	जून	७/२४	तक
३	जून	सूर्योदय	से	३	जून	१०/२८	तक
१०	जून	सूर्योदय	से	१०	जून	८/५२	तक
१२	जून	२६/३९	से	१४	जून	सूर्योदय	तक
१७	जून	१८/०७	से	१८	जून	१८/०४	तक
१९	जून	सूर्योदय	से	१९	जून	१८/४८	तक
२७	जून	१२/३४	से	२८	जून	१४/३७	तक
१	जुलाई	१७/५१	से	२	जुलाई	सूर्योदय	तक
२	जुलाई	१८/०३	से	३	जुलाई	सूर्योदय	तक
८	जुलाई	१३/१३	से	९	जुलाई	सूर्योदय	तक
१०	जुलाई	१०/००	से	१२	जुलाई	सूर्योदय	तक

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१३	जुलाई	२८/०६	से	१४	जुलाई	सूर्योदय	तक
१५	जुलाई	सूर्योदय	से	१५	जुलाई	२७/१९	तक
२५	जुलाई	सूर्योदय	से	२५	जुलाई	२२/५०	तक
२९	जुलाई	सूर्योदय	से	२९	जुलाई	२५/४७	तक
३०	जुलाई	सूर्योदय	से	३०	जुलाई	२५/१२	तक
३	अगस्त	२०/०९	से	४	अगस्त	सूर्योदय	तक
५	अगस्त	सूर्योदय	से	५	अगस्त	१७/०४	तक
७	अगस्त	सूर्योदय	से	७	अगस्त	१४/१७	तक
८	अगस्त	सूर्योदय	से	९	अगस्त	सूर्योदय	तक
१०	अगस्त	११/३५	से	११	अगस्त	सूर्योदय	तक
१२	अगस्त	सूर्योदय	से	१२	अगस्त	११/३१	तक
१८	अगस्त	२३/००	से	१९	अगस्त	सूर्योदय	तक
२०	अगस्त	२८/५०	से	२१	अगस्त	सूर्योदय	तक
२२	अगस्त	सूर्योदय	से	२२	अगस्त	७/१९	तक
२६	अगस्त	सूर्योदय	से	२६	अगस्त	११/०८	तक
२७	अगस्त	सूर्योदय	से	२७	अगस्त	१०/२४	तक
३०	अगस्त	२७/२०	से	१	सितम्बर	सूर्योदय	तक
३	सितम्बर	१९/४२	से	४	सितम्बर	सूर्योदय	तक
५	सितम्बर	सूर्योदय	से	५	सितम्बर	१७/४४	तक
६	सितम्बर	१७/२५	से	७	सितम्बर	१७/३३	तक
१२	सितम्बर	२४/५३	से	१३	सितम्बर	सूर्योदय	तक
१५	सितम्बर	६/२४	से	१६	सितम्बर	सूर्योदय	तक
१७	सितम्बर	१२/२४	से	१८	सितम्बर	सूर्योदय	तक
२२	सितम्बर	२०/५९	से	२३	सितम्बर	सूर्योदय	तक
२७	सितम्बर	१२/५६	से	२९	सितम्बर	सूर्योदय	तक
१	अक्टूबर	सूर्योदय	से	२	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
४	अक्टूबर	सूर्योदय	से	५	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
१०	अक्टूबर	७/२२	से	११	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
१३	अक्टूबर	सूर्योदय	से	१३	अक्टूबर	१६/००	तक
१५	अक्टूबर	सूर्योदय	से	१५	अक्टूबर	२१/५५	तक

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१९	अक्टूबर	२९/४५	से	२०	अक्टूबर	३०/०६	तक
२३	अक्टूबर	२६/३०	से	२४	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
२५	अक्टूबर	सूर्योदय	से	२६	अक्टूबर	१८/०३	तक
२९	अक्टूबर	सूर्योदय	से	३०	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
१	नवम्बर	सूर्योदय	से	१	नवम्बर	२९/४२	तक
७	नवम्बर	सूर्योदय	से	७	नवम्बर	१६/०६	तक
१६	नवम्बर	१२/३३	से	१७	नवम्बर	१३/३३	तक
२०	नवम्बर	१२/२२	से	२१	नवम्बर	सूर्योदय	तक
२२	नवम्बर	सूर्योदय	से	२२	नवम्बर	२९/२२	तक
२४	नवम्बर	२३/१३	से	२५	नवम्बर	सूर्योदय	तक
२६	नवम्बर	सूर्योदय	से	२६	नवम्बर	१७/३९	तक
२९	नवम्बर	सूर्योदय	से	२९	नवम्बर	१३/४०	तक
२	दिसम्बर	१६/५९	से	३	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
१४	दिसम्बर	सूर्योदय	से	१४	दिसम्बर	१९/१४	तक
१८	दिसम्बर	सूर्योदय	से	१८	दिसम्बर	१८/४१	तक
२०	दिसम्बर	सूर्योदय	से	२०	दिसम्बर	१५/०७	तक
२२	दिसम्बर	१०/०५	से	२३	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
३०	दिसम्बर	सूर्योदय	से	३१	दिसम्बर	सूर्योदय	तक
४	जनवरी	१४/१८	से	५	जनवरी	सूर्योदय	तक
६	जनवरी	१९/२५	से	७	जनवरी	सूर्योदय	तक
१३	जनवरी	२५/०८	से	१४	जनवरी	सूर्योदय	तक
१५	जनवरी	२३/२६	से	१६	जनवरी	सूर्योदय	तक
१९	जनवरी	सूर्योदय	से	१९	जनवरी	१६/३६	तक
२७	जनवरी	सूर्योदय	से	२८	जनवरी	सूर्योदय	तक
३१	जनवरी	२२/१२	से	१	फरवरी	२५/०१	तक
३	फरवरी	सूर्योदय	से	३	फरवरी	२९/३४	तक
१०	फरवरी	७/०८	से	१०	फरवरी	३०/०४	तक
१२	फरवरी	सूर्योदय	से	१२	फरवरी	२७/२७	तक
१३	फरवरी	२६/००	से	१४	फरवरी	सूर्योदय	तक
१८	फरवरी	१९/४०	से	१९	फरवरी	सूर्योदय	तक

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१९	फरवरी	१९/०१	से	२०	फरवरी	सूर्योदय	तक
२४	फरवरी	सूर्योदय	से	२४	फरवरी	२२/३६	तक
२७	फरवरी	२३/२६	से	२९	फरवरी	९/२१	तक
२	मार्च	सूर्योदय	से	२	मार्च	१४/२५	तक
९	मार्च	सूर्योदय	से	९	मार्च	१३/४०	तक
११	मार्च	सूर्योदय	से	११	मार्च	९/४७	तक
१२	मार्च	७/५०	से	१३	मार्च	सूर्योदय	तक
१६	मार्च	२५/४७	से	१७	मार्च	२५/३७	तक
१८	मार्च	सूर्योदय	से	१८	मार्च	२५/५१	तक
२३	मार्च	सूर्योदय	से	२३	मार्च	६/४०	तक
२६	मार्च	१४/१५	से	२७	मार्च	१७/१२	तक
३०	मार्च	२५/०१	से	३१	मार्च	सूर्योदय	तक
३१	मार्च	२६/३८	से	१	अप्रैल	सूर्योदय	तक
६	अप्रैल	२१/०८	से	७	अप्रैल	सूर्योदय	तक

रवि योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
२१	मार्च	२२/२६	से	२२	मार्च	२०/०६	तक
२३	मार्च	१८/१४	से	२४	मार्च	१६/५९	तक
२६	मार्च	१६/३५	से	२८	मार्च	१८/५७	तक
३०	मार्च	२३/२९	से	३१	मार्च	२३/०५	तक
३१	मार्च	२६/१६	से	१	अप्रैल	२९/१५	तक
८	अप्रैल	२१/२९	से	९	अप्रैल	२२/५८	तक
१९	अप्रैल	२७/४६	से	२०	अप्रैल	२५/४५	तक
२१	अप्रैल	२४/२५	से	२२	अप्रैल	२३/५१	तक
२४	अप्रैल	२५/११	से	२६	अप्रैल	२९/२४	तक
२७	अप्रैल	२८/१३	से	२८	अप्रैल	८/१४	तक
३०	अप्रैल	१४/२५	से	१	मई	१७/२७	तक
८	मई	५/५६	से	९	मई	६/३३	तक
१९	मई	१०/११	से	२०	मई	८/५९	तक
२१	मई	८/३३	से	२२	मई	८/५९	तक
२४	मई	१२/१५	से	२७	मई	२०/५५	तक
२९	मई	२६/४७	से	३०	मई	२९/१७	तक
६	जून	१२/१३	से	७	जून	१२/०१	तक
१७	जून	१८/०७	से	१८	जून	१८/०४	तक
१९	जून	१८/४८	से	२०	जून	२०/१९	तक
२३	जून	२८/११	से	२६	जून	१०/०४	तक
२८	जून	१४/३७	से	२९	जून	१६/१०	तक
५	जुलाई	१६/४६	से	६	जुलाई	१५/०५	तक
६	जुलाई	१५/४८	से	७	जुलाई	१४/३७	तक
१६	जुलाई	२७/५०	से	१६	जुलाई	२९/०२	तक
१९	जुलाई	६/५३	से	२०	जुलाई	९/१७	तक
२०	जुलाई	१४/३२	से	२१	जुलाई	१२/०६	तक
२३	जुलाई	१८/००	से	२५	जुलाई	२२/५०	तक
२७	जुलाई	२५/२८	से	२८	जुलाई	२५/५४	तक
४	अगस्त	१८/३६	से	५	अगस्त	१७/०४	तक
१५	अगस्त	१५/१०	से	१६	अगस्त	१७/२५	तक
१७	अगस्त	११/०९	से	१७	अगस्त	२०/०५	तक
१८	अगस्त	२३/००	से	१९	अगस्त	२५/५९	तक
२२	अगस्त	७/१९	से	२४	अगस्त	१०/३६	तक
२६	अगस्त	११/०८	से	२७	अगस्त	१०/२४	तक
२	सितम्बर	२१/१६	से	३	सितम्बर	१९/४२	तक
१५	सितम्बर	६/२४	से	१५	सितम्बर	९/२४	तक
१७	सितम्बर	१२/२४	से	१८	सितम्बर	१५/११	तक
२०	सितम्बर	१९/२६	से	२२	सितम्बर	२०/५९	तक
२४	सितम्बर	१९/२९	से	२५	सितम्बर	१७/४५	तक
१	अक्टूबर	२४/४६	से	२	अक्टूबर	२३/३३	तक
१४	अक्टूबर	१९/०९	से	१५	अक्टूबर	२१/५५	तक
१६	अक्टूबर	२४/३६	से	१७	अक्टूबर	२६/५४	तक
१९	अक्टूबर	२९/४५	से	२१	अक्टूबर	२९/३९	तक
२३	अक्टूबर	२६/३०	से	२४	अक्टूबर	१२/०३	तक
२४	अक्टूबर	२४/०१	से	२५	अक्टूबर	२१/०९	तक
३०	अक्टूबर	३०/०२	से	३१	अक्टूबर	२९/२८	तक
१२	नवम्बर	३०/३२	से	१४	नवम्बर	८/५६	तक
१५	नवम्बर	१०/५८	से	१६	नवम्बर	१२/३३	तक
१८	नवम्बर	१३/५३	से	२१	नवम्बर	१०/३३	तक
२२	नवम्बर	२९/२२	से	२३	नवम्बर	२६/१९	तक
२६	नवम्बर	१३/४०	से	३०	नवम्बर	१३/५८	तक
१२	दिसम्बर	१६/३३	से	१३	दिसम्बर	१८/०५	तक
१४	दिसम्बर	१९/१४	से	१५	दिसम्बर	१९/५५	तक
१६	दिसम्बर	१३/२७	से	१६	दिसम्बर	२०/०५	तक
१८	दिसम्बर	१८/४१	से	२०	दिसम्बर	१५/०७	तक
२२	दिसम्बर	१०/०५	से	२३	दिसम्बर	७/२४	तक
२८	दिसम्बर	२३/४३	से	२९	दिसम्बर	१५/४३	तक
२९	दिसम्बर	२४/५८	से	३०	दिसम्बर	२६/५५	तक
१०	जनवरी	२४/५८	से	११	जनवरी	१७/३७	तक
११	जनवरी	२५/२४	से	१२	जनवरी	२५/२७	तक
१३	जनवरी	२५/०८	से	१४	जनवरी	२४/२८	तक
१६	जनवरी	२२/०५	से	१८	जनवरी	१८/३५	तक
२०	जनवरी	१४/३८	से	२१	जनवरी	१२/४८	तक
२८	जनवरी	१३/४८	से	२९	जनवरी	१६/२२	तक
१०	फरवरी	७/०८	से	१०	फरवरी	३०/०४	तक
११	फरवरी	२८/४९	से	१२	फरवरी	२७/२७	तक
१४	फरवरी	२४/३२	से	१६	फरवरी	२१/४७	तक
१८	फरवरी	१९/४०	से	१९	फरवरी	१९/०१	तक
१९	फरवरी	२७/३३	से	२०	फरवरी	१८/४४	तक
२६	फरवरी	२७/३२	से	२७	फरवरी	३०/२६	तक
१०	मार्च	११/४६	से	११	मार्च	९/४७	तक
१२	मार्च	७/५०	से	१२	मार्च	३०/०२	तक
१४	मार्च	२७/१४	से	१६	मार्च	२५/४७	तक
१७	मार्च	१८/१७	से	१७	मार्च	२५/३७	तक
१९	मार्च	२६/२७	से	२०	मार्च	२७/२८	तक
२७	मार्च	१७/१२	से	२८	मार्च	२०/०७	तक

गुरूपुष्य योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
४	अक्टूबर	२३/००	से	५	अक्टूबर	सूर्योदय	तक
१	नवम्बर	सूर्योदय	से	१	नवम्बर	२९/४२	तक
२९	नवम्बर	सूर्योदय	से	२९	नवम्बर	१३/४०	तक

रविपुष्य योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१७	जून	१८/०७	से	१८	जून	सूर्योदय	तक
१५	जुलाई	सूर्योदय	से	१५	जुलाई	२७/१९	तक
१२	अगस्त	सूर्योदय	से	१२	अगस्त	११/३१	तक
१६	मार्च	२५/४७	से	१७	मार्च	सूर्योदय	तक

द्विपुष्कर योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
२४	मार्च	१६/५९	से	२५	मार्च	१२/११	तक
३	अप्रैल	२५/२०	से	४	अप्रैल	सूर्योदय	तक
२७	मई	२२/२५	से	२८	मई	सूर्योदय	तक
२१	जुलाई	१२/०६	से	२१	जुलाई	२२/४६	तक
३१	जुलाई	सूर्योदय	से	३१	जुलाई	२४/१६	तक
२३	सितम्बर	२०/३६	से	२४	सितम्बर	सूर्योदय	तक
२	अक्टूबर	सूर्योदय	से	२	अक्टूबर	२३/३३	तक
१७	नवम्बर	१३/३३	से	१७	नवम्बर	१६/०८	तक
२५	नवम्बर	२०/१५	से	२६	नवम्बर	सूर्योदय	तक
१९	जनवरी	१६/३६	से	१९	जनवरी	२६/१६	तक
२९	जनवरी	सूर्योदय	से	२९	जनवरी	१६/२२	तक
२३	मार्च	६/४०	से	२३	मार्च	२६/५४	तक

त्रिपुष्कर योग

ता.	मास.	घं. मि.	से	ता.	मा.	घं. मि.	तक
१४	अप्रैल	२०/२०	से	१४	अप्रैल	२७/५३	तक
२२	अप्रैल	२४/२४	से	२३	अप्रैल	सूर्योदय	तक
२८	अप्रैल	८/१४	से	२९	अप्रैल	८/१०	तक
८	मई	२२/४९	से	९	मई	सूर्योदय	तक
१६	जून	१८/५४	से	१६	जून	२८/१९	तक
२६	जून	१५/००	से	२७	जून	सूर्योदय	तक
१	जुलाई	१९/११	से	२	जुलाई	सूर्योदय	तक
१०	जुलाई	२६/०१	से	११	जुलाई	सूर्योदय	तक
१९	अगस्त	२५/५९	से	२०	अगस्त	सूर्योदय	तक
२५	अगस्त	११/१३	से	२५	अगस्त	२१/०२	तक
२	सितम्बर	२३/२२	से	३	सितम्बर	सूर्योदय	तक
२३	अक्टूबर	सूर्योदय	से	२३	अक्टूबर	२०/५०	तक
२७	अक्टूबर	१४/५५	से	२७	अक्टूबर	२६/३७	तक
६	नवम्बर	सूर्योदय	से	६	नवम्बर	१३/१४	तक
१६	दिसम्बर	२०/०५	से	१६	दिसम्बर	२८/२०	तक
२५	दिसम्बर	सूर्योदय	से	२५	दिसम्बर	२४/४८	तक
२९	दिसम्बर	२४/५८	से	३०	दिसम्बर	२४/२४	तक
१७	फरवरी	२०/३७	से	१८	फरवरी	सूर्योदय	तक
२३	फरवरी	सूर्योदय	से	२३	फरवरी	९/१६	तक
४	मार्च	सूर्योदय	से	४	मार्च	१७/१९	तक

पृष्ठ २०७ का शेष

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मार्च २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
२०	रेवती	४	०१	९	१७	१४	३४	१९	५१
२१	अश्वि	१	०८	०६	२७	११	४६	१७	०६
२१।२२	भरणी	२२	२६	०३	४९	०९	१३	१४	३९
२२।२३	कृतिका	२०	०६	०१	३५	०७	०६	१२	३९
२३।२४	रोहिणी	१८	१४	२३	५२	०५	३२	११	१५
२४।२५	मृगशिर	१६	५९	२२	४७	०४	३८	१०	३१
२५।२६	आर्द्रा	१६	२६	२२	२४	०४	२५	१०	२९
२६।२७	पुनर्वसु	१६	३५	२२	४४	०४	५६	११	१०
२७।२८	पुष्य	१७	२६	२३	४६	०६	०८	१२	३१
२८।२९	आश्लेषा	१८	५७	०१	२५	०७	५५	१४	२७
२९।३०	मघा	२१	००	०३	३५	१०	१२	१६	५०
३०।३१	पूफा	२३	२९	०६	०९	१२	५१	१९	३३

पृष्ठ २१० का शेष

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अप्रैल २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	श्रवण	२	३८	०८	५५	१५	१०	२१	२१
२	धनिष्ठा	३	२९	०९	३५	१५	३८	२१	३७
३	शतभिषा	३	३४	०९	२८	१५	१८	२१	०६
४	पूभा	२	५१	०८	३४	१४	१५	१९	५३
५	उभा	१	२८	०७	०२	१२	३३	१८	०३
५।६	रेवती	२३	३०	०४	५७	१०	२२	१५	४६
६।७	अश्वि	२१	०८	०२	३१	०७	५२	१३	१३

पृष्ठ १४८ का शेष

ग्रह	स्फुटांश	नवांश राशि	ग्रह	स्फुटांश	नवांश राशि
सू.	६।२५।५४।४७	२	चं.	८।२७।२४।२६	९
मं.	४।२१।२०।३४	७	बु.	६।१०।१४।३४	१०
गु.	६।१३।५७।३८	११	शु.	६।२४।९।५६	२
श.	९।२८।४६।५२	६	रा.	९।११।५६।५७	१
के.	३।११।५६।५७	७	लग्न	५।२२।१४	४

जन्म लग्न ५।२२।१४

सू.बु.गु.शु.   मं. ५   ८   के.   ६   ३   चं. ९   १२   श.   २   ११   १

विवाह :- ९ मार्च, १९५०

चंद्र महादशा में सूर्य अन्तर में हुआ। चन्द्र कुण्डली में षड्बल में सर्वाधिक बली है और वर्गोत्तमी भी। उसकी दशा विवाह कारक भी है चतुर्थ स्थान में स्थित। अत: विवाह का निर्णय भी चन्द्र से करेंगे। चन्द्र से सप्तमेश बुध है जो तुला राशि तथा मकर नवांश में है। मकर राशि की दो त्रिकोण राशियाँ वृष तथा कन्या हैं। अत: गुरु का मकर राशि में भ्रमण बुध के स्फुट अंश पर विवाह दर्शाता है। परन्तु ९ मार्च को गुरु मकर में २९° पर कन्या नवांश में था। इस कुंडली में बुध शुक्र की राशि में है तथा शुक्र इसी राशि तुला में है। इस प्रकार शुक्र विवाह का अनित्य कारक भी हुआ। वह अपने नवांश वृष में है। अत: वृष नवांश तथा तुला राशि में होने से बलशाली। परन्तु अस्त होने से दोष भी है। गुरु की भांति ही शुक्र भी ९ मार्च को मकर राशि में भ्रमण कर रहा था। उसका स्पष्टांश ९।१५।२१ था जो वृष नवांश दर्शाता है। वृष नवांश में होना श्रेष्ठ है क्योंकि यह मकर का त्रिकोण ही है। इसी प्रकार विवाह के दिन गुरु मकर राशि तथा इसकी त्रिकोण राशि कन्या के नवांश में विवाह दर्शाता है।

आशा है इस पद्धति को अपनाने से पाठकगण विवाह की तिथि भी निश्चित रूप से बता सकेंगे। यदि पाठकों ने इस विधि को पसन्द किया तो आगामी वर्ष अन्य प्रसंग पर इस विधि को प्रयोग करने का लेख प्रस्तुत किया जायेगा।

*सम्पर्क सूत्र- **ओमप्रकाश पालीवाल,** ३२७८/१५ डी, चंडीगढ़-१६००१५ दूरभाष: (०१७२) २५४०९५८,*

श्रीगणेशाम्बागुरुभ्यो नमः।

अचिन्त्याव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।
समस्ताजगदाधार मूर्त्तये ब्रह्मणे नमः॥१॥
विचार्य सम्यग्गणितं सुनिश्चितं नवैः प्रकारैश्च तथा पुरातनैः,
विद्वद्वरः श्रीहरदेव शर्मा सुधाकरश्चैव तथा विपश्चित्।
पंचांगरत्नं प्रसरन्मयूखं श्रीकेतकीदृग्गणितेन युक्तम्,
लोकोपकाराय कृतप्रयत्न प्रचक्रतु र्मोहविनाशदक्षम्॥२॥
प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं कुर्याद् ध्वजारोपणम् ,
स्नानं मंगलमाचरेद् द्विजवरैः सार्धं सुपुजोत्सवम्।
देवानां गुरुयोषितां च शिशवोऽलंकारवस्त्रादिभिः,
सम्पूज्यो गणकः फलं च श्रृणुयात्तस्माच्च लाभप्रदम्॥३॥
तैलाभ्यंगं, स्नानमादौ च कृत्वा पीयूषोत्थं पारिभद्रस्य पत्रम्,
भक्षेत्सौख्यं मानवो व्याधिनाशं विद्यायुः श्री लभ्यते वर्षमूले॥४॥
पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः,
सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः॥५॥
मरीचिहिंगुलवणमजमोदा सशर्करैः।
तिंतिड़ीजीरकश्चैव भक्षयेद्रोगशान्तये॥६॥

चैत्र शुक्ल १ को नूतन संवत्सर प्रारम्भ होता है। इस दिन प्रत्येक घर पर ध्वज (अपने-अपने सम्प्रदायानुसार जो ध्वज हो वह) लगायें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें। मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा कर, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र आभूषण आदि परिधान कर उत्सव मनावें। ज्योतिषीजी का सत्कार कर उनसे नूतन संवत्सर का फल श्रवण करें। प्रातःकाल में कटुनिम्ब के कोमल पत्र और पुष्प लावें, उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), अजवायन, जीरा और खांड मिलाकर, चूर्ण बनावें, कुछ इमली भी मिलावें और वह भक्षण करें। इस प्रयोग से वर्ष भर में रक्त विकार नहीं होता और अनेक रोगों की शान्ति होती है।

पंचांगस्थं गणेशं द्विजगणकयुतं पूजयित्वार्थिवृन्दनम्,
सन्तोष्यानकदानैः परमसुखयुतो भोजयित्वान्नमिष्ठम्॥
श्रृण्वन् गीतानि वाद्यानि च विविधकथास्तद्दिनं सक्रमेच्च,
क्रीड़न् स्त्रीभिश्च सार्धं निशि रहसि नरो यावदब्द सुखी स्यात्॥७॥

पंचांगस्थ गणेश ब्राह्मण और ज्योतिषीजी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें। मिष्ठान आदि भोजन करावें। गीत (गायन) वाद्य कथा श्रवण आदि कर यह सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। गृहस्थियों को विलासयुक्त आनन्द पूर्वक वर्षारम्भ दिन व्यतीत करने से सम्पूर्ण वर्ष आनन्दमय जाता है।

अथ युगानां व्यवस्था- चतुर्युगसहस्राणि ब्राह्मणो दिनमुच्यते, तेषु चतुर्दश मनवो भवन्ति। तन्नामानि १ स्वायम्भुवः, २ स्वारोचिषः, ३ औत्तमः, ४ तामसः, ५ रैवतः, ६ चाक्षुषः, ७ वैवस्वतः, ८ सावर्णिः, ९ दक्षसावर्णिः, १० ब्रह्मसावर्णिः, ११ धर्मसावर्णिः, १२ रुद्रसावर्णिः, १३ देवसावर्णिः, १४ इन्द्रसावर्णिः। तत्रैकैकस्य मनोरेकसप्ततिमहायुगानि भवन्ति।

महायुगप्रमाणं- विंशतिसहस्राधिक त्रिचत्वारिंशल्लक्षमिताब्दाः, एवं चाक्षुषपर्यन्तं षण्मनवो गताः, वर्तमान वैवस्वतमनुः सप्तमः। तत्र सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। वर्तमानमष्टाविंशतितमं महायुगम्।

चार युग एक हजार बार निकल जाने पर ब्रह्माजी का एक दिन होता है, इन्हीं दिनों के मान से ब्रह्मा की आयु १०० वर्ष की होती है। इस समय ब्रह्मा की आयु के ५० वर्ष व्यतीत होकर ५१वें वर्ष के प्रथम दिन का उदय होकर १३ घटी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल व्यतीत हो चुके हैं। ब्रह्माजी के एक दिन में उपर्युक्त १४ मनु होते हैं और १ मनु में ७१ महायुग होते हैं। एक महायुग के सौर मानुष वर्ष ४३ लक्ष २० हजार हैं, इस प्रकार चाक्षुष पर्यन्त ६ मनु निकल चुके और ७वां मनु वैवस्वत मन्वन्तर चालू है। इस मनु में २७ महायुग निकलकर २८वां महायुग चल रहा है।

कृतयुगप्रमाणम् १७२८००, त्रेतायुगप्रमाणं १२९६०००, द्वापरयुगप्रमाणम् ८६४०००, कलियुगप्रमाणम् ४३२०००, तत्मध्ये गतकलिः ५१०८ शेषकलिः ४२६८९२ कलियुगमध्ये षट् शककर्तारः। आदौ इन्द्रप्रस्थे युधिष्ठिर शकः ३०४४। द्वितीयोज्जयिन्यां विक्रमस्तस्य शकः १३५। तृतीयः प्रतिष्ठान नगरे शालिवाहनस्य शकः १८०००। चतुर्थो वैतरिण्यां विजयाभिनन्दनस्तस्य शकः १००००। पंचमो गौड़देशे धारातीर्थे नागार्जुनस्तस्यः शकः ४००००० चतुर्लक्षवर्षाणि। षष्ठः करवीरपत्तने कर्णाटके कल्क्यवतारस्तस्य शकः ८२१ वर्षाणि।

अथ सत्ययुगादीनां व्यवस्था- सत्ययुग- कार्तिक शुक्ल नवमी बुधवार को प्रथम प्रहर श्रवण नक्षत्र वृद्धियोग में सत्युग का आरम्भ हुआ। इसकी आयु १७२८००० वर्ष की थी। इसमें श्री विष्णु के मत्स्य, कच्छप, वराह और नृसिंह ये ४ अवतार हुए। श्रीमत्स्यावतार ने वेदों के चोर शंखासुर को मारकर ब्रह्मा को वेद लाकर दिये। भगवान् कच्छप ने पृथ्वी की रक्षार्थ मंदराचल को पीठ पर धारण कर एवं देव-दैत्यों द्वारा समुद्र मन्थन कराकर चौदह रत्न प्रकट किये। श्रीवराहावतार ने हिरण्याक्ष का वध करके रसातल में गई हुई पृथ्वी का उद्धार किया। श्री नृसिंहावतार ने हिरण्यकशिपु का वध करके भक्त प्रहलाद की रक्षा की। इस युग में धर्म अपने चारों पादों में स्थिर था। गौएं कामधेनु के समान होती थीं। प्रायः स्वर्ण के पात्र और सिक्कों के स्थान में रत्नों का परस्पर व्यवहार था, इच्छित वर्षा होती थी, पृथ्वी सम्पूर्ण सस्य और रत्नों से परिपूर्ण थी, ब्राह्मण चारों वेदों के ज्ञाता तथा सत्यभाषी, परद्रव्य, परस्त्री पराङ्मुख और त्यागी होते थे, शाप देने और वर प्रदान करने में भी समर्थ थे। स्त्रियां पद्मिनी और पतिव्रता होती थीं। शासक-वर्ग (राज्यवंश) न्यापरायण थे और प्रजा को औरस पुत्रवत्

समझते हुए राज्य करते थे। वैश्य लोग सत्यवक्ता, धर्मात्मा व्यापारी और शूद्र लोग सेवाधर्म में निरत रहते थे। इस युग में पुष्कर प्रधान तीर्थ था, प्रहलाद आदि दैत्यवंशी राजाओं की तीनों की तीनों लोकों में पहुँच थी।

त्रेतायुग- वैशाख शुक्ला तृतीया चन्द्रवार के द्वितीय प्रहर रोहिणी नक्षत्र शोभन योग में त्रेतायुग आरम्भ हुआ। इसकी आयु १२९६००० वर्ष थी, इसमें भगवान के श्रीवामन, श्रीपरशुराम और श्रीरामचन्द्रजी ये तीन अवतार हुए। श्रीवामन ने राजा बली से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर समग्र पृथ्वी को तीन पैर में नाप बली को पाताल का राज्य दिया। श्रीभगवान् परशुराम ने कर्तव्यविमुख एवं अत्याचारी दुष्ट राजाओं का नाश करके २१ बार रामराज्य स्थापित कर सम्पूर्ण पृथ्वी का दान कर दिया था। श्रीरामचन्द्र जी ने महाभिमानी रावण का वध करके देवताओं और ऋषियों को निर्भय किया। इस युग में धर्म तीन पाद ही रह गया था। गौएं त्रिकाल् दुग्ध देने वाली होती थी। प्रायः चांदी के पात्र और स्वर्ण के सिक्के का व्यवहार था, वर्षा समय पर होती थी। पृथ्वी सस्य और स्वर्ण से भरपूर थी। ब्राह्मण तीन वेदों के वक्ता और किंचिन्यून तपोनिष्ठ, परस्त्री परद्रव्य से पराङ्मुख होते थे, वे शाप देने में समर्थ थे, स्त्रियां चरित्रिणी पतिव्रता होती थी। इस युग में हरिश्चन्द्र, इक्ष्वाकु आदि सूर्यवंशी धर्मात्मा क्षत्रियों का राज्य था। विचित्र विमानों द्वारा वे इन्द्रलोक पर्यन्त भी जाते थे। वैश्य लोग सत्यवादी और सत्य की तुला में तौलते थे। शूद्र स्वधर्मानुसार सेवा में तत्पर रहते थे। इस युग में तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर- माघ कृष्णा ३० शुक्रवार तृतीय प्रहर धनिष्ठा नक्षत्र वरियान योग में द्वापर युग का प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ८६४००० वर्ष थी। इसमें भगवान श्री कृष्ण और श्रीबलराम के दो अवतार हुए। भगवान श्रीकृष्ण ने दैत्यराज कंसादि दुष्टों का वध किया तथा संसारार्णवमग्न जीवों के उद्धार्थ अर्जुन को लक्ष्य करके गीता ज्ञान का उपदेश दिया। श्री बलराजी ने दुष्टों का नाश करके धर्म का उद्धार किया। इस युग में धर्म द्विपाद ही रह गया। गौएं दो समय घटपूर्ण दुग्ध देती थीं। प्रायः ताम्र पित्तल के पात्र और स्वर्ण तथा रौप्यमयी मुद्राओं का व्यवहार होने लगा। वर्षा समय पर हो जाती थी, पृथ्वी सस्य और रौप्यमयी थी ब्राह्मण लोग दो वेदों के पारंगत और विशेषतया सत्यवक्ता तथा तप यज्ञ देवपूजन आदि करने वाले किंचित् लोभयुक्त वाक्यसिद्धि वाले अर्थात वर और शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां शंखिनी जाति की सुशीला धर्मयुक्ता होती थीं। इस युग में पांडु युधिष्ठिर धर्मपरायण चन्द्रवंशी राजा हुए, जिनका सुमेरु-पर्यन्त दमन था। प्रायः चारों वर्ण अपने वर्णश्रम धर्म पर स्थिर थे, परस्त्री, परद्रव्य से लोग डरते थे। इस युग में तीर्थ कुरुक्षेत्र था।

कलियुग- भाद्रपद कृष्ण १३ रविवार अर्धरात्रि के समय अश्लेषा नक्षत्र व्यतिपात योग में कलियुग प्रारम्भ हुआ। इसकी आयु ४३२००० वर्ष की है। इसमें भगवान् के अवतार श्रीबुद्ध, श्रीकल्कि (निष्कलंक) हैं। जिसमें अहिंसा धर्म के उद्धारक श्री बुद्धावतार तो हो चुका, और कल्कि-अवतार अब कलियुग के ८२१ वर्ष शेष रहेंगे तब सम्भल ग्राम में विष्णुयश ब्राह्मण के घर होगा। इस अवतार द्वारा दुष्टों का नाश होकर पृथ्वी पर लुप्त धर्म की स्थापना के साथ-साथ न्यायपरायण क्षत्रिय राज्य भी स्थापित होगा। इस युग में एक पाद ही धर्म रह जायेगा। गौएं दूध कम देंगी। मृणमय पात्र और ताम्रमय मुद्रा प्रायः चलेगी। अतिवृष्टि और अनावृष्टि से देशों में भय का संचार होगा। ब्राह्मण लोग वेदज्ञान से रहित तथा स्नान सन्ध्या तपश्चर्या से भी हीन होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म कर्म को तिलांजलि दे देंगे। वैश्य लोग व्यापार में असत्य व्यवहार विशेष रूप से उपयोग में लाने लगेंगे। शूद्र लोग पांखंडी होकर बहुधा उच्चवर्ण वालों के उपदेष्टा होंगे। प्रजा में वर्णसंकरत्व बढ़ जायेगा। धूर्तों की पूजा होगी, अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। स्त्रियां अधिकतर हस्तिनी होंगी, व्यभिचारिणी स्त्री अपने को सती कहेंगी। पतिव्रताकवचित देखने में आवेगी, पुरुष स्त्रियों के वश में होकर चलेंगे, स्त्रियों के छोटी आयु में गर्भ होने लगेगा, पिता कन्या-विक्रय करेंगे, गौ-ब्राह्मण की हत्या से भय न करेंगे। पुत्र का माता-पिता के साथ द्रव्य के कारण प्रेम रहेगा। राज्यव्यवस्था में धर्म का स्थान शून्य के बराबर होगा। धर्म-कर्म और तीर्थ पर लोगों की श्रद्धा कम होगी। इस युग में प्रधान तीर्थ गंगा होगी।

अथ कलिरूपं चोक्तं चिरन्तनैः- पिशाचवदनः क्रूरः कलिश्च कलहप्रियः। धृत्वा वामकरे शिश्नं दक्षे जिह्वां च नृत्यति।

अथ कलिमहात्यम्- धर्मः प्रव्रजितस्तपः प्रचलितं सत्यं च दूरगतं, पृथ्वी मन्दफला नराः कपटनिश्चित च शाठ्योर्जितम्। राजानोऽर्थपरा ह्यरक्षणपराः पुत्राः पितुर्द्वेषिणः। साधुः सीदति दुर्जनः प्रभवति प्राप्ते कलौ दुर्युगे।। निर्बीजा पृथिवी निरोमधिरसा नीचा महत्वं गताः, भूपाला निजधर्मकर्म रहिता विप्राः कुमार्गेगताः। भार्याभर्तुविरोधिनी पररता पुत्रापितुर्द्वेषिणः, हा! कष्टं खलु वर्तते कलियुगे धन्या मृता ये नराः।। न देवे देवत्वं कपटपटवस्तापसजनाः, जनो मिथ्यावादी विरलतरवृष्टिर्जलधरः। प्रसन्ना नीचा अवनिपतयो दुष्टमतयो, जनाः शिष्टा नष्टा अहह! कलिकालो विलसति।।

कलौ गंवायं स्थितिः- पृथिवी गंगया हीना भविष्यत्यन्तिमे कलौ, तदेव विष्णुस्त्यजति मेदिनी नरपुंगव! भगीरथ प्रति गंगावाक्यं च- यावद्धरण्यां तुलसीप्रपूज्यते गुरुर्नभस्थो दिवि कल्पपादपः। यावत्समुद्रे बड़वानलश्च वसामि तावत्तव चक्रखाते। इति। कलौ दशसहस्राणीतिवाक्यमन्तिमकलौ ज्ञेयम्।

अथ संवत्सर वर्ष राजादि फलम्

अथ श्रीमन्नृपति चक्र चूड़ामणि श्री विक्रमादित्यानां राज्य सिंहासनादतीताब्दानि तत् संवत्सरामिद्यः २०६४ तथा च श्री श्रीमन्नृपतिमुकुटमणि शकजाति यवन निर्बीजक शालिवाहन राज्यादुगत-हनानि तच्छाकामिद्यः १९२९ ईसवीय सन् २००७-२००८ भारतीय गणराज्य संवत्सर ५८-५९ श्रीकृष्ण संवत् ५२४३ हिजरी सन् १४२८-२९ श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत्सर २५३३-३४ वर्षारम्भ गुरुमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये विष्णुविंशतिकायां शर्वरी नाम संवत्सरः।

अथास्मिन वर्षे सृष्टितोसौरगताब्दा १९५५८८५१०८, कल्पगताब्दाः १९७२९४९१०८, गतकलिः ५१०८, भोग्यकलिः ४२६८९२, कलौगङ्गैवतीर्थ बौद्धावतारः। मेषाऽर्क दिवसे केतकी अहर्गण ५४६१, केतकी वेधसिद्ध चित्रापक्षीय अयनांशाः २३।५७।३४ तत्र षष्ट्यब्दानां मध्ये विष्णुविंशतिकायां शर्वरी नाम संवत्सरः तस्यः भुक्तमासादि ८।१७।४०।१७ भोग्यमासादि ३।१२।१९।४३ अथास्मिन वर्षे अधिकारिणः।। राजा-चन्द्र, मन्त्री-शनि, पूर्वधान्येश-चन्द्र, पश्चिमधान्येश-सूर्य, मेघेश-शुक्र, रसेश-बुध, नीरसेश-चन्द्र, फलेश-शुक्र, धनेश-चन्द्र, दुर्गेश-शुक्र।।

शर्वरी नाम संवत्सर फल -

शर्वरीवत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्घवृष्टिभिः।
जनाश्चसुखिनः सर्वेराजानः स्यु र्विवैरिणः।।

शर्वरी संवत्सर में अन्न और वर्षा से पृथ्वी पूर्ण हो। मनुष्य सुखी रहें और शासनाध्यक्षों में परस्पर विशेष विरोध रहे।

संवत्सर का विशेष फल -भौमः- स्वामी वर्षाल्पा, प्रजाप्रलयः, राज्ञां विरोधः। चैत्रादिमासत्रये अन्नसमता, आषाढद्वये महामेघः परं खंडवृष्टिः अन्नसमर्घता भाद्रप्रदे वर्षा नास्ति, राजपीड़ा। लोकेषु आश्विने रोग पीड़ा अन्नकलसिकां पश्चिमायां दुर्भिक्षं पूर्वस्यां सुभिक्षं, कार्तिकादि मासद्वये अन्नं महर्घं पौषादि मासत्रये धान्यं समर्घं।

राजा चन्द्र फलम् -

चन्द्रे नृपे मङ्गलशोभनानि प्रभूतवृष्टिः प्रचुरं च धान्यम्।
सौख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिजरा नराणाम्।।

वर्ष का राजा चन्द्रमा हो तो लोगों के शुभ मंगल हो। वर्षा अधिक हो, फसलें प्रचुर परिमाण में हो। जनता सुखी रहे, उनमें परस्पर सद्भाव तथा स्नेह रहे शासक वर्ग की प्रतिष्ठा बढ़े। जनता निरोग रहे।

मंत्री शनि फलम् -

रविसुते यदि मंत्रिणि प्रार्थिवाः विनय-संरहिताः बहु-दुःखदाः।
न जलदा जलदा जनतापदा जनपदेषु सुखं न धनं क्वचित्।।

शनि मन्त्री हो तो शासकों में विनम्रता का अभाव रहे। शासकों के कठोर एवं निर्दयतापूर्ण व्यवहार से जनता में दुःख और असन्तोष की भावना रहे। मेघों से पर्याप्त वर्षा न हो मनुष्यों में सुख और धन का अभाव रहे।

सस्येश चन्द्र फलम् -

सस्याधिपे शीतकरे प्रजासुखं मेघ पयो मुञ्चति गोपगोधुक्।
देवद्विजाराधनतत्परा नृपा धरा भवेद्धान्य धनौघ पूर्णा।।

यदि चन्द्रमा सस्येश हो तो प्रजा सुखी रहे। वृष्टि पर्याप्त मात्रा में हो। दूध आदि पदार्थ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हों। शासक वर्ग तथा संभ्रान्त वर्ग देव-द्विजों की उपासना तथा सम्मान करें। पृथ्वी पर धन-धान्य अधिक हों।

धान्येश प. धा. सूर्य फलम् -

पश्चाद्धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यं तदा नहि।
विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वरपीडनम्।।

सूर्य के धान्येश होने से शीतकाल की फसलें अल्प मात्रा में होती हैं। शासकों में परस्पर विग्रह हो, अन्न महंगा हो। जनता ज्वर आदि की रोग पीड़ा से ग्रस्त हो।

मेघेश शुक्र फलम् -

भृगुसुतो जलदस्य पतिर्यदा जलमुचो जलदादि विशोभनाः।
धन-निधानयुता द्विजपालकाः नृपतयो जनता सुखदायकाः।।

शुक्र मेघेश हो तो मेघ पर्याप्त वर्षा करते हैं। शासक वर्ग विप्रो और विद्वानों की सेवा करें तथा धर्मपरायण होकर जनता की सुख समृद्धि की बढ़ोतरी करे।

रसेश बुध फलम् -

रसपतौ द्विजराजसुते मही सुलभधान्य घृतादियुता जनाः।
प्रमुदिताः वरनायक पालिता बहुजलाखिल देशसुरक्षिताः।।

बुध के रसेश होने से अन्न, घी पर्याप्त मात्रा में सुलभ हो। वर्षा पर्याप्त परिमाण में उचित समय पर हो। जननायक, नेतावर्ग शासन को सुचारू रूप से चलायें तथा राष्ट्र को सुरक्षित रखें।

नीरसेश चन्द्र फलम् -

शुक्ल वर्णादिवस्तूनां मुक्तारजत वाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत शशांके नीरसा धिपे।।

नीरसेश चन्द्रमा हो तो सफेद रंग की वस्तुएं, चांदी, मोती और वस्त्र महंगे हों।

फलेश शुक्र फलम् -

यदि फलस्य पतौ भृगुजे धरा मृदु कुमार महीरुहराशयः।
बहुफला नरनाथसुभोगदा द्विजवराः श्रुतिपाठ परायणाः।।

शुक्र फलेश हो तो भूमि पर कोमल घास, शाक, पुष्पों, फलों की फसलें अधिक हों। शासकों को विशेष भोग्य पदार्थ प्राप्त हो। धर्म परायण लोग, वेद पाठ, धार्मिकता की ओर अधिक प्रवृत्त हों।

धनेश चन्द्र फलम् -

धनपतिर्मृगलांछनको यदा रसचय क्रय विक्रय तो धनम्।
वसनशालि सुगंध रसं बहुद्रविणतैल घृतं नृप सौख्यदम्।।

चन्द्रमा धनेश हो तो क्रय-विक्रय में धन संग्रह हो। व्यापार में पर्याप्त लाभ हो। वस्त्र, चावल, घी-तैल, सुगन्धित पदार्थ, रसादि वस्तुओं के व्यापारी विशेष लाभान्वित हो। शासक वर्ग सुख सुविधा से सम्पन्न रहे।

दुर्गेश शुक्र फलम् -

नगर देश विशेषपतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्यकरो मतः।
विनयवाणिजगेह समः सुखोनगवने निकटेऽपि च दूरतः।।

शुक्र दुर्गेश हो तो शासकों को अनेक प्रकार की सुख सुविधा उपलब्ध हो। व्यापारी सुखी रहें। नगरों और पर्वतों-वनों में समान सुख मिले।

वर्षनाम ज्येष्ठ का फलम् -

ज्येष्ठे जातिकुलधनश्रेणीश्रेष्ठा नृपाः सधर्मज्ञाः।
पीड्यन्ते धान्यानि च हिंत्वा कडगुं शमीजातिम्।।

ज्येष्ठ नाम संवत्सर में अच्छे कुल में उत्पन्न, अति धनी, बहुतों में प्रधान, शासक लोग, धर्म को जानने वाले और कंगनी तथा शमी के अतिरिक्त सब धान्य पीड़ित होते हैं।

चतुर्मेघ - इस वर्ष **'द्रोण'** नाम का मेघ है।

'द्रोणे वर्षति सर्वदा' के अनुसार वर्षा विपुल परिमाण में होगी। जलप्लावन, अतिवृष्टि के कारण कुछ स्थलों पर क्षति होगी।

महीशाः स्वसंपत्तिवृद्ध्या समेताः समस्ता मही भूरिधान्येनयुक्ता।
यदा जायते द्रोणनामा पयोदस्तदा देवराजो भवेत्सत्प्रयोदः।।

द्रोण मेघ होने से राजकोष भरे रहें। समस्त पृथ्वी पर धन-धान्य बहुत हों तथा वर्षा भी अच्छी मात्रा में हो।

नवमेघ - नवमेघों में इस वर्ष **'नील'** नाम का मेघ है।

सत्पयोदिशतिगोकुल पूर्णा वस्त्राखिल मही परिपूर्णा।
नीलनाम्निजलदे जलवृष्टिर्जायते सकल मानव तुष्टिः।।

नील नाम का मेघ हो तो वर्षा उत्तम व पर्याप्त मात्रा में हो। जनता समृद्ध और सुखी हो। दूध पर्याप्त परिमाण में उपलब्ध हो। रुई-कपास आदि अधिक हो।

द्वादश नाग - इस संवत्सर में **'वज्रदंष्ट्र'** नाम का नाग है।

यत्र संवत्सरे नागो वज्रदंष्ट्राभि धानकः।
तत्रांबुवर्षणं नैव सर्वसस्य विनाशनम्।

वज्रदंष्ट्र नाग हो तो उस वर्ष जल नहीं बरसे और फसलें सूख जाएं।

रोहिणी निवास - इस वर्ष रोहिणी निवास **'समुद्र'** पर है।

यदा पयोनिधिस्थलेगतोविरंचिभंतदा।
अतीववर्षणं भवेत्समस्त धान्य वर्द्धनम।।

समुद्र में रोहिणी के वास से अत्यन्त वर्षा होती है और सब अनाज फसलें बड़ी मात्रा में उत्पन्न होती हैं।

समय निवास - इस वर्ष समय का निवास **'माली'** के घर में है। इसके फलस्वरूप वर्षा अच्छी मात्रा में हो। पुष्प, शाक, सब्जी आदि पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न होंगी।

समय वाहन - इस वर्ष समय वाहन **'मृग'** है। पृथ्वी पर वर्षा अधिक होगी। कुछ स्थानों पर जलप्लावन से क्षति की सम्भावना रहेगी। भूमि पर फल, पुष्प धान्य प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होंगे।

वर्षा आदि के विश्वामान - वर्षा १५, धान्य ५, तृण १५, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ७, तृषा १३, निद्रा ९, आलस्य ५, उद्यम ५, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रत्व १३, पाप ११, पुण्य १५, व्याधि १३, व्याधिनाश ९, आचार ७, अनाचार ११, मृत्यु ७, जन्म १५, देशोपद्रव ३, देश स्वास्थ्य ७, चौर १३, चौरनाश ५, अग्नि १, अग्निशान्ति ३, उद्भिज १५, जरायुज ३, अण्डज ५, श्वेदज ७, टिड्डी ९, शुक १५, मूषक १९, स्वर्ण १५, ताम्र १३, स्वचक्र ११, परचक्र १३, वृष्टि १५, वृष्टि नाश ५, उत्पत्ति विश्वा ८७, खपति विश्वा ९६, सम्वत् विश्वा २०, सोमवती अमावस्या ०।

वर्ष स्तम्भ चतुष्टय विचार - इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का योग ३ प्रतिशत है। जलस्तम्भ का परिमाण नगण्य है। अनेक क्षेत्रों में जल का अभाव अनुभव हो सकता है। भूमिगत जल का स्तर कुछ क्षेत्रों में नीचा जा सकने की सम्भावना रहेगी। पेयजल की आपूर्ति में बाधा तथा कमी अनुभव हो सकती है। वैशाख शुक्ल

२९

प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का योग लगभग २० प्रतिशत है। तृण स्तम्भ दुर्बल है। यद्यपि तृण स्तम्भ का परिमाण अल्प है किन्तु अन्य कारकों रोहिणी वास, चतुर्मेघ, नवमेघ विचार, समय वाहन आदि के विचार से क्षतिपूर्ति की सम्भावना है तथापि शासन को पशुओं के चारे की समुचित व्यवस्था पहले से कर लेना हितावह होगा। ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का योग ५४ प्रतिशत है। वायु स्तम्भ लगभग आधा बना है। वर्षा काल में मेघ संचालन उचित परिमाण में होगा तथा वर्षा के अनुकूल स्थिति निर्मित होगी। कुछ स्थानों पर झंझावात से हानि की सम्भावना रहेगी। आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का योग ४२ प्रतिशत है। अन्न स्तम्भ लगभग आधा बना है। अन्नोत्पादन आशा के अनुरूप नहीं होगा। फसलों की हानि के कारण अनाज महंगे होंगे। कहीं अतिवृष्टि, कहीं अल्पवृष्टि के कारण अन्नोत्पादन में कमी का अनुभव होगा तथा खाद्यान्नों की मूल्यवृद्धि से सामान्य जनता को कष्ट होगा। प्रशासन के लिए समय रहते उचित व्यवस्था कर लेना हितावह होगा।

आर्यमान चतुष्टय विचार (राष्ट्र रक्षा के चार स्तम्भ) - वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) को रोहिणी नक्षत्र का योग १३ प्रतिशत है। गत संवत्सर की पौष कृष्ण अमावस्या को मूल नक्षत्र का योग ३५ प्रतिशत है। श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का योग नहीं होने से इस आर्यमान का अभाव है। कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का योग ८८ प्रतिशत है। चारों आर्यमानों का तत्सम्बन्धी नक्षत्रों से मध्यम योग ३४ प्रतिशत बना है। चारों आर्यमानों का मध्यम मान लगभग तृतीयांश बनने से राष्ट्र रक्षा के सन्दर्भ में शासन को सतर्क- सचेत रहना अति आवश्यक है। यह खेद का विषय है कि वर्तमान काल के शासक वर्ग के मन में शत्रु पड़ौसियों से तथाकथित फैशनेबल 'परस्पर विश्वास निर्माण के उपाय' ढूंढने की निरर्थक प्रवृत्ति अनावश्यक रूप से विद्यमान है। इसका मूल कारण राष्ट्र रक्षा की अवहेलना करके वोट बैंक को सुदृढ़ करना है जिसकी परिणति शत्रु देशों द्वारा 'विश्वासघात' के रूप में सामने आ सकती है। शासन को अपने गुप्तचर तन्त्र को समय रहते सबल सक्रिय करके देश में अवैध घुसपैठ करने वाले आतंकवादियों पर अंकुश लगाना समयोचित होगा। आतंकवाद का समय रहते शमन करने के लिए देश के सशस्त्र बलों को खुला हाथ देना श्रेयस्कर होगा अन्यथा दुष्परिणाम प्रकट हो सकते हैं। प्राकृतिक विपत्तियों से निबटने के लिए आपदा-प्रबन्धन तन्त्र को सबल और सक्रिय करना देश हित में आवश्यक है।

अधिक मास - विक्रम संवत् २०६४ में ज्येष्ठ अधिक मास है। **'द्वि ज्येष्ठे नृप विग्रहः'** के अनुसार ज्येष्ठ अधिक मास होने से शासकों में परस्पर विरोध व राज्य विग्रह होता है।

गुरुचार :- विगत विक्रम संवत् २०६३ कार्तिक शु. ५, दि. २७ अक्टूबर २००६ ई. को मूल नक्षत्र और धनु राशि में स्थित चन्द्रमा के समय 'गुरु' २२ घं. १८ मि. पर वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होकर वर्तमान वि. सं. २०६४ में कार्तिक शु. ११, दि. २२ नवम्बर २००७ ई. तक संक्रमण करेगा।

वृश्चिक राशि के गुरु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	रोग, शोक	यशोवृद्धि	पीड़ा	सुख	वैर हानि	धन लाभ	पीड़ा	भय	धन लाभ	क्लेश, अशान्ति	धन हानि	सुख, लाभ

वृश्चिक राशि में गुरु के संक्रमण का फल -

वृश्चिके च गुरुर्यातो दुर्भिक्षं तत्र जायते।
स्वल्पवृष्टिर्भवेतत्र भूर्युता नरकिल्बिषैः॥

गुरु के वृश्चिक राशि में संक्रमण होने से दुर्भिक्ष, अल्पवर्षा तथा अनेक प्रकार के पाप, उपद्रव होते हैं।

कार्तिक शु. ११, दि. २२ नवम्बर २००७ ई. को रेवती नक्षत्र और मीन राशि में स्थित चन्द्रमा के समय गुरु ५ घं. ४ मि. पर धनु राशि में प्रविष्ट होकर संवत् के अन्त तक वहीं संक्रमण करता रहेगा।

धनु राशि के गुरु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	लाभ सुख	हानि, रोग	सुख सम्मान	पीड़ा	सम्मान सुख	वैर, हानि	धन लाभ, सुख	पीड़ा, भय	भय	धन लाभ	क्लेश, अशांति	धन हानि

धनु राशि में गुरु के संक्रमण का फल -

धन राशि स्थिते जीवे गोधूमादि महर्घता।
वर्षाकाले भवेत्तत्र समर्घं च तिलं गुडम्॥

धनु राशि में गुरु का संक्रमण होने से वर्षा काल में गेहूं महंगे हों और तिल तथा गुड़ सस्ते होते हैं।

भद्रबाहु संहिता के अनुसार धनु राशि के गुरु में मार्गशीर्ष संवत्सर होता है। इसमें वर्षा अधिक होती है। सोना, चांदी, अनाज, कपास, लोहा, कांसा आदि सभी पदार्थ सस्ते होते हैं। मार्गशीर्ष से ज्येष्ठ तक घी कुछ महंगा रहता है। चौपायों से अधिक लाभ होता है, इनका मूल्य बढ़ जाता है।

शनि की दृष्टि:- वर्षारम्भ में शनि वक्री होकर कर्क राशि में संक्रमण कर रहा है। यह २० अप्रैल को मार्गी होगा तथा आषाढ़ शु. १ दि. १६ जुलाई २००७ ई. को सिंह राशि में प्रविष्ट होकर वर्ष के अन्त तक इसी राशि में रहेगा। इस संवत्सर में शनि वक्री तथा मार्गी होकर कर्क तथा सिंह राशियों में संक्रमण करेगा तथा इसकी दृष्टि दक्षिण दिशा पर होगी। शनि की दक्षिण दिशा पर दृष्टि होने से भारत के दक्षिणी क्षेत्रों में प्राकृतिक विपत्तियों, जलप्लावन, चक्रवात, झंझावात आदि तथा आतंकवाद, हिंसा, अराजकता के कारण व्यापक हानि की संभावना रहेगी।

कर्क राशि में प्रविष्ट शनि का फल :- गत वर्ष माघ कृ. ७ बुधवार दि. १० जनवरी २००७ ई. को हस्त नक्षत्र कन्या राशिस्थ चन्द्रमा के काल में वक्री शनि १८ घं. ३ मिनट पर कर्क राशि में प्रविष्ट होकर वि. सं. २०६४ आषाढ़ शु. १ दि. १६ जुलाई २००७ ई. तक संक्रमण करेगा।

वक्र गति से कर्क राशि में प्रविष्ट शनि का फल

राशि	ढैय्या या साढ़ेसाती	अंग	प्रारम्भ या समाप्ति	पाद	फल
मिथुन	साढ़ेसाती	पैर	समाप्ति	लौह	अधिक परिश्रम, धनहानि, रोग व शत्रुओं से पीड़ा
कर्क	साढ़ेसाती	हृदय	मध्य	ताम्र	सामान्य फल, धन लाभ, मानसिक चिंता।
सिंह	साढ़ेसाती	मस्तक	आरम्भ	रजत	शुभ कार्यों में व्यय, व्यवसाय में प्रगति, परिवार में विरोध।
धनु	ढैय्या	-	-	ताम्र	धन लाभ, शत्रुओं से विरोध।
मेष	ढैय्या	-	-	स्वर्ण	यात्रा, परिवारजनों से विवाद, धन लाभ।

विक्रम संवत् २०६४ में आषाढ़ शु. १, दि. १६ जुलाई २००७ ई. को आश्लेषा नक्षत्र एवं कर्क राशि के चन्द्रमा के काल में ४ घं. ३८ मि. पर शनि सिंह राशि में प्रविष्ट होकर वर्षान्त तक वहीं संक्रमण करता रहेगा।

साढ़ेसाती में शनि का अरिष्ट फल प्रत्येक राशि के लिए इस प्रकार है- मेष राशि के व्यक्तियों को मध्य के अढाई वर्ष अशुभ, वृष को प्रथम अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष और कर्क को मध्य के अढाई वर्ष अशुभ हैं। सिंह को पहले पांच वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। कन्या को प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी बीच के अढाई वर्ष विशेष अशुभ और तुला को अंत के अढाई वर्ष विशेष अनिष्ट कारक हैं।

सिंह राशि के शनि का फल

राशि	ढैय्या या साढ़ेसाती	अंग	प्रारम्भ या समाप्ति	पाद	फल
कर्क	साढ़ेसाती	पैर	समाप्त	सुवर्ण	अधिक परिश्रम, कार्यों में सफलता, सम्मान वृद्धि, आर्थिक लाभ उत्तम
सिंह	साढ़ेसाती	हृदय	-	लौह	आर्थिक हानि, अशान्ति, क्लेश, विवाद
कन्या	साढ़ेसाती	शिर	आरम्भ	सुवर्ण	सामान्य शुभफल, आर्थिक लाभ, कार्यों में सफलता
मकर	ढैय्या	-	-	ताम्र	सामान्य फल, धन लाभ, व्यवसाय में उन्नति
वृष	ढैय्या	-	-	ताम्र	सामान्य शुभ फल, कुटुम्ब का सुख, व्यवसाय में उन्नति

वृश्चिक को अन्तिम पांच वर्ष अशुभ, उसमें भी बीच के अढाई वर्ष विशेष नेष्ट हैं। धनु को आरंभ के अढाई वर्ष, मकर को प्रथम पांच वर्ष, उसमें भी पहले के अढाई वर्ष विर्शेष अशुभ हैं। कुम्भ को आरंभ और अंत के पांच वर्ष, उस कालावधि में अंत के अढाई वर्ष अधिक नेष्ट हैं। मीन को पूरे साढ़ेसात वर्ष उसमें भी अन्तिम अढाई वर्ष विशेष अशुभ फलदायक होते हैं।

जिनकी कुंडली में शनि शुभ फलप्रद हो तथा दशान्तर्दशा भी शुभ चल रही हो उनके लिए शनि का अशुभ फल कम होगा। जन्मकुंडली में चन्द्र शनि अशुभ ग्रहों से युक्त अशुभ स्थानों में हों तो साढ़ेसाती और ढैय्या चिन्ता, पीड़ा, धन-हानि, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, कलह पशु पीड़ा, धन खर्चा एवं हानि आदि नेष्ट फलप्रद होती है। शनि के अनिष्ट फल निवारणार्थ तैल-छायापात्र का दान, शनि मंत्र का जप, दशांश हवन व श्रीहनुमानजी की पूजा, अभिषेक, तैलयुक्त सिन्दूर समर्पण कर भक्तिपूर्वक शनिवार का व्रत, सप्तधान्य दान, प्रात: शनिवार को पीपल का पूजन करने से शनि का अनिष्ट फल निवृत होता है। साढ़ेसाती, ढैय्या का विचार जन्मकालीन स्पष्ट चन्द्रमा के अंशों से करना चाहिए। केवल राशि से साढ़ेसाती का विचार स्थूल है।

महर्षि पिप्पलाद के बतलाये हुए शनि के दशनाम स्तोत्र का स्नानादि के बाद नित्य प्रात:काल पाठ करने से शनि की साढ़ेसाती और ढैया की पीड़ा नष्ट हो जाती है। अनुभूत है और शनि पीड़ा निवारण का अत्यन्त सरल अचूक उपाय है। *पिप्पलाद उवाच*-

नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तुते। नमस्ते बभ्रुरुपाय कृष्णाय नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

राहु काल

भारत के दक्षिणी प्रदेशों में इस काल की विशेष मान्यता है। वहां के लोग इस काल में कोई भी शुभ कार्य नहीं करते। विशेषकर नवीन कार्यारम्भ के समय इस काल को टाल देना उचित मानते हैं तथा राहु काल का विशेष विचार करते हैं। यह काल प्रत्येक स्थान के स्थानीय समयानुसार प्रत्येक वार के लिए क्रमश: निम्नलिखित है :

	घं. मि.		घं. मि.	
सोमवार को स्थानीय समयानुसार प्रात:	७।३०	से	९।००	तक
मंगलवार को स्थानीय समयानुसार अपरान्ह	१५।००	से	१६।३०	तक
बुधवार को स्थानीय समयानुसार मध्यान्ह	१२।००	से	१३।३०	तक
गुरुवार को स्थानीय समयानुसार अपरान्ह	१३।३०	से	१५।००	तक
शुक्रवार को स्थानीय समयानुसार प्रात:	१०।३०	से	१२।००	तक
शनिवार को स्थानीय समयानुसार प्रात:	९।००	से	१०।३०	तक
रविवार को स्थानीय समयानुसार सायं	१६।३०	से	१८।००	तक

राहुचार- विगत विक्रम संवत् २०६३ में कार्तिक कृ. ६, गुरुवार दि. १२ अक्टूबर २००६ ई. को मृगशिरा नक्षत्र और मिथुन राशि में स्थित चन्द्रमा के समय राहु ७ घं. ३९ मि. पर कुम्भ राशि में प्रविष्ट होकर वर्षान्त तक वही संक्रमण करेगा।

कुम्भ राशि के राहु का फल

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख, सौभाग्य	विवाद, कष्ट	धन हानि	धन लाभ	रोग भय	पीड़ा	भाग्योदय	यशलाभ	द्रव्य लाभ	विवाद	भय, कष्ट	मानहानि

जगत् लग्न

वैशाख कृष्ण एकादशी शनिवार दिनांक १४ अप्रैल सन् २००७ ई. को दिन के १२ बजकर २८ मिनट पर कर्क लग्न के समय सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा। लग्न में अष्टम स्थान का अधिपति शनि स्थित है एवं लग्न का स्वामी ग्रह अष्टम स्थान में राहु एवं भौम के साथ स्थित है। इससे लग्न एवं लग्न का स्वामी ग्रह दोनों ही पीड़ित हैं। अत: यह वर्ष विश्व शान्ति के लिए अशुभ फलदायक है। द्वितीय भाव में केतु स्थित है। द्वितीयेश उच्च का है किन्तु द्वितीयेश पर शनि की दृष्टि भी है तथा द्वितीय भाव पर भौम की दृष्टि भी है इसके प्रभाववश कुछ राष्ट्रों की आन्तरिक स्थिति बिगड़ेगी तथा आतंकवादी कुछ बड़ी 'विध्वंसक घटनाओं' को मूर्त्तरूप देने में सफल होंगे। जिसके फलस्वरूप जन-धन की भारी हानि होगी। तृतीयेश नीच राशि का होकर स्थित है अत: कुछ राष्ट्रों का अपने पड़ौसियों से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। चतुर्थ भाव का अधिपति लाभ भाव में अपने घर स्थित है। चतुर्थ भाव कृषि भूमि एवं कृषि की उपज को दर्शाता है। कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा एवं कृषि भूमि का विश्व स्तर पर विकास होगा। पंचम भाव का अधिपति अष्टम भाव में स्थित है तथा रिपुभाव का स्वामी पंचम भावस्थ होने से बाल मृत्युदर में वृद्धि करने वाला है तथा रोगों की अधिकता होगी एवं शिक्षा का विकास-विस्तार मन्द गति से होगा। अष्टम स्थान में राहु तथा भौम की स्थिति कुछ राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति को बिगाड़ देगी तथा इसके फलस्वरूप आन्तरिक अशान्ति, मंहगाई में भारी वृद्धि होगी तथा जन असन्तोष बढ़ेगा। मंहगाई के विरुद्ध प्रदर्शन होगा। शनि-मंगल का षड्ष्टक योग विश्वशान्ति के लिए भारी विपरीत स्थिति दर्शाता है। बड़ी दुर्घटनाएं होंगी। नवम भाव का स्वामी पंचम भावस्थ है तथा तृतीयेश-द्वादशेश नीच का होकर नवमस्थ है। धर्म-विश्वराजनीति का मुख्य भाग रहेगा। धर्म मुख्यतया वैमनस्य बढ़ायेगा। बुध नीति निर्धारक ग्रह है वह नीच का है तथा धर्म भावस्थ है अत: धर्म का स्वार्थ सिद्धि के लिए उपयोग होगा। दशम भाव राज्य-शासक-शासन की स्थिति को दर्शाता है। दशमभाव का स्वामी अष्टम भाव में राहु के साथ स्थित है। दशम भाव पर शनि की दृष्टि भी है। इसके प्रभाव से कुछ राष्ट्रों में सत्ताशीर्ष में परिवर्तन होगा तथा कहीं बल प्रयोग (क्रान्ति) से भी शासक को सत्ताच्युत किया जाने का ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। रूस, स्वीडन, बलूचिस्तान, पाकिस्तान, ब्रिटेन, जर्मनी, पोलैण्ड, अमेरिका, अफ्रीका, हालैण्ड, भारत, अफगानिस्तान आदि देश उपरोक्त ग्रह स्थितियों के कुप्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित होंगे। सप्तम भाव का विचार महिलाओं के सन्दर्भ में करने पर स्पष्ट है कि जो ग्रह सप्तमेश है वही ग्रह अष्टमेश भी है इसके प्रभाव से महिलाओं पर अत्याचार कि घटनाओं में कमी नहीं होगी एवं तलाकों की संख्या में भारी वृद्धि होगी। पंचमेश अष्टम में है अत: भ्रूणहत्या की संख्या में भारी वृद्धि लिंग-भेद के कारण होगी। द्वादश भाव का स्वामी नीच का होने से कुछ राष्ट्रों की विदेश नीति त्रुटिपूर्ण, भेदभावपूर्ण होने से भी विश्वशान्ति के लिए अवरोध उत्पन्न होगा। लग्न का शनि, दशम में उच्च का रवि तथा शनि-मंगल का षडष्टक किसी बड़े सैनिक टकराव या किसी राष्ट्र के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही का संकेत दे रहा है।

जगत लग्न कुण्डली

श. ४
के. ५
३
६
शु. २
सू. १
७
१०
गु. ८
बु. १२
९
११ रा.चं.मं.

जगत लग्न की ग्रह स्थिति के अनुसार कर्कस्थ शनि लग्न में स्थित है तथा उसकी दशम दृष्टि मेषस्थ सूर्य पर पड़ रही है। शनि से पंचम भाव में वृश्चिकस्थ गुरु लग्न से

नवम पंचम योग बनाकर शनि पर पूर्ण दृष्टि डाल रहा है। गुरु नीचस्थ बुध पर भी अपना दृष्टि प्रभाव डाल रहा है। वक्री गुरु शुक्र से दृष्ट है। अष्टमस्थ चन्द्रमा पापी राहु व क्रूर मंगल से युत होकर केतु से दृष्ट है। विश्व के अधिकतर देश जो मेष राशि से प्रभावित होंगे, उन राष्ट्रों में शासक वर्ग के स्वेच्छाचार को वहाँ की नियामक संसद का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग सत्तारूढ़ों की अनुशासनहीनता व अराजकता के कटु अनुभव प्राप्त करेंगे अर्थात् उन्हें शासनतन्त्र पर अपनी पकड़ ढीली होती अनुभव होगी। विश्व में श्रमिक वर्ग तथा कृषक वर्ग हड़ताल, तालाबन्दी, आन्दोलन आदि के द्वारा अपना दबाव शासन पर बनाने का प्रयास करेगा। विश्व में जन्म दर से अधिक अनुपात में मृत्युदर, आत्महत्याएं या रक्तपात जनित नरसंहार का परिमाण बढ़ता दिखाई देगा। संसार के कुछ प्रमुख राष्ट्रों के ध्वज शोक से अवनत होंगे। विश्व व्यापार एक आकस्मिक मन्दी की स्थिति से गुजरेगा। प्राकृतिक आपदाओं, भूकम्प, जलप्लावन, अग्निकांड आदि के कारण स्थिति भयावह होगी। लगभग समस्त विश्व जेहादी आंतक का सामना करेगा। धर्मान्धता, छल-कपट, विश्वासघात का तांडव जनता को त्रस्त करेगा। नये किस्म के मानसिक व शारीरिक रोग व्याधियाँ जिनका निदान व उपचार वर्तमान आयुर्विज्ञान की क्षमता से बाहर होगा, प्रकट होकर जनता को ग्रसित करेंगी। कुछ परामानसिद्ध शक्तियों द्वारा प्रेरित घटनाएं भी घटित होंगी, जिनके औचित्य को वर्तमान विज्ञान अपने दम्भपूर्ण असत्य पर आधारित कुतर्क देकर नकारने का प्रयास कर जनता की दृष्टि में अपने आपको हास्यास्पद स्थिति में खड़ा करेगा। स्त्री वर्ग में कहीं-कहीं अध्यात्मिक जागृति के लक्षण स्पष्ट दिखाई देंगे। विश्व के शासक वर्ग से सम्बन्धित अधिकांश नेता किंकर्त्तव्यविमूढ़ावस्था में दिखाई देंगे अतः किसी निर्णयात्मक स्थिति में अपने आपको न पा सकेंगे। इस दिग्भ्रम में फंसे हुए उन शासकों के निर्णय उनके लक्ष्य प्राप्ति में बाधक होंगे। जहाँ संयत शान्तचित रहने की आवश्यकता होगी वहाँ वह लोग जड़ता, अनिर्णय की हालत में अपने को असहाय पायेंगे। उक्त जड़ता से मुक्ति के प्रयास में वह अपना मानसिक संतुलन बिगड़ता पायेंगे। उनका निर्णय उत्तेजनात्मक होगा जो उन्हें लक्ष्य भ्रष्ट करने में समर्थ होगा।

स्काटलैण्ड, हालैण्ड, न्यूजीलैण्ड, उत्तर पश्चिमी अफ्रीकी क्षेत्र, मारिशस आदि देशों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि की स्थिति न्यूनाधिक बनी रहेगी। उग्रवाद की समस्याओं से भी यह क्षेत्र पीड़ित रहेगा। इन क्षेत्रों में शीर्षस्थ लोग चाहते हुए भी अपनी जनता को त्राण प्रदान करने में असहाय अनुभव करेंगे।

जापान, इग्लैण्ड, जर्मनी, पोलैण्ड, सीरिया, डेनमार्क, फिलिस्तीन आदि के क्षेत्रों में शासकवर्ग, आन्तरिक व बाह्य समस्याओं से निरन्तर जूझते रहेंगे। अन्त में आशिंक सफलता भी उन्हें प्राप्त होगी। व्यापार, आयात-निर्यात की स्थिति कोई अधिक सन्तोषजनक न होगी। श्रमिक वर्ग तथा कृषक वर्ग में असन्तोष की भावना समय-समय पर प्रकट होती रहेगी। धर्मान्धता के झंझावात से यह क्षेत्र प्रभावित हुए बिना न रहेंगे।

संयुक्त राज्य अमेरिका, बेल्जियम, इजिप्ट, नार्वे, आरमेनिया आदि भूक्षेत्रों में रहने वाले लोग, आतंक, भय भ्रम की मानसिक यंत्रणा से पीड़ित रहेंगे। इन देशों की आर्थिक स्थिति पूर्ववत सुदृढ़ नहीं रहेगी। इन क्षेत्रों के शासक वर्ग में अनिश्चितता के मनोभाव कभी-कभी अति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होंगे। इस दुविधा की स्थिति से उबरने के प्रयास तथा इच्छाशक्ति कोई अधिक सहायक नहीं होगी। इन देशों की व्यापारिक व राजनैतिक सन्धियाँ कोई अवलम्बन प्रदान करने में समर्थ नहीं होगी।

भारत, अफगानिस्तान, बलगारिया, मोक्सिको, सीरिया, यूनान, बांगलादेश, अल्बानिया, बंगाल, पंजाब आदि भूखण्ड के क्षेत्र आर्थिक पक्ष से उत्तरोत्तर सुदृढ़ स्थिति में अग्रसर होंगे। राजनैतिक दृष्टि से अपने आपको अस्थिरता तथा आतंकवाद के झंझावातों से घिरे होने पर भी अपना अस्तित्व बचा पाने में सफल होंगे। अपने-अपने अर्थतन्त्र पर अकस्मात पड़ा बोझ झेलकर परस्पर अधिकाधिक सहयोग करने की भावना से प्रेरित रहेंगे।

अरब, रूस, अबीसिनीया, स्वीडन, पोलैण्ड आदि देशों के शासन तन्त्र नित्य, नवीन समस्याओं में अपने को उलझा पायेंगे। एक समस्या को सिर तोड़ परिश्रम कर सुलझा पाने से पहले नयी-नयी समस्याओं का अम्बार लगता देखेंगे। आर्थिक स्थिति के दृष्टिकोण से डांवाडोल हालात बने रहेंगे। इन क्षेत्रों में इतनी प्रतिकूल परिस्थिति के होते हुए भी विलासिता का दौर चलता दिखाई देगा। जनसाधारण में नैतिक व चारित्रिक पक्ष ढलान की ओर लुढ़कता दिखाई देगा। आस्ट्रेलिया, हंगरी, स्पेन, मेडागास्कर आदि के समीपवर्ती क्षेत्रों में विश्वव्यापी अनिश्चितता के दौर का प्रभाव दिखाई देगा, फिर भी उस अन्धकूप से निकलने का प्रयास यहाँ के शासक वर्ग निष्ठापूर्वक करते दिखाई देंगे। अन्ततः पर्याप्त सीमा तक अपने प्रयासों में सफल होंगे। टर्की, स्विटरजलैण्ड, वेस्टइंडीज, यूनान, पेलेस्टाईन, ईराक, फ्रांस, पाकिस्तान आदि भूक्षेत्र आर्थिक व व्यापारिक पक्ष से अपने को हीनतर स्थिति में पायेंगे इन देशों के अन्य राष्ट्रों से व्यापारिक सम्बन्ध भी इन्हें उबारने में आशिंक रूप से ही सफल हो पायेंगे। ऐसा प्रतीत होता है। तथापि कुछ इलैक्ट्रोनिक्स आदि के रोगी उद्योग येनकेन प्रकारेण चलते रहेंगे। वैसे भी इन देशों की सर्वाङ्गीण स्थिति स्थिर न होकर ढुलमुल रहेगी। आतंकवाद की भयावह अग्नि के ताप से यह क्षेत्र भी कुप्रभावित रहेंगे। प्राकृतिक दुर्घटनाओं की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

रूस, स्वीडन, भूतपूर्व रूसी गणराज्य के देश आदि भू-मंडल के क्षेत्र अपने आपको विचित्र सी असमंजस की स्थिति में पायेंगे। इस क्षेत्र की जनता मानसिक घुटन

सी अनुभव करेगी। ऐसा भय है कि यह मानसिक घुटन कहीं जनता के कण्ठ से विद्रोह व असन्तोष के स्वर न प्रस्फुटित करने लगे। इन क्षेत्रों के इस्लामी देश आतंकवाद की भयावह अग्नि के ताप से दग्ध हुए बिना न रह पायेंगे। आतंक की विचाराधारा के वाहक, इन क्षेत्रों की जनता के रोष व असहयोग के भागी बनने प्रारम्भ हो जाएंगे।

पुर्तगाल, अफ्रीकी सहारा स्थित भू-भाग में भी विश्व के अन्य क्षेत्रों में व्याप्त असन्तोष तथा आतंक की ज्वालाओं का ताप स्पष्टत: अनुभव किया जा सकेगा। शासकवर्ग अपने आपको इस आपत्ति से निकाल पाने में असमर्थ अनुभव करेगा।

आर्द्रा प्रवेश लग्न - शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सप्तमी शुक्रवार दिनांक २२ जून सन् २००७ ई. को दिन के ३ बजकर २५ मिनट पर तुला लग्न के समय सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। वर्षा काल में सूर्य के आगे शुक्र-शनि, कुछ अवधि के लिए सूर्य के साथ बुध रहेगा। इसके प्रभाव से वर्षाकाल में अधिकांश भागों में वर्षा सामान्य होगी। कुछ भागों में बुध-शनि के प्रभाव से तेज वायु-तूफान के साथ वर्षा व ओलावृष्टि भी होगी। लग्न कुण्डली में मंगल केन्द्र में अग्नितत्त्व राशि में ही स्थित है इसके प्रभाव से कुछ पश्चिमी भागों में वर्षा में कमी सम्भव है। उत्तर एवं दक्षिणी भागों में सामान्य या सामान्य से अधिक वर्षा होने की सम्भावना है। वायव्य कोण के भागों में प्राकृतिक प्रकोपों अल्पवर्षण, अतिवर्षण, ओलावृष्टि, रोगों आदि से कृषि को अधिक क्षति होने की सम्भावना है। ईशान कोण के देशों में वर्षा सामान्य होगी तथा कृषि उत्पत्ति पर्याप्त होगी। आग्नेय कोण के भागों में यद्यपि कृषि का उत्पादन वर्षा होने से सामान्य होगा किन्तु कुछ भागों में कृषि की हानि भी होगी। नैऋत्य में असामान्य वर्षा कहीं अल्प कहीं अतिवर्षण होगा। इसी प्रकार उत्पादन कहीं सामान्य व कहीं-कहीं कृषि का उत्पादन सामान्य से कम होगा।

आर्द्रा प्रवेश लग्न

गु. ८ | चं. ६ | ९ | ७ | ५ के. | शु. श. ४ | १० | मं. १ | रा. ११ | बु. सू. ३ | १२ | २

शारदीयसस्य- शुद्ध ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी मंगलवार दि. १५ मई २००७ ई. को सूर्य वृष राशि में प्रात: ९ बजकर १९ मिनट पर प्रवेश करेगा। सूर्य के आगे शुक्र एवं पीछे चन्द्रमा है एवं बुध सूर्य के साथ स्थित है तथा गुरु की शुभ दृष्टि भी सूर्य पर है। अत: सूर्य पर शुभ ग्रहों का प्रभाव होने से शारदीयसस्य की उत्पत्ति पर्याप्त होगी। केन्द्र में राहु एवं केतु की स्थिति से कुछ भागों में प्राकृतिक प्रकोपों तथा रोगों से कृषि की कुछ हानि होगी किन्तु धान्य

शारदीयसस्य कुण्डली

शु. ३ | चं. १ | श. ४ | सू. बु. २ | मं. १२ | ह. रा. ११ | के. ५ | गु. ८ | ने. १० | ६ | ७ | प्लू. ९
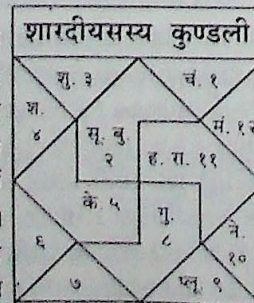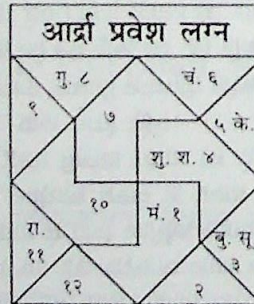
की कुल निष्पत्ति पर्याप्त मात्रा में होगी। शास्त्र में स्पष्ट लिखा है कि यदि सूर्य पर बलवान गुरु की शुभ दृष्टि हो तो धान्यों की अभिवृद्धि होती है।

ग्रीष्मसस्य - वृश्चिक राशि में सूर्य कार्तिक शुक्ल षष्ठी शुक्रवार दिनांक १६ नवम्बर सन् २००७ ई. को रात्रि १० बजकर ५२ मिनट पर प्रवेश करेगा। सूर्य के साथ गुरु भी स्थित है तथा सूर्य से द्वादश भाव में बुध स्थित है इसके प्रभाववश ग्रीष्मसस्य की उत्पत्ति पर्याप्त होगी। शास्त्र में लिखा है कि वृश्चिक राशि के सूर्य से द्वितीय या द्वादश भाव में बुध या शुक्र हो अथवा दोनों हो और सूर्य से केन्द्र में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह की सूर्य पर दृष्टि हो तो अत्यधिक धान्योत्पत्ति होती है। **"अर्कात्सिते द्वितीये बुधेऽथवा युगपदेव वा स्थितयो:। व्ययगतयोरपि तद्वन्निष्पत्तिरतीव गुरुदृष्टया"**।। केन्द्र में पाप ग्रह शनि-केतु-राहु भी स्थिति है। इनके प्रभाव से प्राकृतिक प्रकोपों, अतिवर्षण-अल्पवर्षण, रोगों आदि से कृषि की कुछ भागों में हानि होगी। कुम्भ राशिस्थ केन्द्र का चन्द्रमा सस्य निष्पत्ति बढ़ाने वाला है।

ग्रीष्मसस्य कुण्डली

९ प्लू. | बु. ७ | १० ने. | सू. गु. ८ | शु. ६ | श. के. ५ | चं. रा. ह. ११ | २ | १२ | ४ | १ | मं. ३

मुस्लिम राष्ट्र - माघ शु. ३, रविवार दि. २१ जनवरी २००७ ई. को मुस्लिम हिजरी सन् १४२८ की पहली तारीख मुहर्रम महीने की है और इस दिन रविवार होने से सूर्य गुर्रा या मुस्लिम वर्ष का राजा है। पहली मुहर्रम से पूर्व दिन की संध्या को चन्द्र दर्शन के समय सूर्यास्त काल में कन्या लग्न उदित है।

मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली

के. ५ | ३ | ६ | श. ४ | २ | १ | ७ | सू.बु.शु. चं. ने. | गु. ८ | ९ | १० | ११ | १२ | मं. प्लू. | रा. ह.

सूर्य का गुर्रा फल - शासक वर्ग, प्रजा, पशु-पक्षी सुखी रहें। वर्षा उत्तम होवे। गुड़, शक्कर, चीनी इत्यादि तथा रुई, कपास के भाव महंगे हों। अन्न, गेहूं, खरबूजा, मेवा, दुग्ध, घृत की उपज अच्छी होवे। वायु-विकार, शीत अधिक पड़े। जनता में धार्मिक अशान्ति व्याप्त हो। अनेक प्रकार के रोगों से सामान्य जनता पीड़ित हो तथा जन-धन की क्षति हो। वर्षा समयानुकूल न हो। शासकीय कार्यों में रुकावट तथा विलम्ब दिखाई दे। व्यापारी वर्ग को हानि हो। धनवान, पूंजीपती वर्ग को विशेष कठिनाई का अनुभव हो। स्वेच्छाचारिणी प्रमदाओं को पीड़ा, स्त्रियों को स्तन पीड़ा।

लग्न का स्वामी लग्न को देख रहा है किन्तु अष्टमेश जो कि सप्तमेश भी है लग्न में स्थित होकर लग्न को पीड़ित कर रहा है साथ ही भौम भी अष्टम दृष्टि से लग्न को देख रहा है तथा शनि मंगल का परस्पर षडष्टक योग भी बन गया है इससे यह वर्ष
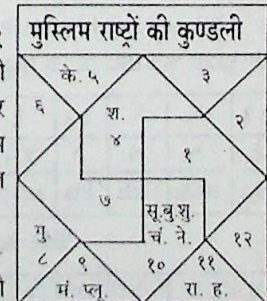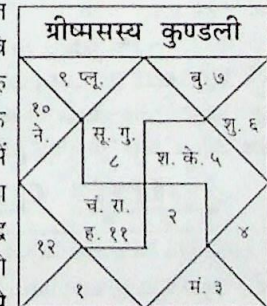
अशुभ फलप्रद है। कोई राष्ट्र शत्रु से पीड़ित होगा या युद्धाग्नि में सम्मिलित होगा। कुटुम्ब स्थान में केतु के स्थित होने से राष्ट्र विशेष की आर्थिक स्थिति बिगड़ेगी तथा आन्तरिक व्यवस्था पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा एवं अशान्ति का वातावरण बनेगा। पंचम भाव का अधिपति रिपुभाव में स्थित होने से शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सुधार नहीं होंगे तथा धार्मिक कट्टरतावाद शिक्षा का एवं योजनाओं का महत्वपूर्ण भाग होगा। सप्तम भाव में पंचग्रही योग महिलाओं की स्थिति में सुधार को नहीं दर्शा रहा है। व्यापारिक दृष्टि से उत्थान होगा। अष्टम स्थान में राहु की स्थिति किसी देश विशेष की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले भारी विपरीत प्रभाव को दर्शा रहा है। नवमभाव का अधिपति पंचम भाव में स्थित है। पंचमभाव नीति निर्धारक होता है तथा नवमभाव धर्म से सम्बन्ध रखता है। अतः राष्ट्रों की नीतियां धर्म के आधार पर निर्धारित होंगी। मंगल की दृष्टि भी नवमभाव पर होने से अधिकांश धार्मिक नेताओं का कट्टरवाद मात्र दिखावे के लिए ही होगा। उनका आचरण उनके कर्तव्य के विपरीत होगा। दशम भाव राज्य पर व सत्ता पर शासक की पकड़ को दर्शाता है। दशमेश रिपुभाव में स्थित है इसके प्रभाव से कुछ राष्ट्रों में शासकों की सत्ता पर पकड़ कमजोर होगी तथा शासकों को जनता के विरोधों का सामना करना पड़ेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति मित्र के घर में स्थित है इसके प्रभाव से आवासीय भू-भागों का विकास, कृषि क्षेत्र का विकास एवं कृषि उत्पादन के प्रयास तीव्र गति से किये जायेंगे। तृतीय भाव के अधिपति की स्थिति से कुछ राष्ट्र विशेष प्रगति करेंगे।

मुस्लिम राष्ट्रों की वर्तमान ग्रह स्थिति के अनुसार यह देश पाश्चात्य जगत की बैशाखियों पर घिसटने की चेष्टा करते रहेंगे। पाश्चात्य जगत से प्राप्त आर्थिक सहायता की प्राणवायु प्राप्त कर येनकेन प्रकारेण अपना आर्थिक अस्तित्व बचाने के प्रयास में सफल रहेंगे। जेहादी उन्मादको प्रच्छन्न रूप से यथावत प्रश्रय मिलता रहेगा। इन क्षेत्रों के शासक वर्ग अमेरिका आदि देशों की सहायता प्रश्रय प्राप्त करते रहेंगे।

ख्रिस्त्राब्द की सातवीं शताब्दी में प्रादुर्भूत विशेष सभ्यता जिसकी ज़न्मभूमि पश्चिम एशिया का क्षेत्र रहा, दिन-प्रतिदिन पतनोन्मुख होकर जनता की हेय दृष्टि का पात्र होकर अन्ततः विस्मृति के अंधकारमय गर्त की ओर बढ़ती दिखाई देगी। विश्व जनमत की दृष्टि में यह सभ्यता अपनी उपादेयता खोकर उपहास और हेय दृष्टि का पात्र बनेगी। अपनी अतार्किक विचार प्रणाली के कारण यह सभ्यता अपना स्वरूप खोकर गहन अन्धकार में समाहित होती दिखाई देगी। अपने अव्यवहारिक तथा जड़तापूर्ण अतीत एवं वर्तमान में इनके पृष्ठपोषक तथाकथित बुद्धिजीवीवर्ग इस सभ्यता को उपहासजनक तथा हेय स्थिति में लाकर खड़ा कर देंगे। ईसाइयत के साथ इनका 'विचार वैभिन्य' प्रकट विरोध व संघर्ण का रूप ले लेगा। जोकि अन्ततः रक्तरंजित घटनाक्रम को जन्म देगा। यह परिस्थिति दोनों विरोधाभासी सभ्यताओं के लिए अपने-अपने अस्तित्व को बनाए रखने के अनवरत संघर्ष का अन्ततः सूत्रपात कर देगी।

पौष शु. ३, शुक्रवार दि. ११ जनवरी २००८ को मुस्लिम हिजरी सन् १४२९ की पहली तारीख मुहर्रम महीने की है। मुस्लिम हिजरी सन् १४२९ का अल्पभाग वि.सं. २०६४ को स्पर्श करेगा अतः उस पर विचार अगले वर्ष के पंचांग में प्रस्तुत किया जाएगा।

विंशोत्तरीमत से आय-व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	८	८	५

अष्टोत्तरीमत से आय व्यय चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	२	११	८	८	२	८	११	२	११	५	५	११

आय-व्यय देखने की विधि- आय-व्यय के दोनों अंकों को जोड़कर एक घटावें और आठ का भाग देकर यदि १, २, ६, ७, शेष रहें तो उस वर्ष में अच्छा लाभ होगा और यदि ३, ४, ५, ० शेष रहें तो लाभ कम खर्च अधिक होगा तथा अनेक प्रकार की चिन्ताएं उपस्थित होंगी।

जगल्लग्न से व्यक्तिगत फल विचार- जन्म कुण्डली में लग्न बलवान हो तो लग्न से और चंद्रमा बलवान हो तो जन्म राशि से जगल्लग्न जिस स्थान से आये वह भाव स्वस्वामी शुभ ग्रहों से युक्त दृष्ट बलवान हो तो उस भाव की वृद्धि होती है। यदि वह भाव पाप ग्रहों से युक्त दृष्ट हो तो उस भाव की हानि होती है। जन्म राशि और अपने वर्ष प्रवेश लग्न से यदि वर्षेश लग्न (जगल्लग्न) आठवें बारहवें हो तो उस व्यक्ति के लिए वह वर्ष शुभ लाभ फल प्रद नहीं होता।

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

संवत् २०६४ वि. (सन् २००७-२००८ ई.) की ग्रह परिषद् का विचार

संसार की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का दिग्दर्शन

दिग्दर्शक- सुधाकर शर्मा त्रिवेदी, सोलन (हि.प्र.)

श्री विनोद विजल्वाण, ऋषिकेश

श्री विवेकानन्द सत्येश, सोलन

पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

- प्राकृतिक विपत्तियों अतिवृष्टि, अल्पवृष्टि, जलप्लावन, भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, चक्रवात' आदि के कारण व्यापक जन-धन क्षति की सम्भावना।
- किसी रोग विशेष के प्रसार से जनता में भय व्यापेगा।
- स्त्रियों पर घिनौने अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि, तलाक दर में वृद्धि होगी तथा कन्या भ्रूण हत्या विकट समस्या बनेगी।
- कला की विधाएं और मनोरंजन के साधन अपसंस्कृति से प्रभावित होकर विकृति को बढ़ावा देंगे।
- धार्मिक नेताओं की रुचि राजनीति में बढ़ेगी, उनका आचरण समग्रत: धार्मिक मर्यादा के अनुरूप नहीं रह पायेगा।
- भूगर्भस्थ-सम्पदा की प्राप्ति तथा दोहन से भविष्य में आर्थिक लाभ की सम्भावना सुदृढ़ होगी।
- कड़ी प्रतिस्पर्धा के बाद भारत के सम्मान में वृद्धि होगी। भारत का अर्थतन्त्र विकासोन्मुखी बना रहेगा।
- पश्चिम का शत्रु पड़ौसी परोक्ष रूप से 'आतंकवाद-उग्रवाद' के पिशाच को पूर्ववत् प्रौत्साहित-पोषित करता रहेगा। अन्तत: यह 'पिशाच-पोषण' उसके स्वयं के लिए कालान्तर में हानिकारक सिद्ध होगा।
- समय-समय पर भारत का शासक वर्ग अनिर्णय, असमंजस, बुद्धिभ्रंश के महारोग से कुण्ठित होकर असहाय, जड़वत् सा दृष्टिगोचर होगा।
- वोट-बैंक भुनाने की कलुषित राजनीति, संविधान की मूल भावना और आत्मा का हनन कर देगी। फलत: जन असन्तोष की अग्नि स्थान-स्थान पर प्रस्फुटित होगी।
- सत्ता पक्ष व विपक्ष में संसद तथा संसद से बाहर किसी विषय पर भारी टकराव मतभेद प्रकट होगा।
- श्रमिक वर्ग में असन्तोष भड़केगा। हड़ताल, तालाबन्दी की परिणति आकस्मिक दंगे आगजनी में हो जाना अप्रत्याशित न होगा।
- विश्व में जेहादी उग्रवाद 'आतंकवादी हिंसा' की कार्रवाइयों की पुनरावृत्ति में यथावत संलिप्त रहेगा। विवश होकर आहत सभ्य विश्व का इस नृशंसता के शमन हेतु एकजुट होने की पूर्व-भूमिका बनाना अप्रत्याशित न होगा।

स्वतन्त्रता का ६०वाँ वर्ष

१५ अगस्त सन् २००६ ई. को मिथुन लग्न के समय भारत की स्वतन्त्रता का ६०वाँ वर्ष आरम्भ हुआ है। मुंथा लाभ स्थान में स्थित होने से यह वर्ष प्रगतिकारक एवं आर्थिक दृष्टि से सामान्य शुभ फलप्रद है। औद्योगिक विकास तीव्रगति से होगा। लग्नेश, चतुर्थ भाव का अधिपति, पराक्रम भाव का स्वामी, रन्ध्रेश, नवमेश, पंचमेश, द्वादशेश एक ही भाव, धन भाव में स्थित हैं इसके फलस्वरूप विकास दर में वृद्धि होगी। पंचम भाव में सप्तमेश-दशमेश स्थित है इसके प्रभाववश शिक्षण संस्थाएं व्यावसायिक लाभ के केन्द्र की तरह व्यवहार करेंगे। शिक्षण संस्थाओं का मूल उद्देश्य विद्या दान न होकर अर्थोपार्जन मात्र रह जायेगा। चतुर्थ भाव पर शनि की दृष्टि कृषि भूमि एवं कृषि की हानि का कारण बनेगी। कृषि की प्राकृतिक प्रकोपों, रोगों, अतिवर्षण-अल्पवर्षणादि से हानि होगी। चतुर्थ भाव में केतु भी स्थित है अतः लोगों में भय भी व्याप्त होगा। प्राकृतिक प्रकोपों, रोगादि मंहगाई, भ्रष्टाचार एवं समाजविरोधी, राष्ट्रविरोधी, देशद्रोही एवं आन्तरिक अशान्ति उत्पन्न करने वाले तत्वों से लोगों को कष्ट होगा। स्वतन्त्रता का ६१वाँ वर्ष १५ अगस्त २००७ को दिन के ९ बजकर १० मिनट पर कन्या लग्न के समय प्रारम्भ होगा। मुंथा नवम भाव में स्थित होने से शुभफलप्रद है। लग्न का स्वामी लाभ स्थान में स्थित होकर राष्ट्र की प्रगति का द्योतक है। लग्नेश ही राज्येश भी होने से राष्ट्र की मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सुख भाव एवं सप्तम भाव का स्वामी गुरु पराक्रम भाव में स्थित है। इसके फलस्वरूप कृषि एवं कृषि क्षेत्र का विस्तार होगा। कृषि क्षेत्र के विकास की ओर ध्यान दिया जायेगा। महिलाओं के कल्याण की योजनाओं को मूर्तरूप दिया जायेगा। रिपु भाव में राहु की स्थिति तथा रिपुभावाधिप की द्वादश भाव में स्थिति शत्रु की परोक्ष रूप से आतंकवाद को प्रोत्साहित करने की पूर्वनीति को दर्शाने के साथ ही विरोधी राष्ट्र का भी समस्याग्रस्त होना दर्शा रहा है। राहु शत्रु की हानि करने में सक्षम है। नवमाधिप द्वादश भाव में स्थित है। नवमाधिप ही धनाधिप भी है इसके प्रभाववश गैर योजना व्यय में भारी वृद्धि होगी। शनि की दृष्टि धनभाव पर भी है इससे लोगों में अशान्ति एवं भय का वातावरण बनेगा। मंहगाई, भ्रष्टाचार एवं राष्ट्र विरोधी, समाजविरोधी तत्त्वों की गतिविधियों से अशान्ति एवं असन्तोष बढ़ेगा। प्राकृतिक प्रकोपों एवं दुर्घटनाओं में वृद्धि द्वादश भाव में चतुर्ग्रही योग के कारण होगी। योजना का प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह शनि द्वादश भाव में स्थित है। जिससे योजनाओं के लिए पर्याप्त धन उपलब्ध नहीं होगा एवं बाल-मृत्युदर में भी भारी वृद्धि होगी। शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित सुधार नहीं होंगे। किसी राष्ट्र विशेष के सम्बन्धों में इस वर्ष कुछ गतिरोध उत्पन्न होने की सम्भावना है।
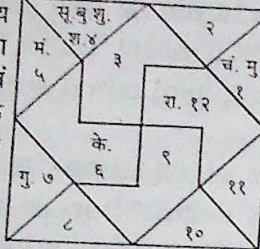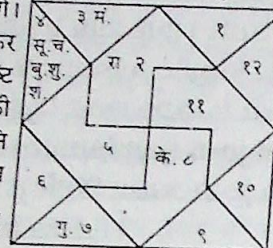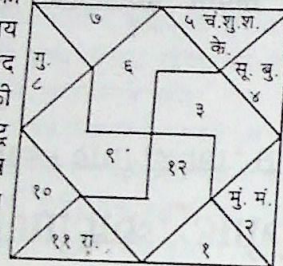
स्वतंत्रता का ६०वाँ वर्ष

स्वतंत्रत भारत की कुंडली

स्वतंत्रत भारत का ६१वाँ वर्ष

सत्ता हस्तांतरण व तथाकथित स्वतन्त्रता दिवस का ६१वाँ वर्ष जो १५ अगस्त २००७ को आरम्भ होता है, के समय कन्या लग्न उदित है। प्रस्तुत वर्ष कुण्डली के ग्रहानुसार अगामी वर्ष में कोई आशातीत परिणाम प्राप्त होने की सम्भावना क्षीण ही दृष्टिगोचर हो रही है। लग्नेश का अस्त होना तथा भाग्य भाव में अकारक ग्रह स्थित होने के कारण तथा क्रूर ग्रह से दृष्ट होने के कारण भावी परिणाम सुखद होने की सम्भावना न्यून है। शुभ ग्रह गुरु की दृष्टि तथा मुंथा की स्थिति इस गिरती हुई परिस्थिति को अधिक सम्बल न प्रदान कर पाएगी। विपक्ष तथा विरोधी लोग बल प्राप्त करेंगे। देश की तन्त्रवाहिनी शासकीय संस्था कभी-कभी तो मृतप्राय सी दिखाई देगी। राजनैतिक इच्छाशक्ति से विहीन यह शासन किसी भी महत्वपूर्ण समुचित निर्णय लेने से पूर्व ही हाँफता दिखाई देगा। आय से अधिक अपव्यय बढ़ता जाएगा। फिर भी यह सरकार सम्भवत: घिसटती-घिसटती अपना वर्ष पूरा कर लेगी।

भारतीय गणतन्त्र का ५८वाँ वर्ष

५८वें गणतंत्र की कुण्डली २६ जनवरी २००७ ई. २५/०० भा.स्टै.टा.

२६ जनवरी २००७ को रात्रि १ बजे भारतीय गणतन्त्र का ५८वाँ वर्ष प्रवेश होगा। लग्न का स्वामी पंचम भाव मित्र के घर राहु के साथ स्थित है तथा मुंथा भी तृतीय भावस्थ है। इसके प्रभाववश राष्ट्र उन्नति करेगा। विकास योजनाएं समग्र विकास को ध्यान में रखकर बनायी जायेंगी। राष्ट्र लगभग सभी क्षेत्रों में प्रगति करेगा। तृतीयस्थ मुंथा पराक्रम से फल देती है अत: विभिन्न शोधकार्यों में भी इस वर्ष सफलता प्राप्त होगी। कुटुम्ब भाव में गुरु स्थित है। इसके प्रभाववश राष्ट्र आर्थिक उन्नति करेगा। शनि-मंगल का षडष्टक योग कुछ बड़ी दुर्घटनाओं, अग्निकाण्डों या आतंकी-विध्वंसक कार्यवाहियों को जन्म देगा। चतुर्थेश चतुर्थ भाव को देख रहा है। इसके प्रभाव से कृषि की पैदावार पर्याप्त होगी एवं कृषि क्षेत्र का विकास होगा। किन्तु चतुर्थ भाव में सूर्य भी स्थित है इसके प्रभाव से प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि एवं कृषि क्षेत्र की हानि भी होगी। आवासीय क्षेत्रों का भी विकास चतुर्थेश की स्थितिवशात् होगा। सूर्य आवासीय या पुनर्वास समस्या को भी दर्शा रहा है। पंचम भाव में शुक्र एवं राहु दोनों स्थित हैं। शुक्र अष्टमेश होकर स्थित है अत: जनसंख्या नियन्त्रण के प्रयास होंगे तथा भ्रूणहत्याओं की संख्या में भारी वृद्धि

होगी। शिक्षा के क्षेत्र में 'सुधार'; प्रयासों के होने पर भी प्रभावी रूप से दृष्टिगोचर नहीं होगा। रिपु भावेश द्वितीय भाव में स्थित है अत: शत्रु आतंकवाद को पोषित करने की अपनी विध्वंसक नीति पर चलता रहेगा। इस वर्ष शत्रु राष्ट्र को भौम की चतुर्थ दृष्टि से विषम स्थिति का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव का अधिपति भौम तृतीयस्थ है। इसके फलस्वरूप महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में कमी नहीं होगी। शनि की दशम दृष्टि भी सप्तम भाव को पीड़ित कर रही है तथा सप्तमेश एवं शनि का षड्ष्टक योग भी है अत: तलाक के मामलों, महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में भारी वृद्धि का ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। अष्टम भाव का अधिपति ही लग्नेश भी है तथा मित्रराशि में मित्र के साथ स्थित है अत: राजकोष की स्थिति को सुदृढ़ बनाने के प्रयास होंगे किन्तु गैरयोजना व्यय में भारी वृद्धि होने से योजना व्यय में कटौती करनी पड़ सकती है। नवम भाव का अधिपति चतुर्थ भाव में स्थित है। अत: न्याय व्यवस्था, कानून व्यवस्था में सुधार के प्रयास किये जायेंगे। शनि की धर्मेश पर दृष्टि धार्मिक नेताओं की राजनीति में रुचि को दर्शा रही है तथा वे अपने कर्त्तव्य का निर्वाह मात्र दिखावें के लिए ही करेंगे एवं उनका आचरण मर्यादा के विपरीत होगा। दशमाधिपति सप्तम भाव में स्थित है तथा चतुर्थेश दशम भाव में स्थित है तथा दशमाधिपति चतुर्थाधिपति से दृष्ट है। यह ग्रह स्थिति राजसत्ता पर विपक्ष की स्थिति को कुछ मजबूत बना रही है तथा शासक को निर्बल करने वाली है। इसका प्रभाव यह भी हो सकता है कि सत्ताशीर्ष पर कुछ प्रभावी परिवर्तन हो जाये या प्रधान शासक को भारी चुनौती का सामना करना पड़े जिससे उसके सत्ता शीर्ष पर बने रहने में बाधा उत्पन्न हो। वास्तव में यह मात्र गणतन्त्र की कुण्डली से परिभाषित करना सम्भव नहीं है। यह संकेत मात्र हो सकता है। द्वादश भाव का अधिपति चतुर्थ भाव में है तथा शनि से दृष्ट भी है इससे विदेश नीति में त्रुटि से विपक्ष के प्रभाव में वृद्धि होने की सम्भावना भी है। गणतन्त्र के ५९वें वर्ष की कुण्डली का विचार करने से जो मूल बात सामने आ रही है वह आर्थिक क्षेत्र एवं आन्तरिक व्यवस्था से सम्बंधित है। यद्यपि मुंथा लग्नस्थ है किन्तु द्वितीय भाव का राहु तथा चतुर्थेश शत्रु राशि में होकर रिपु भाव में स्थित है इसके प्रभाव से आर्थिक क्षेत्र में विषम स्थिति का सामना करना पड़ सकता है तथा लोगों में अशान्ति एवं भय का वातावरण असुरक्षा की भावना के कारण उत्पन्न होगा।

गणतन्त्र की कुण्डली

१ चं.
११
सू.गु. शु.
२
१२ रा.
बु. ९
१०
३
मं. के.
६
४
८
श. ५
७

५९वें गणतंत्र की कुण्डली

रा. ११
गु. शु. ९
१२
सू.बु. मु. १०
८
७
१
४
चं. ६
२
५
मं. ३
के. श.

प्रस्तुत गणतन्त्र की वर्ष लग्न कुण्डली की ग्रह स्थिति सत्ता हस्तान्तरण की वर्ष कुण्डली के ग्रहों के प्रभाव की तरह न्यूनाधिक एक से ही घटनाक्रम की ओर इंगित करती है। चतुर्थेश और पंचमेश का क्रूर ग्रहों से दृष्ट होकर वक्री होना कोई उत्साहवर्धक स्थिति का द्योतक नहीं है। लग्नेश का पाप ग्रह से युत होना इस स्थिति की गंभीरता को और गहन कर रहा है। मात्र मंगल का तृतीयस्थ होकर मुंथा के साथ स्थित होना कुछ-कुछ स्थिति को सकारात्मक रूप देने की चेष्टा करेगा जो कि पर्याप्त फल नहीं देगा। देश में गणतन्त्र स्पष्टत: दिन प्रतिदिन अपनी महत्ता खोता दिखाई देगा। गणतन्त्र के नाम पर ढोंग, छल, छद्म का ढोल ही पीटा जाता सुनाई देगा। वस्तुत: फूट डालो और स्वार्थ साधन की नीति ही सर्वत्र दिखाई देगी। कहीं आरक्षण, कहीं अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की आड़ में सरकार जनता का शोषण करती तथा उन्हें अपनी स्वार्थ परायणता का निमित्त बनाती दिखाई देगी। उपरोक्त प्रवृत्ति के फलस्वरूप जन असन्तोष स्थान-स्थान पर प्रस्फुटित होगा। लोकतन्त्र के नाम पर जनतन्त्र की मृतक देह का ममीकरण कर उसे मात्र प्रदर्शन की वस्तु बना दिया जाएगा।
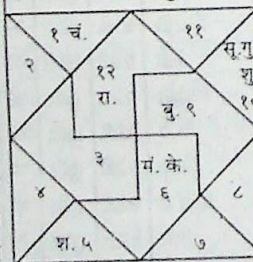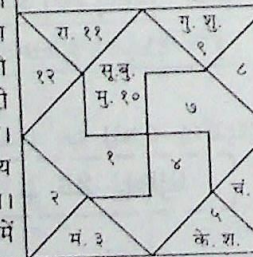
ज्योतिष एक विज्ञान है

विगत ६२ वर्षों से इस पंचांग में यह स्तम्भ लिखा जा रहा है। ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके देश-विदेश के संबंध में जो भी भविष्यवाणी की गयी हैं, वे अधिकांश में सत्य सिद्ध हुई हैं। इसके साक्षी "श्रीविश्वविजयपंचांग" के विज्ञ वाचकवृंद दे रहे हैं। दैवज्ञ ने कभी यह अभिमान नहीं किया कि जो कुछ भविष्यवाणी वह करता है वह शत-प्रतिशत सही होती है। जहां राज्याश्रय प्राप्त एलौपैथी डाक्टरी और आयुर्वेद-विज्ञान अभी तक शत-प्रतिशत सफलता की गारंटी नहीं दे पाये, वहां निराश्रित ज्योतिष-विज्ञान के गणित-विज्ञान ने शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दिखाई है। ज्योतिष गणित के द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों के स्पर्श मोक्ष का जो समय निश्चित कर दिया जाता है उसमें एक मिनट का भी अंतर नहीं आता। यद्यपि ज्योतिष शास्त्र के फलित विभाग में अभी इतनी सूक्ष्मता नहीं बन पायी है। फलित ज्योतिष को 'दैव-विद्या' कहा गया है, इसलिए राष्ट्र, समाज और व्यक्ति के संबंध में भविष्यवाणी करने वाले को "दैवज्ञ" कहा जाता है। यह "दैव-विद्या" तपस्या, साधना एवं अनुभव गम्य है। आधुनिक वातावरण का एक साधनहीन दैवज्ञ भी मनुष्य है सर्वज्ञ निर्भ्रान्त नहीं, अत: उसकी बुद्धि भी भ्रान्त हो सकती है। ग्रहगति रूप दैवी संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। उसका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान के समान सत्य ही हो- यह नहीं कहा जा सकता। मेरा विश्वास है कि भारतीय ज्योतिष विज्ञान का भविष्य कथन शास्त्र इस देश का अत्यन्त पुरातन विज्ञान है। इसका निरीक्षण-परीक्षण अवश्य होना चाहिए, और उससे प्राप्त होने वाले तथ्यों का विचार शासकीय स्तर पर भी अवश्य होना चाहिए। आज तक बिना किसी रिसर्च या शासकीय आश्रय के यह शास्त्र देश के कुछ चोटी के विद्वानों के पास सुरक्षित चला आ रहा है, और अब तक चमत्कारी विज्ञान की मान्यता पाने लगा है। आज के विज्ञान ने चाहे प्रगति क्यों न की हो पर भविष्य जानने का उसके पास कोई साधन नहीं है। अत: इस भारतीय विज्ञान की ओर शासन का ध्यान अवश्य जाना चाहिए। अनेक उच्च

राज्याधिकारी फलित ज्योतिष पर पूर्ण विश्वास रखते हैं। श्री नेहरू जी और स्वर्गीया प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी एकाधिक बार दैवज्ञों से परामर्श लिया जिसके प्रमाण मौजूद हैं, किन्तु जो मंत्री निजी तौर पर दैवज्ञों के सामने नतमस्तक होते हैं वे सार्वजनिक रूप से कहते हैं कि "हम ज्योतिष पर आस्था नहीं रखते।" इस पर सर्वसाधारण जनता को इनके दोहरे चरित्र पर आश्चर्य और खेद ही होगा, अस्तु।

मोदिनीय अथवा राष्ट्रीय भविष्य

राष्ट्रीय भविष्य अनेक प्रकार से देखा जाता है। इस विज्ञान की अनेक शाखाएं हैं, जिसके लिए जो मार्ग प्रशस्त हो जिसको गुरु से जैसा ज्ञान मिलता हो- निर्णय करें, यही उचित है। हमारे सामने सर्वप्रथम वराह-मिहिराचार्य कृत 'वाराही-संहिता' प्रमुख ग्रन्थ है, इसके अनुसार ग्रहों के परस्पर युद्ध, उदयास्त वक्रमार्ग, ग्रहों के विशेष योग और विश्व में कहाँ पर शांति और कहाँ अशांति रहेगी, इसके निर्णयार्थ सर्वतोभद्रचक्र, कर्पूरचक्र, कूर्मचक्र और नरपतिजयचर्या का संघट्ट चक्र भी है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, झंझावातादि के लिए सप्तनाड़ी चक्र उपयोगी है। इन्हीं को आधार मानकर जो कुछ इस पंचांग में लिखा जा रहा है वह भी ८० प्रतिशत से अधिक सत्य सिद्ध हुआ है। यदि इस विज्ञान को राज्याश्रय प्राप्त हो और सभी शाखाओं के विशेषज्ञ अनुभवी विद्वान एकत्र होकर सामूहिक निर्णय दें, तो इसमें शत-प्रतिशत सफलता निश्चित है। नये वर्ष का फल जानने के लिए ग्रहों की राश्यंशात्मक सूक्ष्म स्थिति का पर्यवेक्षण आवश्यक है अत: यहाँ प्रमुख ग्रहों की स्थिति का वर्षारंभ और वर्षांत का उल्लेख किया जाता है।

नये वर्ष सम्वत् २०६४ विक्रमी में ग्रह स्थिति

नये वर्ष सम्वत् २०६४ विक्रमी में प्रमुख ग्रहों की स्थिति चित्रापक्षीय निरयणमान से इस प्रकार है-

चैत्र शु. प्रतिपदा दि. १९ मार्च २००७ ई.							चैत्र कृ. अमावस्या दि. ६ अप्रैल २००८ ई.					
प्रमुख ग्रह	राशि	अं.	क.	मार्गी/ वक्री	उदय/ अस्त	नक्षत्र	राशि	अं.	क.	मार्गी वक्री	उदय अस्त	नक्षत्र
शनि	कर्क	२५	५	वक्री	उदय	आश्ले	सिंह	८	२	वक्री	उदय	मघा
गुरु	वृश्चिक	२५	१९	मार्गी	उदय	ज्येष्ठा	धनु	२६	४०	मार्गी	उदय	उ.षाढ़ा
मंगल	मकर	२१	५८	मार्गी	उदय	श्रवण	मिथुन	१९	००	मार्गी	उदय	आर्द्रा
हर्षल	कुम्भ	२१	२९	मार्गी	उदय	पूभा	कुम्भ	२६	१४	मार्गी	उदय	पू.भा.
नेप्च्यून	मकर	२६	५५	मार्गी	उदय	धनिष्ठा	मकर	२९	३६	मार्गी	उदय	धनिष्ठा
वेंकटेश	धनु	४	५७	मार्गी	उदय	मूल	धनु	७	१०	वक्री	उदय	मूल
राहु	कुम्भ	२१	३८	वक्री	अस्त	पूभा	कुम्भ	१	१६	वक्री	अस्त	धनिष्ठा
केतु	सिंह	२१	३८	वक्री	अस्त	पूफा	सिंह	१	१६	वक्री	अस्त	मघा

गुरु- वर्षारम्भ में गुरु मार्गी है। ६ अप्रैल को गुरु वक्री होकर ७ अगस्त को मार्गी होगा। वर्षारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि में है तथा २२ नवम्बर को धनु राशि में प्रवेश करेगा तथा वर्षान्त तक धनु राशि में ही संचार करेगा।

शनि- वर्षारम्भ में शनि वक्री है। २० अप्रैल को मार्गी होकर १९ दिसम्बर को पुन: वक्री होगा तथा वर्षान्त तक वक्री ही रहेगा। वर्षारम्भ में शनि कर्क राशि में है तथा १६ जुलाई को सिंह राशि में प्रवेश करेगा तथा वर्षान्त तक शनि सिंह राशि में ही संचार करेगा।

मंगल- वर्षारम्भ में मंगल मार्गी है। १५ नवम्बर को वक्री होकर ३१ जनवरी को मार्गी होगा तथा वर्षान्त तक मार्गी ही रहेगा। वर्षारम्भ में मंगल मकर राशि में है। २९ मार्च को कुम्भ में, ७ मई को मीन में, १६ जून को मेष में, २९ जुलाई को वृष में, १६ सितम्बर को मिथुन राशि में प्रवेश करेगा एवं वर्षान्त तक मिथुन राशि में ही रहेगा।

राहु-केतु- मध्यम गति से सदैव वक्री रहने वाले राहु-केतु वर्षारम्भ में राहु कुम्भ में तथा वर्षान्त में भी कुम्भ ही राशि में रहेगा। इसी प्रकार केतु भी राहु से सप्तम राशि सिंह में ही पूरे वर्ष संचार करेगा।

हर्षल- वर्षारम्भ में मार्गी है। २३ जून को वक्री होगा एवं २४ नवम्बर को मार्गी होगा तथा वर्षान्त तक मार्गी रहेगा। पूरा वर्ष हर्षल कुम्भ राशि में ही संचार करेगा।

नेपच्यून- वर्षारम्भ में नेपच्यून मार्गी है। २५ मई को वक्री होगा तथा १ नवम्बर को मार्गी होगा तथा वर्षान्त तक मार्गी रहेगा पूरा वर्ष मकर राशि में संचार करेगा।

प्लूटो (वेंकटेश)- वर्षारम्भ में मार्गी, १ अप्रैल को वक्री, ७ सितम्बर को मार्गी व पुन: २ अप्रैल २००८ को वक्री होगा व वर्षांत तक वक्री है। पूरे वर्ष प्लूटो धनु राशि में संचार करेगा।

कुछ मुख्य अशुभ योग - वर्षारम्भ में शनि-मंगल का समसप्तक योग है। २९ मार्च सन् २००७ ई. से भौम के राशि परिवर्तन करने से शनि-मंगल का अशुभकारी षड्ष्टक योग आरम्भ हो जायेगा। वैशाख मास में पांच मंगलवार एवं शनि-मंगल का षड्ष्टक योग दोनों अशुभ योग हैं। श्रावण शुक्ल पक्ष में चतुर्ग्रही योग हैं। श्रावण मास में पांच मंगलवार हैं। भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चतुर्ग्रही योग तथा कार्तिक मास में पांच शनिवार हैं। पौष कृष्ण पक्ष में प्लूटो सहित चतुर्ग्रही योग हैं तथा पौष मास में पांच मंगलवार हैं। माघ कृष्ण पक्ष में नेपच्यून सहित चतुर्ग्रही योग है। फाल्गुन कृष्ण पक्ष में हर्षल सहित पुन: चतुर्ग्रही योग तथा फाल्गुन शुक्ल पक्ष में पंचग्रही योग तथा वर्षान्त चैत्र कृष्ण पक्ष में पुन: चतुर्ग्रही योग बन रहा है।

कुछ अन्य अशुभ योग- ज्येष्ठ मास अधिक है तथा श्रावण कृष्ण पक्ष में १३ दिन का घस्र पक्ष हैं। श्रावण शुक्ल पक्ष में सुदूर पूर्वी भागों में खग्रास चन्द्र ग्रहण २८

अगस्त सन् २००७ ई. को तथा माघ शुक्ल पक्ष में सुदूर पश्चिमी भागों में दृश्य खग्रास चन्द्र ग्रहण दिनांक २१ फरवरी सन् २००८ ई. को है।

वर्ष २००७-२००८ ई.

दि. १९ मार्च २००७ ई. सोमवार को नववर्ष संवत् २०६४ का आरम्भ प्रात: भारतीय समयानुसार ८ बजकर १३ मिनट पर मेष लग्न के मिथुन नवांश में होगा। लग्न का स्वामी ग्रह जो कि अष्टमेश भी है, उच्च राशि का होकर दशम भाव में स्थित है। लग्न राष्ट्र की सामान्य स्थिति के अतिरिक्त राष्ट्र की प्रतिष्ठा एवं प्रगति का भी संकेत देता है। लग्नेश के अष्टमेश भी होने से कड़ी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ेगी किन्तु राष्ट्र की प्रतिष्ठा-मान-सम्मान में वृद्धि होने से अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर भारत की बात को ध्यान से सुना जायेगा। अष्टमेश के प्रभाववश विभिन्न प्रकार की आन्तरिक समस्याएं भी उत्पन्न होंगी। शुक्र के लग्नस्थ होने से ऐश्वर्य प्रधान वस्तुओं के उत्पादन में, मनोरंजन के साधनों की वृद्धि में एवं वाहनों के उत्पादन में भारी वृद्धि एवं प्रगति होगी। धन भाव का अधिपति लग्न में स्थित है एवं गुरु की दृष्टि भी धन भाव में है। इससे आर्थिक उन्नति का संकेत मिलता है तथा विकास की गति वह चाहे आर्थिक विकास या औद्योगिक विकास-ढांचागत क्षेत्र का विकास इन सभी विकास सूचक तत्त्वों पर गुरु की शुभदृष्टि का अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। तृतीय भाव का अधिपति लाभ भाव में मित्र के घर है किन्तु राहु के साथ स्थित है इससे पड़ौसी राष्ट्र दोहरी नीति पर चलकर परोक्षरूप से आतंकवाद को पोषित करने की मित्रद्रोही नीति पर चलता रहेगा। राहु छाया ग्रह है अत: सौहार्दपूर्ण वातावरण को ग्रहण लगाकर संबन्धों में कटुता उत्पन्न करने का कारण उत्पन्न करेगा। संचार एवं यातायात के संसाधनों में भारी वृद्धि एवं सुधार के प्रयास होंगे। राहु के प्रभाववश यातायात व संचार व्यवस्था में प्राकृतिक कारणों या सामाजिक कारणों जैसे हड़ताल-विरोध-प्रदर्शन आदि से व्यवधान उत्पन्न होगा। इसके फलस्वरूप अव्यवस्था होने से लोगों को कष्ट होगा। चतुर्थ भाव का अधिपति पंचमेश के साथ द्वादश भाव में स्थित है तथा चतुर्थ भाव में शनि वक्री होकर स्थित है तथा अष्टमेश भौम की सप्तम दृष्टि भी चतुर्थ भाव पर पड़ रही है। इसके प्रभाव से प्राकृतिक प्रकोपों अतिवर्षण-अल्पवर्षण-रोगों आदि से कृषि की हानि होगी एवं कुछ क्षेत्रों में कृषि भूमि की भी हानि होने की संभावना है। इसी प्रकार आवासीय क्षेत्रों की भी हानि शनि की स्थिति होने से प्राकृतिक प्रकोपों द्वारा होगी। मंगल की दृष्टि भी होने से कुछ भागों में जन-धन हानि की भी सम्भावना है। मंगल एवं शनि की स्थितियों से ऐसा प्रतीत होता है कि कहीं कोई बड़ी आवासीय या पुनर्वास की समस्या उत्पन्न हो सकती है। चन्द्रमा जो कि चतुर्थ भाव का अधिपति है व्यय भाव में स्थित है इससे इस समस्या के उद्भव का कारण विदेश या विदेश नीति भी हो सकती है। इस सन्दर्भ में विदेश नीति में इस वर्ष भारी सतर्कता बरतना राष्ट्र-हित में होगा। विपक्ष का प्रतिनिधित्व भी चन्द्रमा ही कर रहा है अत: विपक्ष को विदेश नीति से कोई लाभकारी मुद्दा हाथ लग सकता है। पंचम भाव में केतु स्थित है तथा पंचमेश द्वादश भावस्थ है इसके फलस्वरूप बालविकास कार्यक्रम एवं शिक्षा के क्षेत्र में सुधार अपेक्षित परिणाम नहीं देंगे। भ्रूण हत्या के मामलों में भारी वृद्धि होगी तथा कागजों पर बड़े-बड़े विकास कार्यक्रम एवं विकास योजनाएं होंगी किन्तु उनका क्रियान्वयन अपेक्षित गति से नहीं होगा। मनोरंजन के साधन अपसंस्कृति का क्षेत्र बढ़ायेंगे एवं संस्कारों की उपेक्षा होगी। बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। इस वर्ष रिपु भाव का अधिपति लाभ स्थान में राहु के साथ स्थित है तथा शनि की दृष्टि रिपु भाव पर है तथा नवांश चक्र में रिपु भावेश शत्रु की राशि में ही स्थित है तथा सूर्य की सप्तम दृष्टि भी रिपु भाव पर है इस ग्रह स्थिति के प्रभाव से शत्रु अपनी आतंकवाद को पोषित करने की पूर्व नीति पर चलता रहेगा तथा कुछ बड़ी अस्थिरता एवं अशांति फैलाने वाली घटनाओं को क्रियान्वित करने का प्रयास करेगा जिसमें उसे आंशिक सफलता भी मिलेगी किन्तु इसके परिणामस्वरूप उसे भारी हानि भी उठानी पड़ेगी। इस वर्ष किसी रोग के महामारी का रूप धारण करने की प्रबल संभावना है जिससे भय एवं अशान्ति का वातावरण बनेगा। कुछ क्षेत्रों में भारत प्रतिस्पर्धा में आगे निकलेगा या बराबरी करेगा। औद्योगिक विकास की गति तेज होगी। जो ग्रह तृतीयेश है वही ग्रह रिपुभावेश भी है इसके प्रभाव से किसी देश विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। इससे उत्पन्न स्थिति पर सरकार व विपक्ष में भारी टकराव होने की सम्भावना है। सप्तम भाव का स्वामी शुक्र लग्न में स्थित होकर सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा सप्तमेश पर शनि की दशम पूर्ण दृष्टि एवं भौम की पूर्ण चतुर्थ दृष्टि है। इससे विकास योजनाओं में तथा हर प्रकार के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी। महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में भारी वृद्धि होगी तथा तलाक के मामलों में इस वर्ष अप्रत्याशित रूप से भारी वृद्धि होने का ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। महिलाओं के कल्याण हेतु बड़ी योजनाएं तथा महिलाओं की

नववर्ष प्रवेश कुण्डली

२
सू. चं. १२
३
१ शु.
बु. रा. ११
मं. १०
४ श (व)
७
के. ५
९
६
गु. ८

नवमांश कुण्डली

४ श.
२
के. ५
३
१
१२
६
चं. ९
७ मं. सू.शु. गु.
रा. ११
८ बु.
१०

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
इष्टबल	३९	२०	४१	३१	३१	४६	४१
कष्टबल	२१	४०	१९	२९	२९	१४	१९

सुरक्षा हेतु कड़े सुरक्षा कानून के प्रावधान की आवश्यकता महसूस होगी जिस पर समुचित कार्यवाही होगी एवं नये कानून बनेंगे। विदेश व्यापार की दृष्टि से यह वर्ष मिश्रित फल वाला है। कुछ क्षेत्रों में निर्यात में भारी वृद्धि होगी जबकि कुछ क्षेत्रों में निर्यात घटेगा। अतः कुल मिलाकर व्यापार संतुलन पूर्ववत रहेगा। तकनीकी क्षेत्र में विदेश व्यापार में इस वर्ष बड़ी सफलता प्राप्त होगी क्योंकि सप्तमेश नवांश कुण्डली में अपने घर स्थित है तथा शुक्र का इष्टबल भी अधिक है। जिससे सजावटी वस्तुओं एवं ऐश्वर्य प्रसाधनों के व्यापार में भी विशेष वृद्धि व लाभ होगा। अष्टम भाव का अधिपति भौम उच्च का होकर स्थित है तथा अष्टम भाव में ही गुरु भी स्थित है। राजकोष की स्थिति इस ग्रह स्थिति के प्रभावश संतोषजनक रहेगी किन्तु अष्टमेश पर शनि की दृष्टि बीच में कुछ आर्थिक समस्या उत्पन्न कर सकती है। शनि-मंगल का प्रतियोग आकस्मिक घटनाक्रम को जन्म देने वाला है जिसके प्रभाव से राजकोष पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। अष्टम स्थान का गुरु इस वर्ष भू सम्पदा के दोहन में भारी सफलता प्रदान करेगा। इसके फलस्वरूप भविष्य में आर्थिक स्थिति- राजकोष की स्थिति पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा तथा राजकोष की स्थिति सुदृढ़ होगी। नवम भाव का अधिपति जो कि द्वादश भाव का भी अधिपति है अष्टम स्थान में स्थित है। अष्टमस्थ नवमेश की चतुर्थस्थ दशमेश पर नवम दृष्टि है इसके प्रभाव से धार्मिक नेताओं का रुझान राजनीति की ओर अधिक होगा तथा धार्मिक मानदण्डों के अनुरूप उनका आचरण नहीं होगा। अष्टमस्थ गुरु के कारण किसी बड़े धार्मिक नेता के लिए यह वर्ष नेष्ट है। यह अशुभता सामाजिक दृष्टि से या स्वास्थ्य की दृष्टि से किसी भी रूप में हो सकती है। कुछ ऐसी परिस्थितियां भी बनेंगी कि धार्मिक नेताओं को अपने आचरण व व्यवहार में अपने पद की गरिमा के अनुरूप व्यवहार करने पर बाध्य होना पड़ेगा। इस वर्ष न्याय व्यवस्था में भी कोई प्रभावी सुधार होने की सम्भावना है तथा कानून व्यवस्था में कमी इस वर्ष परिलक्षित होगी। कानून व्यवस्था के घटते स्तर तथा पुलिस के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठेगी। कुछ बड़े काण्डों में पुलिस की संलिप्तता भी उजागर होगी। दशम स्थान का अधिपति शनि दशम भाव को पूर्ण सप्तम दृष्टि से देख रहा है। शनि वक्र गति युक्त है। शास्त्र में नियम है कि भावाधिप अपने भाव को यदि देखे तो वह उस भाव को पुष्ट करता है। यहाँ शनि को अष्टमेश भौम भी देख रहा है एवं द्वादशेश नवमेश गुरु की दृष्टि भी दशमेश पर है पुनः मंगल अष्टमेश होकर दशमस्थ है। इस प्रकार सत्ता पक्ष का ग्रह कुछ पीड़ित भी है इससे शासक को विरोधों एवं विभिन्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। कई बार विपक्ष सत्तापक्ष पर भारी पड़ेगा तथा शासक की सत्ता पर पकड़ कमजोर पड़ती दिखाई देगी। शनि-मंगल का प्रतियोग कोई नाटकीय घटनाक्रम उत्पन्न कर दे तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं। शासक दल को भी अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए अथक प्रयास करने पड़ेंगे। शासक को निर्णय लेने में कुछ अवसरों पर असमंजस की स्थिति का सामना करना पड़ेगा। एकादश भाव में राहु एवं बुध की स्थिति सामान्य आय को दर्शा रहा है। अतः सकल राष्ट्रीय आय में विशेष वृद्धि का संकेत ग्रह स्थिति नहीं दे रही है। द्वादश भाव में पंचमेश एवं चतुर्थेश दोनों स्थित हैं तथा द्वादशेश अष्टम में है। अतः इस वर्ष सीमा विवाद को सुलझाने के लिए गम्भीर प्रयास किये जाने की सम्भावना है। कुछ नये स्थलों पर भी सीमा विवाद उत्पन्न हो सकता है जोकि अन्य विवादों के सुलझने के कारण बन सकता है। समुद्री सीमा में भी अतिक्रमण या विवाद उत्पन्न हो सकता है किन्तु समाधान भी निकलने की सम्भावना है।

नव वर्ष प्रवेश कुंडली में लग्नेश मंगल दशम भाव में उच्च का है परन्तु पाप ग्रह शनि से दृष्ट होकर समसप्तक योग बना रहा है। बुध, राहु एकादश भाव में स्थित हैं। सूर्य चन्द्र द्वादशस्थ है। भाग्येश, द्वादशेश गुरु अष्टमस्थ है। शनि वक्री होकर चतुर्थ सुख भाव में स्थित है। नवांश में भी ग्रह स्थिति लगभग ऐसी ही है। इसमें मंगल नीच भाव में चला गया है। गुरु के नवमस्थ होने से किंचित परिवर्तन है। शनि नवांश में भी मंगल की अष्टम दृष्टि से पीड़ित है। इस वर्ष भी कोई विलक्षण चमत्कारिक स्थिति नहीं है। लग्नस्थ शुक्र का शनि, मंगल से दृष्ट होकर पीड़ित होना कोई शुभ संकेत नहीं दे रहा है। शत्रु क्षेत्रीय केतु की शुक्र से नवम् पंचम स्थिति अपना प्रतिकूल प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहेगी। स्त्रियों के प्रति तिरस्कार एवं घिनौने अपराध की घटनाएं बहुतायत से घटेंगी। स्त्रियों को मात्र भोग विलास की सामग्री समझने की आसुरी प्रवृत्ति बलवती होगी। कला कौशल अभिनय व गायन की दिशा में भी वांछित उन्नति नहीं होगी। कला की विधाओं का कलुषित कामजन्य अश्लील प्रदर्शन जनमानस को विकृत्त करेगा। दाम्पत्य जीवन में विघटन, क्लेश, मनमुटाव, तलाक की प्रवृत्तियों की वृद्धि समाज की चिन्ता का कारण बनेगी। ग्रह स्थिति से ऐसा प्रतीत होता है कि सुख, शान्ति का समय दिवास्वप्न होकर रह गया है। औद्योगिक क्षेत्र में श्रमिक वर्ग का असन्तोष भड़ककर रक्तरंजित घटनाक्रम को जन्म दे सकता है। अतः हड़ताल, तालाबन्दी के परिणाम अन्ततः दंगे, आगजनी का यदि स्वरूप धारण कर लें तो आश्चर्य न होगा। कहीं-कहीं श्रमिक आन्दोलन को दबाने के लिए बल प्रयोग के प्रयास अवांछित फल प्रकट कर सकते हैं। इस गहन अन्धकार के परिप्रेक्ष्य में भी अध्यात्म की एक किरण त्रस्त जनमानस को शांति प्रदान करने में सक्षम रहेगी। अध्यात्म के दीप हताश मानवता को शांत करने में सफल होंगे। अध्यात्म की अमृतवर्षिणी दृष्टि संतप्त जनता को शुभ मार्ग

पर चलने की प्रेरणा देगी। कहीं कुछ देश सशस्त्र संघर्ष में लीन रहेंगे। विश्व इस्लामिक धर्मान्धता एवं उग्रवाद से पीड़ित रहेगा। परन्तु विश्व के शान्तिपूर्ण अस्तित्व के लिए इस आतंकवाद को मूलतः समाप्त करना ही एकमात्र लक्ष्य निर्धारित होता दृष्टिगोचर होगा अर्थात् समस्त सभ्यविश्व एकजुट होकर इस नृशंसता का समापन करने के लिए कटिबद्ध होता दृष्टिगोचर होगा। अखिल विश्व में विभिन्न स्तरों पर रक्तरंजित भयंकर विस्फोटक स्थिति बनेगी। स्थान-स्थान पर आतंकवाद के नाग फन उठाकर शान्त वातावरण में विष घोलते रहेंगे। इसी संदर्भ में रेल, सड़क परिवहन तथा वायुमार्ग भी अछूते न रहेंगे। इस आतंकवादी गतिविधियों के केन्द्र यूरोप व अमेरिकन महाद्वीप भी बनेंगे, जिनके कारण वहां की जनता त्रस्त रहेगी, अतः उन क्षेत्रों की सरकारों को संयुक्त रूप से इन उग्रवाद के पिशाचों का समूल हनन करना होगा। सम्भवतः रक्त रंजित व कठोर दमनकारी उपाय ही इनका एकमात्र विकल्प प्रतीत होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ अपनी पूर्व की गरिमा दिन-प्रतिदिन खोकर विश्व की विभिन्न स्तरीय समस्याओं को सुलझाने में भी अशक्त होकर मात्र छटपटा कर रह जायेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ मात्र अपील करने का व निरर्थक बहस, भाषणबाजी का मंच बनकर रह जाएगा। यह संस्था कुछ प्रभावशाली देशों की कठपुतली मात्र बन कर रह जाएगी जिन देशों की आर्थिक एवं अन्य सहायता की प्राणवायु पर यह आश्रित है।

इस वर्ष विभिन्न राष्ट्रों के मध्य हुई संधियां निष्प्रभावी होगी और टूटेंगी। आकस्मिक दुर्घटनाओं और प्राकृतिक आपदाओं की सम्भावना बलवती होगी और जनधन की व्यापक क्षति होगी। वहीं किसी स्थान पर ज्वालामुखी विस्फोट तथा कहीं भूकम्प या जलप्लावन जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति दारुण दुःख का कारण बनेगी। इस्लामी आतंकवादी भी अपनी ओर से मानवता को संत्रस्त किए बिना नहीं रहेंगे। एक बार तो इनकी फड़फड़ाहट विश्व को स्तब्ध कर देगी। तत्पश्चात् पर्याप्त काल के अन्तराल के बाद इन विषैले सर्पों का फन कुचला जाएगा और यह आतंकवाद के मूर्तिमान स्वरूप दैत्य कयामत की प्रतीक्षा में सदा के लिए दफन हो जाएंगे। आगामी समय साम्यवाद एवं संकीर्ण एक व्यक्ति परक व एक व्यक्ति विशेष को देववाणी का सन्देशवाहक मानने वाले धर्मों के लिए संक्रमणकारी तथा ऐतिहासिक घटनाक्रम वाला सिद्ध होगा। कहीं यह घटनाक्रम उपरोक्त विचारधारा के लिए अस्तित्व का प्रश्न न खड़ा कर दे?

विश्व स्तर पर नारी जाति के सम्मान में पर्याप्त न्यूनता स्पष्ट परिलक्षित होगी। नारी जाति के प्रति मातृभावना के स्थान पर उसे भोग की वस्तु समझने की प्रवृत्ति बढ़ती जाएगी। स्वयं स्त्री वर्ग भी इस स्थिति के लिए काफी सीमा तक उत्तरदायी होगा। वर्तमान युग की सौन्दर्य प्रतियोगिताएं नग्नता का प्रदर्शन करने के रंगमंच बनते दिखाई देंगे। इन प्रतियोगिताओं में सभ्य आचार के भाव लुप्त होते अनुभूत होंगे। विवाह सम्बन्धों में भी अनमेल विवाह की दुर्घटनाएं देखने को मिलेंगी अर्थात् विवाहित दम्पत्तियों में एक दूसरे की आयु में बहुत अधिक अन्तराल दिखाई देगा।

विश्व स्तर पर अधिनायक व सभ्रान्त राजकुलों का स्तर नगण्य होता दिखाई देगा। समस्त विश्व में अभिजात्य वर्ग, शासक वर्ग की पकड़ भी शासन तन्त्र पर ढीली पड़ती दिखाई देगी। दूसरे शब्दों में शासित वर्ग, जनसाधारण अपने कर्त्तव्यों से अधिक अपने अधिकारों के प्रति सजग सचेष्ट दृष्टिगोचर होंगे। यहीं से तथाकथित समाजवाद का पतन प्रारम्भ हो जाएगा क्योंकि कर्त्तव्यनिष्ठा के बिना अधिकार की लिप्सा सामाजिक व राजनैतिक तन्त्र को विघटित कर देती है। यही मनोवृत्ति गृह युद्ध की स्थिति की ओर पहला कदम होता है। दूसरे शब्दों में अराजकता व्याप्त होती दिखाई देगी।

नववर्ष प्राकृतिक प्रकोप तथा भीषणकाण्डों के लिए जिनमें जनधन की हानि अत्यधिक होगी जाना जाएगा। मुख्यतः विश्व के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में समय-समय पर आकस्मिक विस्फोट तथा कंपन तीव्रता से अनुभव किए जाएंगे अर्थात् अग्निकाण्ड जिनमें मुख्यतः किसी स्थान विशेष पर ज्वालामुखी विस्फोट की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता तथा अलग-अलग स्थानों पर भूकम्भ की अधिकाधिक तीव्रता अनुभव होगी। सागर तटीय क्षेत्र आकस्मिक जलप्लावन से प्रभावित होंगे। मानव निर्मित उपद्रव भी अपना वीभत्स रूप दिखाते रहेंगे। इस्लामी जेहाद अपनी घृणितम छवि उपस्थित किए बिना न रहेगा। विश्व में विकृत जेहादी मानसिकता के रोगी एक मंच पर एकत्रित होकर, एक स्वर में आतंकवाद का समर्थन करते हुए पैशाचिकता का नग्न नृत्य करते दिखाई देंगे। शिया और सुन्नी विचारधाराओं से प्रभावित यह विक्षिप्त वर्ग गठबन्धन करके विश्व शांति के लिए खतरा बन जाएंगे। दूसरे शब्दों में अधिकांश इस्लामी देश इस बर्बर रक्तिम संघर्ष का प्रत्यक्ष व परोक्ष समर्थन व पोषण करेंगे। विश्व का यह जेहादी समाज अपनी हीन भावना तथा कट्टर धर्मान्धता का शिकार होकर शेष विश्व समाज से कटा हुआ दिखाई देगा। इस वर्ग का धार्मिक व राजनैतिक नेतृत्व अपनी अदूरदर्शिता तथा स्वार्थ परायणता का पोषण करते हुए अपने अनुयाइयों को अनिश्चितता के भयावह अन्धकूप में ढकेलता हुआ स्पष्ट दिखाई देगा। इस वर्ग का जन साधारण भी कुण्ठित बुद्धि वाला होकर अपने नेतृत्व के आदेशानुसार बलिपक्षु सा आचरण करता प्रतीत होगा तथापि इस वर्ग में से भी कुछ बुद्धिजीवी व्यक्ति अपना निष्पक्ष और न्यायोचित मत प्रकट कर इस धर्मान्धता की आंधी का विरोध मुखर होकर करेंगे। भले ही उनके विरोध के स्वर नक्कार खाने में तूती के समान होंगे। इस धर्मान्ध समाज में बौद्धिकता के आशिंक स्वर प्रकट होने लगेंगे जो कि पर्याप्त अन्तराल के पश्चात अपना प्रभाव दिखा पाएंगे।

शेष पृष्ठ २२५ पर

दैनिक स्पष्ट ग्रह

इस पंचांग में यहां नीचे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, विकला पर्यन्त तथा राहु, हर्षल और नेपच्यून कला पर्यन्त दिये गये हैं। ये दैनिक स्पष्ट ग्रह प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ बजकर ३० मिनट के हैं। प्रारंभ में सूर्य से पूर्व से साम्पादिक काल मध्य रात्रि १२ बजे का लगाया गया है। इन स्पष्ट ग्रहों के प्रत्येक स्थान के तात्कालिक स्पष्ट ग्रह जानने की विधि यह है जैसे भारत में कहीं भी किसी दिन स्टैण्डर्ड टाईम दिन के २ बजकर ४५ मिनट पर किसी व्यक्ति का जन्म या प्रश्न है तो प्रातः घण्टा ५, मिनट ३० से मध्यान्होत्तर घं. १४/४५ तक घटा ९/१५ हुए, यह घंटात्मक धन चालन हुआ। इस चालन को २।। (ढाई) से गुणा करने पर २३।७।३० घटी, पल, विपलात्मक चालन बन गया। इस चालन के द्वारा दैनिक ग्रह गति को त्रैराशिक या गोमूत्रिका क्रम से गुणा कर दें, कलादिफल को मार्गी ग्रह में जोड़ने से तथा वक्री ग्रह में घटाने से तात्कालिक स्पष्ट राहु में ६ राशि जोड़ने पर केतु स्पष्ट हो जाता है अतएव यहां केतु अलग से नहीं लिखा है। इन दैनिक ग्रहों से गति जानने की विधि यह है कि जिस दिन गति स्पष्ट करनी है, उस दिन के राश्यादि ग्रह को अगले दिन के राश्यादि स्पष्ट ग्रह में से घटाने से जो शेष रहे वह उस दिन कि गति होगी। यह चांद्र वर्ष २० मार्च २००७ से प्रारंभ होकर ६ अप्रैल २००८ ई. को समाप्त हो रहा है जिसके दैनिक स्पष्ट ग्रह यहां नीचे दिये जा रहे हैं-

मार्च सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५७'।३०'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।४°।४८'(मार्गी)

ता. मार्च	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु (मध्यम) रा. अं. क. वि.	हर्षल घं. मि. सै.	नेपच्यून घं. मि. सै.	ता. मार्च
२०	११।४८।३५	११।०५।०२।२०	११।१७।३५।०२	९।२२।४४।०८	१०।०७।२४।४५	७।२५।२२।१३	०।०८।३३।१६	३।२५।०१।५०	१०।२१।३४।४४	१०।२१।३२	०९।२६।५७	२०
२१	११।५२।३१	११।०६।०२।०९	०।०२।४३।१४	९।२३।३०।०१	१०।०८।२०।१२	७।२५।२५।१६	०।०९।४५।३७	३।२४।५८।४५	१०।२१।३१।३३	१०।२१।३६	०९।२६।५९	२१
२२	११।५६।२८	११।०७।०१।४६	०।१७।४१।००	९।२४।१५।५५	१०।०९।१८।३२	७।२५।२८।०८	०।१०।५७।५३	३।२४।५५।४५	१०।२१।२८।२२	१०।२१।३९	०९।२७।००	२२
२३	१२।००।२५	११।०८।०१।२१	१।०२।२०।४५	९।२५।०१।४९	१०।१०।१९।३५	७।२५।३०।४९	०।१२।१०।०५	३।२४।५२।५१	१०।२१।२५।१२	१०।२१।४२	०९।२७।०३	२३
२४	१२।०४।२१	११।०९।००।५३	१।१६।३७।२४	९।२५।४७।४४	१०।११।२३।१२	७।२५।३३।२०	०।१३।२२।१२	३।२४।५०।०२	१०।२१।२२।०१	१०।२१।४६	०९।२७।०४	२४
२५	१२।०८।१८	११।१०।००।२३	२।००।२८।३८	९।२६।३३।४०	१०।१२।२९।१६	७।२५।३५।३९	०।१४।३४।१५	३।२४।४७।१८	१०।२१।१८।५०	१०।२१।४९	०९।२७।०६	२५
२६	१२।१२।१४	११।१०।५९।५०	२।१३।५४।३४	९।२७।१९।३६	१०।१३।३७।३७	७।२५।३७।४८	०।१५।४६।१२	३।२४।४४।४१	१०।२१।१५।३९	१०।२१।५२	०९।२७।०८	२६
२७	१२।१६।११	११।११।५९।१६	२।२६।५७।०७	९।२८।०५।३३	१०।१४।४८।११	७।२५।३९।४५	०।१६।५८।०५	३।२४।४२।०८	१०।२१।१२।२८	१०।२१।५६	०९।२७।१०	२७
२८	१२।२०।०८	११।१२।५८।३९	३।०९।३९।२०	९।२८।५१।३०	१०।१६।००।५२	७।२५।४१।३२	०।१८।०९।५२	३।२४।३९।४२	१०।२१।०९।१७	१०।२१।५९	०९।२७।११	२८
२९	१२।२४।०४	११।१३।५७।५९	३।२२।०४।४५	९।२९।३७।२८	१०।१७।१५।३४	७।२५।४३।०७	०।१९।२१।३४	३।२४।३७।२२	१०।२१।०६।०७	१०।२२।०२	०९।२७।१३	२९
३०	१२।२८।००	११।१४।५७।१८	४।०४।१७।००	१०।००।२३।२६	१०।१८।३२।१२	७।२५।४४।३२	०।२०।३३।११	३।२४।३५।०७	१०।२१।०२।५६	१०।२२।०५	०९।२७।१५	३०
३१	१२।३१।५७	११।१५।५६।३४	४।१६।१९।२६	१०।०१।०९।२५	१०।१९।५०।४३	७।२५।४५।४५	०।२१।४४।४३	३।२४।३२।५८	१०।२०।५९।४५	१०।२२।०९	०९।२७।१७	३१

अप्रैल सन् २००८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५८'।३०'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।७°।१०'(मार्गी/वक्री)

ता. अप्रैल	मध्य रात्रि १२ बजे सा. का. घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु (मध्यम) रा. अं. क. वि.	हर्षल घं. मि. सै.	नेपच्यून घं. मि. सै.	ता. अप्रैल
१	१२।३८।५४	११।१७।३९।५१	९।११।३०।०६	२।१६।४४।३५	११।०२।५४।२८	८।२६।०९।०९	१०।२९।३३।४०	४।०८।३५।१०	१०।०१।३२।४७	१०।२५।५८	९।२९।२८	१
२	१२।४२।५०	११।१८।३९।०३	९।२४।२४।३९	२।१७।११।२६	११।०४।४१।२४	८।२६।१५।४८	११।००।४७।४६	४।०८।३२।०१	१०।०१।२९।३६	१०।२६।०१	९।२९।३०	२
३	१२।४६।४७	११।१९।३८।१३	१०।०७।४४।२३	२।१७।३८।३०	११।०६।२९।४३	८।२६।२२।१७	११।०२।०१।५२	४।०८।२८।५८	१०।०१।२६।२६	१०।२६।०५	९।२९।३१	३
४	१२।५०।४३	११।२०।३७।२२	१०।२१।३०।५९	२।१८।०५।४४	११।०८।१९।२७	८।२६।२८।३७	११।०३।१५।५८	४।०८।२६।०१	१०।०१।२३।१५	१०।२६।०८	९।२९।३३	४
५	१२।५४।४०	११।२१।३६।२९	११।०५।४३।४६	२।१८।३३।११	११।१०।१०।३६	८।२६।३४।४८	११।०४।३०।०४	४।०८।२३।०८	१०।०१।२०।०४	१०।२६।११	९।२९।३४	५
६	१२।५८।३६	११।२२।३५।३३	११।२०।१९।०४	२।१९।००।४८	११।१२।०३।११	८।२६।४०।४९	११।०५।४४।०९	४।०८।२०।२१	१०।०१।१६।५४	१०।२६।१४	९।२९।३६	६

अप्रैल सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांश : २३°।५७'।३४'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।५°।००' (वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
मई	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	मई
१	१२।३५।५४	११।१६।५५।४३	०४।२८।१५।०१	१०।०१।५५।२४	१०।२१।११।०३	७।२५।४६।४७	०।२२।५६।०९	३।२४।३०।५५	१०।२०।५६।३५	१०।२२।१२	९।२७।१८	१
२	१२।३९।५१	११।१७।५४।५५	०५।१०।०६।२३	१०।०२।४१।२४	१०।२२।३३।०९	७।२५।४७।३८	०।२४।०७।३०	३।२४।२८।५९	१०।२०।५३।२४	१०।२२।१५	९।२७।२०	२
३	१२।४३।४७	११।१८।५४।०५	०५।२२।५५।४७	१०।०३।२७।२५	१०।२३।५६।५८	७।२५।४८।१८	०।२५।१८।४५	३।२४।२७।०८	१०।२०।५०।१३	१०।२२।१८	९।२७।२१	३
४	१२।४७।४४	११।१९।५३।१३	०६।०३।४५।१७	१०।०४।१३।२५	१०।२५।२२।२७	७।२५।४८।४७	०।२६।२९।५५	३।२४।२५।२३	१०।२०।४७।०३	१०।२२।२१	९।२७।२३	४
५	१२।५१।४०	११।२०।५२।१९	०६।१५।३६।५०	१०।०४।५९।२६	१०।२६।४९।३६	७।२५।४९।०४	०।२७।४०।५९	३।२४।२३।४५	१०।२०।४३।५२	१०।२२।२४	९।२७।२४	५
६	१२।५५।३७	११।२१।५१।२३	०६।२७।३२।२८	१०।०५।४५।२८	१०।२८।१८।२२	व.७।२५।४९।१०	०।२८।५१।५७	३।२४।२२।१२	१०।२०।४०।४१	१०।२२।२८	९।२७।२६	६
७	१२।५९।३३	११।२२।५०।२५	०७।०९।३४।२६	१०।०६।३१।३०	१०।२९।४८।४३	७।२५।४९।०५	१।००।०२।५०	३।२४।२०।४६	१०।२०।३७।३०	१०।२२।३१	९।२७।२७	७
८	१३।०३।३०	११।२३।४९।२५	०७।२१।४५।२४	१०।०७।१७।३२	११।०१।२०।४०	७।२५।४८।४९	१।०१।१३।३६	३।२४।१९।२६	१०।२०।३४।२०	१०।२२।३४	९।२७।२९	८
९	१३।०७।२७	११।२४।४८।२३	०८।०४।०८।३०	१०।०८।०३।३४	११।०२।५४।१०	७।२५।४८।२१	१।०२।२४।१७	३।२४।१८।१२	१०।२०।३१।०९	१०।२२।३७	९।२७।३०	९
१०	१३।११।२३	११।२५।४७।२०	०८।१६।४७।०५	१०।०८।४९।३७	११।०४।२९।१४	७।२५।४७।४२	१।०३।३४।५२	३।२४।१७।०५	१०।२०।२७।५८	१०।२२।४०	९।२७।३२	१०
११	१३।१५।२०	११।२६।४६।१५	०८।२९।४४।४२	१०।०९।३५।४०	११।०६।०५।५१	७।२५।४६।५२	१।०४।४५।२१	३।२४।१६।०४	१०।२०।२४।४७	१०।२२।४३	९।२७।३३	११
१२	१३।१९।१६	११।२७।४५।०८	०९।१३।०४।३६	१०।१०।२१।४३	११।०७।४४।०१	७।२५।४५।५१	१।०५।५५।४३	३।२४।१५।१०	१०।२०।२१।३६	१०।२२।४६	९।२७।३५	१२
१३	१३।२३।१३	११।२८।४४।००	०९।२६।४९।२०	१०।११।०७।४५	११।०९।२३।४३	७।२५।४४।३८	१।०७।०६।००	३।२४।१४।२२	१०।२०।१८।२५	१०।२२।४९	९।२७।३६	१३
१४	१३।२७।०९	११।२९।४२।५०	१०।११।००।०६	१०।११।५३।४८	११।११।०५।००	७।२५।४३।१४	१।०८।१६।१०	३।२४।१३।४०	१०।२०।१५।१५	१०।२२।५२	९।२७।३७	१४
१५	१३।३१।०६	०।००।४१।३८	१०।२५।३५।५१	१०।१२।३९।५१	११।१२।४७।४९	७।२५।४१।३९	१।०९।२६।१४	३।२४।१३।०४	१०।२०।१२।०४	१०।२२।५४	९।२७।३८	१५
१६	१३।३५।०२	०।०१।४०।२४	११।१०।३२।४०	१०।१३।२५।५३	११।१४।३२।१२	७।२५।३९।५३	१।१०।३६।११	३।२४।१२।३५	१०।२०।०८।५४	१०।२२।५७	९।२७।४०	१६
१७	१३।३८।५९	०।०२।३९।०८	११।२५।४३।३२	१०।१४।११।५५	११।१६।१८।१०	७।२५।३७।५५	१।११।४६।०२	३।२४।१२।१३	१०।२०।०५।४३	१०।२३।००	९।२७।४१	१७
१८	१३।४२।५६	०।०३।३७।५१	००।१०।५९।०१	१०।१४।५७।५७	११।१८।०५।४३	७।२५।३५।४६	१।१२।५५।४६	३।२४।११।५७	१०।२०।०२।३२	१०।२३।०३	९।२७।४२	१८
१९	१३।४६।५२	०।०४।३६।३१	००।२६।०८।३२	१०।१५।४३।५८	११।१९।५४।५०	७।२५।३३।२७	१।१४।०५।२३	३।२४।११।४८	१०।१९।५९।२१	१०।२३।०६	९।२७।४३	१९
२०	१३।५०।४९	०।०५।३५।०९	०१।११।०२।१३	१०।१६।२९।५९	११।२१।४५।३४	७।२५।३०।५७	१।१५।१४।५२	मा.३।२४।११।४५	१०।१९।५६।११	१०।२३।०९	९।२७।४४	२०
२१	१३।५४।४५	०।०६।३३।४६	०१।२५।३२।२५	१०।१७।१५।५९	११।२३।३७।५३	७।२५।२८।१५	१।१६।२४।१५	३।२४।११।४९	१०।१९।५३।००	१०।२३।११	९।२७।४६	२१
२२	१३।५८।४२	०।०७।३२।२०	०२।०९।३४।३९	१०।१८।०१।५८	११।२५।३१।४९	७।२५।२५।२४	१।१७।३३।२९	३।२४।११।५९	१०।१९।४९।४९	१०।२३।१४	९।२७।४७	२२
२३	१४।०२।३८	०।०८।३०।५२	०२।२३।०७।३९	१०।१८।४७।५७	११।२७।२७।२०	७।२५।२२।२१	१।१८।४२।३६	३।२४।१२।१६	१०।१९।४६।३८	१०।२३।१७	९।२७।४८	२३
२४	१४।०६।३५	०।०९।२९।२२	०३।०६।१२।५७	१०।१९।३३।५५	११।२९।२४।२६	७।२५।१९।०८	१।१९।५१।३५	३।२४।१२।३९	१०।१९।४३।२७	१०।२३।१९	९।२७।४९	२४
२५	१४।१०।३१	०।१०।२७।४९	०३।१८।५३।५९	१०।२०।१९।५२	००।०१।२३।०७	७।२५।१५।४५	१।२१।००।२६	३।२४।१३।०८	१०।१९।१६।००	१०।२३।२२	९।२७।५०	२५
२६	१४।१४।२८	०।११।२६।१५	०४।०१।१५।१४	१०।२१।०५।४८	००।०३।२३।२०	७।२५।१२।११	१।२२।०९।०८	३।२४।१३।४५	१०।१९।३७।०५	१०।२३।२४	९।२७।५१	२६
२७	१४।१८।२५	०।१२।२४।३८	०४।१३।११।३३	१०।२१।५१।४४	००।०५।२५।०३	७।२५।०८।२८	१।२३।१७।४२	३।२४।१४।२७	१०।१९।३३।५५	१०।२३।२७	९।२७।५२	२७
२८	१४।२२।२१	०।१३।२३।००	०४।२५।१७।४०	१०।२२।३७।३९	००।०७।२८।१२	७।२५।०४।३४	१।२४।२६।०७	३।२४।१५।१६	१०।१९।३०।४४	१०।२३।२९	९।२७।५२	२८
२९	१४।२६।१८	०।१४।२१।१९	०५।०७।०७।५२	१०।२३।२३।३३	००।०९।३२।४३	७।२५।००।३१	१।२५।३४।२२	३।२४।१६।१२	१०।१९।२७।३३	१०।२३।३२	९।२७।५३	२९
३०	१४।३०।१४	०।१५।१९।३७	०५।१८।५५।५२	१०।२४।०९।२६	००।११।३८।२९	७।२४।५६।१८	१।२६।४२।२९	३।२४।१७।१३	१०।१९।२४।२३	१०।२३।३४	९।२७।५४	३०

मई सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाइम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५७'।३८'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।४°।४६'(वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
मई	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	मई
१	१४।३४।११	०।१६।१७।५२	०६।००।४४।४३	१०।२४।५५।१८	०।१३।४५।२५	७।२४।५१।५५	१।२७।५०।२७	३।२४।१८।२१	१०।१९।२१।१२	१०।२३।३७	९।२७।५५	१
२	१४।२८।०७	०।१७।१६।०६	०६।१२।३६।५०	१०।२५।४१।०९	०।१५।५३।२०	७।२४।४७।२३	१।२८।५८।१४	३।२४।१९।३६	१०।१९।१८।०१	१०।२३।३९	९।२७।५६	२
३	१४।४२।०४	०।१८।१४।१८	०६।२४।३४।०३	१०।२६।२६।५९	०।१८।०२।०५	७।२४।४२।४१	२।००।०५।५२	३।२४।२०।५६	१०।१९।१४।५१	१०।२३।४१	९।२७।५६	३
४	१४।४६।००	०।१९।१२।२८	०७।०६।३७।४७	१०।२७।१२।४९	०।२०।११।२८	७।२४।३७।५०	२।०१।१३।२१	३।२४।२२।२३	१०।१९।११।४०	१०।२३।४४	९।२७।५७	४
५	१४।४९।५७	०।२०।१०।३६	०७।१८।४९।१६	१०।२७।५८।३७	०।२२।२१।१५	७।२४।३२।५१	२।०२।२०।३९	३।२४।२३।५६	१०।१९।०८।२९	१०।२३।४६	९।२७।५८	५
६	१४।५३।५४	०।२१।०८।४३	०८।०१।०९।५०	१०।२८।४४।२४	०।२४।३१।१२	७।२४।२७।४२	२।०३।२७।४७	३।२४।२५।३६	१०।१९।०५।१८	१०।२३।४८	९।२७।५८	६
७	१४।५७।५०	०।२२।०६।४८	०८।१३।४१।०६	१०।२९।३०।१०	०।२६।४१।०२	७।२४।२२।२५	२।०४।३४।४४	३।२४।२७।२१	१०।१९।०२।०७	१०।२३।५०	९।२७।५९	७
८	१५।०१।४७	०।२३।०४।५२	०८।२६।२५।०३	११।००।१५।५५	०।२८।५०।३०	७।२४।१७।००	२।०५।४१।३१	३।२४।२९।१३	१०।१८।५८।५६	१०।२३।५३	९।२८।००	८
९	१५।०५।४३	०।२४।०२।५५	०९।०९।२४।०४	११।०१।०१।३९	१।००।५९।१६	७।२४।११।२६	२।०६।४८।०७	३।२४।३१।११	१०।१८।५५।४५	१०।२३।५५	९।२८।००	९
१०	१५।०९।४०	०।२५।००।५६	०९।२२।४०।४०	११।०१।४७।२२	१।०३।०७।०५	७।२४।०५।४४	२।०७।५४।३२	३।२४।३३।१५	१०।१८।५२।३५	१०।२३।५७	९।२८।०१	१०
११	१५।१३।३६	०।२५।५८।५६	१०।०६।१७।२१	११।०२।३३।०३	१।०५।१३।३७	७।२३।५९।५५	२।०९।००।४६	३।२४।३३।२५	१०।१८।४९।२४	१०।२३।५९	९।२८।०१	११
१२	१५।१७।३३	०।२६।५६।५५	१०।२०।१५।५५	११।०३।१८।४२	१।०७।१८।३८	७।२३।५३।५७	२।१०।०६।४८	३।२४।३७।४१	१०।१८।४६।१३	१०।२४।०१	९।२८।०२	१२
१३	१५।२१।२९	०।२७।५४।५२	११।०४।३६।४८	११।०४।०४।२०	१।०९।२२।५०	७।२३।४७।५२	२।११।१२।३९	३।२४।४०।०३	१०।१८।४३।०३	१०।२४।०३	९।२८।०२	१३
१४	१५।२५।२६	०।२८।५२।४८	११।१९।१८।०९	११।०४।४९।५७	१।११।२३।००	७।२३।४१।४०	२।१२।१८।१७	३।२४।४२।३१	१०।१८।३९।५२	१०।२४।०५	९।२८।०२	१४
१५	१५।२९।२३	०।२९।५०।४३	००।०४।१५।१७	११।०५।३५।३१	१।१३।२२।५५	७।२३।३५।२१	२।१३।२३।४४	३।२४।४५।०४	१०।१८।३६।४१	१०।२४।०६	९।२८।०३	१५
१६	१५।३३।१९	१।००।४८।३६	००।१९।२०।४१	११।०६।२१।०४	१।१५।१८।२२	७।२३।२८।५६	२।१४।२८।५८	३।२४।४७।४४	१०।१८।३३।३०	१०।२४।०८	९।२८।०३	१६
१७	१५।३७।१६	१।०१।४६।२८	०१।०४।२४।५१	११।०७।०६।३५	१।१७।१२।१२	७।२३।२२।२३	२।१५।३३।५८	३।२४।५०।३०	१०।१८।३०।१९	१०।२४।१०	९।२८।०३	१७
१८	१५।४१।१२	१।०२।४४।१९	०१।१९।१७।५०	११।०७।५२।०४	१।१९।०३।१७	७।२३।१५।४५	२।१६।३८।४६	३।२४।५३।२१	१०।१८।२७।०९	१०।२४।१२	९।२८।०४	१८
१९	१५।४५।०९	१।०३।४२।०८	०२।०३।५०।५७	११।०८।३७।३०	१।२०।५१।२९	७।२३।०९।०१	२।१७।४३।२०	३।२४।५६।१९	१०।१८।२३।५८	१०।२४।१३	९।२८।०४	१९
२०	१५।४९।०५	१।०४।३९।५५	०२।१७।५८।०८	११।०९।२२।५५	१।२२।३६।४३	७।२३।०२।११	२।१८।४७।३९	३।२४।५९।२२	१०।१८।२०।४७	१०।२४।१५	९।२८।०४	२०
२१	१५।५३।०२	१।०५।३७।४१	०३।०१।३६।३२	११।१०।०८।१७	१।२४।१८।५२	७।२२।५५।१६	२।१९।५१।४४	३।२५।०२।३०	१०।१८।१७।३६	१०।२४।१७	९।२८।०४	२१
२२	१५।५६।५८	१।०६।३५।२५	०३।१४।४६।२५	११।१०।५३।३७	१।२५।५७।५४	७।२२।४८।१६	२।२०।५५।३४	३।२५।०५।४५	१०।१८।१४।२५	१०।२४।१८	९।२८।०४	२२
२३	१६।००।५५	१।०७।३३।०८	०३।२७।३०।३०	११।११।३८।५५	१।२७।३३।४५	७।२२।४१।११	२।२१।५९।०८	३।२५।०९।०४	१०।१८।११।१४	१०।२४।२०	९।२८।०४	२३
२४	१६।०४।५२	१।०८।३०।४९	०४।०९।५३।०७	११।१२।२४।१०	१।२९।०६।२१	७।२२।३४।०२	२।२३।०२।२६	३।२५।१२।३०	१०।१८।०८।०३	१०।२४।२१	९।२८।०४	२४
२५	१६।०८।४८	१।०९।२८।२९	०४।२१।५९।२३	११।१३।०९।२३	२।००।३५।४१	७।२२।२६।४९	२।२४।०५।२७	३।२५।१६।०१	१०।१८।०४।५३	१०।२४।२३	व.९।२८।०४	२५
२६	१६।१२।४५	१।१०।२६।०७	०५।०३।५४।४०	११।१३।५४।३३	२।०२।०१।४१	७।२२।१९।३२	२।२५।०८।१२	३।२५।१९।३७	१०।१८।०१।४२	१०।२४।२४	९।२८।०४	२६
२७	१६।१६।४१	१।११।२३।४४	०५।१५।४४।०८	११।१४।३९।४१	२।०३।२४।१९	७।२२।१२।१२	२।२६।१०।३८	३।२५।२३।१८	१०।१७।५८।३१	१०।२४।२५	९।२८।०४	२७
२८	१६।२०।३८	१।१२।२१।१९	०५।२७।३२।२६	११।१५।२४।४७	२।०४।४३।३३	७।२२।०४।४८	२।२७।१२।४७	३।२५।२७।०५	१०।१७।५५।२१	१०।२४।२७	९।२८।०४	२८
२९	१६।२४।३४	१।१३।१८।५३	०६।०९।२३।३०	११।१६।०९।५०	२।०५।५९।१९	७।२१।५७।२१	२।२८।१४।३७	३।२५।३०।५७	१०।१७।५२।१०	१०।२४।२८	९।२८।०४	२९
३०	१६।२८।३१	१।१४।१६।२५	०६।२१।२०।२७	११।१६।५४।५०	२।०७।११।३५	७।२१।४९।५२	२।२९।१६।०७	३।२५।३४।५४	१०।१७।४८।५९	१०।२४।२९	९।२८।०४	३०
३१	१६।३२।२७	१।१५।१३।५६	०७।०३।२५।३३	११।१७।३९।४८	२।०८।२०।१८	७।२१।४२।२१	३।००।१७।१८	३।२५।३८।५६	१०।१७।४५।४८	१०।२४।३०	९।२८।०४	३१

जून सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशाः २३°।५७'।४३'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।४°।८'(वक्री)

ता. जून	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु (मध्यम) रा. अं. क. वि.	हर्षल घं. मि. सै.	नेपच्यून (वक्री) घं. मि. सै.	ता. जून
१	१६।३६।२४	१।१६।११।२७	७।१५।४०।१२	११।१८।२४।४४	२।०९।२५।२४	७।२१।३४।४७	३।०१।१८।०९	३।२५।४३।०३	१०।१७।४२।३७	१०।२४।३१	९।२८।०४	१
२	१६।४०।२१	१।१७।०८।५६	७।२८।०५।१२	११।१९।०९।३६	२।१०।२६।५०	७।२१।२७।१२	३।०२।१८।३८	३।२५।४७।१६	१०।१७।३९।२६	१०।२४।३२	९।२८।०३	२
३	१६।४४।१७	१।१८।०६।२४	८।१०।४०।५३	११।१९।५४।२६	२।११।२४।३०	७।२१।१९।३६	३।०३।१८।४७	३।२५।५१।३३	१०।१७।३६।१६	१०।२४।३३	९।२८।०३	३
४	१६।४८।१४	१।१९।०३।५१	८।२३।२७।२९	११।२०।३९।१३	२।१२।१८।२२	७।२१।११।५८	३।०४।१८।३३	३।२५।५५।५५	१०।१७।३३।०५	१०।२४।३४	९।२८।०३	४
५	१६।५२।१०	१।२०।०१।१७	९।०६।२५।२३	११।२१।२३।५८	२।१३।०८।२०	७।२१।०४।२०	३।०५।१७।५६	३।२६।००।२२	१०।१७।२९।५४	१०।२४।३५	९।२८।०२	५
६	१६।५६।०७	१।२०।५८।४३	९।१९।३५।१९	११।२२।०८।४०	२।१३।५४।१९	७।२०।५६।४१	३।०६।१६।५६	३।२६।०४।५३	१०।१७।२६।४३	१०।२४।३६	९।२८।०२	६
७	१७।००।०३	१।२१।५६।०८	१०।०२।५८।२०	११।२२।५३।१८	२।१४।३६।१४	७।२०।४९।०२	३।०७।१५।३२	३।२६।०९।३०	१०।१७।२३।३२	१०।२४।३७	९।२८।०२	७
८	१७।०४।००	१।२२।५३।३२	१०।१६।३५।४७	११।२३।३७।५४	२।१५।१४।००	७।२०।४१।२३	३।०८।१३।४३	३।२६।१४।११	१०।१७।२०।२१	१०।२४।३८	९।२८।०१	८
९	१७।०७।५६	१।२३।५०।५६	११।००।२८।५२	११।२४।२२।२७	२।१५।४७।३३	७।२०।३३।४४	३।०९।११।२९	३।२६।१८।५७	१०।१७।१७।११	१०।२४।३९	९।२८।०१	९
१०	१७।११।५३	१।२४।४८।१९	११।१४।३८।०४	११।२५।०६।५६	२।१६।१६।४७	७।२०।२६।०७	३।१०।०८।४८	३।२६।२३।४७	१०।१७।१४।००	१०।२४।३९	९।२८।००	१०
११	१७।१५।५०	१।२५।४५।४२	११।२९।०२।३२	११।२५।५१।२२	२।१६।४१।३७	७।२०।१८।३०	३।११।०५।४१	३।२६।२८।४२	१०।१७।१०।४९	१०।२४।४०	९।२८।००	११
१२	१७।१९।४६	१।२६।४३।०४	०।१३।३९।२४	११।२६।३५।४५	२।१७।०२।००	७।२०।१०।५५	३।१२।०२।०६	३।२६।३३।४१	१०।१७।०७।३८	१०।२४।४०	९।२७।५९	१२
१३	१७।२३।४३	१।२७।४०।२६	०।२८।२३।३५	११।२७।२०।०४	२।१७।१७।५२	७।२०।०३।२२	३।१२।५८।०२	३।२६।३८।४५	१०।१७।०४।२८	१०।२४।४१	९।२७।५९	१३
१४	१७।२७।३९	१।२८।३७।४७	१।१३।०८।०३	११।२८।०४।२०	२।१७।२९।११	७।१९।५५।५१	३।१३।५३।२८	३।२६।४३।५३	१०।१७।०१।१७	१०।२४।४२	९।२७।५८	१४
१५	१७।३१।३६	१।२९।३५।०८	१।२७।४४।५२	११।२८।४८।३२	२।१७।३५।५७	७।१९।४८।२२	३।१४।४८।२४	३।२६।४९।०५	१०।१६।५८।०६	१०।२४।४२	९।२७।५७	१५
१६	१७।३५।३२	२।००।३२।२७	२।१२।०६।२५	११।२९।३२।४०	व.२।१७।३८।०९	७।१९।४०।५६	३।१५।४२।४७	३।२६।५४।२२	१०।१६।५४।५५	१०।२४।४२	९।२७।५७	१६
१७	१७।३९।२९	२।०१।२९।४७	२।२६।०६।४०	०।००।१६।४४	२।१७।३५।५०	७।१९।३३।३३	३।१६।३६।३८	३।२६।५९।४३	१०।१६।५१।४४	१०।२४।४३	९।२७।५६	१७
१८	१७।४३।२६	२।०२।२७।०५	३।०९।४२।०४	०।०१।००।४४	२।१७।२९।०७	७।१९।२६।१४	३।१७।२९।५४	३।२७।०५।०८	१०।१६।४८।३३	१०।२४।४३	९।२७।५५	१८
१९	१७।४७।२२	२।०३।२४।२३	३।२२।५१।४३	०।०१।४४।४०	२।१७।१८।०५	७।१९।१८।५८	३।१८।२२।३४	३।२७।१०।३७	१०।१६।४५।२२	१०।२४।४३	९।२७।५५	१९
२०	१७।५१।१९	२।०४।२१।४०	४।०५।३७।०८	०।०२।२८।३२	२।१७।०२।५५	७।१९।११।४६	३।१९।१४।३८	३।२७।१६।०९	१०।१६।४२।११	१०।२४।४३	९।२७।५४	२०
२१	१७।५५।१५	२।०५।१८।५६	४।१८।०१।३९	०।०३।१२।१९	२।१६।४३।५१	७।१९।०४।३९	३।२०।०६।०२	३।२७।२१।४६	१०।१६।३९।००	१०।२४।४४	९।२७।५३	२१
२२	१७।५९।१२	२।०६।१६।१२	५।००।०९।४७	०।०३।५६।०३	२।१६।२१।१०	७।१८।५७।३७	३।२०।५६।४७	३।२७।२७।२७	१०।१६।३५।५०	१०।२४।४४	९।२७।५२	२२
२३	१८।०३।०८	२।०७।१३।२७	५।१२।०६।४३	०।०४।३९।४२	२।१५।५५।१३	७।१८।५०।३९	३।२१।४६।५०	३।२७।३३।११	१०।१६।३२।३९	व.१०।२४।४४	९।२७।५१	२३
२४	१८।०७।०५	२।०८।१०।४१	५।२३।५७।४५	०।०५।२३।१७	२।१५।२६।२२	७।१८।४३।४६	३।२२।३६।११	३।२७।३९।००	१०।१६।२९।२८	१०।२४।४४	९।२७।५०	२४
२५	१८।११।०१	२।०९।०७।५५	६।०५।४८।०१	०।०६।०६।४७	२।१४।५५।०५	७।१८।३६।५९	३।२३।२४।४६	३।२७।४४।५१	१०।१६।२६।१८	१०।२४।४४	९।२७।४९	२५
२६	१८।१४।५८	२।१०।०५।०७	६।१७।४२।१०	०।०६।५०।१३	२।१४।२२।५२	७।१८।३०।१८	३।२४।१२।३५	३।२७।५०।४७	१०।१६।२३।०७	१०।२४।४४	९।२७।४८	२६
२७	१८।१८।५५	२।११।०२।२०	६।२९।४४।०८	०।०७।३३।३५	२।१३।४७।१५	७।१८।२३।४३	३।२४।५९।३५	३।२७।५६।४५	१०।१६।१९।५६	१०।२४।४३	९।२७।४७	२७
२८	१८।२२।५१	२।११।५९।३२	७।११।५६।५८	०।०८।१६।५३	२।१३।११।५१	७।१८।१७।१३	३।२५।४५।४६	३।२८।०२।४८	१०।१६।१६।४५	१०।२४।४३	९।२७।४६	२८
२९	१८।२६।४८	२।१२।५६।४४	७।२४।२२।३९	०।०९।००।०५	२।१२।३६।१३	७।१८।१०।५१	३।२६।३१।०४	३।२८।०८।५३	१०।१६।१३।३४	१०।२४।४३	९।२७।४५	२९
३०	१८।३०।४४	२।१३।५३।५५	८।०७।०२।१२	०।०९।४३।१४	२।१२।०१।०१	७।१८।०४।३५	३।२७।१५।२९	३।२८।१५।०२	१०।१६।१०।२३	१०।२४।४३	९।२७।४४	३०

जुलाई सन् २००७ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५७'।४९'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०३°।२२' (वक्री)

ता. जुलाई	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु (मध्यम) रा. अं. क. वि.	हर्षल (वक्री) घं. मि. सै.	नेपच्यून (वक्री) घं. मि. सै.	ता. जुलाई
१	१८।३४।४१	२।१४।५१।०६	८।१९।५५।३८	०।१०।२६।१८	२।११।२६।४९	७।१७।५८।२५	३।२७।५८।५८	३।२८।२१।१५	१०।१६।०७।१२	१०।२४।४२	९।२७।४३	१
२	१८।३८।३७	२।१५।४८।१७	९।०३।०२।१७	०।११।०९।१७	२।१०।५४।१३	७।१७।५२।२३	३।२८।४१।२९	३।२८।२७।३०	१०।१६।०४।०१	१०।२४।४२	९।२७।४२	२
३	१८।४२।३४	२।१६।४५।२८	९।१६।२१।०४	०।११।५२।११	२।१०।२३।४८	७।१७।४६।२९	३।२९।२२।५९	३।२८।३३।४९	१०।१६।००।५१	१०।२४।४२	९।२७।४१	३
४	१८।४६।३०	२।१७।४२।३९	९।२९।५०।५१	०।१२।३५।०१	२।०९।५६।०६	७।१७।४०।४२	४।००।०३।२८	३।२८।४०।१०	१०।१५।५७।४०	१०।२४।४१	९।२७।४०	४
५	१८।५०।२७	२।१८।३९।५०	१०।१३।३०।४२	०।१३।१७।४६	२।०९।३१।३६	७।१७।३५।०२	४।००।४२।५२	३।२८।४६।३५	१०।१५।५४।२९	१०।२४।४१	९।२७।३९	५
६	१८।५४।२४	२।१९।३७।०२	१०।२७।१९।५६	०।१४।००।२६	२।०९।१०।४४	७।१७।२९।३१	४।०१।२२।०८	३।२८।५३।०३	१०।१५।५१।१८	१०।२४।४०	९।२७।३८	६
७	१८।५८।२०	२।२०।३४।१३	११।११।१८।०७	०।१४।४३।०१	२।०८।५३।५४	७।१७।२४।०७	व.४।०१।५८।१६	३।२८।५९।३४	१०।१५।४८।०८	१०।२४।३९	९।२७।३६	७
८	१९।०२।१७	२।२१।३१।२५	११।२५।२४।४०	०।१५।२५।३१	२।०८।४१।२५	७।१७।१८।५२	४।०२।३४।११	३।२९।०६।०७	१०।१५।४४।५७	१०।२४।३९	९।२७।३५	८
९	१९।०६।१३	२।२२।२८।३८	०।०९।३८।२८	०।१६।०७।५६	२।०८।३३।३५	७।१७।१३।४६	४।०३।०८।५२	३।२९।१२।४३	१०।१५।४१।४६	१०।२४।३८	९।२७।३४	९
१०	१९।१०।१०	२।२३।२५।५१	०।२३।५७।२६	०।१६।५०।१५	मा.२।०८।३०।३६	७।१७।०८।४८	४।०३।४२।१५	३।२९।१९।२२	१०।१५।३८।३५	१०।२४।३७	९।२७।३३	१०
११	१९।१४।०६	२।२४।२३।०४	१।०८।१८।२२	०।१७।३२।२९	२।०८।३२।३९	७।१७।०३।५९	४।०४।१४।१८	३।२९।२६।०४	१०।१५।३५।२४	१०।२४।३७	९।२७।३१	११
१२	१९।१८।०३	२।२५।२०।१८	१।२२।३६।५६	०।१८।१४।३७	२।०८।३९।५३	७।१६।५९।१९	४।०४।४४।५८	३।२९।३२।४९	१०।१५।३२।१३	१०।२४।३६	९।२७।३०	१२
१३	१९।२१।५९	२।२६।१७।३२	२।०६।४८।०७	०।१८।५६।३९	२।०८।५२।२३	७।१६।५४।४९	४।०५।१४।१२	३।२९।३९।३६	१०।१५।२९।०३	१०।२४।३५	९।२७।२९	१३
१४	१९।२५।५६	२।२७।१४।४६	२।२०।४६।५०	०।१९।३८।३६	२।०९।१०।१३	७।१६।५०।२८	४।०५।४१।५५	३।२९।४६।२५	१०।१५।२५।५२	१०।२४।३४	९।२७।२७	१४
१५	१९।२९।५३	२।२८।१२।०१	३।०४।२८।४७	०।२०।२०।२६	२।०९।३३।२३	७।१६।४६।१६	४।०६।०८।०६	३।२९।५३।१७	१०।१५।२२।४१	१०।२४।३३	९।२७।२६	१५
१६	१९।३३।४९	२।२९।०९।१६	३।१७।५१।०२	०।२१।०२।११	२।१०।०१।५६	७।१६।४२।१५	४।०६।३२।३९	४।००।००।१२	१०।१५।१९।३०	१०।२४।३२	९।२७।२५	१६
१७	१९।३७।४६	३।००।०६।३१	४।००।५२।२४	०।२१।४३।४९	२।१०।३५।५१	७।१६।३८।२३	४।०६।५५।३२	४।००।०७।०९	१०।१५।१६।१९	१०।२४।३१	९।२७।२३	१७
१८	१९।४१।४२	३।०१।०३।४६	४।१३।३३।२९	०।२२।२५।२१	२।११।१५।०५	७।१६।३४।४१	४।०७।१६।४१	४।००।१४।०८	१०।१५।१३।०८	१०।२४।३०	९।२७।२२	१८
१९	१९।४५।३९	३।०२।०१।०२	४।२५।५६।३०	०।२३।०६।४६	२।११।५९।३७	७।१६।३१।१०	४।०७।३६।०३	४।००।२१।०९	१०।१५।०९।५८	१०।२४।२९	९।२७।२०	१९
२०	१९।४९।३५	३।०२।५८।१८	५।०८।०४।५१	०।२३।४८।०५	२।१२।४९।२४	७।१६।२७।४९	४।०७।५३।३३	४।००।२८।१२	१०।१५।०६।४७	१०।२४।२७	९।२७।१९	२०
२१	१९।५३।३२	३।०३।५५।३४	५।२०।०२।४८	०।२४।२९।१८	२।१३।४४।२२	७।१६।२४।३८	४।०८।०९।०७	४।००।३५।१७	१०।१५।०३।३६	१०।२४।२६	९।२७।१८	२१
२२	१९।५७।२९	३।०४।५२।५०	६।०१।५५।०८	०।२५।१०।२४	२।१४।४४।२८	७।१६।२१।३७	४।०८।२२।४३	४।००।४२।२५	१०।१५।००।२५	१०।२४।२५	९।२७।१६	२२
२३	२०।०१।२५	३।०५।५०।०७	६।१३।४६।५०	०।२५।५१।२३	२।१५।४९।३७	७।१६।१८।४७	४।०८।३४।१५	४।००।४९।३४	१०।१४।५७।१५	१०।२४।२४	९।२७।१५	२३
२४	२०।०५।२२	३।०६।४७।२४	६।२५।४२।४८	०।२६।३२।१६	२।१६।५९।४४	७।१६।१६।०८	४।०८।४३।४२	४।००।५६।४५	१०।१४।५४।०४	१०।२४।२२	९।२७।१३	२४
२५	२०।०९।१८	३।०७।४४।४१	७।०७।४७।३६	०।२७।१३।०२	२।१८।१४।४४	७।१६।१३।३९	४।०८।५१।००	४।०१।०३।५७	१०।१४।५०।५३	१०।२४।२१	९।२७।१२	२५
२६	२०।१३।१५	३।०८।४१।५८	७।२०।०५।०८	०।२७।५३।४१	२।१९।३४।२९	७।१६।११।२१	४।०८।५६।०५	४।०१।११।१२	१०।१४।४७।४२	१०।२४।१९	९।२७।१०	२६
२७	२०।१७।११	३।०९।३९।१६	८।०२।३८।२४	०।२८।३४।१३	२।२०।५८।५२	७।१६।०९।१४	४।०८।५८।५४	४।०१।१८।२८	१०।१४।४४।३१	१०।२४।१८	९।२७।०९	२७
२८	२०।२१।०८	३।१०।३६।३५	८।१५।२९।१७	०।२९।१४।३९	२।२२।२७।४५	७।१६।०७।१७	४।०८।५९।२६	४।०१।२५।४६	१०।१४।४१।२०	१०।२४।१६	९।२७।०७	२८
२९	२०।२५।०४	३।११।३३।५४	८।२८।३८।२०	०।२९।५४।५७	२।२४।००।५८	७।१६।०५।३२	४।०८।५७।३८	४।०१।३३।०५	१०।१४।३८।१०	१०।२४।१५	९।२७।०५	२९
३०	२०।२९।०१	३।१२।३१।१४	९।१२।०४।५२	१।००।३५।०९	२।२५।३८।१९	७।१६।०३।५७	४।०८।५३।२८	४।०१।४०।२६	१०।१४।३४।५९	१०।२४।१३	९।२७।०४	३०
३१	२०।३२।५८	३।१३।२८।३४	९।२५।४६।५८	१।०१।१५।१३	२।२७।१९।३४	७।१६।०२।३४	४।०८।४६।५४	४।०१।४७।४८	१०।१४।३१।४८	१०।२४।१२	९।२७।०२	३१

अगस्त सन् २००७ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५७'।५४'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।२°।४१'(वक्री)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अगस्त	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	अगस्त
१	२०।३६।५४	३।१४।२५।५६	१०।०९।४१।५५	१।०१।५५।१०	२।२९।०४।३०	७।१६।०१।२१	४।०८।३७।५८	४।०१।५५।११	१०।१४।२८।३७	१०।२४।१०	९।२७।०१	१
२	२०।४०।५१	३।१५।२३।१८	१०।२३।४६।३२	१।०२।३४।५९	३।००।५२।४८	७।१६।००।१९	४।०८।२६।३८	४।०२।०२।३६	१०।१४।२५।२६	१०।२४।०८	९।२६।५९	२
३	२०।४४।४७	३।१६।२०।४२	११।०७।५७।३२	१।०३।१४।४२	३।०२।४४।१२	७।१५।५९।२८	४।०८।१२।५६	४।०२।१०।०२	१०।१४।२२।१६	१०।२४।०७	९।२६।५८	३
४	२०।४८।४४	३।१७।१८।०६	११।२२।११।५३	१।०३।५४।१६	३।०४।३८।२२	७।१५।५८।४८	४।०७।५६।५३	४।०२।१७।२९	१०।१४।१९।०५	१०।२४।०५	९।२६।५६	४
५	२०।५२।४०	३।१८।१५।३२	०।०६।२६।५३	१।०४।३३।४३	३।०६।३४।५६	७।१५।५८।१९	४।०७।३८।३२	४।०२।२४।५८	१०।१४।१५।५४	१०।२४।०३	९।२६।५४	५
६	२०।५६।३७	३।१९।१२।५९	०।२०।४०।०७	१।०५।१३।०२	३।०८।३३।३४	७।१५।५८।०१	४।०७।१७।५६	४।०२।३२।२७	१०।१४।१२।४४	१०।२४।०१	९।२६।५३	६
७	२१।००।३३	३।२०।१०।२७	१।०४।४९।२३	१।०५।५२।१३	३।१०।३३।५३	मा.७।१५।५७।५४	४।०६।५५।१०	४।०२।३९।५९	१०।१४।०९।३३	१०।२४।००	९।२६।५१	७
८	२१।०४।३०	३।२१।०७।५७	१।१८।५२।३१	१।०६।३१।१६	३।१२।३५।३३	७।१५।५७।५९	४।०६।३०।१९	४।०२।४७।२९	१०।१४।०६।२२	१०।२३।५८	९।२६।४९	८
९	२१।०८।२७	३।२२।०५।२८	२।०२।४७।२१	१।०७।१०।११	३।१४।३८।११	७।१५।५८।१४	४।०६।०३।३०	४।०२।५५।०२	१०।१४।०३।११	१०।२३।५६	९।२६।४८	९
१०	२१।१२।२३	३।२३।०३।००	२।१६।३१।४२	१।०७।४८।५६	३।१६।४१।२९	७।१५।५८।४१	४।०५।३४।५०	४।०३।०२।३५	१०।१४।००।००	१०।२३।५४	९।२६।४७	१०
११	२१।१६।२०	३।२४।००।३३	३।००।०३।३१	१।०८।२७।३३	३।१८।४५।०६	७।१५।५९।१८	४।०५।०४।२६	४।०३।१०।०९	१०।१३।५६।४९	१०।२३।५२	९।२६।४५	११
१२	२१।२०।१६	३।२४।५८।०८	३।१३।२१।०५	१।०९।०६।०१	३।२०।४८।४७	७।१६।००।०७	४।०४।३२।२९	४।०३।१७।४४	१०।१३।५३।३८	१०।२३।५०	९।२६।४३	१२
१३	२१।२४।१३	३।२५।५५।४४	३।२६।२३।१३	१।०९।४४।२०	३।२२।५२।१५	७।१६।०१।०७	४।०३।५९।१०	४।०३।२५।२०	१०।१३।५०।२८	१०।२३।४८	९।२६।४१	१३
१४	२१।२८।०९	३।२६।५३।२१	४।०९।०९।२८	१।१०।२२।३०	३।२४।५५।१७	७।१६।०२।१८	४।०३।२४।३८	४।०३।३२।५६	१०।१३।४७।१७	१०।२३।४६	९।२६।४०	१४
१५	२१।३२।०६	३।२७।५१।००	४।२१।४०।२१	१।११।००।३०	३।२६।५७।४२	७।१६।०३।४०	४।०२।४९।०६	४।०३।४०।३२	१०।१३।४४।०६	१०।२३।४४	९।२६।३८	१५
१६	२१।३६।०२	३।२८।४८।३९	५।०३।५७।१६	१।११।३८।२१	३।२८।५९।१८	७।१६।०५।१३	४।०२।१२।४८	४।०३।४८।०९	१०।१३।४०।५५	१०।२३।४२	९।२६।३६	१६
१७	२१।३९।५९	३।२९।४६।१९	५।१६।०२।३५	१।१२।१६।०२	४।००।५९।५९	७।१६।०६।५७	४।०१।३५।५६	४।०३।५५।४६	१०।१३।३७।४५	१०।२३।४०	९।२६।३५	१७
१८	२१।४३।५६	४।००।४४।०१	५।२७।५९।२६	१।१२।५३।३३	४।०२।५९।३७	७।१६।०८।५२	४।००।५८।४४	४।०४।०३।२४	१०।१३।३४।३४	१०।२३।३७	९।२६।३३	१८
१९	२१।४७।५२	४।०१।४१।४४	६।०९।५१।३१	१।१३।३०।५५	४।०४।५८।०८	७।१६।१०।५८	४।००।२१।२७	४।०४।११।०२	१०।१३।३१।२३	१०।२३।३५	९।२६।३२	१९
२०	२१।५१।४९	४।०२।३९।२७	६।२१।४३।०७	१।१४।०८।०६	४।०६।५५।२६	७।१६।१३।१४	३।२९।४४।१९	४।०४।१८।४०	१०।१३।२८।१३	१०।२३।३३	९।२६।३०	२०
२१	२१।५५।४५	४।०३।३७।१२	७।०३।३८।४७	१।१४।४५।०७	४।०८।५१।२८	७।१६।१५।४२	३।२९।०७।३५	४।०४।२६।१८	१०।१३।२५।०२	१०।२३।३१	९।२६।२८	२१
२२	२१।५९।४२	४।०४।३४।५८	७।१५।४३।११	१।१५।२१।५८	४।१०।४६।१३	७।१६।१८।२०	३।२८।३१।२८	४।०४।३३।५६	१०।१३।२१।५१	१०।२३।२९	९।२६।२७	२२
२३	२२।०३।३८	४।०५।३२।४५	७।२८।००।४९	१।१५।५८।३८	४।१२।३९।३८	७।१६।२१।०८	३।२७।५६।१२	४।०४।४१।३४	१०।१३।१८।४०	१०।२३।२६	९।२६।२५	२३
२४	२२।०७।३५	४।०६।३०।३३	८।१०।३५।४२	१।१६।३५।०८	४।१४।३१।४३	७।१६।२४।०८	३।२७।२२।००	४।०४।४९।१२	१०।१३।१५।२९	१०।२३।२४	९।२६।२३	२४
२५	२२।११।३१	४।०७।२८।२३	८।२३।३०।५६	१।१७।११।२७	४।१६।२२।२६	७।१६।२७।१७	३।२६।४९।०४	४।०४।५६।५०	१०।१३।१२।१९	१०।२३।२२	९।२६।२२	२५
२६	२२।१५।२८	४।०८।२६।१४	९।०६।४८।२४	१।१७।४७।३६	४।१८।११।४९	७।१६।३०।३८	३।२६।१७।३६	४।०५।०४।२७	१०।१३।०९।०८	१०।२३।२०	९।२६।२०	२६
२७	२२।१९।२५	४।०९।२४।०६	९।२०।२८।२४	१।१८।२३।३३	४।१९।५९।५२	७।१६।३४।०८	३।२५।४७।४७	४।०५।१२।०५	१०।१३।०५।५७	१०।२३।१७	९।२६।१९	२७
२८	२२।२३।२१	४।१०।२१।५९	१०।०४।२९।२६	१।१८।५९।२०	४।२१।४६।३४	७।१६।३७।४९	३।२५।१९।४६	४।०५।१९।४२	१०।१३।०२।४६	१०।२३।१५	९।२६।१७	२८
२९	२२।२७।१८	४।११।१९।५४	१०।१८।४८।०८	१।१९।३४।५५	४।२३।३१।५७	७।१६।४१।४०	३।२४।५३।४१	४।०५।२७।१८	१०।१२।५९।३५	१०।२३।१३	९।२६।१५	२९
३०	२२।३१।१४	४।१२।१७।५१	११।०३।१९।३५	१।२०।१०।१९	४।२५।१६।०२	७।१६।४५।४१	३।२४।२९।४१	४।०५।३४।५५	१०।१२।५६।२५	१०।२३।१०	९।२६।१४	३०
३१	२२।३५।११	४।१३।१५।४९	११।१७।५७।४७	१।२०।४५।३१	४।२६।५८।४९	७।१६।४९।५२	३।२४।०७।५०	४।०५।४२।३०	१०।१२।५३।१४	१०।२३।०८	९।२६।१२	३१

सितम्बर सन् २००७ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५७'।५८'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।२°।२०' (वक्री/मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
सित.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	सित.
१	२२।३९।०७	४।१४।१३।४९	०।०२।३६।२९	१।२१।२०।३२	४।२८।४०।१९	७।१६।५४।१३	३।२३।४८।१६	४।०५।५०।०५	१०।१२।५०।०४	१०।२३।०६	९।२६।११	१
२	२२।४३।०४	४।१५।११।५१	०।१७।०९।५६	१।२१।५५।२०	५।००।२०।३४	७।१६।५८।४४	३।२३।३१।०१	४।०५।५७।४०	१०।१२।४६।५३	१०।२३।०३	९।२६।०९	२
३	२२।४७।००	४।१६।०९।५५	१।०१।३३।२६	१।२२।२९।५६	५।०१।५९।३५	७।१७।०३।२५	३।२३।१६।०८	४।०६।०५।०१	१०।१२।४३।४२	१०।२३।०१	९।२६।०८	३
४	२२।५०।५७	४।१७।०८।०१	१।१५।४३।४२	१।२३।०४।२०	५।०३।३७।२१	७।१७।०८।१५	३।२३।०३।४०	४।०६।१२।४७	१०।१२।४०।३१	१०।२२।५८	९।२६।०६	४
५	२२।५४।५४	४।१८।०६।०९	१।२९।३८।४९	१।२३।३८।३१	५।०५।१३।५४	७।१७।१३।१६	३।२२।५३।३७	४।०६।२०।१९	१०।१२।३७।२०	१०।२२।५६	९।२६।०५	५
६	२२।५८।५०	४।१९।०४।१८	२।१३।१८।००	१।२४।१२।२८	५।०६।४९।१५	७।१७।१८।२६	३।२२।४६।०१	४।०६।२७।५१	१०।१२।३४।०९	१०।२२।५४	९।२६।०३	६
७	२३।०२।४७	४।२०।०२।३०	२।२६।४१।२२	१।२४।४६।१२	५।०८।२३।२४	७।१७।२३।४५	३।२२।४०।४९	४।०६।३५।११	१०।१२।३०।५९	१०।२२।५१	९।२६।०२	७
८	२३।०६।४३	४।२१।००।४४	३।०९।४९।३४	१।२५।१९।४३	५।०९।५६।२१	७।१७।२९।१४	मा.३।२२।३८।०१	४।०६।४२।५१	१०।१२।२७।४८	१०।२२।४९	९।२६।००	८
९	२३।१०।४०	४।२१।५९।००	३।२२।४३।३१	१।२५।५२।५९	५।११।२८।०७	७।१७।३४।५३	३।२२।३७।३६	४।०६।५०।१९	१०।१२।२४।३७	१०।२२।४६	९।२५।५९	९
१०	२३।१४।३६	४।२२।५७।१८	४।०५।२४।१४	१।२६।२६।०१	५।१२।५८।४१	७।१७।४०।४१	३।२२।३९।३१	४।०६।५७।४७	१०।१२।२१।२६	१०।२२।४४	९।२५।५७	१०
११	२३।१८।३३	४।२३।५५।३७	४।१७।५२।४६	१।२६।५८।४८	५।१४।२८।०५	७।१७।४६।३८	३।२२।४३।४४	४।०७।०५।१३	१०।१२।१८।१६	१०।२२।४२	९।२५।५६	११
१२	२३।२२।२९	४।२४।५३।५९	५।००।१०।१८	१।२७।३१।२१	५।१५।५६।१७	७।१७।५२।४५	३।२२।५०।११	४।०७।१२।३८	१०।१२।१५।०५	१०।२२।३९	९।२५।५५	१२
१३	२३।२६।२६	४।२५।५२।२२	५।१२।१८।११	१।२८।०३।३८	५।१७।२३।१६	७।१७।५९।००	३।२२।५८।५१	४।०७।२०।०१	१०।१२।११।५४	१०।२२।३७	९।२५।५३	१३
१४	२३।३०।२३	४।२६।५०।४७	५।२४।१८।०८	१।२८।३५।४०	५।१८।४९।०२	७।१८।०५।२५	३।२३।०९।१९	४।०७।२७।२३	१०।१२।०८।४४	१०।२२।३५	९।२५।५२	१४
१५	२३।३४।१९	४।२७।४९।१४	६।०६।१२।१६	१।२९।०७।२६	५।२०।१३।३४	७।१८।११।५८	३।२३।२२।३२	४।०७।३४।४४	१०।१२।०५।३३	१०।२२।३२	९।२५।५१	१५
१६	२३।३८।१६	४।२८।४७।४२	६।१८।०३।१२	१।२९।३८।५५	५।२१।३६।५०	७।१८।१८।४१	३।२३।३७।२७	४।०७।४२।०३	१०।१२।०२।२२	१०।२२।३०	९।२५।४९	१६
१७	२३।४२।१२	४।२९।४६।१३	६।२९।५४।०३	२।००।१०।०९	५।२२।५८।४८	७।१८।२५।३२	३।२३।५४।२१	४।०७।४९।२०	१०।११।५९।१२	१०।२२।२७	९।२५।४७	१७
१८	२३।४६।०९	५।००।४४।४४	७।११।४८।३०	२।००।४१।०६	५।२४।१९।२७	७।१८।३२।३१	३।२४।१३।१०	४।०७।५६।३५	१०।११।५६।०१	१०।२२।२५	९।२५।४७	१८
१९	२३।५०।०५	५।०१।४३।१८	७।२३।५०।४२	२।०१।११।४७	५।२५।३८।४३	७।१८।३९।३९	३।२४।३३।५०	४।०८।०३।४९	१०।११।५२।५०	१०।२२।२३	९।२५।४४	१९
२०	२३।५४।०२	५।०२।४१।५३	८।०६।०५।०६	२।०१।४२।१०	५।२६।५६।३४	७।१८।४६।५६	३।२४।५६।१८	४।०८।११।०१	१०।११।४९।३९	१०।२२।२०	९।२५।४४	२०
२१	२३।५७।५८	५।०३।४०।३०	८।१८।३६।१३	२।०२।१२।१६	५।२८।१२।५७	७।१८।५४।२१	३।२५।२०।३०	४।०८।१८।११	१०।११।४६।२८	१०।२२।१८	९।२५।४३	२१
२२	००।०१।५५	५।०४।३९।०८	९।०१।२८।१२	२।०२।४२।०४	५।२९।२७।४८	७।१९।०१।५४	३।२५।४६।२४	४।०८।२५।१९	१०।११।४३।१८	१०।२२।१६	९।२५।४२	२२
२३	००।०५।५१	५।०५।३७।४८	९।१४।४४।२५	२।०३।११।३५	६।००।४१।०२	७।१९।०९।३५	३।२६।१३।५६	४।०८।३२।२५	१०।११।४०।०७	१०।२२।१३	९।२५।४१	२३
२४	००।०९।४८	५।०६।३६।३०	९।२८।२६।५५	२।०३।४०।४७	६।०१।५२।३३	७।१९।१७।२४	३।२६।४३।०२	४।०८।३९।२९	१०।११।३६।५६	१०।२२।११	९।२५।४०	२४
२५	००।१३।४५	५।०७।३५।१४	१०।१२।३५।४५	२।०४।०९।४१	६।०३।०२।१७	७।१९।२५।२१	३।२७।१३।३९	४।०८।४६।३१	१०।११।३३।४५	१०।२२।०९	९।२५।३७	२५
२६	००।१७।४१	५।०८।३३।५९	१०।२७।०८।२६	२।०४।३८।१५	६।०४।१०।०६	७।१९।३३।२६	३।२७।४५।४५	४।०८।५३।३०	१०।११।३०।३४	१०।२२।०६	९।२५।३७	२६
२७	००।२१।३८	५।०९।३२।४७	११।११।५९।४६	२।०५।०६।३१	६।०५।१५।५२	७।१९।४१।३९	३।२८।१९।१५	४।०९।००।२८	१०।११।२७।२४	१०।२२।०४	९।२५।३६	२७
२८	००।२५।३४	५।१०।३१।३६	११।२७।०२।०५	२।०५।३४।२७	६।०६।१९।२७	७।१९।४९।५९	३।२८।५४।०९	४।०९।०७।२२	१०।११।२४।१३	१०।२२।०२	९।२५।३५	२८
२९	००।२९।३१	५।११।३०।२८	०।१२।०६।१७	२।०६।०२।०३	६।०७।२०।४२	७।१९।५८।२६	३।२९।३०।२२	४।०९।१४।१५	१०।११।२१।०३	१०।२२।००	९।२५।३४	२९
३०	००।३३।२७	५।१२।२९।२२	०।२७।०३।१३	२।०६।२९।१८	६।०८।१९।२६	७।२०।०७।०१	४।००।०७।५१	४।०९।२१।०५	१०।११।१७।५२	१०।२१।५७	९।२५।३३	३०

अक्टूबर सन् २००७ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५८'।०२'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।२°।२९' (मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	ता.
अक्टू.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	अक्टू.
१	०।३७।२४	५।१३।२८।१८	१।११।४५।०३	२।०६।५६।१३	६।०९।१५।२६	७।२०।१५।४४	४।००।४६।३४	४।०९।२७।५२	१०।११।१४।४१	१०।२२।५५	९।२५।३२	१
२	०।४१।२०	५।१४।२७।१६	१।२६।०६।२२	२।०७।२२।४६	६।१०।०८।३०	७।२०।२४।३३	४।०१।२६।२९	४।०९।३४।३७	१०।११।११।३०	१०।२२।५३	९।२५।३१	२
३	०।४५।१७	५।१५।२६।१६	२।१०।०४।२४	२।०७।४८।५७	६।१०।५८।२१	७।२०।३३।३०	४।०२।०७।३२	४।०९।४१।२०	१०।११।०८।१९	१०।२२।५१	९।२५।३०	३
४	०।४९।१४	५।१६।२५।१९	२।२३।३८।५२	२।०८।१४।४६	६।११।४४।४४	७।२०।४२।३४	४।०२।४९।१२	४।०९।४७।५९	१०।११।०५।०९	१०।२२।४९	९।२५।२९	४
५	०।५३।१०	५।१७।२४।२५	३।०६।५१।१८	२।०८।४०।११	६।१२।१७।२०	७।२०।५१।४६	४।०३।३२।५४	४।०९।५४।३६	१०।११।०२।५८	१०।२२।४७	९।२५।२९	५
६	०।५७।०७	५।१८।२३।३२	३।१९।४४।२०	२।०९।०५।१३	६।१३।०५।४५	७।२१।०१।०४	४।०४।१७।०८	४।१०।०१।१०	१०।१०।५८।४७	१०।२२।४५	९।२५।२८	६
७	१।०१।०३	५।१९।२२।४२	४।०२।२१।०४	२।०९।२९।५१	६।१३।३९।४४	७।२१।१०।२९	४।०५।०२।२०	४।१०।०७।४१	१०।१०।५५।३६	१०।२२।४३	९।२५।२७	७
८	१।०५।००	५।२०।२१।५४	४।१४।४४।३४	२।०९।५४।०४	६।१४।०८।४६	७।२१।२०।००	४।०५।४८।२९	४।१०।१४।०८	१०।१०।५२।२६	१०।२२।४१	९।२५।२६	८
९	१।०८।५६	५।२१।२१।०९	४।२६।५७।३८	२।१०।१७।५२	६।१४।३२।२०	७।२१।२९।३९	४।०६।३५।३३	४।१०।२०।३३	१०।१०।४९।१५	१०।२२।३९	९।२५।२५	९
१०	१।१२।५३	५।२२।२०।२५	५।०९।०२।३७	२।१०।४१।१४	६।१४।५०।१९	७।२१।३९।२४	४।०७।२३।२८	४।१०।२६।५५	१०।१०।४६।०४	१०।२२।३७	९।२५।२५	१०
११	१।१६।४९	५।२३।१९।४४	५।२१।०१।३१	२।११।०४।०९	६।१५।०१।५३	७।२१।४९।१५	४।०८।१२।२४	४।१०।३३।१३	१०।१०।४२।५४	१०।२२।३५	९।२५।२४	११
१२	१।२०।४६	५।२४।१९।०५	६।०२।५६।०२	२।११।२६।३८	६।१५।०६।४१	७।२१।५९।१३	४।०९।०१।४८	४।१०।३९।२८	१०।१०।३९।४३	१०।२२।३३	९।२५।२३	१२
१३	१।२४।४३	५।२५।१८।२८	६।१४।४७।४७	२।११।४८।३९	६।१५।०४।१२	७।२२।०९।१७	४।०९।५१।०९	४।१०।४५।३९	१०।१०।३६।३२	१०।२२।३१	९।२५।२३	१३
१४	१।२८।३९	५।२६।१७।५२	६।२६।३८।२९	२।१२।१०।१२	६।१४।५४।००	७।२२।१९।२८	४।१०।४३।१६	४।१०।५१।४७	१०।१०।३३।२२	१०।२२।२९	९।२५।२२	१४
१५	१।३२।३६	५।२७।१७।१९	७।०८।३०।०९	२।१२।३१।१६	६।१४।३५।४२	७।२२।२९।४४	४।११।३५।०५	४।१०।५७।५२	१०।१०।३०।११	१०।२२।२७	९।२५।२२	१५
१६	१।३६।३२	५।२८।१६।४७	७।२०।२५।१६	२।१२।५१।५१	६।१४।०९।००	७।२२।४०।०७	४।१२।२७।३७	४।११।०३।५३	१०।१०।२७।००	१०।२२।२५	९।२५।२१	१६
१७	१।४०।२९	५।२९।१६।१८	८।०२।२६।५७	२।१३।११।५६	६।१३।३३।४४	७।२२।५०।३५	४।१३।२०।४९	४।११।०९।५०	१०।१०।२३।४९	१०।२२।२४	९।२५।२१	१७
१८	१।४४।२५	६।००।१५।५०	८।१४।३८।५८	२।१३।३१।३२	६।१२।५१।०२	७।२३।०१।०९	४।१४।१४।४०	४।११।१५।४३	१०।१०।२०।३८	१०।२२।२२	९।२५।२०	१८
१९	१।४८।२२	६।०१।१५।२४	८।२७।०५।१९	२।१३।५०।३६	६।११।५८।२६	७।२३।११।४९	४।१५।०९।१०	४।११।२१।३३	१०।१०।१७।२७	१०।२२।२०	९।२५।२०	१९
२०	१।५२।१८	६।०२।१४।५९	९।०९।५०।३४	२।१४।०९।०९	६।१०।५९।१४	७।२३।२२।३४	४।१६।०४।१५	४।११।२७।१९	१०।१०।१४।१७	१०।२२।१९	९।२५।१९	२०
२१	१।५६।१५	६।०३।१४।३६	९।२२।५८।५३	२।१४।२७।०९	६।०९।५३।३६	७।२३।३३।२५	४।१६।५९।५७	४।११।३३।००	१०।१०।११।०६	१०।२२।१७	९।२५।१९	२१
२२	२।००।१२	६।०४।१४।१६	१०।०६।३३।४६	२।१४।४४।३७	६।०८।४२।५३	७।२३।४४।२२	४।१७।५६।१२	४।११।३८।३८	१०।१०।०७।५५	१०।२२।१६	९।२५।१८	२२
२३	२।०४।०८	६।०५।१३।५६	१०।२०।३७।१४	२।१५।०१।३२	६।०७।२८।४८	७।२३।५५।२३	४।१८।५३।०१	४।११।४४।१२	१०।१०।०४।४४	१०।२२।१४	९।२५।१८	२३
२४	२।०८।०५	६।०६।१३।३९	११।०५।०८।४७	२।१५।१७।५३	६।०६।१३।१४	७।२४।०६।१३	४।१९।५०।२३	४।११।४९।४१	१०।१०।०१।३४	१०।२२।१२	९।२५।१८	२४
२५	२।१२।०१	६।०७।१३।२३	११।२०।०४।४१	२।१५।३३।४०	६।०४।५४।५१	७।२४।१७।४२	४।२०।४८।१४	४।११।५५।०६	१०।०९।५८।२३	१०।२२।११	९।२५।१८	२५
२६	२।१५।५८	६।०८।१३।०९	०।०५।१९।४८	२।१५।४८।५२	[illegible]	[illegible]	४।२१।४६।३९	४।१२।००।२७	१०।०९।५५।१२	१०।२२।१०	९।२५।१७	२६
२७	२।१९।५४	६।०९।१२।५७	०।२०।३७।३९	२।१६।०३।२६	[illegible]	[illegible]	४।२२।४५।३२	४।१२।०५।४४	१०।०९।५२।०१	१०।२२।०८	९।२५।१७	२७
२८	२।२३।५१	६।१०।१२।४८	१।०५।४५।३४	२।१६।१७।२५	[illegible]	[illegible]	४।२३।४४।५८	४।१२।१०।५६	१०।०९।४८।५१	१०।२२।०७	९।२५।१७	२८
२९	२।२७।४७	६।११।१२।४०	[illegible]	२।१६।३०।४६	६।००।५५।०६	७।२५।०३।१८	४।२४।४४।४४	४।१२।१६।०४	१०।०९।४५।४०	१०।२२।०६	९।२५।१७	२९
३०	२।३१।४४	६।१२।१२।३४	[illegible]	२।१६।४३।२८	६।००।१३।४३	७।२५।१४।५४	४।२५।४५।००	४।१२।२१।०७	१०।०९।४२।२९	१०।२२।०४	९।२५।१७	३०
३१	२।३५।४१	६।१३।१२।३१	[illegible]	२।१६।५५।३२	५।२९।४४।२६	७।२५।२६।३५	४।२६।४५।४३	४।१२।२६।०६	१०।०९।३९।१८	१०।२२।०३	९।२५।१७	३१

नवम्बर सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५८'।०६'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।०३°।०६' (मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल (वक्री)	नेपच्यून (मार्गी)	ता.
नव.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	नव.
१	२।३९।३७	६।१४।१२।३०	३।०३।१९।५८	२।१७।०६।५५	५।२९।२८।४०	७।२५।३८।२१	४।२७।४६।५२	४।१२।३१।००	१०।०९।३६।०७	१०।२१।०२	मा.९।२५।१७	१
२	२।४३।३४	६।१५।१२।३१	३।१६।३२।२३	२।१७।१७।३८	मा.५।२९।२३।२६	७।२५।५०।१०	४।२८।४८।२४	४।१२।३५।५०	१०।०९।३२।५६	१०।२१।०१	९।२५।१७	२
३	२।४७।३०	६।१६।१२।३४	३।२९।२०।५१	२।१७।२७।३९	५।२९।२९।२७	७।२६।०२।०५	४।२९।५०।२१	४।१२।४०।३४	१०।०९।२९।४६	१०।२१।००	९।२५।१७	३
४	२।५१।२७	६।१७।१२।३९	४।११।४९।४७	२।१७।३६।५७	५।२९।४६।११	७।२६।१४।०३	५।००।५२।४१	४।१२।४५।१४	१०।०९।२६।३५	१०।२०।५९	९।२५।१७	४
५	२।५५।२३	६।१८।१२।४७	४।२४।०३।४७	२।१७।४५।३२	६।००।१२।५४	७।२६।२६।०६	५।०१।५५।२२	४।१२।४९।४९	१०।०९।२३।२४	१०।२०।५८	९।२५।१७	५
६	२।५९।२०	६।१९।१२।५६	५।०६।०७।०८	२।१७।५३।२२	६।००।४८।४९	७।२६।३८।१३	५।०२।५८।२५	४।१२।५४।१९	१०।०९।२०।१४	१०।२०।५७	९।२५।१७	६
७	३।०३।१६	६।२०।१३।०८	५।१८।०३।३४	२।१८।००।२८	६।०१।३३।०२	७।२६।५०।२४	५।०४।०१।४९	४।१२।५८।४३	१०।०९।१७।०३	१०।२०।५६	९।२५।१७	७
८	३।०७।००	६।२१।१३।२१	५।२९।५६।०९	२।१८।०६।४८	६।०२।२४।४१	७।२७।०२।३९	५।०५।०५।३३	४।१३।०३।०३	१०।०९।१३।५२	१०।२०।५५	९।२५।१८	८
९	३।११।१०	६।२२।१३।३७	६।११।४७।१५	२।१८।१२।२१	६।०३।२२।५३	७।२७।१४।५८	५।०६।०९।३६	४।१३।०७।१७	१०।०९।१०।४२	१०।२०।५४	९।२५।१८	९
१०	३।१५।०६	६।२३।१३।५४	६।२३।३८।३६	२।१८।१७।०८	६।०४।२६।५०	७।२७।२७।२१	५।०७।१३।५८	४।१३।११।२६	१०।०९।०७।३१	१०।२०।५४	९।२५।१८	१०
११	३।१९।०३	६।२४।१४।१२	७।०५।३१।३८	२।१८।२१।०७	६।०५।३५।४६	७।२७।३९।४७	५।०८।१८।३८	४।१३।१५।३०	१०।०९।०४।२०	१०।२०।५३	९।२५।१९	११
१२	३।२२।५९	६।२५।१४।३३	७।१७।२७।३४	२।१८।२४।१७	६।०६।४८।५९	७।२७।५२।१७	५।०९।२३।३५	४।१३।१९।२८	१०।०९।०१।०९	१०।२०।५२	९।२५।१९	१२
१३	३।२६।५६	६।२६।१४।५५	७।२९।२७।५२	२।१८।२६।३९	६।०८।०५।५२	७।२८।०४।५०	५।१०।२८।५०	४।१३।२३।११	१०।०८।५७।५८	१०।२०।५२	९।२५।१९	१३
१४	३।३०।५२	६।२७।१५।१९	८।११।३४।२३	२।१८।२८।११	६।०९।२५।५२	७।२८।१७।२७	५।११।३४।२१	४।१३।२७।०९	१०।०८।५४।४७	१०।२०।५१	९।२५।२०	१४
१५	३।३४।४९	६।२८।१५।४४	८।२३।४९।३५	व.२।१८।२८।५४	६।१०।४८।३०	७।२८।३०।०८	५।१२।४०।०८	४।१३।३०।५०	१०।०८।५१।३६	१०।२०।५१	९।२५।२०	१५
१६	३।३८।४५	६।२९।१६।११	९।०६।१६।३१	२।१८।२८।४६	६।१२।१३।२१	७।२८।४२।५१	५।१३।४६।११	४।१३।३४।२६	१०।०८।४८।२६	१०।२०।५०	९।२५।२१	१६
१७	३।४२।४२	७।००।१६।३८	९।१८।५८।४९	२।१८।२७।४८	६।१३।४०।०३	७।२८।५५।३८	५।१४।५२।२९	४।१३।३७।५७	१०।०८।४५।०४	१०।२०।५०	९।२५।२१	१७
१८	३।४६।३९	७।०१।१७।०८	१०।०२।००।२५	२।१८।२५।५९	६।१५।०८।१६	७।२९।०८।२७	५।१५।५९।०१	४।१३।४१।२२	१०।०८।४२।०४	१०।२०।४९	९।२५।२२	१८
१९	३।५०।३५	७।०२।१७।३८	१०।१५।२५।०९	२।१८।२३।१८	६।१६।३७।४४	७।२९।२१।२०	५।१७।०५।४८	४।१३।४४।४१	१०।०८।३८।५३	१०।२०।४९	९।२५।२२	१९
२०	३।५४।३२	७।०३।१८।१०	१०।२९।१६।०३	२।१८।१९।४७	६।१८।०८।१५	७।२९।३४।१५	५।१८।१२।४९	४।१३।४७।५४	१०।०८।३५।४३	१०।२०।४९	९।२५।२३	२०
२१	३।५८।२८	७।०४।१८।४३	११।१३।३४।२०	२।१८।१५।२४	६।१९।३९।३५	७।२९।४७।१३	५।१९।२०।०३	४।१३।५१।०१	१०।०८।३२।३२	१०।२०।४९	९।२५।२४	२१
२२	४।०२।२५	७।०५।१९।१७	११।२८।१८।२७	२।१८।१०।०९	६।२१।११।३५	८।००।००।१४	५।२०।२७।३१	४।१३।५४।०२	१०।०८।२९।२१	१०।२०।४८	९।२५।२४	२२
२३	४।०६।२१	७।०६।१९।५२	०।१३।२३।१९	२।१८।०४।०२	६।२२।४४।०७	८।००।१३।१८	५।२१।३५।११	४।१३।५६।५७	१०।०८।२६।१०	१०।२०।४८	९।२५।२५	२३
२४	४।१०।१८	७।०७।२०।२९	०।२८।४०।२०	२।१७।५७।०४	६।२४।१७।०४	८।००।२६।२४	५।२२।४३।०५	४।१३।५९।४६	१०।०८।२३।००	मा.१०।२०।४८	९।२५।२६	२४
२५	४।१४।१४	७।०८।२१।०७	१।१३।५८।३०	२।१७।४९।१४	६।२५।५०।२०	८।००।३९।३२	५।२३।५१।१०	४।१४।०२।३०	१०।०८।१९।४९	१०।२०।४८	९।२५।२७	२५
२६	४।१८।११	७।०९।२२।४७	१।२९।०६।१८	२।१७।४०।३३	६।२७।२३।५२	८।००।५२।४३	५।२४।५९।२८	४।१४।०५।०७	१०।०८।१६।३८	१०।२०।४८	९।२५।२७	२६
२७	४।२२।०८	७।१०।२२।२८	२।१३।५३।४१	२।१७।३१।००	६।२८।५७।३४	८।०१।०५।५६	५।२६।०७।५८	४।१४।०७।३८	१०।०८।१३।२७	१०।२०।४८	९।२५।२८	२७
२८	४।२६।०४	७।११।२३।१०	२।२८।१३।४८	२।१७।२०।३५	७।००।३१।२४	८।०१।१९।११	५।२७।१६।४०	४।१४।१०।०३	१०।०८।१०।१६	१०।२०।४९	९।२५।२९	२८
२९	४।३०।०१	७।१२।२३।५४	३।१२।०३।३३	२।१७।०९।२०	७।०२।०५।१९	८।०१।३२।२९	५।२८।२५।३२	४।१४।१२।२१	१०।०८।०७।०५	१०।२०।४९	९।२५।३०	२९
३०	४।३३।५७	७।१३।२४।४०	३।२५।२३।१७	२।१६।५७।१४	७।०३।३९।१८	८।०१।४५।४९	५।२९।३४।३६	४।१४।१४।३४	१०।०८।०३।५४	१०।२०।४९	९।२५।३१	३०

दिसम्बर सन् २००७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५८'।११'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।४°।२'(मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
दिस.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	दिस.
१	४।३७।५४	७।१४।२५।२७	४।०८।१६।००	२।१६।४४।१९	७।०५।१३।१९	८।०१।५९।११	६।००।४३।५०	४।१४।१६।४०	१०।०८।००।४३	१०।२०।४९	९।२५।३२	१
२	४।४१।५०	७।१५।२६।१६	४।२०।४६।११	२।१६।३०।३४	७।०६।४७।२१	८।०२।१२।३४	६।०१।५३।१४	४।१४।१८।४०	१०।०७।५७।३३	१०।२०।५०	९।२५।३३	२
३	४।४५।४७	७।१६।२७।०६	५।०२।५९।००	२।१६।१६।०१	७।०८।२१।२३	८।०२।२६।००	६।०३।०२।४८	४।१४।२०।३३	१०।०७।५४।२२	१०।२०।५०	९।२५।३४	३
४	४।४९।४३	७।१७।२७।५७	५।१४।५९।३७	२।१६।००।४१	७।०९।५५।२४	८।०२।३९।२८	६।०४।१२।३१	४।१४।२२।२०	१०।०७।५१।११	१०।२०।५१	९।२५।३५	४
५	४।५३।४०	७।१८।२८।५०	५।२६।५२।५२	२।१५।४४।३५	७।११।२९।२५	८।०२।५२।५७	६।०५।२२।२४	४।१४।२४।००	१०।०७।४८।००	१०।२०।५१	९।२५।३६	५
६	४।५७।३७	७।१९।२९।४४	६।०८।४२।५७	२।१५।२७।४५	७।१३।०३।२५	८।०३।०६।२८	६।०६।३२।२६	४।१४।२५।३४	१०।०७।४४।५०	१०।२०।५२	९।२५।३८	६
७	५।०१।३३	७।२०।३०।४०	६।२०।३३।१६	२।१५।१०।१२	७।१४।३७।२५	८।०३।२०।००	६।०७।४२।३६	४।१४।२७।०१	१०।०७।४१।३९	१०।२०।५२	९।२५।३९	७
८	५।०५।३०	७।२१।३१।३६	७।०२।२६।२४	२ ।१४।५१।५७	७।१६।११।२५	८।०३।३३।३४	६।०८।५२।५४	४।१४।२८।२२	१०।०७।३८।२८	१०।२०।५३	९।२५।४०	८
९	५।०९।२६	७।२२।३२।३४	७।१४।२४।११	२।१४।३३।०३	७।१७।४५।२५	८।०३।४७।०९	६।१०।०३।११	४।१४।२९।३६	१०।०७।३५।१७	१०।२०।५४	९।२५।४१	९
१०	५।१३।२३	७।२३।३३।३२	७।२६।२७।५०	२।१४।१३।३२	७।१९।१९।२७	८।०४।००।४५	६।११।१३।५५	४।१४।३०।४३	१०।०७।३२।०६	१०।२०।५४	९।२५।४२	१०
११	५।१७।१९	७।२४।३४।३२	८।०८।३८।१५	२।१३।५३।२५	७।२०।५३।३०	८।०४।१४।२३	६।१२।२४।३६	४।१४।३१।४४	१०।०७।२८।५५	१०।२०।५५	९।२५।४४	११
१२	५।२१।१६	७।२५।३५।३२	८।२०।५६।२८	२।१३।३२।४५	७।२२।२७।३५	८।०४।२८।०२	६।१३।३५।२५	४।१४।३२।३८	१०।०७।२५।४४	१०।२०।५६	९।२५।४५	१२
१३	५।२५।१३	७।२६।३६।३३	९।०३।२३।०६	२।१३।११।३५	७।२४।०१।४४	८।०४।४१।४२	६।१४।४६।२१	४।१४।३३।२५	१०।०७।२२।३४	१०।२०।५७	९।२५।४६	१३
१४	५।२९।०९	७।२७।३७।३५	९।१६।००।१०	२।१२।४९।५७	७।२५।३५।५७	८।०४।५५।२३	६।१५।५७।२३	४।१४।३४।०६	१०।०७।१९।२३	१०।२०।५८	९।२५।४८	१४
१५	५।३३।०६	७।२८।३८।३८	९।२८।४९।३५	२।१२।२७।५४	७।२७।१०।१४	८।०५।०९।०४	६।१७।०८।३२	४।१४।३४।४०	१०।०७।१६।१२	१०।२०।५९	९।२५।४९	१५
१६	५।३७।०२	७।२९।३९।४०	१०।११।५३।५२	२।१२।०५।२८	७।२८।४४।३६	८।०५।२२।४७	६।१८।१९।४८	४।१४।३५।०७	१०।०७।१३।०१	१०।२१।००	९।२५।५१	१६
१७	५।४०।५९	८।००।४०।४४	१०।२५।१५।४८	२।११।४२।४२	८।००।१९।०६	८।०५।३६।२९	६।१९।३१।०९	४।१४।३५।२८	१०।०७।०९।५०	१०।२१।०१	९।२५।५२	१७
१८	५।४४।५५	८।०१।४१।४७	११।०८।५७।५०	२।११।१९।४०	८।०१।५३।४२	८।०५।५०।१३	६।२०।४२।३६	४।१४।३५।४२	१०।०७।०६।४०	१०।२१।०२	९।२५।५४	१८
१९	५।४८।५२	८।०२।४२।५१	११।२३।०१।३२	२।१०।५६।२४	८।०३।२८।२७	८।०६।०३।५७	६।२१।५४।१०	व.४।१४।३५।४९	१०।०७।०३।२९	१०।२१।०४	९।२५।५५	१९
२०	५।५२।४८	८।०३।४३।५५	०।०७।२६।३५	२।१०।३२।५६	८।०५।०३।२२	८।०६।१७।४१	६।२३।०५।४८	४।१४।३५।४९	१०।०७।००।१८	१०।२१।०५	९।२५।५७	२०
२१	५।५६।४५	८।०४।४५।००	०।२२।१०।०८	२।१०।०९।२१	८।०६।३८।२६	८।०६।३१।२६	६।२४।१७।३३	४।१४।३५।४३	१०।०६।५७।०७	१०।२१।०६	९।२५।५८	२१
२२	६।००।४२	८।०५।४६।०४	१।०७।०६।२८	२।०९।४५।४०	८।०८।१३।४२	८।०६।४५।११	६।२५।२९।२३	४।१४।३५।३०	१०।०६।५३।५६	१०।२१।०८	९।२६।००	२२
२३	६।०४।३८	८।०६।४७।०९	१।२२।०७।२३	२।०९।२१।५७	८।०९।४९।०९	८।०६।५८।५६	६।२६।४१।१८	४।१४।३५।११	१०।०६।५०।४५	१०।२१।०९	९।२६।०१	२३
२४	६।०८।३५	८।०७।४८।१५	२।०७।०३।१९	२।०८।५८।१४	८।११।२४।४९	८।०७।१२।४१	६।२७।५३।१९	४।१४।३४।४५	१०।०६।४७।३४	१०।२१।१०	९।२६।०३	२४
२५	६।१२।३१	८।०८।४९।२१	२।२१।४५।०१	२।०८।३४।३५	८।१३।००।४२	८।०७।२६।२७	६।२९।०५।२५	४।१४।३४।१२	१०।०६।४४।२३	१०।२१।१२	९।२६।०५	२५
२६	६।१६।२८	८।०९।५०।२७	३।०६।०५।०२	२।०८।११।०२	८।१४।३६।४७	८।०७।४०।१२	७।००।१७।३५	४।१४।३३।३२	१०।०६।४१।१३	१०।२१।१३	९।२६।०६	२६
२७	६।२०।२४	८।१०।५१।३४	३।१९।५८।४६	२।०७।४७।३८	८।१६।१३।०७	८।०७।५३।५७	७।०१।२९।५१	४।१४।३२।४६	१०।०६।३८।०२	१०।२१।१५	९।२६।०८	२७
२८	६।२४।२१	८।११।५२।४२	४।०३।२४।४३	२।०७।२४।२६	८।१७।४९।४०	८।०८।०७।४२	७।०२।४२।१२	४।१४।३१।५४	१०।०६।३४।५१	१०।२१।१७	९।२६।१०	२८
२९	६।२८।१७	८।१२।५३।५०	४।१६।२४।०६	२।०७।०१।२९	८।१९।२६।२६	८।०८।२१।२७	७।०३।५४।३७	४।१४।३०।५५	१०।०६।३१।४०	१०।२१।१८	९।२६।१२	२९
३०	६।३२।१४	८।१३।५४।५८	४।२९।००।०८	२।०६।३८।४९	८।२१।०३।२६	८।०८।३५।१२	७।०५।०७।०७	४।१४।२९।४९	१०।०६।२८।२९	१०।२१।२१	९।२६।१३	३०
३१	६।३६।११	८।१४।५६।०७	५।११।१९।५५	२।०६।१६।२८	८।२२।४०।३९	८।०८।४८।५६	७।०६।१९।४१	४।१४।२८।३७	१०।०६।२५।१९	१०।२१।२२	९।२६।१५	३१

जनवरी सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५८'।१७'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।५°।१०'(मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
जन.	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	जन.
१	६।४०।०७	८।१५।५७।१६	०५।२३।२०।३१	२।०५।५४।३१	८।२४।१८।०४	८।०९।०२।४०	७।०७।३२।१९	४।१४।२७।१८	१०।०६।२२।०८	१०।२१।२४	९।२६।१७	१
२	६।४४।०४	८।१६।५८।२६	०६।०५।१५।०३	२।०५।३२।५८	८।२५।५५।३९	८।०९।१६।२३	७।०८।४५।०१	४।१४।२५।५३	१०।०६।१८।५७	१०।२१।२६	९।२६।१९	२
३	६।४८।००	८।१७।५९।३६	०६।१७।०५।४८	२।०५।११।५३	८।२७।३३।२३	८।०९।३०।०५	७।०९।५७।४७	४।१४।२४।२१	१०।०६।१५।४६	१०।२१।२८	९।२६।२१	३
४	६।५१।५७	८।१९।००।४६	०६।२८।५७।१०	२।०४।५१।१८	८।२९।११।१२	८।०९।४३।४७	७।११।१०।३६	४।१४।२२।४३	१०।०६।१२।३६	१०।२१।२९	९।२६।२३	४
५	६।५५।५३	८।२०।०१।५६	०७।१०।५२।५२	२।०४।३१।१५	९।००।४९।०४	८।०९।५७।२८	७।१२।२३।३०	४।१४।२०।५९	१०।०६।०९।२५	१०।२१।३१	९।२६।२५	५
६	६।५९।५०	८।२१।०३।०७	०७।२२।५५।४५	२।०४।११।४६	९।०२।२६।५५	८।१०।११।०८	७।१३।३६।२६	४।१४।१९।०८	१०।०६।०६।१४	१०।२१।३४	९।२६।२७	६
७	७।०३।४६	८।२२।०४।१८	०८।०५।०७।५२	२।०३।५२।५३	९।०४।०४।४०	८।१०।२४।४७	७।१४।४९।२६	४।१४।१७।१२	१०।०६।०३।०३	१०।२१।३६	९।२६।२८	७
८	७।०७।४३	८।२३।०५।२८	०८।१७।३०।२९	२।०३।३४।३९	९।०५।४२।१४	८।१०।३८।२५	७।१६।०२।२९	४।१४।१५।०९	१०।०५।५९।५२	१०।२१।३८	९।२६।३०	८
९	७।११।४०	८।२४।०६।३९	०९।००।०४।१६	२।०३।१७।०४	९।०७।१९।२८	८।१०।५२।०२	७।१७।१५।३४	४।१४।१२।५९	१०।०५।५६।४१	१०।२१।४०	९।२६।३२	९
१०	७।१५।३६	८।२५।०७।४९	०९।१२।४९।२६	२।०३।००।११	९।०८।५६।१५	८।११।०५।३८	७।१८।२८।४३	४।१४।१०।४४	१०।०५।५३।३०	१०।२१।४२	९।२६।३४	१०
११	७।१९।३३	८।२६।०८।५९	०९।२५।४६।०३	२।०२।४४।०१	९।१०।३३।२५	८।११।१९।१२	७।१९।४१।५४	४।१४।०८।२३	१०।०५।५०।१९	१०।२१।४४	९।२६।३६	११
१२	७।२३।२९	८।२७।१०।०९	१०।०८।५४।१७	२।०२।२८।३५	९।१२।०७।४६	८।११।३२।४५	७।२०।५५।०८	४।१४।०५।५६	१०।०५।४७।०९	१०।२१।४७	९।२६।३८	१२
१३	७।२७।२६	८।२८।११।१८	१०।२२।१४।२९	२।०२।१३।५४	९।१३।४२।०३	८।११।४६।१६	७।२२।०८।२४	४।१४।०३।२३	१०।०५।४३।५८	१०।२१।४९	९।२६।४१	१३
१४	७।३१।२२	८।२९।१२।२६	११।०५।४७।१०	२।०१।५९।५९	९।१५।१५।००	८।११।५९।४६	७।२३।२१।४२	४।१४।००।४५	१०।०५।४०।४७	१०।२१।५१	९।२६।४३	१४
१५	७।३५।१९	९।००।१३।३४	११।१९।३२।५३	२।०१।४६।५१	९।१६।४६।१७	८।१२।१३।१३	७।२४।३५।०३	४।१३।५८।०१	१०।०५।३७।३६	१०।२१।५४	९।२६।४५	१५
१६	७।३९।१६	९।०१।१४।४१	००।०३।३१।४९	२।०१।३४।३१	९।१८।१५।३१	८।१२।२६।३९	७।२५।४८।२६	४।१३।५५।११	१०।०५।३४।२६	१०।२१।५६	९।२६।४७	१६
१७	७।४३।१२	९।०२।१५।४७	००।१७।४३।१८	२।०१।२२।५९	९।१९।४२।१७	८।१२।४०।०३	७।२७।०१।५०	४।१३।५२।१६	१०।०५।३१।१५	१०।२१।५९	९।२६।४९	१७
१८	७।४७।०९	९।०३।१६।५३	०१।०२।०५।३१	२।०१।१२।१६	९।२१।०६।०६	८।१२।५३।२५	७।२८।१५।१७	४।१३।४९।२५	१०।०५।२८।०४	१०।२२।०१	९।२६।५१	१८
१९	७।५१।०५	९।०४।१७।५८	०१।१६।३५।०४	२।०१।०२।२२	९।२२।२६।२३	८।१३।०६।४६	७।२९।२८।४६	४।१३।४६।०९	१०।०५।२४।५३	१०।२२।०४	९।२६।५३	१९
२०	७।५५।०२	९।०५।१९।०१	०२।०१।०७।०७	२।००।५३।१६	९।२३।४२।३१	८।१३।२०।०८	८।००।४२।१७	४।१३।४२।५८	१०।०५।२१।४२	१०।२२।०६	९।२६।५५	२०
२१	७।५८।५८	९।०६।२०।०५	०२।१५।३५।४६	२।००।४५।००	९।२४।५३।४९	८।१३।३३।१९	८।०१।५५।५०	४।१३।३९।४२	१०।०५।१८।३१	१०।२२।०९	९।२६।५७	२१
२२	८।०२।५५	९।०७।२१।०७	०२।२९।५४।४७	२।००।३७।३२	९।२५।५९।३२	८।१३।४६।३३	८।०३।०९।२५	४।१३।३६।२१	१०।०५।१५।२०	१०।२२।११	९।२७।००	२२
२३	८।०६।५१	९।०८।२२।०९	०३।१३।५८।३२	२।००।३०।५३	९।२६।५८।५१	८।१३।५९।४४	८।०४।२३।०२	४।१३।३२।५६	१०।०५।१२।०९	१०।२२।१४	९।२७।०२	२३
२४	८।१०।४८	९।०९।२३।१०	०३।२७।४२।४८	२।००।२५।०२	९।२७।५०।५७	८।१४।१२।५३	८।०५।३६।४१	४।१३।२९।२५	१०।०५।०८।५९	१०।२२।१७	९।२७।०४	२४
२५	८।१४।४५	९।१०।२४।१०	०४।११।०५।१२	२।००।२०।००	९।२८।३४।५७	८।१४।२५।५९	८।०६।५०।२२	४।१३।२५।५०	१०।०५।०५।४८	१०।२२।२०	९।२७।०६	२५
२६	८।१८।४१	९।११।२५।१०	०४।२४।०५।२१	२।००।१५।४५	९।२९।१०।०१	८।१४।३९।०३	८।०८।०४।०४	४।१३।२२।१०	१०।०५।०२।३७	१०।२२।२२	९।२७।०८	२६
२७	८।२२।३८	९।१२।२६।०९	०५।०६।४४।४१	२।००।१२।१८	९।२९।३५।२३	८।१४।५२।०४	८।०९।१७।४९	४।१३।१८।२६	१०।०४।५९।२७	१०।२२।२५	९।२७।११	२७
२८	८।२६।३४	९।१३।२७।०७	०५।१९।०६।००	२।००।०९।३९	९।२९।५०।१९	८।१५।०५।०३	८।१०।३१।३५	४।१३।१४।३८	१०।०४।५६।१६	१०।२२।२८	९।२७।१३	२८
२९	८।३०।३१	९।१४।२८।०५	०६।०१।१३।०९	२।००।०७।४६	व.९।२९।५४।१८	८।१५।१७।५८	८।११।४५।२२	४।१३।१०।४५	१०।०४।५३।०५	१०।२२।३१	९।२७।१५	२९
३०	८।३४।२७	९।१५।२९।०२	०६।१३।१०।४०	२।००।०६।४०	९।२९।४७।००	८।१५।३०।५१	८।१२।५९।१२	४।१३।०६।४९	१०।०४।४९।५४	१०।२२।३४	९।२७।१७	३०
३१	८।३८।२४	९।१६।२९।५९	०६।२५।०३।१९	मा.२।००।०६।१९	९।२९।२८।११	८।१५।४३।४०	८।१४।१३।०२	४।१३।०२।४८	१०।०४।४६।४४	१०।२२।३७	९।२७।१९	३१

फरवरी सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५८'।२२'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।६°।१२'(मार्गी)

ता. फर.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल घं. मि. सै.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध (वक्री) रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु (मध्यम) रा. अं. क. वि.	हर्षल घं. मि. सै.	नेपच्यून घं. मि. सै.	ता. फर.
१	०८।४२।२०	९।१७।३०।५८	७।०६।५५।५७	२।००।०६।४४	९।२८।५८।३६	८।१५।५६।२७	८।१५।२६।५४	४।१२।५८।४३	१०।०४।४३।३३	१०।२२।४०	९।२७।२२	१
२	०८।४६।१७	९।१८।३१।४९	७।१८।५३।०७	२।००।०७।५५	९।२८।१८।२०	८।१६।०९।१०	८।१६।४०।४८	४।१२।५४।३५	१०।०४।४०।२२	१०।२२।४२	९।२७।२४	२
३	०८।५०।१४	९।१९।३२।४४	८।००।५८।५०	२।००।०९।४९	९।२७।२८।३१	८।१६।२१।५०	८।१७।५४।४३	४।१२।५०।२४	१०।०४।३७।११	१०।२२।४५	९।२७।२६	३
४	०८।५४।१०	९।२०।३३।३७	८।१३।१६।३०	२।००।१२।२८	९।२६।३०।३१	८।१६।३४।२७	८।१९।०८।३९	४।१२।४६।०८	१०।०४।३४।००	१०।२२।४८	९।२७।२८	४
५	०८।५८।०७	९।२१।३४।२९	८।२५।४८।३३	२।००।१५।४९	९।२५।२५।५६	८।१६।४७।००	८।२०।२२।३६	४।१२।४१।५०	१०।०४।३०।४९	१०।२२।५२	९।२७।३१	५
६	०९।०२।०३	९।२२।३५।२१	९।०८।३६।२९	२।००।१९।५४	९।२४।१६।४२	८।१६।५९।३०	८।२१।३६।३४	४।१२।३७।२९	१०।०४।२६।३८	१०।२२।५५	९।२७।३३	६
७	०९।०६।००	९।२३।३६।११	९।२१।४०।४६	२।००।२४।४०	९।२३।०४।५०	८।१७।११।५६	८।२२।५०।३३	४।१२।३३।०४	१०।०४।२४।२८	१०।२२।५८	९।२७।३५	७
८	०९।०९।५६	९।२४।३७।००	१०।०५।००।४९	२।००।३०।०८	९।२१।५२।२२	८।१७।२४।१८	८।२४।०४।३२	४।१२।२८।३७	१०।०४।२१।१७	१०।२३।०१	९।२७।३८	८
९	०९।१३।५३	९।२५।३७।४८	१०।१८।३५।१२	२।००।३६।१७	९।२०।४१।१७	८।१७।३६।३७	८।२५।१८।३३	४।१२।२४।०७	१०।०४।१८।०६	१०।२३।०४	९।२७।४०	९
१०	०९।१७।४९	९।२६।३८।३४	११।०२।११।५३	२।००।४३।०५	९।१९।३३।२२	८।१७।४८।५१	८।२६।३२।३४	४।१२।१९।३५	१०।०४।१४।५६	१०।२३।०७	९।२७।४२	१०
११	०९।२१।४६	९।२७।३९।१९	११।१६।१८।२८	२।००।५०।३२	९।१८।३०।०८	८।१८।०१।०१	८।२७।४६।३६	४।१२।१५।००	१०।०४।११।४५	१०।२३।१०	९।२७।४५	११
१२	०९।२५।४३	९।२८।४०।०२	०।००।२२।२६	२।००।५८।३८	९।१७।३२।४९	८।१८।१३।०७	८।२९।००।३८	४।१२।१०।२३	१०।०४।०८।३४	१०।२३।१३	९।२७।४७	१२
१३	०९।२९।३९	९।२९।४०।४४	०।१४।३१।११	२।०१।०७।२२	९।१६।४२।१९	८।१८।२५।०९	९।००।१४।४१	४।१२।०५।४४	१०।०४।०५।२३	१०।२३।१७	९।२७।४९	१३
१४	०९।३३।३६	१०।००।४१।२४	०।२८।४२।४९	२।०१।१६।४३	९।१५।५९।१६	८।१८।३७।०७	९।०१।२८।४४	४।१२।०१।०४	१०।०४।०२।१३	१०।२३।२०	९।२७।५१	१४
१५	०९।३७।३२	१०।०१।४२।०२	१।१२।५४।३४	२।०१।२६।३९	९।१५।२४।००	८।१८।४९।००	९।०२।४२।४८	४।११।५६।२१	१०।०३।५९।०२	१०।२३।२३	९।२७।५३	१५
१६	०९।४१।२९	१०।०२।४२।३८	१।२७।०४।१७	२।०१।३७।११	९।१४।५६।३९	८।१९।००।४८	९।०३।५६।५२	४।११।५१।३७	१०।०३।५५।५१	१०।२३।२६	९।२७।५६	१६
१७	०९।४५।२५	१०।०३।४३।१३	२।११।०९।३६	२।०१।४८।१७	९।१४।३७।१०	८।१९।१२।३२	९।०५।१०।५७	४।११।४६।५२	१०।०३।५२।४०	१०।२३।३०	९।२७।५८	१७
१८	०९।४९।२२	१०।०४।४३।४६	२।२५।०८।००	२।०१।५९।५६	९।१४।२५।११	८।१९।२४।११	९।०६।२५।०२	४।११।४२।०६	१०।०३।४९।२९	१०।२३।३३	९।२८।००	१८
१९	०९।५३।१८	१०।०५।४४।१७	३।०८।५६।५५	२।०२।१२।०९	मा ९।१४।२०।५४	८।१९।३५।४६	९।०७।३९।०८	४।११।३७।१८	१०।०३।४६।१८	१०।२३।३६	९।२८।०३	१९
२०	०९।५७।१५	१०।०६।४४।४७	३।२२।३३।५४	२।०२।२४।५३	९।१४।२३।२९	८।१९।४७।१६	९।०८।५३।१४	४।११।३२।३०	१०।०३।४३।०८	१०।२३।३९	९।२८।०५	२०
२१	१०।०१।१२	१०।०७।४५।१५	४।०५।५६।४७	२।०२।३८।०८	९।१४।३२।४०	८।१९।५८।४०	९।१०।०७।२१	४।११।२७।४१	१०।०३।३९।५७	१०।[illegible]।४३	९।२८।०७	२१
२२	१०।०५।०८	१०।०८।४५।४१	४।१९।०४।०५	२।०२।५१।५४	९।१४।४८।०४	८।२०।१०।००	९।११।२१।२८	४।११।२२।५२	१०।०३।३६।४६	१०।२३।४६	९।२८।०९	२२
२३	१०।०९।०४	१०।०९।४६।०६	५।०१।५५।०६	२।०३।०६।०९	९।१५।०९।१५	८।२०।२१।१५	९।१२।३५।३६	४।११।१८।०२	१०।०३।३३।३५	१०।२३।४९	९।२८।१२	२३
२४	१०।१३।०१	१०।१०।४६।२९	५।१४।३०।०९	२।०३।२०।५३	९।१५।३५।४९	८।२०।३२।२४	९।१३।४९।४४	४।११।१३।१२	१०।०३।३०।२५	१०।२३।५३	९।२८।१४	२४
२५	१०।१६।५८	१०।११।४६।५१	५।२६।५०।३३	२।०३।३६।०६	९।१६।०७।२३	८।२०।४३।२९	९।१५।०३।५३	४।११।०८।२२	१०।०३।२७।१४	१०।२३।५६	९।२८।१६	२५
२६	१०।२०।५४	१०।१२।४७।११	६।०८।५८।३९	२।०३।५१।४७	९।१६।४३।३४	८।२०।५४।२७	९।१६।१८।०२	४।११।०३।३१	१०।०३।२४।०३	१०।२४।००	९।२८।१८	२६
२७	१०।२४।५१	१०।१३।४७।३०	६।२०।५७।३६	२।०४।०७।५४	९।१७।२४।०२	८।२१।०५।२१	९।१७।३२।११	४।१०।५८।४१	१०।०३।२०।५३	१०।२४।०३	९।२८।२१	२७
२८	१०।२८।४७	१०।१४।४७।४७	७।०२।५१।१९	२।०४।२४।२९	९।१८।०८।२७	८।२१।१६।०९	९।१८।४६।२१	४।१०।५३।५२	१०।०३।१७।४२	१०।२४।०६	९।२८।२३	२८
२९	१०।३२।४४	१०।१५।४८।०३	७।१४।४४।१०	२।०४।४१।२९	९।१८।५६।३३	८।२१।२६।५२	९।२०।००।३२	४।१०।४९।०३	१०।०३।१४।३१	१०।२४।१०	९।२८।२५	२९

मार्च सन् २००८ ई. प्रात: स्टैण्डर्ड टाईम घं. ५ मि. ३० के दैनिक स्पष्ट ग्रह। अयनांशा : २३°।५८'।२६'' मासारम्भे (प्लूटो) ८।६°।५४'(मार्गी)

ता.	मध्य रात्रि १२ बजे साम्पा. काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु (मध्यम)	हर्षल	नेपच्यून	ता.
मार्च	घं. मि. सै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	घं. मि. सै.	घं. मि. सै.	मार्च
१	१०।३६।४१	१०।१६।४८।१८	०७।२६।४०।५१	२।०४।५८।५४	०९।१९।४८।०४	८।२१।३७।२७	९।२१।१४।४२	४।१०।४४।१४	१०।०३।११।२०	१०।२४।१३	९।२८।२७	१
२	१०।४०।३७	१०।१७।४८।३०	०८।०८।४६।०६	२।०५।१६।४५	०९।२०।४२।४४	८।२१।४७।५७	९।२२।२८।५३	४।१०।३९।२७	१०।०३।०८।१०	१०।२४।१७	९।२८।२९	२
३	१०।४४।३४	१०।१८।४८।४२	०८।२१।०४।२२	२।०५।३५।००	०९।२१।४०।२०	८।२१।५८।२२	९।२३।४३।०५	४।१०।३४।४०	१०।०३।०४।५९	१०।२४।२०	९।२८।३१	३
४	१०।४८।३०	१०।१९।४८।५२	०९।०३।३९।३५	२।०५।५३।३९	०९।२२।४०।४२	८।२२।०८।४०	९।२४।५७।१६	४।१०।२९।५५	१०।०३।०१।४८	१०।२४।२३	९।२८।३४	४
५	१०।५२।२७	१०।२०।४९।००	०९।१६।३४।४६	२।०६।१२।४१	०९।२३।४३।३७	८।२२।१८।५३	९।२६।११।२८	४।१०।२५।११	१०।०२।५८।३७	१०।२४।२७	९।२८।३६	५
६	१०।५६।२३	१०।२१।४९।०६	०९।२९।५१।४१	२।०६।३२।०६	०९।२४।४८।५६	८।२२।२८।५८	९।२७।२५।४०	४।१०।२०।२९	१०।०२।५५।२६	१०।२४।३०	९।२८।३८	६
७	११।००।२०	१०।२२।४९।११	१०।१३।३०।२५	२।०६।५१।५४	०९।२५।५६।३१	८।२२।३८।५८	९।२८।३९।५१	४।१०।१५।४९	१०।०२।५२।१६	१०।२४।३४	९।२८।४०	७
८	११।०४।१६	१०।२३।४९।१४	१०।२७।२९।१४	२।०७।१२।०३	०९।२७।०६।१४	८।२२।४८।५१	९।२९।५४।०३	४।१०।११।१०	१०।०२।४९।०५	१०।२४।३७	९।२८।४२	८
९	११।०८।१३	१०।२४।४९।१५	११।११।४४।२७	२।०७।३२।३३	०९।२८।१७।५८	८।२२।५८।३७	१०।०१।०८।१५	४।१०।०६।३३	१०।०२।४५।५४	१०।२४।४१	९।२८।४४	९
१०	११।१२।१०	१०।२५।४९।१४	११।२६।१०।५६	२।०७।५३।२५	०९।२९।३१।३६	८।२३।०८।१६	१०।०२।२२।२६	४।१०।०१।५८	१०।०२।४२।४४	१०।२४।४४	९।२८।४६	१०
११	११।१६।०६	१०।२६।४९।१०	००।१०।४२।४३	२।०८।१४।३७	१०।००।४७।०४	८।२३।१७।४९	१०।०३।३६।३८	४।०९।५७।२६	१०।०२।३९।३३	१०।२४।४७	९।२८।४८	११
१२	११।२०।०३	१०।२७।४९।०५	००।२५।१३।५०	२।०८।३६।०९	१०।०२।०४।१६	८।२३।२७।१४	१०।०४।५०।४९	४।०९।५२।५६	१०।०२।३६।२२	१०।२४।५१	९।२८।५१	१२
१३	११।२३।५९	१०।२८।४८।५७	०१।०९।३९।०५	२।०८।५८।००	१०।०३।२३।०८	८।२३।३६।३३	१०।०६।०४।५९	४।०९।४८।२९	१०।०२।३३।१२	१०।२४।५४	९।२८।५३	१३
१४	११।२७।५६	१०।२९।४८।४८	०१।२३।५४।३६	२।०९।२०।१०	१०।०४।४३।३८	८।२३।४५।४५	१०।०७।१९।१०	४।०९।४४।०५	१०।०२।३०।०१	१०।२४।५८	९।२८।५५	१४
१५	११।३१।५२	११।००।४८।३६	०२।०७।५७।५६	२।०९।४२।३८	१०।०६।०५।४०	८।२३।५४।४९	१०।०८।३३।२०	४।०९।३९।४४	१०।०२।२६।५०	१०।२५।०१	९।२८।५७	१५
१६	११।३५।४९	११।०१।४८।२१	०२।२१।४७।५६	२।१०।०५।२४	१०।०७।२९।१३	८।२४।०३।४६	१०।०९।४७।३०	४।०९।३५।२५	१०।०२।२३।३९	१०।२५।०५	९।२८।५९	१६
१७	११।३९।४५	११।०२।४८।०५	०३।०५।२४।२५	२।१०।२८।२८	१०।०८।५४।१४	८।२४।१२।३५	१०।११।०१।४०	४।०९।३१।१०	१०।०२।२०।२८	१०।२५।०८	९।२९।०१	१७
१८	११।४३।४२	११।०३।४७।४६	०३।१८।४७।४४	२।१०।५१।४८	१०।१०।२०।४२	८।२४।२१।१७	१०।१२।१५।४९	४।०९।२६।५९	१०।०२।१७।१७	१०।२५।११	९।२९।०३	१८
१९	११।४७।३९	११।०४।४७।२५	०४।०१।५८।२४	२।११।१५।२५	१०।११।४८।३५	८।२४।२९।५२	१०।१३।२९।५८	४।०९।२२।५०	१०।०२।१४।०७	१०।२५।१५	९।२९।०४	१९
२०	११।५१।३५	११।०५।४७।०२	०४।१४।५६।५३	२।११।३९।१८	१०।१३।१७।५०	८।२४।३८।१९	१०।१४।४४।०७	४।०९।१८।४६	१०।०२।१०।५६	१०।२५।१८	९।२९।०६	२०
२१	११।५५।३२	११।०६।४६।३६	०४।२७।४३।३३	२।१२।०३।२६	१०।१४।४८।२९	८।२४।४६।३८	१०।१५।५८।१६	४।०९।१४।४५	१०।०२।०७।४५	१०।२५।२२	९।२९।०८	२१
२२	११।५९।२८	११।०७।४६।०९	०५।१०।१८।४१	२।१२।२७।५०	१०।१६।२०।२८	८।२४।५४।४९	१०।१७।१२।२४	४।०९।१०।४८	१०।०२।०४।३५	१०।२५।२५	९।२९।१०	२२
२३	१२।०३।२५	११।०८।४५।४०	०५।२२।४२।४४	२।१२।५२।२९	१०।१७।५३।४९	८।२५।०२।५३	१०।१८।२६।३२	४।०९।०६।५४	१०।०२।०१।२४	१०।२५।२८	९।२९।१२	२३
२४	१२।०७।२२	११।०९।४५।०८	०६।०४।५६।२७	२।१३।१७।२२	१०।१९।२८।३०	८।२५।१०।४८	१०।१९।४०।४१	४।०९।०३।०५	१०।०१।५८।१३	१०।२५।३२	९।२९।१४	२४
२५	१२।११।१८	११।१०।४४।३५	०६।१७।०१।०७	२।१३।४२।२९	१०।२१।०४।३१	८।२५।१८।३५	१०।२०।५४।४९	४।०८।५९।२०	१०।०१।५५।०३	१०।२५।३५	९।२९।१६	२५
२६	१२।१५।१४	११।११।४४।००	०६।२८।५८।४१	२।१४।०७।५०	१०।२२।४१।५३	८।२५।२६।१४	१०।२२।०८।५६	४।०८।५५।३९	१०।०१।५१।५२	१०।२५।३८	९।२९।१८	२६
२७	१२।१९।११	११।१२।४३।२३	०७।१०।५१।४८	२।१४।३३।२५	१०।२४।२०।३५	८।२५।३३।४५	१०।२३।२३।०४	४।०८।५२।०३	१०।०१।४८।४१	१०।२५।४२	९।२९।१९	२७
२८	१२।२३।०७	११।१३।४२।४४	०७।२२।४३।५३	२।१४।५९।१३	१०।२६।००।३८	८।२५।४१।०७	१०।२४।३७।११	४।०८।४८।३१	१०।०१।४५।३०	१०।२५।४५	९।२९।२१	२८
२९	१२।२७।०४	११।१४।४२।०३	०८।०४।३९।०३	२।१५।२५।१५	१०।२७।४२।०२	८।२५।४८।२१	१०।२५।५१।१९	४।०८।४५।०३	१०।०१।४२।२०	१०।२५।४८	९।२९।२३	२९
३०	१२।३१।०१	११।१५।४१।२१	०८।१६।४१।५४	२।१५।५१।२९	१०।२९।२४।४८	८।२५।५५।२६	१०।२७।०५।२६	४।०८।४१।४१	१०।०१।३९।०९	१०।२५।५२	९।२९।२५	३०
३१	१२।३४।५७	११।१६।४०।३७	०८।२८।५७।१८	२।१६।१७।५६	११।०१।०८।५७	८।२६।०२।२२	१०।२८।१९।३३	४।०८।३८।२३	१०।०१।३५।५८	१०।२५।५५	९।२९।२६	३१

अप्रैल मास २००८ के दैनिक स्पष्ट ग्रह पेज ४२ पर देखें।

श्रीसंवत् २०६४ शकः १९२९ चैत्र शुक्ल पक्षः १

ता. २० मार्च से २ अप्रैल सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २९ फाल्गुन से १२ चैत्र तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय स्टैं. टा. घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. चैत्र	मु. सफर	अं. मार्च	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
०	१	चं	५५	०२	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प्रतिपदा तिथि क्षय, संवत्सर प्रा., चैत्र नवरात्र प्रा., घटस्थापन,
२९	२	मं	४५	५८	२४	५३	रे	४६	३५	२५	०८	ब्र	२१	२२	बा	१४	४२	२९	५५	६	३०	१८	२८	७	१९	२०	मेष २५।०८	पंचक २५/०८ तक, धनि. में मंगल २४/१५, चन्द्र दर्शन मु. ३०, उ.श्रृंगो., चन्द्रव्रत, A
३०	३	बु	३७	२०	२१	२५	अश्वि	३९	५५	२२	२६	ऐं	१७	१९	तै	११	०७	३०	००	६	२९	१८	२९	८	र.१	२१	मेष	मत्स्य जयन्ती, गौरीव्रत, आन्दोलन ३ (सरहुल बिहार), गणगौर, रविउल अ. मु. ३,
चै.१	४	गु	२९	३३	१८	१७	भ	३४	०६	२०	०६	वै	१३	३०	व	७	४८	३०	०४	६	२७	१८	२९	९	२	२२	वृ. २५।३५	भद्रा ७/४८ से १८/१७ तक, विनायक ४, E आयंबिल ओली समा. (जैन),
२	५	शु	२२	५७	१५	३७	कृ	२९	३०	१८	१४	वि	१०	०४	बा	१५	३७	३०	०८	६	२६	१८	३०	१०	३	२३	वृष	भरणी में शुक्र २८/४४, श्री पंचमी, नाग पंचमी, स्कन्द ६, B चेतीचांद (सिन्धी),
३	६	श	१७	५१	१३	३४	रो	२६	२६	१६	५१	प्री	७ २८	०६ ४०	तै	१३	३४	३०	१२	६	२५	१८	३०	११	४	२४	मि. २८।३७	कालरात्रि ७, A उत्तरगोल में सूर्य, सायन मेष में सूर्य २९/३८, विषुवदिन, B
४	७	र	१४	२८	१२	११	मृ	२५	०४	१६	२६	सौ	२६	४१	व	१२	११	३०	१७	६	२४	१८	३१	१२	५	२५	मिथुन	भद्रा १२/११ से २३/०५ तक, आयंबिल ओली प्रा. (जैन),
५	८	चं	१२	५३	११	३२	आ	२५	३१	१६	३५	शो	२५	३२	ब	११	३२	३०	२१	६	२३	१८	३१	१३	६	२६	मिथुन	श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी, श्रीरामनवमी व्रत (स्मार्तों का), C
६	९	मं	१३	०८	११	३७	पुन	२७	४२	१७	२६	अ	२४	४८	कौ	११	३७	३०	२५	६	२२	१८	३२	१४	७	२७	क. ११।१०	श्रीरामनवमी (वैष्णवों की), तारा जयंती, नवरात्र समाप्त, आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण,
७	१०	बु	१५	०५	१२	२२	पु	३१	३१	१८	५७	सु	२४	३४	ग	१२	२२	३०	३०	६	२१	१८	३३	१५	८	२८	कर्क	भद्रा २४/५९ से, C मेला बाहूफोर्ट (का.), अन्नपूर्णा ज., मेला श्री मनसादेवी (हरि.),
८	११	गु	१८	३१	१३	४४	आ	३६	४१	२१	००	धृ	२४	४५	वि	१३	४४	३०	३४	६	१९	१८	३३	१६	९	२९	सिं. २१।००	भद्रा १३/४४ तक, कुम्भ में मंगल १७/१५, कामदा ११ व्रत सबका,
९	१२	शु	२३	०९	१५	३४	म	४२	५६	२३	२९	शू	२५	१६	बा	१५	३४	३०	३८	६	१८	१८	३४	१७	१०	३०	सिंह	प्रदोष व्रत, अनंग १३, D सिद्धांचल यात्रा, व्य.महा. १०/२९ से १५/१२ तक, E
१०	१३	श	२८	४२	१७	४६	पूफा	४९	५७	२६	१६	गं	२६	०१	तै	१७	४६	३०	४२	६	१७	१८	३४	१८	११	३१	सिंह	रेवती में सूर्य २३/०५, पूर्वाभाद्रपद में बुध ८/१४, श्रीमहावीर जयंती (जैन), प्लूटो वक्री,
११	१४	र	३४	४९	२०	१२	उफा	५७	२७	२९	१५	वृ	२६	५५	ग	६	५७	३०	४७	६	१६	१८	३५	१९	१२	अ.१	क.९।००	भद्रा २०/१२ से, अप्रैल मा. ४ दि. ३०, इद ए मिलाद, दमनक चतुर्दशी,
१२	१५	चं	४१	१६	२२	४५	ह	६०	००	-	-	ध्रु	२७	५४	वि	९	२८	३०	५१	६	१५	१८	३५	२०	१३	२	कन्या	भद्रा ९/२८ तक, श्रीहनुमान ज. (द.भा.), सत्यव्रत, वैशाख स्नान प्रा., D

चैत्र शुक्ल ८ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५४६८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है) चैत्र शुक्ल १५ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५४७५

चैत्र शुक्ल ८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	२	९	१०	७	०	३	१०	४
१०	१३	२७	१३	२५	१५	२४	२१	२१
५९	५५	११	३७	३७	४६	४४	१५	१५
५०	५५	३८	४३	४७	१८	४१	३८	३८
५१	७८	४५	७०	१	७१	२	३	३
२६	३१	५७	३५	५८	५२	१२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]

कुण्डली: शु.१ | ह. रा. बु. ११ | मं. ने. १० | सू. १२ | प्लू. ९ | २ | चं. ३ | ६ | श. ४ | गु. ८ | के. ५ | ७

इस नव संवत्सर का नाम शार्वरी संवत्सर है। इसके प्रभाववश लोगों में रोगों की अधिकता होगी। शासकों में आपस में वैर होगा। लोगों का आपस में विपरीत व्यवहार होगा। वर्षा कहीं पर्याप्त या अधिक तथा कहीं जल की कमी होगी। धान्यों की उत्पत्ति पर्याप्त होगी। मंगल के धनिष्ठा नक्षत्र में प्रवेश करने से लोग समृद्ध होंगे एवं गुड़, धान्य, शक्कर इनके भावों में कमी होगी। **"वासवे वासववत्समृद्धिर्धान्यैः समर्घं गुड़ शर्करादि।"** एकादशी के दिन मंगल कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप धान्यों के भावों में वृद्धि होगी एवं अन्य वस्तुएं भी मंहगी होंगी तथा लोग निर्भयतापूर्वक रहेंगे। **"भूसुतः कुम्भराशिस्थः सर्वधान्य महर्घता। एवं प्रजायते ह्यर्घं लोकमध्ये तु निर्भयम्॥"** वर्षारम्भ में शनि-मंगल का समसप्तक योग है एवं भौम के राशिपरिवर्तन से शनि-मंगल का अशुभकारी षडष्टक योग बन गया है। इसके प्रभाव से दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी, अग्निकाण्ड, यान दुर्घटनाएं चिन्ता का कारण बनेगी। इस अशुभ योग के प्रभाव से समाजविरोधी, राष्ट्रविरोधी आतंकवादी तत्त्व बम्ब विस्फोट अग्निकाण्ड आदि द्वारा आतंकी कार्यवाही कर भय एवं अशांति का वातावरण तैयार करेंगे।

चैत्र शुक्ल १५

कुण्डली: शु. १ | मं. रा. बु. ह. ११ | ने. १० | सू. १२ | प्लू. ९ | २ | ३ | चं. ६ | श. ४ | गु. ८ | के. ५ | ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	५	१०	१०	७	०	३	१०	४
१७	१०	२	२२	२५	२४	२४	२०	२०
५५	०७	४१	३३	४७	०७	२८	५३	५३
००	३५	२६	१६	३७	३६	५९	२३	२३
५९	७०९	४६	८३	०	७१	१	३	३
१०	२६	०	४९	३९	१५	५९	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	४ [illegible]	३ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]

आकाश लक्षण :- मंगल एवं शनि के अमृता नाड़ी में स्थित होने तथा सूर्य के आगे शुभ ग्रह शुक्र के स्थित होने एवं बुध राहु के नीरा सप्तनाड़ी में स्थित होने से कहीं-कहीं वर्षा एवं कहीं-कहीं बूंदा-बांदी होगी। शुक्र चण्डा नाड़ी में स्थित होने से वायु का प्रकोप भी होगा। दिल्ली, बिहार, हि.प्र., राजस्थान, बंगाल, आसाम में कहीं-कहीं बूंदा-बांदी होगी एवं कुछ स्थानों में वर्षा भी होगी।

श्रीसंवत् २०६४ शकः १९२९
वैशाख कृष्ण पक्षः २

ता. ३ से १७ अप्रैल सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २७ चैत्र तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैं. टा.) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. चैत्र	मु. १.३.अ.	अं. अप्रैल	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
१३	१	मं	४७	४५	२५	२०	ह	५	१३	८	११	व्या	२८	५३	बा	१२	०२	३०	५५	६	१४	१८	३६	२१	१४	३	तु. २१/५१	श्री एकलिंगजी महोत्सव (राज.),
१४	२	बु	५४	०३	२७	५०	चि	१२	५३	११	२२	ह	२९	४८	तै	१४	३५	३०	५९	६	१२	१८	३६	२२	१५	४	तुला	कृतिका में शुक्र ८/५२,
१५	३	गु	५९	५४	३०	०९	स्वा	२०	१७	१४	१८	व	-	-	व	१७	०१	३१	०४	६	११	१८	३७	२३	१६	५	तुला	भद्रा १७/०१ से ३०/०९ तक,
१६	४	शु	६०	००	-	-	वि	२७	१२	१७	०३	व	६	३५	वि	६	०९	३१	०८	६	१०	१८	३८	२४	१७	६	वृ.१०।२३	वृष में शुक्र २८/३० [illegible] [illegible]की गुरु ६/३६, श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २२/०८, इद ए मीलाद
१७	४	श	५	०७	८	१२	अनु	३३	१९	१९	२९	सि	७	०९	बा	८	१२	३१	१२	६	९	१८	३८	२५	१८	७	वृश्चिक	शतभिषा में मंगल ९/५५, मीन में बुध ८/२४
१८	५	र	९	१७	९	५१	ज्ये	३८	२३	२१	२९	व्य	७	२६	तै	९	५१	३१	१६	६	०८	१८	३९	२६	१९	८	ध.२१।२९	ईस्टर सण्डे,
१९	६	चं	१२	१३	११	००	मू	४२	०८	२२	५८	व	७	२०	व	११	००	३१	२०	६	०७	१८	३९	२७	२०	९	धनु	भद्रा ११/०० से २३/२० तक, उत्तराभाद्रपद में बुध ११/५९,
२०	७	मं	१३	३८	११	३३	पूषा	४४	१९	२३	४९	प	६ / २९	४७ / ४३	ब	११	३३	३१	२५	६	०६	१८	४०	२८	२१	१०	म.२१।५६	कालाष्टमी,
२१	८	बु	१३	२१	११	२५	उषा	४४	४७	२३	५९	सि	२८	०५	कौ	११	२५	३१	२९	६	०५	१८	४०	२९	२२	११	मकर	A अश्विनी मेष में सूर्य १२/२८, संक्रांति पुण्य ६/०४ से, वै. महापात ८/२६ से १५/१२ तक
२२	९	गु	११	०५	१०	३४	श्र	४३	२७	२३	२६	सा	२५	५३	ग	१०	३४	३१	३३	६	०४	१८	४१	३०	२३	१२	मकर	भद्रा २१/५२ से,
२३	१०	शु	७	२१	८	५९	ध	४०	२४	२२	१२	शु	२३	०७	वि	८	५९	३१	३७	६	०३	१८	४१	३१	२४	१३	कु.१०।५४	भद्रा ८/५९ तक, पंचक १०/५४ से, वरुथिनी ११ व्रत स्मार्तों का,
२४	११	श	१	४६	६	४४	श	३५	४६	२०	२०	शु	१९	५०	बा	६	४४	३१	४१	६	०१	१८	४२	वै.१	२५	१४	कुम्भ	वैशाखी (पं.), वल्लभाचार्य ज., त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, वरुथिनी ११ व्रत वैष्णवों का, A
०	१२	श	५४	३७	२७	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी तिथि क्षय,
२५	१३	र	४६	२४	२४	३४	पूभा	२९	५०	१७	५६	ब्र	१६	०८	ग	१४	१६	३१	४५	६	००	१८	४३	२	२६	१५	मी.१२।३५	भद्रा २४/३५ से, रोहिणी में शुक्र १७/०३, प्रदोष व्रत, हिमाचल दिवस,
२६	१४	च	३७	१९	२०	५५	उभा	२२	५७	१५	१०	ऐं	१२	०५	वि	१०	४६	३१	४९	५	५९	१८	४३	३	२७	१६	मीन	भद्रा १०/४६ तक,
२७	३०	मं	२७	४९	१७	०६	रे	१५	३२	१२	११	वै	७ / २७	५२ / ३४	च	७	०१	३१	५३	५	५८	१८	४४	४	२८	१७	मे.१२।११	पंचक १२/११ तक, रेवती में बुध १०/२०, भौमवती अमावस्या,

वैशाख कृष्ण ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५४८४ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) वैशाख कृष्ण ३० भोमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५४९०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	८	१०	११	७	१	३	१०	४
२६	२९	९	६	२५	४	२४	२०	२०
४६	४५	३५	५	४६	४५	१६	२४	२४
२०	५६	४२	५९	५१	२७	०४	४७	४७
५८	७११	४६	१८	०१	७०	००	३	३
५३	५८	०३	१०	०१	२३	५५	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
रेवती ४	[illegible] १	श्रव. १	उभा. १	ज्येष्ठा ३	कृत्तिका ३	आश्ले. ३	पूभा. १	पूफा. ३

१
रा.मं.ह. ११
शु. २
सू. बु. १२
प्लू. चं. ९
ने. १०
३
६
श ४
के. ५
७
गु. ८

चतुर्थी के दिन शुक्र वृष राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप पृथ्वी में सुभिक्ष होगा तथा लोग सुखी होंगे एवं कहीं विग्रह भी होगा। **"भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथिवी तले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रहकारणम्॥"** भौम के शतभिषा नक्षत्र में प्रवेश से कीट एवं मूषक अधिक होते हैं तथा धान्य की उत्पत्ति भी पर्याप्त होती है। **"वारुणे कीटकमूषकाद्यास्तथापि धान्यानि बहुनिभूम्याम्।"** मीन राशि में बुध के प्रवेश करने से मृग, हाथी इनका नाश होता है तथा शासक एवं प्रजा में परस्पर विरोध उत्पन्न होता है। **"धने-मीने बुधोयाति मारयति मृगान्गजान्। राजाविरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति॥"** शनिवार के दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पूर्व तथा उत्तर के भागों में कष्ट तथा बालकों को पीड़ा, दक्षिण के देशों में युद्धादि का भय तथा पश्चिम के देशों में शुभफल होता है। **"ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येनग्रासितम्। देशभङ्गं विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि॥"** इस पक्ष में शनि-मंगल का अशुभकारी षड्ष्टक योग चल रहा है जिसके प्रभाव से दुर्घटनायें, आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि, अग्निकांड, बम्ब विस्फोट एवं भय का वातावरण बनेगा।

शु. २
चं. बु. १२
ह मं.रा. ११
३
सू. १
ने. १०
श. ४
७
५ के.
प्लू. ९
गु ८
६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	११	१०	११	७	१	३	१०	४
२	२५	१४	१६	२५	११	२४	२०	२०
३१	४५	११	१८	३७	४६	१२	०५	०५
१३	०७	५७	१९	५४	०८	१३	४२	४२
५८	११५	४६	१०७	२	६१	००	३	३
४३	२८	०२	३३	०८	४४	१६	११	११
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
अश्वि. १	रेवती ३	श्रव. ३	उभा. ४	ज्येष्ठा ३	रोहि. १	आश्ले. ३	पूभा. १	पूफा. ३

आकाश लक्षण :- सूर्य के आगे शुक्र के स्थित होने, सूर्य के साथ बुध के स्थित होने तथा सूर्य के वायु नाड़ी में स्थित होने, शनि के अमृता एवं मंगल के जला नाड़ी में स्थित होने से से वायु के साथ कुछ स्थानों में वर्षा होगी एवं कहीं-कहीं बूंदा-बांदी होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं तेज वर्षा होगी एवं कहीं वायु के साथ वर्षा की बौछार पड़ेगी।

श्रीसंवत् २०६४ शकः १९२९
वैशाख शुक्ल पक्षः ३

ता. १८ अप्रैल से २ मई सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २८ चैत्र से १२ वैशाख तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. वैशाख	तारीखें मु. र.उ.अ.	तारीखें अं. अप्रैल	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२८	१	बु	१८	२१	१३	१७	आ	८	०१	९	१०	प्री	२३	२१	व	१३	१७	३२	५७	५	५७	१८	४४	५	२९	१८	मेष	वक्री शत. ४ में राहु पू.फा. १ में केतु २३/१५, चन्द्रदर्शन मु. १५, उ.श्रृंगोन्नति,
२९	२	गु	९	२०	९	४०	भ	०/५४	५४/३५	६/२७	१८/४६	आ	११	२३	कौ	९	४०	३२	०१	५	५६	१८	४५	६	र.१	१९	वृ. ११।३८	अक्षया ३, श्रीपरशुराम ज., श्रीशिवाजी ज., बद्री केदार यात्रा प्रा., A
३०	३	शु	१	१५	६	२५	रो	४६	३६	२५	४५	सौ	१५	४७	ग	६	२५	३२	०५	५	५५	१८	४५	७	२	२०	वृष	भद्रा १६/५९ से २७/४१ तक, विनायक ४, सायन वृष में सूर्य १६/३८, ग्रीष्मऋतु प्रा., B
०	४	शु	५४	२५	२७	४१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी तिथि क्षय, A रवि उप्रसानी मु. ४, मार्गी शनि २७/४८, (वि.मु. रो. में),
वै.१	५	श	४९	२३	२५	३९	मृ	४६	१७	२४	२५	शो	१२	४०	व	१४	३५	३२	०९	५	५४	१८	४६	८	३	२१	मि.१३।००	बुध पूर्व में अस्त १४/३२, आद्यजगद्गुरु श्रीशंकराचार्य ज., (विवाह मु. मृग. में)
२	६	र	४६	१६	२४	२४	आ	४४	५४	२३	५१	अ	१०	१०	कौ	१२	५५	३२	१३	५	५३	१८	४७	९	४	२२	मिथुन	श्रीरामानुजाचार्य जयंती, B(वि.मु. रो. मृग. में),
३	७	चं	४५	१७	२३	५९	पुन	४५	३६	२४	०६	सु	८	१८	ग	१२	०५	३२	१७	५	५२	१८	४७	१०	५	२३	क.१७।५८	भद्रा २३/५९ से, श्री गंगासप्तमी, E महापात १४/३३ से १९/५४ तक,
४	८	मं	४६	२२	२४	२४	पु	४८	११	२५	११	धृ	७	०८	वि	१२	०५	३२	२१	५	५१	१८	४८	११	६	२४	कर्क	भद्रा १२/०५ तक, पुभा में मंगल १२/०७, अश्वि. मेष में बुध १२/३९, श्रीबग्लामुखी ज.
५	९	बु	४९	२२	२५	३५	आ	५२	५४	२७	००	शू	६	३६	बा	१२	५४	३२	२४	५	५०	१८	४८	१२	७	२५	सिं.२७।००	श्रीसीता नवमी, C अगस्त्य अस्त १०/१२, (विवाह मु. मघा में),
६	१०	गु	५३	५६	२७	२४	म	५८	५८	२९	२४	ग	६	३८	तै	१४	२५	३२	२८	५	४९	१८	४९	१३	८	२६	सिंह	व्य. महा. ९/३३ से १४/०१ तक, श्री महावीर केवल ज्ञान दिवस, C
७	११	शु	५९	३७	२९	३१	पूफा	६०	००	-	-	वृ	७	०७	व	१६	२९	३२	३२	५	४९	१८	४९	१४	९	२७	सिंह	भद्रा १६/२९ से २९/३१ तक, भरणी में सूर्य २८/१३, मृगशिर में शुक्र ६/१७, D
८	१२	श	६०	००	-	-	पूफा	६	०६	८	१४	ध्रु	७	५६	व	१८	५४	३२	३६	५	४८	१८	५०	१५	१०	२८	क.१४।५९	मोहिनी ११ व्रत निम्बार्को का, (वि.मु. उफा. में),
९	१२	र	५	५९	८	१०	उफा	१३	४७	११	१८	व्या	८	५६	बा	८	१०	३२	३९	५	४७	१८	५१	१६	११	२९	कन्या	प्रदोष व्रत, (विवाह मु. उफा. हस्त में), D मोहिनी ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
१०	१३	चं	१२	३१	१०	४६	ह	२१	३७	१४	२५	ह	९	५९	तै	१०	४६	३२	४३	५	४६	१८	५१	१७	१२	३०	तु.२७।५७	भरणी में बुध २४/३९, श्रीनृसिंह जयंती, (विवाह मु. हस्त में),
११	१४	मं	१८	५३	१३	१८	चि	२९	१५	१७	२७	व	११	००	व	१३	१८	३२	४७	५	४५	१८	५२	१८	१३	म.१	तुला	भद्रा १३/१८ से २६/२९ तक, कूर्म ज., सत्यव्रत, श्रीछिन्नमस्ता ज., मई मास ५ दि. ३१. E
१२	१५	बु	२४	४८	१५	३९	स्वा	३६	२७	२०	११	सि	११	५३	ब	१५	३९	३२	५०	५	४४	१८	५२	१९	१४	२	तुला	मिथुन में शुक्र २७/२३, बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त, यम प्रीत्यर्थ जलघट दान.

वैशाख शुक्ल ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५४९७ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है) वैशाख शुक्ल १५ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५०५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	३	१०	११	७	१	३	१०	४
९	६	१९	२९	२५	१९	२४	१९	१९
२९	१४	३३	२४	१९	५१	१२	४३	४३
२७	१८	५७	३७	०७	४१	३९	२७	२७
५८	[illegible]	४५	११८	०३	६८	००	३	३
२८	०१	५८	४०	२३	५१	२९	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु.२ बु.१२ ३ ह.मं. रा.११ सू. १ ने.१० श.चं. ४ ७ के.५ प्लू. ९ ६ गु.८

इस मास में पांच मंगलवार हैं जिसके प्रभाव से कहीं रक्तपात होगा एवं जन-धन की हानि होगी, छत्र भंग होगा तथा आतंकवादी, समाज विरोधी तत्व भय का वातावरण उत्पन्न करेंगे। अग्निकांड, दुर्घटनाओं में वृद्धि, बम्ब विस्फोट, यान दुर्घटना आदि शनि मंगल के षड्ष्टक योग से भी होगी। **''यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥''** अष्टमी के दिन बुध मेष राशि अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पशुओं के भाव बढ़ेंगे तथा सुवर्ण का भाव समान रहेगा। गेंहू एवं जौ के भावों में वृद्धि होगी तथा घृत, दूध, रस, ईख के भाव घटते हैं। **''यदा सौम्यः स्थितो मेषे महर्घं च चतुष्पदाम्। सुवर्णं समतां याति नात्रकार्याविचारणा॥''** **''बुधेश्विन्यां तु पीडयन्ते गोधूमाश्च यवादयः। इक्षुदुग्धरसादीनां समर्घं च घृतादिषु॥''** मंगल के पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश से तिल, कपास, सुपारी, वस्त्रों के भावों में तेजी होती है। **''पूभामहीजे तिल वस्त्र सूत कर्पासपूगादि महर्घता।''** बुध के भरणी नक्षत्र में प्रवेश से हाथियों को पीड़ा, चाण्डालों की हानि तथा रोगों की अधिकता एवं धान्यों के भावों में तेजी होती है। **''बुधे भरण्यां मातंगपीडा चाण्डालनाशनम्। तीव्ररोगाद्धान्यवस्तु महर्घं लोकवैरतः॥''**

शु.२ १२ ३ मं. रा.ह. ११ बु.सू. १ ने.१० श.४ चं. ७ के. ५ प्लू. ९ ६ गु.८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	६	१०	०	७	१	३	१०	४
१७	१२	२५	१५	२४	२८	२४	११	११
२६	३८	४१	५३	४७	५८	११	१८	१८
१०	०३	११	३१	२१	२०	३६	१	१
५८	[illegible]	४५	१२८	४	६७	१	३	३
१२	१२	५०	४३	४१	३८	२०	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षणः- सूर्य चण्डा नाड़ी में स्थित है तथा मंगल नीरा नाड़ी में तथा शुक्र दहना नाड़ी में स्थित है इसके प्रभाव से ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे तथा तापमान में वृद्धि होगी। मैदानी भागों में गर्मी होगी। रात में तापमान कम एवं दिन में तापमान अधिक होगा। कुछ भागों में बूंदा बांदी एवं बादल चाल के साथ हल्की बौछार भी होगी।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष: ४

ता. ३ से १६ मई सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २६ वैशाख तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. वैशाख	मु. रबि उ.	अं. मई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१३	१	गु	३०	०६	१७	४६	वि	४३	०१	२२	५६	व्य	१२	३६	कौ	१७	४६	३२	५४	५	४३	१८	५३	२०	१५	३	वृ.१६।१८	श्री नारद जयंती,
१४	२	शु	३४	३९	१९	३४	अनु	४८	५०	२५	१४	व	१३	०५	तै	६	४२	३२	५७	५	४३	१८	५४	२१	१६	४	वृश्चिक	A श्री माँ आनन्दमयी जयंती, (वि. मु. मूल में),
१५	३	श	३८	१९	२१	०१	ज्ये	५३	४८	२७	१३	प	१३	१९	व	८	२०	३३	०१	५	४२	१८	५४	२२	१७	५	ध.२७।१३	भद्रा ८/२० से २१/०१ तक, **श्रीगणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २१/५७, A**
१६	४	र	४१	००	२२	०५	मूल	५७	४७	२८	४७	शि	१३	१५	ब	९	३६	३३	०४	५	४१	१८	५५	२३	१८	६	धनु	कृतिका में बुध २९/१६, (वि. मु. मूल में),
१७	५	चं	४२	३५	२२	४२	पूषा	६०	००	-	-	सि	१२	५२	कौ	१०	२७	३३	०८	५	४०	१८	५५	२४	१९	७	धनु	मीन में मंगल २१/०८,
१८	६	मं	४२	५५	२२	४९	पूषा	०	४०	५	५६	सा	१२	०६	ग	१०	५०	३३	११	५	३९	१८	५६	२५	२०	८	म.१२।०८	भद्रा २२/४९ से, वृष में बुध १८/२५, आर्द्रा में शुक्र २६/३३, (वि. मु. उषा. में),
१९	७	बु	४१	५१	२२	२३	उषा	२	१७	६	३३	शु	१०	५६	वि	१०	४०	३३	१४	५	३९	१८	५७	२६	२१	९	मकर	भद्रा १०/४० तक, **श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती,**
२०	८	गु	३९	११	२१	२२	श्र	२	३०	६	३८	शु	९	१८	बा	९	५७	३३	१७	५	३८	१८	५७	२७	२२	१०	कु.१८।२७	पंचक १८/२७ से, वै. महापात ५/४७ से १०/२४ तक,
२१	९	शु	३५	१७	१९	४४	ध / शत	१ / ५८	१४ / ३०	६ / २९	०७ / ०१	ब्र	७ / २८	११ / ३५	तै	८	३७	३३	२१	५	३७	१८	५८	२८	२३	११	कुम्भ	कृतिका में सूर्य २२/२७,
२२	१०	श	२९	४७	१७	३१	पूभा	५४	२०	२७	२०	वै	२५	३२	व	६	४२	३३	२४	५	३७	१८	५८	२९	२४	१२	मी.२१।४८	भद्रा ६/४२ से १७/३१ तक, उ. भा. में मंगल ६/१०,
२३	११	र	२२	५९	१४	४८	उभा	४८	५८	२५	११	वि	२२	०४	वा	१४	४८	३३	२७	५	३६	१८	५९	३०	२५	१३	मीन	रोहिणी में बुध १३/०१, **अपरा (भद्रकाली) ११ व्रत सबका,** (वि.मु.उ.भा. में),
२४	१२	चं	१५	०७	११	३८	रे	४२	४१	२२	४०	प्री	१८	१७	तै	११	३८	३३	३०	५	३५	१९	००	३१	२६	१४	मे.२२।४०	पंचक २२/४० तक, **सोम प्रदोष व्रत,**
२५	१३	मं	०६	२८	०८	१०	अश्वि	३५	५०	१९	५५	आ	१४	१८	व	८	१०	३३	३३	५	३५	१९	००	ज्ये. १	२७	१५	मेष	भद्रा ८/१० से १८/२१ तक, वृष में सूर्य ९/१९, मु. ३०, संक्रांति B
०	१४	मं	५७	२५	२८	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्दशी तिथि क्षय, B पुण्य १५/४३ तक, बुध पश्चिमोदय ८/२२,
२६	३०	बु	४८	२७	२४	५७	भ	२८	५०	१७	०६	सौ	१०	१२	च	१४	४४	३३	३६	५	३४	१९	०१	२	२८	१६	वृ.२२।२५	**वट्सावित्री व्रत, अमावस्या पुण्य, भावुका अमावस्या,**

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ८ गुरौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५५१३ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
०	९	११	१	७	२	३	१०	४
२५	२२	१	३	२४	७	२४	१८	१८
१	४१	४७	७	५	५४	३३	५२	५२
१	५७	२४	१६	४३	३७	१५	३४	३४
५८	८१६	४५	१२६	५	६६	२	३	३
०	४६	४१	३२	५०	१४	१०	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
४ भरणी	४ श्रवण	४ पूभा	२ कृत्ति	३ ज्ये	२ आर्द्रा	३ आश्लेषा	४ पूभा	२ पूफा

बु. २ | मं. १२ | शु. ३ | सू. १ | चं. ने. १० | रा. ह. ११ | श. ४ | ७ | के. ५ | प्लू. ९ | ६ | गु. ८

प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण ३० बुधे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५५१९

शु. ३ | चं. १ | श. ४ | सू. बु. २ | ह. रा. ११ | मं. १२ | के. ५ | ६ | गु. ८ | ने. १० | ७ | प्लू. ९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	०	११	१	७	२	३	१०	४
०	११	६	१५	२३	१४	२४	१८	१८
४८	२२	२१	१८	२८	२९	४७	३३	३३
४१	११	६	३३	५४	३	४५	३०	३०
५७	१०४	४५	११३	६	६५	२	३	३
५२	१२	३१	५०	३२	१	४६	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
२ कृत्ति	२ भरणी	२ उभा	२ रोहिणी	३ ज्ये	३ आर्द्रा	३ आश्लेषा	४ पूभा	२ पूफा

गतपूर्णिमा के दिन शुक्र मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। इसके प्रभाववश गेहूं, जौ, चणा तथा चावल यह महंगे होते हैं। ''**मिथुने च यदा शुक्रो महर्घं तत्र जायते। यवगोधूमचणकाः शालिश्चैव विशेषतः॥**'' पंचमी के दिन भौम मीन राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप तृण, काष्ठ, पशु ये सब महंगे होते हैं। ''**मीनराशिकुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पदम्। महर्घ जायते सर्वं गृह्यते तत्र पण्डितैः॥**'' बुध के वृष राशि में प्रवेश के प्रभाव से पृथ्वी में अत्यंत अशान्ति कलह होता है और अत्यंत भय का वातावरण भी बनता है। ''**सोम पुत्रो वृषे स्थित्वा एवं कुर्याच्च लक्षणम्। मेदिनीनवखण्डेषु कलहश्च महद्भयम्॥**'' इसी पक्ष में भौम उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से दुर्भिक्ष होता है। वर्षा तथा अन्न की उत्पत्ति नहीं होती है। ''**दुर्भिक्षमेवोत्तरभाद्रिकायां वर्षा न मेघोन्नयनेपि किंचित्।**'' मंगलवार के दिन सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप उत्तर तथा पश्चिम के देशों में पीड़ा, पूर्व के देशों में युद्धादि का भय और दक्षिण के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। ''**वायव्ये च यदादृष्टिः सर्वसौख्यसमन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत्॥**''

आकाश लक्षण :- सूर्य चन्द्रा नाड़ी में एवं मंगल सप्तनाड़ी चक्र में सौम्यानाड़ी में स्थित होने से वायु का प्रवाह तेज होगा। पक्ष के पूर्वार्द्ध में बुध सूर्य के आगे एवं उत्तरार्द्ध में बुध सूर्य के साथ एवं शुक्र सूर्य के आगे स्थित होने से तेज हवा आंधी के साथ छिटपुट बूंदा-बांदी कहीं-कहीं होगी। मैदानी भागों में गर्मी बढ़ेगी। दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, बिहार, मध्यप्रदेश में तापमान में वृद्धि होगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
प्रथम अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ५

ता. १७ मई से १ जून सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २७ वैशाख से ११ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. ज्येष्ठ	मु. रबि उ.	अं. मई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२७	१	गु	३१	५८	२१	३३	कृ	२२	०९	१४	२५	शो	६ २६	११ २१	किं	११	१३	३३	३९	५	३४	१९	०१	३	२९	१७	वृष	अधिक (पुरुषोत्तम) मास प्रारंभ,
२८	२	शु	३२	२४	१८	३१	रो	१६	१५	१२	०३	सु	२२	५२	बा	७	१८	३३	४२	५	३३	१९	०२	४	३०	१८	मि.२३।०३	चन्द्रदर्शन मु. ३० उ. श्रृंगोन्नति,
२९	३	श	२६	१३	१६	०२	मृ	११	३६	१०	११	धृ	१९	५२	ग	१६	०२	३३	४४	५	३३	१९	०३	५	ज.१	१९	मिथुन	भद्रा २७/०२ से, जमादिउल-अव्वल मु. ५,
३०	४	र	२१	४६	१४	१५	आ	०८	३७	०८	५९	शू	१७	२८	वि	१४	१५	३३	४७	५	३२	१९	०३	६	२	२०	क.२६।३५	भद्रा १४/१५ तक, **विनायक ४**, मृगशीर्ष में बुध १५/३८,
३१	५	चं	१९	२१	१३	१६	पुन	०७	३४	०८	३३	गं	१५	४३	बा	१३	१६	३३	५०	५	३२	१९	०४	७	३	२१	कर्क	पुनर्वसु में शुक्र ८/३५, सायन मिथुन में सूर्य १५/४३,
ज्ये.१	६	मं	१९	०५	१३	०९	पु	०८	३९	०८	५९	वृ	१४	४०	तै	१३	०९	३३	५२	५	३१	१९	०४	८	४	२२	कर्क	व्य. महापात ५/३१ से १०/५२ तक,
२	७	बु	२०	५६	१३	५३	श्ले	११	४९	१०	१४	ध्रु	१४	१७	व	१३	५३	३३	५५	५	३१	१९	०५	९	५	२३	सिं.१०।१४	भद्रा १३/५३ से २६/३१ तक,
३	८	गु	२४	३९	१५	२२	म	१६	५१	१२	१५	व्या	१४	२८	ब	१५	२२	३३	५७	५	३०	१९	०५	१०	६	२४	सिंह	मिथुन में बुध १९/५२,
४	९	शु	२९	५०	१७	२६	पूफा	२३	२१	१४	५०	ह	१५	०७	कौ	१७	२६	३४	००	५	३०	१९	०६	११	७	२५	क.२१।३३	रोहिणी में सूर्य १८/३४, नेप्च्यून वक्री,
५	१०	श	३५	५५	१९	५१	उफा	३०	४७	१७	४८	व	१६	०४	तै	६	३७	३४	०२	५	३०	१९	०७	१२	८	२६	कन्या	
६	११	र	४२	१९	२२	२५	ह	३८	३४	२०	५५	सि	१७	०८	व	९	०८	३४	०४	५	२९	१९	०७	१३	९	२७	कन्या	भद्रा ९/०८ से २२/२५ तक, **कमला ११ व्रत सबका**,
७	१२	चं	४८	३२	२४	५४	चि	४६	११	२३	५७	व्य	१८	१०	ब	११	४१	३४	०६	५	२९	१९	०८	१४	१०	२८	तु.१०।२७	
८	१३	मं	५४	१०	२७	०८	स्वा	५३	१५	२६	४७	व	१९	०३	कौ	१४	०३	३४	०८	५	२९	१९	०८	१५	११	२९	तुला	रेवती में मंगल २१/३४, आर्द्रा में बुध १८/५७, **भौम प्रदोष व्रत**,
९	१४	बु	५८	५६	२९	०३	वि	५९	३१	२९	१७	प	१९	४२	ग	१६	०८	३४	१०	५	२८	१९	०९	१६	१२	३०	वृ.२२।४१	भद्रा २९/०३ से, कर्क में शुक्र २२/४१, महापात ८/३१ से १५/१३ तक,
१०	१५	गु	६०	००	-	-	अनु	६०	००	-	-	शि	२०	०३	वि	१७	५१	३४	१२	५	२८	१९	०९	१७	१३	३१	वृश्चिक	भद्रा १७/५१ तक, **सत्यव्रत**,
११	१५	शु	०२	४४	०६	३४	अनु	४	५०	७	२४	सि	२०	०६	ब	६	३४	३४	१४	५	२८	१९	१०	१८	१४	जू.१	वृश्चिक	जून मा. ६ दि. ३०,

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल ८ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५२७ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	४	११	१	७	२	३	१०	४
८	९	१२	२९	२२	२३	२५	१८	१८
३०	५४	२४	०६	३४	०२	१२	०८	०८
५४	२२	१२	३०	००	३१	३०	०३	०३
५७	[illegible]	४५	८९	७	६३	३	३	३
३९	१३	१३	१९	१३	१	३१	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली: शु. ३; १; मं. १२; सू. बु. २; रा. ह. ११; श. ४; चं. के. ५; गु. ८; ने. १०; ६; ७; प्लू. ९

अधिक ज्येष्ठ शु. १५ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५३५

कुण्डली: बु. ३; १; मं. १२; शु. श. ४; सू. २; रा. ह. ११; के. ५; गु. चं. ८; ने. १०; ६; ७; प्लू. ९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	७	११	२	७	३	३	१०	४
१६	१५	१८	९	२१	१	२५	१७	१७
११	४१	२४	२५	३४	१८	४३	४२	४२
३१	२४	४६	३०	४५	१४	४	३७	३७
५७	७४५	४४	६१	७	६०	४	३	३
२९	१	५२	२५	३६	३०	१३	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चतुर्थी के दिन बुध मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सुभिक्ष होगा, वायु के प्रभाव से वर्षा की अधिकता होगी, गेहूं, तिल, उड़द सस्ते होते हैं तथा मनुष्य सुखी होते हैं। **''मृगशीर्षे सुभिक्षं स्याद्वातवृष्टिर्महीयसी। गोधूमतिलमाषादिसमर्घं सुखिनो जनाः॥''** बुध के मिथुन राशि में प्रवेश करने से पशु मंहगे होते हैं तथा वायु के प्रभाव से मेघों की अधिकता होती है। **''बुधो मिथुनराशिस्थो महर्घं च चतुष्पदाम्। तदावायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत्॥''** कर्क राशि में शुक्र चतुर्दशी को प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से रस पदार्थ मंहगे होंगे तथा सब धान्य सस्ते होते हैं तथा मेघ भी प्रबल होते हैं। **''दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता। सर्वधान्यसमर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि॥''** मंगल के रेवती नक्षत्र में संचार करने से मनुष्यों में रोगों की अधिकता होती है एवं धान्य का उत्पादन पर्याप्त होता है, सुभिक्ष होता है। **''सौख्यं सुभिक्ष क्षितिजे सपौष्णे नरेषु रोगा बहुधान्यलक्ष्मा।''**

आकाश लक्षण :- पक्ष के पूर्वार्द्ध में सूर्य के आगे शुक्र एवं सूर्य के साथ बुध स्थित है तथा उत्तरार्द्ध में सूर्य के आगे बुध स्थित है। बुध दहना नाड़ी में एवं सूर्य वायु सप्तनाड़ी में संचार करेगा इसके प्रभाव से गर्मी का प्रभाव बढ़ेगा। तेज गर्म हवाओं से मैदानी भागों में लोग त्रस्त होंगे। कहीं वायु के तेज प्रवाह के साथ बूंदा-बांदी भी होगी। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, बिहार, उत्तरांचल, मध्य प्रदेश में लोग गर्मी से व्याकुल होंगे।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
द्वितीय अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष: ६

ता. २ से १५ जून सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २५ ज्येष्ठ तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. ज्येष्ठ	मु. ज.उ.अ.	अं. जून	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१२	१	श	५	३१	७	४०	ज्ये	९	१०	९	०८	सा	११	५०	कौ	७	४०	३४	१६	५	२८	११	१०	१९	१५	२	ध.९।०८	
१३	२	र	७	१७	८	२२	मू	१२	३२	१०	२८	शु	११	१६	ग	८	२२	३४	१८	५	२८	११	११	२०	१६	३	धनु	भद्रा २०/३५ से, पुष्य में शुक्र ५/५८.
१४	३	चं	८	०५	८	४१	पूषा	१४	५७	११	२६	शु	१८	२३	वि	८	४१	३४	१९	५	२७	११	११	२१	१७	४	म.१७।३७	भद्रा ८/४१ तक, श्री गणेश ४ व्रत, चन्द्रोदय २२/२५,
१५	४	मं	७	५६	८	३७	उषा	१६	२५	१२	०१	ब्र	१७	१३	बा	८	३७	३४	२१	५	२७	११	१२	२२	१८	५	मकर	वै. महापात ७/०६ से १३/१६ तक,
१६	५	बु	६	४७	८	१०	श्र	१६	५	१२	१३	ऐं	१५	४३	तै	८	१०	३४	२२	५	२७	११	१२	२३	१९	६	कु.२४।१०	पंचक २४/१० से,
१७	६	गु	४	३८	७	१८	ध	१६	२४	१२	०१	वै	१३	५३	व	७	१८	३४	२४	५	२७	११	१३	२४	२०	७	कुम्भ	भद्रा ७/१८ से १८/४२ तक,
१८	७	शु	१	२५	६	०१	शत	१४	५१	११	२३	वि	११	४३	ब	६	०१	३४	२५	५	२७	११	१३	२५	२१	८	मी.२८।३८	मृगशिर में सूर्य १६/३१, कालाष्टमी,
०	८	शु	५७	०७	२८	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	. ०००	अष्टमी तिथि क्षय
१९	९	श	५१	४७	२६	१०	पूभा	१२	१३	१०	२०	प्री	९	१२	तै	१५	१७	३४	२६	५	२७	११	१४	२६	२२	९	मीन	
२०	१०	र	४५	२९	२३	३९	उभा	८	३३	८	५२	आ	६ २७	२० ११	व	१२	५७	३४	२७	५	२७	११	१४	२७	२३	१०	मीन	भद्रा १२/५७ से २३/३९ तक,
२१	११	चं	३८	२५	२०	४९	रे	३ ५८	५८ ४२	७ २८	०२ ५६	शो	२३	४६	ब	१०	१६	३४	२८	५	२७	११	१४	२८	२४	११	मे.७।०२	पंचक ७/०२ तक, कमला ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,
२२	१२	मं	३०	४९	१७	४६	भ	५३	०१	२६	३९	अ	२०	१२	कौ	७	११	३४	२९	५	२७	११	१५	२९	२५	१२	मेष	भौम प्रदोष व्रत, कमला ११ व्रत निम्बार्को का, महापात २७/४० से,
२३	१३	बु	२२	५९	१४	३९	कृ	४७	१५	२४	२१	सु	१६	३४	व	१४	३९	३४	३०	५	२७	११	१५	३०	२६	१३	वृ.८।०४	भद्रा १४/३९ से २५/०४ तक, महापात ९/५५ तक,
२४	१४	गु	१५	१८	११	३४	रो	४१	४९	२२	१०	धृ	१२	५९	श	११	३४	३४	३१	५	२७	११	१६	३१	२७	१४	वृष	A अधिक मास समाप्त,
२५	३०	शु	८	१०	८	४३	मृ	३७	०८	२०	१८	शू	९	३६	ना	८	४३	३४	३१	५	२७	११	१६	आ.१	२८	१५	मि.९।११	मिथुन में सूर्य १५/५३, मु. ३०, सं. पुण्य ९/२९ से, वक्री बुध २९/०९, A

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण ७ शुक्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५५४२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) अधिक ज्येष्ठ कृष्ण ३० शुक्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५५४९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१०	११	२	७	३	३	१०	४
२२	१६	२३	१५	२०	८	२६	१७	१७
५३	३७	३७	१४	४१	१३	१४	२०	२०
३७	१०	५७	०४	२१	४७	११	२१	२१
५७	८३३	४४	३३	७	५७	४	३	३
२४	७	३३	३२	३१	४६	४६	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
४ रोहि	३ शत	३ रेवति	३ आर्द्रा	२ ज्ये	२ पुष्य	३ आश्ले	४ शत	२ पूफा

बु. ३ | १ | मं. १२ | शु. श. ४ | सू. २ | ह. रा. चं. ११ | के. ५ | गु. ८ | ६ | ने. १० | ७ | प्लू. ९

शुक्रवार के दिन सूर्य मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि का भय होगा तथा उत्तर के देशों में अशान्ति युद्ध आदि का भय होगा एवं पूर्व के देशों में सुख-समृद्धि, सुभिक्ष आदि का सुख होगा। "**नैऋत्ये च यदादृष्टि भयक्तेसं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्॥**" ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा को शनिवार है इसके प्रभाववश दुर्भिक्ष होता है तथा रोग, पीड़ा एवं छत्रभंग आदि उपद्रव होते हैं। "**सौरिवारेण संयुक्ता प्रतिपदभवेत्। दुर्भिक्षं रोगपीड़ा स्याच्छत्रभंगश्च नान्यथा॥**" रेवती नक्षत्र का योग दशमी एवं एकादशी को है। दशमी योग सुख-समृद्धि करने वाला है। रेवती नक्षत्र का योग एकादशी को होने से खण्डवृष्टिकारक है। "**ज्येष्ठ कृष्ण दशम्यां च रेवती सुखकारिणी। एकादश्यां खण्डवृष्टिर्द्वादश्यां सा तु कष्टदा॥**" कृष्ण अष्टमी के क्षय होने से वस्तुओं एवं धान्यों के भावों में न्यूनता आयेगी।

बु. ३ | १ | मं. १२ | शु. श. ४ | चं. सू. २ | ह. रा. ११ | के. ५ | गु. ८ | ६ | ने. १० | ७ | प्लू. ९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१	१	११	२	७	३	३	१०	४
२९	२७	२८	१७	११	१४	२६	१६	१६
३५	४६	४८	३५	४८	४८	४९	५८	५८
१२	२१	३४	५७	२०	२८	६	५	५
५७	८६१	४४	२	७	५४	५	३	३
२०	३१	८	१२	२६	२३	१७	११	११
मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	मा उ	मा उ	व अ	व अ
२ मृग	२ मृग	४ रेवति	४ आर्द्रा	२ ज्ये	४ पुष्य	४ आश्ले	४ शत	२ पूफा

आकाश लक्षण :- सूर्य के आगे बुध स्थित है अत: तेज गर्म हवाओं के प्रवाह से लोग व्याकुल होंगे। मैदानी भागों में गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान, उत्तरांचल में लोग गर्मी से त्रस्त होंगे। कहीं-कहीं तेज बादल चाल एवं छिटपुट बूंदा-बांदी भी होगी। सूर्य-मंगल दोनों ही दहना नाड़ी में स्थित होने से गर्मी बहुत होगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः ७																		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदय		स्टैं.टा. सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु	अं.	चन्द्र दर्शन स्टैं.टा.	ता. १६ से ३० जून सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २६ ज्येष्ठ से ९ आषाढ़ तक। उत्तर-दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्मऋतु।
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	आषाढ	ज.उ.अं.	जून	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
२६	१	श	१	५९	६	१५	आ	३३	३८	१८	५४	ग	६ २७	३३ ५६	बा	६	१५	३४	३२	५	२७	१९	१६	२	२९	१६	मिथुन	अश्विनी मेष में मंगल २०/२१, चन्द्रदर्शनम मु. ४५, उ.श्रृंगो., A
०	२	श	५७	१०	२८	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	द्वितीया तिथि क्षय, A श्री गंगा दशाश्वमेध स्नान प्रा.,
२७	३	र	५३	५९	२७	०३	पुन	३१	४०	१८	०७	ध्रु	२५	५२	तै	१५	३५	३४	३२	५	२७	१९	१७	३	ज.१	१७	क.१२।१५	रम्भा ३ व्रत, महाराणा प्रताप ज., मेला हल्दी घाटी मेवाड़ (राज.), B
२८	४	चं	५२	४४	२६	३३	पुष्य	३१	३१	१८	०४	व्या	२४	२५	व	१४	४२	३४	३३	५	२७	१९	१७	४	२	१८	कर्क	भद्रा १४/४२ से २६/३३ तक, विनायक ४, श्रीगुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस,
२९	५	म	५३	३१	२६	५२	श्ले	३३	२१	१८	४८	ह	२३	३६	व	१४	३६	३४	३३	५	२८	१९	१७	५	३	१९	सि.१८।४८	बुध पश्चिम में अस्त १४/५२, (विवाह मु. मघा में),
३०	६	बु	५६	१३	२७	५७	म	३६	०७	२०	११	व	२३	२४	कौ	१५	११	३४	३३	५	२८	१९	१७	६	४	२०	सिंह	अरण्य ६, स्कन्द ६, (विवाह मु. मघा में), D (वि. मु. हस्त में),
३१	७	गु	६०	००	-	-	पूफा	४२	३५	२२	३०	सि	२३	४४	ग	१६	४५	३४	३३	५	२८	१९	१८	७	५	२१	क.२१।०८	सायन कर्क में सूर्य २३/३८, दक्षिणायन, वर्षाऋतु प्रारम्भ,
आ १	७	शु	०	३३	५	४२	उफा	४९	२०	२५	१२	व्य	२४	२९	व	५	४२	३४	३३	५	२८	१९	१८	८	६	२२	कन्या	भद्रा ५/४२ से १८/४४ तक, आर्द्रा में सूर्य १५/२५, शूलिनी मेला प्रा. (हि.प्र.), D
२	८	श	६	०५	७	५४	उफा	५६	४७	२८	११	व	२५	२७	ब	७	५४	३४	३३	५	२८	१९	१८	९	७	२३	कन्या	मेला क्षीर भवानी (का.), श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, (वि.मु. हस्त में),
३	९	र	१२	११	१०	२१	ह	६०	००	-	-	प	२६	२८	कौ	१०	२१	३४	३३	५	२९	१९	१८	१०	८	२४	तु.१७।४३	हर्षल वक्री २०/१५, शूलिनी मेला समा. (हि.प्र.),
४	१०	चं	१८	१६	१२	४७	चि	०४	२०	७	१३	शि	२७	२२	ग	१२	४७	३४	३३	५	२९	१९	१८	११	९	२५	तुला	भद्रा २५/५६ से, श्री गंगादशहरा, (लेख देखें पृ.सं. ११),
५	११	मं	२३	४६	१५	००	स्वा	११	२७	१०	०४	सि	२८	०२	वि	१५	००	३४	३३	५	२९	१९	१८	१२	१०	२६	तुला	भद्रा १५/०० तक, निर्जला ११ व्रत सबका, गायत्री ज., वै. महा. २५/३५ से,
६	१२	बु	२८	१९	१६	४९	वि	१७	४२	१२	३४	सा	२८	२२	बा	१६	४९	३४	३२	५	३०	१९	१९	१३	११	२७	वृ.५।५९	वै. महापात ८/४४ तक, (विवाह मु. अनु. में), प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी,
७	१३	गु	३१	३९	१८	०१	अनु	२२	४९	१४	३७	शु	२८	१७	कौ	५	३३	३४	३२	५	३०	१९	१९	१४	१२	२८	वृश्चिक	B आश्लेषा में शुक्र ६/५९, व्य. महापात १९/०२ से २५/४० तक, C
८	१४	शु	३३	४२	१८	५९	ज्ये	२६	४१	१६	१०	शु	२७	४९	ग	६	३८	३४	३१	५	३०	१९	१९	१५	१३	२९	ध.१६।१०	भद्रा १८/५९ से, C आश्लेषा में शुक्र ६/५९, जमादि उल उस्सानी मु. ६
९	१५	श	३४	३०	१९	१९	मू	२९	११	१७	१८	ब्र	२६	५८	वि	७	१२	३४	३०	५	३१	१९	१९	१६	१४	३०	धनु	भद्रा ७/१२ तक, वट्सावित्री व्रत (द. भारत), कबीर जयंती, सत्यव्रत,

द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ८ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५५७ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १५ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५६४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	५	०	२	७	३	३	१०	४
७	१५	४	१५	१८	२१	२७	१६	१६
५३	[illegible]	३९	५५	५०	४६	३३	३२	३२
३१	५२	४५	८	३७	५४	११	३९	३९
[illegible]	[illegible]	४३	२८	६	४९	५	३	३
१४	१	३५	५२	५३	२०	४९	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शु. श. ४ — २ — के. ५ — मं. १ — सू. बु. ३ — १२ — चं. ६ — प्लू. ९ — ह. ग ११ — ७ — गु. ८ — १० ने.

मंगल के मेष राशि में प्रवेश करने से सब धान्यों के भाव सस्ते होते हैं तथा मूंग के भावों में तेजी होती है एवं शासक क्रूर होते है। "**भूमिपुत्रो यदा मेषे सुभिक्षं सर्वधान्यकम्। प्रवालानि महर्घाणि क्रोधवांस्तु भवेन्नृपः॥**" प्रतिपदा के दिन शनिवार होने से लोगों को पीड़ा होती है, दुर्भिक्ष होता है तथा छत्र भंग होता है। "**ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदि यदिस्यान्मंदवासरः। छत्रभंगं प्रजापीड़ा दुर्भिक्षं च तदादिशेत्॥**" इस मास में पांच शनिवार है। इसका फल शास्त्र में अशुभ कहा गया है। प्राकृतिक प्रकोपों के प्रभाव से लोगों को कष्ट होगा। अन्न के भावों में तेजी होगी, अग्नि का भय होगा। अतिवर्षण, अल्पवर्षण, भूकंप, तूफानादि से हानि होती है। "**शनेश्चपंचकं दृष्टवा पाताले कंपते फणी। ईशानदेश भंगश्च वन्हिदाहो महर्घता॥**" पक्षारम्भ में तिथि का क्षय वस्तुओं के भावों में तेजी करने वाला है।

शु. श. ४ — २ — के. ५ — सू बु ३ — १२ — मं. ९ — चं. ६ — प्लू. ९ — ह. रा. ११ — ७ — गु. ८ — ने. १०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	८	०	२	७	३	३	१०	४
१३	७	९	१२	१८	२७	२८	१६	१६
५३	३	४३	०	४	१५	१५	१०	१०
५९	३०	१७	५६	३३	३२	३	२३	२३
५७	७३३	४३	३४	६	४३	६	३	३
११	२७	४	१२	९	२८	१३	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
३ [illegible]	३ [illegible]	३ [illegible]	१ [illegible]	१ [illegible]	४ [illegible]	४ [illegible]	३ [illegible]	१ [illegible]

आकाश लक्षण :- सूर्य के साथ सौम्यानाड़ी में स्थित बुध है तथा इनके आगे शुक्र व शनि दोनों स्थित हैं अत: गर्मी अधिक होगी तथा तेज गर्म हवाओं से दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश, बिहार, झारखण्ड में लोग व्याकुल होंगे। सूर्य के आगे शुक्र के स्थित होने से कहीं बादल चाल के साथ बूंदा- बांदी भी होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में तापमान में अचानक गिरावट दर्ज होगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
आषाढ़ कृष्ण पक्षः ८

ता. १ से १४ जुलाई सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २३ आषाढ़ तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आषाढ़	मु. ज.उ.	अं. जुलाई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१०	१	र	३४	१०	१९	११	पूषा	३०	५०	१७	५१	ऐं	२५	४६	बा	७	१८	३४	३०	५	३१	१९	१९	१७	१५	१	म.२३।५६	जुलाई मास. ७ दि. ३१, **श्री गुरु हरगोविन्द जन्मदिन**, (विवाह मु. उ.षाढ़ा में),
११	२	चं	३२	४९	१८	३९	उषा	३१	२०	१८	०३	वै	२४	१५	तै	६	५८	३४	२९	५	३१	१९	१९	१८	१६	२	मकर	महापात ८/३७ से १५/१९ तक,
१२	३	मं	३०	३५	१७	४६	श्र	३०	५८	१७	५५	वि	२२	२८	व	६	१५	३४	२८	५	३२	१९	१९	१९	१७	३	मकर	भद्रा ६/१५ से १७/४६ तक, **श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय २१/४४, A**
१३	४	बु	२७	३५	१६	३४	ध	२९	५१	१७	२८	प्री	२०	२७	बा	१६	३४	३४	२७	५	३२	१९	१९	२०	१८	४	कु.५।४४	पंचक ५/४४ से, **A** मघा सिंह में शुक्र २७/२४,
१४	५	गु	२३	५५	१५	०६	श	२८	०३	१६	४६	आ	१८	१२	तै	१५	०६	३४	२५	५	३२	१९	१९	२१	१९	५	कुम्भ	भरणी में मंगल ६/४२,
१५	६	शु	१९	३७	१३	२३	पूभा	२५	३८	१५	४८	सौ	१५	४५	व	१३	२३	३४	२४	५	३३	१९	१९	२२	२०	६	मी.१०।०४	भद्रा १३/२३ से २४/२६ तक, पुनर्वसु में सूर्य १५/०५, (विवाह मु. उ.भा. में),
१६	७	श	१४	४४	११	२७	उभा	२२	३९	१४	३७	शो	१३	०७	व	११	२७	३४	२३	५	३३	१९	१९	२३	२१	७	मीन	**कालाष्टमी**, (विवाह मु. रेवती में),
१७	८	र	९	२०	९	१७	रे	१९	०९	१३	१३	अ	१०	११	कौ	९	१७	३४	२२	५	३४	१९	१९	२४	२२	८	मे.१३।१३	पंचक १३/१३ तक, बुध पूर्वोदय १४/२३,
१८	९	चं	३	२९	६	५८	अ	१५	१४	११	४०	सु	७/२८	२२/२०	ग	६	५८	३४	२०	५	३४	१९	१८	२५	२३	९	मेष	भद्रा १७/४५ से २८/३१ तक, व्य. महापात २९/३१ से,
०	१०	चं	५७	२२	२८	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	दशमी तिथि क्षय,
१९	११	मं	५१	०६	२६	०१	भ	११	०२	१०	००	शु	२५	१४	ब	१५	१६	३४	१८	५	३५	१९	१८	२६	२४	१०	वृ.१५।३४	**योगिनी ११ व्रत स्मार्त्तों का**, बुध मार्गी ७/४७, व्य. महापात ११/१२ तक,
२०	१२	बु	४४	५६	२३	३३	कृ	६	४६	८	१८	गं	२२	११	कौ	१२	४६	३४	१७	५	३५	१९	१८	२७	२५	११	वृष	**योगिनी ११ व्रत वैष्णवों का**, (विवाह मु. रोहिणी में),
२१	१३	गु	३९	०८	२१	१५	रो	२/५९	४१/०५	६/२९	४०/१४	वृ	११	१४	ग	१०	२२	३४	१५	५	३६	१९	१८	२८	२६	१२	मि.१७।५५	भद्रा २१/१५ से, **प्रदोष व्रत**,
२२	१४	शु	३४	०१	१९	१२	आ	५६	१६	२८	०६	ध्रु	१६	३१	वि	८	११	३४	१३	५	३६	१९	१८	२९	२७	१३	मिथुन	भद्रा ८/११ तक,
२३	३०	श	२९	५३	१७	३४	पुन	५४	३३	२७	२६	व्या	१४	०६	च	६	२०	३४	११	५	३७	१९	१७	३०	२८	१४	क.२१।३३	**शनैश्चरी अमावस्या**,

आषाढ़ कृष्ण ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५७२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) आषाढ़ कृष्ण ३० शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५५७८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	११	०	२	७	४	३	१०	४
२१	२५	१५	८	१७	२	२९	१५	१५
३१	२६	२५	४१	१८	३४	६	४४	४४
३०	६	३४	२३	५०	१३	७	५६	५६
५७	८५३	४२	७	५	३४	६	३	३
१३	४८	२४	५०	७	४०	३६	११	११
मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
१ पुन.	३ रेवती	१ भरणी	१ आर्द्रा	१ ज्ये.	१ मघा	४ आश्लेषा	३ शत.	१ पू.फा.

श. ४, २, शु. के. ५, सू. बु. ३, चं. १२, मं. १, ६, प्लू. ९, ह. रा. ११, ७, गु. ८, ने. १०
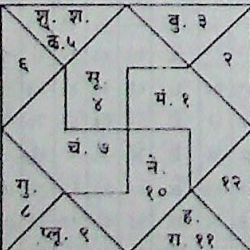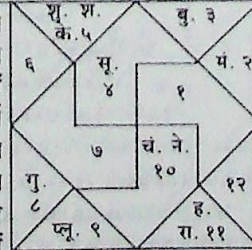
तृतीया को शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से सुवर्ण, लाल वस्तु तथा पशु एवं सब धान्य महंगे होंगे तथा वर्षा का अवरोध होता है। **"दैत्यगुरुर्यदा सिंहेहेमरक्तं चतुष्पदः। धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिदः॥"** मंगल के भरणी नक्षत्र में संचार से ब्राह्मणों को पीड़ा होती है तथा अनिष्ट होता है, सब देश व ग्राम में भी पीड़ा होती है तथा धान्य महंगे होते हैं। **"द्विज पीड़ा भरण्यादौ नाशः स्यादतिशीघ्रगे। सर्वदेशेग्रामपीडा धान्यानां च महर्घता॥"** इस चान्द्र मास में पांच रविवार एवं पांच ही सोमवार भी हैं पांच रविवारों का फल शास्त्र में अशुभकारी, दुर्भिक्षकारक, छत्रभंग करने वाला एवं भय उत्पन्न करने वाला कहा गया है। **"यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्ष छत्रभंगः स्यात्तदास्ते च महद्भयम्॥"** पांच सोमवारों का फल शुभ, धन-धान्य, सुख देने वाला कहा गया है। अतः इस मास में मिश्रित्र फल होंगे। कृष्ण पक्ष में तिथिक्षय भी हो रहा है। अतः वस्तुओं के भावों में कमी आयेगी।

के. शु. ५, श. ४, २, सू. बु. चं. ३, १२, मं. १, ६, प्लू. ९, ह. रा. ११, ७, गु. ८, ने. १०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
२	२	०	२	७	४	३	१०	४
२७	२०	११	९	१६	५	२९	१५	१५
१४	४८	३८	१०	५०	४१	४६	२५	२५
५०	१५	३१	१३	२६	५६	२६	५१	५१
५७	८३१	४१	२३	४	२६	६	३	३
१४	५४	५१	११	१२	१०	५२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३ पुन.	१ पुन.	२ भरणी	१ आर्द्रा	१ ज्ये.	२ मघा	४ आश्लेषा	३ शत.	१ पू.फा.

आकाश लक्षण :- सूर्य नीरा नाड़ी में, मंगल चण्डा तथा बुध सौम्या नाड़ी में स्थित है इसके प्रभाव से तेज हवा के साथ वर्षा-खण्डवृष्टि या कहीं-कहीं बूंदा-बांदी होगी। कहीं-कहीं तेज बादल चाल होगी। आसाम, उड़ीसा, केरल, महाराष्ट्र, समुद्री भागों एवं पर्वतीय भागों में कहीं तेज वर्षा तथा कहीं हल्की वर्षा होगी। दिन के तापमान में कुछ कमी होगी।

बादल चाल होगी। आसाम, उड़ीसा, केरल, महाराष्ट्र, समुद्री भागों एवं पर्वतीय भागों में कहीं तेज वर्षा तथा कहीं हल्की वर्षा होगी। दिन के तापमान में कुछ कमी होगी।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
आषाढ़ शुक्ल पक्ष: ९

ता. १५ से ३० जुलाई सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २४ आषाढ़ से ८ श्रावण तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. आषाढ़	मु. ज.उ.	अं. जुलाई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२४	१	र	२७	०३	१६	२६	पु	५४	१४	२७	११	ह	१२	०५	ब	१६	२६	३४	०९	५	३७	१९	१७	३१	२९	१५	कर्क	मघा सिंह में शनि २८/३८, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. श्रृंगो., व्य. महा. १५/०६ से २१/१० तक,
२५	२	चं	२५	४५	१५	५५	आश्ले	५५	३१	२७	५०	व	१०	३३	कौ	१५	५५	३४	०७	५	३८	१९	१७	श्रा.१	र.१	१६	सिं. २७।५०	रथोत्सव २, श्री जगदीश रथ यात्रा (पुरी), वक्री अनुराधा में गुरु १९/३३, A
२६	३	मं	२६	०८	१६	०५	म	५८	२९	२९	०२	सि	९	३३	ग	१६	०५	३४	०५	५	३८	१९	१६	२	२	१७	सिंह	भद्रा २८/२६ से,
२७	४	बु	२८	१६	१६	५७	पूफा	६०	०	-	-	व्य	९	०६	वि	१६	५७	३४	०३	५	३९	१९	१६	३	३	१८	सिंह	भद्रा १६/५७ तक, विनायक चतुर्थी,
२८	५	गु	३१	५८	१८	२६	पूफा	०३	०४	६	५३	व	९	१०	बा	१८	२६	३४	०१	५	३९	१९	१६	४	४	१९	क. १३।२६	A कर्क में सूर्य २६/४४, मु. १५, दक्षिणायन संक्रांति पुण्य, रज्जब मु. ७,
२९	६	शु	३६	५८	२०	२७	उफा	०९	०५	९	१७	प	९	४१	कौ	७	२३	३३	५९	५	४०	१९	१५	५	५	२०	कन्या	पुष्य में सूर्य १४/३२, श्रीमहावीर च्यवन दिवस, कुमार षष्ठी,
३०	७	श	४२	४५	२२	४६	ह	१६	०४	१२	०६	शि	१०	२९	ग	९	३५	३३	५६	५	४०	१९	१५	६	६	२१	तु. २५।३५	भद्रा २२/४६ से, विवस्वत सप्तमी,
३१	८	र	४८	४६	२५	११	चि	२३	३०	१५	०४	सि	११	२८	वि	११	५९	३३	५४	५	४१	१९	१४	७	७	२२	तुला	भद्रा ११/५९ तक, जैन अष्टान्हिका प्रा.,
श्रा.१	९	चं	५४	२४	२७	२७	स्वा	३०	४७	१८	०	सा	१२	२४	बा	१४	२१	३३	५१	५	४१	१९	१४	८	८	२३	तुला	तिलक ज., सायन सिंह में सूर्य १०/३२, मेला शरीफ भवानी (का.), B
२	१०	मं	५९	०९	२९	२१	विशा	३७	२२	२०	३८	शु	१३	१०	तै	१६	२७	३३	४९	५	४२	१९	१४	९	९	२४	वृ. १४।०१	कृतिका में मंगल ९/५९, B वै. महापात १२/३८ से १८/१७ तक,
३	११	बु	६०	०	-	-	अनु	४२	५०	२२	५०	शु	१३	३५	व	१८	०७	३३	४६	५	४२	१९	१३	१०	१०	२५	वृश्चिक	भद्रा १८/०७ से, C हरिशयनी, पण्डरपुर यात्रा (महा.), पुनर्वसु में बुध १२/४३,
४	११	गु	२	३४	६	४४	ज्ये	४६	५१	२४	२७	ब्र	१३	३६	वि	६	४५	३३	४३	५	४३	१९	१२	११	११	२६	ध. २४।२७	भद्रा ६/४५ तक, देवशयनी ११ व्रत सबका, चातुर्मास व्रत नियम प्रा., C
५	१२	शु	४	३१	७	३२	मूल	४९	२२	२५	२८	ऐं	१३	०७	बा	७	३२	३३	४१	५	४३	१९	१२	१२	१२	२७	धनु	शुक्र वक्री २२/५५, प्रदोष व्रत, E वृष में मंगल ८/२७,
६	१३	श	४	५३	७	४१	पुषा	५०	२४	२५	५४	वै	१२	०९	तै	७	४१	३३	३८	५	४४	१९	११	१३	१३	२८	धनु	जन्म श्री हजरतअली, D शिवशयनोत्सव, संन्यासियों का चातुर्मास प्रा., E
७	१४	र	३	४७	७	१५	उषा	५०	०५	२५	४७	वि	१०	४३	व	७	१५	३३	३५	५	४५	१९	११	१४	१४	२९	म. ७।५५	भद्रा ७/१५ से १८/४९ तक, सत्यव्रत, व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा, कोकिला १५, D
८	१५	चं	१	२१	६	१८	श्र	४८	३७	२५	१२	प्री	८	५२	ब	६	१८	३३	३२	५	४५	१९	१०	१५	१५	३०	मकर	महापात १७/१२ से २२/२४ तक, तेरापन्थ स्थापना दिवस, जैन अष्टान्हिका समाप्त,

आषाढ़ शुक्ल ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५५८६ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) आषाढ़ शुक्ल १५ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५५९४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	६	०	२	७	४	४	१०	४
४	१	२५	२४	१९	८	०	१५	१५
५२	५६	१०	४४	३१	२२	४२	०	०
५४	१६	२७	३२	३६	४२	२५	२५	२५
५७	७११	४१	६५	२	११	७	३	३
१६	४३	०	१०	५०	३३	१०	११	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य १	चित्रा ३	भरणी ४	पुनर्वसु ३	अनुराधा ४	मघा ३	मघा १	शतभिषा ३	पूर्वाफाल्गुनी १

शु. श. के. ५ | बु. ३ | ६ | २ | सू. ४ | मं. १ | चं. ७ | ने. १० | गु. ८ | १२ | प्लू. ९ | ह. | रा ११

पक्षारम्भ में शनि सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से अन्न का भाव समान रहे तथा गुड़, तेल महंगे हों और मालव देश की हानि होती है। "**सिंह राशि गतः सौरिः समभावो भविष्यति। गुड़तैलं महर्घं च मालवो हि विनश्यति॥**" सोमवार को सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप पूर्व तथा उत्तर के देशों में पीड़ा तथा बालकों को पीड़ा, दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय तथा अशान्ति एवं पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा। "**ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देशभङ्गं विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि॥**" मंगल के वृष राशि में प्रवेश से सब धान्य महंगे होते हैं तथा चन्दन, केशर, वस्त्र और कपास आदि भी महंगी होती हैं। "**वृष राशो यदा भौमः सर्वधान्यमहर्धता। चन्दनं कुंकुमं वस्त्रं कार्पासादि महर्धता॥**" मंगल के कृतिका नक्षत्र में रहते तपस्वियों को पीड़ा एवं देशभंग होता है। "**कृतिकायां देशभंगों पीड़ा तापस आश्रमे।**" गुरु वक्रगति द्वारा द्वितीया को अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से वर्षा मध्यम होती है तथा धान्य की उत्पत्ति भी मध्यम होती है।

शु. श. के. ५ | बु. ३ | ६ | सू. ४ | मं. २ | १ | ७ | चं. ने. १० | गु. ८ | १२ | प्लू. ९ | ह. | रा. ११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	९	१	२	७	४	४	१०	४
१२	१२	०	२५	१६	८	१	१४	१४
३१	६	३५	३८	३	५३	४०	३४	३४
१८	१४	११	२६	५६	२५	२६	५८	५८
५७	८२२	४०	१०१	१	६	७	३	३
२१	५	४	१६	२४	३३	२२	११	११
मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
पुष्य ३	श्रवण १	कृत्तिका १	पुनर्वसु १	अनुराधा ४	मघा ३	मघा १	शतभिषा ३	पूर्वाफाल्गुनी १

आकाश लक्षण:- सूर्य के आगे शुक्र एवं शनि स्थित हैं तथा सूर्य जला नाड़ी में, बुध नीरा नाड़ी में, शनि शुक्र अमृता नाड़ी में स्थित होने से वर्षा का योग बन रहा है। कुछ स्थानों में वर्षा पर्याप्त होगी एवं कुछ स्थानों में वर्षा का प्रभाव प्राकृतिक प्रकोप के रूप में दिखेगा। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, आसाम, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, काश्मीर में कहीं व्यापक वर्षा, कहीं खण्डवृष्टि होगी, कुछ भागों में साधारण वर्षा एवं कुछ भागों में प्राकृतिक प्रकोप भी शनि की स्थिति के कारण होगा।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
श्रावण कृष्ण पक्ष: १०

ता. ३१ जुलाई से १२ अगस्त सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २१ श्रावण तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. श्रावण	मु. रज्जब	अं. जुलाई	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
०	१	चं	५७	५०	२८	५३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा तिथि क्षय.
९	२	मं	५३	२५	२७	०८	ध	४६	१५	२४	१६	आ	०६ / [illegible]	४० / ११	तै	१६	०३	३३	२९	५	४६	१९	१०	१६	१६	३१	कु. १२।४६	पंचक १२/४६ से, अशून्य शयन २.
१०	३	बु	४८	२१	२५	०७	शत	४३	११	२३	०३	शो	२५	२९	व	१४	०९	३३	२६	५	४६	१९	०९	१७	१७	अ.१	कुम्भ	भद्रा १४/०९ से २५/०७ तक, कर्क में बुध १७/४५, अगस्त मा. ८ दि. ३१.
११	४	गु	४२	५०	२२	५५	पूभा	३९	४०	२१	३९	अ	२२	३९	ब	१२	०२	३३	२३	५	४७	१९	०८	१८	१८	२	मी. १६।०१	**श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१/२४,**
१२	५	शु	३७	०४	२०	३७	उभा	३५	५३	२०	०९	सु	१९	४४	कौ	९	४७	३३	२०	५	४७	१९	०७	१९	१९	३	मीन	आश्ले. में सूर्य १३/३१, पुष्य में बुध १२/५९, बुध पूर्वास्त ९/२०, शनि पश्चिमास्त २१/३७.
१३	६	श	३१	१३	१८	१७	रे	३२	०	१८	३६	धृ	१६	४६	ग	७	२७	३३	१७	५	४८	१९	०७	२०	२०	४	मे. १८।३६	भद्रा १८/१७ से २९/०६ तक, पंचक १८/३६ तक.
१४	७	र	२५	२३	१५	५८	अ	२८	०९	१७	०४	शू	१३	४९	व	१५	५८	३३	१३	५	४९	१९	०६	२१	२१	५	मेष	व्य. महापात ९/४३ से १४/०६ तक.
१५	८	चं	१९	४४	१३	४३	भ	२४	२९	१५	३७	ग	१०	५५	कौ	१३	४३	३३	१०	५	४९	१९	०५	२२	२२	६	वृ. २१।१६	शुक्र वृद्धत्व आरम्भ ९/२९.
१६	९	मं	१४	२३	११	३५	कृ	२१	०८	१४	१७	वृ	०८ / २९	०७ / २७	ग	११	३५	३३	०७	५	५०	१९	०५	२३	२३	७	वृष	भद्रा २२/३५ से, गुरु मार्गी ८/०५.
१७	१०	बु	९	२८	९	३७	रो	१८	१३	१३	०७	व्या	२६	५७	वि	९	३७	३३	०३	५	५०	१९	०४	२४	२४	८	मि. २४।३८	भद्रा ९/३७ तक.
१८	११	गु	५	०७	७	५३	मृ	१५	५३	१२	१२	ह	२४	४१	वा	७	५३	३३	०	५	५१	१९	०३	२५	२५	९	मिथुन	आश्लेषा में बुध २९/१०, शुक्र पश्चिम में अस्त ९/२९, **कामिका ११ व्रत सबका.**
१९	१२	शु	१	२१	६	२७	आ	१४	११	११	३५	व	२२	४१	तै	६	२७	३२	५७	५	५१	१९	०२	२६	२६	१०	क. २१।२१	भद्रा २९/२२ से, **प्रदोष व्रत,**
०	१३	शु	५८	४७	२९	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी तिथि क्षय.
२०	१४	श	५७	०७	२८	४३	पुन	१३	४०	११	२०	सि	२१	०१	वि	१६	५९	३२	५३	५	५२	१९	०१	२७	२७	११	कर्क	भद्रा १६/५८ तक, शब-ए-मिराज.
२१	३०	र	५६	४०	२८	३३	पु	१४	०७	११	३१	व्य	१९	४३	च	१६	३४	३२	५०	५	५२	१९	०	२८	२८	१२	कर्क	**हरियाली अमावस्या,**

श्रावण कृष्ण ८ चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६०१ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) श्रावण कृष्ण ३० रवौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६०७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	०	१	३	७	४	४	१०	४
११	२०	५	८	१५	७	२	१४	१४
१३	४१	१३	३३	५८	१७	३२	१२	१२
४	३५	६	४५	०	५२	२८	४४	४४
५७	८१९	३९	१२०	०	२२	७	३	३
२८	१५	११	२०	६	४६	३१	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	व उ	व उ	मा अ	व अ	व अ
१ आश्ले	३ भरणी	३ कृत्ति	२ पुष्य	४ अनु	३ मघा	१ मघा	३ शत	१ पूफा

शु. श. के. ५ | ३ | ६ | सू. बु ४ | च. १ | मं. २ | ७ | ने. १० | १२ | गु. ८ | प्लू. ९ | ह. | रा ११

इस घस्र पक्ष में शुक्र सिंह राशि में स्थित होकर अस्त हो रहा है इसके प्रभाव से शासकों को पीड़ा तथा अनावृष्टि का भय या जल की कमी होती है। " **सिंहे पीड़ा भूपवर्गे तथा अनावृष्टिजं भयम्।** " राक्षसगण नक्षत्र में शुक्र का अस्त होने से हिन्दू देश में विग्रह होता है तथा खर्परराज्य में युद्ध तथा मिश्र देश में अन्न का विग्रह होता है। मारवाड़ देश तथा सिंधु देश में सामान्य दुर्भिक्ष होता है। जलयानों का समुद्री दुर्घटनाओं में नाश तथा फिरंगियों में विग्रह होता है। विराट, दुंदु, पांचाल, सौराष्ट्र देशों में कष्ट, मालव देश में मनुष्यों को भारी पीड़ा तथा पट्टन में अन्न महंगा हो तथा दक्षिण देश में सुख सम्पदा में वृद्धि होती है। "**शुक्रास्ते राक्षसगणे हिंदुदेशेषु विग्रह:। खर्प्परि राजयुद्धानि मिश्रदेशे अन्न विग्रह: ॥** " " **मरुस्थले सिंधुदेशेदुर्भिक्षं मध्यमं भवेत्। यानपात्र विनाशोऽब्धौ फिरंगाणां च विग्रह:। विराटदुंदपांचालसौराष्ट्रेषु च रौरवम्। तथा राज्यपरावर्तोमालवेषु जनक्षय:। जीर्ण दुर्गे भय भंग: पत्तनेऽन्नमहर्धता। नव्यमुद्रामकाश स्याद्दर्क्षिणे सुखसंपद: ॥** " यह पक्ष तेरह दिन का होने से लोगों को पीड़ा, हानि होगी तथा पृथ्वी पर अशान्ति, युद्ध की स्थिति बनती है तथा कहीं लोगों का नाश भी होता हैं " **यदा च जायते पक्ष त्रयोदशदिनात्मक:। भवेलोकक्षयो घोरोमुण्डमालायुता मही॥** "

शु. श. के. ५ | ३ | मं. २ | ६ | सू. चं. बु ४ | १ | ७ | ने. १० | १२ | गु. ८ | ह. | प्लू. ९ | रा. ११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
३	३	१	३	७	४	४	१०	४
२४	१३	९	२०	१६	४	३	१३	१३
५८	२२	६	४८	००	३२	१७	५३	५३
१३	२४	५	५८	६	२४	४५	३८	३८
५७	७८२	३८	१२३	१	३३	७	३	३
३६	५	१९	२८	०	२०	३६	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा अ	मा उ	व उ	मा अ	व अ	व अ
३ आश्ले	४ पुष्य	४ कृत्ति	२ आश्ले	४ अनु	२ मघा	१ मघा	३ शत	१ पूफा

आकाश लक्षण :- बुध सूर्य के जला एवं अमृता नाड़ी में स्थित होने एवं शुक्र शनि के सूर्य के आगे स्थित होने से व्यापक वर्षा का योग बनेगा। कुछ स्थानों में जल वर्षा से बाधा उत्पन्न होगी। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, आसाम, उड़ीसा, मध्य प्रदेश में व्यापक पर्याप्त वर्षा होगी।

होगी। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा ...

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
श्रावण शुक्ल पक्षः ११

ता. १३ से २८ अगस्त सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २२ श्रावण से ६ भाद्रपद तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षाऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. श्रावण	मु. रज्जब	अं. अगस्त	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२२	१	चं	५७	३४	२८	५५	आश्ले	१५	४८	१२	१२	व	१८	५०	किं	१६	३९	३२	४६	५	५३	१८	५९	२९	२९	१३	सिं.१२।१२	रोहिणी में मंगल १५/१६, महा. ९/१३ से १४/१० तक, मेला छिन्नमस्तिका प्रा. (हि. प्र.),
२३	२	मं	५९	५२	२९	५०	म	१८	४९	१३	२५	प	१८	२३	बा	१७	१८	३२	४२	५	५३	१८	५९	३०	३०	१४	सिंह	चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. श्रृंगोन्नति,
२४	३	बु	६०	००	-	-	पूफा	२३	१०	१५	१०	शि	१८	२२	कौ	५	५०	३२	३९	५	५४	१८	५८	३१	शा.१	१५	क.२१।४१	स्वतन्त्रता दिवस, मधुश्रवा ३, शाबान मु. ८,
२५	३	गु	०३	२८	७	१८	उफा	२८	४७	१७	२५	सि	१८	४३	ग	७	१८	३२	३५	५	५५	१८	५७	३२	२	१६	कन्या	भद्रा २०/१२ से, मघा सिंह में बुध १७/३२, विनायक ४,
२६	४	शु	०८	१५	९	१३	ह	३५	२४	२०	०५	सा	१९	२५	वि	९	१३	३२	३१	५	५५	१८	५६	भा.१	३	१७	कन्या	भद्रा ९/१३ तक, मघा सिंह में सूर्य ११/०९, मु. ३०, सं. पुण्य १७/३३ तक,
२७	५	श	१३	५४	११	२१	चि	४२	४१	२३	०	शु	२०	१६	बा	११	२९	३२	२८	५	५६	१८	५५	२	४	१८	तु.९।३९	नागपंचमी, कल्कि जयंती, वै. महापात ८/५४ से १३/२६ तक,
२८	६	र	१९	५७	१३	५५	स्वा	५०	०८	२५	५९	शु	२१	१७	तै	१३	५५	३२	२४	५	५६	१८	५४	३	५	१९	तुला	वक्री आश्लेषा कर्क में शुक्र १९/१९, D खग्रास चन्द्र ग्रहण सुदूर पूर्वी भाग में दृश्य,
२९	७	चं	२५	५३	१६	१८	वि	५७	१४	२८	५०	ब्र	२२	०९	व	१६	१८	३२	२०	५	५७	१८	५३	४	६	२०	वृ.२२।०९	भद्रा १६/१८ से २९/२३ तक, गो. तुलसीदास जयंती, शीतला ७,
३०	८	मं	३१	०९	१८	२५	अनु	६०	०	-	-	ऐं	२२	४८	ब	१८	२५	३२	१६	५	५७	१८	५२	५	७	२१	वृश्चिक	श्री दुर्गाष्टमी, मेला श्री नयना देवी व चिंतपूर्णी (हि. प्र.),
३१	९	बु	३५	१५	२०	०४	अनु	०३	२५	७	११	वै	२३	०४	बा	७	१८	३२	१३	५	५८	१८	५१	६	८	२२	वृश्चिक	राहु शत. २ में केतु मघा ४ में १९/२९, A शुक्रोदय पूर्व में १९/१६,
भा.१	१०	गु	३७	४८	२१	०६	ज्ये	०८	१८	९	१७	वि	२२	५०	तै	८	४०	३२	०९	५	५८	१८	५०	७	९	२३	ध.९।१७	पूर्वाफाल्गुनी में बुध १४/०६, सायन कन्या में सूर्य १७/४०, शरद् ऋतु प्रा.
२	११	शु	३८	३७	२१	२५	मू	११	३३	१०	३६	प्री	२२	०३	व	९	२१	३२	०५	५	५९	१८	४९	८	१०	२४	धनु	भद्रा ९/२१ से २१/२५ तक, पुत्रदा ११ व्रत सबका, पवित्रा एकादशी, A
३	१२	श	३७	३७	२१	०२	पूषा	१३	०४	११	१३	आ	२०	४२	ब	९	१९	३२	०१	५	५९	१८	४८	९	११	२५	म.१७।१५	C श्री अमरनाथ यात्रा, ज्येष्ठा में गुरु १९/०१, महापात १४/४५ से १८/५७ तक, D
४	१३	र	३४	५५	१९	५८	उषा	१२	५०	११	०८	सौ	१८	४८	कौ	८	३५	३१	५७	६	०	१८	४७	१०	१२	२६	मकर	प्रदोष व्रत, B शुक्र बाल्यत्व समाप्त १९/१६,
५	१४	चं	३०	४१	१८	१६	श्र	११	०	१०	२४	शो	१६	२४	ग	७	११	३१	५३	६	०	१८	४६	११	१३	२७	कु.२१।५०	भद्रा १८/१६ से २९/१३ तक, पंचक २१/५० से, सत्यव्रत, ऋक उपाकर्म, B
६	१५	मं	२५	११	१६	०५	ध	०७	४९	९	०८	अ	१३	३५	ब	१६	०५	३१	४९	६	०१	१८	४५	१२	१४	२८	कुम्भ	रक्षाबन्धन, श्री गायत्री ज., संस्कृत दिवस, शुक्ल यजु उपाकर्म, हयग्रीव ज., C

श्रावण शुक्ल ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६१६ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) श्रावण शुक्ल १५ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६२३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	७	१	४	७	३	४	१०	४
३	३	१४	८	१६	२१	४	१३	१३
३७	३९	४५	५१	१५	७	२६	२५	२५
१७	५९	१०	३१	४१	२१	११	१	१
५७	७२८	३६	११४	२	३६	७	३	३
४६	२८	५१	४४	३८	७	३८	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

६ शु. ४ ७ बु.श. ३ सू. के. ५ मं. २ चं. गु. ८ ह. रा. ११ प्लू. ९ १ ने. १० १२

मंगल के रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश से पशुओं को पीड़ा, वनों का नाश, कपास सूत्र एवं वस्त्र महंगे होते हैं। **''वृक्ष पीड़ा श्वापदानां रोगः स्याद्रोहिणीकुजे। महर्घताऽपि कार्पासे वस्त्रे सूत्रे विशेषतः॥''** तृतीया गुरुवार को बुध सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सब धान्य समभाव रहते हैं एवं सुवर्ण व देवदारू महंगे होते हैं। चतुर्थी शुक्रवार को सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि का भय, उत्तर के देशों में युद्ध आदि का भय एवं अशांति तथा पूर्व के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है।

६ शु. ४ ७ सू. के. श. बु ५ ३ मं. २ गु. ८ चं. ह. रा. ११ प्लू. ९ १ ने. १० १२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१०	१	४	७	३	४	१०	४
१०	४	१८	२१	१६	२५	५	१३	१३
२२	३०	५१	४६	३७	११	११	२	२
४	५१	२३	४४	४८	४१	४२	४६	४६
५७	८५८	३५	१०५	३	२६	७	३	३
५५	४४	३५	१६	५१	४	३७	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

''बुधो मिथुन राशिस्थो महर्घं च चतुष्पदाम। तदा वायुर्विजानीयान्मेघश्च प्रचुरो भवेत्॥'' ''नैर्ऋत्ये च यदा दृष्टि भयक्तेसं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्॥'' कर्क राशि में रहते शुक्र का उदय होने से अतिवर्षण से धान्य का नाश व चोरों का भय होता है। **''कर्केतिवृष्टिर्धान्यस्य विनाशं चौरजं भयम्''।** शुक्र के पूर्वोदय होने से सौराष्ट्र देश में विग्रह, कलिंग देश व स्त्री राज्य में वर्ष मध्यम रहे, मारवाड़ देश में दुर्भिक्ष होता है घृत तथा धान्य महंगे होते हैं। सोना, चांदी महंगी होती है, गाय-भैंस को पीड़ा होती है। कपास, रुई, सूत महंगे होते हैं। **''मनुष्य गणभे शुक्रोदये सौराष्ट्र विग्रहः। कलिंग देशे स्त्री राज्ये मध्यमं वर्ष मुच्यते। मरुस्थले च दुर्भिक्षं घृत धान्य महर्घता। स्वर्णरूप्यं महर्घ स्यात्पीड़ागोमहिषव्रजे। कार्पासतुलसूत्रादिर्महर्घत्वं प्रजायते॥''**

आकाश लक्षण :- सूर्य, शनि बुध-शुक्र के अमृता नाड़ी में स्थित होने से वर्षा पर्याप्त होगी। सूर्य के साथ शनि भी स्थित है अतः प्राकृतिक प्रकोप, ओलावृष्टि, अतिवर्षण, अल्पवर्षण से लोग त्रस्त होंगे। तापमान में कमी होगी। कहीं आंधी-तूफान से लोगों को पीड़ा भी होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में व्यापक वर्षा होगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
भाद्रपद कृष्ण पक्षः १२

ता. २९ अगस्त से ११ सितम्बर सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ७ से २० भाद्रपद तक। दक्षिणायण, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिन मान घटी	दिन मान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. भाद्रपद	मु. शाबान	अं. अगस्त	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
७	१	बु	१८	४४	१३	३१	श	३ / ५८	३५ / ३७	७ / २९	२६ / २८	सु	१०	२६	कौ	१३	३१	३१	४५	६	०१	१८	४३	१३	१५	२९	मी.२३।५९	बुध पश्चिमोदय १७/५६, शब ए बारात, B व्य.महा. ८/१६ से ११/५६ तक,
८	२	गु	११	३९	१०	४१	उभा	५३	१६	२७	२०	धृ	७ / २७	४ / ३४	ग	१०	४१	३१	४१	६	०२	१८	४२	१४	१६	३०	मीन	भद्रा २१/१३ से, उ.फा. में बुध २५/०८, अगस्त्य उदय ७/१७,
९	३	शु	४	१५	७	४४	रे	४७	५१	२५	११	गं	२४	०४	वि	७	४४	३१	३७	६	०२	१८	४१	१५	१७	३१	मे.२५।११	भद्रा ७/४४ तक, पंचक २५/११ तक, **श्रीगणेश ४ व्रत, बहुला ४**, A
०	४	शु	५६	५५	२८	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्थी तिथि क्षय, A चन्द्रोदय २०/३१, पू.फा में सूर्य ७/१०, B
१०	५	श	४९	४८	२५	५८	अ	४२	४१	२३	०७	वृ	२०	३८	कौ	१५	२२	३१	३३	६	०३	१८	४०	१५	१८	सि.१	मेष	कन्या में बुध २४/३२, सितम्बर मा. ९ दि. ३०,
११	६	र	४३	१६	२३	२२	भ	३८	०२	२१	१६	ध्रु	१७	२१	ग	१२	३८	३१	२९	०	०३	१८	३९	१७	१९	२	वृ.२६।५१	भद्रा २३/२२ से, हल ६,
१२	७	चं	३७	२९	२१	०३	कृ	३४	०७	१९	४२	व्या	१४	१८	वि	१०	१०	३१	२५	६	०४	१८	३८	१८	२०	३	वृष	भद्रा १०/०९ तक, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्तो का, आद्याकाली जयंती,**
१३	८	मं	३२	३८	१९	०७	रो	३१	०७	१८	३१	ह	११	३३	बा	८	०२	३१	२१	६	०४	१८	३७	१९	२१	४	वृष	मृगशिर में मंगल १६/२५, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवों का,**
१४	९	बु	२८	५०	१७	३७	मृ	२९	०९	१७	४४	व	९	८	तै	६	११	३१	१७	६	०५	१८	३६	२०	२२	५	मि.६।०४	भद्रा २९/०२ से, **गुग्गा नवमी,**
१५	१०	गु	२६	१०	१६	३३	आ	२८	११	१७	२५	सि	७ / २९	३ / २१	वि	१६	३३	३१	१३	६	०५	१८	३४	२१	२३	६	मिथुन	भद्रा १६/३३ तक, **D रानी सती मेला झुंझुनु (राज.),**
१६	११	शु	२४	४०	१५	५८	पुन	२८	३७	१७	३३	व	२८	०१	बा	१५	५८	३१	०९	६	०६	१८	३३	२२	२४	७	क.११।२८	**अजा ११ व्रत सबका,** C हस्त में बुध ६/२५, शुक्र मार्गी २१/४६,
१७	१२	श	२४	२०	१५	५०	पु	३०	०५	१८	०८	प	२७	०४	तै	१५	५०	३१	०४	६	०६	१८	३२	२३	२५	८	कर्क	**शनि प्रदोष व्रत, स्वामी शिवानन्द ज., पर्यूषण पर्व प्रा. (जैन)**, C
१८	१३	र	२५	११	१६	११	आश्ले	३२	४१	१९	११	शि	२६	२८	व	१६	११	३१	०	६	०७	१८	३१	२४	२६	९	सिं.१९।११	भद्रा १६/११ से २८/३१ तक, शनि पूर्वोदय ६/०८, **कैलाश यात्रा २ दिन,**
१९	१४	चं	२७	११	१७	०	मघा	३६	२३	२०	४०	सि	२६	१३	श	१७	०	३०	५६	६	०७	१८	३०	२५	२७	१०	सिंह	**अघोरा १४, डाकिनी १४, कैलाशयात्रा,**
२०	३०	मं	३०	१६	१८	१४	पूफा	४१	०८	२२	३५	सा	२६	१८	ना	१८	१४	३०	५२	६	०८	१८	२९	२६	२८	११	क.२९।०७	**भौमवती अमावस्या, कुशग्रहणी ३०, पिठौरी अमावस्या, लोहार्गल यात्रा,** D

भाद्रपद कृष्ण ८ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६३० (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) भाद्रपद कृष्ण ३० भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६३७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	१	१	५	७	३	४	१०	४
१७	१५	२३	०३	१७	२३	०६	१२	१२
०८	४५	४	३७	८	३	१२	४०	४०
६	१२	२३	३०	१५	३८	४८	३१	३१
५८	८३५	३४	९६	५	१०	७	३	३
७	२	११	३३	०	३	३२	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पूफा	रोहि	मृग	उफा	ज्ये	आश्ले	मघा	शत	मघा

बु. ६ | शु. ४ | ७ | ३ | श. सू. के. ५ | चं मं २ | गु. ८ | रा. ह. ११ | प्लू. ९ | १ | ने. १० | १२

इस मास में पांच बुधवार होने से शांति-सुख का लोगों में संचार होता है व सुभिक्ष होता है। "**बुधस्य पंच वाराश्चेज्जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजानां सुखमत्यन्तं सुभिक्षं च प्रजायते॥**" बुध के कन्या राशि में संचार करने से छः महीने तक सुवर्ण और शक्कर लाभ देते हैं तत्पश्चात इनके भाव कम हो जाते हैं। "**कन्याराशिं गते ज्ञे ही कांचनं शुद्ध शर्करा। मासे षष्ठेददेल्लाभं पुनः शस्तो भविष्यति॥**" मंगल के मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश से कपास का नाश, पृथ्वी जल से पूर्ण हो तथा सब सुभिक्ष होता है। "**कार्पासनाशः प्रबलं सुभिक्षं मृगे कुजे भूर्जलपूरितैव।**" चन्द्र के सिंह राशि में प्रवेश करने से त्रयोदशी को चतुर्ग्रही योग बनेगा इसके फलस्वरूप कहीं जलप्लावन से जनधन की हानि होती है, रक्तपात होता है। "**एका राशौ यदा यांति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयंति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥**"

बु. ६ | शु. ४ | ७ | ३ | ५ सू. के. श. चं. | मं. २ | गु. ८ | रा. ह. ११ | प्लू. ९ | १ | ने. १० | १२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
४	४	१	५	७	३	४	१०	४
२३	१७	२६	१४	१७	२२	७	१२	१२
५५	५४	५८	२८	४६	४३	५	१८	१८
४२	१	५१	१३	३८	५३	१३	१६	१६
५८	७३७	३२	८८	६	६	७	३	३
२२	३२	३२	१२	७	२७	२५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
पूफा	पूफा	मृग	हस्त	ज्ये	आश्ले	मघा	शत	मघा

आकाश लक्षण :- सूर्य के आगे बुध एवं पीछे शुक्र स्थित है। सूर्य जलानाड़ी में, बुध नीरा सौम्या में, शुक्र-शनि अमृता नाड़ी में स्थित है। इनके प्रभाव से व्यापक तेज वर्षा, तेज वायु के वेग के साथ होगी। अधिकांश भागों में वर्षा पर्याप्त होगी। कहीं-कहीं खण्डवृष्टि या सामान्य वर्षा होगी। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, उड़ीसा, आसाम, बिहार, छत्तीसगढ़ के अधिकांश भागों में पर्याप्त वर्षा होगी।

कर्नाटक, उड़ीसा, आसाम, बिहार, छत्तीसगढ़ के अधिकांश भागों में पर्याप्त वर्षा होगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
भाद्रपद शुक्ल पक्षः १३

ता. १२ से २६ सितम्बर सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २१ भाद्रपद से ४ आश्विन तक। दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद् ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

																		दिन मान		स्टैं. टा. सूर्योदय		स्टैं. टा. सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा.
रा. ति.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	भाद्रपद	रमजान	सितम्बर	रा. घं. मि.
२१	१	बु	३४	२३	१९	५४	उफा	४६	५२	२४	५३	शु	२६	४१	कि	०७	०१	३०	४८	६	०८	१८	२७	२७	२१	१२	कन्या
२२	२	गु	३९	२५	२१	५५	ह	५३	२५	२७	३१	शु	२७	१९	वा	०८	५१	३०	४४	६	०९	१८	२६	२८	३०	१३	कन्या
२३	३	शु	४५	०९	२४	१३	चि	६०	०	-	-	ब्र	२८	१०	तै	११	०२	३०	३९	६	०९	१८	२५	२९	र.१	१४	तु.१६।५६
२४	४	श	५१	१८	२६	५१	चि	००	३५	६	२४	ऐं	२९	०७	व	१३	२६	३०	३५	६	१०	१८	२४	३०	२	१५	तुला
२५	५	र	५७	३१	२९	१०	स्वा	०८	०६	९	२४	वै	३०	०४	ब	१५	५६	३०	३१	६	१०	१८	२३	३१	३	१६	वृ.२९।४०
२६	६	चं	६०	०	-	-	वि	१५	३३	१२	२४	वि	-	-	कौ	१८	२२	३०	२७	६	११	१८	२१	आ.१	४	१७	वृश्चिक
२७	६	मं	०३	१९	७	३१	अनु	२२	३०	१५	११	वि	६	५४	तै	७	३१	३०	२२	६	११	१८	२०	२	५	१८	वृश्चिक
२८	७	बु	०८	१५	९	३०	ज्ये	२८	२९	१७	३५	प्री	७	२८	व	९	३०	३०	१८	६	१२	१८	१९	३	६	१९	ध.१७।३५
२९	८	गु	११	५२	१०	५७	मूल	३३	०४	१९	२६	आ	७	३९	ब	१०	५७	३०	१४	६	१२	१८	१८	४	७	२०	धनु
३०	९	शु	१३	४९	११	४४	पूषा	३५	५६	२०	३५	सौ	७	१९	कौ	११	४४	३०	१०	६	१२	१८	१७	५	८	२१	म.२६।४५
३१	१०	श	१३	५१	११	४५	उषा	३६	५४	२०	५९	शो	६/४	[illegible]	ग	११	४५	३०	०६	६	१३	१८	१५	६	९	२२	मकर
आ.१	११	र	११	५४	१०	५९	श्र	३५	५६	२०	३६	सु	२६	४१	वि	१०	५९	३०	०१	६	१३	१८	१४	७	१०	२३	मकर
२	१२	चं	०८	०३	९	२७	ध	३३	०९	१९	२९	धृ	२३	५६	बा	९	२७	२९	५७	६	१४	१८	१३	८	११	२४	कु.८।०८
३	१३	मं	०२	२९	७	१४	श	२८	४७	१७	४५	शू	२०	४२	तै	७	१४	२९	५३	६	१४	१८	१२	९	१२	२५	कुम्भ
०	१४	मं	५३	०२	२७	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
४	१५	बु	४७	३०	२५	१५	पूभा	२३	१०	१५	३१	गं	१७	०४	वि	१४	५३	२९	४८	६	१५	१८	११	१०	१३	२६	मी.१०।०७

वै. महा. २४/१४ से २८/१७ तक, A चन्द्रदर्शन निषिद्ध, चद्रास्त २०/१८
उफा. में सूर्य २५/०१, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. श्रृंगोन्नति, साम उपाकर्म,
गौरी ३, हरितालिका ३, वाराह ज., रमजान मु. ९,
भद्रा १३/२६ से २६/४१ तक, विनायक ४, श्रीगणेशजन्मोत्सव, कलंक ४, A
मिथुन में मंगल २१/३७, ऋषि पंचमी, मेला पाट प्रा. (का.),
कन्या में सूर्य ११/०७, सं. पुण्य १७/३१ तक, चित्रा में बुध ११/४७, श्रीकालूनिर्वाण दिवस,
सूर्य षष्ठी व्रत, C सायन तुला में सूर्य १५/२३, दक्षिणगोल में सूर्य,
भद्रा ९/३० से २२/१७ तक, राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ, दुर्गाष्टमी, B
E व्य.महा. ८/०७ से ११/३७ तक, पुनः महापात १५/४० से १९/३३ तक,
श्री चंद्र नवमी (उदासीन सम्प्रदाय), B मेला पाट (का.) समाप्त,
भद्रा २३/२८ से, तुला में बुध १६/०२,
भद्रा १०/५९ तक, पदमा ११ व्रत सबका, वामन १२, जलझूलनी मेला, C
पंचक ८/०८ से, सोम प्रदोष व्रत, श्री भुवनेश्वरी जयंती,
भद्रा २८/२७ से, अनन्त १४, आचार्य भिक्षुनिर्वाण दिन, मेला सोढल (पं.),
चतुर्दशी तिथि क्षय, D संन्यासियों का चातुर्मास समाप्त, E
भद्रा १४/५३ तक, सत्यव्रत, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, महालय प्रारम्भ, D

भाद्रपद शुक्ल ८ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६४६ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है) भाद्रपद शु.१५ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५६५२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	८	२	५	७	३	४	१०	४
२	६	१	२६	१८	२४	८	११	११
४१	६	४२	५६	४६	५६	११	४९	४९
५८	२२	१२	४१	५६	१९	२	३९	३९
५८	७५१	३०	७६	७	२४	७	३	३
३७	७	६	२३	२५	१३	१०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

गु. ७ | श. के. ५ | ८ | शु. ४ | सू. बु. ६ | मं. ३ | प्लू. चं. ९ | १२ | ने. १० | २ | ह.रा.११ | १

मंगल के मिथुन राशि में प्रवेश से मेघ प्रबल होते हैं तथा सब प्रकार की लाल वस्तुओं के भावों में तेजी होती है। "मिथुने च यदा भौमः मेघश्च प्रबलो भवेत्। आरक्तंसर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवंति ते॥" बुध दशमी के दिन तुला राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पृथ्वी पर कलह, क्लेश, युद्ध व अशांति का वातावरण बनेगा तथा वर्षा होगी। "यदा च तुलराशिस्थोनिशाकरसुतस्तदा। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता॥" षष्ठी सोमवार को सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पूर्व तथा उत्तर के देशों में कष्ट तथा बालकों को पीड़ा होती है। दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय व अशांति का वातावरण बनेगा एवं पश्चिम के देशों में सुभिक्ष, शांति व सुख होता है। "ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देश भङ्गं विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि॥"

बु. ७ | सू. ६ | श. के. ५ | गु. ८ | शु. ४ | मं. ३ | प्लू. ९ | १२ | ने. १० | २ | रा. चं. ह. ११ | १

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	१०	२	६	७	३	४	१०	४
८	२७	४	४	११	२७	८	११	११
३४	९	३८	१०	३३	४५	५३	३०	३०
४	५६	१८	१०	२६	४७	३१	३५	३५
५८	८११	२८	६५	८	३३	६	३	३
४८	२४	१५	४७	१३	३१	५७	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

आकाश लक्षण :- सूर्य नीरा नाड़ी एवं शुक्र अमृता में तथा सूर्य के आगे गुरु वायु नाड़ी में स्थित होने से तेज वायु के साथ व्यापक वर्षा होगी। मंगल एवं बुध दहना नाड़ी में स्थित है इससे कुछ स्थानों में वर्षा में कमी होगी। कहीं कहीं खण्डवृष्टि होगी। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गोवा, कर्नाटक, उड़ीसा, बिहार, आसाम, छत्तीसगढ़ हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, मध्यप्रदेश के अधिकांश भागों में पर्याप्त वर्षा होगी।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
आश्विन कृष्ण पक्ष: १४

ता. २७ सित. से ११ अक्टूबर सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १९ आश्विन तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदृतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि.	तारीखें मु.	तारीखें अं.	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
५	१	गु	३८	४८	२१	४७	उभा	१६	४१	१२	५६	वृ	१३	०९	बा	११	३२	२९	४४	६	१५	१८	०९	११	१४	२७	मीन	हस्त में सूर्य १६/३३, प्रतिपदा का श्राद्ध.
६	२	शु	२९	५१	१८	१३	रे	०९	४६	१०	११	ध्रु	९/२१	०६/०२	तै	८	०	२९	४०	६	१६	१८	०८	१२	१५	२८	मे.१०/११	भद्रा २८/२७ से, पंचक १०/११ तक, स्वाती में बुध १३/३१, द्वितीया का श्राद्ध.
७	३	श	२१	०४	१४	४२	अ	०२/५६	५२/२२	७/२८	२५/५०	ह	२५	०६	वि	१४	४२	२९	३६	६	१७	१८	०७	१३	१६	२९	मेष	भद्रा १४/४२ तक, मघा सिंह में शुक्र २४/२५, तृतीया-चतुर्थी का श्राद्ध. A
८	४	र	१२	५१	११	२५	कृ	५०	४३	२६	३५	ब	२१	२५	बा	११	२५	२९	३२	६	१७	१८	०६	१४	१७	३०	वृ.१०/१४	आर्द्रा में मंगल १४/५८, पंचमी का श्राद्ध. A चन्द्रोदय १९/४६.
९	५	चं	०५	३३	८	३१	रो	४६	१२	२४	४६	सि	१८	०५	तै	८	३१	२९	२७	६	१८	१८	०५	१५	१८	अ.१	वृष	भद्रा ३०/०६ से, षष्ठी का श्राद्ध, अक्टूबर मा. १० दि. ३१.
०	६	चं	५९	३०	३०	०६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	षष्ठी तिथि क्षय, B श्री लाल बहादुर शास्त्री जयंती.
१०	७	मं	५४	५५	२८	१६	मृ	४३	०६	२३	३३	व्या	१५	११	वि	१७	०६	२९	२३	६	१८	१८	०३	१६	१९	२	मि.१२/०५	भद्रा १७/०५ तक, सप्तमी का श्राद्ध. श्री महात्मा गांधी जयंती, B
११	८	बु	५१	५७	२७	०६	आ	४१	३५	२२	५७	व	१२	४८	बा	१५	३६	२९	१९	६	१९	१८	०२	१७	२०	३	मिथुन	अष्टमी का श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त,
१२	९	गु	५०	३९	२६	३५	पुन	४१	४२	२३	००	प	१०	५६	तै	१४	४५	२९	१४	६	१९	१८	०१	१८	२१	४	क.१६/५५	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, शहादत ए हजरत अली.
१३	१०	शु	५०	५८	२६	४३	पु	४३	२४	२३	४१	शि	९	३५	व	१४	३४	२९	१०	६	२०	१८	००	१९	२२	५	कर्क	भद्रा १४/३४ से २६/४३ तक, दशमी का श्राद्ध.
१४	११	श	५२	४४	२७	२६	आश्ले	४६	३२	२४	५७	सि	८	४४	ब	१५	००	२९	०६	६	२०	१७	५९	२०	२३	६	सिं.२४/५७	एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा ११ व्रत स्मार्त-वैष्णवों का, C १७/२१ तक.
१५	१२	र	५५	४७	२८	४०	मघा	५०	५५	२६	४३	सा	८	११	कौ	१५	५९	२९	०२	६	२१	१७	५८	२१	२४	७	सिंह	द्वादशी का श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध, इन्दिरा ११ व्रत निम्बार्कों का.
१६	१३	चं	५९	५२	३०	१८	पूफा	५६	१८	२८	५३	शु	८	१७	गं	१७	२६	२८	५८	६	२१	१७	५७	२२	२५	८	सिंह	भद्रा ३०/१८ से, त्रयोदशी का श्राद्ध, सोम प्रदोष व्रत, वै महापात १३/१७ से C
१७	१४	मं	६०	००	-	-	उफा	६०	०	-	-	शु	८	३३	व	६	१८	२८	५३	६	२२	१७	५५	२३	२६	९	क.११/२८	भद्रा १९/१५ तक, जल-शस्त्र-अग्नि-विषादि से मृतकों का श्राद्ध.
१८	१४	बु	०४	४७	८	१७	उफा	०२	३०	७	२२	ब्रा	९	०३	श	८	१७	२८	४९	६	२२	१७	५४	२४	२७	१०	कन्या	चतुर्दशी-अमा. का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, चित्रा में सूर्य २९/३४. D
१९	३०	गु	१०	११	१०	३१	ह	०९	१७	१०	०६	ऐं	९	४५	ना	१०	३१	२८	४५	६	२३	१७	५३	२५	२८	११	तु. २३/३२	मातामह श्राद्ध, महालय समाप्त, शब-ए-क़द्र. D गजच्छायापर्व.

आश्विन कृष्ण ८ बुधे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६५९ (दोनो कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) आश्विन कृष्ण ३० गुरौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६६७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	२	२	६	७	४	४	१०	४
१५	१०	७	१०	२०	२	९	११	११
२६	५	४८	५८	३३	७	४१	८	८
२२	४७	५९	२५	३१	३६	२०	११	११
५९	८१४	२५	४६	९	४२	६	३	३
३	२६	४१	२३	४	९	४०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

बु. ७ | के.शु.श. ५ | ४ | गु. ८ | सू. ६ | चं. मं. ३ | प्लू. ९ | १२ | ने. १० | ११ | रा. ह. | १ | २

तृतीया शनिवार को शुक्र मघा नक्षत्र सिंह राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सब प्रकार की लाल वस्तुएं, सुवर्ण, सब पशु तथा सब प्रकार के धान्य महंगे होंगे तथा वर्षा नहीं होगी। **''दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेमरक्तं चतुष्पदः। धान्यानि च महर्घाणि नाशं याति च वारिदः॥''** आर्द्रा नक्षत्र में मंगल के संचार से तिल एवं भैंसों का नाश होता है। इस मास में पांच गुरुवार एवं पांच ही शुक्रवार है। इसके प्रभाववश सामान्यतया लोगों की वृद्धि, सुख एवं सुभिक्ष होता है किन्तु पश्चिम के देशों में विग्रह, अशांति एवं युद्ध का वातावरण बनता है **''यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते॥''** तृतीया के दिन शनिवार होने से कहीं अग्निकांड से हानि होगी अथवा धान्यों के भावों में वृद्धि होगी। **''आश्विने ही तृतीयायां यदि भौम शनैश्चरौ। तदा त्वग्निभयं विद्यादथवान्न महर्घता॥''**

बु. ७ | के.शु.श. ५ | ४ | गु. ८ | सू. चं. ६ | मं. ३ | प्लू. ९ | १२ | ने. १० | ११ | रा. ह. | १ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
५	५	२	६	७	४	४	१०	४
२३	२१	११	१५	२१	८	१०	१०	१०
१९	२	४	१	४९	१२	३३	४२	४२
४९	४६	११	५४	१५	१८	१४	५४	५४
५९	७।१४	२२	४	९	४९	६	३	३
२१	३१	२८	४६	५८	३५	१५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :- सूर्य सौम्या नाड़ी में, मंगल भी सौम्या में, शुक्र शनि अमृता नाड़ी में स्थित है तथा बुध वायु नाड़ी में होकर सूर्य के आगे स्थित है अत: तेज वायु के साथ कुछ स्थानों में खण्ड वृष्टि होगी एवं कुछ भागों में बूंदा-बांदी होगी। कुछ भागों में तेज बादल चाल के साथ बूंदा-बांदी होगी। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, उत्तरांचल में ऋतु परिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर होंगे।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
आश्विन शुक्ल पक्ष: १५

ता. १२ से २६ अक्टूबर सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति २० आश्विन से ४ कार्तिक तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरदऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि. आश्विन	मु. रमजान	अं. अक्टूबर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२०	१	शु	१६	११	१२	५५	चि	१६	३१	१३	०	वै	१०	३५	ब	१२	५५	२८	४१	६	२४	१७	५२	२६	२९	१२	तुला	बुध वक्री ९/३०, शारदीय नवरात्रारम्भ, घटस्थापन (मध्यान्ह में), A
२१	२	श	२२	३४	१५	५६	स्वा	२४	०	१६	०	वि	११	३०	कौ	१५	२६	२८	३७	६	२४	१७	५१	२७	३०	१३	तुला	चंद्रदर्शन मु. ४५, उ. श्रृंगो., A अग्रसेन जयंती, जमतुलविदा
२२	३	र	२८	५२	१७	५८	वि	३१	२९	१९	०१	प्री	१२	२६	ग	१७	५८	२८	३२	६	२५	१७	५०	२८	श.१	१४	वृ.१२।१६	शब्वाल मु. १०, ईदुलफितर, D शरद् पूर्णिमा, महापात १६/१८ से २०/३१ तक,
२३	४	चं	३४	५४	२०	२३	अनु	३८	४४	२१	५५	आ	१३	१८	व	०७	१२	२८	२८	६	२५	१७	४९	२९	२	१५	वृश्चिक	भद्रा ७/१२ से २०/२३ तक, विनायक ४,
२४	५	मं	४०	२२	२२	३५	ज्ये	४५	२४	२४	३६	सौ	१४	०२	ब	०९	३१	२८	२४	६	२६	१७	४८	३०	३	१६	ध.२४।३६	पू.फा. में शुक्र २९/०५, उपाङ्गललिता पंचमी, B सरस्वती आवाहन,
२५	६	बु	४४	५२	२४	२४	मूल	५१	०७	२६	५४	शो	१४	३०	कौ	११	३३	२८	२०	६	२७	१७	४७	का.१	४	१७	धनु	तुला में सूर्य २३/०५, मु. ३०, संक्रांति पुण्य मध्यान्ह के बाद, बुधास्त पश्चिम में २२/१४, B
२६	७	गु	४८	०१	२५	४०	पूषा	५५	३०	२८	३९	अ	१४	३७	ग	१३	०६	२८	१६	६	२७	१७	४६	२	५	१८	धनु	भद्रा २५/४० से, कालरात्रि ७, सरस्वती पूजन, आयंबिल ओली प्रा. (जैन),
२७	८	शु	४९	२८	२६	१५	उषा	५८	१३	२९	४५	सु	१४	१४	वि	१४	०३	२८	१२	६	२८	१७	४५	३	६	१९	म.११।००	भद्रा १४/०२ तक, श्री दुर्गा महाष्टमी, सरस्वती बलिदान,
२८	९	श	४९	०१	२६	०५	श्र	५९	०३	३०	०६	धृ	१३	१८	बा	१४	१६	२८	०८	६	२८	१७	४४	४	७	२०	मकर	महानवमी, सरस्वती विसर्जन, नवरात्र समाप्त, C व्य.महा. ६/४८ से १०/४४ तक,
२९	१०	र	४६	३१	२५	०६	ध	५७	५३	२९	३९	शू	११	४५	तै	१३	४१	२८	०४	६	२९	१७	४३	५	८	२१	कु.१७।५८	पंचक १७/५८ से, विजयादशमी (दशहरा), आयुध पूजा, अपराजिता पूजा,
३०	११	चं	४२	०३	२३	१९	शत	५४	४८	२८	२५	गं	९	३३	व	१२	१८	२७	५९	६	३०	१७	४२	६	९	२२	कुम्भ	भद्रा १२/१९ से २३/१९ तक, पापांकुशा ११ व्रत स्मा.-वैष्णवों का, भरत मिलाप C
का.१	१२	मं	३५	४७	२०	५०	पूभा	४१	५९	२६	३०	वृ	६ २७	४४ २२	ब	१०	१९	२७	५५	६	३०	१७	४१	७	१०	२३	मी.२१।०२	पापांकुशा ११ व्रत निम्बार्कों का, सायन वृश्चि. में सूर्य २४/४७, हेमन्त ऋतु प्रा.,
२	१३	बु	२८	०२	१७	४४	उभा	४३	४६	२४	०१	व्या	२३	३२	कौ	१७	४४	२७	५१	६	३१	१७	४०	८	११	२४	मीन	स्वाती में सूर्य १६/०३, प्रदोष व्रत,
३	१४	गु	१९	०८	१४	११	रे	३६	३२	२१	०९	ह	१९	२२	व	१४	११	२७	४७	६	३२	१७	३९	९	१२	२५	मे.२१।०९	भद्रा १४/११ से २४/१७ तक, पंचक २१/०९ तक, सत्यव्रत, कोजागर व्रत, D
४	१५	शु	०९	३२	१०	२२	अश्वि	२८	४५	१८	०३	व	१५	०	ब	१०	२२	२७	४३	६	३२	१७	३८	१०	१३	२६	मेष	महर्षि वाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नान प्रा., आयंबिल ओली समाप्त (जैन),

आश्विन शुक्ल ८ शुक्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६७५ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	८	२	६	७	४	४	१०	४
१	२७	१३	११	२३	१५	११	१०	१०
१५	६	५०	५८	११	९	२१	१७	१७
२९	३३	३७	२०	४१	१४	३३	२७	२७
५९	७६५	१८	५९	१०	५५	५	३	३
३५	१५	३३	१२	४५	६	४६	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गु. ८
६
प्लू. चं. ९
शु. श. के. ५
सू. बु. ७
४
ने. १०
१
हे. रा. ११
मं. ३
१२
२

षष्ठी बुधवार के दिन सूर्य तुला राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप उत्तर तथा पश्चिम के देशों में पीड़ा होगी, पूर्व के देशों में युद्ध आदि का भय एवं अशांति का वातवरण बनेगा तथा दक्षिण के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। "वायव्ये च यदादृष्टि: सर्वसौख्यसमन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत्॥" संक्रांति ३० मुहूर्त्ती होने से वर्षा मध्यम, धान्य साधारण, शासक व लोगों में सुख समान एवं धान्य आदि तथा रसादि पदार्थों का भाव अनुमान के अनुसार सामान्य रहता है। "सुभिक्षमन्नं च रसांश्च पूर्णास्तृणां सुखण्डा समुद्भवं बहु आनन्द पूर्णां च जनं करोति।" संक्रांति से भाव समान रहने का संकेत मिलता है। अत: पक्षारम्भ में वस्तुओं के भावों में तेजी होगी तथा संक्रांति के उपरान्त वस्तुओं के भावों में कमी होने का संकेत है।

आश्विन शुक्ल १५ शुक्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६८२

गु. ८
६
प्लू. ९
शु. श. के. ५
सू. बु. ७
४
ने. १०
चं. १
रा. हे. ११
मं. ३
१२
२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	०	२	६	७	४	४	१०	४
८	५	१५	३	२४	२१	१२	९	९
१३	११	४८	४७	२८	४६	०	५५	५५
१५	२१	५१	११	५८	४४	२७	१२	१२
५९	७२०	१४	६६	११	५८	५	३	३
४८	२	३६	०	२२	५३	१७	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :- सूर्य के साथ बुध स्थित है एवं सूर्य के आगे गुरु स्थित है। अत: तेज वायु के प्रवाह के साथ कुछ स्थानों पर छिट-पुट बूंदा-बांदी होगी। ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे तथा शीत में वृद्धि होगी। रात्रि के तापमान में गिरावट होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में छिटपुट बूंदा-बांदी होगी तथा शीत बढ़ेगी। मैदानी भागों में तेज हवा या आंधी की सम्भावना है।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
कार्तिक कृष्ण पक्ष: १६

ता. २७ अक्टू. से ९ नव. सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ कार्तिक तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु।

																			दिन मान		स्टैं. टा. सूर्योदय		स्टैं. टा. सूर्यास्त		तारीखें हि.	मु.	अं.	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा.	
रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट		घटी	पल	घंटा	मिनट	घंटा	मिनट	कार्तिक	शव्वाल	अक्टू.	रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
०	१	शु	५९	४७	३०	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा तिथि क्षय,
५	२	श	५०	१०	२६	३७	भ	२७	५५	१४	४५	सि	१०/३०	३५/१८	तै	१६	३०		२७	४०	६	३३	१७	३७	११	१४	२७	वृ.२०१०	
६	३	र	४१	११	२३	०५	कृ	१३	३३	११	५९	व	२६	१६	व	०२	१६		२७	३६	६	३४	१७	३६	१२	१५	२८	वृष	भद्रा १२/४८ से २३/०५ तक,
७	४	चं	३३	३६	२०	०१	रो	०७	०५	९	२५	प	२२	३९	ब	०९	२९		२७	३२	६	३५	१७	३५	१३	१६	२९	मि.२०।१९	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०/१७, करक - करवा चौथ,
८	५	मं	२७	२७	१७	३४	मृग	०९/५८	५९/३७	७/३०	२३/०२	शि	११	३२	कौ	१७	३४		२७	२८	६	३५	१७	३५	१४	१७	३०	मिथुन	वक्री कन्या में बुध १७/०४, उ.फा. में शुक्र २७/१२, बुध पूर्वोदय १६/४४,
९	६	बु	२३	०८	१५	५१	पुन	५७	१०	२१	२८	सि	१७	०१	व	१५	५१		२७	२४	६	३६	१७	३४	१५	१८	३१	क.२३।३२	भद्रा १५/५१ से २७/१७ तक, नेप्च्यून मार्गी, सरदार पटेल जयंती,
१०	७	गु	२०	५०	१४	५७	पु	५७	४२	२१	४२	सा	१५	०१	व	१४	५७		२७	२०	६	३७	१७	३३	१६	१९	न.१	कर्क	बुधमार्गी २८/२८, नवम्बर मा. ११ दि. ३०, अहोई अष्टमी,
११	८	शु	२०	३६	१४	५२	आश्ले	६०	०	-	-	शु	१३	५६	कौ	१४	५२		२७	१६	६	३७	१७	३२	१७	२०	२	कर्क	वै. महापात २६/२८ से,
१२	९	श	२२	१७	१५	३३	आश्ले	०	०१	६	४२	शु	१३	११	ग	१५	३३		२७	१३	६	३८	१७	३१	१८	२१	३	सिं.६।४२	भद्रा २८/०१ से, कन्या में शुक्र ९/११, वै. महापात ७/०१ तक,
१३	१०	र	२५	३८	१६	५४	मघा	०४	२०	८	२३	ब्र	१३	१२	वि	१६	५४		२७	०९	६	३९	१७	३१	१९	२२	४	सिंह	भद्रा १६/५४ तक, तुला में बुध १७/५२,
१४	११	चं	३०	१७	१८	४६	पूफा	०१	५३	१०	३७	ऐं	१३	३०	बा	१८	४६		२७	०५	६	४०	१७	३०	२०	२३	५	क.१७।१५	रमा ११ व्रत सबका,
१५	१२	मं	३५	५०	२१	०१	उफा	१६	२५	१३	१४	वै	१४	०५	कौ	०७	५१		२७	०२	६	४०	१७	२९	२१	२४	६	कन्या	विशाखा में सूर्य २४/१४, गोवत्स १२,
१६	१३	बु	४१	५६	२३	२८	ह	२३	३३	१६	०६	वि	१४	५२	ग	१०	१३		२६	५८	६	४१	१७	२९	२२	२५	७	तु.२९।३५	भद्रा २३/२८ से, प्रदोष व्रत, धनतेरस, यमदीपदान, श्री धनवन्तरी जयंती,
१७	१४	गु	४८	१६	२६	०	चि	३०	५८	१९	०५	प्री	१५	४४	वि	१२	४४		२६	५५	६	४२	१७	२८	२३	२६	८	तुला	भद्रा १२/४४ तक, नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमान जयंती,
१८	३०	शु	५४	३६	२८	३३	स्वा	३८	२७	२२	०५	आ	१६	३८	च	१५	१७		२६	५१	६	४३	१७	२७	२४	२७	९	तुला	श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, कमला जयंती, श्री महावीर निर्वाण (जैन),

कार्तिक कृष्ण ८ शुक्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६८९ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) कार्तिक कृष्ण ३० शुक्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५६९६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	३	२	५	७	४	४	१०	४
१५	१६	१७	२९	२५	२८	१२	९	९
१२	३३	१७	२३	५०	४८	३५	३२	३२
३६	४१	३७	२५	१०	३०	५०	५६	५६
६०	६६८	१०	६	११	६१	४	३	३
३	२८	१	२	५४	५७	४५	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
स्वाती ३	पुष्य ४	आर्द्रा ४	चित्रा २	ज्ये ३	उफा १	मघा ४	शत १	मघा ३

गु. ८ | बु. ६ | शु. प्र.के. ५ | प्लू. ९ | सू. ७ | चं. ४ | ने. १० | १ | रा. ह. ११ | मं. ३ | १२ | २

वक्र गति द्वारा बुध पुन: कन्या राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप छ: मास तक सुवर्ण और शक्कर से लाभ प्राप्त होता है इसके पश्चात यह सस्ते हो जाते है। "**कन्या राशि गते ज्ञे हि कांचनं शुद्धशर्करा। मासे षष्ठे ददेल्लाभं पुन: शस्तो भविष्यति॥**" शुक्र के कन्या राशि में प्रवेश से कृषि की भारी हानि होती है तथा सब धान्य महंगे होते है। विशेषकर चावल महंगा होता है। "**कन्या राशि गते शुक्रे सर्वसस्यं विनश्यति। तत्र धान्यमहर्घाणि शालिश्चैव विशेषत:॥**" मार्गी होकर बुध पुन: तुला राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप पृथ्वी पर क्षेम व आरोग्यता रहेगी और कहीं-कहीं विरोध भी होगा। "**यदा दैत्य गुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्त्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्॥**" इस मास में पांच शनिवार हैं इसके प्रभाव से प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्पादि की सम्भावना, अन्न के भाव तेज होते हैं, ईशान देश का छत्र भंग तथा अग्नि भय होता है। "**शनेश्च पंचकं दष्ट्वा पाताले कंपते फणी। ईशानदेशभंगश्च वन्हिदाहो महर्घता॥**"

गु. ८ | शु. ६ | श. के. ५ | प्लू. ९ | सू. चं. बु. ७ | ४ | ने. १० | १ | रा. ह. ११ | मं. ३ | १२ | २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
६	६	२	६	७	५	४	१०	४
२२	११	१८	३	२७	६	१३	९	९
१३	४८	१२	२२	१४	९	७	१०	१०
४१	२७	२०	५८	५८	४१	१७	४१	४१
६०	७११	४	६३	१२	६४	४	३	३
१७	२०	४६	५७	२३	२२	९	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा १	स्वाती २	आर्द्रा ४	चित्रा ४	ज्ये ४	उफा ३	मघा ४	शत १	मघा ३

आकाश लक्षण :- सूर्य के आगे वृहस्पति एवं पीछे शुक्र संचार कर रहा है। अत: तेज बादल चाल के साथ छिट-पुट बूंदा-बांदी की सम्भावना है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, आसाम, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, जम्मू काश्मीर में शीत में वृद्धि होगी। कुछ स्थानों में वायु के साथ तेज बादल चाल व बूंदा-बांदी होगी।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
कार्तिक शुक्ल पक्ष: १७

ता. १० से २४ नवम्बर सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १९ कार्तिक से ३ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. कार्तिक	मु. जिल्काद	अं. नवम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.
१९	१	श	६०	०	-	-	वि	४५	४७	२५	०२	सौ	१७	३०	कि	१७	४८	२६	४८	६	४३	१७	२७	२५	२८	१०	वृ.१८।१९
२०	१	र	०	४२	७	०२	अनु	५२	५०	२७	५२	शो	१८	१७	ब	७	०२	२६	४४	६	४४	१७	२६	२६	२९	११	वृश्चिक
२१	२	चं	६	३२	९	२२	ज्ये	५९	२६	३०	३२	अ	१८	५७	कौ	९	२२	२६	४१	६	४५	१७	२५	२७	जि१	१२	ध. ३०।३२
२२	३	मं	११	५१	११	३०	मूल	६०	०	-	-	सु	११	२६	ग	११	३०	२६	३८	६	४६	१७	२५	२८	२	१३	धनु
२३	४	बु	१६	२७	१३	२१	मूल	५	२२	८	५६	धृ	११	४१	वि	१३	२१	२६	३४	६	४७	१७	२४	२९	३	१४	धनु
२४	५	गु	२०	०४	१४	४९	पूषा	१०	२७	१०	५८	शू	११	३७	वा	१४	४९	२६	३१	६	४७	१७	२४	३०	४	१५	म. १७।२५
२५	६	शु	२२	२६	१५	४७	उषा	१४	२२	१२	३३	गं	११	०९	तै	१५	४७	२६	२८	६	४८	१७	२३	मा.१	५	१६	मकर
२६	७	श	२३	१७	१६	०८	श्र	१६	५१	१३	३३	वृ	१८	१३	व	१६	०८	२६	२५	६	४९	१७	२३	२	६	१७	कु.२५।४९
२७	८	र	२२	२१	१५	४६	ध	१७	३८	१३	५३	ध्रु	१६	४३	ब	१५	४६	२६	२२	६	५०	१७	२३	३	७	१८	कुम्भ
२८	९	चं	१९	३४	१४	४०	शत	१६	३६	१३	२९	व्या	१४	३८	कौ	१४	४०	२६	१९	६	५१	१७	२२	४	८	१९	मी. ३०।४३
२९	१०	मं	१४	५६	१२	५०	पूभा	१३	४५	१२	२२	ह	११	५७	ग	१२	५०	२६	१६	६	५१	१७	२२	५	९	२०	मीन
३०	११	बु	८	३५	१०	११	उभा	९	१३	१०	३३	सि	८ २९	४३ ०१	वि	१०	११	२६	१३	६	५२	१७	२२	६	१०	२१	मीन
मार्ग १	१२	गु	०	४८	७	१२	रे	३ ५६	१४ १२	८ २९	११ २२	व्या	२४	५६	वा	७	१२	२६	१०	६	५३	१७	२१	७	११	२२	मे. ८।११
०	१३	गु	५१	५७	२७	४०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
२	१४	शु	४२	२६	२३	५२	ध	४८	३३	२६	११	व	२०	३७	ग	१३	४८	२६	०७	६	५४	१७	२१	८	१२	२३	मेष
३	१५	श	३२	४३	२०	०	कृ	४०	४५	२३	१३	प	१६	१३	वि	९	५६	२६	०५	६	५५	१७	२१	९	१३	२४	वृ. ७।३२

अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलि पूजा, विश्वकर्मा पूजा, A व्य. महा. ६/४९ तक,
स्वाती में बुध २६/३०, चन्द्रदर्शन मु. ३०, उ. श्रृंगो., यम २, भैया दूज, चित्रगुप्त पूजा,
हस्त में शुक्र १८/५२, पू. फा. में शनि ८/४२, जिल्कादि मु. ११.
भद्रा २४/२९ से, E मेला कपाल मोचन (हरि.), (विवाह मु. रोहिणी में), चित्रा में शुक्र १८/२९, F
भद्रा १३/२१ तक, विनायक ४, श्री जवाहर लाल नेहरू जयंती, बाल दिवस,
मंगल वक्री १३/४८, श्री ज्ञान पंचमी, पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी,
वृश्चिक में सूर्य २२/५२, मु. ३०, सं. पुण्य मध्यान्ह के बाद, सूर्य षष्ठी, व्य. महापात २५/४० से,
भद्रा १६/०८ से २८/०२ तक, पंचक २५/४९ से, अष्टान्हिक प्रा. (जैन), A
गोपाष्टमी, D भीष्म पंचक समा., गुरुतेग बहादुर बलिदान दिवस, E
अनुराधा में सूर्य ३०/११, अक्षय ९, कूष्माण्ड ९, F अष्टान्हिक समाप्त (जैन),
भद्रा २३/३९ से, भीष्म पंचक व्रतारम्भ, B मूल धनु में गुरु २९/०४, (विवाह मु. रेवती में),
भद्रा १०/१९ तक, विशाखा में बुध १०/४९, हरिबोधिनी ११ व्रत सबका, तुलसी विवाह, B
पंचक ८/११ तक, प्रदोष व्रत, सायन धनु में सूर्य २२/२२,
त्रयोदशी तिथि क्षय, C मेला पुष्करराज-गढ़गंगा रेणुकातीर्थ (हि.प्र.), कार्तिक स्नान समाप्त, D
भद्रा २३/५२ से, बुध पूर्वास्त ३०/०८, बैकुण्ठ १४, विद्यापति ज., महापात १२/०३ से १७/२४ तक,
भद्रा ९/५६ तक, सत्यव्रत, श्रीगुरुनानक ज., निम्बार्काचार्य ज., कार्तिक पूर्णिमा, C

कार्तिक शुक्ल ८ रवौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७०५ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) कार्तिक शुक्ल १५ शनौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	१०	२	६	७	५	४	१०	४
१	२	१८	१५	२९	१५	१३	८	८
१७	१	२५	८	८	५९	४१	४२	४२
१२	४०	५६	२३	२७	७	२१	४	४
६०	८०४	२	८९	१२	६६	३	३	३
३०	४९	४१	२८	५२	४७	११	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
विशा ४	धनि ३	आर्द्रा ४	स्वाती ३	ज्ये ४	हस्त २	पूफा १	शत १	मघा ३

कुण्डली (कार्तिक शुक्ल ८): प्लू. ९ | बु. ७ | ने. १० | शु. ६ | सू. गु. ८ | श. के. ५ | चं. रा. हृ. ११ | २ | १२ | ४ | १ | मं. ३
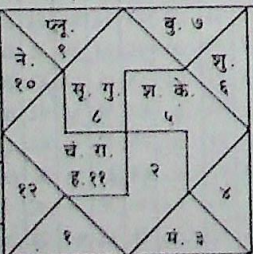
द्वितीया के दिन शनि पू. फाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप चना, मूंग, उड़द, यव आदि धान्यों की पर्याप्त उत्पत्ति होती है। "**पूर्वायां च यदा सौरिस्तदा चणकमुद्गका:। माषयवाष्टधान्यानामुत्पत्ति: स्याद्धरातले॥**" शुक्रवार षष्ठी के दिन सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्ष आदि का भय, उत्तर के देशों में युद्ध आदि का भय और पूर्व के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। "**नैर्ऋत्ये च यदादृष्टि भयक्तेसं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्॥**" वृहस्पति एकादशी के दिन धनु राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से वर्षाकाल में गेहूं महंगा होता है तथा तिल व गुड़ सस्ते हो जाते हैं। "**धनराशिस्थिते जीवे गोधूमादिमहर्घता। वर्षा कले भवेत्तत्र समर्घ च तिलं गुडम्॥**" सप्तमी के दिन शनिवार होने से धान्य का नाश होता है तथा श्वेतवस्तु तेज होती है एवं तीन मास में दोगुणा लाभ होता है। "**कार्तिके सप्तमी शुक्ला शनौधान्यार्थनाशिनी। श्वेतवस्तु महर्घ स्यात् त्रिमासि द्विगुणं फलम्॥**"

कुण्डली (कार्तिक शुक्ल १५): गु. प्लू. ९ | बु. ७ | ने. १० | शु. ६ | सू. ८ | के. श. ५ | रा. ह. ११ | २ | १२ | ४ | चं. १ | मं. ३
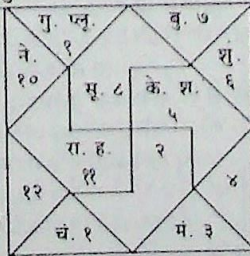
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	०	२	६	८	५	४	१०	४
७	२८	१७	२४	०	२२	१३	८	८
२०	४१	५७	१७	२६	४३	५९	२२	२२
३४	५८	१	१२	२३	१०	४६	५९	५९
६०	११८	७	९३	१३	६८	२	३	३
३८	१४	५०	१७	८	६	४३	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
अनु २	कृत्ति १	आर्द्रा ४	विशा २	मूल १	हस्त ४	पूफा १	शत १	मघा ३

आकाश लक्षण :- वायु के साथ छिट-पुट बूंदा-बांदी होगी। सूर्य के राशि परिवर्तन से गुरु के साथ आ जाने से कुछ स्थानों में हल्की वर्षा की सम्भावना है। दक्षिण भारत एवं पर्वतीय क्षेत्रों के कुछ स्थानों में बूंदा-बांदी या हल्की वर्षा की सम्भावना है। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, आसाम, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल में शीत में वृद्धि होगी।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष: १८

ता. २५ नव. से ९ दिस. सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से १८ मार्गशीर्ष तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्तऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैं. टा.) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त (स्टैं. टा.) घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. मार्गशीर्ष	मु. जिल्कादि	अं. नवम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
४	१	र	२३	१७	१६	१४	रो	३३	११	२०	१५	शि	११	५२	कौ	१६	१४	२६	०२	६	५५	१७	२०	१०	१४	२५	मि. ३०।५३	(विवाह मु. मृगशिर में)
५	२	चं	१४	३९	१२	४८	मृग	२६	४६	१७	३९	सि	७ २८	४५ ०१	ग	१२	४८	२६	०	६	५६	१७	२०	११	१५	२६	मिथुन	भद्रा २३/१५ से, (विवाह मु. मृगशिर में),
६	३	मं	७	१७	९	५२	आ	२१	३४	१५	३५	शु	२४	४७	वि	९	५२	२५	५७	६	५७	१७	२०	१२	१६	२७	मिथुन	भद्रा ९/५२ तक, वृश्चिक में बुध २१/२७, अंगार की श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०/१०
७	४	बु	१	३३	७	३५	पुन	१८	०७	१४	१३	शु	२२	१०	बा	७	३५	२५	५५	६	५८	१७	२०	१३	१७	२८	क. ८।२९	वै. महापात २४/०३ से २९/४४ तक,
०	५	बु	५७	५२	३०	०७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	पंचमी तिथि क्षय,
८	६	गु	५६	११	२९	३०	पुष्य	१६	४२	१३	४०	ब्र	२०	१३	ग	१७	४२	२५	५३	६	५९	१७	२०	१४	१८	२९	कर्क	भद्रा २९/३१ से, अनुराधा में बुध २४/३३,
९	७	शु	५६	५९	२९	४७	श्ले	१७	२६	१३	५८	ऐं	१८	५८	वि	१७	३२	२५	५०	६	५९	१७	२०	१५	१९	३०	सिं. १३।५८	भद्रा १७/३२ तक, तुला में शुक्र १४/१७, (विवाह मु. मघा में),
१०	८	श	५९	४०	३०	५२	मघा	२०	१५	१५	०६	वै	१८	२२	बा	१८	१४	२५	४८	७	०	१७	१९	१६	२०	दि.१	सिंह	काल भैरवाष्टमी, दिसम्बर मा. १२ दि. ३१,
११	९	र	६०	०	-	-	पूफा	२४	५५	१६	५९	वि	१८	२०	तै	१९	४१	२५	४६	७	०१	१७	१९	१७	२१	२	क. २३।३३	(विवाह मु. उ.फा. में),
१२	९	चं	४	०२	८	३९	उफा	२९	०२	११	२७	प्री	१८	४५	ग	८	३९	२५	४४	७	०२	१७	१९	१८	२२	३	कन्या	भद्रा २१/४३ से, ज्येष्ठा में सूर्य १०/३३, (विवाह मु. उ.फा.-हस्त में),
१३	१०	मं	९	३८	१०	५४	हस्त	३८	०६	२२	१७	आ	११	२८	वि	१०	५४	२५	४३	७	०२	१७	१९	१९	२३	४	कन्या	भद्रा १०/५४ तक, श्रीमहावीर दीक्षा दिन, (विवाह मु. हस्त में),
१४	११	बु	१५	५७	१३	२६	चि	४५	३७	२५	१८	सौ	२०	२१	बा	१३	२६	२५	४१	७	०३	१७	२०	२०	२४	५	तु. ११।४७	उत्पत्तिका ११ व्रत सबका,
१५	१२	गु	२२	३०	१६	०४	स्वा	५३	११	२८	२०	शो	२१	१५	तै	१६	०४	२५	३९	७	०४	१७	२०	२१	२५	६	तुला	स्वाती में शुक्र ८/०४, प्रदोष व्रत,
१६	१३	शु	२८	५३	१८	३८	स्वा	६०	००	-	-	अ	२२	०६	व	१८	३८	२५	३८	७	०५	१७	२०	२२	२६	७	वृ. २४।३३	भद्रा १८/३८ से, महापात १३/४८ से २१/१७ तक,
१७	१४	श	३४	४१	२१	०१	वि	०	२५	७	१६	सु	२२	४८	वि	७	५१	२५	३६	७	०५	१७	२०	२३	२७	८	वृश्चिक	भद्रा ७/५१ तक, गुरु वृद्धत्वारम्भ २६/२९, मेला पुरमण्डल देविका स्नान (का.), A
१८	३०	र	४०	१०	२३	१०	अनु	७	१२	९	५१	धृ	२३	११	च	१०	०८	२५	३५	७	०६	१७	२०	२४	२८	९	वृश्चिक	अमावस्या पुण्य,

A ज्येष्ठा में बुध १२/४६,

मार्गशीर्ष कृष्ण ८ शनौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७१८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) **मार्गशीर्ष कृष्ण ३० रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७२६**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	४	२	७	८	६	४	१०	४
१४	८	१६	५	१	०	१४	८	८
२५	१७	४४	१३	५९	४३	१६	०	०
३२	२०	१५	२७	११	५५	४०	४३	४३
६०	७२०	१३	९४	१३	६१	२	३	३
४९	१०	४५	२	२४	२४	०	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ
४	३	४	१	१	३	१	१	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्लू. गु. ९ | शु. ७ | ने. १० | सू. बु. ८ | श. चं. के. ५ | ६ | रा. ह. ११ | २ | १२ | ४ | १ | मं. ३

तृतीया मंगलवार को बुध वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से घृत-तैल मंहगे होते हैं और धान्यों की पर्याप्त उत्पत्ति सुभिक्ष होता है एवं लोग सुख युक्त होते हैं। **''बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृततैलमहर्घता। सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभं भवेत्॥''** सप्तमी शुक्रवार को शुक्र तुला राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से पृथ्वी पर शांति क्षेम, आरोग्यता रहती है तथा कहीं-कहीं विरोध भी होता है। **''यदा दैत्यगुरुश्चैव तुलाराशि प्रवर्त्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिद्विरोधकृत्॥''** इस मास में पांच रविवार होने से अशुभ फलों की वृद्धि दुर्भिक्ष, छत्र भंग तथा महाभय व अशांति होती है। **''यत्रमासे रवेर्वारा जायन्ते पंच संततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंग: स्यात्तदास्ते च महद्भयम्॥''** पंचमी तिथि का क्षय एवं नवमी तिथि की कृष्ण पक्ष में वृद्धि होने से पक्ष के पूर्वार्द्ध में भाव घटेंगे जबकि उत्तरार्द्ध में भावों में तेजी होगी।

प्लू. गु. ९ | शु. ७ | ने. १० | सू. चं. बु. ८ | श. के. ५ | ६ | रा. ह. ११ | २ | १२ | ४ | १ | मं. ३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
७	७	२	७	८	६	४	१०	४
२२	१४	१४	१७	३	१०	१४	७	७
३२	२५	३२	४५	४७	३	२९	३५	३५
३८	२०	५९	३३	९	२६	३६	१७	१७
६०	७२३	११	९४	१३	७०	१	३	३
५९	३९	३९	१	३७	३४	७	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
२	४	३	२	२	२	२	२	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :- गुरु के राशि परिवर्तन द्वारा सूर्य के आगे आने से तथा सूर्य के वायु नाड़ी में एवं मंगल के सौम्या नाड़ी में स्थित होने से शीत वायु के साथ वर्षा का भी योग है। हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, जम्मू व काश्मीर, छत्तीसगढ़, बिहार, आसाम, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में शीतलहर के साथ छिटपुट बूंदा-बांदी होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में शीतलहर के साथ हल्की वर्षा व हिमपात सम्भव है।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष: १९

ता. १० से २३ दिसम्बर सन् २००७ ई., राष्ट्रीय मिति १९ मार्गशीर्ष से २ पौष तक। दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. मार्गशीर्ष	मु. जिल्काद	अं. दिसम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
१९	१	चं	४४	५०	२५	०३	ज्ये	१३	२१	१२	२८	शू	२३	३८	कि	१२	०९	२५	३३	७	०७	१७	२०	२५	२९	१०	ध.१२।१८	
२०	२	मं	४८	४३	२६	३७	मू	१८	४९	१४	३९	गं	२३	४३	बा	१३	५२	२५	३२	७	०८	१७	२१	२६	३०	११	धनु	गुरु पश्चिम में अस्त २६/२९, चन्द्रदर्शन मु. ३० उ. श्रृंगोन्नति,
२१	३	बु	५१	४५	२७	५१	पूषा	२३	३१	१६	३३	वृ	२३	३३	तै	१५	१६	२५	३१	७	०८	१७	२१	२७	जि.१	१२	म. २२।५८	व्य. महापात २७/३७ से, जिल्हेज मु. १२,
२२	४	गु	५३	५१	२८	४१	उषा	२७	२१	१८	०५	ध्रु	२३	०६	व	१६	१९	२५	३०	७	०९	१७	२१	२८	२	१३	मकर	भद्रा १६/१९ से २८/४१ तक, **विनायक ४**, व्य. महापात १०/४१ तक,
२३	५	शु	५४	५०	२९	०६	श्र	३०	११	१९	१४	व्या	२२	२०	ब	१६	५६	२५	२९	७	१०	१७	२१	२९	३	१४	मकर	**नागपंचमी,**
२४	६	श	५४	३४	२९	०	ध	३१	५२	१९	५५	ह	२१	११	कौ	१७	०७	२५	२८	७	१०	१७	२२	३०	४	१५	कु. ७।३८	पंचक ७/३८ से, **चम्पा षष्ठी, स्कन्ध षष्ठी,**
२५	७	र	५२	५४	२८	२०	श	३२	१५	२०	०५	व	१९	३७	ग	१६	४४	२५	२८	७	११	१७	२२	पौ.१	५	१६	कुम्भ	भद्रा २८/२० से, मूल धनु में सूर्य १३/२७, मु. १५, सं. पुण्य, मूल धनु में बुध २४/३६,
२६	८	चं	४९	४५	२७	०६	पूभा	३१	१२	१९	४०	सि	१७	३५	वि	१५	४७	२५	२७	७	११	१७	२२	२	६	१७	मी. १३।५०	भद्रा १५/४६ तक, विशाखा में शुक्र १५/०९,
२७	९	मं	४५	०९	२५	१६	उभा	२८	४३	१८	४१	व्य	१५	०५	बा	१४	१५	२५	२७	७	१२	१७	२३	३	७	१८	मीन	
२८	१०	बु	३९	१०	२२	५३	रे	२४	५०	१७	०९	व	१२	०८	तै	१२	०८	२५	२६	७	१३	१७	२३	४	८	१९	मे. १७।०९	पंचक १७/०९ तक, शनि वक्री १९/११,
२९	११	गु	३२	०१	२०	०२	अश्वि	१९	४४	१५	०७	प	८/२९	४७/०५	व	९	३०	२५	२६	७	१३	१७	२४	५	९	२०	मेष	भद्रा ९/३० से २०/०२ तक, **मोक्षदा ११ व्रत सबका, श्री गीता जयंती, मौनी ११ (जैन),**
३०	१२	शु	२४	०२	१६	५०	भ	१३	४३	१२	४३	सि	२५	०९	बा	१६	५०	२५	२६	७	१४	१७	२४	६	१०	२१	वृ. १८।०४	**प्रदोष व्रत,** महापात १३/३८ से २०/११ तक, **इदुलजुहा,**
पौ.१	१३	श	१५	३२	१३	२७	कृ	७	०७	१०	०५	सा	२१	०७	तै	१३	२७	२५	२६	७	१४	१७	२५	७	११	२२	वृष	सायन मकर में सूर्य ११/४०, उत्तरायण, शिशिर ऋतु प्रा.,
२	१४	र	६	५८	१०	०२	रो	०/५३	२३/५८	७/२८	२४/५०	शु	१७	०६	व	१०	०२	२५	२६	७	१५	१७	२५	८	१२	२३	मि. १८।०५	भद्रा १०/०२ से २०/२१ तक, **सत्यव्रत, पिशाचमोचिनी १४, दत्तात्रेय जयंती, A**
०	१५	र	५८	४८	३०	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	पूर्णिमा तिथि क्षय, **A श्री षोडशी जयंती, श्री अन्नपूर्णा जयंती,**

मार्गशीर्ष शुक्ल ८ चन्द्रे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७३४ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है) मार्गशीर्ष शुक्ल १४ रवौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७४०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	१०	२	८	८	६	४	१०	४
०	२५	११	०	५	१९	१४	७	७
४०	१७	४२	१९	३६	३१	३५	९	९
४१	६	३८	१४	३०	१५	२८	५०	५०
६१	[illegible]	२३	१४	१३	७१	०	३	३
३	५	२	३७	४३	२८	१४	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ने. १०, ८, ह., रा. चं. ११, सू. प्लू., बु. गु. ९, ६, शु. ७, १२, मं. ३, श. के. ५, १, २, ४

सप्तमी रविवार को सूर्य धनुराशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में प्राकृतिक प्रकोप दुर्भिक्ष आदि का भय होगा, उत्तर के देशों में युद्ध एवं अशांति का वातावरण बनेगा एवं पूर्व के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होगा। "**नैर्ऋत्ये च यदा दृष्टि भयक्लेसं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्॥**" बुध राशि परिवर्तन कर सप्तमी के ही दिन धनु राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से मृग एवं हाथी वनचरों का नाश होता है तथा शासक एवं लोगों में परस्पर विरोध होता है। "**धने मीने बुधोयाति मारयति मृगान्गजान्। राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति॥**" पक्षारम्भ में चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती होने से भावों में समानता रहेगी। पक्षान्त में तिथि क्षय से वस्तुओं के भावों में वृद्धि होगी। संक्रांति १५ मुहूर्ती है इसके प्रभाव से धान्य तथा रस के भावों में तेजी का रुख रहेगा।

ह. रा. ११, ने. १०, सू. गु., बु. प्लू ९, ६, ८, शु. ७, १२, मं. ३, श. के. ५, १, चं. २, ४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	१	२	८	८	६	४	१०	४
६	२२	९	९	६	२६	१४	६	६
४७	८	२१	४९	५९	४१	३५	५०	५०
१५	५६	५३	१८	०	२४	११	४५	४५
६१	८१५	२३	९५	१३	७२	०	३	३
५	५७	४३	४०	४०	१	२६	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :- सूर्य वृहस्पति-बुध, प्लूटो सहित चतुर्ग्रही योग बना है एवं मंगल से दृष्ट है अत: शीत लहर चलेगी। कुछ भागों में हिमपात या तेज वर्षा से या आंधी तूफानादि से हानि भी संभव है। पर्वतीय क्षेत्रों में भारी वर्षा या हिमपात सम्भव है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल में तेज बादल-चाल एवं शीतलहर के साथ हल्की वर्षा होगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
पौष कृष्ण पक्षः २०

ता. २४ दिस. सन् २००७ ई. से ८ जन. सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १८ पौष तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिरऋतु।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें हि. पौष	मु. जिल्हिज	अं. दिसम्बर	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।
३	१	चं	५१	२४	२७	४१	आर्द्रा	४८	१८	२६	३४	शु	१३	१६	बा	१७	१४	२५	२६	७	१५	१७	२६	९	१३	२४	मिथुन	A २७/४७ तक, क्रिसमस डे,
४	२	मं	४५	१५	२५	२२	पुन	४३	५१	२४	४८	ब्र	९ ३०	४४ ३८	तै	१४	३१	२५	२६	७	१६	१७	२६	१०	१४	२५	क.१९।११	पूषा में बुध १०/१७, वृश्चिक में शुक्र २३/३७, वै. महा. २१/०० से, A
५	३	बु	४०	४४	२३	३४	पुष्य	४०	५९	२३	४०	वै	२८	०५	व	१२	२२	२५	२६	७	१६	१७	२७	११	१५	२६	कर्क	भद्रा १२/२२ से २३/३४ तक, वक्री धनि. ४ में राहु मघा २ में केतु १३/५३, B
६	४	गु	३८	०९	२२	३२	आश्ले	४०	०१	२३	१७	वि	२६	१०	ब	१०	५७	२५	२७	७	१६	१७	२७	१२	१६	२७	सिं.२३।१७	गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २१/०८, B जोड़ मेला (पंजाब),
७	५	शु	३७	३९	२२	२१	म	४१	०६	२३	४३	प्री	२४	५४	कौ	१०	२०	२५	२७	७	१७	१७	२८	१३	१७	२८	सिंह	अनुराधा में शुक्र १८/००,
८	६	श	३१	१६	२३	०	पूफा	४४	११	२४	५८	आ	२४	१६	ग	१०	३४	२५	२८	७	१७	१७	२९	१४	१८	२९	सिंह	भद्रा २३/०० से, पूषा में रवि १५/४३, वक्री मृगशिर में मंगल २८/०७,
९	७	र	४२	४६	२४	२४	उफा	४९	०४	२६	५५	सौ	२४	१२	वि	११	३६	२५	२९	७	१७	१७	२९	१५	१९	३०	क.७।२३	भद्रा ११/३५ तक,
१०	८	चं	४७	४८	२६	२५	ह	५५	२२	२९	२७	शो	२४	३६	बा	१३	२१	२५	३०	७	१८	१७	३०	१६	२०	३१	कन्या	कालाष्टमी,
११	९	मं	५३	५२	२८	५१	चि	६०	०	-	-	अ	२५	१९	तै	१५	३८	२५	३१	७	१८	१७	३०	१७	२१	ज.१	तु.१८।५१	जनवरी मा. १ दि. ३१ सन् २००८ ईस्वी प्रारम्भ,
१२	१०	बु	६०	०	-	-	चि	२	३३	८	१९	सु	२६	११	व	१८	०८	२५	३२	७	१८	१७	३१	१८	२२	२	तुला	भद्रा १८/०८ से, उषा में बुध १६/२२,
१३	१०	गु	०	२१	७	२७	स्वा	१०	०५	११	२१	धृ	२७	०३	वि	७	२७	२५	३३	७	१९	१७	३२	१९	२३	३	तुला	भद्रा ७/२७ तक, महापात २१/३४ से २८/४४ तक, जन्मदिन श्री पार्श्वनाथजी,
१४	११	शु	६	४४	१०	०१	वि	१७	२७	१४	१८	शू	२७	४६	बा	१०	०१	२५	३४	७	१९	१७	३३	२०	२४	४	वृ.७।३४	मकर में बुध १७/२७, सफला ११ व्रत सबका,
१५	१२	श	१२	३५	१२	२१	अनु	२४	१६	१७	०१	गं	२८	१७	तै	१२	२१	२५	३५	७	१९	१७	३३	२१	२५	५	वृश्चिक	शनि प्रदोष व्रत, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती,
१६	१३	र	१७	३५	१४	२१	ज्ये	३०	१४	१९	२५	वृ	२८	३०	व	१४	२१	२५	३७	७	१९	१७	३४	२२	२६	६	ध.१९।२५	भद्रा १४/२१ से २७/११ तक, गुरु पूर्व में उदित २८/३४,
१७	१४	चं	२१	३४	१५	५७	मू	३५	१३	२१	२४	ध्रु	२८	२४	श	१५	५७	२५	३८	७	१९	१७	३५	२३	२७	७	धनु	
१८	३०	मं	२४	२९	१७	०७	पूभा	३९	१०	२३	०	व्या	२७	५८	ना	१७	०७	२५	४०	७	१९	१७	३६	२४	२८	८	म.२१।२०	ज्येष्ठा में शुक्र १७/४७, भौमवती अमावस्या,

(दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं)

पौष कृष्ण ८ चन्द्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७४८

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	५	२	८	८	७	४	१०	४
१४	११	६	२२	८	६	१४	६	६
५६	१८	१६	४०	४८	११	२८	२५	२५
१२	३१	२५	४१	५६	४७	३७	११	११
६१	७२३	२१	१७	१३	७२	०	३	३
१	१३	५८	२४	४४	३८	११	११	११
मा उ	मा उ	व उ	मा अ	मा अ	मा उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ह. ग्रा. ११ | ने. १० | शु. ८ | ९ सू. बु. प्लू. गु. | चं. ६ | ७ | १२ | मं. ३ | के. ५ | १ | २ | श. ४

पक्षारम्भ द्वितीया के दिन शुक्र वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। इसके फलस्वरूप सब धान्य सस्ते होंगे और सब लोग निर्भय रहें तथा लोग सुखी एवं स्वस्थ चित्त युक्त होते हैं। **''वृश्चिके च गते शुक्रे सर्वधान्यसमर्घता। लोकस्तु निर्भयस्तत्र सुख स्वस्थं प्रवर्त्तते।''** वक्र गति द्वारा मंगल मृगशिर नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप कपास का नाश, शेष सब शुभ व सुभिक्ष होगा। पृथ्वी पर जल पूर्ण होता है। **''कार्पासनाशः प्रवलं सुभिक्षं मृगे कुजे भूर्जलपूरितैव।''**

पौष कृष्ण ३० भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५७५६

बु. ने. १० | शु. ८ | रा. ह. ११ | ९ सू. चं. गु. प्लू. | ६ | ७ | १२ | मं. ३ | के. शु. ५ | १ | २ | ४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
८	८	२	९	८	७	४	१०	४
२३	१७	३	५	१०	१६	१४	५	५
५	३१	३४	४२	३८	२	१५	५१	५१
३४	४२	३६	२३	२६	३५	९	५२	५२
६१	७४३	१७	९७	१३	७३	२	३	३
१०	४१	३५	१५	३८	५	१०	११	११
मा उ	मा अ	व उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

एकादशी को बुध मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाव से अन्नादि का समभाव रहता है तथा शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के फल होते हैं। **''निशापतेश्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखं दुःखं तथैव च शुभाशुभम्।''** इस मास में प्लूटो सहित चार ग्रह एक ही राशि में स्थित हो रहे हैं। इसके प्रभाववश कहीं रक्तपात होगा अशांति एवं भय का वातावरण बनेगा तथा जलप्लावन से जनधन की हानि होती है। **''एकाराशौ यदा यांति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयंति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा।''**

आकाश लक्षण :- इस पक्ष में चतुर्ग्रही योग बना हुआ है तथा सूर्य के आगे बुध एवं पीछे शुक्र स्थित है इसके फलस्वरूप शीत वृद्धि के साथ कुछ स्थानों में भारी वर्षा एवं हिमपात एवं कुछ भागों में शीत लहर के साथ हल्की वर्षा होगी। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, हिमाचलप्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, उत्तरांचल में शीत का प्रकोप बढ़ेगा।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
पौष शुक्ल पक्ष: २१

ता. ९ से २२ जनवरी सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति १९ पौष से २ माघ तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	स्टैं. टा. सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. पौष	मु. जिल्हिज	अं. जनवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.
१९	१	बु	२६	३१	१७	५२	उषा	४२	०८	२४	११	ह	२७	१४	व	१७	५२	२५	४२	७	१९	१७	३६	२५	२९	९	मकर
२०	२	गु	२७	११	१८	१२	श्र	४४	०७	२४	५८	व	२६	११	कौ	१८	१२	२५	४४	७	२०	१७	३७	२६	३०	१०	मकर
२१	३	शु	२७	०३	१८	०१	ध	४५	१०	२५	२४	सि	२४	५०	ग	१८	०१	२५	४५	७	२०	१७	३८	२७	मु.१	११	कु. १३।१४
२२	४	श	२५	५८	१७	४३	शत	४५	११	२५	२७	व्य	२३	१२	वि	१७	४३	२५	४७	७	२०	१७	३९	२८	२	१२	कुम्भ
२३	५	र	२३	५७	१६	५४	पूभा	४४	३२	२५	०८	व	२१	१६	बा	१६	५४	२५	५०	७	२०	१७	४०	२९	३	१३	मी. ११।१५
२४	६	चं	२०	५१	१५	४३	उभा	४२	५१	२४	२८	प	१९	०३	तै	१५	४३	२५	५२	७	१९	१७	४०	मा.१	४	१४	मीन
२५	७	मं	१७	०७	१४	१०	रे	४०	१७	२३	२६	शि	१६	३२	व	१४	१०	२५	५४	७	१९	१७	४१	२	५	१५	मे. २३।२६
२६	८	बु	१२	२२	१२	१६	अ	३६	५३	२२	०५	सि	१३	४५	ब	१२	१६	२५	५६	७	१९	१७	४२	३	६	१६	मेष
२७	९	गु	६	५०	१०	०३	भ	३२	४७	२०	२६	सा	१०	४२	कौ	१०	०३	२५	५९	७	१९	१७	४३	४	७	१७	वृ. २५।५९
२८	१०	शु	०	४१	७	३५	कृ	२८	०१	१८	३५	शु	७ / २८	२८ / ०६	ग	७	३५	२६	०१	७	१९	१७	४४	५	८	१८	वृष
०	११	शु	५४	०५	२८	५७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००
२९	१२	श	४७	२२	२६	१६	रो	२३	१४	१६	३६	ब्र	२४	४०	ब	१५	३६	२६	०४	७	१९	१७	४४	६	९	१९	मि. २७।३७
३०	१३	र	४०	४७	२३	३७	मृ	१८	११	१४	३८	ऐं	२१	१७	कौ	१२	५५	२६	०६	७	१९	१७	४५	७	१०	२०	मिथुन
मा.१	१४	चं	३४	४२	२१	११	आ	१३	४५	१२	४८	वै	१८	०३	ग	१०	२२	२६	०९	७	१८	१७	४६	८	११	२१	क. २९।३६
२	१५	मं	२९	२६	१९	०५	पुन	०९	५३	११	१५	वि	१५	०४	वि	०८	०५	२६	१२	७	१८	१७	४७	९	१२	२२	कर्क

बुध पश्चिमोदय १७/०६, गुरु बाल्यत्व समाप्त २८/३४, A
श्रवण में बुध २१/२२, चन्द्र दर्शन मु. ३०, उ. शृंगोन्नति,
भद्रा २९/५९ से, पंचक १३/१४ से, उषा में सूर्य १७/३७, B
भद्रा १७/४३ तक, विनायक ४, A व्य.महा. १५/४२ से २२/३१ तक,
लोहिड़ी (पं.), B मुहर्रम मु. १ हिजरी सन् १४२९ प्रा.,
मकर में सूर्य २४/०८, मु. ४५, सं. पुण्य अगले दिन,
भद्रा १४/१० से २५/१५ तक, पंचक २३/२६ तक, C
श्री दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी नवरात्रारम्भ, वै. महापात ३०/४९ से,
वै. महापात १२/१० तक, C संक्रांति पुण्य सूर्योदय से सूर्यास्त तक,
भद्रा १८/१७ से २८/५६ तक, पुत्रदा ११ व्रत स्मार्तों का,
एकादशी तिथि क्षय D पुत्रदा ११ व्रत वैष्णवों का, (विवाह मु. रोहिणी में),
धनिष्ठा में बुध २२/२०, पूषा में गुरु २९/१८, मूल धनु में शुक्र १५/३९, D
प्रदोष व्रत, मुहर्रम (ताजिया), सायन कुम्भ में सूर्य २२/१७,
भद्रा २१/११ से, E पौषी पूर्णिमा, महापात २८/३२ से,
भद्रा ८/०४ तक, सत्यव्रत, माघ स्नानारम्भ, शाकम्भरी जयंती, E

पौष शुक्ल ८ बुधे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७६४ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) पौष शु. १५ भौमे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७७०

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	०	२	९	८	७	४	१०	४
१	३	१	१८	१२	२५	१३	५	५
१४	३३	३४	१५	२६	४८	५५	३४	३४
४६	९	२९	४०	४०	३२	११	२६	२६
६१	८४१	११	८६	१३	४३	२	३	३
७	३०	३२	४६	२४	२५	५६	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

रा. ह. ११ — प्लू. गु. ९ — शु. ८ — १२ — सू. बु. ने. १० — ७ — चं. १ — ४ — ६ — २ — मं. ३ — के. श. ५

इस मास में पांच मंगलवार होने से कहीं आतंकवादी गतिविधि के फलस्वरूप या दुर्घटना से रक्तपात होगा जन-धन की हानि होगी तथा कहीं छत्रभंग होता है। **"यत्रमासे महीसूनोर्जायन्ते पंच वासराः। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥"** षष्ठी सोमवार को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप पूर्व तथा उत्तर के देशों में कष्ट, बालकों को पीड़ा होती है, दक्षिण के देशों में युद्ध आदि का भय तथा अशांति और पश्चिम के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है।

रा. ह. ११ — श. गु. प्लू. ९ — ८ — १२ — सू. बु. ने. १० — ७ — १ — ४ — ६ — २ — ३ मं. चं. — के. श. ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	२	२	९	८	८	४	१०	४
७	२९	०	२५	१३	३	१३	५	५
२१	५६	३७	५९	४६	९	३६	१५	१५
१२	१७	३०	३८	३३	३२	२१	२०	२०
६१	८४३	६	५९	१३	७३	३	३	३
२	४२	३९	१८	११	३६	२५	११	११
मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

"ईशान्ये यत्र दृष्टिः स्यात् नृपमन्येन ग्रासितम्। देशभङ्गं विजानीयात् शिशूनां च विनाशहि॥" द्वादशी को शुक्र धनु राशि में प्रवेश कर रहा है इसके प्रभाववश सब प्रकार के धान्यों के भावों में तेजी होगी तथा सब प्रकार की खेतियों-कृषि की हानि होती है। **"यदा च धनराशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्त्तते। महर्घं च विजानीयात्सर्वसस्यं विनश्यति॥"** इस पक्ष में एकादशी तिथि का क्षय हो रहा है इसके फलस्वरूप धान्यों के भावों में तेजी का रुख रहेगा।

आकाश लक्षण :- सूर्य के साथ बुध नीरा एवं अमृता नाड़ी में स्थित होकर बैठे हैं अतः छिटपुट बूंदा-बांदी के साथ शीत का प्रकोप बढ़ेगा। कुछ स्थानों में तेज वायु के साथ वर्षा की बौछार पड़ेगी। पर्वतीय क्षेत्रों में ओलावृष्टि या हिमपात की सम्भावना है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, बंगाल, बिहार, जम्मू काश्मीर में शीत वृद्धि के साथ बूंदा-बांदी होगी।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
माघ कृष्ण पक्ष: २२

ता. २३ जनवरी से ७ फरवरी सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १८ माघ तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. माघ	मु. मुहर्रम	अं. जनवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
३	१	बु	२५	२१	१७	२६	पुष्य	०७	०३	१०	०७	प्री	१२	२६	कौ	१७	२६	२६	१५	७	१८	१७	४८	१०	१३	२३	कर्क	महापात १०/०८ तक, **नेताजी श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती,**
४	२	गु	२२	४५	१६	२३	आश्ले	०५	३४	९	३९	आ	१०	१५	ग	१६	२३	२६	१८	७	१७	१७	४९	११	१४	२४	सिं.९।३१	भद्रा २८/०७ से, श्रवण में सूर्य १९/५६, (विवाह मु. मघा में),
५	३	शु	२२	४९	१६	०१	म	०५	४१	९	३३	सौ	८	३५	वि	१६	०१	२६	२१	७	१७	१७	५०	१२	१५	२५	सिंह	भद्रा १६/०१ तक, **गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०/५०,**
६	४	श	२२	४३	१६	२२	पूफा	०७	३३	१०	१८	शो	७ ३०	२८ ५५	बा	१६	२२	२६	२४	७	१७	१७	५०	१३	१६	२६	क.१६।३५	वक्री मघा में शनि १९/३७, (वि. मु. उ.फा. में), **गणतन्त्र दिवस,**
७	५	र	२५	२४	१७	२६	उफा	११	०१	११	४४	सु	३०	५३	तै	१७	२६	२६	२७	७	१६	१७	५१	१४	१७	२७	कन्या	(विवाह मु. उफा., हस्त में), **A** (विवाह मु. हस्त में),
८	६	चं	२९	४१	१९	०८	ह	१६	२०	१३	४८	धृ	-	-	व	१९	०८	२६	३०	७	१६	१७	५२	१५	१८	२८	तु.२७।०२	भद्रा १९/०८ से, बुध वक्री २६/०१, **लाला लाजपतराय जयंती, A**
९	७	मं	३५	११	२१	२०	चि	२२	४६	१६	२२	धृ	७	१६	वि	०८	११	२६	३३	७	१५	१७	५३	१६	१९	२९	तुला	भद्रा ८/१० तक, **स्वामी विवेकानन्द ज., श्रीरामानन्दाचार्य जयंती, B**
१०	८	बु	४१	२४	२३	४८	स्वा	२९	५८	१९	१४	शू	७	५७	बा	१०	३३	२६	३६	७	१५	१७	५४	१७	२०	३०	तुला	पूषा. में शुक्र १२/१३, मंगल मार्गी २८/०९, **B** व्य. महा. २३/३३ से २८/५० तक,
११	९	गु	४७	४४	२६	२०	वि	३७	२३	२२	१२	गं	८	४६	तै	१३	०५	२६	४०	७	१४	१७	५५	१८	२१	३१	वृ.१५।३८	बुध पश्चिमास्त ८/१९, (विवाह मु. अनुराधा में),
१२	१०	शु	५३	३८	२८	४१	अनु	४४	२९	२५	०१	वृ	९	३५	व	१५	३३	२६	४३	७	१४	१७	५५	१९	२२	फर. १	वृश्चिक	भद्रा १५/३३ से २८/४१ तक, फरवरी मा. २ दि. २९, (वि.मु. अनु. में),
१३	११	श	५८	३८	३०	४१	ज्ये	५०	४६	२७	३२	ध्रु	१०	१३	ब	१७	४४	२६	४७	७	१३	१७	५६	२०	२३	२	ध.२७।३२	**षट्तिला ११ व्रत स्मार्त वैष्णवों का,**
१४	१२	र	६०	०	-	-	मू	५५	५५	२९	३४	व्या	१०	३३	कौ	११	२९	२६	५०	७	१३	१७	५७	२१	२४	३	धनु	**षट्तिला ११ व्रत निम्बार्कों का,** (विवाह मु. मूल में),
१५	१२	चं	०२	२४	८	१०	पूषा	५९	४२	३१	०५	ह	१०	३१	तै	८	१०	२६	५४	७	१२	१७	५८	२२	२५	४	धनु	**सोम प्रदोष व्रत, C कंकण सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य नहीं),**
१६	१३	मं	०४	४५	९	०६	उषा	६०	०	-	-	व	१०	०३	व	९	०६	२६	५७	७	१२	१७	५९	२३	२६	५	म.१३।२३	भद्रा ९/०६ से २१/१९ तक, **मेरु त्रयोदशी (जैन),**
१७	१४	बु	०५	३९	९	२७	उषा	०२	०९	८	०२	सि	९	०८	श	९	२७	२७	०१	७	११	१७	५९	२४	२७	६	मकर	धनिष्ठा में सूर्य २३/०३, वक्री श्रवण में बुध २४/२४,
१८	३०	गु	०५	१०	९	१५	श्र	०३	१४	८	२८	व्य	७ ३०	४८ ०४	ना	९	१५	२७	०४	७	१०	१८	०	२५	२८	७	कु.२०।२९	पंचक २०/२९ से, **मौनी अमावस्या, महोदय योग ७/४८ तक, C**

माघ कृष्ण ८ बुधे प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७७८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) माघ कृष्ण ३० गुरौ प्रात: स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७८६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	६	२	९	८	८	४	१०	४
१५	१३	०	२९	१५	१२	१३	४	४
२९	११	६	४६	३०	५९	६	४१	४१
८	५१	३८	५७	५१	१८	४८	५४	५४
६०	७१२	०	१८	१२	७३	४	३	३
५६	४१	२०	४०	५०	५१	८	११	११
मा उ	मा उ	व उ	व उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
श्रवण २	स्वाति २	मृग ३	धनि २	पूषा २	मूल ४	मघा ४	धनि ४	मघा २

रा. ह. ११ | प्लू. शु. गु. ९ | ८ | सू. ने. बु. १० | चं. ७ | १२ | १ | ४ | २ | ६ | मं. ३ | श. के. ५

इस मास में पांच गुरुवार होने से पश्चिम देश में अशांति, विग्रह तथा युद्ध का वातावरण बनता है। **"यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धञ्च जायते॥"** वक्र गति द्वारा शनि मघा नक्षत्र में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप भय का वातावरण बनता है तथा पशुओं हाथी, घोड़े का व्यापार करने से चौगुणा लाभ होता है। **"मघायां च यदा सौरिः समयं दीयते तदा। कुञ्जरं हयवाणिज्यं लाभं चैत्र विनिर्दिशेत्॥"**

रा. ह. ११ | प्लू. गु. श. ९ | ८ | १० सू. बु. ने. चं. | ७ | १२ | १ | ४ | २ | ६ | मं. ३ | श. के. ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
९	९	२	९	८	८	४	१०	४
२३	२१	०	२३	१७	२२	१२	४	४
३६	४२	२४	०४	११	५०	३३	२४	२४
१६	५	३९	४१	५६	३८	४	२७	२७
६०	८००	५	७२	१२	७४	४	३	३
४९	५	२८	२७	२३	०	२७	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	व अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
धनि १	श्रवण ४	मृग ३	श्रवण ४	पूषा २	पूषा ३	मघा ४	धनि ४	मघा २

त्रयोदशी को चन्द्रचार होने से चतुर्ग्रही योग बन रहा है। इसके फलस्वरूप कहीं जलप्लावन होता है या रक्तपात भी होता है। **"एकाराशौ यदायांति चत्वार: पंचखेचरा:। प्लावयंति महीं सर्वांरुधिरेण जलेन वा॥"** द्वादशी रविवार को तिथि वृद्धि होने से वस्तुओं के भाव में तेजी का रुख रहेगा।

आकाश लक्षण :- सूर्य के साथ अमृतानाड़ी में बुध के स्थित होने से तेज बादल-चाल के साथ छिटपुट बूंदा-बांदी होगी एवं मेघ गर्जना करेंगे। कुछ स्थलों पर साधारण वर्षा या खण्डवृष्टि होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में तेज शीतल वायु के साथ एवं मेघ गर्जना के साथ बूंदा-बांदी, ओलावृष्टि या हल्की वर्षा की सम्भावना है। मैदानी भागों में शीत प्रकोप के साथ हल्की वर्षा की सम्भावना है। कहीं-कहीं गरज के साथ छींटे पड़ेंगे।

श्री संवत् २०६४ शक: १९२९
माघ शुक्ल पक्ष: २३

ता. ८ से २१ फरवरी सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति १९ माघ से २ फाल्गुन तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा-मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय (स्टैं.टा.) घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. माघ	मु. मुहर्रम	अं. फरवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं.टा. रा. घं. मि.	इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा-मिनटों में है।
१९	१	शु	०३	२८	८	३३	ध	०३	०७	८	२४	प	२८	०१	ब	८	३३	२७	०८	७	१०	१८	०१	२६	२९	८	कुम्भ	चन्द्र दर्शन मु. १५, द. श्रृंगोन्नति, A उषा में शुक्र ७/५२, (विवाह मु. उभा में)
२०	२	श	०	४३	७	२६	श	०१	५८	७	५६	शि	२५	४१	कौ	७	२६	२७	१२	७	०९	१८	०२	२७	स.१	९	मी.२५।२२	सफर २, मु., गौरी तृतीया, B वै.महापात २९/०३ से, (विवाह मु. रेवती में)
०	३	श	५७	०५	२१	५१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	तृतीया तिथि क्षय
२१	४	र	५२	४८	२८	१५	पूभा उभा	० ५७	०१ २०	७ ३०	०८ ०४	सि	२३	०७	व	१७	०९	२७	१६	७	०८	१८	०३	२८	२	१०	मीन	भद्रा १७/०९ से २८/१५ तक, विनायक ४, तिलकुंद वरदचतुर्थी, A
२२	५	चं	४८	०१	२६	२०	रे	५४	१५	२८	४९	सा	२०	२३	ब	१५	११	२७	२०	७	०७	१८	०३	२९	३	११	मे.२८।४९	पंचक २८/४९ तक, श्री वसन्त पंचमी, श्री सरस्वती पूजा, श्रीपंचमी, B
२३	६	मं	४२	५४	२४	१६	अ	५०	५०	२७	२७	शु	१७	३३	कौ	१३	१९	२७	२३	७	०७	१८	०४	३०	४	१२	मेष	मकर में शुक्र २४/४२, बुध पूर्वोदय २८/४१, वै.महापात ९/१५ तक,
२४	७	बु	३७	३६	२२	०८	भ	४७	१५	२६	०	शु	१४	३७	ग	११	१३	२७	२७	७	०६	१८	०५	फा.१	५	१३	मेष	भद्रा २२/०८ से, कुम्भ में सूर्य १३/०५, मु. १५, रथ आरोग्य सप्तमी,
२५	८	गु	३२	१४	१९	५९	कृ	४३	३८	२४	३२	ब	११	४०	वि	०९	०३	२७	३१	७	०५	१८	०६	२	६	१४	वृ.७।३८	भद्रा ९/०२ तक, भीष्माष्टमी, E ग्रहण सुदूर पश्चिम भाग में दृश्य, F
२६	९	शु	२६	५६	१७	५१	रो	४०	०७	२३	०७	ऐं	८ २९	४३ ४८	कौ	१७	५०	२७	३५	७	०४	१८	०७	३	७	१५	वृष	C वसन्त ऋतु प्रारंभ, मरुधरा महोत्सव प्रा. ३ दिन का जैसलमेर (राज.),
२७	१०	श	५१	४९	१५	४७	मृ	३६	५०	२१	४७	वि	२६	५९	ग	१५	४७	२७	३९	७	०३	१८	०७	४	८	१६	मि.१०।२६	भद्रा २६/४८ से (विवाह मु. मृगशिर में), F माघी पूर्णिमा, महापात ९/४८ तक,
२८	११	र	१७	०४	१३	५२	आ	३३	५६	२०	३७	प्री	२४	१९	वि	१३	५२	२७	४३	७	०३	१८	०८	५	९	१७	मिथुन	भद्रा १३/५२ तक, जया ११ व्रत सबका, भीष्म द्वादशी,
२९	१२	चं	१२	५०	१२	१०	पुन	३१	३६	१९	४०	आ	२१	५०	बा	१२	१०	२७	४७	७	०२	१८	०९	६	१०	१८	क.१३।५३	सोम प्रदोष व्रत, D मेला जयंती देवी (पं.), (विवाह मु. मघा में),
३०	१३	मं	०९	१८	१०	४४	पु	३०	०	१९	०१	सौ	१९	३६	तै	१०	४४	२७	५१	७	०१	१८	०९	७	११	१९	कर्क	शतभिषा में सूर्य २७/३३, बुध मार्गी ८/२८, सायन मीन में सूर्य १२/२३, C
फा.१	१४	बु	०६	३९	९	३९	आश्ले	२९	२१	१८	४४	शो	१७	४०	व	९	३९	२७	५५	७	०	१८	१०	८	१२	२०	सिं.१८।४४	भद्रा ९/३९ से २१/१५ तक, श्रवण में शुक्र २७/०४, सत्यव्रत, महापात २९/०९ से, D
२	१५	गु	०५	०४	९	०१	मघा	२९	४९	१८	५५	अ	१६	०६	ब	९	०१	२७	५९	६	५९	१८	११	९	१३	२१	सिंह	श्रीरविदास जयंती, माघ स्नान समाप्त, श्रीललिता जयंती, खग्रास चन्द्र E

माघ शुक्ल ८ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५७९३ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है) माघ शुक्ल १५ गुरौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गण: ५८००

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	०	२	९	८	९	४	१०	४
०	२८	१	१५	१८	१	१२	४	४
४१	४४	१६	५९	३७	२८	१	२	२
२१	१४	४२	१०	७	५१	३	१३	१३
६०	८५	९	३५	११	७४	४	३	३
३८	४५	५७	१४	५३	४	४२	११	११
मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
३	१	३	१	१	१	४	४	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१२
शु.बु.ने. १०
प्लू. गु. ९
चं. १
सू. रा. ह. ११
८
२
श. के. ५
७
मं. ३
४
६

षष्ठी मंगलवार को शुक्र मकर राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप सब खेतियों-कृषि का प्राकृतिक प्रकोपों से नाश होता है एवं सब धान्य मंहगे होते हैं। **''मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्य विनाशकृत्। जायतेऽत्र महर्घाणि नात्रकार्या विचारणा॥''** सप्तमी बुधवार को सूर्य कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। इसके प्रभाव से उत्तर तथा पश्चिम के देशों में पीड़ा, प्राकृतिक प्रकोपों से हानि, पूर्व के देशों में अशांति तथा युद्ध आदि का भय एवं दक्षिण के देशों में सुभिक्ष आदि का सुख होता है। **''वायव्ये च यदादृष्टिः सर्वसौख्यसमन्विता। सुभिक्षं च विजानीयात् नृपाणां च कलिर्भवेत्॥''** सूर्य की संक्रांति १५ मुहूर्ती होने से सब वस्तुओं-धान्यों व रस पदार्थों के भावों में तेजी का रुख होगा। इस पक्ष में तृतीया का क्षय एवं चन्द्रदर्शन १५ मुहूर्ती होने से सब वस्तुओं के भावों में तेजी का रुख होगा। शुक्ल प्रतिपदा के दिन शुक्रवार होने से सुभिक्षादि शुभ फल होते हैं एवं अशुभफलों में कमी होती है।

१२
शु. बु. ने. १०
प्लू. गु. ९
१
सू. रा. ह. ११
८
२
श. के. चं. ५
७
मं. ३
४
६

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	४	२	९	८	९	४	१०	४
७	५	२	१४	१९	१०	११	३	३
४५	५८	३८	३२	५८	७	२७	३९	३९
२०	९	८	४०	४१	२७	४१	५७	५७
६०	७८५	१३	१५	११	७४	४	३	३
२६	१४	४६	२४	१९	७	५०	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
१	१	३	१	१	१	४	४	१
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :- सूर्य के पीछे बुध शुक्र के स्थित होने से तेज बादल-चाल के साथ शीत का प्रभाव बना रहेगा। कहीं-कहीं छिटपुट बूंदाबांदी या हल्की वर्षा की सम्भावना है। दक्षिण भारत में वायु के साथ वर्षा व तूफान की सम्भावना है। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश के मैदानी भागों में शीतलहर का प्रभाव रहेगा।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
फाल्गुन कृष्ण पक्षः २४

ता. २२ फरवरी से ७ मार्च सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १७ फाल्गुन तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय (स्टैं. टा.) घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	तारीखें हि. फाल्गुन	मु. सफर	अं. फरवरी	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
३	१	शु	०४	४४	८	५२	पूफा	३९	३४	१९	३५	सु	१४	५६	कौ	८	५२	२८	०३	६	५८	१८	१२	१०	१४	२२	क.२५।५१	(विवाह मु. उ. फाल्गुनी में),
४	२	श	०५	४६	९	१६	उफा	३४	४०	२०	४९	धृ	१४	१२	ग	९	१६	२८	०७	६	५७	१८	१२	११	१५	२३	कन्या	भद्रा २१/४१ से, (विवाह मु. उ.फाल्गुनी में),
५	३	र	०८	१५	१०	१४	ह	३९	०९	२२	३६	शू	१३	५४	वि	१०	१४	२८	१२	६	५६	१८	१३	१२	१६	२४	कन्या	भद्रा १०/१४ तक, **श्री गणेश चतुर्थी व्रत**, चन्द्रोदय २१/२४, **A**
६	४	चं	१२	०६	११	४६	चि	४४	५२	२४	५२	गं	१४	०१	बा	११	४६	२८	१६	६	५५	१८	१४	१३	१७	२५	तु.११।४०	**A** महापात १६/२६ से २०/४२ तक,
७	५	मं	१७	०८	१३	४६	स्वा	५१	३४	२७	३२	वृ	१४	३०	तै	१३	४६	२८	२०	६	५४	१८	१४	१४	१८	२६	तुला	
८	६	बु	२३	०१	१६	०६	वि	५८	५१	३०	२६	ध्रु	१५	१३	व	१६	०६	२८	२४	६	५३	१८	१५	१५	१९	२७	वृ.२३।४१	भद्रा १६/०६ से २९/१९ तक,
९	७	गु	२९	१६	१८	३५	अनु	६०	०	-	-	व्या	१६	०३	ब	१८	३५	२८	२८	६	५२	१८	१६	१६	२०	२८	वृश्चिक	चेल्हम, (विवाह मु. अनुराधा में), **श्री नाथजी महोत्सव नाथद्वारा (राज.)**,
१०	८	शु	३५	२०	२०	५९	अनु	०६	१५	९	२१	ह	१६	५१	बा	०७	४८	२८	३३	६	५१	१८	१६	१७	२१	२९	वृश्चिक	**श्री सीता जयंती, हलाष्टमी**, (विवाह मु. अनुराधा में),
११	९	श	४०	३९	२३	०६	ज्ये	१३	०८	१२	०५	व	१७	२७	तै	१०	०५	२८	३७	६	५०	१८	१७	१८	२२	मा.१	ध.१२।०५	मार्च मा. ३ दि. ३१ (विवाह मु. मूल में),
१२	१०	र	४४	३४	२४	४२	मू	१९	०१	१४	२५	सि	१७	४२	व	११	५८	२८	४१	६	४९	१८	१८	१९	२३	२	धनु	भद्रा ११/५८ से २४/४२ तक, धनिष्ठा में शुक्र २१/५९, (विवाह मु. मूल में),
१३	११	चं	४७	१३	२५	४१	पूषा	२३	३०	१६	१२	व्य	१७	३०	ब	१३	१७	२८	४५	६	४८	१८	१८	२०	२४	३	म.२२।३३	**विजया ११ व्रत सबका**,
१४	१२	मं	४७	५६	२५	५७	उषा	२६	२१	१७	११	व	१६	४७	कौ	१३	५५	२८	५०	६	४७	१८	१९	२१	२५	४	मकर	पू.भा. में सूर्य ९/५३, धनिष्ठा में बुध २०/२८,
१५	१३	बु	४६	५३	२५	३१	श्रव	२७	२८	१७	४५	प	१५	३१	ग	१३	४१	२८	५४	६	४६	१८	२०	२२	२६	५	कु.२१।४२	भद्रा २५/३१ से, पंचक २१/४२ से, **प्रदोष व्रत**, आखिरी चहारशाम्बा,
१६	१४	गु	४४	१०	२४	२५	धनि	२६	५४	१७	३०	शि	१३	४२	वि	१३	०३	२८	५८	६	४५	१८	२०	२३	२७	६	कुम्भ	भद्रा १३/०२ तक, आर्द्रा में मंगल १५/०२, **श्री महाशिवरात्रि**,
१७	३०	शु	४०	०१	२२	४४	शत	२४	५२	१६	४०	सि	११	२३	च	११	३८	२९	०२	६	४४	१८	२१	२४	२८	७	कुम्भ	**अमावस्या पुण्य**, शहादत ए इमामहसन,

फाल्गुन कृष्ण ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८०८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) फाल्गुन कृष्ण ३० शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८१५

फाल्गुन कृष्ण ८:

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	७	२	९	८	९	४	१०	४
१५	१४	४	१८	२१	२०	१०	३	३
४८	४५	४१	५६	२६	०	४९	१४	१४
९	२३	२१	३६	५१	३८	३	३१	३१
६०	७१६	१७	५१	१०	७४	४	३	३
१४	४१	२६	३१	३६	११	४८	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१२ बु. शु. ने. १० प्लू. गु. ९ १ सू. ह. रा. ११ चं. ८ २ के. श. ५ मं. ३ ७ ४ ६

इस मास में पांच शुक्रवार होने से लोगों की वृद्धि, सुख-समृद्धि सुभिक्षादि शुभ फल होते हैं। **''शुक्रस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्त्तते॥''** पक्षान्त में चतुर्ग्रही योग बन रहा है इसके कुप्रभाव से कहीं रक्तपात अशान्ति, जन-धन की हानि या जलप्लावन से हानि होना शास्त्र में लिखा है। **''एकाराशौ यदा यांति चत्वारः पंच खेचराः। प्लावयंति महीं सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥''** फाल्गुन कृष्ण प्रतिपदा को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र होने से सब प्रकार के अशुभ फलों का प्रभाव दूर होता है एवं पृथ्वी पर शुभफलों की वृद्धि होती है सुभिक्ष होता है। **''फाल्गुने प्रथमे पक्षे पूर्वाफाल्गुनियोगतः। सर्वान्दोषान्निहंत्येव सुभिक्षं भुवि जायते॥''** मंगल के आर्द्रा नक्षत्र में संचार से तिल और भैंसों का नाश होता है। **''वृष्टिश्च रौद्रे दितिजे तिलानां नाशो विनाशो महिषीकुलस्य।''**

१२ बु. शु. ने. १० प्लू. गु. ९ ११ सू. चं. रा. ह. १ ८ २ श. के. ५ मं. ३ ७ ४ ६

फाल्गुन कृष्ण ३०:

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१०	२	९	८	९	४	१०	४
२२	१३	६	२६	२२	२८	१०	२	२
४९	३१	५१	५६	३८	३९	१५	५२	५२
१६	५१	५४	३७	५८	५८	४९	१६	१६
६०	८३८	२०	६९	९	७४	४	३	३
३	५०	९	४३	५३	१२	३९	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आकाश लक्षण :- सूर्य जला नाड़ी में स्थित है एवं बुध-शुक्र अमृता नाड़ी में है इसके प्रभाववश तेज हवा व बादल-चाल के साथ बूंदा-बांदी होगी एवं कहीं-कहीं बादल गर्जना के साथ खण्डवृष्टि होगी। मैदानी भागों में ऋतुपरिवर्तन के लक्षण दृष्टिगोचर होंगे। अग्नि प्रकोप के साथ पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा एवं ओला वृष्टि की सम्भावना है। दिन के तापमान में वृद्धि होगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
फाल्गुन शुक्ल पक्षः २५

ता. ८ से २१ मार्च सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति १८ फाल्गुन से १ चैत्र तक। उत्तरायण, दक्षिणगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिंनटों में है।

रा.मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	पल	सूर्योदय घंटा	मिनट	सूर्यास्त घंटा	मिनट	हि. फाल्गुन	मु. सफर	अं. मार्च	चन्द्र दर्शन स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
१८	१	श	३४	४३	२०	३६	पूभा	२१	३६	१५	२१	सा	८/२९	४०/३७	किं	९	४३	२९	०७	६	४३	१८	२१	२५	२९	८	मी.९।४३	कुम्भ में शुक्र ७/२३, वै. महापात २४/५३ से २८/३३ तक,
१९	२	र	२८	३६	१८	०८	उभा	१७	२७	१३	४०	शु	२६	२१	बा	७	२४	२९	११	६	४१	१८	२२	२६	३०	९	मीन	चन्द्रदर्शन मु. ३० उ. श्रृंगोन्नति, **श्रीरामकृष्ण परमहंस जयंती**, (विवाह मु. उभा में),
२०	३	चं	२२	०	१५	२८	रे	१२	४५	११	४६	ब्र	२२	५९	ग	१५	२८	२९	१५	६	४०	१८	२३	२७	र.१	१०	मे. ११।४६	भद्रा २६/०६ से, पंचक ११/४६ तक, कुम्भ में बुध १४/२९, रविउल अव्वल मु. ३, A
२१	४	मं	१५	१३	१२	४५	अश्वि	०७	५०	९	४७	ऐं	१९	३५	वि	१२	४४	२९	२०	६	३९	१८	२३	२८	२	११	मेष	भद्रा १२/४५ तक, **विनायक ४**, **A** (विवाह मु. रेवती में)
२२	५	बु	०८	३५	१०	०४	भ/कृ	०३/५८	०१/३०	७/३०	५०/०२	वै	१६	१५	बा	१०	०४	२९	२४	६	३८	१८	२४	२९	३	१२	वृ. १३।२२	
२३	६	गु	०२	२१	७	३३	रो	५४	४०	२८	२९	वि	१३	०५	तै	७	३३	२९	२८	६	३७	१८	२४	३०	४	१३	वृष	भद्रा २९/१७ से, शतभिषा में शुक्र १६/४७, **जैन अष्टान्हिक प्रा.**,
०	७	गु	५६	४०	२९	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	सप्तमी तिथि क्षय,
२४	८	शु	५१	४८	२७	१९	मृ	५१	३४	२७	१४	प्री	१०	०७	वि	१६	१५	२९	३३	६	३६	१८	२५	चै.१	५	१४	मि.१५।४९	भद्रा १६/१४ तक, मीन में सूर्य ९/५८, मु. ३०, सं. पुण्य १६/२२ तक, **होलाष्टक प्रारम्भ**,
२५	९	श	४७	४९	२५	४२	आ	४९	२१	२६	१९	आ	७/२९	२६/०१	बा	१४	२८	२९	३७	६	३५	१८	२६	२	६	१५	मिथुन	शतभिषा में बुध १५/१९,
२६	१०	र	४४	४६	२४	२८	पुन	४८	०३	२५	४७	शो	२६	५४	तै	१३	०२	२९	४१	६	३४	१८	२६	३	७	१६	क.१९।५३	**B मेला खाटू श्याम २ दिन का, रामस्नेही सम्प्रदाय का फूलडोल महोत्सव,**
२७	११	चं	४२	४१	२३	३७	पुष्य	४७	४२	२५	३७	अ	२५	०६	व	११	५९	२९	४६	६	३२	१८	२७	४	८	१७	कर्क	भद्रा ११/५९ से २३/३७ तक, उ.भा. में सूर्य १८/१७, **आमला ११ व्रत सबका**, B
२८	१२	मं	४१	३५	२३	०९	आश्ले	४८	१८	२५	५१	सु	२३	३७	ब	११	२०	२९	५०	६	३१	१८	२७	५	९	१८	सिं.२५।५१	**गोविन्द द्वादशी** **D ईद-ए-मिलाद,**
२९	१३	बु	४१	२७	२३	०५	मघा	४९	५३	२६	२७	धृ	२२	२६	कौ	११	०४	२९	५४	६	३०	१८	२८	६	१०	१९	सिंह	**प्रदोष व्रत,** C व्य. महापात ७/२७ से १४/५० तक, **श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती, D**
३०	१४	गु	४२	२१	२३	२५	पूफा	५२	२७	२७	२८	शू	२१	३५	ग	११	१२	२९	५८	६	२९	१८	२९	७	११	२०	सिंह	भद्रा २३/२५ से, सायन मेष में सूर्य ११/२२, उत्तर गोल में सूर्य, विषुव दिन,
चै.१	१५	शु	४४	१५	२४	१०	उफा	५६	०	२८	५२	गं	२१	०२	वि	११	४४	३०	०३	६	२७	१८	२९	८	१२	२१	क.९।४६	भद्रा ११/४३ तक, **सत्यव्रत, होलिकादहन १८/२४ के बाद, होलाष्टक समाप्त,** C

फाल्गुन शुक्ल ८ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८२२ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की है)

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
१०	१	२	१०	८	१०	४	१०	४
२९	२३	९	४	२३	७	९	२	२
४८	५६	२०	४३	४५	१९	४४	३०	३०
५३	६	१०	४५	४५	१६	५	१	१
५९	८६३	२२	८२	९	७४	४	३	३
४८	१७	२९	३	४	११	२१	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली: १२; ११ सू. बु. रा. ह.; ने. १०; गु. प्लू. ९; १; ८; चं. २; श. के. ५; ७; मं. ३; ४; ६

फाल्गुन शुक्ल १५ शुक्रे प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८२९

कुण्डली: २; १; बु. शु. ह. रा. ११; ने. १०; सू. १२; प्लू. ९ गु.; मं. ३; ६; ८; ४; ५ के. श. चं.; ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	४	२	१०	८	१०	४	१०	४
६	२७	१२	१४	२४	१५	९	२	२
४६	४४	०३	४८	४६	५८	१४	७	७
४२	४८	२७	३८	३८	२२	४५	४५	४५
५९	७६६	२४	९१	८	७४	३	३	३
३२	७	२४	५९	११	९	५७	११	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शुक्र के कुम्भ राशि में प्रवेश से वर्षा बहुत होती है तथा शुभफलों की वृद्धि होती है तथा सब लोग निरोग रहते हैं **"कुंभराशौ स्थिते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं जलम्। भवत्यत्र न संदेहो लोकाः सर्वे निरामयाः॥"** बुध कुम्भ राशि में प्रवेश कर रहा है इसके फलस्वरूप अन्नादि का समभाव रहता है तथा शुभ अशुभ दोनों प्रकार के फल होते हैं। **"निशापतेश्च तनयः शनिक्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखं दुःखं तथैव च शुभाशुभम्॥"** अष्टमी शुक्रवार को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करेगा इसके फलस्वरूप दक्षिण तथा पश्चिम के देशों में दुर्भिक्षादि अशुभ फलों का भय होता है, उत्तर के देशों में युद्ध एवं अशांति का वातावरण तथा पूर्व के देशों में शुभ फल होते हैं शांति एवं वृद्धि होती है। **"नैर्ऋत्ये च यदादृष्टि भयक्ते सं च दारुणम्। नृपाणां च भवेन्नाशो दुर्भिक्षं च फलं भवेत्॥"**

आकाश लक्षण :- उत्तर भारत में ऋतु परिवर्तन के लक्षण दिखाई देंगे। दक्षिण भारत में गर्मी बढ़ेगी। सूर्य के साथ राहु एवं बुध के स्थित होने से तेज वायु एवं बादल-चाल के साथ कहीं-कहीं हल्की बूंदा-बांदी होने की संभावना है। मैदानी भागों में दिन में गर्मी रात्रि में शीत पड़ेगी।

श्री संवत् २०६४ शकः १९२९
चैत्र कृष्ण पक्षः २६

ता. २२ मार्च से ६ अप्रैल सन् २००८ ई., राष्ट्रीय मिति २ से १७ चैत्र तक। उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त ऋतु।

इस संदर्भ का सब समय भारतीय स्टैं. टा. घंटा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि	वार	घटी	पल	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घटी	पल	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	करण	घंटा	मिनट	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय घंटा	सूर्योदय मिनट	सूर्यास्त घंटा	सूर्यास्त मिनट	तारीखें हि. चैत्र	मु. र.उ.अ.	अं. मार्च	चन्द्र दर्शन स्टैं. टा. रा. घं. मि.	
२	१	श	४७	१३	२५	२०	ह	६०	०	-	-	वृ	२०	४९	बा	१२	४२	३०	०७	६	२६	१८	३०	९	१३	२२	कन्या	होली, होलिकाधूलि धारण, वसंतोत्सव प्रारम्भ, A
३	२	र	५१	१२	२६	५४	ह	०	३७	६	४०	ध्रु	२०	५४	तै	१४	०४	३०	११	६	२५	१८	३०	१०	१४	२३	तु.१९।४४	ईस्टर सण्डे, A होला मेला आनन्दपुर व पावटां साहिब,
४	३	चं	५६	०८	२८	५२	चि	०६	१०	८	५२	व्या	२१	१८	व	१५	५०	३०	१६	६	२४	१८	३१	११	१५	२४	तुला	भद्रा १५/५० से २८/५२ तक, पू.भा में बुध १३/२०, पू.भा में शुक्र ११/४३,
५	४	मं	६०	०	-	-	स्वा	१२	३६	११	२५	ह	२१	५७	ब	१७	५७	३०	२०	६	२३	१८	३१	१२	१६	२५	तुला	गणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २२/०१,
६	४	बु	०१	५३	७	०७	वि	१९	४२	१४	१५	व	२२	४६	बा	०७	०७	३०	२४	६	२२	१८	३२	१३	१७	२६	वृ.७।३१	ईद-ए-मौलाद,
७	५	गु	०८	०३	९	३४	अनु	२७	०८	१७	१२	सि	२३	३९	तै	०९	३४	३०	२९	६	२१	१८	३२	१४	१८	२७	वृश्चिक	रंग पंचमी,
८	६	शु	१४	१४	११	०१	ज्ये	३४	२९	२०	०७	व्य	२४	२९	व	११	०१	३०	३३	६	२०	१८	३३	१५	१९	२८	ध.२०।०७	भद्रा १२/०९ से २५/११ तक,
९	७	श	१९	५८	१४	१८	मूल	४१	१३	२२	४८	व	२५	०५	ब	१४	१७	३०	३७	६	१८	१८	३४	१६	२०	२९	धनु	कालाष्टमी, B शीतलाष्टमी,
१०	८	र	२४	४०	१६	०९	पूषा	४६	५०	२५	०१	प	२५	२०	कौ	१६	०९	३०	४१	६	१७	१८	३४	१७	२१	३०	धनु	रेवती में सूर्य २९/१२, मीन में बुध १३/३४, **वर्षी तपारम्भ (जैन)**, B
११	९	चं	२७	५४	१७	२६	उषा	५०	५४	२६	३८	शि	२५	०५	ग	१७	२६	३०	४६	६	१६	१८	३५	१८	२२	३१	म.७।२९	भद्रा २९/४८ से, C वारुणी योग १६/३८ से २६/५१ तक,
१२	१०	मं	२९	१८	१७	५८	श्र	५३	०६	२७	२९	सि	२४	१४	वि	१७	५८	३०	५०	६	१५	१८	३५	१९	२३	अ.१	मकर	भद्रा १७/५८ तक, उ.भा में बुध ११/११, मीन में शुक्र १३/५९, अप्रैल मा. ४ दि. ३०,
१३	११	बु	२८	४१	१७	४२	ध	५३	११	२७	३४	सा	२२	४५	बा	१७	४२	३०	५४	६	१४	१८	३६	२०	२४	२	कु.१५।३७	पंचक १५/३७ से, **पापमोचनी ११ व्रत सबका,**
१४	१२	गु	२६	०३	१६	३८	श	५१	३७	२६	५१	शु	२०	३९	तै	१६	३८	३०	५८	६	१३	१८	३६	२१	२५	३	कुम्भ	बुध पूर्वास्त २२/३९, **प्रदोष व्रत,** महापात २२/०७ से २५/५३ तक, C
१५	१३	शु	२१	३३	१४	४९	पूभा	४८	१०	२५	२८	शु	१७	५७	व	१४	४९	३१	०३	६	१२	१८	३७	२२	२६	४	मी.११।५२	भद्रा १४/४९ से २५/३८ तक, उ.भा. में शुक्र ६/४६,
१६	१४	श	१५	२८	१२	२२	उभा	४३	११	२३	३०	ब्र	१४	४६	श	१२	२२	३१	०७	६	१०	१८	३७	२३	२७	५	मीन	उ.षा में गुरु २६/१६, मेला पिहोवा (हरि.) D नवरात्रारम्भ, घटस्थापन
१७	३०	र	०८	१०	९	२५	रे	३७	२७	२१	०८	ऐं	११	११	ना	०९	२५	३१	११	६	०९	१८	३८	२४	२८	६	मे.२१।०८	पंचक २१/०८ तक, **अमावस्या पुण्य, चान्द्र संवत्सर २०६४ समाप्त,** D

चैत्र कृष्ण ८ रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८३८ (दोनों कुण्डलियाँ सूर्योदय काल की हैं) चैत्र कृष्ण ३० रवौ प्रातः स्टै. टा. ५/३० केतकी अहर्गणः ५८४५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	८	२	१०	८	१०	४	१०	४
१५	१६	१५	२९	२५	२७	८	१	१
४१	४३	५१	२४	५५	५	४१	३९	३९
२६	५	३०	५१	२५	३२	४१	९	९
५९	७३४	२६	१०४	६	७४	३	३	३
१६	२२	२७	८	५७	७	१८	११	११
मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
उभा ४	पूषा १	आर्द्रा ३	पूभा ३	पूषा ४	पूभा ३	मघा ३	धनि ३	मघा २

अष्टमी के दिन बुध मीन राशि में प्रवेश करेगा इसके प्रभाववश मृग-हाथी आदि वन्य पशुओं का नाश होता है एवं शासक तथा लोगों में परस्पर विरोध उत्पन्न होता है। "**धने मीने बुधो याति मारयति मृगान् गजान्। राजाविरोध कृत्तत्रचान्यथा न भविष्यति॥**" शुक्र के मीन राशि में प्रवेश से सुभिक्ष होता है। शुभफल-शांति पृथ्वी पर होती है। "**मीनराशिगते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुखसंयुक्ता भविष्यति न संशयः॥**"

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के
११	११	२	११	८	११	४	१०	४
२२	२०	१९	१२	२६	५	८	१	१
३५	२०	०	३	४०	४४	२०	१६	१६
३९	३६	४९	२२	४९	१५	२१	५४	५४
५९	८११	२७	११४	५	७४	२	३	३
२	२२	४९	१	५२	५	४२	११	११
मा उ	मा अ	मा उ	मा अ	मा उ	मा उ	व उ	व अ	व अ
रेवती २	रेवती २	आर्द्रा ४	उभा ३	उषा १	उभा १	मघा ३	धनि ३	मघा १

इस पक्ष में भी चतुर्ग्रही योग अलग-अलग ग्रहों के संयोग से बन रहा है। इस अशुभफलदायी ग्रहयोग के प्रभाव से कहीं दुर्घटना आदि से रक्तपात होता है या जलप्लावन से जन-धन की हानि होती है। शास्त्र में उल्लेख है कि यदि चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में तिथि की वृद्धि हो तथा शुक्ल पक्ष में तिथि की हानि हो तो पृथ्वी अन्न से हीन हो जाती है। "**मधुमासे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिर्यदा भवेत्। शुक्ल पक्षस्यहानिः स्यादन्नहीना तदा मही॥**"

आकाश लक्षण :- सूर्य के साथ बुध-शुक्र के स्थित होने से नीरा-सौम्या नाड़ी में होने से तेज हवा के साथ पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं-कहीं बूंदा-बांदी होगी। मैदानी भागों में गर्मी बढ़ने लगेगी। समुद्री भागों में तेज वर्षा के साथ तूफान आने की सम्भावना है। बादल-चाल के साथ तेज वायु का प्रवाह दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश में होगा।

स्मार्त्त वैष्णव विचार

पंचाङ्ग में एकादशी व्रत प्रायः स्मार्त्त वैष्णव भेद से दो दिन अलग-अलग होते हैं, स्मार्त्त व्रत पहले दिन और वैष्णवों का दूसरे दिन लिखते हैं। इनका निर्णय धर्म-शास्त्रीय व्यवस्था से पंचाङ्गों में लिखा जाता है। यदि ५४ घटी से एक पल भी दशमी अधिक हो तो वैष्णव सम्प्रदाय का व्रत एकादशी को न होकर द्वादशी में होता है। निम्बार्क सम्प्रदाय वाले कपाल वेध मानते हैं। स्मार्त्त लोग जिस समय अर्द्धरात्रि के समय अष्टमी हो उसी दिन श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी का व्रत करते हैं और वैष्णव सम्प्रदाय वाले उदय व्यापिनी अष्टमी मानते हैं।

स्मार्त्त कौन और वैष्णव कौन?- साधारण जन यह नहीं समझ पाते कि वे स्मार्त्त हैं या वैष्णव उन्हें स्मरण रखना चाहिए कि श्रुति- स्मृति को मानने वाले सभी आस्तिक जन स्मार्त्त हैं। वैसे तो द्विज-मात्र (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक सभी स्मार्त्त हैं। **'श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः।' (मनुः)** जो लोग यह समझते हैं कि मांस मदिरा प्याज लहसुन से दूर रहने वाले राम-कृष्ण-विष्णु के उपासक सब वैष्णव हैं, यह उनका भ्रम है। जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख चक्र अंकित करवाये हैं वे या जिन्होंने किसी वैष्णव सम्प्रदाय के धर्माचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा लेकर कण्ठी और तुलसी की माला धारण की हुई है वे ही वैष्णव कहला सकते है, उनको और विधवा स्त्रियों को दूसरे दिन वैष्णव व्रत करने का अधिकार है, अन्य को नहीं।

दैनिक-लग्नसारिणी देखने की विधि

इस पंचाग में दी हुई यह दैनिक लग्नसारिणी दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए हुए लग्न का समाप्तिकाल रेलवे-स्टैण्डर्ड-टाइम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा गया है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भ काल समझें। ता. ३ अप्रैल, को सारिणी में मीन लग्न के नीचे घण्टे ६ मिनट ४२ लिखे हैं, अतः मीन लग्न प्रातः ६ बजकर ४२ मिंनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे हुए घण्टा-मिनट अर्धरात्रोत्तर क्रमशः अर्ध रात्रि-पर्यन्त २४ घण्टे में लिखे हैं। जैसे रात्रि के १२ बजकर १५ मिनट की जगह घ.२४ मि.१५ लिखे हुए मिलेंगे,ऐसे ही मध्यान्ह के पश्चात् एक बजे की जगह १३,दो की जगह १४ आदि क्रमशः समझें।

लग्नसारिणी-परिवर्तन उदाहरण

किसी को इस लग्न सारिणी से अन्य स्थान का लग्न-समाप्ति-काल लाना हो तो जिस तारीख को जो लग्न लाना हो उस तारीख का वह लग्न-समाप्ति काल का घण्टा-मिनट लिखें, पश्चात-पंचांग-परिवर्तन में जिस नगर का लग्न परिवर्तन करना हो उस नगर के आगे या नगर के समीप के नगर के आगे लिखे हुए देशान्तर मिनट लें वह देशान्तर मिनट ऋण(--) हो तो ऊपर के (इस पंचांग के) लग्न समाप्ति- काल में मिलावें, देशान्तर मिनट धन(+) हो तो ऋण करें तो वह देशान्तर संस्कृत स्थानीय रेलवे टाइम का लग्न-समाप्ति-काल होगा फिर जिस स्थान का लग्न समाप्ति-काल लाना है उसके अक्षांश और क्रान्ति से चरान्तर कोष्ठक से चरान्तर साधन करें वह चरान्तर धन आया हो तो उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल में मिला दें,ऋण आया हो तो घटा देवें, तो वह स्थानीय रेलवे टाइम से स्पष्ट लग्न का समाप्ति-काल होगा उदाहरण ता. ३ अप्रैल को मीन लग्न समाप्तिकाल ६ घण्टा ४२ मिनट है, इसी लग्न का सोलन में समाप्ति-काल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि-सारिणी में दिल्ली से सोलन में समाप्तिकाल लाना है। पंचांग परिवर्तन में अक्षांशादि-सारिणी में दिल्ली से सोलन का देशान्तर मिनट ०।१२ है, वहां यह मिनट ऋण होने से ६ घण्टा ४२ मिनट में मिला दें तो ६ घं. ४२ मि. १२ सै. यह सोलन का देशान्तर संस्कृत मीन लग्न का समाप्ति-काल हुआ। इस दिन ३ अप्रैल को सूर्य की क्रांति+उत्तर ५ अंश ७ क. है और सोलन के अक्षांश ३०।५५ है इन क्रांति और अक्षांश से चरान्तर लिया तो वह १ आया, अतः उपर्युक्त देशान्तर संस्कृत लग्न समाप्तिकाल घ. ६ मि. ४३ सै. १२ यही सोलन का मीन लग्न समाप्तिकाल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र समझें। दिल्ली के समीपवर्ती नगर या ग्राम के लिए संस्कार नहीं किया जाए तो भी कोई हानि नहीं, परन्तु दूरस्थ नगरों के लिए ऊपर दिए उदाहरण में बताई प्रक्रिया के अनुसार लग्न समाप्तिकाल ला करके उपयोग करने से वह सूक्ष्म लग्न होगा।

नवांश का प्रारम्भ और अन्त लाने का उदाहरण

ऊपर कहे अनुसार जिस लग्न में नवांश-समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्ति-काल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें, शेष घं. मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे, उन मिनटों में ९ का भाग देवें, लब्ध १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणा व. फिर ९ का भाग देने पर सैकण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणा कर जो मिनट हो वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आयेगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समाप्ति-काल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारंभ मकर से, मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। उदाहरणार्थ (--) उपर्युक्त सोलन का आया हुआ मेषारम्भ समय घं. ६ मि. ४३ सै.१२ तथा अन्त घंटा ८ मिनट १७ अन्त में प्रारम्भ घटाया तो घंटा १ मि. ३३ इसके मिनट किये तो मिनट ९३ हुए इसमें ९ का भाग देने पर मिनट १० सै. २० यह एक नवांश का मान प्राप्त हुआ। हमको मेष लग्न में वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त समय लेना है तो मेषादि से ७ नवांश मुक्त हुए, अतः एक नवांश के मान (मि.१० से. २०) को ७ से गुणा किया तो घंटा १ मि. १२ सै. २० आये, यह घण्टादि मेष लग्न के प्रारम्भ समय घंटा ६ मि. ४३ में जोड़ दिये तो वृश्चिक नवांश का प्रारम्भ समय घं. ७ मिनट ५५ सै. २० हुआ, इसी में एक नवांश का मान मि. १० से. २० जोड़ें तो घण्टा ८ मि. ५ से. २० हुआ वह वृश्चिक नवांश का समाप्ति-काल हुआ। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त्त योग्य समय में होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश-सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

अप्रैल की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ
१	६।५०	८।२३	१०।२२	१२।३५	१४।५४	१७।११	१९।२९	२१।४९	२४।०७	२।११	३।५४	५।२२
२	६।४६	८।२०	१०।१८	१२।३१	१४।५०	१७।०७	१९।२५	२१।४५	२४।०३	२।०७	३।५०	५।१८
३	६।४२	८।१७	१०।१४	१२।२७	१४।४६	१७।०३	१९।२१	२१।४१	२३।५९	२।०४	३।४६	५।१४
४	६।३९	८।१३	१०।१०	१२।२३	१४।४२	१६।५९	१९।१७	२१।३७	२३।५५	१।५९	३।४२	५।१०
५	६।३५	८।१०	१०।०६	१२।१९	१४।३८	१६।५५	१९।१३	२१।३३	२३।५१	१।५५	३।३८	५।०६
६	६।३१	८।०६	१०।०२	१२।१५	१४।३४	१६।५१	१९।०९	२१।२९	२३।४७	१।५१	३।३४	५।०२
७	६।२७	८।०३	०९।५७	१२।११	१४।३०	१६।४७	१९।०५	२१।२५	२३।४३	१।४७	३।३०	४।५७
८	६।२२	७।५८	०९।५३	१२।०६	१४।२५	१६।४३	१९।००	२१।२०	२३।३८	१।४२	३।२५	४।५३
९	६।१८	७।५४	०९।४९	१२।०२	१४।२१	१६।३९	१८।५६	२१।१६	२३।३४	१।३८	३।२१	४।४९
१०	६।१४	७।५०	०९।४५	११।५८	१४।१७	१६।३५	१८।५२	२१।१२	२३।३०	१।३४	३।१७	४।४५
११	६।१०	७।४६	०९।४१	११।५४	१४।१३	१६।३१	१८।४८	२१।०८	२३।२६	१।३०	३।१३	४।४२
१२	६।०६	७।४३	०९।३७	११।५१	१४।१०	१६।२७	१८।४५	२१।०४	२३।२३	१।२७	३।१०	४।३८
१३	६।०३	७।३९	०९।३४	११।४७	१४।०६	१६।२४	१८।४१	२१।००	२३।१९	१।२३	३।०६	४।३४
१४	५।५९	७।३५	०९।३०	११।४३	१४।०२	१६।२०	१८।३७	२०।५६	२३।१५	१।१९	३।०२	४।३०
१५	५।५६	७।३२	०९।२७	११।४०	१३।५९	१६।१७	१८।३४	२०।५३	२३।१२	१।१६	२।५९	४।२७
१६	५।५२	७।२८	०९।२३	११।३६	१३।५५	१६।१३	१८।३०	२०।४९	२३।०८	१।१२	२।५५	४।२३
१७	५।४८	७।२४	०९।१९	११।३२	१३।५१	१६।०९	१८।२६	२०।४५	२३।०४	१।०८	२।५१	४।१९
१८	५।४४	७।२०	०९।१५	११।२८	१३।४७	१६।०५	१८।२२	२०।४१	२३।००	१।०४	२।४७	४।१५
१९	५।४०	७।१६	०९।११	११।२४	१३।४३	१६।०२	१८।१८	२०।३७	२२।५६	१।०१	२।४३	४।११
२०	५।३६	७।१२	०९।०७	११।२०	१३।३९	१५।५७	१८।१४	२०।३३	२२।५२	०।५६	२।३९	४।०७
२१	५।३२	७।०७	०९।०३	११।१६	१३।३५	१५।५३	१८।१०	२०।२९	२२।४८	०।५२	२।३५	४।०३
२२	५।२७	७।०३	०८।५८	११।११	१३।३०	१५।४८	१८।०५	२०।२४	२२।४३	०।४७	२।३०	३।५८
२३	५।२३	६।५९	०८।५४	११।०७	१३।२६	१५।४४	१८।०१	२०।२०	२२।३९	०।४३	२।२६	३।५४
२४	५।१९	६।५५	०८।५०	११।०३	१३।२२	१५।४०	१७।५७	२०।१६	२२।३५	०।३९	२।२२	३।५०
२५	५।१५	६।५१	०८।४६	१०।५९	१३।१८	१५।३६	१७।५३	२०।१२	२२।३१	०।३५	२।१८	३।४६
२६	५।११	६।४७	०८।४२	१०।५५	१३।१४	१५।३२	१७।४९	२०।०८	२२।२७	०।३१	२।१४	३।४२
२७	५।०६	६।४२	०८।३७	१०।५०	१३।१०	१५।२८	१७।४५	२०।०४	२२।२२	०।२६	२।०९	३।३७
२८	५।०३	६।३८	०८।३३	१०।४६	१३।०६	१५।२४	१७।४१	२०।००	२२।१८	०।२२	२।०५	३।३३
२९	४।५८	६।३४	०८।२९	१०।४२	१३।०२	१५।२०	१७।३७	१९।५६	२२।१४	०।१८	२।०१	३।२९
३०	४।५५	६।३१	०८।२६	१०।३९	१२।५९	१५।१७	१७।३४	१९।५३	२२।११	०।१५	१।५८	३।२६

मई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१	६।२६	८।२१	१०।३३	१२।५३	१५।११	१७।२८	१९।४८	२२।०६	००।०९	०१।५३	०३।२२	०४।४६
२	६।२२	८।१७	१०।२९	१२।४९	१५।०७	१७।२४	१९।४४	२२।०२	००।०५	०१।४९	०३।१८	०४।४२
३	६।१८	८।१३	१०।२५	१२।४५	१५।०३	१७।२०	१९।४०	२१।५८	००।०१	०१।४५	०३।१४	०४।३८
४	६।१५	८।१०	१०।२२	१२।४१	१५।००	१७।१७	१९।३७	२१।५५	२३।५८	०१।४२	०३।११	०४।३५
५	६।११	८।०६	१०।१८	१२।३७	१४।५६	१७।१३	१९।३३	२१।५१	२३।५४	०१।३७	०३।०७	०४।३१
६	६।०७	८।०२	१०।१४	१२।३३	१४।५२	१७।०९	१९।२९	२१।४७	२३।५०	०१।३४	०३।०३	०४।२७
७	६।०३	७।५७	१०।१०	१२।२९	१४।४८	१७।०५	१९।२५	२१।४३	२३।४५	०१।३०	०२।५९	०४।२३
८	५।५८	७।५४	१०।०६	१२।२५	१४।४४	१७।०१	१९।२१	२१।३९	२३।४२	०१।२६	०२।५५	०४।१९
९	५।५४	७।५०	१०।०२	१२।२१	१४।४०	१६।५७	१९।१७	२१।३५	२३।३७	०१।२२	०२।५१	०४।१४
१०	५।५०	७।४६	०९।५७	१२।१७	१४।३६	१६।५३	१९।१३	२१।३१	२३।३४	०१।१८	०२।४७	०४।१०
११	५।४५	७।४१	०९।५३	१२।१३	१४।३१	१६।४८	१९।०८	२१।२६	२३।२९	०१।१३	०२।४२	०४।०५
१२	५।४१	७।३७	०९।४९	१२।०९	१४।२७	१६।४४	१९।०४	२१।२२	२३।२५	०१।०९	०२।३८	०४।०२
१३	५।३८	७।३४	०९।४६	१२।०५	१४।२४	१६।४१	१९।०१	२१।१९	२३।२२	०१।०६	०२।३५	०३।५८
१४	५।३४	७।३०	०९।४२	१२।०१	१४।२०	१६।३७	१८।५७	२१।१५	२३।१८	०१।०२	०२।३१	०३।५४
१५	५।३१	७।२६	०९।३७	११।५७	१४।१६	१६।३३	१८।५३	२१।११	२३।१४	००।५७	०२।२७	०३।५१
१६	५।२७	७।२३	०९।३५	११।५४	१४।१३	१६।३०	१८।५०	२१।०८	२३।११	००।५५	०२।२४	०३।४८
१७	५।२५	७।२०	०९।३२	११।५०	१४।१०	१६।२७	१८।४७	२१।०५	२३।०८	००।५२	०२।२१	०३।४५
१८	५।२१	७।१६	०९।२८	११।४६	१४।०६	१६।२३	१८।४३	२१।०१	२३।०४	००।४८	०२।१७	०३।४१
१९	५।१७	७।१३	०९।२५	११।४३	१४।०३	१६।२०	१८।४०	२०।५८	२३।०१	००।४५	०२।१४	०३।३८
२०	५।१४	७।०९	०९।२१	११।४०	१३।५९	१६।१६	१८।३६	२०।५४	२२।५७	००।४१	०२।१०	०३।३४
२१	५।१०	७।०५	०९।१७	११।३६	१३।५५	१६।१२	१८।३२	२०।५०	२२।५३	००।३७	०२।०६	०३।३०
२२	५।०६	७।०१	०९।१३	११।३३	१३।५१	१६।०८	१८।२८	२०।४६	२२।४९	००।३३	०२।०२	०३।२५
२३	५।०३	६।५७	०९।०९	११।२९	१३।४७	१६।०४	१८।२४	२०।४२	२२।४५	००।२९	०१।५८	०३।२२
२४	४।५८	६।५३	०९।०५	११।२५	१३।४३	१६।००	१८।२०	२०।३८	२२।४१	००।२५	०१।५४	०३।१८
२५	४।५४	६।४९	०९।०२	११।२१	१३।३९	१५।५६	१८।१६	२०।३४	२२।३७	००।२१	०१।५०	०३।१४
२६	४।५०	६।४५	०८।५७	११।१७	१३।३५	१५।५२	१८।१२	२०।३०	२२।३३	००।१७	०१।४६	०३।१०
२७	४।४६	६।४१	०८।५३	११।१२	१३।३१	१५।४८	१८।०८	२०।२६	२२।२९	००।१३	०१।४२	०३।०६
२८	४।४२	६।३७	०८।४९	११।०८	१३।२७	१५।४४	१८।०४	२०।२२	२२।२५	००।०९	०१।३८	०३।०३
२९	४।३८	६।३३	०८।४५	११।०३	१३।२३	१५।४०	१८।००	२०।१७	२२।२१	००।०५	०१।३४	०२।५८
३०	४।३४	६।२९	०८।४१	१०।५९	१३।१९	१५।३६	१७।५६	२०।१४	२२।१७	००।०२	०१।३०	०२।५४

जून की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	०६।१९	०८।३१	१०।५१	१३।०९	१५।२६	१७।४६	२०।०४	२२।०८	२३।५२	०१।२०	०२।४५	०४।२१
२	०६।१५	०८।२८	१०।४७	१३।०५	१५।२२	१७।४२	२०।००	२२।०३	२३।४७	०१।१५	०२।४०	०४।१६
३	०६।११	०८।२४	१०।४३	१३।०१	१५।१८	१७।३८	१९।५६	२१।५९	२३।४३	०१।११	०२।३६	०४।१२
४	०६।०७	०८।२०	१०।३९	१२।५७	१५।१४	१७।३४	१९।५२	२१।५५	२३।३९	०१।०७	०२।३२	०४।०८
५	०६।०३	०८।१६	१०।३५	१२।५३	१५।१०	१७।३०	१९।४८	२१।५४	२३।३५	०१।०३	०२।२८	०४।०४
६	०५।५९	०८।१२	१०।३१	१२।४९	१५।०६	१७।२६	१९।४४	२१।४७	२३।३१	००।५९	०२।२४	०४।००
७	०५।५५	०८।०८	१०।२७	१२।४५	१५।०२	१७।२२	१९।४०	२१।४३	२३।२७	००।५५	०२।२०	०३।५६
८	०५।५२	०८।०५	१०।२४	१२।४२	१४।५९	१७।१९	१९।३७	२१।४०	२३।२४	००।५२	०२।१७	०३।५३
९	०५।४८	०८।०१	१०।२०	१२।३८	१४।५५	१७।१५	१९।३३	२१।३६	२३।२०	००।४८	०२।१३	०३।४९
१०	०५।४४	०७।५७	१०।१६	१२।३४	१४।५१	१७।११	१९।२९	२१।३२	२३।१६	००।४४	०२।०९	०३।४५
११	०५।४०	०७।५३	१०।१२	१२।३०	१४।४७	१७।०७	१९।२५	२१।२८	२३।१२	००।४०	०२।०५	०३।४१
१२	०५।३६	०७।४९	१०।०८	१२।२६	१४।४३	१७।०३	१९।२१	२१।२४	२३।०८	००।३६	०२।०१	०३।३७
१३	०५।३२	०७।४५	१०।०४	१२।२२	१४।३९	१६।५९	१९।१७	२१।२०	२३।०४	००।३२	०१।५७	०३।३३
१४	०५।२९	०७।४१	१०।०१	१२।१९	१४।३६	१६।५६	१९।१४	२१।१७	२३।०१	००।२९	०१।५३	०३।३०
१५	०५।२५	०७।३८	०९।५७	१२।१५	१४।३२	१६।५२	१९।१०	२१।१३	२२।५७	००।२५	०१।५०	०३।२६
१६	०५।२१	०७।३४	०९।५३	१२।११	१४।२८	१६।४८	१९।०६	२१।०९	२२।५३	००।२१	०१।४६	०३।२२
१७	०५।१७	०७।३०	०९।४९	१२।०७	१४।२४	१६।४४	१९।०२	२१।०५	२२।४९	००।१७	०१।४२	०३।१८
१८	०५।१३	०७।२६	०९।४५	१२।०३	१४।२१	१६।४०	१८।५८	२१।०१	२२।४५	००।१३	०१।३८	०३।१४
१९	०५।१०	०७।२३	०९।४२	१२।००	१४।१८	१६।३७	१८।५५	२०।५७	२२।४२	००।१०	०१।३५	०३।११
२०	०५।०६	०७।१९	०९।३८	११।५६	१४।१४	१६।३३	१८।५१	२०।५४	२२।३८	००।०६	०१।३१	०३।०७
२१	०५।०२	०७।१५	०९।३४	११।५२	१४।१०	१६।२९	१८।४७	२०।५०	२२।३४	००।०२	०१।२७	०३।०३
२२	०४।५८	०७।११	०९।३०	११।४८	१४।०६	१६।२५	१८।४३	२०।४६	२२।३०	२३।५८	०१।२३	०२।५९
२३	०४।५४	०७।०७	०९।२६	११।४४	१४।०२	१६।२१	१८।३९	२०।४२	२२।२६	२३।५४	०१।१९	०२।५५
२४	०४।५०	०७।०३	०९।२२	११।४०	१३।५८	१६।१७	१८।३५	२०।३८	२२।२२	२३।५०	०१।१५	०२।५१
२५	०४।४७	०७।००	०९।१९	११।३७	१३।५५	१६।१४	१८।३२	२०।३५	२२।१९	२३।४७	०१।१२	०२।४८
२६	०४।४३	०६।५६	०९।१५	११।३३	१३।५१	१६।१०	१८।२८	२०।३१	२२।१५	२३।४३	०१।०८	०२।४४
२७	०४।३९	०६।५२	०९।११	११।२९	१३।४७	१६।०६	१८।२४	२०।२७	२२।११	२३।३९	०१।०४	०२।४०
२८	०४।३५	०६।४८	०९।०७	११।२५	१३।४३	१६।०२	१८।२०	२०।२३	२२।०७	२३।३५	०१।००	०२।३६
२९	०४।३१	०६।४४	०९।०३	११।२१	१३।३९	१५।५८	१८।१६	२०।१९	२२।०३	२३।३१	००।५५	०२।३२
३०	०४।२७	०६।४०	०८।५९	११।१७	१३।३५	१५।५४	१८।१२	२०।१५	२१।५९	२३।२७	००।५२	०२।२८

जुलाई की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ
१	०६।३६	०८।५६	११।१३	१३।३१	१५।५१	१८।०८	२०।१२	२१।५५	२३।२४	००।४९	०२।२४	०४।१९
२	०६।३२	०८।५२	११।०९	१३।२७	१५।४७	१८।०४	२०।०८	२१।५१	२३।२०	००।४५	०२।२०	०४।१५
३	०६।२८	०८।४८	११।०५	१३।२३	१५।४३	१८।००	२०।०४	२१।४७	२३।१६	००।४१	०२।१६	०४।११
४	०६।२४	०८।४४	११।०१	१३।१९	१५।३९	१७।५६	२०।०१	२१।४३	२३।१२	००।३७	०२।१२	०४।०७
५	०६।२०	०८।४०	१०।५७	१३।१५	१५।३५	१७।५२	१९।५७	२१।३९	२३।०८	००।३३	०२।०८	०४।०३
६	०६।१६	०८।३६	१०।५३	१३।११	१५।३१	१७।४८	१९।५३	२१।३५	२३।०४	००।२९	०२।०४	०३।५९
७	०६।१२	०८।३२	१०।४९	१३।०७	१५।२७	१७।४४	१९।४९	२१।३१	२३।००	००।२५	०२।००	०३।५५
८	०६।०८	०८।२८	१०।४५	१३।०३	१५।२३	१७।४०	१९।४५	२१।२७	२२।५६	००।२१	०१।५६	०३।५१
९	०६।०४	०८।२४	१०।४१	१२।५९	१५।१९	१७।३६	१९।४१	२१।२३	२२।५२	००।१७	०१।५२	०३।४७
१०	०६।००	०८।२०	१०।३७	१२।५५	१५।१५	१७।३२	१९।३७	२१।१९	२२।४८	००।१३	०१।४८	०३।४३
११	०५।५७	०८।१७	१०।३४	१२।५२	१५।१२	१७।२९	१९।३४	२१।१६	२२।४५	००।१०	१०।४५	०३।४०
१२	०५।५३	०८।१३	१०।३०	१२।४८	१५।०८	१७।२५	१९।३०	२१।११	२२।४१	००।०६	०१।४१	०३।३६
१३	०५।४९	०८।०९	१०।२६	१२।४४	१५।०४	१७।२१	१९।२६	२१।०८	२२।३७	००।०२	०१।३७	०३।३२
१४	०५।४५	०८।०५	१०।२२	१२।४०	१५।००	१७।१७	१९।२२	२१।०४	२२।३३	२३।५८	०१।३३	०३।२८
१५	०५।४१	०८।०१	१०।१८	१२।३६	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१।००	२२।२९	२३।५४	०१।२९	०३।२४
१६	०५।३७	०७।५७	१०।१४	१२।३२	१४।५२	१७।०९	१९।१४	२०।५६	२२।२५	२३।५०	०१।२५	०३।२०
१७	०५।३३	०७।५३	१०।१०	१२।२८	१४।४८	१७।०५	१९।१०	२०।५१	२२।२१	२३।४६	०१।२१	०३।१६
१८	०५।२९	०७।४९	१०।०६	१२।२४	१४।४५	१७।०१	१९।०८	२०।४८	२२।१७	२३।४२	०१।१७	०३।१२
१९	०५।२५	०७।४५	१०।०२	१२।२०	१४।४०	१६।५७	१९।०२	२०।४४	२२।१३	२३।३८	०१।१३	०३।०८
२०	०५।२१	०७।४१	०९।५८	१२।१६	१४।३६	१६।५३	१८।५८	२०।४०	२२।०९	२३।३४	०१।०९	०३।०४
२१	०५।१७	०७।३७	०९।५४	१२।१२	१४।३२	१६।४९	१८।५४	२०।३६	२२।०५	२३।३०	०१।०५	०३।००
२२	०५।१३	०७।३३	०९।५०	१२।०८	१४।२८	१६।४५	१८।५०	२०।३२	२२।०१	२३।२६	०१।०१	०२।५४
२३	०५।१०	०७।३०	०९।४७	१२।०५	१४।२५	१६।४२	१८।४७	२०।२९	२१।५८	२३।२३	००।५८	०२।५१
२४	०५।०६	०७।२६	०९।४४	१२।०१	१४।२१	१६।३८	१८।४३	२०।२५	२१।५४	२३।१९	००।५४	०२।४७
२५	०५।०२	०७।२२	०९।४०	११।५७	१४।१७	१६।३४	१८।३९	२०।२१	२१।५०	२३।१५	००।५०	०२।४३
२६	०४।५८	०७।१८	०९।३६	११।५३	१४।१३	१६।३०	१८।३५	२०।१७	२१।४६	२३।११	००।४६	०२।३९
२७	०४।५४	०७।१४	०९।३२	११।४९	१४।०९	१६।२६	१८।३१	२०।१२	२१।४२	२३।०७	००।४२	०२।३५
२८	०४।५०	०७।१०	०९।२८	११।४५	१४।०५	१६।२२	१८।२७	२०।०९	२१।३८	२३।०३	००।३८	०२।३१
२९	०४।४६	०७।०६	०९।२४	११।४१	१४।०१	१६।१८	१८।२३	२०।०५	२१।३४	२२।५९	००।३४	०२।२७
३०	०४।४२	०७।०२	०९।२०	११।३७	१३।५७	१६।१४	१८।१९	२०।०१	२१।३०	२२।५४	००।३०	०२।२३
३१	०४।३९	०६।५९	०९।१७	११।३४	१३।५४	१६।११	१८।१६	१९।५८	२१।२७	२२।५२	००।२७	०२।२०

अगस्त की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन
१	०६।५५	०९।१३	११।३१	१३।५०	१६।०८	१८।११	१९।५५	२१।२३	२२।४८	००।२४	०२।१८	०४।३१
२	०६।५१	०९।०९	११।२७	१३।४६	१६।०४	१८।०७	१९।५१	२१।१९	२२।४४	००।२०	०२।१४	०४।२७
३	०६।४७	०९।०५	११।२३	१३।४२	१६।००	१८।०३	१९।४७	२१।१५	२२।४०	००।१६	०२।१०	०४।२३
४	०६।४३	०९।०१	११।१९	१३।३७	१५।५६	१७।५९	१९।४३	२१।११	२२।३६	००।१२	०२।०६	०४।१९
५	०६।३९	०८।५७	११।१५	१३।३४	१५।५२	१७।५५	१९।३९	२१।०७	२२।३२	००।०८	०२।०२	०४।१५
६	०६।३५	०८।५३	११।११	१३।३०	१५।४८	१७।५१	१९।३५	२१।०३	२२।२८	००।०४	०१।५८	०४।११
७	०६।३१	०८।४९	११।०७	१३।२६	१५।४४	१७।४७	१९।३१	२०।५९	२२।२४	००।००	०१।५४	०४।०७
८	०६।२८	०८।४६	११।०४	१३।२३	१५।४१	१७।४४	१९।२८	२०।५६	२२।२१	२३।५७	०१।५१	०४।०४
९	०६।२४	०८।४२	११।००	१३।१९	१५।३७	१७।४०	१९।२४	२०।५२	२२।१७	२३।५३	०१।४७	०४।००
१०	०६।२०	०८।३८	१०।५६	१३।१५	१५।३३	१७।३६	१९।२०	२०।४८	२२।१३	२३।४९	०१।४३	०३।५६
११	०६।१६	०८।३४	१०।५२	१३।११	१५।२९	१७।३२	१९।१६	२०।४४	२२।०९	२३।४५	०१।३९	०३।५२
१२	०६।१२	०८।३०	१०।४८	१३।०७	१५।२५	१७।२८	१९।१२	२०।४०	२२।०५	२३।४१	०१।३५	०३।४८
१३	०६।०८	०८।२६	१०।४४	१३।०३	१५।२१	१७।२४	१९।०८	२०।३६	२२।०१	२३।३७	०१।३१	०३।४४
१४	०६।०४	०८।२२	१०।४०	१२।५९	१५।१७	१७।२०	१९।०४	२०।३२	२१।५७	२३।३३	०१।२७	०३।४०
१५	०६।००	०८।१८	१०।३६	१२।५५	१५।१३	१७।१६	१९।००	२०।२८	२१।५३	२३।२९	०१।२३	०३।३६
१६	०५।५५	०८।१३	१०।३१	१२।५०	१५।०८	१७।११	१८।५५	२०।२३	२१।४८	२३।२४	०१।१८	०३।३२
१७	०५।५१	०८।०९	१०।२७	१२।४६	१५।०४	१७।०७	१८।५१	२०।१९	२१।४४	२३।२०	०१।१४	०३।२७
१८	०५।४७	०८।०५	१०।२३	१२।४२	१५।००	१७।०३	१८।४७	२०।१५	२१।४०	२३।१६	०१।१०	०३।२३
१९	०५।४३	०८।०१	१०।१९	१२।३८	१४।५६	१६।५९	१८।४३	२०।११	२१।३६	२३।१२	०१।०६	०३।१९
२०	०५।३९	०७।५७	१०।१५	१२।३४	१४।५२	१६।५५	१८।३९	२०।०७	२१।३२	२३।०८	०१।०२	०३।१५
२१	०५।३५	०७।५३	१०।११	१२।३०	१४।४८	१६।५१	१८।३५	२०।०३	२१।२८	२३।०४	००।५८	०३।११
२२	०५।३१	०७।४९	१०।०७	१२।२६	१४।४४	१६।४७	१८।३१	१९।५९	२१।२४	२३।००	००।५४	०३।०७
२३	०५।२७	०७।४५	१०।०३	१२।२२	१४।४०	१६।४३	१८।२७	१९।५५	२१।२०	२२।५६	००।५०	०३।०३
२४	०५।२३	०७।४१	०९।५९	१२।१८	१४।३६	१६।३९	१८।२३	१९।५१	२१।१६	२२।५२	००।४६	०२।५९
२५	०५।१९	०७।३७	०९।५५	१२।१४	१४।३२	१६।३५	१८।१९	१९।४७	२१।१२	२२।४८	००।४२	०२।५५
२६	०५।१६	०७।३४	०९।५२	१२।११	१४।२९	१६।३२	१८।१६	१९।४४	२१।०९	२२।४५	००।३९	०२।५२
२७	०५।१२	०७।३०	०९।४८	१२।०७	१४।२५	१६।२८	१८।१२	१९।४०	२१।०५	२२।४१	००।३५	०२।४८
२८	०५।०८	०७।२६	०९।४४	१२।०३	१४।२१	१६।२४	१८।०८	१९।३६	२१।०१	२२।३७	००।३१	०२।४४
२९	०५।०४	०७।२२	०९।४०	११।५९	१४।१७	१६।२०	१८।०४	१९।३२	२०।५७	२२।३३	००।२७	०२।४०
३०	०५।०१	०७।१९	०९।३७	११।५६	१४।१४	१६।१७	१८।०१	१९।२९	२०।५४	२२।३०	००।२४	०२।३७
३१	०४।५८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सितम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क
१	०७।१२	०९।३०	११।५०	१४।०७	१६।११	१७।५४	१९।२३	२०।४८	२२।२३	००।१८	०२।३०	०४।५०
२	०७।०८	०९।२६	११।४६	१४।०३	१६।०७	१७।५०	१९।१९	२०।४४	२२।१९	००।१४	०२।२६	०४।४६
३	०७।०४	०९।२२	११।४२	१३।५९	१६।०३	१७।४६	१९।१५	२०।४०	२२।१५	००।१०	०२।२२	०४।४२
४	०७।००	०९।१८	११।३८	१३।५५	१५।५९	१७।४२	१९।११	२०।३६	२२।११	००।०६	०२।१८	०४।३८
५	०६।५६	०९।१४	११।३४	१३।५१	१५।५५	१७।३८	१९।०७	२०।३२	२२।०७	००।०२	०२।१४	०४।३४
६	०६।५२	०९।१०	११।३०	१३।४७	१५।५१	१७।३४	१९।०३	२०।२८	२२।०३	२३।५८	०२।१०	०४।३०
७	०६।४८	०९।०६	११।२६	१३।४३	१५।४७	१७।३०	१८।५९	२०।२४	२१।५९	२३।५४	०२।०६	०४।२६
८	०६।४४	०९।०२	११।२२	१३।३९	१५।४३	१७।२६	१८।५५	२०।२०	२१।५५	२३।५०	०२।०२	०४।२२
९	०६।४०	०८।५८	११।१८	१३।३२	१५।३९	१७।२२	१८।५१	२०।१६	२१।५१	२३।४६	०१।५८	०४।१८
१०	०६।३६	०८।५४	११।१४	१३।३१	१५।३५	१७।१८	१८।४७	२०।१२	२१।४७	२३।४२	०१।५४	०४।१४
११	०६।३२	०८।५०	११।१०	१३।२७	१५।३१	१७।१४	१८।४३	२०।०८	२१।४३	२३।३७	०१।५०	०४।१०
१२	०६।२८	०८।४६	११।०६	१३।२३	१५।२७	१७।१०	१८।३९	२०।०४	२१।३९	२३।३४	०१।४६	०४।०६
१३	०६।२४	०८।४२	११।०२	१३।१९	१५।२३	१७।०६	१८।३५	२०।००	२१।३५	२३।३०	०१।४२	०४।०२
१४	०६।२२	०८।३८	१०।५८	१३।१५	१५।१९	१७।०२	१८।३१	१९।५६	२१।३१	२३।२६	०१।३८	०३।५८
१५	०६।१६	०८।३४	१०।५४	१३।११	१५।१५	१६।५८	१८।२७	१९।५२	२१।२७	२३।२२	०१।३४	०३।५४
१६	०६।११	०८।२९	१०।४९	१३।०६	१५।१०	१६।५३	१८।२२	१९।४७	२१।२२	२३।१७	०१।२९	०३।५०
१७	०६।०७	०८।२५	१०।४५	१३।०२	१५।०६	१६।४९	१८।१८	१९।४३	२१।१८	२३।१३	०१।२५	०३।४६
१८	०६।०३	०८।२१	१०।४१	१२।५८	१५।०२	१६।४५	१८।१४	१९।३९	२१।१४	२३।०९	०१।२१	०३।४२
१९	०५।५९	०८।१७	१०।३७	१२।५४	१४।५८	१६।४१	१८।१०	१९।३५	२१।१०	२३।०५	०१।१७	०३।३७
२०	०५।५५	०८।१३	१०।३३	१२।५०	१४।५४	१६।३७	१८।०४	१९।३१	२१।०६	२३।०१	०१।१३	०३।३३
२१	०५।५१	०८।०९	१०।२९	१२।४६	१४।५०	१६।३३	१८।००	१९।२७	२१।०२	२२।५७	०१।०९	०३।२९
२२	०५।४७	०८।०५	१०।२५	१२।४२	१४।४६	१६।२९	१७।५६	१९।२३	२०।५८	२२।५३	०१।०५	०३।२५
२३	०५।४३	०८।०१	१०।२१	१२।३८	१४।४२	१६।२५	१७।५२	१९।१९	२०।५४	२२।४९	०१।०१	०३।२१
२४	०५।३९	०७।५७	१०।१७	१२।३४	१४।३८	१६।२१	१७।४८	१९।१५	२०।५०	२२।४५	००।५७	०३।१७
२५	०५।३५	०७।५३	१०।१३	१२।३०	१४।३४	१६।१७	१७।४४	१९।११	२०।४६	२२।४१	००।५३	०३।१३
२६	०५।३१	०७।४९	१०।०९	१२।२६	१४।३०	१६।१३	१७।४०	१९।०७	२०।४२	२२।३७	००।४९	०३।०९
२७	०५।२७	०७।४५	१०।०५	१२।२२	१४।२६	१६।०९	१७।३६	१९।०३	२०।३८	२२।३३	००।४५	०३।०५
२८	०५।२३	०७।४१	१०।०१	१२।१८	१४।२२	१६।०५	१७।३२	१८।५९	२०।३४	२२।२९	००।४१	०३।०१
२९	०५।१९	०७।३७	०९।५७	१२।१४	१४।१८	१६।०१	१७।२८	१८।५५	२०।३०	२२।२५	००।३७	०२।५७
३०	०५।१४	०७।३४	०९।५४	१२।११	१४।१५	१५।५८	१७।२५	१८।५२	२०।२७	२२।२२	००।३३	०२।५४

अक्टूबर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह
१	०७३०	०९५०	१२०७	१४११	१५५४	१७२१	१८४८	२०२३	२२१८	००३०	०२५०	०५०८
२	०७२६	०९४६	१२०३	१४०७	१५५०	१७१७	१८४४	२०१९	२२१४	००२६	०२४६	०५०४
३	०७२२	०९४२	११५९	१४०३	१५४६	१७१३	१८४०	२०१५	२२१०	००२२	०२४२	०५००
४	०७१८	०९३८	११५५	१३५९	१५४२	१७०९	१८३६	२०११	२२०६	००१८	०२३८	०४५६
५	०७१४	०९३४	११५१	१३५५	१५३८	१७०५	१८३२	२००७	२२०२	००१४	०२३४	०४५२
६	०७१०	०९३०	११४७	१३५१	१५३४	१७०१	१८२८	२००३	२१५८	००१०	०२३०	०४४८
७	०७०६	०९२६	११४३	१३४७	१५३०	१६५७	१८२४	१९५९	२१५४	०००६	०२२६	०४४४
८	०७०२	०९२२	११३९	१३४३	१५२६	१६५३	१८२०	१९५५	२१५०	०००२	०२२२	०४४०
९	०६५८	०९१८	११३५	१३३९	१५२२	१६४९	१८१६	१९५१	२१४६	२३५८	०२१८	०४३६
१०	०६५३	०९१३	११३०	१३३४	१५१७	१६४४	१८११	१९४६	२१४२	२३५३	०२१३	०४३१
११	०६४९	०९०९	११२६	१३३०	१५१३	१६४०	१८०७	१९४२	२१३७	२३४९	०२०९	०४२७
१२	०६४५	०९०५	११२२	१३२६	१५०९	१६३६	१८०३	१९३८	२१३३	२३४५	०२०५	०४२३
१३	०६४१	०९०१	१११८	१३२२	१५०५	१६३२	१७५९	१९३४	२१२९	२३४१	०२०१	०४१९
१४	०६३८	०८५८	१११५	१३१९	१५०२	१६२९	१७५६	१९३१	२१२६	२३३८	०१५८	०४१६
१५	०६३४	०८५४	११११	१३१५	१४५८	१६२५	१७५२	१९२७	२१२२	२३३४	०१५४	०४१२
१६	०६३०	०८५०	११०७	१३११	१४५४	१६२१	१७४८	१९२३	२११८	२३३०	०१५०	०४०८
१७	०६२५	०८४५	११०२	१३०६	१४४९	१६१६	१७४३	१९१८	२११३	२३२५	०१४५	०४०३
१८	०६२१	०८४१	१०५८	१३०२	१४४५	१६१२	१७३९	१९१४	२१०९	२३२१	०१४१	०३५९
१९	०६१७	०८३७	१०५४	१२५८	१४४१	१६०८	१७३५	१९१०	२१०५	२३१७	०१३७	०३५५
२०	०६१३	०८३३	१०५०	१२५४	१४३७	१६०४	१७३१	१९०६	२१०१	२३१३	०१३३	०३५१
२१	०६०९	०८२९	१०४६	१२५०	१४३३	१६००	१७२७	१९०२	२०५७	२३०९	०१२९	०३४७
२२	०६०५	०८२५	१०४२	१२४६	१४२९	१५५६	१७२३	१८५८	२०५३	२३०५	०१२५	०३४३
२३	०६०१	०८२१	१०३८	१२४२	१४२५	१५५२	१७१९	१८५४	२०४९	२३०१	०१२१	०३३९
२४	०५५७	०८१७	१०३४	१२३८	१४२१	१५४८	१७१५	१८५०	२०४५	२२५७	०११७	०३३५
२५	०५५३	०८१३	१०३०	१२३४	१४१७	१५४४	१७११	१८४६	२०४१	२२५३	०११३	०३३१
२६	०५५०	०८१०	१०२७	१२३१	१४१४	१५४१	१७०८	१८४३	२०३७	२२५०	०११०	०३२८
२७	०५४६	०८०६	१०२३	१२२७	१४१०	१५३७	१७०४	१८३९	२०३२	२२४६	०१०६	०३२४
२८	०५४२	०८०२	१०१९	१२२३	१४०६	१५३३	१७००	१८३५	२०२९	२२४२	०१०२	०३२०
२९	०५३८	०७५८	१०१५	१२१९	१४०२	१५२९	१६५६	१८३१	२०२५	२२३८	००५८	०३१६
३०	०५३४	०७५४	१०११	१२१५	१३५८	१५२५	१६५२	१८२७	२०२१	२२३४	००५४	०३१२
३१	०५३०	०७५०	१००७	१२११	१३५४	१५२२	१६४८	१८२३	२०१७	२२३०	००५०	०३०७

नवम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	०७४५	१००३	१२०७	१३५०	१५१९	१६४३	१८१९	२०१४	२२२६	००४६	०३०३	०५२१
२	०७४१	०९५९	१२०३	१३४६	१५१५	१६३९	१८१५	२०१०	२२२२	००४२	०२५९	०५१७
३	०७३७	०९५५	११५९	१३४२	१५११	१६३५	१८११	२००६	२२१८	००३८	०२५५	०५१३
४	०७३३	०९५१	११५५	१३३८	१५०७	१६३१	१८०७	२००२	२२१४	००३४	०२५१	०५०८
५	०७२९	०९४७	११५१	१३३४	१५०३	१६२७	१८०३	१९५८	२२१०	००३०	०२४७	०५०५
६	०७२५	०९४३	११४७	१३३०	१४५९	१६२३	१७५९	१९५४	२२०६	००२६	०२४३	०५०१
७	०७२१	०९३९	११४३	१३२६	१४५५	१६१९	१७५५	१९५०	२२०२	००२२	०२३९	०४५७
८	०७१८	०९३६	११४०	१३२३	१४५२	१६१६	१७५२	१९४७	२१५९	००१९	०२३६	०४५४
९	०७१४	०९३२	११३६	१३१९	१४४८	१६१२	१७४९	१९४३	२१५५	००१५	०२३२	०४५०
१०	०७१०	०९२८	११३२	१३१५	१४४४	१६०८	१७४४	१९३९	२१५१	००११	०२२८	०४४६
११	०७०६	०९२४	११२८	१३११	१४४०	१६०४	१७४०	१९३५	२१४७	०००७	०२२४	०४४२
१२	०७०२	०९२०	११२४	१३०७	१४३६	१६००	१७३६	१९३१	२१४३	०००३	०२२०	०४३८
१३	०६५८	०९१७	११२०	१३०३	१४३२	१५५६	१७३२	१९२७	२१३९	२३५९	०२१६	०४३४
१४	०६५४	०९१३	१११६	१२५९	१४२८	१५५२	१७२८	१९२३	२१३५	२३५५	०२१२	०४३०
१५	०६५०	०९०९	१११२	१२५५	१४२४	१५४८	१७२४	१९१९	२१३१	२३५१	०२०८	०४२६
१६	०६४७	०९०६	११०९	१२५२	१४२१	१५४५	१७२१	१९१६	२१२८	२३४८	०२०५	०४२३
१७	०६४३	०९०२	११०५	१२४८	१४१७	१५४१	१७१७	१९१२	२१२५	२३४४	०२०१	०४१९
१८	०६३९	०८५८	११०१	१२४४	१४१३	१५३७	१७१३	१९०८	२१२१	२३४१	०१५७	०४१५
१९	०६३५	०८५४	१०५७	१२४०	१४०९	१५३३	१७०९	१९०४	२११७	२३३७	०१५३	०४११
२०	०६३१	०८५०	१०५२	१२३६	१४०५	१५२९	१७०५	१९००	२११३	२३३३	०१४९	०४०७
२१	०६२७	०८४६	१०४९	१२३२	१४०१	१५२५	१७०१	१८५६	२१०९	२३२९	०१४५	०४०३
२२	०६२३	०८४२	१०४५	१२२८	१३५७	१५२१	१६५७	१८५२	२१०५	२३२५	०१४१	०३५९
२३	०६१९	०८३८	१०४१	१२२४	१३५३	१५१७	१६५३	१८४८	२१०१	२३२१	०१३७	०३५५
२४	०६१५	०८३४	१०३७	१२२०	१३४९	१५१३	१६४९	१८४४	२०५७	२३१७	०१३३	०३५१
२५	०६११	०८३०	१०३३	१२१६	१३४५	१५०९	१६४५	१८४०	२०५३	२३१३	०१२९	०३४७
२६	०६०७	०८२६	१०२९	१२१२	१३४१	१५०५	१६४१	१८३६	२०४९	२३०९	०१२५	०३४३
२७	०६०३	०८२२	१०२५	१२०८	१३३७	१५०१	१६३७	१८३२	२०४५	२३०५	०१२१	०३३९
२८	०५५९	०८१८	१०२१	१२०४	१३३३	१४५७	१६३३	१८२८	२०४१	२३०१	०११७	०३३५
२९	०५५५	०८१४	१०१७	१२००	१३२९	१४५३	१६२९	१८२४	२०३७	२२५७	०११३	०३३१
३०	०५५२	०८१०	१०१४	११५७	१३२६	१४५०	१६२६	१८२१	२०३४	२२५४	०११०	०३२८

दिसम्बर की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	०८।०५	१०।०९	११।५३	१३।२१	१४।४६	१६।२१	१८।१६	२०।२९	२२।४८	०१।०६	०३।२३	०५।४३
२	०८।०१	१०।०५	११।४९	१३।१७	१४।४२	१६।१७	१८।१२	२०।२५	२२।४४	०१।०२	०३।१९	०५।३९
३	०७।५७	१०।०१	११।४५	१३।१३	१४।३८	१६।१३	१८।०८	२०।२१	२२।४०	००।५८	०३।१५	०५।३५
४	०७।५३	०९।५७	११।४१	१३।०९	१४।३४	१६।०९	१८।०४	२०।१७	२२।३६	००।५४	०३।११	०५।३१
५	०७।४९	०९।५३	११।३७	१३।०५	१४।३०	१६।०५	१८।००	२०।१३	२२।३२	००।५०	०३।०७	०५।२७
६	०७।४६	०९।४९	११।३३	१३।०१	१४।२६	१६।०१	१७।५६	२०।०९	२२।२८	००।४६	०३।०३	०५।२३
७	०७।४३	०९।४६	११।३०	१२।५८	१४।२३	१५।५८	१७।५३	२०।०६	२२।२५	००।४३	०३।००	०५।२०
८	०७।३९	०९।४३	११।२७	१२।५५	१४।२०	१५।५५	१७।५०	२०।०३	२२।२२	००।४०	०२।५७	०५।१७
९	०७।३५	०९।३९	११।२३	१२।५१	१४।१६	१५।५१	१७।४६	१९।५९	२२।१८	००।३६	०२।५३	०५।१३
१०	०७।३१	०९।३५	११।१९	१२।४७	१४।१२	१५।४७	१७।४२	१९।५५	२२।१४	००।३२	०२।४९	०५।०९
११	०७।२७	०९।३१	११।१५	१२।४३	१४।०८	१५।४३	१७।३८	१९।५१	२२।१०	००।२८	०२।४५	०५।०५
१२	०७।२३	०९।२७	११।११	१२।३९	१४।०४	१५।३९	१७।३४	१९।४७	२२।०६	००।२४	०२।४१	०५।०१
१३	०७।१९	०९।२३	११।०७	१२।३५	१४।००	१५।३५	१७।३०	१९।४३	२२।०२	००।२०	०२।३७	०४।५७
१४	०७।१५	०९।१९	११।०३	१२।३१	१३।५६	१५।३१	१७।२७	१९।३९	२१।५८	००।१६	०२।३३	०४।५३
१५	०७।१०	०९।१४	१०।५८	१२।२६	१३।५१	१५।२६	१७।२१	१९।३४	२१।५३	००।११	०२।२८	०४।४८
१६	०७।०६	०९।१०	१०।५४	१२।२२	१३।४७	१५।२२	१७।१७	१९।३०	२१।४९	००।०७	०२।२४	०४।४४
१७	०७।०२	०९।०६	१०।५०	१२।१८	१३।४३	१५।१८	१७।१३	१९।२६	२१।४७	००।०३	०२।२०	०४।४०
१८	०६।५८	०९।०२	१०।४६	१२।१४	१३।३९	१५।१४	१७।०९	१९।२२	२१।४२	२३।५९	०२।१६	०४।३६
१९	०६।५४	०८।५८	१०।४२	१२।१०	१३।३५	१५।१०	१७।०५	१९।१८	२१।३७	२३।५५	०२।१२	०४।३२
२०	०६।५०	०८।५४	१०।३८	१२।०६	१३।३१	१५।०६	१७।०१	१९।१४	२१।३३	२३।५१	०२।०८	०४।२८
२१	०६।४६	०८।५०	१०।३४	१२।०२	१३।२७	१५।०२	१६।५७	१९।१०	२१।२९	२३।४७	०२।०४	०४।२४
२२	०६।४२	०८।४६	१०।३०	११।५८	१३।२३	१४।५८	१६।५३	१९।०६	२१।२५	२३।४३	०२।००	०४।२०
२३	०६।३८	०८।४२	१०।२६	११।५४	१३।१९	१४।५४	१६।४९	१९।०२	२१।२१	२३।३९	०१।५६	०४।१६
२४	०६।३४	०८।३८	१०।२३	११।५१	१३।१६	१४।५१	१६।४६	१८।५९	२१।१८	२३।३६	०१।५३	०४।१३
२५	०६।३१	०८।३४	१०।१९	११।४७	१३।१२	१४।४७	१६।४२	१८।५५	२१।१४	२३।३२	०१।४९	०४।०९
२६	०६।२८	०८।३२	१०।१६	११।४४	१३।०९	१४।४४	१६।३९	१८।५२	२१।११	२३।२९	०१।४६	०४।०६
२७	०६।२४	०८।२८	१०।१२	११।४०	१३।०५	१४।४०	१६।३५	१८।४८	२१।०७	२३।२५	०१।४२	०४।०२
२८	०६।२०	०८।२४	१०।०८	११।३६	१३।०१	१४।३६	१६।३१	१८।४४	२१।०३	२३।२१	०१।३८	०३।५८
२९	०६।१६	०८।२०	१०।०४	११।३२	१२।५७	१४।३२	१६।२७	१८।४०	२०।५९	२३।१७	०१।३४	०३।५४
३०	०६।१३	०८।१७	१०।०१	११।२९	१२।५४	१४।२९	१६।२४	१८।३७	२०।५६	२३।१४	०१।३२	[illegible]
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

जनवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	०८।०९	०९।५३	११।२१	१२।४६	१४।२२	१६।१६	१८।२९	२०।४९	२३।०६	०१।२४	०३।४३	०६।०१
२	०८।०५	०९।४९	११।१७	१२।४२	१४।१८	१६।१२	१८।२५	२०।४५	२३।०२	०१।२०	०३।३९	०५।५७
३	०८।०१	०९।४५	११।१३	१२।३८	१४।१४	१६।०८	१८।२१	२०।४१	२२।५८	०१।१६	०३।३५	०५।५३
४	०७।५७	०९।४१	११।०९	१२।३४	१४।१०	१६।०४	१८।१७	२०।३७	२२।५४	०१।१२	०३।३१	०५।४९
५	०७।५३	०९।३७	११।०५	१२।३०	१४।०६	१६।००	१८।१३	२०।३३	२२।५०	०१।०८	०३।२७	०५।४५
६	०७।४९	०९।३३	११।०१	१२।२६	१४।०२	१५।५६	१८।०९	२०।२९	२२।४६	०१।०४	०३।२३	०५।४१
७	०७।४५	०९।२९	१०।५७	१२।२२	१३।५८	१५।५२	१८।०५	२०।२५	२२।४२	०१।००	०३।१९	०५।३७
८	०७।४२	०९।२६	१०।५४	१२।१९	१३।५५	१५।४९	१८।०२	२०।२२	२२।३९	००।५७	०३।१६	०५।३४
९	०७।३७	०९।२२	१०।५०	१२।१५	१३।५१	१५।४५	१७।५८	२०।१८	२२।३५	००।५३	०३।१२	०५।३०
१०	०७।३४	०९।१८	१०।४६	१२।११	१३।४७	१५।४१	१७।५४	२०।१४	२२।३१	००।४९	०३।०८	०५।२६
११	०७।३१	०९।१५	१०।४३	१२।०८	१३।४४	१५।३८	१७।५१	२०।११	२२।२८	००।४६	०३।०५	०५।२३
१२	०७।२७	०९।११	१०।३९	१२।०४	१३।४०	१५।३४	१७।४७	२०।०७	२२।२४	००।४२	०३।०१	०५।१९
१३	०७।२४	०९।०८	१०।३६	१२।०१	१३।३७	१५।३१	१७।४४	२०।०४	२२।२१	००।३९	०२।५८	०५।१६
१४	०७।२०	०९।०४	१०।३२	११।५७	१३।३३	१५।२७	१७।४०	२०।००	२२।१७	००।३५	०२।५४	०५।१२
१५	०७।१७	०९।०१	१०।२९	११।५४	१३।३०	१५।२४	१७।३७	१९।५७	२२।१४	००।३२	०२।५१	०५।०९
१६	०७।१३	०८।५७	१०।२५	११।५०	१३।२६	१५।२०	१७।३३	१९।५३	२२।१०	००।२८	०२।४७	०५।०५
१७	०७।०९	०८।५३	१०।२१	११।४६	१३।२२	१५।१६	१७।२९	१९।४९	२२।०६	००।२४	०२।४३	०५।०१
१८	०७।०४	०८।४८	१०।१६	११।४१	१३।१७	१५।११	१७।२४	१९।४४	२२।०१	००।१९	०२।३८	०४।५६
१९	०७।००	०८।४४	१०।१२	११।३७	१३।१३	१५।०७	१७।२०	१९।४०	२१।५७	००।१५	०२।३४	०४।५२
२०	०६।५६	०८।४०	१०।०८	११।३३	१३।०९	१५।०३	१७।१६	१९।३६	२१।५३	००।११	०२।३०	०४।४८
२१	०६।५२	०८।३६	१०।०४	११।२९	१३।०५	१४।५९	१७।१२	१९।३२	२१।४९	००।०७	०२।२६	०४।४४
२२	०६।४८	०८।३२	१०।००	११।२५	१३।०१	१४।५५	१७।०८	१९।२८	२१।४४	००।०३	०२।२२	०४।४०
२३	०६।४३	०८।२७	०९।५५	११।२०	१२।५६	१४।५०	१७।०३	१९।२३	२१।४०	२३।५८	०२।१७	०४।३५
२४	०६।३९	०८।२३	०९।५१	११।१६	१२।५१	१४।४६	१६।५९	१९।१९	२१।३६	२३।५४	०२।१३	०४।३१
२५	०६।३५	०८।१९	०९।४७	११।१२	१२।४८	१४।४२	१६।५५	१९।१५	२१।३२	२३।५०	०२।०९	०४।२७
२६	०६।३१	०८।१५	०९।४३	११।०८	१२।४४	१४।३८	१६।५१	१९।११	२१।२८	२३।४६	०२।०५	०४।२३
२७	०६।२७	०८।११	०९।३९	११।०४	१२।४०	१४।३४	१६।४७	१९।०७	२१।२४	२३।४२	०२।०१	०४।१९
२८	०६।२३	०८।०७	०९।३५	११।००	१२।३६	१४।३०	१६।४३	१९।०३	२१।२०	२३।३८	०१।५७	०४।१५
२९	०६।१९	०८।०३	०९।३१	१०।५६	१२।३२	१७।२६	१६।३९	१८।५९	२१।१६	२३।३४	०१।५३	०४।११
३०	०६।१५	०७।५९	०९।२७	१०।५२	१२।२८	१४।२२	१६।३५	१८।५५	२१।१२	२३।३०	०१।४९	०४।०७
३१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फरवरी की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
१	०७५०	०९१९	१०४३	१२१९	१४१४	१६२६	१८४६	२१०४	२३२१	०१४२	०३५८	०६०२
२	०७४६	०९१५	१०३९	१२१५	१४१०	१६२२	१८४२	२१००	२३१७	०१३७	०३५४	०५५८
३	०७४२	०९१२	१०३६	१२१२	१४०७	१६१९	१८३९	२०५७	२३१४	०१३४	०३५१	०५५५
४	०७३९	०९०८	१०३२	१२०८	१४०३	१६१५	१८३५	२०५३	२३१०	०१३०	०३४७	०५५१
५	०७३६	०९०५	१०२९	१२०५	१४००	१६१२	१८३२	२०५०	२३०७	०१२७	०३४४	०५४८
६	०७३२	०९०१	१०२५	१२०१	१३५६	१६०८	१८२८	२०४६	२३०३	०१२३	०३४२	०५४४
७	०७२८	०८५७	१०२१	११५७	१३५२	१६०४	१८२४	२०४२	२२५९	०११९	०३३७	०५४०
८	०७२४	०८५३	१०१७	११५३	१३४८	१६००	१८२०	२०३८	२२५५	०११५	०३३३	०५३६
९	०७२०	०८४९	१०१३	११४९	१३४४	१५५६	१८१६	२०३४	२२५१	०१११	०३२९	०५३२
१०	०७१५	०८४४	१००८	११४४	१३३९	१५५१	१८११	२२२९	२२४६	०१०६	०९२४	०५२७
११	०७११	०८४०	१००४	११४०	१३३५	१५४७	१८०७	२०२५	२२४२	०१०२	०३२०	०५२३
१२	०७०७	०८३६	१०००	११३६	१३३१	१५४३	१८०३	२०२१	२२३८	००५८	०३१६	०५१९
१३	०७०३	०८३२	०९५६	११३२	१३२७	१५३९	१७५९	२०१७	२२३४	००५४	०३१२	०५१५
१४	०६५९	०८२८	०९५२	११२८	१३२३	१५३५	१७५५	२०१३	२२३०	००५०	०३०८	०५११
१५	०६५५	०८२४	०९४८	११२४	१३१९	१५३१	१७५१	२००९	२२२६	००४६	०३०४	०५०७
१६	०६५१	०८२०	०९४४	११२०	१३१५	१५२७	१७४७	२००५	२२२२	००४२	०३००	०५०३
१७	०६४७	०८१६	०९४०	१११६	१३११	१५२३	१७४३	२००१	२२१८	००३८	०२५६	०४५९
१८	०६४३	०८१२	०९३६	१११२	१३०७	१५१९	१७३९	१९५७	२२१४	००३४	०२५२	०४५५
१९	०६३९	०८०८	०९३२	११०८	१३०३	१५१५	१७३५	१९५३	२२१०	००३०	०२४८	०४५१
२०	०६३४	०८०३	०९२७	११०३	१२५८	१५१०	१७३०	१९४८	२२०५	००२५	०२४३	०४४६
२१	०६३०	०७५९	०९२३	१०५९	१२५४	१५०६	१७२६	१९४४	२२०१	००२१	०२३९	०४४२
२२	०६२६	०७५५	०९१९	१०५५	१२५०	१५०२	१७२२	१९४०	२१५७	००१७	०२३५	०४३८
२३	०६२२	०७५१	०९१५	१०५१	१२४६	१४५८	१७१८	१९३६	२१५३	००१३	०२३१	०४३४
२४	०६१८	०७४७	०९११	१०४७	१२४२	१४५४	१७१४	१९३२	२१४९	०००९	०२२७	०४३०
२५	०६१४	०७४३	०९०७	१०४३	१२३८	१४५०	१७१०	१९२८	२१४५	०००५	०२२३	०४२६
२६	०६११	०७४०	०९०४	१०४०	१२३५	१४४७	१७०७	१९२५	२१४२	०००२	०२२०	०४२३
२७	०६०७	०७३६	०९००	१०३६	१२३१	१४४३	१७०३	१९२१	२१३८	२३५८	०२१६	०४१९
२८	०६०३	०७३२	०८५६	१०३२	१२२७	१४३९	१६५९	१९१७	२१३४	२३५४	०२१२	०४१५

यह लग्न का समाप्ति काल है। प्रत्येक मास में दिए हुए स्टैण्डर्ड टाइम को ऊपर लिखी राशि का समाप्तिकाल ही समझें।

मार्च की दैनिक लग्न-सारणी स्टैण्डर्ड रेलवे टाईम अर्धरात्रोत्तर घं. मि.

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
१	०७२८	०८५३	१०२८	१२२३	१४३६	१६५५	१९१३	२१३०	२३५०	०२०८	०४११	०५५५
२	०७२४	०८४९	०१०१४	१२१९	१४३२	१६५१	१९०९	२१२६	२३४६	०२०४	०४०७	०५५२
३	०७२०	०८४३	१०२०	१२१५	१४२८	१६४७	१९०५	२१२२	२३४२	०२००	०४०३	०५४७
४	०७१६	०८४२	१०१६	१२११	१४२४	१६४३	१९०१	२११८	२३३८	०१५६	०३५९	०५४३
५	०७१३	०८३८	१०१३	१२०८	१४२१	१६४०	१८५८	२११५	२३३५	०१५३	०३५६	०५४०
६	०७०९	०८३४	१००९	१२०४	१४१७	१६३६	१८५४	२१११	२३३१	०१४९	०३५२	०५३६
७	०७०५	०८३०	१००५	१२००	१४१३	१६३२	१८५०	२१०७	२३२७	०१४५	०३४८	०५३२
८	०७०१	०८२६	१००१	११५६	१४०९	१६२८	१८४६	२१०३	२३२३	०१४२	०३४४	०५२८
९	०६५७	०८२२	०९५७	११५२	१४०५	१६२४	१८४२	२०५९	२३१९	०१३७	०३४०	०५२४
१०	०६५२	०८१७	०९५२	११४७	१४००	१६१९	१८३७	२०५४	२३१४	०१३२	०३३५	०५१९
११	०६४८	०८१३	०९४८	११४३	१३५६	१६१५	१८३३	२०५०	२३१०	०१२८	०३३१	०५१५
१२	०६४४	०८०९	०९४४	११३९	१३५२	१६११	१८२९	२०४६	२३०६	०१२४	०३२७	०५११
१३	०६४०	०८०५	०९४०	११३५	१३४८	१६०७	१८२५	२०४२	२३०२	०१२०	०३२३	०५०७
१४	०६३६	०८०१	०९३६	११३१	१३४४	१६०३	१८२१	२०३८	२२५८	०११६	०३१९	०५०३
१५	०६३२	०७५७	०९३२	११२७	१३४०	१५५९	१८१७	२०३४	२२५४	०११२	०३१५	०४५९
१६	०६२८	०७५३	०९२८	११२३	१३३६	१५५५	१८१३	२०३०	२२५०	०१०८	०३११	०४५५
१७	०६२४	०७४९	०९२४	१११९	१३३२	१५५१	१८०९	२०२६	२२४६	०१०४	०३०७	०४५१
१८	०६२०	०७४५	०९२०	१११५	१३२८	१५४७	१८०५	२०२२	२२४२	०१००	०३०३	०४४७
१९	०६१६	०७४२	०९१६	११११	१३२४	१५४३	१८०१	२०१८	२२३८	००५६	०२५९	०४४३
२०	०६१२	०७३७	०९१२	११०७	१३२०	१५३९	१७५७	२०१६	२२३४	००५२	०२५५	०४३९
२१	०६०८	०७३३	०९०८	११०३	१३१६	१५३५	१७५३	२०१०	२२३०	००४८	०२५१	०४३५
२२	०६०४	०७२९	०९०४	१०५९	१३१२	१५३१	१७४९	२००६	२२२६	००४४	०२४७	०४३१
२३	०६००	०७२५	०९००	१०५५	१३०८	१५२७	१७४३	२००२	२२२२	००४०	०२४३	०४२७
२४	०५५५	०७२१	०८५६	१०५१	१३०४	१५२३	१७४२	१९५८	२२१८	००३६	०२३९	०४२३
२५	०५५२	०७१७	०८५२	१०४७	१३००	१५१९	१७३७	१९५४	२२१४	००३२	०२३५	०४१९
२६	०५४८	०७१३	०८४८	१०४३	१२५६	१५१५	१७३३	१९५०	२२१०	००२८	०२३१	०४१५
२७	०५४४	०७०९	०८४४	१०३९	१२५२	१५११	१७२९	१९४६	२२०६	००२४	०२२७	०४११
२८	०५४०	०७०५	०८४०	१०३५	१२४८	१५०७	१७२५	१९४२	२२०२	००२०	०२२३	०४०७
२९	०५३६	०७०१	०८३६	१०३१	१२४४	१५०३	१७२१	१९३८	२१५८	००१६	०२१९	०४०३
३०	०५३२	०६५७	०८३२	१०२७	१२४०	१४५९	१७१७	१९३४	२१५४	००१२	०२१५	०३५९
३१	०५२८	०६५३	०८२८	१०२३	१२३६	१४५५	१७१३	१९३०	२१५०	०००८	०२११	०३५५

अथ जन्म-समयादि विचार

सर्वशास्त्र- शिरोमणि ज्योतिःशास्त्र की महत्ता को सारा संसार जानता है, क्योंकि वह प्रत्यक्ष फलदायक है, अतः प्राचीन काल से लेकर आज तक इसका प्रभाव चलता आ रहा है। इसके बिना और कोई शास्त्र नहीं, जो कि तीनों काल (भूत,भविष्य,वर्तमान) की वर्ता को बतला सके और वेद के छः अंगों में से यह नेत्र स्थानीय है। जिस प्रकार सम्पूर्ण अंगों के सुन्दर तथा पुष्ट होने पर भी नेत्र विहीन मनुष्य का जन्म व्यर्थ होता है, इसी प्रकार सम्पूर्ण शास्त्रों के पढ़ लेने पर भी ज्योतिःशास्त्र विहीन भूत, भविष्य को बतलाने में मूक सा रह जाता है। परन्तु खेद इस बात का है कि ऐसा होने पर भी आजकल फलादेश के पूरा न मिलने से लोगों की श्रद्धा बहुत घट गई है, इसमें कारण तो बहुत हैं, परन्तु दो चार यहां बतलाये जाते हैं- जब बालक का जन्म होता है उस समय गांव वालों के पास कोई घड़ी आदि का सुप्रबन्ध न होने से वे लोग समय को निश्चित रूप से नहीं बता सकते, यदि किसी ने सब प्रकार से अपना प्रबंध करके समय को निश्चित रूप से नोट किया भी हो तो वह घर में आने वाले पुरोहित या किसी ज्योतिःशास्त्र के अनभिज्ञ पंडित से कुण्डली बनवाकर रख लेते है और पंडितजी रुपये के लालच में फंसकर मनमाना लग्न बनाकर यजमान को दे देते है, जिसका परिणाम यह होता है कि भविष्य में उसका फल ठीक नहीं मिलता, परंतु कलंक का टीका ज्योतिःशास्त्र पंर मढ़ा जाता है। क्योंकि लग्न के ठीक होने पर ही फलादेश ठीक मिल सकता है, वह फलादेश इष्ट पर निर्भर है, और वह इष्ट-नोट किये हुए समय पर निर्भर है, अतः समय के नोट करने में सावधानी रखनी चाहिए और वह लग्न ठीक है कि नहीं, इसके निश्चय के लिए निम्नलिखित योगों पर विचार कर लेना चाहिए :-

तत्रादौ पितृपरोक्ष ज्ञान- *बालक के जन्म के समय पिता घर में था कि नहीं? इसका विचार इस प्रकार से करना चाहिए कि जन्मकुण्डली में लग्न को यदि चन्द्रमा नहीं देखता हो तो बालक के जन्म के समय उसका पिता घर में नहीं था, ऐसा कहना। इसमें इतना विशेष है कि यदि सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थानों में चरराशि का होकर पड़ा हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था, इन्हीं स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो और चन्द्रमा लग्न को न देखें तो पिता अपने देश में ही था, परन्तु घर में नहीं था। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव राशि में होने पर मार्ग में कहें, परन्तु इन सब योगों में लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो ऐसा कहना। यदि चन्द्रमा देखता हो तो पिता घर में ही था ऐसा जानना चाहिए।*

जन्म समय शनि लग्न में हो अथवा सातवें स्थान पड़ा हो अथवा इसी प्रकार बुध और शुक्र में से एक तो चन्द्रमा से द्वादश स्थान में और द्वितीय स्थान में पड़ा हो तो भी पिता के परोक्ष में बालक का जन्म जानना, परन्तु यहाँ चन्द्रमा का बुध शुक्र के बीच में होना अंशों के योग से भी जान लेना, जैसे बुध के स्पष्ट पांच अंश हों चन्द्रमा के दश अंश हों शुक्र के पन्द्रह अंश हों और तीनों एक ही राशि में बैठे हों तो भी पूर्वोक्त योग जानना चाहिए।

चिन्ह ज्ञान :- जिसके जन्म समय १,५,६,९ इन स्थानों में [illegible] चिन्ह होगा, यदि लग्न में सूर्य तथा शनि हो, दूसरे मंगल हो और केन्द्र में चन्द्रमा हो तो उस बालक की छः अंगुलियाँ होती हैं। चिन्ह विचार करते समय इतना पहले विचार कर लेना कि योगकर्त्ता ग्रह कौन है? उसमें यदि सूर्य हो तो शिर में चन्द्रमा के होने से मुख में, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि में, शुक्र पीठ या जांघ में, शनि राहु तथा केतु इनके योग से पेट, होठ या दाँतों पर चिन्ह जानना चाहिए। **विशेष विचार-** सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो, आठवें घर पाप ग्रह हों या लग्न में शुक्र और आठवें पाप ग्रह के होने से बाँई भुजा पर चिन्ह होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु होवे तो माथे या बाएँ कान में चिन्ह होवे। लग्न से ३।६।११ इन स्थानों में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बाएँ बगल की और तिल का चिन्ह होवे। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थान में शनि हो, इसको शुक्र देखे तो घुदा (मलद्वार) या लिङ्ग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न से ५।६ स्थान में शनि हो इसको ८वें बुध, गुरु लब्ध में या चौथे शनि होने से पेट पर चिन्ह होता है। दूसरे घर पर शुक्र या तीसरे मंगल शनि हो, लग्न में आठवें सूर्य हों तो कमर में चिन्ह होगा। चौथे घर पर शुक्र राहु हो लग्न में मंगल या शनि हो तो पादमुल या बाएँ पैर पर चिन्ह होगा। बारहवें बृहस्पति दूसरे चन्द्रमा ३।६।११वें स्थान में बुध के होने से गुदा के समीप गोलाकार चिन्ह या व्रणादि होते हैं। छठे घर का स्वामी पाप ग्रह के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में व्रणादि चिन्ह होते हैं। लग्न में मंगल, सातवें वृहस्पति या शुक्र हो तो उसके शिर में चोट या व्रणादि के चिन्ह हों। लग्न में मंगल, शुक्र चन्द्रमा के साथ होने से दूसरे या छठे वर्ष शिर में चिन्ह होता है। मंगल से व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल जानना।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान - यहाँ पर समभूमि से जो ऊँचा स्थान हो उसकी अंतरिक्ष संज्ञा जाननी। जिसके जन्म समय मिथुन, कन्या, धनु और मीन ये लग्न हों उसका जन्म अंतरिक्ष में जानना, शेष लग्न हों तो समभूमि में जानना।

बालक का रोदन ज्ञान- जन्म समय यदि मेष, मिथुन, सिंह और धनुः लग्न हों, तो बालक ने जन्म समय के बाद जल्दी ही रुदन किया था ऐसा कहना। कन्या, तुला और कुम्भ ये लग्न हों तो थोड़ा शब्द किया हो, शेष लग्नों में बालक ने देरी से शब्द किया था, ऐसा जानना। परन्तु इसमें इतना विशेष है कि लग्न और चन्द्रमा में जिसकी राशि बलवान् हो उससे फल कहना।

उपसूतिका का ज्ञान- लग्न अथवा लग्नेश के साथ और इसके दूसरे बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों, उतनी उपसूतिका कहना।

दूसरा प्रकार- लग्न और चन्द्रमा के बीच जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना। लग्न से सप्तम स्थान पर्यन्त अदृश्यार्थ और सप्तम से लग्न पर्यन्त दृश्यार्थ होता है, लग्न से लेकर यदि ग्रह अदृश्यार्थ में हो तो उपसूतिका घर के अन्दर और दृश्यार्थ में हो तो उपसूतिका बाहर जानना। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति अवस्था आदि का विचार उन ग्रहों से ही कहना, परन्तु उन ग्रहों में जितने ग्रह उच्च के तथा वक्री हों उनकी संख्या को तीन से गुणा, अपने नवांश, अपनी राशि अथवा अपने द्रेष्काण में स्थित की संख्या को दुगुना और नीच राशि में स्थित और अस्त ग्रहों की [illegible] उपसूतिकायें कहनी चाहिये।

शिर: पादजात ज्ञान- शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ जन्म के समय इन राशियों का नवांश लग्न में हो तो शिर से, पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय हो तो पैरों से और मीन का नवांश हो तो हाथ से जन्म जानना।

सूतिकागृह द्वार ज्ञान- केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा में सूतिका का गृह का द्वार जानना, यदि केन्द्र में कई ग्रह पड़े हो तो उनमें जो अधिक बली हो उसकी दिशा कहनी। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न की दिशा में कहना।

पुरुष के शरीर में सूर्यादि-ग्रहों का अधिकार- पुरुष के शिर और मुख प्रदेश में सूर्य का अधिकार है, वक्षःस्थल और गले में चन्द्रमा का अधिकार है, पृष्ठ स्थल और उदर में मंगल का अधिकार है। हस्त और पादों में बुध का अधिकार है। कटि प्रदेश और जघन स्थान में गुरु का अधिकार है। गुप्तेन्द्रिय और वृष्णों में शुक्र का अधिकार, जानु और उरु प्रदेश में शनि का अधिकार है। जन्म समय, प्रश्न समय और गोचर में जब-जब सूर्यादि ग्रह अनिष्ट-स्थान में जाते हैं तब पुरुषों के उपरोक्त अंगों को पीड़ित करते हैं।

मेषादि-राशियों का अंग-विभाग- कालपुरुष के शिर में मेष राशि का स्थान है, मुख में वृष राशि का, दोनों भुजाओं में मिथुन राशि का, हृदय में कर्क राशि का, उदर में सिंह राशि का, कमर में कन्या राशि का, वस्ति (मूत्राशय) में तुला राशि का, गुप्तेन्द्रिय में वृश्चिक राशि का, उरु (दोनों जंघाओं) में धनुः राशि का, दोनों जानु (घुटनों) में मकर राशि का, पिण्डलियों में कुम्भ राशि का और दोनों पादों में मीन राशि का स्थान है। कई एक आचार्य द्वादश भावों में भी इन अंगों की कल्पना करते हैं। जैसे प्रथम भाव में शिर, द्वितीय भाव में मुख, तृतीय भाव में भुजा, चतुर्थ भाव में हृदय, पंचम भाव में उदर, छठे भाव में कमर, सप्तम भाव में वस्ति, अष्टम भाव में गुप्तेन्द्रिय, नवम भाव में उरु, दशम भाव में जानु, एकादश भाव में जंघा और द्वादश भाव में पादों को जानना। उपर्युक्त मेषादि १२ राशि अथवा लग्नादि द्वादश भाव शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता है, अंगों का विचार करके फलादेश कहना युक्तियुक्त होता है।

अथ प्रसूति लग्न-विचार

मेष- सूतिका गृह पुराना, द्वार पूर्व में, माता का शिर पूर्व में, वस्त्र लाल रंग के। प्रसव से पहले मीठा भोजन किया हो, प्रसव में कष्ट अधिक, भूमि में जन्म, प्रसव बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३। बालक के मुख का रंग कुछ श्यामता पर हो, नेत्र भूरे, प्रकृति वात- श्लेष्म कद छोटा, शरीर दृढ़। वाणी चंचल। कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८। **उपाय-** गोदान, तुला दान, मृत्युंजय जप इत्यादि। उपरांत आयु १०० वर्ष।

वृष- माता का शिर दक्षिण में, सूतिका घर नया, द्वार दक्षिण में, माता के सफेद वस्त्र, माता ने शुष्क शाकादि खाया हो, अधोमुख होकर पाद से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्तपित्त। कष्टवर्ष १।२।८।३३।४४।६१। **उपाय-** अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युजय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मिथुन- माता का शिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के वस्त्र पीले रंग के पुराने, प्रसव से पहले भोजन नमकीन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिन्ह हो, जन्म अंतरिक्ष में (छत पर) प्रसव शिर में, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम उतरे, बालक के नेत्र रोगयुक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमन्द, बुद्धि विलक्षण, माता को पहले कुछ ज्वर आदि भी हुआ हो। कष्टवर्ष ४।१०।१४।३८।५८। **उपाय-** शिवार्चन, मृत्युंजय जप, होम। उपरान्तु आयु ८६ वर्ष।

कर्क- माता का शिर उत्तर में, मकान नया, द्वार उत्तर में, वस्त्र पुराने सफेद या लाल, पिता क्लेश में, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर शीतल भोजन किया हो, भूमि में जन्म, पाद से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वाम अंग में चिन्ह, बालक का शिर मोटा, आँखें चंचल, प्रकृति वात श्लेष्म, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल ५।२५।४०।४८।६२ वर्षों में कष्ट हो। **उपाय-** छाया पात्र, तुलादान, मृत- संजीवनी-मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह- माता का शिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र विचित्र, भोजन के साथ शाक और खट्टा खाया हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिन्ह, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ पित्त, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८। **उपाय-** सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न- दान यदि कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष आयु हो।

कन्या- माता का शिर उत्तर में, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर हो, माता के वस्त्र कुछ जीर्ण लाल रंग के, मिष्ठान भोजन किया, छत पर या ऊँची जगह जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले और जांघ में चिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५। उपाय- मुद्गान्न दान, गोदान, मृत्युजंय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला- माता का शिर पश्चिम में, मकान कुछ नूतन, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के वस्त्र साधारण श्वेत, प्रसव कष्ट अधिक, पिता क्लेश में, माता ने कुछ खाकर ठण्डा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई झगड़ा हुआ हो, भूमि में जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहाँ एक कन्या भी हो दीपक हाथ में उठाया गया, बालक का रंग जर्दी पर, बदन में फोड़े, शरीर दुबला, ८।१५।३१।३५।६२।६४। इन वर्षों में कष्ट हो। गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन और होम से शान्ति होगी, यदि इन कष्टकारक वर्षों से बचे तो ८५ वर्ष आयु भोगे।

वृश्चिक- माता का शिर दक्षिण या उत्तर में, मकान जीर्ण, द्वार उत्तर में, वस्त्र लाल या दग्ध, कष्ट अधिक, साधारण भोजन कुछ क्रोधयुक्त, भूमि पर जन्म, रोदन की आधी आवाज, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश में, बालक के केश लम्बे और काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग

श्याम, प्रकृति रक्त पित्त, कष्टकारक वर्ष ११।२८।३८।५२।६२। **उपाय-** तुलादान, मृत्युंजय जप और मिष्ठान भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनुः- माता का शिर पूर्व में, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान तथा माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, पक्वान्न भोजन कर जल पिया हो। जन्म ऊँचे स्थान या छत पर, रोदन स्वर अतिदीर्घ, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, शिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह २।१०।१८।३१।३४।४२ वें वर्षो में महाकष्ट भोग कर बचे तो ८१ वर्ष जिये। उपायः कष्टकारक वर्षारम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप और ब्राह्मण-भोजन कराने से कल्याण हो।

मकर- माता का शिर दक्षिण में, मकान पुराना, द्वार उत्तर या दक्षिण में, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले, पुराने, शाकादि के साथ भोजन करके ठण्डा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर के बाद बालक अर्द्ध स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्टकारक वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७। **उपाय-** रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, माषान्न दान, छायापात्र, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ- माता का शिर पश्चिम में, मकान का बहुत सा भाग जीर्ण हो, सूतिका घर दक्षिण पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले या मैले पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, साधारण कसैला और चटपटा भोजन किया हो, पिता घर में न हो, भूमि पर जन्म होने के चिर पीछे बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे, मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट २।२८।३३।४८।६४। **उपाय-** तुलादान, महिषीदान, मृत्युंजय जप। उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन- माता का शिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसृति गृह उत्तर भाग में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मलिन या बसन्ती, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान में, बालक जन्म के उपरान्त देर से रोया, माता ने ठण्डा जल पिया, उपसूतिका पहले २ पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी हुई, आंखें भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बलगमी, कष्टकारक वर्ष १।८।१३।३६।४८। इनसे बच जाये तो ८३ वर्ष की आयु भोगे। **उपाय-** मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युजंप-जप कराने से कल्याण हो।

सूचना- जिस लग्न के लक्षण अधिक मिलें, वही लग्न ठीक मानना चाहिए। ऊपर लिखे लक्षण साधारण लग्न के आधार पर लिखे गये है अतः सम्भव है कि किसी-किसी स्थान पर इनसे भी लग्न का निश्चय न हो सके। क्योंकि बलाबल विचार से ही लग्न का पूर्ण निश्चय हो सकता है। उसके लिए कुण्डली पर से विशेष प्रसूति लग्न का विचार पहले लिखा जा चुका है।

बालारिष्ट के योग- जन्म लग्न से ६।८।१२ वें स्थान में स्थित चन्द्रमा को यदि क्रूर ग्रह देखते हों तो वह बालक अल्पायु जानना। यदि पूर्वोक्त चन्द्रमा को [illegible] की आयु ८ वर्ष की जानना। शनि अथवा शुभ ग्रह ६।८।१२ इन स्थानों में हों या वक्री तथा क्रूर ग्रहों से देखे भी जाते हों, लग्न में कोई ग्रह शुभ नहीं हो तो बालक की आयु एक मास जानना। जिसके लग्न में पांचवें स्थान में सूर्य मंगल और शनि यह तीनों पड़ें हों, उस बालक की माता सहित मृत्यु जाननी, तथा भाई को भी हानि हो। जिसके दशम स्थान में शनि, छठे चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो उस बालक की माता सहित मृत्यु जानना। जिसके लग्न में शनि हो, चन्द्रमा आठवें हों बृहस्पति तीसरे हों उस बालक की शीघ्र ही मृत्यु जानना। जन्म लग्न से बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह शुभ फल करने वाला नहीं होता, परन्तु सूर्य, चन्द्रमा, शुक्र और राहु ये विशेष करके कष्टकारक जानने तथा इनकी दृष्टि भी शुभ नहीं है। जिसके जन्म लग्न बारहवें तथा छठे आठवें दूसरे ग्रह पड़े हों तथा लग्न क्रूर ग्रहों के बीच में पड़ा हो उस बालक की शीघ्र मृत्यु जाननी।

अरिष्ट भंग योग- बुध, बृहस्पति, शुक्र इनमे से एक भी यदि केन्द्र (१।४।७।१०) में हो। बलवान होकर यदि बृहस्पति लग्न में हो। बली होकर लग्न का स्वामी यदि केन्द्र में हो। शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न शुभ ग्रहों से देखा जाता हो, इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और पूर्ववत् लग्न शुभ ग्रहों से दृष्ट हो। इन पाँचों योगों में से एक भी योग पड़ जाये तो ऊपर कहे हुए अरिष्टों को भंग करने वाला योग जानना।

माता-पिता को अरिष्ट योग- हर एक बालक के लिए सूर्य से पिता का विचार और चन्द्रमा से माता का विचार करना चाहिए। अतएव जिस बालक की जन्मकुण्डली में सूर्य के साथ पापी ग्रह बैठे हों अथवा देखते हों या सूर्य पापी ग्रह [illegible] बीच पड़ा हो तो उस बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। इसी प्रकार सूर्य [illegible]।४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो तो भी पिता को कष्ट जानना। इसी प्रकार [illegible] चन्द्रमा के साथ २।१२ स्थान में और ४।६।८ स्थान में क्रूर ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जानना।

प्रसवदोष अरिष्ट का फल- चैत्र में कुतिया, वैशाख में ऊँटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, श्रावण में गधी व घोड़ी, भाद्रपद में गौ, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हों तो पिता या गर्भवती की ६ मास में मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। श्रावण में दिन को घोड़ी और माघ में बुधवार को भैंस प्रसूत हो तो घर धनी को महाभय अरिष्ट होवे। शान्त्यर्थ प्रसूता गौ आदि का शीघ्र दान करें, घर में हवन शान्तिपाठ, पुण्याहवाचन, श्वेतसर्षपहवन कर व्याहृति मन्त्रों से आहूति दें, जिससे शान्ति हो।

त्रिखल-जन्म-फल- तीन पुत्रों के बाद कन्या हो, या तीन कन्याओं के पश्चात पुत्र हो तो त्रिखल नामक दोष होता है, इससे माता-पिता को अरिष्ट, महामय धनहानि आदि होती है, शान्त्यर्थ त्रिखल शान्ति करें।

दन्तोत्पत्ति फल- बालक के जन्मते ही दांत निकले हुए हों तो माता-पिता को महा अरिष्ट। [illegible]

दांत से जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकलें तो मातुल पक्ष को भय हो। १ मास में दाँत निकलें तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनि नष्ट चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, ७ वें में पितृ सुख, ८ वें में पुष्टि, ९ वें में धनी, १० वें में सुख, ११ वें सुख, १२ वें में धनी।

एकनक्षत्र जातक फल- पिता पुत्र, माता पुत्र या कन्या, दो भ्राता इनका एक नक्षत्र में जन्म हो तो दोनों में से एक की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। स्वर्ण दान, शान्ति हवन आदि करने से अरिष्ट निवारण होता है।

गण्डमूल के नक्षत्र					
अश्विनी	अश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

ये ६ नक्षत्र गण्ड मूल कहलाते है, इन नक्षत्रों में जन्मा हुआ बालक, माता-पिता, कुल या अपने शरीर को नष्ट करता है। स्वयं का शरीर नष्ट न हो तो धन वैभव ऐश्वर्य हाथी, घोड़ों का स्वामी होता है। गण्डमूल में जन्मे हुए बालक का २७ दिन तक पिता मुख न देखे। प्रसूति स्नान के पश्चात् शुभ मुहूर्त में गौ, स्वर्णदान आदि शांति कर पश्चात् शुभ बेला में बालक का मुख देखे।

मूलनिवासचक्र

जन्म मासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चै. श्रा. का. पौ.	आषा. आ. माघ.भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

अथ मूलाश्लेषा-पादफल

मूल पादफल		अश्लेषा पादफल		समय फल	
चरण	फल	चरण	फल	समय	फल
१	पितृ-नाश	१	शांति से शुभ	दिन में	पिता को भय
२	मातृ-नाश	२	धन-नाश	सन्ध्या में	स्वशरीर भय
३	धन-नाश	३	मातृ-नाश	रात्रि में	माता को भय
४	शांति से शुभ	४	पितृ-नाश		

मूलजनने-वृक्षविभागः

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूलनाशः	वंश-नाशः	मातृ-क्लेशः	मातुलनाशः	मैत्री-पदम्	मंत्री-पदम्	विपुल-लाभः	अल्पजीवी	फलम्

अथ मूलपुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामौ	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशुनाश	धन नाश	धनलाभ	कुटिला	धनलाभ	दयावः	कामिनी	मातृना	भ्रातृना	वैधव्य	फलम्

अथ अश्लेषाचक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थानं
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृना.	मातृना.	स्त्रीलाभ	गुरुभक्त	बली	आत्मह्न.	भ्रमः	तपस्वी	धनहानि	फलम्

अथ अश्लेषापुरुषवृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृहानिः	पितृहानिः	अल्पायुः

अथ अभुक्तमूलविचार- ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त्त में बालक के मुख का अवलोकन करे।

अश्विनी पादफल	मघा पादफल	ज्येष्ठा पादफल	रेवती पादफल
१ पिता को भय	१ माता को नेष्ट	१ बड़े भ्राता को नेष्ट	१ राज्य-सम्मान
२ सुख ऐश्वर्य	२ पितृभय	२ छोटे भ्राता को नेष्ट	२ मंत्रित्व प्राप्ति
३ मन्त्री पद	३ सुख	३ मातृ नाश	३ धन सुख की प्राप्ति
४ राज्य सम्मान	४ धन विद्या प्राप्ति	४ खुद का नाश	४ अनेक कष्ट

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृनाश	मातृनाश	मातुलनाश	कुलहानिः	धनहानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटाकर चतुर्दशी की घटियाँ युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसका द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जाने। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली-कुहूजनन फल

सिनीवाली जनन फल- सिनीवाली उसे कहते है कि अमावस्या जन्म के अनन्तर कुछ घटी बाकी हों अर्थात् चन्द्र की कुछ कला दृश्यमान हो। ऐसी अमावस्या में बालक का जन्म हो तथा घर में गौ, भैंस, घोड़ी आदि पशु प्रसूति हुए हों तो धन हानि, अपयश आदि भय होते हैं।

कुहुजनन फल- कुहू कहते है चन्द्र की कला बिल्कुल नष्ट हो जाये। अर्थात् अमावस्या का अन्त समय हो, (यह सूक्ष्म केतकी गणना से ही ठीक-ठीक समय आयेगा प्राचीन गणित से नहीं), उस समय से बालक का जन्म या पशु जन्म हो तो अधिक अरिष्ट फल होता है। इसका शास्त्र में कहे अनुसार शान्ति-विधान अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट-दोषों में जन्म फल- व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृ हानि, परिघ योग में मृत्यु होती है, तथा मृत्युयोग, दग्धयोग, भद्रा, संक्रांति दिन, सूर्य-चन्द्र-ग्रहण, शूल योग, व्याघात, गण्ड, वज्र, क्षयतिथि, महापात (क्रांति साम्य) विश्वधस्त्र पक्ष, क्षय मास आदि कुयोगों में बालक जन्मे तो अरिष्ट-शात्यर्थ शांति-विधान करना चाहिए, ताकि आयु और आरोग्य प्राप्त हो।

स्त्री-दासी-गौ-आदि पशु-यमल जन्मफलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितासिह। सुतौ च सुतकन्ये वा कन्या एव तथा पुनः।
एकलिंगौ विनाशाय द्विलिंगौ मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयौ तत्र शांतिर्विधीयते।

जन्म स्थान विचार- जन्मलग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो, अथवा पूर्णचन्द्र लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के दशवें, चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जल के ऊपर या जल के समीप स्थान में पैदा हुआ ऐसा कहना। पूर्ण चन्द्रमा अपनी राशि कर्क में हो, बुध लग्न में हो, बृहस्पति चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में, जहाज में अथवा पुल के ऊपर या नदी के सानिध्य में हुआ ऐसा कहना। लग्न और चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हो, पापग्रह देखते हों तो बालक का जन्म कारागार में वा एकांत में हुआ ऐसा कहना। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा देखता हो तो खाई वा खात में जन्म हुआ कहना। नरराशि में शनैश्चर लग्न में हो और मंगल देखता हो तो शमशान के समीप जन्म हुआ कहना और नरलग्नगत शनि को शुक्र चंद्र देखते हों तो सुन्दर दर्शन योग्य रमणीक घर में बालक का जन्म कहना। बृहस्पति हो तो राजमन्दिर वा देवालय गोशाला में वा उसके समीप का जन्म कहना। बुध देखता हो तो शिल्पालय, चित्रकारी से बने हुए सुन्दर स्थान में जन्म कहना। बुद्धिमान् ज्योतिषी ग्रहों के बलाबल को देखकर फलादेश कहें।

अन्य शुभशुभ योग- मंगल शनि दोनों त्रिकोण में हो और [illegible]

जन्मा बालक माता से जुदा हो जाए तथा ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो माता से त्यागा हुआ बालक दीर्घायु और सुखी होता है। दशम स्थान में बुध गुरु हो, केन्द्र में सूर्य, तीसरे मंगल हो ग्यारहवें पाप ग्रह हो तो बालक को छः अंगुली है ऐसा कहना। बारहवें स्थान में चन्द्रमा मंगल हो, तो बायां नेत्र और सूर्य राहु हो तो दाहिना नेत्र बालक को दुःखित हो या नष्ट हो ऐसा कहें। मंगल, शनि, राहु पांचवें स्थान में हों तो बायें कोख में लहसुन कहना। तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष वा सिंह बृहस्पति हो, दसवें घर में सूर्य मंगल हो तो बालक मूक (गूंगा) होता है। कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो और शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो छठे आठवें में बैठा हुआ चन्द्र अरिष्ट निवारक और मातृवत् पालन करने वाला होता है। चन्द्र ८वें में, मंगल सातवें में, राहु नवम स्थान में, शनि लग्न में हो, बृहस्पति तीसरे स्थान में, सूर्य पांचवें, शुक्र छठे, बुध चौथे हो तो बालक अल्पायुषी होता है। जिस बालक की जन्मकुण्डली में लग्न में बुध, शुक्र न हो, केन्द्र में बृहस्पति न हो, दशम स्थान में मंगल न हो तो वह बालक जन्म लेकर क्या कर सकता है, अर्थात् उसका जन्म व्यर्थ है। यही योग जैसे केन्द्र त्रिकोण में बुध शुक्र बृहस्पति हों, दसवें स्थान में मंगल हो तो वह बालक अपने कुल में दीपक, ज्ञानवान, दीर्घायुषी, बुद्धिमान, चतुर (किसी से ठगा नहीं जाये) ऐसा कर्त्तव्यमान्, कीर्तिमान, सर्वमानी, राज में तथा जनमानस में बहुमानी, अधिकारी महान पुरूष होता है। लग्न में शनि हो छठे चन्द्रमा और सातवें मंगल हो तो उसका पिता अधिक नहीं जीये। छठे बारहवें स्थान में पापग्रह हो या चन्द्र पापग्रह युक्त हो तो माता को अरिष्ट जानना। दशम स्थान में पापग्र[illegible] तो पिता को अरिष्ट जाने। दशम स्थान में पापग्रह हो और दशम में मंगल शत्रु राशि का [illegible] तो बालक का पिता शीघ्र ही मर जाये। लग्न में गुरु, दूसरे शनि, सूर्य भौम तथा बुध हो तो ब[illegible]क के विवाह समय में उसका पिता मरे। जन्म कुण्डली में सातवें राहु छठे ८वें में चन्द्रमा हो [illegible]ष ग्रहों की पापदृष्टि हो तो बालक की आयु बहुत अल्प होती है ऐसा आचार्यों का मत है। शनि के घर में सूर्य हो, सूर्य के घर में शनि हो या लग्न में मंगल, ८वें में गुरु हो तो बालक की केवल १२ वर्ष की आयु होती है। जन्म समय लग्न में छठे ८वें में बुध हो और उनका लग्नेश अष्टमेश पाप ग्रह युक्त या परस्पर सम्बन्धित हो तो बालक की चौथे वर्ष में मृत्यु होती है। मंगल के घर में बृहस्पति हो और ६।८ वें में चन्द्रमा हो तो बालक आठवें वर्ष में मृत्यु को प्राप्त होता है। लग्न से दशम में राहु हो या अष्टमेश क्षीण चन्द्रमा राहु से युक्त हो तो वह बालक माता-पिता तथा स्वयं का नाश करने वाला होता है। चन्द्र राहु के साथ न हो तो वह बालक १६ वर्ष पर्यन्त जीवित रहता है। बालक की कुण्डली में तीसरे सूर्य हो तो बड़े भाई को, शनि हो तो पीठ पर छोटे भाई को और मंगल हो तो पीठ पर के भाई को हानि करता है। यह फलित विचार करते समय ज्योतिषी को चाहिए कि ठीक समय लेकर जहां का जन्म हो वहां के सूर्योदय से तथा उसी नगर की लग्न सारिणी से लग्न साधन करें। जन्म टाईम स्टैण्डर्ड हो तो सूर्योदय स्टैण्डर्ड टाइम का लेकर इष्ट बनावें। सूर्योदय और जन्म टाइम समान जाति के

बाल कष्टावली चक्रम

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आये।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	मूर्ति निर्माणार्थ द्रव्य	पूजन द्रव्य	बलि विधान व समय	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र	धूप
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन अरुचि, अंगशोष।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेत पुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा, रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत।
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ- पैर अकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृशता।	एक सेर चावलों का आटा	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हां हां हीं हीं हुं हुं दुष्टग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रूदन, नेत्रपीड़ा।	एक सेर चावलों का आटा	रक्त चंदन, रक्त पुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूँ के आटे के सतिये १०।	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग साँप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वांस, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	तिल चूर्ण एक सेर	श्वेत पुष्प, श्वेत ध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुनवृक्ष के पुष्प।	भात, एक सेर आटे के पूड़े, आध सेर पूर्ण पोली, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी, तेज।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५, गेहूँ के आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़ियां सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं हुं हुं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं ग्राह-२ अस्त्र ठ: ठ: चामुण्डे चण्डिके ठ: ठ: स्वाहा।	
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हँसना, कभी-कभी रोना, मोह, मुर्छा।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात,५ मिठाई,५ सुहाली,७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर।	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गल, राई, हाथी दांत घृत।
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	चावलों का आटा एक सेर	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना।	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्त चंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वांस, शूल, अफारा, घृणा।	एक सेर गेहूँ का आटा	चंदन, पुष्प, ५ दीपक, ५ रंग की झण्डी ५।	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली,निम्बपत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वांस।	एक सेर गेहूँ का आटा	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायं. दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर, हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद झण्डी, २५ आटे के सतिये।	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सायं व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्र हास वज्र हस्ताय् ज्वल २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्रपीड़ा, संताप।	चावलों का आटा एक सेर	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ सतिये आटे के।	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियां ७, मत्स्यमांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हुं २ हन २ दुष्टग्रहं ह्रां हुं फट् स्वाहा।	

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन				गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होम द्रव्य	करे धारणम्	जप सं०	जपनीय वेदोक्त मंत्र
			१	२	३	४							
अश्विनी दस्रौ	वातज्वर, गात्रपीड़ा निद्राभय, बुद्धिभ्रम	९	९	११	१०	२०	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृत दीप, क्षीर मोदक गुडनैवेद्य	सुवर्ण घृत कुम्भ	गुडौदन तिल	खण्ड यव घृत	अपमार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐअश्विनातेजसाचक्षुः प्राणेनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।। ॐअश्विनीकुमाराभ्यां नमः।।
(भरणी) (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०	८०	४०	११	अगरगंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत गुग्गुल धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गोमहिषीघृत शर्करा, छायापात्र	कृषरान्न (खिचड़ी)	घृत मधु तिलाक्षत	अगस्त मूलम्	१० सहस्र	ॐयमायत्वाङ्गिरस्यतैपितृमतेस्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय नमः।।
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्रपीड़ा, अनिद्रा अतिदाह, उरूशूल	९	९	११	१६	२८	श्वेत चन्दन गंध, जुही पुष्प, घृतदीप, घृत गुग्गुल धूप, तिलमाषान्न, बडाधीका नैवेद्य	स्वर्ण, गोदान	पायस घृत मोदक	तिलयव घृत	कार्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐअग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्।अपाᳬरेताᳬ सिजिन्वति ॐअग्नये नमः।।
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिरपीडा, ज्वर कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७	९	१८	३०	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप घृतदीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्णगौ दान, ५कन्याभोजन	मध्वाज्यक्षोद्र शाख्यन्नक्षीर	तिलाज्य घृतयव	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐब्रह्मजज्ञानंप्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोवेनआवःसुबे धन्याउपमाअस्य विष्ठाः शतश्चयोनिमसतश्चविवः ॐब्रह्मणेनमः
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९	५	७	१०	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप घृतदीप, पायस अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तण्डुल सवत्सा गोदान	दधि शर्करा शाल्यन्न	दधि पायस	जयन्ती मूलम्	१० सहस्र	ॐइमन्देवा असपत्नᳬसुवध्वं महतेक्षत्राय महतेज्यैष्टायायमहते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांᳬराजा ॐचन्द्रमसेनमः
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर सर्वाङ्ग पीड़ा, अनिद्रा	मृ. तु.	०	१८	०	०	श्वेत चन्दनगंध, सौरभ पुष्प, दशांङ्ग धूप घृतदीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्यामवृषभ दान श्याम वस्त्र	दध्योदन मध्वाज्य	घृत मधु	सचंदनाश्व त्यमूलम्	१० सहस्र	ॐनमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुतते नमः। ॐरुद्राय नमः।।
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिरपीड़ा कटिपीड़ा	७	७	१४	२	२१	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प अष्टगंध धूप, घृत दीप घृताक्तपीतवर्णान्नि नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५, ५ कन्याभोजन	साज्य पीततण्डुल	घृत तण्डुल	अर्क मूलम्	१० सहस्र	ॐअदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिमाता सपिता स पुत्रःविश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॐअदि०
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७	७	१०	२१	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत गुग्गल, धूप, घृतदीप, घृतपावस, शर्करा नैवेद्य।	सुवर्ण, गौ, पीत वस्त्र	समण्डक मोदक	घृत पायस	तुषार मूलम्	१० सहस्र	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छ्वसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं चेहि चित्रम। ॐबृहस्पतये नमः।।
आश्लेषा (सर्प)	सर्वाङ्ग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसमकष्ट	मृ. तु.	०	०	४१	०	कुंकुम अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप; घृतक्षीर नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र	हवि दध्योदन	शर्करा घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐनमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनुः ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्प्पेभ्यो नमः।।
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्धगात्रपीड़ा	२०	१५	७	१७	२०	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतमिष्टान्न नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, माष दान	सतिलाज्य दुग्धान	तिल घृत तण्डुल	भृंगराज मूलम्	१० सहस्र	ॐपितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नापित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्। ॐपि०
पू.फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ. तु.	०	१५	०	३०	श्वेत चन्दनगंध, मालती पुष्प, घृतबिल्व धूप, घृतदीप अपूपोदनमोदक नैवेद्य।	पित्तल, यवमाषान्न, स्वर्ण, गौ दान	घृतौदन पायस	कङ्गनी तिलघृत	कष्टकारि मूलम्	१० सहस्र	ॐभगप्रणोतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः। भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिनृ वनःस्याय।। ॐभगायनमः।
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर शिरपीड़ा अतिकष्ट	७	७	१४	७	६०	कर्पूर, केसरगंध अर्कपुष्प, घृतगुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, स्वर्ण रजत, अन्न, गौदान	घृत शर्करा शाल्यन्न	तिल घृत	पटोल मूलम्	१० सहस्र	ॐदेवावध्वर्यू धागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वायणँᳬसमंजाथे तं प्रत्नथा यं वेनश्चित्रं देवानाम।। ॐअर्यम्णे नमः।।
हस्त (सविता)	उरुशूल, अफारा सर्वांग पीड़ा प्रस्वेद	१५	१५	१७	१५	०	रक्त चन्दन, केसर गंध, कमल पुष्प, घृत गुग्गल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	सुवर्ण, पयस्विनी गौ दान	मिष्टान्न पायस	दधि घृत	जाति मूलम्	५ सहस्र	ॐविभ्राड्बृहन्पिवतु सौम्य मध्यायुर्दध ज्ञपत चविहुतमम् यातुजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति ॐसवित्रे नमः।
चित्रा विश्वकर्मा	विचित्र रोग [illegible]	११	१२	९	९	१६	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत गुग्गल धूप, [illegible] नैवेद्य	तिल, गुड़, विचित्र [illegible]	विचित्रान्न [illegible]	तिलाज्य [illegible]	[illegible]	१० सहस्र	ॐत्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदाछन्द इन्द्रियमुक्षागौर्नवयोदधः।। ॐविश्वकर्मणे नमः।।

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन				गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु	बलिद्रव्य	होमद्रव्य	करे धारणम्	जप संख्या	जपनीय वेदोक्त मंत्र
स्वाति (वायुः)	नानाकष्ट, ज्वरपीड़ा,	मृ.तु.	६०	१७	३०	०	चन्दनगंध (दमनकपुष्प) अगरु गुग्गुल धूप, घृतदीपक घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तधेनु पक्वान्न	घृतपायस	तिल यव घृत	जाति मूलम्	१० सहस्र	ॐ वायो ये ते सहस्रिणो रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वा म सोम पीतये।। ॐवायवे नमः।।
विशाखा (इंद्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५	०	४	१३	चन्दन केसरगंध, कमलपुष्प, देवदारु घृतधूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृष छायापात्रदान	सहवि चित्रान्न	आज्य पायस	गुञ्जा मूलम्	१० सहस्र	ॐ इन्द्राग्नी आगत\ृसुतं गीर्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेपिता।। ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः।।
अनुराधा (मित्रः)	शिर पीड़ा, तीव्र ज्वर	स्थिर	६०	१२	३६	३०	केसरगन्ध, कमलपुष्प, चन्दन धूप घृतदीप, घृतपायस, नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	मध्वाज्य गुडमाषान्न	यव घृत	सुपुष्प मूलम्	१० सहस्र	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत\ृसपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायश\ृसत।। ॐमित्रायनमः।।
ज्येष्ठ (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९	९	६	४	श्वेत चन्दनगंध, चम्पकादिपुष्प, कपूरधूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्णतिल, नील वस्त्रदान	दध्योदन सुपुष्प	तिल, घृत तण्डुल	अपामार्ग मूलम्	५ सहस्र	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितार मिन्द्र\ृहवे हवे सुहव\ृशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र\ृस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ।।ॐ शुक्राय नमः।।
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदर रोग सन्निपात	७	०	९	१५	६	कृष्ण अगरगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप, कृष्णागुरुधूप, माषमिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र वस्त्र कुमारी पूजा	सहवि माषान्न	कंदमूल घृत	मन्दार मूलम्	५ सहस्र	ॐ मातेव पुत्र पृथिवी पुरीष्यमणि\ृस्वेयोनावभारुपा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभिः संवदानः प्रजापतिविश्वकर्मा विमुच्चतु।। ॐ निर्ऋतये नमः।।
पू. षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कम्पन, महाकष्ट	मृ. तु.	०	१५	२४	१०	श्वेत चन्दनगंध, कमलपुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न, नैवेद्य।	स्वर्णवस्त्र तिल तंडुल जल कुम्भ गौदान	घृतपायस मिष्ठान्नहवि	तिल, घृत तण्डुल	कर्पास मूलम्	५ सहस्र	ॐ अपाघमप किल्विषमपकृ[illegible]म गेरपः। अपाम्मार्गत्वमस्मदप दुःस्वप्न्य\ृसुव।। ॐ अद्भ्यो नमः।।
उ. षा. (विश्वेदेवा)	कटिपीड़ा उरुशूल, प्रलाप	३०	३०	२४	२६	१६	श्वेत चन्दनगंध, कमलपुष्प, घृत गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न स्वर्णदान	सहविपायस तिलाज्य	तिलाज्य यव	कर्पास मूलम्	१० सहस्र	ॐ विश्वेदेवाः श्रृणुतेम\ृहवं मे ये अन्तरिक्षे य उपद्यविष्ठय। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्।। ।।ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।।
श्रवण (विष्णुः)	सर्वाङ्गपीड़ा, त्रिदोषमय, अतिसार	११	६०	२४	६	९	श्वेत चन्दनगंध, मालतीपुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृत दीप, षड्रस शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ छायापात्रदान	सहवि पायस	तिलाज्य यव	अपामार्ग मूलम्	१० सहस्र	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो र्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ विष्णवे नमः।।
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५	२	२७	२१	श्वेत चन्दनगंध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण गौ	पायस मोदक पूपतिलपिष्ठ	तिलाज्य पायस	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण व्रतधारेण सुप्त्वा कामधुक्षः ।।ॐ वसुभ्यो नमः।।
शतभिषा (वरुणः)	वातज्वर, सन्निपात कष्ट	११	०	४५	३	३६	केसर अगरगंध, कमलपुष्प, कर्पूर चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न घट, अश्व छायापात्र	घृतचित्रान्न	आज्य दध्योदन	कमल मूलम्	१० सहस्र	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।। ॐ वरुणाय नमः।।
पू. भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता शरीर पीड़ा, त्रिदोष	मृ. तु.	०	१२	५१	१७	केसर चंदनगंध, श्वेतार्क पुष्प, शतौषधि मिश्रितधूप, घृतदीपक, दधिपायस, नैवेद्य।	स्वर्णरजत अन्न, श्वेतवस्त्र,छायापात्रदान	दध्योदन पायस	क्षीराज्य शर्करा	भृङ्गराज मूलम्	१० सहस्र	ॐ उतनोऽहिर्बुध्न्य श्रृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवाऽऋतावृधोहुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु।। ।।ॐ अजैकपदे नमः।।
उ. भा. (अहिर्बुन्ध्य)	कामला, अतिसार, शूल वात ज्वर	७	१०	२०	७	१५	चन्दन कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्णवस्त्रदान	तिल घृत मुद्ग माष	तिलाज्य यव	अश्वत्य मूलम्	१० सहस्र	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि\ृसी नवर्तयाम्यायुपेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याम।। ॐ अहिर्बुध्न्याय ननः।।
रेवती (पूषा)	वात पित्तमय ज्वर उरुशूल, चित्तभ्रम	स्थिर	१८	१०	९	२०	रक्तचन्दगंध, मंदारपुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रजतवस्त्र, पैत्तलपात्र वृषभ, छायापात्र	सहवि दध्यन्न	तिलाज्य तण्डुल	अश्वत्य मूलम्	५ सहस्र	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इहस्मसि ।।ॐ पूष्णे नमः।।

घाततिथिर्घातवार: घातनक्षत्रमेव च।
यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनम्।। } **अथ घातचक्र** { यह घातचक्र द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य है विवाह व उपनयनादि में यह घातचक्र वर्ज्य नहीं है।

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनुः	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	[illegible]
घाततिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	[illegible]
घातवार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	[illegible]
घातनक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शततारका	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	[illegible]
घातयोग	विष्कंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतिपात	वज्र	वैधृति	गंड	[illegible]
घातकरण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	[illegible]
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पुरुषघातचन्द्र:	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनुः	वृषभ	मीन	सिंह	धनुः	[illegible]
स्त्री घातचन्द्र:	मेष	धनुः	धनुः	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनुः	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	[illegible]

नामाक्षरों से वैरवर्ग देखने का कोष्ठक। स्वकीय-वर्ग से पंचम वर्ग वैरी समझना

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स [illegible]
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	[illegible]

अवकहडाचक्र (नक्षत्र, राशि, स्वामी, वर्ण वश्य, नाड़ी, योनि, गणबोधकचक्र)

नक्षत्र	नाड़ी	योनि	गण	चरणाक्षर १	२	३	४
अश्विनी	आद्या नाड़ी	अश्व योनी	देव गण	चू	चे	चो	ला
भरणी	मध्या नाड़ी	गज योनी	मनुष्य गण	ली	लु	ले	लो
कृत्तिका	अन्त्या नाड़ी	मेष योनी	राक्षस गण	अ	इ	उ	ए
रोहिणी	अन्त्या नाड़ी	सर्प योनी	मनुष्य गण	ओ	वा	वी	वू
मृगशीर्ष	मध्या नाड़ी	सर्प योनी	देव गण	वे	वो	क	की
आर्द्रा	आद्या नाड़ी	श्वान योनी	मनुष्य गण	कू	घ	ङ	छ
पुनर्वसु	आद्या नाड़ी	मार्जार योनी	देव गण	के	को	हा	ही
पुष्य	मध्या नाड़ी	मेष योनी	देव गण	हू	हे	हो	डा
अश[illegible]	अन्त्या [illegible]	मार्जार [illegible]	राक्षस [illegible]	डी	डू	[illegible]	[illegible]

राशि	राश्यधिपति	वर्ण	वश्य
मेष	मंगल	क्षत्रिय वर्ण	चतुष्पाद
वृष	शुक्र	वैश्य वर्ण	चतुष्पाद
मिथुन	बुध	शूद्र वर्ण	मानव
कर्क	चन्द्र	विप्र वर्ण	जलचर

नक्षत्र	नाड़ी	योनी	गण	चरणाक्षर १	२	३	४
मघा	अन्त्या नाड़ी	मूषक योनी	राक्षस गण	मा	मी	मू	मे
पूर्वाफाल्गुनी	मध्या नाड़ी	मूषक योनी	मनुष्य गण	मो	टा	टी	टू
उत्तरा फाल्गुनी	आद्या नाड़ी	गो योनी	मनुष्य गण	टे	टो	पा	पी
हस्त	आद्या नाड़ी	महिष योनी	देव गण	पू	ष	ण	ठ
चित्रा	मध्या नाड़ी	व्याघ्र योनी	राक्षस गण	पे	पो	रा	री
स्वाति	अन्त्या नाड़ी	महिष योनी	देव गण	रू	रे	रो	ता
विशाखा	अन्त्या नाड़ी	व्याघ्र योनी	राक्षस गण	ती	तू	ते	तो
अनुराधा	मध्या नाड़ी	मृग योनी	देव गण	ना	नी	नू	ने
ज्ये[illegible]	आद्या [illegible]	मृग [illegible]	राक्षस [illegible]	नो	या	[illegible]	[illegible]

राशि	राश्यधिपति	वर्ण	वश्य
सिंह	सूर्य	क्षत्रिय वर्ण	वनचर
कन्या	बुध	वैश्य वर्ण	मानव
तुला	शुक्र	शूद्र वर्ण	मानव
वृश्चिक	मंगल	विप्र वर्ण	कीटक

नक्षत्र	नाड़ी	योनि	गण	चरणाक्षर १	२	३	४
मूला	आद्या नाड़ी	श्वान योनी	राक्षस गण	ये	यो	भा	भी
पूर्वाषाढ़ा	मध्या नाड़ी	वानर योनी	मनुष्य गण	भू	धा	फा	ढा
उत्तराषाढ़ा	अन्त्या नाड़ी	नकुल योनी	मनुष्य गण	भे	भो	जा	जी
श्रवण	अन्त्या नाड़ी	वानर योनी	देव गण	खी	खू	खे	खो
धनिष्ठा	मध्या नाड़ी	सिंह योनी	राक्षस गण	गा	गी	गू	गे
शततारका	आद्या नाड़ी	अश्व योनी	राक्षस गण	गो	सा	सी	सू
पूर्वभाद्रपदा	आद्या नाड़ी	सिंह योनी	मनुष्य गण	से	सो	दा	दी
उत्तराभाद्रपदा	मध्या नाड़ी	गो योनी	मनुष्य गण	दू	थ	झ	ञ
रेवती	अन्त्या [illegible]	गज [illegible]	देवगण	दे	दो	चा	[illegible]

राशि	राश्यधिपति	वर्ण	वश्य
धनु	गुरु	क्षत्रिय वर्ण	मानव
मकर	शनि	वैश्य वर्ण	जलचर
कुम्भ	शनि	शूद्र वर्ण	मानव
मीन	गुरु	विप्र वर्ण	जलचर

अथ पुरुषजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुःखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	व्रणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्य	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मन्त्री	दुःशीलः	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाद्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुजिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्महा	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	तनुः १	धन २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पतिः ७	मृत्यु ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्यय १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पतिप्रि.	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलठा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढया	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम०	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढया	सुभगा	सुरुपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाद्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रिय	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढया	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढया	विधवा	सदुःखा	शोकार्त्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

अथ सूर्यादिग्रहाणां गोचरफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानाश	भयं	श्रीः	मानभंग	दैन्य	विजयः	मार्गः	पीड़ाः	सुकृना	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्य नाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्री लाभ	रोगः	धर्म लाभ	सौख्यं	धनलाभ	धन नाश
भौमः	शत्रुभीः	धननाश	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्री कष्ट	शत्रुभीः	शत्रु पीडा	शोकः	धनलाभ	धन नाश
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रु भीः	पशुलाभ	सुखं	स्थानला.	पीड़ा	धन लाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धन नाश
गुरुः	भय	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमा	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्र लाभः	शत्रुभीः	शोकः	धन लाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	मयं	धननाश	एश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्ट	धन लाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धननाश	धन लाभ	वैर	शोकः	श्रीः	क्लहः	मृत्युः	दुःखं	वैर	सुख	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धन लाभ	क्लहः	रोगः	पापं	शौकः	कीर्ति	शत्रु भीः

अथ वर्षकुण्डल्यांतन्वादिभावस्थ ग्रहफलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धन लाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रु नाश	पीड़ा	कष्टम्	धर्मनाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्यग्रः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्भति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सोख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्र लाभ	क्लेह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मानलाभ	सुखलाभ	रोग
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्रा.	अष्टम्	सुखम्	रोग	धर्म लाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धन लाभ	शत्रुभीः	स्त्री सुख	कष्टम्	धर्मोदय	मानलाभ	क्षेमलाभ	व्यय
शनिः	वातार्ति	पीड़ा	धन लाभः	दुःखम्	पुत्र पीड़ा	जयः	स्त्री कष्ट	रोग	भाग्याहा	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभी.	कष्टम्	धर्म हानि	विजय	सुलाम	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	र्दुबुद्धि	सुखम्	क्लेश	पीड़ा	भाग्याना	धनलाभ	लाभः	शोकः
मुन्थाः	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखप्राप्ति	कष्टम्	व्यसनं	दुःखम्	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अंगस्फुरणफलम्

पुरुषों का दायां अङ्ग और स्त्रियों का बायां अङ्ग फड़कना शुभ है। इन्हीं अङ्गों में तिल, लहसुन, मस्सा हो या खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानना। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल या खाज उठे तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	स्कन्ध	भोगसमृद्धि	कपोल	शुभाप्ति	हस्त	द्रव्य-लाभ	पादोपरि	स्थानलाभ	हृदय	इष्ट सिद्धि	नाभि	स्त्री नाश	भग	पति प्राप्ति	उदर	कोषलाभ
ललाट	स्थानलाभ	भ्रु मध्य	सुख प्राप्ति	नेत्र	धनाप्ति	नेत्रोर्द्व	विजय	वक्षः स्थल	विजय	घाटि	प्रमोद	आंत्रिक	कोषवृद्धि	कुक्षि	सुप्रीति	लिंग	स्त्रीलाभ

ग्रहाः गौचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः													जप सं.	जपनीय मन्त्रः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूँ	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्तगौ	रक्त चन्दन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सू. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेत चन्दन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्त वस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्त चन्दन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरा वस्त्र	सर्व पुष्प	हाथी दांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपा मार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीत वस्त्र	पीत पुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेत चन्दन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू.उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्ण वस्त्र	कृष्ण पुष्प	कस्तूरी	कृष्णगो	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नील वस्त्र	कृष्ण पुष्प	कस्तूरी	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्र वस्त्र	धूम्र पुष्प	नारियल	कंबल	कबरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेत वस्त्र	श्वेत पुष्प	कर्पूर	मिसरी	श्वेत चन्दन	हाथी दांत	मुथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

सूर्यादिग्रहपीडासु स्नानार्थमौषधानि- (यथा सिद्धौषधै रोगन्नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्। तथा स्नानविधानेन ग्रहदोषः प्रणश्यति।।)

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मनशिला	पञ्चगव्य	बिल्वछाल	गोबर	मालती पुष्प	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्त चन्दन	अक्षत	श्वेत सरसों	मनशिला	सुरमा	तिल पत्र	तिल पत्र
देवदारू	संख	धमनी	फल	मुलहठी	सुवृक्षमूल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
खश, केशर	सिप्पी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मधु	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
मुलह्ठी	श्वेत चन्दन	सिंगरफ	मधु	मालती		सौंफ	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्त पुष्प	स्फटिक	माल कंगनी	मोती			मुत्थरा		
रक्तकनेर		मौलसिरी	सुवर्ण			खिल्लां		

सप्त धान्य- उड़द १, मूंगी २, कणक- (गेहूँ) ३, छोले (चने) ४, जौ ५, धान्य (तण्डुल) ६, कंगनी ७।।

सर्वग्रहाणां दोषोपशान्तये सामान्यमौषधिस्नानम्

लाजवन्ती (छुईमुई) कूट, खिल्लां, कांगनी, जव सरसों, देवदारू, हल्दी, सर्वौषधी, लौध इन सब औषधियों के जल से सतीर्थोदक स्नान करनेसे सब ग्रहों की पीड़ा नाश होती है, तथा पूर्व ही जो दान कह चुके हैं उनके करने से शांति होती है। गुरु के वचन, देवता ब्राह्मणों की वन्दना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीड़ा नहीं करते (श्रीपतिः)।।

शनि विचार- गोचरे द्वादशे नेत्रे हृदये जन्मभे शनिः। द्वितीये गुल्फयोर्मध्ये द्यना नादौ च विलोमतः।।

फलं- नेत्रस्थे शत्रुसन्तापो हृद मानसीव्यथा, चरणे भ्रमणं देशे देशः संचारयेच्छनिः।।

अथ लघु कल्याणी (ढैया) फलम्- कल्याणीं प्रवदन्ति वै रविसुतो राशेश्चतुर्थाष्टमे, व्याधिं बन्धुविरोध देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्। मृत्यु चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि वह्निर्भयं, लोहं शस्त्र भयं, सदैवमसुखं कुर्यादसौ सर्वदा।।१।। **अथ वृहत् कल्याणी (साढ़ेसाती) फलम्-** राशौ द्वादश (१२) मूर्ध्नि जन्म (१) हृदये पादौ द्वितीये (२) शनिर्नाना क्लेश करोति दुर्जनभयं पुत्रान्पशून्पीड़येत्। हानिः स्थान्भ्रंशं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम्। रामाबुद्धि विनाशनं प्रकुरुते [illegible]

अथ ग्रहाणां राशि प्रवेश समये पाद निर्णय- किसी ग्रह का राशि प्रवेश समय में पाद देखना हो तो अपनी राशि से जिस दिन ग्रह बदलता हो उस दिन जिस राशि में चन्द्रमा हो उस राशि तक गिनें, वह संख्या २।५।९ हो तो रजतपाद, ३।७।१० में ताम्रपाद, १।६।११ में सुवर्णपाद, ४।८।१२ में लोहपाद जानना। गुरु सुवर्णपाद में शनि लोहपाद में, मङ्गल ताम्रपाद में, शुक्र रजतपाद में शुभ होते हैं। शनिवाहन- जन्म नक्षत्र से जिस दिन शनि बदले उस दिन के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देवें, शेष क्रमशः शनि का वाहन समझें- १ गर्दभ, २ अश्व, ३ हस्ति, ४ महिष, ५ जम्बूक, ६ सिंह, ७ काग, [illegible] फल समझें।

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७				राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९				बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्				आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पूभा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पूफा. पूषा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९	शु	२	१०	०	र	०	४	६	च	१	८	०
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०	र	०	१०	६	च	०	७	०	मं	१	२	०
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२	च	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	र	०	९	१८	च	१	७	०	मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	र	०	१०	२४	च	१	४	०	मं	१	१	९	रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६	च	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६	बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
शु	१	०	०	र	०	६	०	च	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

त्रिराशिपति चक्रम्

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.
सू.	शु.	श.	शु.	गु.	च.	बु.
गु.	चं.	बु.	म.	सू.	शु.	श.
वृ.	ध.	म.	कु.	मी.	राशयः	
मं.	श.	मं.	गु.	चं.	दि.	प.
शु.	श.	मं.	गु.	चं.	रा.	प.

दशा का भुक्त भोग्य- गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट घटी जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाये हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र की घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणाकर फल बना लें, भयात की पलों को दशा के वर्षों से गुणा कर भभोग की पलों से भाग देवें, लब्ध अंक वर्ष। शेषांक को १२ से गुणें, भभोग के पलो से भाग दें, लब्ध मास, फिर शे. को ३० से गुणा कर भभोग की पलों से भाग दें लब्ध दिन आवेंगे। यह दशा के भुक्त वर्षादि होंगे। इन्हें दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

योगिनी दशाऽन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
श्र. आर्द्रा चित्रा			ध. पुनर्वसु स्वाति			श. पुष्य विशा.			अश्वि अश्ले अनु. पूभा.			भर. मघा ज्ये. उ. भा.			कृ. पूफा. मू. रे.			रो. उ. फा. पू. षा.			मृग. हस्त उ. षा.		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	गु.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सिं.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सिं.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सिं.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सिं.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सिं.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पिं.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सिं.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पिं.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सिं.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पिं.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०

अथांङ्ग विभागे पल्ली (छिपकली कोढ़किरली) पतन फलम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रू मध्ये	राज्य संबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	प्रधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयं	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यताः
जानुद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्र लाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजन
ललाटे	बंधुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
द.कर्णे	आयुवृद्धि	नेत्रयोः	धनाप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	मरणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने (छिपकली के गिरने पर) शुभ तिथिवार नक्षत्र- यदि छिपकली १।२।३।५।६।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में गिरे तो तो श्रेष्ठ लाभदायक है। तथा चं. बु. गु. शु. इन चारों में भी शुभ फल होता है। अश्वि. रो. मृ. पु. पुन. उफा. ह. चि. स्वा. ध. रे. अनु. श. ये नक्षत्र शुभ फलदायक हैं। इनके अतिरिक्त तिथि नक्षत्र वारादि में छिपकली गिरे तो अशुभ होता है। **पल्लीपातेकर्त्तव्य कर्म्म-** पल्ली (किरली) तथा सरठ (गिरगट) स्पर्श पर वस्त्र-सहित स्नान करें। जन्म नक्षत्र, मृत्यु योग, दग्ध दिन, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा में पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है उसकी शांति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय का जप वा तिल स्वर्णदान पंचगव्य से स्नान तथा घृत काछायापात्रदान करना भी उचित है।

छिक्का फल- छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है। मदिरा के योग से अथवा "छींक सूंघनी छलकर लीन्हीं। पीनस, सर्दी, घांस फल हीनों।। छींक पीठ की कुशल उचारे। बांई कारज सबै सवांरे।।१।। सम्मुख छींक लड़ाई भाषे, छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै।।२।। ऊंची छींक कहे जयकारी, नीची छींक होवे भयकारी। अपनी छींक महादुखदायी, ऐसे छींक विचारो भाई।।३।। कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वेश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले। शयन के समय और सन्ध्यावन्दन जपादि के आरम्भ में छींक अशुभ नहीं होती।

विविध मुहूर्त्ताः

अथ स्त्रीणामाद्यरजोदर्शने शुभाशुभ विचार:

शुभ मासा: - वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास और शुक्ल पक्ष श्रेष्ठ है।

शुभ तिथि- १।२।५।७।१०।११।१३।१५, कृष्णपक्ष में दशमी पर्यन्त मध्यम, उपरान्त नेष्ट। चन्द्र, बुध, गुरु शुक्रवार श्रेष्ठ। अश्विनी, रो. मू. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. श्र. श. ध. रे. नक्षत्र शुभ। पुन. कृ. म. वि. मू. नक्षत्र मध्यम, अन्य अशुभ। वृ. मि. कर्क, कं. तुला ध. मी. लग्न शुभयुक्त तथा शुभ दृष्ट हों तो प्रथम रजोदर्शन शुभ है।

अशुभ समय- अष्टमी, द्वादशी, षष्ठी, रिक्ता, अमावस, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति ग्रहण, मार्ग में, कुदेश, उत्पात का समय इन योगों में प्रथम रजोदर्शन होवे तो अनिष्ट है। इसका यथा विधि जाति विधान करने पर शुभ होवे।

स्नान मुहूर्त्त- है. स्वा. मृ. अश्विनी अनु. ध. रो. उत्तरा ३. पु. शुभ तिथि, शुभ वार में कुयोग रहित समय में, लग्नबल देख शुभनवांश में, प्रथम ऋतुमती स्नान करें।

अथ गर्भाधान मुहूर्त्त विचार- रजो दर्शन की ४ रात्रि को छोड़कर समरात्रि में, रो. मृ. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. नक्षत्र तथा मेष कर्क सिंह तुला ध. म. इन लग्नों में, लग्न से ३।६।११ वें में पाप ग्रह और र.मं.गु. लग्न को देखें तथा विषम राशि नवांश में हो, पति पत्नि को चन्द्र शुभ हो, ऐसे समय में गर्भाधान संस्कार करें। पुन. अश्वि. पुष्य वि. नक्षत्र गर्भाधान में मध्यम माने है। गर्भधान में चन्द्रबल स्त्री को विशेष होना चाहिए।

गर्भाधानान्तर दश मासों के स्वामी- प्रथम मास का स्वामी शुक्र, द्वितीय का मंगल, तृतीय का गुरु, चतुर्थ का सूर्य, पंचम का चन्द्र, षष्ठ का शनि, सप्तम का बुध, अष्टम का गर्भ लग्नपति, नवम का चन्द्र और दशम मास का स्वामी सूर्य है। अष्टम मास में श्र. रो. पुष्य. नक्षत्र शुभ तिथिवार और अष्टम स्थान शुद्ध लग्न में गर्भ रक्षार्थ विष्णु-पूजन करें।

पुंसवन सीमान्त मुहूर्त्त विचार- गर्भ के द्वितीय तृतीय मास में पुंसवन करना चाहिए। छठे और आठवें मास में मासाधिपति बलवान होने पर सीमन्त कर्म करे। पुंसवन सीमन्त में गुरु शुक्र के अस्त का दोष नहीं है। र.मं.गुरूवार, मतांतर से सो. बु. शुक्रवार, दम्पत्ति का चन्द्रबल, तारा शुद्धि देख रो.,मृ.,पुष्य.,पुन.,हस्त,मू.,मं,उत्तरा ३ जन्म नक्षत्र बिना इन नक्षत्रों में तथा १।२।३।५।७।१०।११।१३ शुक्ल पक्ष की तिथियों में, कृष्ण पक्ष में १० पर्यन्त शुभ, पूर्वान्ह श्रेष्ठ है। पुरुष संज्ञक लग्न तथा नवांश में लग्न से १।४।५।८।९।१० में शुभग्रह ३।६।११ में पापग्रह, चन्द्र १।६।८।१२ वें वर्ज्यकर अन्य स्थानों में हो ऐसे मुहूर्त में पुंसवन और सीमान्त संस्कार करना श्रेष्ठ है।

मेधाजनन संस्कार- नालछेदन से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में स्वर्ण लगाकर स्वर्ण सहित अंगुली से शहद में गौघृत मिलाकर **'ॐ भूस्त्वयि दधामि.' 'ॐ भुवस्त्वयि दधामि', 'ॐ स्वस्त्वयि दधामि', 'ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि'** इन चारों मन्त्रों से नवजात बालक को थोड़ा-थोड़ा मधु धृत चार बार चटावें, ऐसा करने से बालक बुद्धिमान और यशस्वी होता है।

स्तनपान मुहूर्त्त- पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृति रिक्ता तिथि का त्याग कर शुभ तिथि वार में पुन पुष्य. मृ. ह. श्र. रे. नक्षत्र में स्तनपान करना शुभ है।

प्रसुति स्नान मुहूर्त्त- रिक्ता तिथि को छोड़कर शुभ तिथि, र. मं. गु. वार अश्विनी रो. मृ. तीनों उत्तरा, ह. स्वा. अनु. रेवती नक्षत्रों में कुयोग रहित दिन में प्रसुति स्नान शुभ है।

जल पूजन मुहूर्त्त- मास के समाप्त होने पर बु. गु. चन्द्रवार, रिक्ता अमावस रहित तिथियों में मृ. पुन. पु. ह. अनु. मू. नक्षत्रों जल पूजन श्रेष्ठ है। चैत्र, पौष, अधिक मास, गुरु शुक्र का अस्त, मास पूरा होने पर वर्ज्य करें अर्थात् एक मास तक इनका दोष नहीं।

जातक कर्म नामकरण संस्कार- जातक कर्म नाल छेदने के पूर्व करना योग्य है। उस समय न हो सके तो सूतक निवृत्त होने पर ब्राह्मण ११वें, क्षत्रिय १३वें, वैश्य १६वें, शूद्र २१वें दिन नाम कर्म पूर्वकुलाचार के अनुसार करें। सूतक समाप्ति पर ११वें या १२वें दिन जातक कर्म नामकर्म संस्कार न हुआ हो तो भद्रा व्यतिपात वैवृति संक्रांति रहित १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, शुभवार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. तीनों उत्तरा अभि. श्र. ध. श. रे. इन नक्षत्रों में लग्न नवांश बल की योजना कर विधि के अनुसार बालक के दक्षिण कर्ण में तीन बार राम कहें।

दोलारोहरण (बालक को झूले में झुलाना)- जन्म दिवस से १०।१२।१६।१८।३२ वें दिन रिक्ता अमावस रहित तिथि, शुक्रवार, अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. तीनों उत्तरा रे. नक्षत्रों में शुभ होता है। सूर्य नक्षत्र से आगे ५ और पीछे ७ नक्षत्र शुभ होते हैं।

अथ निष्क्रमण मुहूर्त्त- बारहवें दिन बालक का निष्क्रमण करें। सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य और नक्षत्रों के दर्शन करावें। यह न हो तो तृतीय चतुर्थ मास में मं. श. वर्जित वारों में रिक्ता भद्रा अमावस आदि कुयोग रहित शुभ दिन में, अश्वि. रो. पुन. पुष्य. ह. अनु. स्वा. मू. श्र. ध. नक्षत्रों में शुभ है।

भूम्युपवेशन- पांचवें मास में पृथ्वी और वराह का पूजन कर रिक्ता अमा. रहित तिथि शुभवार, अश्वि., रो. मृ. पुष्य. हस्त. अनु. ज्ये. अभि. तीनों उत्तरा नक्षत्रों में, स्थिर लग्न में बालक की कमर में सूत्र बांधकर पृथ्वी पर बिठावें। मन्त्र यह है- **"ॐ रक्षैनं वसुधे देवि! सदा सर्वगते शुभे! आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये!।।"**

बालक को पृथ्वी पर बिठाने के समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, दवात, सुवर्ण, चांदी, शस्त्र, वेद की पुस्तकें, धान्य, मशीनें, छोटी मोटरें, इन्जिन आदि वस्तुएँ रखें, इनमें से जिस वस्तु को बालक पहले ग्रहण करे उसी से उसकी जीविका होती है, इसलिए आगे वही विद्या उसकी पढ़ाई जावे।

अन्नप्राशन- जन्म से [illegible] वें मास में पुत्र को और ५।७।९।११ वें मास

में कन्या को भद्रा व्यतिपातादि दोष रहित १।३।५।७।१०।१३।१५ इन तिथियों में शुभ वार, अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. ध. श. तीनों उत्तरा, रे. इन नक्षत्रों में, जन्मलग्न या जन्मराशि से आठवां लग्न या नवांश तथा मीन, मेष, वृश्चिक लग्न को त्याग कर दशम स्थान में पापग्रह न हो तो अन्नप्राशन कराना श्रेष्ठ है।

कर्णवेध- चातुर्मास (आषाढ़ शु.११ से कार्तिक शु. ११ तक) चैत्र पौष जन्म मास तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि ४।९।१४ और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वें या १६वें दिन अथवा ६।७।८ वें मास में या विषम वर्षों में, शुभवार अश्वि. मृ. पुन. पु. ह. चि. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो, वृ. तु. ध. मीन लग्न और लग्न में गुरु हो तो कर्णछेदन श्रेष्ठ होता है।

मुण्डन चौल (चूड़ाकर्म) संस्कार- बालक की माता को ५ मास का गर्भ हो तो ५ वर्ष से न्यून के बालक का चौलकर्म नहीं करना। ज्येष्ठ मास में नहीं करना, तथा चैत्र मास को छोड़ विषम वर्ष में उत्तरायण में, २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथियों में, अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभिजित्, श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में। अष्टम स्थान शुद्ध होने पर चौल करना श्रेष्ठ है। तथा कुलाचारानुसार इष्टदेवता के आगे भी मुण्डन संस्कार और कर्णवेध कर दिया जाता है, यह 'यथा कुलधर्मतः' इस स्मृति के अनुसार ठीक ही है।

क्षौर करने के नियम तथा मुहूर्त्त- चौलकर्म की तिथि क्षौर नक्षत्र क्षौर (बाल कटाने) के लिए श्रेष्ठ है। रवि मंगल शनिवार, पूर्व क्षौर से ९वां दिन, ४।८।९।१४।१५।३० तिथि, संक्रांति, रात्रि, संध्याकाल, बिना आसन, सग्राम में, यात्रा के दिन, स्नान करके शरीर में उबटन लगाने के अनन्तर भोजन के बाद क्षौर कराना अशुभ है। परन्तु विवाह, यज्ञ, मृतक कार्य, कारागार से छूटने पर ब्राह्मणाज्ञा, राजाज्ञा से किसी समय में क्षौर बनवा सकते हैं। राजकर्मचारी तथा रूपजीवी जैसे नट, भाट बहुरूपिये नाटक कम्पनी, फिल्म कम्पनियों में काम करने वाले प्रतिदिन क्षौर बनवा सकते हैं, उनके लिए मुहूर्त्त की आवश्यकता नहीं। ब्राह्मण रविवार को, क्षत्रिय मंगल को, वैश्य शूद्र शनिवार को भी क्षौर बनवा सकते हैं, तथा ब्राह्मण को शाखेश के वार में भी क्षौर करवाने में हानि नहीं।

कन्या का नाक छेदन मुहूर्त्त- शुक्ल पक्ष, शुभ तिथि शुभ वार कुयोग रहित प्रथम प्रहर में कर्णविधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, स्वाति शत. इनमें नाकछेदन करना शुभ है।

कन्या को सीना पिरोना सिखाने का मुहूर्त्त- रिक्ता अमावस रहित तिथि, रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार। अश्वि. पुन. चि. अनु. ध. इन नक्षत्रों में कुयोगादि रहित शुद्ध दिन में कन्या को चन्द्र बल देख सीना कसीदा आदि का कार्य सिखाना आरम्भ करें।

अक्षरारम्भ- उत्तरायण में जन्म से ५,७ वें वर्ष २।३।५।६।११।१२ तिथि, शुक्रवार,अश्वि, आर्द्रा.,पुन.,पु.,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,अभि.,श्र.,रे. इनमें तथा चररहित लग्नों में गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मी तथा अपने कुल देवताओं का पूजन कर अक्षरारम्भ करें।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त- उत्तरायण, फाल्गुन मास छोड़कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथि तथा रवि, गुरू, शुक्रवार और अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा. पुन. पु. आश्ले. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. उत्तरा तीनों और रेवती नक्षत्रों में विद्यारम्भ शुभ है। र. मं. श. वार, रिक्ता तिथि, ज्ये. अश्ले. म. तीनों पूर्वा. भ. कृ. वि. आर्द्रा. उषा. श. नक्षत्र अंग्रेजी फारसी विद्यारम्भ के लिए शुभ है।

उपनयन संस्कार- बालक के जन्म से वा गर्भ से ब्राह्मण ८ वें, क्षत्रिय ११वें,वैश्य १२ वें वर्ष यज्ञोपवीत धारण करें। किसी कारणवश यह काल लोप हो तो ब्राह्मण १६वें, क्षत्रिय २२वें और वैश्य २४ वें वर्ष तक संस्कार करा सकते हैं। उत्तरायण देवशयन के पूर्व र. चं. बु. गु. शु. वार, सामवेदी को मंगलवार भी विहित है, शुक्लपक्ष की २।३।५।१०।११।१२ तथा कृष्ण पक्ष की २।३।५ तिथि अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा पुष्य आश्ले. तीनों उत्तरा ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. शत. रे. क्रूरयुक्त तथा वेधरहित इन नक्षत्रों में उपनयन संस्कार शुभ है। बालक का गुरुबल तथा चन्द्रबल देखे। सामवेदी को भोमबल भी आवश्यक है। ज्ये. शु. २, आषाढ़ शु. १०, पौष शु. ११, माघ शु. १२, संक्रांति दिवस, रोगबाण (८।९७।२६ रवि के गतांशाः) गुरु शुक्र के बालवृद्धास्त को छोड़कर पूर्वान्ह में तथा अभिजित् मुहूर्त्त में यज्ञोपवीत धारण करावें। लग्नेश और च. शु. गु. ६, ८ में और च. शु. १२ वें, पापग्रह १।५।८ में अशुभ है। वृष तथा कर्क का पूर्णचन्द्र लग्न में शुभ होता है। चैत्र में मीन के सूर्य में यज्ञोपवीत संस्कार श्रेष्ठ है।

अभिजित मुहूर्त्त- नित्य मध्यान्ह संधिकाल की एक घटी अर्थात् स्थानीय (लोकल) ११ बजकर ४८ से १२ बजकर १२ मिनट दोपहर तक अभिजित् मुहूर्त्त में अनेक दोष निवारण की शक्ति है, अतः कोई शुभ लग्न न बनता हो तो उपनयनादि इस अभिजितमुहूर्त्त में करना शुभ है। यथा-

"अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्यदोषविनाशकृत। मध्यंदिन गते भानौ मुहूर्त्तोऽभिजिदाह्वयः।।
नाशयत्यखिलान्दोषान् पिनाकी त्रिपुरं यथा।"

अथ विवाह संस्कार

विवाह संस्कार सर्वश्रेष्ठ संस्कार है, इससे मनुष्य धर्म अर्थ काम और मोक्ष की सिद्धि कर सकता है। विवाह के पश्चात् ही पुरूष पुरूषत्व को प्राप्त होता है विवाह होने पर पूर्ण पुरुष होता है और सदाचारी सन्तान उत्पन्न करके देश, धर्म जाति सेवा के साथ देव, ऋषि, पितृऋण से भी उन्मुक्त हो सकता है। इसलिए इस संस्कार को मुनियों ने श्रेष्ठ बताया है, यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही दाम्पत्य सुख, ऐश्वर्य भोग और उत्तम प्रजोत्पादन करके मनुष्य अपने पितृऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह-संस्कार का समय-निर्णय हमारे ऋषि-मुनियों ने अतिसूक्ष्मता से किया है। आजकल नास्तिक लोग सर्वकाल विवाह के लिए शुभ मान कर चाहे जब रजिस्टर पद्धति से कोर्ट में जाकर तथा कपोल-कल्पित नियमानुसार विवाह करवा लेते हैं, यह सर्वथा अनुचित है। विवाह के लिए वेदों में भी पर्याप्त निर्णय है। जैसे-जैसे विज्ञान-विद्या का विकास होता रहा तैसे-तैसे इस पर सूक्ष्म विचार प्राचीन आचार्यो ने किए है, जो कि आधुनिक नूतन विज्ञान से भी बहुत श्रेष्ठतम माना जा रहा है। जिसका यहाँ संक्षेप में विचार लिखते हैं-

ब्रह्मचर्य के पश्चात मनुष्य अपने विषम वर्षो में गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें। पुरुष २५ के पूर्व तथा कन्या १६के पूर्व विवाह न करें। कन्या के समवर्षो में शुभ मुहूर्त्त में कन्या का पिता वा पालक योग्य वर्ण के वर का निश्चय कर पहले वाग्दान करें। कन्या का वाग्दान करने से पूर्व वर-कन्या की कुण्डली का मिलान तथा गुण-मिलान अवश्य करें, ताकि नूतन दम्पती अपना जीवन सुखमय

व्यतीत कर सकें। कई नास्तिक मतवादी यह कहते है कि इतना घटित मिलान करने पर भी कहीं-कहीं वर कन्या को दुःख का सामना करना पड़ता है, तथा दाम्पत्य वियोग होता है, यह क्यों? परन्तु घटित मिलान करते समय निम्लिखित बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए- (१) क्या वर-कन्या का जन्म टाइम ठीक-ठीक है? (२) कई वर्षों से प्राचीन गणित में अन्तर आता है अतः ऐसे गणित से बनाया जन्म पत्र ठीक-ठीक फलदायक नहीं हो सकता, इसलिए वर कन्या के जन्म पत्र शुद्ध सूक्ष्म एवं दृक्तुल्य केतकी गणित से ज्योतिषशास्त्र के अनुसार बने हैं या नहीं? इसकी जांच उत्तम गणितज्ञ से करावें। (३) क्या ज्योतिषीजी ने बालक का जहाँ का जन्म है वही का सूर्योदय लेकर जन्म पत्र बनाया है? (४) क्या लग्नसारिणी एवं सूर्योदय जन्म स्थान के लेकर लग्नसाधन किया है? आदि बातों का निर्णय कर जन्म पत्र विद्वान् गणितज्ञ से बनवाकर मिलाने पर ही वह मिलान योग्य होकर फलदायक होता है।

विवाह के पहले कन्या का नाम बदलना- यदि कन्या और वर की जन्म कुण्डली न हो और दोनों के नाम परस्पर मिलान में शुभ न हों तो आवश्यकता में कन्या का नाम बदला जा सकता है, वर का नहीं। कन्या का नाम बदलने के लिए मेलापक सारिणी में वर के नक्षत्र के नीचे जहाँ दोषाक का अभाव हो या दोष थोड़ा समझकर ऋण (-) का चिन्ह लिखा हो उसी खाने में ऊपर गुणसंख्या भी १८ से अधिक मिले उसी कोष्ठक के बाई ओर जो नक्षत्र मिले उसी के आवक्षरानुसार सुन्दर नाम रख लेना चाहिए।

जन्मम जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम्। व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनप्रदम्।।

वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम, कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म-नाम ऐसा विपरीत कदापि न लें, यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है या दोनों का जन्म-नाम ही लें और जन्म-नाम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम लें। विशेषतः दोनों के जन्म नाम ही लेना शास्त्रोक्त और आवश्यक है। यथा-

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशेःप्रधानत्व जामराशि न चिन्तयेत् ।।१।।
कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।।२।।
मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता। कुर्यात्षोड्शकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते ।।३।।

नाम राशि विचार

देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके। नामाराशेः प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत्।।४।।
काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता।।५।।
विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहजं बलम्। नाम भात् चिन्तयेत् सर्व जन्म न ज्ञायते यदा।।६।।

इत्यादि विचारों से विवाह-मेलन में जन्म समय से प्राप्त हुए नाम राशि से ही मिलान करना चाहिये। जन्म नाम प्राप्त न हो तो प्रसिद्ध नाम लेकर विवाह मिलायें।

ताराबल विचार-कृष्णाष्टम्यूर्ध्वनो ग्राह्यं दशाहं तारकाबलम्। परतोऽब्जबल ग्राह्यं सर्वमंगलकर्मसु। तारापवादः- पर्याय प्रथमे वर्ज्यःविपत्प्रत्यरिनैधनाः। द्वितीये त्वशंका वऽर्यास्तृतीये त्वखिलाः शुभाः। आद्याशोविपदि त्याज्यः प्रत्यरौ चरमो शुभः। वधस्याज्यस्तृतीयोंशः शेषा अंशास्तु शोभनाः।

अथ शुभाशुभताराज्ञानाय चक्रम्

जन्मनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने, गणनानुसार जन्मादि तारा तथा शुभादि फल समझें।

१ १० १९	२ ११ २०	३ १२ २१	४ १३ २२	५ १४ २३	६ १५ २४	७ १६ २५	८ १७ २६	९ १८ २[illegible]
जन्म शुभ	सम्पत शुभ	विपत् अशुभ	क्षेम शुभ	प्रत्यरि अशुभ	साधक शुभ	वध अशुभ	मित्र शुभ	परम मित्र शुभ

वर वरण मुहूर्त्त

पंचांग-शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, शुभ तिथि शुभ वार, कृ.रो.पू. ३ उ. ३ नक्षत्रों में, चन्द्र बल देख शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में, अपने कुल का पुरोहित या कन्या का भ्राता वर के यहाँ आकर पूर्वोत्तर या पूर्वा पर दिशा में बैठ कुंकुम वा केसर से वर के तिलक करे, वस्त्र यज्ञोपवीत आदि वर को देकर वर का सत्कार करें। कुलानुसार रुपया, मोहर (अशरफी) और श्रीफल वर को देकर गुड़ खजूर या बताशा वर के मुँह में देकर "मेरी बहन अमुक नाम की (भ्राता हो तो अन्य हो तो यथा उचित संबोधन दें) आपको दी है" ऐसा कहकर यह मन्त्र पढ़ें-

तस्मिन् कालेऽग्निसान्निध्ये स्नातः स्नाते ह्यरोगिणे।
अव्यगेऽपतितेऽक्लीवे पिता (दाता) तुभ्यं प्रदास्यति।।

कन्या वरण मुहूर्त्त :-

पंचांग शुद्धि देख कुयोग रहित दिन में, कृ. पूर्वा. ३. स्वा. अनु. उषा. श्र. ध. वा. विवाह -होक्त नक्षत्रों में शुभ समय में वस्त्रालंकार सहित फल पुष्पों से कन्या वरण कर कुलानुसार आचार करें।

विवाह निश्चय के कुछ नियम

वधू, वर की सगोत्र और वर की माता की सात पीढ़ी में से न हो। दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से न करें। दो सगी बहनों का, दो सगे भाइयों का वा भाई बहिनों का एक संस्कार ६ मास में साथ ही न करें। लड़की के विवाह के पीछे लड़के का विवाह हो सकता है। पृथक् माता (सौतेली) से हुए भाई बहनों का एक संस्कार द्वार भेद, मण्डपभेद और आचार्य भेद से हो सकता है। यमल (जोड़े) भाई बहनों का एक ही मण्डप में विवाह करने में हानि नहीं। इसी प्रकार विवाह से पीछे मुण्डन, यज्ञोपवीत ६ मास तक न करे। विवाह, उपनयन, चूड़ा, सीमन्त, केशान्त से ६ मास तक लघु मंगलकार्य न करें। संवत्सर भेद से जैसे मांघ, फाल्गुन में एक मंगलकार्य हो तो आगे चैत्र के बाद दूसरा मंगलकार्य कर सकते हैं, उसमें कोई दोष नहीं। ऊपर कहा हुआ ६ मास का त्यवधान तीन पीढ़ी तक के ही पुरुषों को कहा है, अन्य पीढ़ी के पुरुषों को यह बन्धन नहीं।

मंगलकार्य के मध्य पितृकर्म (श्राद्धादि) अमंगल कार्य न करें। वाग्दान के अनन्तर वर कन्या के तीन पीढ़ी में किसी की मृत्यु हो जाय तो १ मास के बाद अथवा सूतक निवृत्त होने पर शांति करके विवाह करने में हानि नहीं। विवाह के पूर्व नांदीमुख श्राद्ध के बाद तथा विनायक स्थापन (बड़ा विनायक) हुए बाद तीन पीढ़ी तक की मृत्यु हो जाये तो वह कन्या तथा वर कन्या के माता पिता को अशौच नहीं लगता है। निश्चित समय पर विवाह कर देना चाहिए।

वर-वधू गुण मेलापक सारिणी (भाग-१)

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।१।।

कन्या ↓	वर ➤		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
	चरण →		४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
	↓	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
मेष	४	अ.	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ −४	२२॥ −४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३२॥	२८	२९ +५	२५ +५	१५॥ ३५	११ ३६	९ २३६	१३ ६	२२॥	२६॥ −२	२२॥	१८॥ −६	२५॥ −६	१४ ३६	१३॥ ३५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३४	२४॥ +४	२६॥ +४	अ.
	४	भ.	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०४९	२१॥ −४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० २५−	१८ ३५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १३६	१३॥ १३	२९॥	२२॥ −१	१७॥ −१६	१७॥ ३६	१९॥ −१६	२० −१५	१८ ३५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १३२	२० −१	२४ −२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	२६॥ +४	भ.
	१	कृ.	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३४	१० १३४०	२६॥ ४	२०	२० १	२९	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३५	२० १५	२० १५	१५॥ १६	१५॥ ६	१८ ६	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३६	१९॥ −६	२५॥ −६	२४॥ +५	१८ १२५	१२ ३१५	१३॥ १३	११॥ २३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १४	१९॥ १४	११॥ ३४	कृ.
वृष	३	कृ.	१८॥ −४	२० १४	१९ ३४	२८ ३	२० ०१३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ ३४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२२ १५	२२ +५	२३॥ +५	२२॥ −६	१०॥ ३६	१४॥ ३६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १२६	७॥ १३६	१२ १३५	१० ३५२	२३॥ +५	२१॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१४ ३	कृ.
	४	रो.	२३॥ −४	२३॥ ४	११ ३४२	२० ३२	२८ ३	२६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	१२ ३२	१०॥ ३२	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५−	१९ १६	१५॥ ३६	९॥ ३१६	१५॥ ३२	२९॥	२३॥ २	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५−	२४॥ −१	२४॥ −१	३०॥	२७	२७	१९ ३	रो.
	२	मृ.	२३॥ −४	१४॥ ३४	१८॥ −४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२९	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२२॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ −६	१८॥ −६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२२॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७	मृ.
मिथुन	२	मृ.	२७	१८ ३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ −४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२२ ३	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० −२६	२३॥ −६	११॥ ३६	१३ ३५	२२ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥	मृ.
	४	आ.	१९ ३	२७	२९ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० −४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १	२० −२५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ −६	२३ −६	१७॥ −१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥	आ.
	३	पुन.	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४−	२२॥ ०४	१७ −४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ −६	२३ −६	१७॥ −६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥	पुन.
कर्क	१	पुन	२३॥ ३	२९॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२२	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२२ −६	२२ −६	२६	२७	२२	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५	पुन
	४	पुष्य	३०॥	२१॥ ३	२६॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	२५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३	११॥ ३	२६॥	२२	१९ −५	१८ ३५	२१ −५	१७	११ २३६	२२ ६	२६	२५ −२	१३ ३	४॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	पुष्य
	४	श्ले.	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	१९ ३४	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	२५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२२ १	२२	२६	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० −५	२६ −५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५−	२२ १५	१३ ३५	श्ले.
सिंह	४	मघा	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३२	१७॥	२२॥	२२॥ १	२०॥ −२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२२॥ ६	२४॥	२१॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३२६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६−	१९॥ १६−	१३ ३६	मघा
	४	पूफा	२६ +५	१८ ३५	२० १५−	२२ १	२३॥	२५॥ ३	२१॥ ३	२८॥	२६॥ −२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२६	३० −१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ −१	२३॥ ३	२५॥ −१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१०॥ १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ −६	१७॥ ३६	२५॥ −६	पूफा
	१	उफा	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५−	२९ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४−	२७॥ −१	३५	२८ ३	१७ ३४	२६ ०३६	२३॥ १६२	२६॥ २२	२५॥	१६॥ २२	२२॥ −२२	३१॥	१७॥ २३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ २६	१७॥ ४	२१॥ २३	२५॥ ३	२५॥ ३६	२६॥ −६	२५॥ −६	उफा
कन्या	३	उफा	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२२ २५+	२६ +५	२४॥ +५	२२॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १६	२५ +४	२८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+	२६॥ १२४−	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ २५+	१६॥ −६	२०॥ ३६६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥	उफा
	४	हस्त	२० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२२	२३	२८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०	२० ३४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥	हस्त
	२	चि.	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१२ ३	२६ १	२५॥	२२	१२ ३	२७	२३॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	१४॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	२५॥ ३५	१६ ३६	२४ −६	२६॥ १६	१९॥ १	२०॥ १३२	२१॥	चि.
		नक्षत्र →	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

इनमें मेलापक (वर्ण वश्य आदि) की गुण सारिणी दी है। ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, तिरछी पंक्ति में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं, ऊपरी भाग में नीचे के महादोषों के चिन्ह दिये हैं। चिन्हों का काम यह है एक नाड़ी के दोष की जगह (३) गण महादोष (मनुष्य, राक्षस) के स्थान में १ भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६) नव पंचम में (५) (द्विर्द्वादश) में (४) वैर योनि में (२) लिखे हैं

वर-वधू गुण मेलापक सारिणी (भाग-२)

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वद्वयस्थानि तथा वधूनाम्।। संपातकोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्।।१।।

कन्या		वर ➤	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन			
		चरण →	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	
↓		नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	
तुला	२	चि.	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६	चि.
	४	स्वा.	२७॥ +२	२९॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ −६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६	स्वा.
	३	वि.	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ −६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६	वि.
वृश्चिक	१	वि.	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ −५	१८ −५	१५॥ −५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५	वि.
	४	अनु.	२४॥ −६	१५॥ ३६	१९॥ −६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ −५	१८ ३५	२१ −५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५	अनु.
	४	ज्ये.	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ −६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ −५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५	ज्ये.
धनु	४	मूल.	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९ ६	१३ १६	१३ −६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ २४+	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥	मूल.
	४	पूषा.	२६ +५	१८ ३५	१८ −१५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ −१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४−	१५॥ ३४	१७॥ १४−	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१	पूषा.
	१	उषा.	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	[illegible] १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ −१४	२६॥ −१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३	उषा.
मकर	३	उषा.	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ −६	२२ −६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ −१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ ४+	३०॥	३०॥	२२॥ ३	उषा.
	४	श्र.	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ −६	२१ −६	२२ −६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३	श्र.
	२	ध.	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ −६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२	ध.
कुम्भ	२	ध.	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२५॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० −५	२४॥ −५	२५	११ ३	२५	२१॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ ३४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२	ध.
	४	शत	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४	शत
	३	पूभा.	१८ ३	२५ +२	२० −१	२४॥ −१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५+	२६ +५	२० −१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० −१४	२८॥ −१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२	पूभा.
मीन	१	पूभा.	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ −१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ −१६	२३॥ +६	१४॥ ३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५−	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२	पूभा.
	४	उभा.	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ −१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ −१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ −१५	२४ −१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०	उभा.
	४	रेव.	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ −२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३	रेव.
		नक्षत्र →	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन	पुन	पुष्य	श्ले	मघा	पूफा	उफा	उफा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	उषा	श्रव	धनि	धनि	शत	पूभा	पूभा	उभा	रेव.	

[औ]र जहाँ थोड़ा दोष समझा गया वहाँ (-) चिन्ह है। जहाँ स्वामी मैत्री आदि के दोष का पूरा निर्वाह है वहाँ (+) ऐसा चिन्ह बता दिया और जिस जगह भर्ता के नक्षत्र से पूर्व [व]धू का नक्षत्र है (इसका भी महादोष) है। वहाँ (०) शून्य का चिन्ह है। और जहाँ कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां गुण ही लिखे हैं।

विवाह काल निर्णय

प्रथम गर्भ के ज्येष्ठ वर-कन्या का विवाह ज्येष्ठ मास में नहीं होता, इसको त्रि-ज्येष्ठ कहते हैं। वर कन्या में से एक ज्येष्ठ हो तो ज्येष्ठ मास में विवाह करना मध्यम लिखा है। फिर भी आवश्यकता में कृत्तिका का सूर्य निकल जाने पर दानादि करके विवाह करने में हानि नहीं। ऐसे ही वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक में भी विवाह होते हैं। इस पंचांग के प्रारंभ में देश भेदानुसार बहुत विचारपूर्वक सभी विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं।

त्रिबल शुद्धि :-

श्रेष्ठ गुरु :- जन्म राशि से २।५।७।९।११ वाँ। पूज्य गुरु- १।३।६।१०वाँ।

नेष्ट गुरु :-४।८।१२ वाँ। उच्चमित्र स्वराशि का हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।

श्रेष्ठ सूर्य :- ३।६।१०।११ वाँ पूज्य सूर्य १।२।५।७।९ वाँ। नेष्ट सूर्य ४।८।१२ वाँ।

श्रेष्ठ चन्द्र :- १।२।३।५।६।७।९।१०।११ वाँ। पूज्य चन्द्र १२वाँ। नेष्ठ चन्द्र ४।८ वाँ।

उपनयन में बालक १६ वर्ष से ऊपर हो गया हो और विवाह में कन्या १८ वर्ष से अधिक हो गई हो तो स्वराशि (धनु. मीन राशि) और उच्च (कर्क राशि) का गुरु जन्म या नाम राशि से चौथा १२वां हो तो द्विगुण पूजा से और अष्टम हो तो भी त्रिगुणित पूजा से विवाह और उपनयन संस्कार शुभदायक होता है, ऐसा ऋषियों का मत है।

विवाह में स्तम्भ स्थापन दिग्ज्ञान

मण्डप में प्रथम स्तम्भ-स्थापना के लिये सूर्य ५।६।७ राशि का हो तो ईशान कोण में, ८।९।१० राशि के सूर्य में वायव्य कोण में, ११।१।२।१ की संक्रांति में नैर्ऋत्यकोण में, २।३।४ राशि के सूर्य में अग्निकोण में विवाह कार्य के लिए स्तम्भ स्थापित करें।

वधू वर तथा बटु की राशि पर से तैलादि लेपन के दिन

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वधू वर तथा बटु की राशि से दिन तथा मौंजी दिवस के पूर्व दिन लेवें।

१- **नृदूरदोष** - वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र दूर होने से नृदूर दोष होता है।

२- **कन्या दूर-** कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र बहुत दूर होने 'कन्या दूर' शुभ है।

३- कन्या राक्षस गण की हो और वर मनुष्य गण का हो तथा वश्यादि ६ (वश्य, तारा, योनि, ग्रह मैत्री, कूट, नाड़ी) शुभ हो तो विवाह कल्याणप्रद होता है।

४-वर के नक्षत्र से कन्या का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) होने से धन और कल्याण का देने वाला होता है।

५-कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय (दूसरा) हो तो मृत्युदायक विवाह होता है।

६- वर कन्या की एक राशि हो और भिन्न नक्षत्र, भिन्न राशि और एक नक्षत्र हो और चरण भिन्न हो तो विवाह शुभ होता है।

७- अशुभ नवपंचम, अशुभ द्विर्द्वादश, अशुभ षडष्टक (मृत्यु षडष्टक) हो और राशि कूट मैत्री हो तथा नवांशपति मित्र हो तो विवाह शुभ होता है।

न वर्गवर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशे नैव षडष्टके वा।
ताराविरुद्धे नवपंचमे वा राशीशमैत्री शुभदो विवाहे।।

नाड़िदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्।।
एकनक्षत्रजातानां नाडिदोषो न विद्यते। अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहे वर्जितः सदा।।
रोहिण्यार्द्रा-मृगेन्द्राग्नी-पुष्य-श्रवण-पौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्ष मेतेषां नाडिदोषो न विद्यते।।
मरणे पितृमात्रोश्च संग्राह्यौ नवपंचमौ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमे वर। एतत्त्रिकोणकं ग्राह्य पुत्रपौत्रसुखावहम्।।

कुण्डली मिलान- वर कन्या की कुण्डली मिलान उत्तम होना आवश्यक है, क्योंकि द्रव्य, पुत्र, पति, पत्नी सुख, ऐश्वर्य इत्यादि का विचार कर मिलान करने से दाम्पत्य में सुख होता है। जैसे मनुष्य भाग्यहीन हो और स्त्री भाग्यवती मिले तो मनुष्य स्त्री के भाग्य से अपना जीवन सुखमय बना सकता है। वर कन्या दोनों भाग्यवान् हों तो वह उत्तम होता है। दोनों भाग्यहीन हो तो नेष्ट होता है। ऐसे ही वर को द्विभार्या योग तथा कन्या को वैधव्य योगादि का विचार करें। वर कन्या की कुण्डली में परस्पर मारक हो तो शुभ होता है, जैसे वर की कुण्डली में द्विभार्या योग हो और कन्या की कुण्डली में पति सुख योग न्यून हो तो मिलान उत्तम होता है। तथा कन्या को वैधव्य योग हो और वर को विधुरयोग हो तो मिलान उत्तम होता है। इसी तत्व को ग्राह्य मानकर मंगल आदि का दोष लिखा है। विशेषतः मंगल का निर्णय भावचलित से करना चाहिए।

लग्ने तुर्ये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृ विनाशाय भर्ता कन्या-विनाशकृत्।।

लग्न चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और व्यय स्थान में मंगल होने से कन्या पति को नष्ट करती है और वर कन्या को नष्ट करता है, इसलिए वर कन्या दोनों को मंगल होना आवश्यक है। मंगल लग्न कुण्डली से तथा चन्द्र कुण्डली में देखना चाहिए। एक के तो मंगल हो तो और दूसरे के मंगल न होकर मंगल के स्थान में पापग्रह (शनि राहु) हो तो मंगल का दोष नहीं होता। यथा-

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौमदोषो न विद्यते।।
जामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत।।
सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽपिवाऽथवा भौमे।
वक्रिणी नीचारिगृहे वार्कस्थेपि वा न कुजदोषः।।
केन्द्रकोणे शुभाढ्ये च त्रिषडायेऽप्यद्ग्रहाः।
तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा।।

मं श. रा.
मं श. रा.
मं श. रा.
मं श.
रा.
मं श. रा.

इत्यादि परिहार से भौम दोष नष्ट होता है। फिर भी वर कन्या के लग्न लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम-अष्टमेश इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों को विचार कर ज्योतिषी कुण्डली

का मिलान करे। परन्तु यह स्मरण रहे कि कुण्डली ठीक-ठीक बनी होनी चाहिए। कन्या को अनेक कुयोगों द्वारा वैधव्य योग जान पड़े तो शालिग्राम से, पिप्पल वृक्ष से, अर्क वृक्ष से, वा कुम्भ से यथा विधि विवाह कर गौदान, सुवर्ण-दान, महामृत्युंज्यादि जप करके कन्या का विवाह करने से कन्या सौभाग्य पुत्र, धन से युक्त होती है। इस पंचांग में आगे दी गई मेलापक सारिणी से गुण मिलान करें।

जन्मोत्थं च विलोक्य वालविधवायोगं विधाय व्रतम्,
सावित्र्या उत पैप्पलं हि सुतरां दद्यादिमां वा रहः।
सल्लग्नेऽच्युतमूर्तिपिप्पलघटैः कृत्वा विवाह स्फुटम्,
दद्यात्तां चिरजीविनेऽत्र न भवेद्दोषः पुनर्भूभवः।।

विवाहांग कार्यारम्भ- पंचांग शुद्धि देख विवाह दिन से पूर्व ३।६।९ दिन को छोड़ कर कन्या को चन्द्र बल देखकर विवाह के नक्षत्र में जिस स्त्री को चन्द्रबल उत्तम हो उसके हाथ से हल्दी हाथ लगाना, दलना, पीसना, कूटना, कलशादि स्थापना करना, घर लीपना, आंगन सफाई, भूषण घडाना, वेदी रचना, चंदोवा, बांधना, वस्त्र सिलाना गणेशादि पूजन, नांदि श्राद्ध आदि करना श्रेष्ठ है।

विवाह में दश दोषों का विचार- विवाह समय निश्चित करने के लिए ग्रन्थकारों ने २१ महादोषों को त्याग ने को लिखा है, परन्तु कई दोषों का परिहार होने से दश दोषों का विचार करते है और इन दश मे से क्रूरयुति, वेध, मृत्यु-बाण, क्रान्तिसाम्य और दग्धा से पांच महा दोष ही विवाह में सर्वत्र वर्ज्य है।

चैत्र, पोष मास को छोड़कर देशाचारानुसार मासों में से रो. मृ. उत्तरा ३, म. ह. स्वा. अनु. मू. रेवती इन नक्षत्रों में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, बाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रांतिसाम्य (महापात) और दग्धा-तिथि ये दश दोष हैं। इनका विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। हमने ये दश दोष तथा देशाचारानुसार विवाह मुहूर्त इस पंचांग में दिये है। दोषों के क्रम से जहां दोष है वहां (S) और जहां दोष नहीं है वहां (।) ऐसी खड़ी लकीर दी है। विवाह मुहूर्त्त में वर कन्या के जन्म मास, जन्म तिथि, जन्म नक्षत्र लग्न से तथा राशि से अष्टम लग्न वर्ज्य करें। लग्न तथा राशीश के शत्रु राशि का लग्न नवांश न लें। यह विवाह सूक्ष्म केतकी गणित से निश्चित करने से समय शुद्ध और वर कन्या को कल्याण कारक होता है। अन्तर वाले प्राचीन स्थूल गणित से विवाह मुहूर्त देखने से फल में विपरीतता प्राप्त होती है और अशुभ होने की सम्भावना रहती है।

यात्राविवाहोत्सवाजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चरुणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैक्यकृद्या।।

लत्तादोष चक्र १

ग्रहा.	सूर्य	पूर्णचन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
वि.न	१२	२२	३	७	६	५	८	९
दिशा	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम
फल	धन नाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धु नाश	कार्य हानि	कुल क्षय	मरण

उदाहरण :- सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो तो सूर्य नक्षत्र से १२वां होने से यह सूर्य का लत्ता दोष वाला विवाह नक्षत्र होगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष भी जानें।

पातदोष चक्र २ - हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूलयोगों का अंत जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा	उभा	रे.	वि.न.
आर्द्रा पुनः श. पूफा. चि. मू.	मृ. आ. ज्ये. ध म. ह.	अश्वि. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पूफा उभा. पूभा.	भ. मृ. श. पूभा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य. ह. रे.	अ. आ उषा. पूभा. पूषा. पूफा.	रो. ज्ये. ध. अश्ले. मू. उभा.	भ. पुन. श. वि. अनु. उषा.	भ. श. वि. उफा. मू. पूफा.	अ. म. ध. ज्ये. पूफा. स्वा	पातदूषित नक्षत्र

३. युतिदोष :- जिस नक्षत्र का विवाह हो तो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का युति दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता; अपितु श्रेष्ठ होता है। सू.मं.श.रा.के. की युति दारिद्रय, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

वेध दोष चक्र ४

रो.	मृ.	म.	उफा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उषा.	उभा.	रे.	वि.न.
अभि.	उषा.	श्र.	रे.	उभा.	कृ.	भ.	पुन.	मृ.	ह.	उफा.	ग्र.न.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह और नीचे के के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो वेध दोष होता है, यह सर्वत्र विशेष रूप से त्याज्य है।

जामित्र दोष चक्र ५

रो.	मृ.	म.	उ.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.	उ.	रे.	वि.
अनु.	ज्य	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अश्वि	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा	ह.	ग्र.न.

बाणज्ञानाय सुलभ चक्र ६

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशिअर्कस्य	५कर्म वर्ज्या	वार वर्ज्या	समय परत्वेन वर्ज्या
रोग	८।९।७।२६	व्रतबन्धे	रवौ	रात्रौ त्याज्या
वन्हि	२।११।२०।२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्य
नृप	४।१३।२२	नृप सेवायां	मन्दे	दिवा त्याज्यं
चौर	६।१५।२४	यात्रायां	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्यु	१।१०।१९।२८	विवाहे	बुधे	संध्योः वर्ज्यम्

विवाह लग्न से ७वें ग्रह होने पर जामित्र होता है। ऊपर विवाह नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र ... जामित्र दोष वर्ज्य है।

अतिगंड ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

उपग्रह दोष ८- सूर्य के नक्षत्र से ५वें, ७वें, ८वें, १०वें, १४वें, १५वें, १८वें, १९वें, २१वें, २२वें, २४वें, २५वें नक्षत्र पर चन्द्र हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रान्तिसाम्य दोष चक्र ९

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनुः	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

उदाहरण- मेष के सूर्य सिंह के चन्द्रमा में वा सिंह के सूर्य मेष के चन्द्रमा में स्थूल क्रांति साम्य दोष होता है यह सर्वत्र वर्ज्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य गणित से सिद्ध होता है। इस पंचांग के विवाह मुहूर्त्तों में गणितगत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही लिया गया है।

दग्धा तिथि दोषः १०

ध.	वृष	कर्क	कं.	सिंह	म.	सूर्य
मीन	कुम्भ	मेष	मि.	वृश्चि.	तु.	राशि
२	४	६	८	१०	१२	तिथि

इन उक्त संक्रान्तियों के सौर मास में ये दग्धा तिथियां विवाह में वर्जनीय है।

भुजंगं क्रान्तिसाम्यं च वाणवेधं तथैव च। लग्नहीनं विवाहं तु कलौ पंच विवर्जयेत्। लता-दिदोषाणं परिहारवाक्यानि- लत्तामालवके (उज्जैन प्रान्त) देशे पातश्च कुरुक्षेत्र वागर जांगले (फिरोजपुर भटिण्डा प्रांत) एकार्गल च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्। उपग्रहर्क्षकुरुवाल्हीकेषु (आगरा प्रान्त बलखबुखारा) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी बंगाल अयोध्या) च पातितं भम्।। सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे (उज्जैन प्रान्त) च लत्तितं भम्। त्यजेतु विद्धंकिल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद् गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (मथुरादि प्रान्त) मासदग्धा च तिथया मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहार :- चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रुतिस्वोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः।

युति परिहार :- चित्रां गते पातविचित्रदेशे, मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः। पौष्णश्रु-तिस्वोत्तरदेशजातः, सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजङ्गपातः।

युति परिहार :- स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः। युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे सदा।। अत्यावश्यके। वेध परिहारः- पादमेव शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः (नारदः)। अतोन्त्यपादमादिगो द्वितीयकस्तृतीयकम्। तृतीयगो द्वितीयक चतुर्थगस्तु चादिमम् भिनति वेधकृद्ग्रहो न चान्यपादमादरात् (वशिष्ठः) अथ पापग्रहेण भुक्तभोग्याक्रान्तनक्षत्रस्य शुभेषु त्यागः-भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः। अस्यापवादः- ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रू रभुक्तादिकानी च भुक्त्वा चन्द्रेण मुक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते। जामित्रपरिहारः (व्यवहार समुच्चये)- स्वोच्चे सौम्यालये चन्द्रे स्ववर्गे मित्रवर्गगे। हत्वा जामित्रकृद्दोषं करोति विपुलं सुखम्।। मुहूर्तचिन्तामणवपि- एकार्ग लोप- ग्रहपातलता जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्कबलोपपत्रे लग्ने यथार्कभ्युदये तु दोषाः।।

विवाहे लग्न शुद्धि चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	भावेषु
च. पापा.	०	शुक्र	०	०	च. शु. लग्नेश	सर्वे	चं.मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	त्याज्या ग्रहाः
चंद्रक्रूर	कुलिकं क्रान्ति साम्यंच				चं.	मं.	चंद्र भौम	विद्धभंच गौधूला त्याज्याः				

सर्वथा लग्नभंगयोगाः - व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखा न शस्ताः लग्नेट् कविग्लौ च रिपौ मृतो ग्लौः लग्नेट्शुभाराश्च मदे च सर्वे (अस्तेऽब्जगुरू समौ)।। वर्गोत्तमं विनांत्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्याशं पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः।। दम्पत्योरष्टमं लग्नं लष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नगतस्मोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः।। पग्वन्धादिलग्नानां गौड़मालवयोरेव त्यागः। वादरायख :- मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गहिताः।।

कर्त्तरी दोष :- लग्नस्य पृष्ठाग्रयोरसाध्वोः। सा कर्त्तरी स्याध्जुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रो यदि वक्रचारी न कर्त्तरी चेति पितामहोक्तिः। "इयं कर्त्तरी चन्द्रस्यापि द्रष्टव्या"। केषाचिल्लग्नदोषाणां परिहारः- पापौ कर्त्तरिकारकौ रिपुगृहे नीचास्तगौ कर्त्तरी। दोषौ नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषोऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद् भौमोऽष्टमी दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारि दोषोऽपि न।।

दोषापवादा ज्योतिर्निबंधे :- दोषाश्च बहवः सन्ति गुणाः स्वल्पा कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह। अपवादन्तरम्- ऽकानुकाश्च ये दोषास्तानिहन्ति बली गुरुः। केन्द्रसस्थे सितौ वापि पन्नमान्गरुडो यथा। मुहूर्त्तलग्नषड्वर्गकुनवाशमहोद्भवाः ये दोषास्तानिहन्त्येव यत्रैकादशगः शशी।। अब्दावनर्तुमासोत्थाः पक्षतिथ्यनर्क्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसस्थे शुभग्रहे।। लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्व ग्रहकृतारिष्टमेकोऽपि विलय नयेद्।। बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोषशतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्य सहस्र लक्षमंगिराः।।

स्मरण रहे कि पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सर्वत्र सप्तमरहित केन्द्र (१।४।१०) ही ग्रहण करना।

विवाहलग्ने ग्रहाणां रेखाप्रदस्थानानि

र.	चं.	म.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	के.	ग्रहाः	मुहूर्त्तगणपतौ
३	२	३	१।२	२।१	१।२	३	३	३		
६	३	६	३।४	३।४	४।५	६	६	६		लग्नं शुभं
८	११	११	५।६	६।५	९	८	८	८		विवाहे
१			९	९	१०	११	११	११	स्थानानि	स्याद्दशविंशो
			१०	१०	११					पकाधिकम्।
			११	११						
३॥	५॥	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विशोपकाबलम

अथ गोधूलि लग्न विचार- लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवन शालिनी। तदा वै सर्वत्रर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्।। लग्न यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धेसति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते।। गोधूलि त्रिविधां वदन्ति मुनयो नारीविवाहादिके, हेमन्तेशिशिरे प्रयाति मृदुतां पिण्डीकृते भास्करे। ग्रीष्मेऽधस्तिमिते वसन्तसमये भानौ गते दृश्यता, सूर्ये चास्तमुपागते भगवति प्रावृट्शरत्कालयोः।।

गोधूलिके त्याज्यदोषा:- कुलिकंक्रान्तिसाम्यश्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैस्तु दूषितः।। अष्टमे जीवभौमौ च बुधो वा भार्गवोऽष्टमे। लग्ने षष्ठेऽष्टमे चन्द्रस्तदा गोधूलिनाशकः।। **"अस्त याते गुरुदिवसे सौरे सार्के।"** अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे (क्योंकि सूर्यास्त से पहले वारवेला होगी) और शनिवार को सूर्यास्त से पहले (क्योंकि सूर्यास्त हो जाने से कुलिक मुहूर्त्त होगा।) गोधूलि समझना।

संकीर्णचाण्डालादि जातीनां विवाह मुहूर्त:- कृष्णे पक्षे भानुभौमार्कजानां वारे योगे चापि धिरण्ये निषिद्धे। संकीर्णानां दारकर्म प्रशस्तं प्रीत्यर्थायुः प्राप्तये शौनकाद्या।

पुनर्विवाहे सूर्यभात् शुभाशुभ ज्ञानाय चक्रम्

३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	मृत्यु	दुर्भग	श्रीः	उन्नति	फल

अन्यच्च- सूर्यभात ४।११।१८।२५ संख्यकसाभिजिद्भेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथिमासवेध भृगुगुवैस्तादिदोषोऽपि नावलोकनीयः।।

वधू प्रवेश मुहूर्त्त :- जब विवाह होने पर वधू पति के घर पहले पहल आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह से १६ दिन के भीतर दिनों में अथवा ५,७, ९वें दिन, इनके उपरांत एक मास तक विषम दिनो में, एक वर्ष के भीतर विषम मास में और एक वर्ष के उपरांत ३ रे ५ वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५ वर्ष के उपरांत जब चाहे तब शुभ मुहूर्त्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिन में तिथ्यादि पंचांग शुद्धि चन्द्रबल गुरु शुक्र के मूढत्वका भी विचार नहीं करना। **"व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा। अमासंक्रांतितिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्।"** रे. अश्वि. रो. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. भ. म. उत्तरा ३ पुष्य. अनु. इन नक्षत्रों और चं. बु. गु. शु. इन वारों में १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में, २।५।८।११ लग्नों में, चतुर्थाष्टम शुद्ध हो तो वधू प्रवेश शुभ है।

प्रवेशस्य समयमाह:- वधू प्रवेशो न दिवा प्रशस्त: राजप्रवेशो न निशि प्रशस्त:।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेश: सत्कीर्तिद: स्यात्त्रिविध: प्रवेश:।।

द्विरागमन मुहूर्त्त :- पिता के घर से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे वा ५वें वर्ष में वृश्चिक, कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हों तब सोम, बुध, गुरु, वा शुक्र वार में, २।३।६।७ या १२वीं राशि के लग्न में, ह. अश्वि. रेवती तीनों उत्तरा. रो. स्वा. पुन. पुष्य. श्र. ध. श. म. मृ. चित्रा और [illegible]

सम्मुख दक्षिण निषेध:- सम्मुख तथा दक्षिण शुक्र में पितृगृह से पति के घर जाना निषेध है। सम्मुख वा दक्षिण शुक्र में नव वधू जावे तो वन्ध्या हो, बालक को लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो। गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न हो, परन्तु रेवती से मृग. नक्षत्र तक चन्द्रमा रहे तब तक जाने में दोष नहीं। **यथा- रेवत्यादि मृगान्ते च यावतिष्ठति चन्द्रमा। तावच्छुक्रो भवेदन्ध: सम्मुखे दक्षिणे शुभ:।।** अति आवश्यकता में शुक्र की शान्ति कर श्वेत वस्त्र, छत्र, स्वर्ण दान देकर जावे। राजविग्रह उपद्रव, दुर्भिक्ष, विवाह, देवता यात्रा आदि में जाना हो तो सम्मुख दक्षिण शुक्र का दोष नहीं।

विवाह के पश्चात वधू के रहने का नियम :- विवाह के पश्चात प्रथम ज्येष्ठ महीने में वधू भर्ता के घर रहे तो पति के ज्येष्ठ भ्राता को, अषाढ़ में सास को, पौष में ससुर को अधिक मास में अपने आपको हानि करती है। चैत्र में पिता के यहां रहे तो पिता को हानि करती है। ज्येष्ठादि के अभाव में (न हो तो) उस मास का कोई दोष नहीं होता।

प्रथम युवति स्त्री संगम मुहूर्त्त :- पुत्र चाहने वाले रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त ४ रात्री के बाद समरात्रि में, रो. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. ध. उत्तरा ३ रे. रिक्ता अमावसरहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम प्रहर को छोड़कर शुभ समय में चित को प्रसन्न कर प्रथम स्त्री प्रसंग करे।

नववधू को रसोई बनाने का मुहूर्त्त :- पंचांग शुद्धि देखकर वधू को चन्द्रबल देख, रिक्ता और क्षयरहित तिथि, शुभवार कृ.रो.मृ. उत्तरा ३ पुष्य वि.ज्ये.श्र.ध.श. रेवती इन नक्षत्रों में २।५।८।११ लग्नों में, लग्न चतुर्थ अष्टम शुद्ध, सप्तम भाव बलवान होने पर नूतन वधू से रसोई बनवाये।

पतिगृह से पितृगृह आने का मुहूर्त्त :- गुरु, चन्द्र, शुक्रवार शुभतिथि, भ.आ. अश्ले. मघा. पूर्वा.ज्ये.मू. इन नक्षत्रों के बिना अन्य नक्षत्रों में शुभ लग्न पंचांग शुद्धि देखकर मुहूर्त्त निश्चित करें।

स्त्री को वस्त्रा भूषण धारण मुहूर्त्त :- रिक्तामारहित तिथि चं. गु. शु. बु. वारा. अश्विनी ह. चि. स्वा. अनु. ध. रे. इन नक्षत्रों में नवीन वस्त्र धारण और स्वर्ण रजत आदि आभूषण धारण करना शुभ है।

अनुष्ठानारम्भ मुहूर्त्त :- आश्विन, का., वै., माघ., मार्ग., फा. तथा मेष, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुम्भ के सूर्य १।५।७।१०।१३।१५ तिथि या जिस देवता का अनुष्ठान हो उसकी तिथि, र.शु. गुरुवार, चन्द्रवार मध्यम, पुन, पुष्य, स्वा. उ. ३, श्र. ध. श. रे. अ. ह. अनु. रो. मृ. वि. ज्ये. वा स्वस्वामी नक्षत्रों में लग्नसे ३।६।११ वें पापग्रह १।४।५।७।९।१० वें में शुभ ग्रह, चन्द्र ताराबल सहित, गुरु शुक्र के उदय में, शुभ लग्न मृत्यु आदि कुयोग रहित समय में, विष्णुका स्थिर में, शिव का चर में, दुर्गा का द्विस्वभाव लग्न में, कूर्मचक्र शुद्धि सहित अनुष्ठान आरम्भ करें।

व्ययाष्टशुद्धोपचये लग्नगे शुभदृग्युते। चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भ: प्रसिद्धयति।।

बावड़ी, बगीचा, तालाब, कूआं, मकान का आरम्भ और प्रतिष्ठा, व्रतारम्भ व्रतोद्यापन दान, गोदान, प्रथम उपाकर्म, वृषोत्सर्ग, चौल (मुण्डन) देवता स्थापन, दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह अपूर्व [illegible] समावर्तन, चातुर्मास्ययाग, कर्णवेध, विद्यारम्भ ये

कर्म गुरू के अस्त, बाल वृद्धत्व और मलमास में करना निषेध है।

कुयोगास्तिथिवारोत्था तिथिभोत्था भवारजाः। हूणवंगखसेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा।।

कुयोग परिहार- तिथि वार में उत्पन्न हुए क्रकच (वारदग्ध) मृत्यु आदि रोग हूणदेश बंगाल और खसदेश (शिलांग) में ही वर्ज्य करने चाहिए, अन्य देशों में नहीं।

परिघार्द्धं पञ्चशूले षट् च गण्डातिगण्डयोः। व्याघाते नवनाड्यश्च वर्ज्या सर्वेषु कर्मसु।। परिघयोग का अर्धयोग, शूल योग की ५ घटी, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटी, व्याघात की ९ घटी, सर्व कार्य में वर्ज्य करें। तथा जन्म मास, जन्म तिथि जन्म नक्षत्र व्यतीपात, वैधृति, भद्रा पितृदिन, श्राद्ध, तिथि का क्षय, वृद्धि काल, अधिकमास, क्षयमास, कुलिक प्रहरार्ध पात, महापात (क्रान्तिसाम्य) और विष्कम्भ योग की तीन घटी प्रारम्भ की सदा शुभ कार्य में वर्ज्य करनी चाहिए।

दुकान खोलने का मुहूर्त्त- रिक्ता तिथि और मंगल के अतिरिक्त अन्य वारों में ह.वि.रो. रे. तीनों उत्तरा, पुष्य, अनु., अश्वि., अभि., नक्षत्रों में कुम्भ लग्न को त्यागकर अन्य लग्नों में, २।१०।११ भावों में शुभ ग्रह हो, ३।६ में पाप ग्रह हों, ८।१२ वां स्थान पापरहित हो, चन्द्र शुक्र लग्न में हो तो अत्युत्तम। कर्त्ता की दशान्तर्दशा भी शुभ होनी चाहिए।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त- अश्वि.रो.मृ.पुन. उत्तरा ३ ह.चि.अनु.श्र.रे. नक्षत्र रिक्तारहित तिथि, र.च.बु.गु.शु. वार, चर द्विस्वभाव शुभयुत दृष्ट लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हो और ८।१२ वें स्थान में पाप ग्रह नहीं होने पर शुभ होता है।

सेवाक्रम (नौकरी) मुहूर्त्त- अ.मृ.चि.ह.पुष्य.अनु.रे. नक्षत्र, रिक्तारहित तिथि, र.च.बु.गु. शु. वार शुभ ग्रह लग्न में हो, १०वें या ११वें सूर्य मंगल हो तो अत्युत्तम। स्वामी और सेवक की परस्पर राशीश मैत्री हो तो सर्वश्रेष्ठ समझना।

अष्टम चन्द्रदोष परिहार- नीचराशिगते चन्द्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
चन्द्रेष्टमारिरिः फस्थे दोषो नास्ति न सशयः।।

अष्टम भौमदोष परिहार- नीचराशिगते भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
कुजाष्टमोद्भवो दोषो किञ्चिदपि न विद्यते।।

षष्ठस्थ शुक्रदोष परिहार- नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगुषट्कस्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः।।

द्रव्य प्रयोग मुहूर्त्त- पुन.स्वा.मृग.रे.चि.अनु.वि. पुष्य श्र.ध.श. अश्वि. एषु नक्षत्रेषु, १।४।७।१० लग्नेषु, ९।५।८ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९।५ शुभग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।

ऋण लेने के लिए वर्जित काल- मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग हस्त नक्षत्र युक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन नहीं देना चाहिए। कृ.रो.आर्द्रा.अश्ले.उ.३ वि.ज्ये.मू. नक्षत्रों में भद्रा व्यातिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं, या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

ईंट का भट्ठा- में आग देने या ईंट बनाने में मंगल और शनिवार शुभ है।

श्री काशीनाथमते क्रय-विक्रय मुहूर्त्त- पुष्य.पू.भा.अनु.श्र.ह.म.स्वा, उत्तरा ३, आश्ले.रे. एषु.भेषु सत्तिथौ चंद्र शुभ दिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रय विक्रयणं कार्यम्।

वस्तु बेचने के नक्षत्र- पू.फा.पू.षा.पू.भा.वि.कृ.अश्ले.भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गये है, **नोट-** बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ प्रतिशत हानि रहेगी, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने बेचनेके नक्षत्र दिखाये गये हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० वार बेचना, २० बार खरीदना, ऐसे व्यापारी क्या करेंगे इन नक्षत्रों को। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य है।

नालिश अर्जी का मुहूर्त्त- ४।९।१४ तिथि हो, मं. श. वार हो। कृ.आ.पुन.अश्ले.म.ज्ये.मू.वि. पूर्वा ३ नक्षत्र हो, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार- गृह स्वामी के हस्तादि लम्बाई चौड़ाई को परस्पर गुणाकर आठ का भाग देवे जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होती है। १ ध्वज, २ धूम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०) काक। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और दो आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए। और देवस्थान की भूमि को बाहर से नापना चाहिए। ३२ हाथ लम्बे चौडे घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है, और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्रह्माण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शूद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वास्तुकर्तु नक्षत्र यावद् गणना कार्या		
स्थान	नक्षत्र	फल
मस्तके	७	धनलाभ
पृष्ठे	७	हानि नैःस्वम्
हृदये	७	सुख लाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान- घर के क्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई, चौड़ाई के गुणन) को ८ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग दें। शेषांक तुल्य व्यय जाने। आय क्रम हो तो शुभ है, अन्यथा अशुभ।

वास्तु भूमिका शुभाशुभ जानना- नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भूमि पूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एकहाथ लंबा, एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें, यदि

जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा- मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे, अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले, अथवा साढ़े तीन हाथ गहरी अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय जो पत्थर निकले तो धन आयु की वृद्धि हो और जो गुठली निकले तो धन नाश हो और जो हाड़ राख बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि पीड़ा हो।

गृहारम्भ मुहूर्त्त- वैशा.श्रा.मार्ग.फाल्गुन और मे. वृष. कर्क. सिंह. तुला वृश्चिक मृग कु. सूर्यके सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे है, भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है। २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा इन तिथियों में, चं.,बु.,गु.,शु.,श. वारों में रो., मृ., चित्रा ह., स्वा., अनु. उत्तरा ३ ध. श. रे. बेध रहित नक्षत्रों में १।३।५।६।८।११।१२ लग्नो में, पंचवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में, लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह और ३।६।११ वें स्थान में पाप ग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादिका विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्य नक्षत्र से गृहारम्भे नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थान	नक्ष	फल
शीर्ष	३	अग्निदाह
अ.पादे	४	शून्यमसत्
पृ.पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्ति
द:कुक्षौ	४	लाभ:शुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाश
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेष- पुष्य. उ. ३ रो. म. आश्ले. पू. षा. इनमें से जिस पर बृहस्पति हो उस नक्षत्र में और बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो. ह. श्र. उफा. चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि.आ.चि.ध.श.अश्ले. इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धन-धान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्- "संक्रांति मिति दिन पाचवें, सप्तम नवमे जाय। दस इक्कीस चौबीसवें षट् दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५।११।७।६।२।१० एता घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" अन्यच्च-सूर्यके नक्षत्रसे ५।७।९।१२।१९।२६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्ये कूपविचार

मध्य	ईशान	पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	उत्तर	वायव्य
अर्थहीन	सुपुष्टि	ऐश्वर्य	पुत्रनाश	स्त्रीनाशः	गृहेशनाशः	संपत्	सुखम्	शत्रुभयम्

नक्षत्रवारो तिथिसंप्रयुक्तो वेदाहतं तद्गणकेन कार्यम्। एकावशिष्टे च जलं हि नाशे [illegible] च शेषं सलिलं च स्वर्गे।। त्रिशून्य शेषे भुवि संस्थितं च, भूसंस्थिति सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः।।

अथ चुल्लिचक्रविचार- सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्र पीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्यु प्रद। ८ बाहु के सुन्दर सुख भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुजा के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिवचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डितजन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रो में चूल्हा बनावे, तथा इन्ही शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावे।

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त- माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ मासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग) कार्तिकमासयोः।। (यहाँ-चान्द्रमास लेना) उत्तरा ३, अनु. रो. मृ. चि. रे. इन नक्षत्रों में, रित्तामारहित तिथियों में, चं.बु.गु.शु. इन वारों में, २।५।८।११ लग्न में। अत्यावश्यके ३।६।९।१२ लग्न में भी, लग्न से १।२।३।५।७।९।१० इन स्थानों में शुभग्रह हों, ३।६।११ में क्रूर ग्रह हों, १,६,८,१२ वे चन्द्रमा न हो, चौथा ८ वां स्थान शुद्ध हो, जन्मलग्न या जन्मराशि से ८ वी राशि लग्न में न हो, चन्द्र तारा शुभ हों और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो ऐसे समय मे आगे गौ कन्या जलपूर्ण पुष्पमाला युक्त कलश वेद ध्वनि मंगलगान वाद्य के साथ से दम्पति को गृह-प्रवेश शुभ है।

गृह प्रवेश का विशेष मुहूर्त्त- पुराने अर्थात् ज़ीर्ण या तृण कुटीर अग्नि वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वै.श्रा.का.मार्ग.फा. मासमें शत. पुष्य. स्वा. और ध. नक्षत्रों में तथा गुरु शुक्र के अस्त में भी गृहप्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्

खाते राहोर्मुखात्पृष्ठेदिग्भागः शुभदो भवेत्

राहुमुख	ऐशान्यां	वायध्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालयारम्भे सूर्य	मी.मेष वृष	मि.कर्क सिंह	कन्या तुला वृश्चिक	धनुः मकर कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह कं. तु.	वृश्चि.ध. मकर	कुम्भ मीन मेष	वृष मिथुन कर्क
जलाशायारम्भे सूर्यः	मं. कुं. मी.	मे. वृष मिथुन	कर्क सिंह कन्या	तुला वृश्चिक धनुः
खातदिश।	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्याम्	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्र सूर्यनक्षत्रात्

स्थान	नक्ष	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनम्
शाखा	८	सौख्यम्
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम् सूर्यभात्

५	८	८	६
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ

कूप तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त- अनु. ह. तीनो उ. रो. ध. श. म. पूषा. रे. पुष्य. मृ. नक्षत्र हों या चन्द्रमा मकर के उत्तरार्द्ध, मीन या कर्क में हो लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र [illegible] तो शुभ है। यदि २।९।०।८।११।१२ लग्न हो तो [illegible]

सूर्यनक्षत्रात्कूप वापी जलचक्रम्

ईषान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्नेय ३ सुजल
उत्तर जल उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्य ३ अमृत जल

गणनाक्रम मध्य पूर्व आग्नेयदक्षिणा दिक्रमेण बोध्यम्

ईशान	पूर्व	आग्नेय
अ.भ.कृ. मध्यजल	पुन.पु.अश्ले जलाभाव	म.पूफा.उफा. सुजलम्
उत्तर पूभा.उभा. रे.मिष्ठजल	मध्य रो.मृ.आर्द्रा शीघ्रजलं	दक्षिण ह.चि.स्वा. जलाभावः
वायव्य श्र.ध.श. क्षारजल	पश्चिम मू.पू.उषा अमृतजलं	नैर्ऋत्य वि.अनु.ज्ये. बहुजम्

सूर्यभात्तड़ाचक्रम्

ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्नेय. २ जलाधिक्य
उत्तर २ अमृतं जल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य २ जलनाश	प. २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृत जल

अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलं-वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रम-पूर्व आग्नेय द. नै.प.वा.उ.ई. मध्य, वारिवाह। वाहे चामृत संज्ञकम्।

जलाशयारामप्रतिष्ठा मुहूर्त्त

देवतारामवाप्यादि प्रतिष्ठामुत्तरायणे,
माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।
मातृभैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः,
महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।

अश्वि.रो.मृ.पुन.पुष्य.ह.चि.स्वा.अनु.श्र.ध.श.उत्तरा. ३.रे.एषु भेषु, कुजशनिवर्जिनवारेषु, २।३।५।६।७। ८।१०।११।१२।१३।१५ एततिथौ शुक्ले, १।२।३।५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्बलास्तादि रहितकाले, कर्तुः सूर्य चन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२।५।८।११) लग्नेषु। लग्नात् १।४।७।१०।९।५।२।११ स्थानेषु शुभे, ३।६।११ सेन्दुभिः पापैः, पूर्वान्हे देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवताविशेषेण लग्नम्- सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्रा द्वयगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिने यदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्तः- श्र. ध. मृ. मू. अनु. रे. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ पुन. पुष्य. रो. अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।।

अग्नि का वास किस लोक में है- जिस दिन हवन करना हो उस दिन तिथि और वार की संख्या जोड़कर एक और जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लगजाय (० शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है,शेष १बचने पर आकाश में प्राण हानिकारक, शेष२ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि ही गणना शुक्ल प्रति पदा से,वार गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहूति-चक्र जरूर देखिये।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्

(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

सू०	बु०	शु०	श०	चं०	मं०	गु०	रा०	के०	ग्रहाः
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट	फलम्

विशेष- यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्यखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रव्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कस्य राहुणा। नित्येननैमित्तके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिल्ने चातिरुद्रकरणे महाविधौ। देवखातभवने सुरालयेऽग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः। दुर्गभङ्गे गृहे वाऽपि विवादे शत्रु विग्रहे। शान्तिक्रमे नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

पापग्रहमुखेहवनेकृते शान्ति :- क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवनेऽशुभे। शान्ति विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटम्बिने। आयसी प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम्। गोमूत्रमधुगन्धाद्यै रर्चिता प्रतिमां ततः। कुण्डे निवाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी-धनी विचार :- स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागे योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।

यथा- अपने वर्ग को दूना कर दूसरे वर्ग को जोड़ना। फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दुगुना करके अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना, जिसका शेषांक अधिक बचे वह ही कम बचत वाले का ऋणी जानना।

भूमि का लेन-देन- गुरु, शुक्रवार, १,५,६,११,१५ तिथि, मृग. पुन. अश्ले. म. पूफा. वि. अनु. मूल. पू. षा. उ. भा. नक्षत्र में घर-जमीन का सौदा करना शुभ है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त - मृ. रे. चि. अनु. रो. उत्तरा ३ ह. अश्वि. पुष्य अभि. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मू. म. वि. एषु. भेषु, रिक्तामाषष्ठ्यष्टमीरहित सत्तिथौ शुभग्रहस्य वारे, १।५।७।१०।११ लग्नेषु, भूमिशयनभद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हल चक्रम्
सूर्य भुक्त नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने

३	८	९	८	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

बीजवपने राहु चक्रम्
राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या

८	३	१	३	१	३	१	३	४
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त- ह. अश्वि. पुष्य. उत्तरा. ३. चि. अनु. मृ. रे. स्वा. ध. रो. मृ. एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुवक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेष- रवरौद्र। (आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः। तस्मादिनत्रंयतत्तु बीजवापं परित्यजेत्।

नवान्नभक्षण मुहूर्त्त- मृ.रे.वि.अनु.ह.अश्वि.पुष्य.अभि.स्वा.पुन.श्र.ध.श.विष घटी रहित नक्षत्रों में शुभ है। नन्दा रिक्ता तिथियों और पौष चैत्र को छोड़कर सू.बु.गु. शुक्रवार शुभ है।

गौ आदि पशु लेने का मुहूर्त- अश्वि. पुन. पु. ह. वि. ज्ये. धनि. शत. रे. नक्षत्र में गौ लेना बेचना। अन्य पशु पुन. पूर्वा ३ ह. अनु. ज्ये. मू. धनि. रे. में लेना बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ. फा. से दिन नक्षत्र तक गिने, ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थ लाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक, फिर दो-दो के क्रम से गाय के समान फल जानो। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्र-गणना क्रम शुभाशुभफल सूर्य नक्षत्र तक गिने (नौमी चौदस चौथ चौपाया, मंगल हानि करे घर आया)।

सूर्य नक्षत्रात् काष्ठादि (गुहाराआदि) संस्थापनचक्रम्

६	२	४	४	४	४	४	नक्षत्र
उत्तमपाक शुभ	शवदहन नेष्ट	सर्पभय नेष्ट	मित्रलाभ शुभ	रोगभय नेष्ट	क्वाथकर्म नेष्ट	सुख शुभ	संख्या

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त- मृ.रे.चि.अनु.उत्तरा.३ रो.ह. पुष्य, अश्वि. श. मू. वि. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं. बु. शुक्रवार हो, शुक्लपक्ष में ४।१।११।१२ लग्न में शुभ है। तृणकाष्ठादि संग्रह निषेध तृण कष्ठ का सञ्चय और पलंग बुनवाना आदि कर्म कुम्भ, मीन के चंद्रमा में नहीं करना चाहिए।

मशीनरी चालू करने का मुहूर्त- धनि.,अश्वि.,हस्त-चित्रा.,अनु.,पुन.,पुष्य.,ज्ये. एवं रेवती नक्षत्र में मशीनरी चालू करनी चाहिए, इसके लिए वारों में बुधवार उत्तम है।

औषध मुहूर्त: ह. अ. पुष्य अभि. मृ. रे. वि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. मूल. जन्म नक्षत्र को छोड़कर इन नक्षत्रों में ४।९।१४ को छोड़कर शुभ तिथियों में, भौम शनि को छोड़कर अन्य वारों में शुभ है।

यात्रा मुहूर्त्त विचार

ह. म. श्र. अश्वि. मृ. पुष्य. पुन. ध. अनु. रे. नक्षत्र यात्रा में अत्युत्तम। रो. उत्तरा ३ पूर्वा ३ मू. मध्यम और भ. कृ. आर्द्रा अश्ले. म. चि. स्वा. वि. ज्ये. ये नक्षत्र यात्रा में निन्द्य है। आत्यावश्यकता में भरण्यादि नक्षत्रों मे आरम्भ की क्रमशः ७।२१।१०।१४।११।४०।१४।१४।१४ घटियां यात्रा में त्याज्य करें। कृष्णपक्ष की प्रतिपदा और शुक्लपक्ष की द्वितीया तथा दिग्द्वार लग्न में यात्रा शुभ है। जन्म लग्न और जन्म राशि से अष्टम लग्न नवांश में तथा कुम्भ लग्न या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें।

चन्द्रवास

मेष, सिंह, धनुः का चन्द्र पूर्व में। वृष, कन्या, मकर का चन्द्र दक्षिण में। मिथुन, तुला, कुम्भ का चन्द्र पश्चिम में। कर्क, वृश्चिक, मीन का चन्द्र उत्तर दिशा में। सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः। सर्वे दोषाः लयं यान्ति पुर्णचन्द्रे हि सम्मुखे।।

अथ योगिनीवास चक्र

पूर्व	अग्नि	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
१/९	३/११	५/१३	४/१२	६/१४	७/१५	२/१०	८/३०	तिथयः

दिक्शूलचक्र

पूर्व	पश्चिम	दक्षिण	उत्तर	दिशा
चंद्र	रवि	गुरु	बुध	वार
शनि	शुक्र	०	मंगल	वार

कालराहु चक्र

पूर्व	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	दिशा
श	शु.	गु.	बुध	मं.	चं.	र.	वार

समय	शूल
प्रातःकाल	पूर्वदिशा
मध्याह्न	दक्षिण
संध्याकाल	पश्चिम
अर्धरात्रि	उत्तर

आवश्यके दिक्शूले पदार्थाः

र०	चं०	मं०	बु०	गु०	शु०	श०	वा०
घृत	पय	गुड	पुष्प	दधि	घृत	तिल	भक्ष
ताम्बूल	चन्दन	मृद	तिल	दधि	यव	माषान	धारण

संमुखकालवासवर्ज्यम्

एकराशिस्थ चन्द्रघट्यात्मक निवासः

पूर्व	द०	प०	उ०	पूर्व	द०	प०	उ०	दि
१७	३२	५१	६९	८६	१०१	१३१	१३५	घ

यात्रा शुद्धि- जन्म लग्नेश, राशीश, जन्मदशेश ये अस्त हों और गुरु, शुक्र अस्त सिंहस्थ गुरु, नीचस्थ गुरु ये सब यत्न से वर्ज्य करें।

लग्न शुद्धि- शुभग्रह १।४।५।७।९।१० वें पापग्रह ३।६।१०।११ वें श्रेष्ठ है। चन्द्रमा १।६।८।१२ वें, लग्नेश ६।७।८।१२ वें शनि १० वें शुक्र ७ वें नेष्ट है।

अथ यात्रायां दिग्दोहदचक्रम्

पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	दिशा
घृत	तण्डुल	तिलोदक	सक्तुक	मत्स्य	गोधूम	दुग्ध	पायस	वस्तूनि

यात्रायां वारदोहम्

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वार
रसाल	पायस	कांजी	पक्वदुग्ध	दधि	पयोश्री	ति.अ.	वस्तुनि

अथ नक्षत्रशूलम्

पू०	द०	प०	उ०	दिशा
ज्ये.	पूभा.	रो.	उफा.	भानि

यात्रानिवृतौ प्रवेशः- १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथि। चं. बु. गु. शु. श. वार। अ. रो. मृ. पुष्य. उ. ३ ह. चित्रा. अनु. स्वा. श्र. रे. ध. श. नक्षत्र। ३।५।६।८।९।११।१२ लग्न, ४।८ शुद्ध हों १।४।७।१०।५।९स्थान में शुभ ग्रह हों, ३।६।११ वें में पापग्रह हो। शुभ नवांश में प्रवेश करें।

यात्रायां शुभशकुनानि- विप्र २ अश्व, गज, मद, फल, अन्न, दुग्ध, जौ, दधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वैश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीपाग्नि,

मत्स्य, ससुतस्त्री, गौरीकन्या, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट, पश्चाद्रिक्तघट, एते प्रयाण समये दृष्टाः सत्फलदा भवन्ति। अशुभशकुनानि-वन्ध्यास्त्री, चर्म, ईन्धन, सन्यासी, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बेकलि, विधवा, जातिभ्रष्ट, अंगहीन, रोवन, शत्रु, महिषयुद्ध, छिक्का, दुष्टवाणी एते प्रयाणसमये दृष्टा अशुभफलदा भवन्ति।

सर्वाङ्गसिद्धि योग- शुक्लादि तिथि और नक्षत्र तथा वार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रखकर क्रमशः ७।८।३ का भाग देना। शेष प्रथम जगह में शून्य हो तो यात्रा में क्लेश, मध्य में शून्य हो तो धन क्षति और अन्त में शून्य हो तो महाकष्ट होता है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य जय लाभ हो।

वर्णक्रमेण प्रस्थानविधानम्- यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम्। विप्रादि क्रमत. स्वर्णसर्वधान्याम्बरादिकम्। (सर्वे स्वप्रियवस्तु वा)। गमनदिशी नगराद् बहिः गृहान्तरे वा विपादिभिः यज्ञोपवीतादिना प्रस्थानं कार्यम्। तच्च क्षितीशो १०, माण्डलीकः ७, सामान्यजन ५ दिनाभ्यन्तरे यात्रा कार्या। परतोऽन्यमुहूर्त्तस्यावश्यकतां बोध्या। प्रस्थानकर्तुर्नियमाः- त्रिरात्रं वर्जयेत्क्षीरं पंचाहं क्षुरकर्म्म च। तदहश्चावशेषाणि सप्ताहं मैथुनं त्येजत् ।।१।। कटुतैलगुडक्षार पक्व मासाशनं तथा। भुक्त्वा यो यात्यसौ मोहाद् व्याधितः स निवर्तते।।

उ (उद्वेग) च (चंचल) ला (लाभ) अ (अमृत) का (काल) शु (शुभ) रो (रोग)

इस चतुर्घटिका मुहूर्तमें ३॥। घटी की जगह दिनमान व रात्रिमानके अष्टमांशानुसार कुछ पल न्यूनाधिक भी हो जाते हैं।

जन्मचन्द्रप्रशंसा:- कृषि-भवन-विवाहेऽन्नाशने मौञ्जिबन्धे, प्रथमयुवतिसंगारामकूपादि कृत्ये। पपटविधिअभिषेके जन्मचन्द्रः प्रशस्त इति वदति वराहः क्षौर-यात्रां विहाय।। गर्भाधाने जन्मकालेऽभिषके मौञ्जिबन्धने। पाणिग्रहे प्रयाणच चन्द्रो द्वादशयः शुभ:।।

दिने चतुर्घटिका मुहूर्त्त								रात्रो चतुर्घटिका मुहूर्त्त						
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	घटी	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
उ	अ	रो	ला	शु	च	का	३॥।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला
चं	का	उ	अ	रो	ला	शु	३॥।	अ	रो	ला	शु	चं	क	उ
ला	शु	च	का	उ	अ	रो	३॥।	चं	का	उ	अ	रो	ला	शु
अ	रो	ला	शु	च	का	उ	३॥।	रो	ला	शु	चं	का	उ	अ
का	उ	अ	र	ला	शु	चं.	३॥।	का	उ	अ	रो	ला	शु	चं
शु	चं	का	उ	अ	रो	ला	३॥।	ला	शु	चं	का	उ	अ	रो
उ	ला	शु	चं	का	उ	अ	३॥।	उ	अ	रो	ला	शु	चं	का
रो	अ	रो	ला	शु	चं	का	३॥।	शु	चं	का	उ	अ	रो	ला

प्रश्न-विचारः

कार्यसिद्धिज्ञानम्- लग्नपः कार्यपश्चापि लग्नगौ कार्यगौ युतौ। मिथस्थौ स्वस्वगौ दृष्टौ स्वोच्चादौ चेत्सुसिद्धिदौ ।।१।। एषु योगेषु चन्द्रदृष्टौ सत्यां कार्यसिद्धिरवश्यम्भवत्यन्यथा सन्देहः।

प्रश्नतो वर्षशुभाशुभविचार- तिथिवारर्क्ष योगानां युतिः संवत्सरान्विता। प्रष्टुर्नामाक्षरैर्युक्ता त्रिहता शेषके फलम् ।।१।। एकेन क्लेश, समता द्वाभ्यां, त्रितये महात्सुखम्।

पथिकागमन विचार-

प्रश्नाक्षरं द्विगुणितं त्रयोदश समन्वितम्। अष्टभिश्च हरेद्भागं शेषांके फलमादिशेत्।।
एकेन गमनं भवति द्वाभ्यां मार्ग उच्यते। तृतीये चार्धमार्गे च चतुर्थे द्वारमागतः।।
पञ्चमे पुनरावृत्ति षष्ठे व्याधि समन्वितः। सप्तमे शून्यतावृत्ति अष्टमे मरणं ध्रुवम्।।

प्रश्नाक्षरों को द्विगुणित कर १३ जोड़ दें और ८ का भाग दें। जो शेष बचे उनका फल इस प्रकार बताए- १. आने की सोच रहा है। २. चल पड़ा है। ३. रास्ते में है। ४. शीघ्र आ जाएगा। ५.ठहर के आएगा। ६. अस्वस्थ है। ७. नहीं आएगा। ८. मृत्यु या कष्ट में है।

देशान्तर से पत्र आयेगा कि नहीं?- प्रश्न लग्न चर राशि का हो और उससे द्वितीय तृतीय स्थान में शुभ ग्रह युक्त अथवा दृष्ट हो तो पत्र जल्दी आयेगा, मार्ग में है। स्थिर लग्न में विलम्ब से पत्र मिले। प्रश्न लग्न में चन्द्र हो और शुभ ग्रह देखता हो तो पत्र आयेगा, विपरीत हो तो उत्तर नहीं मिलेगा।

पुत्र लाभ होगा कि नहीं?- तत्कालीन तिथि की संख्या को ४ से गुणाकर, १ जोड़ना, तदनन्तर वार तथा योग की संख्या युक्त करके २ से भाग देना, जो लब्धि आये उसको तीन से गुणा करके ४से भाग देना, जो शेष बचे उससे फल कहें। १ शेष बचे तो विलम्ब से पुत्र सन्तान होगा, चिरंजीविता के लिये पार्थिव शिवपूजन करना चाहिए। शेष २ बचें तो पूर्व जन्म के पाप के कारण सन्तान सुख न होगा, गया यात्रा तथा हरिवंश पुराण का नवान्ह सुनने तथा सन्तान गोपाल के सवालक्ष जप से सम्भव है कि ईश्वर कृपा करे। ३ शेष बचे रहें तो पुत्र लाभ होगा, किसी गरीब की कन्या को विवाह दें, या उस विवाह में गुप्त दान से मदद करें, ऐसा करने से होने वाले पुत्र का पूर्ण सुख होगा। ४।१।० शेष बचे तो सन्तान शीघ्र होगी।

विवाह होगा कि नहीं?- यदि लग्न से २।३।६।७।१०।११ स्थानों में चन्द्रमा को वृहस्पति देखे तो विवाह हो जायेगा। यदि चन्द्रमा के साथ पापी ग्रह हो या पापी ग्रहों की दृष्टि हो तो विवाह नहीं होगा। यदि लग्न से ३।५।६।७।११ स्थान में चन्द्रमा को सूर्य, बुध वृहस्पति इनमें से कोई देखे अथवा व्ययेश सप्तम में और सप्तमेश लग्न में हो अथवा २।४।७ इन राशियों में से किसी एक राशि में चन्द्रमा या शुक्र हो तो अवश्य विवाह हो जायेगा।

अङ्क प्रश्न तथा फल वर्णन- प्रश्नकर्त्ता से एक सौ आठ अंक के भीतर कोई एक अंक मुख से कहलाये या लिखायें, उनमें १२ का भाग देकर पीछे यदि १।९।७ बचे तो देर से कार्य सिद्ध हो। यदि ८।४।१०।५ बचे तो कार्य नाश हो। ११ बचे तो सिद्धि, २ बचने से वृद्धि, ३।६।१२ (०) बचने से शीघ्र सिद्धि हो, यह फल कहें।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	ध.	श.	भ.	कृ.	आदि
पुन.	मघा	ह.	वि.	मू.	श्र.	पू.भा.	अश्वि.	रो.	मध्य
पुष्य	अश्ले	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	मृ.	अन्त्य

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र और जन्म नक्षत्र या नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्र में एक नाड़ी पर हों तो रोगी की मृत्यु होती है। प्रति दिन देखने से जिस दिन वह योग मिले उस दिन रोगी की मृत्यु जाने। यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा युद्ध के समय भी वर्जित है।

अथ रोगोत्पत्तौ सन्तानप्रतिबन्धादौ च देवदोषज्ञानम- तृतीय, नवम, द्वादश, षष्ठ स्थान में प्रश्न लग्न से कोई पाप ग्रह हो तो विष, जल, शस्त्र से मरे हुए किसी स्वकुलोत्पन्न व्यक्ति का दोष जानना। यह योग पापग्रहों के साथ शुभ का संयोग होने पर नहीं होता। यदि बारहवें आठवें स्थान में राहु हो तो प्रेत दोष, बृहस्पति के होने से पितर दोष,चन्द्रमा के होने से जलदेवी का दोष कहे। सूर्य के होने से देवी दोष अथवा लग्न अष्टम द्वादश में सूर्य हो तो क्षेत्रपाल का दोष कहें। शनि के होने से अपने गोत्रकी देवी(सती)का दोष और बुध व्यय तथा अष्टम स्थानमें हो तो भूतदोष जानना। व्यय तथा अष्टम स्थान में भौम हो तो शाकिनी दोष, शुक्र के होने से जलदेवी का दोष होता है। परंच जो मनुष्य स्वधर्म निष्ठ नहीं है अथवा जो ईश्वर से विमुख रहते है, पूर्वोक्त दोष उन्हीं को होते है। दोष सूचक ग्रह अपनी राशि तथा उच्च में हो, बलवान हों तो उक्त दोष साध्य, यदि चन्द्र नीच तथा निर्बल हो और दोष सूचक ग्रह भी नीच शत्रु क्षेत्र में हो तो उक्त दोष असाध्य होते है। बलवान् पाप ग्रह केन्द्र में हो तो पूर्वोक्त देवता असाध्य होते है, यदि शुभ ग्रह केन्द्र स्थानों में हो तो पूर्वोक्त देवगण साध्य अर्थात् मन्त्र स्तुति पूजन आदि से उनका दोष दूर हो जाता है।

मतान्तरेण दोषज्ञानम्- तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न प्रहर इनको जोड़ें और ८ का भाग दें। शेष ३।७ बचें तो देवता की बाधा, २।८ बचें तो पितृबाधा और ६।४ बचें तो भूत प्रेत की बाधा जानना। *"उदयाद्घटिका त्रिघ्ना तिथिवारेण संयुता। भक्ते द्वादशभिः शेषे जीवनं मरणं वदेत् ।।१।। राम (३), बाण (५), रसा (६), ऽष्टौ च (८), नन्द (९), रुद्राश्च (११), जीवति। एक (१), पक्ष (२), युगा (४), सप्त (७), दशा (१०), ऽर्काः (१२) नात्र जीवति।"*

अथ गर्भिणीपुत्रादि ज्ञानम्- तिथिवारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम्। सप्तभक्ते समे शेषे कन्या च विषमे सुतः।।१।। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से, वार की रविवार से और नक्षत्र की अश्विनी से करना।

आयुनिर्णयः- जन्मलग्नेश अष्टमेश से और जन्मलग्न चंद्र से आयु का निर्णय करें। दोनों में भेद हो तो जन्मलग्न होरालग्न से प्राप्त आयु जाने। चरे चरे, स्थिरे द्विस्वभावे दीर्घायुः। द्विस्वभावे द्विस्वभावे, चरे स्थिरे, मध्यमायुः। स्थिरे स्थिरे, चरे द्विस्वभावे अल्पायुः। १।४।५।७।९।१०।११ इन स्थानों में लग्नेश अष्टमेश तथा दशमेश हो तो दीर्घायु होती है [illegible] में पापग्रह हो तो मध्य आयु, इसके अतिरिक्त अल्पायु होती है। लग्नेश सूर्य का मित्र हो तो दीर्घायु, सम हो तो मध्यमायु, शत्रु हो तो अल्पायु जाने।

अथ नष्टवस्तु ज्ञानम्

तिथिवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम्। दिक संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्तथा।।
एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद् भांडसंस्थितम्। तृतीये जलमध्यस्थं अंतरिक्षे चतुर्थके।।
तुषस्थं पंचमे तुस्यात्षठे गोमयमध्यगम्। सप्तमे भस्मध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम्।।

अथ नष्ट वस्तुज्ञानाय चक्रं सफलम्

अन्ध	मन्द	मध्य	सुलोचन	संज्ञा
रो.पुष्य.उ. फा.वि.पूषा. ध.रे.	मृ.आश्ले. ह.अनु.उषा. श. अ.	आ.म.चि. ज्ये.अभि पूभा.भ.	पुन.पू.फा. स्वा.मू.श्र. उभा.कृ.	नक्षत्राणि
पूर्वे गतम्	दक्षिणेगतं	पश्चि. गतं	उत्तरे गतं	दिशा
शीघ्र लाभः	यत्नेन लाभः	दूरे श्रवण	नैव प्राप्ति	फलं

पशुरन्वेषणं (सूर्यभात्)
९ भ्रमति वनेषु।
१५ ग्रामसमीपस्थः।
२२ ग्रहे आगतः।
२३।२४ नष्टप्राप्तिः।
२५।२६।२७ निधनमपि न श्रूयते।

जयपराजय प्रश्न- यदि तीसरे भाव से लेकर आठवें तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो प्रतिवादी (मुद्दालह) जीतेगा। यदि नवम भाव से लेकर दूसरे भाव तक शुभ ग्रह अधिक बलवान् हों तो मुदई जीतेगा और यदि पापग्रह लग्न में बैठा हो तो प्रश्नकर्त्ता जीतेगा, परन्तु वहां पापग्रह नीच राशि में हो या अस्त हो अथवा शत्रु राशि के घर में हो तो हार जायेगा। यदि लग्न और सप्तम स्थान में पापग्रह तुल्य बली हो अथवा लग्नेश और सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो सन्धि हो जायेगी। पापग्रह न्यूनाधिक बली हों तो अधिक बली ही जीतेगा, अर्थात् लग्न स्थित पापग्रह बली हो तो प्रश्नकर्त्ता की विजय और यदि सप्तमस्थ पापग्रह बलवान् हो तो शत्रु की विजय होगी। यदि लग्न सप्तमातिरिक्त स्थान में दो पापग्रहों की परस्पर पूर्ण दृष्टि हो तो वादी प्रतिवादी दोनों शस्त्रों से घायल होते है। प्रश्न काल मे लग्नेश सप्तमेश परस्पर मित्र हों तो युद्ध छिड़ेगा, अन्यथा नहीं।

अक्षांशादि सारिणी

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम—अन्तर

स्टैण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
अंकलेश्वर	२१।३८	७३।०३	—३७।४८	१६/३६
अंजार	२३।०७	७०।०१	—४९।५६	—२८।४४
अंबरनाथ	१९।१२	७३।१०	—३७।२०	—१६।०८
अंबाजी	२४।२२	७२।५६	—३८।१६	—१७/०४
अंबाला	३०।२३	७६।४६	—२२।५६	—०१।४४
अंबिकापुर	२३।१०	८३।१५	+०३।००	+२४।१२
अक्कलकोट	१७।३३	७६।१३	—२५।१२	—०३।५२
अकोला	२०।४३	७७।०२	—२१।५२	—००।४८
अगरतला	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६
अचलगढ़	२४।३८	७२।४८	—३८।४८	—१७।३६
अचलपुर	२१।१९	७७।३०	—२०।१०	+०१।१२
अजन्ता	२०।३६	७५।३६	—२७।३६	—०६।२४
अजमेर	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।०८
अनन्तपुर	१४।४०	७७।३५	—१९।४०	+०१।३२
अनन्तनाग	३३।४४	७५।१०	—२९।२०	—०८।०८
अमरेली	२१।३६	७१।१२	—४५।१२	—२४।००
अमरावती	२०।५६	७७।५१	—१८।३६	+०२।३६
अमलनेर	२१।०३	७५।०३	—२९।४८	—०८।३६
अमृतसर	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—०९।१६
अयोध्या	२६।४८	८२।१४	—०१।०४	+२०।००
अलवर	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—०२।१६
अल्लेपि	०९।३०	७६।२२	—२४।३२	—०३।२०
अलमोड़ा	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+०९।५२
अलीबाग	१८।३९	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
अलीगढ़	२७।५४	७८।०५	—१७।४०	+०३।२८
अहमदनगर	१९।०५	७४।४४	—३१।०४	—०९।५२
अहमदाबाद	२३।०२	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८
आँबलीयासण	२३।१७	७२।२५	—४०।२०	—१९।०८
आगरा	२७।११	७८।०२	—१७।५२	+०३।२०
आगास	२२।३०	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२
आजमगढ़	२६।०५	८३।१२	+०२।४८	+२४।००
आणंद	२२।३५	७२।५८	—३८।०८	—१६।५६
आदिलाबाद	१९।४०	७८।३१	—१५।५६	+०५।१६
आदोनी	१५।३४	७७।१८	—२०।४८	+००।२४
आबू	२४।३७	७२।४३	—३९।०८	—१७।३६
आमोद	२२।००	७२।५३	—३८।२८	—१७।१६
आरकोणम	१३।०६	७९।४१	—११।१६	+०९।५६

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
आर्वी	२०।५९	७८।१३	—१७। ८	+०४।०४
आर्द्री	२३।३२	८६।४१	+१६।४४	+३७।५६
ओरवा	२२।२८	६९।०५	—५३।४०	—३२।२८
अखनूर का.	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।२८
अनूपशहर	२८।२१	७८।२३	—१६।२८	+४०।४४
अलीगंज भो.	२७।२०	७९।१२	—१३।१२	+०८।००
अलीगंज ह.	२६।१२	८४।०८	+०६।३२	+२७।४४
अमेठी	२६।०७	८१।४७	—२०।५२	+१८।२०
अगरतला त्रि.	२३।४९	९१।१७	+३५।०८	+५६।२०
अमरोहा	२८।५४	७८।३४	—१५।४४	+०५।२८
आसनमोल	२३।४२	८७।२०	+१९।२०	+४०।३२
इगतपुरी	१९।४२	७३।३५	—३५।४०	—१४।२२
इचलकरंजी	१६।४१	७४।२७	—३२।१२	—११।००
इटारसी	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+०२।१६
इटावा	२६।४७	७९।०२	—१३।५२	+०७।२०
इटावा बीना	२४।१०	७८।११	—१७।१६	+०३।५६
इन्द्रगढ़	२५।४४	७६।१२	—२५।१२	+०४।००
इन्दौर	२२।४३	७५।५३	—२६।२८	+०५।१६
इलाहाबाद	२५।२८	८१।५२	—२ ।३२	+१२।४०
इलोरा	२०।०५	७५।१०	—२९।२०	—०८।०८
ईडर	२३।५०	७३।००	—३८।००	—१६।४८
उज्जैन	२३।११	७५।४३	—२७।०८	—०५।५६
उधना	२१।१२	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२
उमरखेड	१९।३६	७७।४१	—१९।१६	+०१।५६
उटकमंड	११।१७	७६।४४	—२३।०४	—०१।५२
उदयपुर मेवा.	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।००
उन्नाव	२६।३३	८०।३०	—८०।००	+१३।०४
उम्बरगाँव	२०।१२	७२।४४	—३९।०४	—१७।५२
उमरकोट	२२।४७	७४।५०	—३०।४०	—०९।२८
उमरेठ	२२।४२	७३।०८	—३७।२८	—१६।१६
उल्लासनगर	१९।१३	७३।०७	—३७।३२	—१६।२०
उस्मानाबाद	१८।०८	७६।०५	—२१।४०	—००।२८
ऊधमपुर	३२।५५	७५।०७	—२९।३२	—०८।२०
उड़ीपी	१३।२१	७४।४५	—३१।००	—०९।४८
ऊंझा	२३।४७	७२।२४	—४०।२४	—१९।१२
एकलिंगजी	२४।४६	७३।४३	—३५।०८	—१३।५६
एटाकासगंज	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+०५।५६

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
एरनाकुलम	०९।५९	७६।१८	—२४।४८	+०३।३६
ऐरंडोल	२०।५५	७५।१९	—२८।४४	—०७।३२
ऐल्लोर	१६।४३	८१।०५	—०५।४०	+१५।३२
एलिचपुर	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+०१।२४
ओरछा	२५।२१	७८।३८	—१५।२८	+०५।४४
औरंगाबाद	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	—०७।४०
ओरंगा वि.	२४।४५	८४।२५	+०७।४०	+२८।५२
कांकरोली	२५।०२	७३।५४	—३४।२४	—१३।१२
कांडला	२३।०१	७०।१४	—४९।०४	—२७।५२
कडपा	१४।२८	७८।४९	—१४।४४	+०६।२८
कडी	२३।१८	७२।२०	—४०।४०	—१९।२८
कडोद	२१।१३	७३।१४	—३७।०४	—१५।५२
कटक	२०।२८	८५।५८	+१३।३६	+३४।४८
कटनी	२३।५०	८०।२३	—०८।२८	+१२।४४
कटोमण	२३।२८	७२।१४	—४१।०४	—१९।५२
कोण्णूर	११।५१	७५।२१	—२८।३६	—०७।२४
कन्याकुमारी	०८।०४	७७।३६	—१९।३६	+०१।३६
कन्नौज	२७।०२	७९।५८	—१०।०८	+१०।५६
कपडवंज	२३।०२	७३।०५	—३७।४०	—१६।२८
कपूरथला	३१।२२	७५।२२	—२८।३२	—०७।२०
करजत	१८।५५	७३।२०	—३६।४०	—१५।२२
करमाला	१८।२४	७५।१२	—२९।१२	—०८।००
कर्णूल	१५।५०	७८।०३	—१७।४८	+०३।२४
करनाल	२९।४२	७७।०२	—२१।५२	+००।४०
करमसद	२२।३४	७२।५४	—३८।२४	—१७।१२
करीमनगर	१८।२८	७९।०६	—१३।३६	+०७।३६
कलकत्ता	२२।३५	८८।२३	+२३।३२	+४४।४४
कलोल	२३।१४	७२।२८	—४०।०८	—१८।५६
कांचीपुरम	१२।५०	७९।४३	—११।०८	+१०।०४
काकीनाडा	१६।५९	८२।१३	—१ ।०८	+२०।०४
कानपुर	२६।२७	८०।२१	—८ ।३६	+१२।३६
काठमांडू ने.	२७।४२	८५।१७	+११।०८	+३२।२०
कानानोर	११।५२	७५।२५	—२८।२०	—०७।०८
कामठी	२१।१०	७९।१२	—१३।१२	+०८।००
कारंजा	२०।२९	७७।२९	—२०।०४	+०१।०८
कारबार	१४।४८	७४।०८	—३३।२८	—१२।१६
कालपी	२६।०८	७९।४५	—११।००	+१०।१२

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
कालका	३०।४७	७६।५७	—२२।१२	—०१।००
कालीकट	११।१५	७५।४५	—२७।००	—०५।४८
कालीघाट	२२।३१	८८।२१	+२३।२४	+४४।३६
कासगंज	२७।४८	७८।३९	—१५।२४	+०५।४८
किशनगंज	२६।०७	८७।५८	+२१।५२	+४३।०४
किशनगढ़	२७।५२	७०।३४	—४७।२८	—२६।१६
किशनगढ़ अ.	२६।३५	७४।५१	—३०।३६	—०९।२४
किशनगढ़ ज.	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—०७।२०
कुंभकोणम्	१०।५८	७९।२३	—१२।२८	+०८।४४
कुमठा	१४।२५	७४।२४	—३२।२४	—११।१२
करूड़वाड़ी	१८।०५	७५।२५	—२८।२०	—०७।०८
कुशलगढ़	२३।०८	७४।२७	—३२।१२	—११।००
कूचबिहार	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।५२
कृष्णा	१६।२५	७७।१९	—२२।४४	+००।२८
केशरीयाजी	२४।०५	७३।४०	—३५।२०	—१४।०८
कोचीन	०९।५८	७६।१५	—२५।००	—०३।४८
कोटा	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—०५।२८
कोटायम	०९।०५	७६।३२	—२३।५२	—०२।४०
कोडाइकेनाल	१०।१४	७७।२८	—२०।०८	+०१।०४
कोल्हापुर	१६।४२	७४।१३	—३३।०८	—११।५६
कोन्नूर	११।२०	७६।४८	—२२।४८	—०१।३६
क्वीलोन	०८।५३	७६।३८	—२३।२८	—०२।१६
कच्छभुज	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।०८
कांगड़ा	३२।०९	७६।१८	—२४।४८	—०३।३६
कालाबाग पा.	३२।५८	७१।३६	—४३।३६	—२२।२४
काबुल अफ.	२४।२७	६९।०६	—५३।३६	—३२।२४
काशी	२५।२०	८३।००	+०२।००	+२३।१२
काडी लंका	०७।२०	८०।४५	—०७।००	+१४।१२
कायमगंज	२७।३५	७९।२१	—१२।३६	+०८।३६
किश्तवाड़	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—०५।३६
कुरूक्षेत्र	२९।५८	७६।४८	—२२।४८	—०१।३६
कैम्बलपुर पा.	३३।४८	७८।१८	—४०।४८	—१९।३६
कोलम्बो	०६।५६	७९।५६	—१०।२६	+१०।४६
खंडवा	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—०३।२८
खंडाला	१८।४५	७३।२२	—३६।३२	—१५।२०
खंभांत	२२।१९	७२।३६	—७९।३६	—१८।२४
खंभालिया	२२।१२	६९।४०	—५१।२०	—३०।०८

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व+ पश्चिम—अन्तर

अक्षांशादि सारिणी

स्टैण्डर्ड अन्तर-स्थानीय टाइम और स्टैण्डर्ड टाइम का अन्तर

नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.	नगर नाम	उत्तर अक्षांश अं. कं.	पूर्व रेखांश अं. कं.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि.सै.	देशान्तर मि.सै.
खड़गपुर	२२।२०	८७।१९	+१९।१६	+४०।२८	जूनागढ़	२१।३१	७०।३६	—४७।३६	—२६।२४	पानीपत	२९।२७	७६।५८	—२२।०८	—००।५६	मैसूर स्टेट	१२।१९	७६।४०	—२३।२०	—०२।०८
खाराघोड़ा	२३।१०	७१।४२	—४३।१२	—२२।००	झालावाड़	२४।३६	७४।०९	—३३।२४	—१२।१२	पुरणिया	२५।४९	८७।३१	+२०।१४	+४१।१६	मुँगेर	२५।२३	८६।३०	+१६।००	+३७।१२
खुर्जा	२८।१४	७७।५१	—१८।३६	+०२।३६	झाँसी	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+०५।२०	पूना	१८।३०	७३।५२	—३४।३२	—१३।२०	रतलाँम	२३।१९	७५।०३	—२९।४८	—०८।३६
खेडब्रह्मा	२४।०३	७३।०४	—३७।४४	—१८।३२	झालरापाटन	२४।३२	७६।१२	—२५।१२	—०४।००	पोरबंदर	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।२४	रत्नागिरी	१७।००	७३।१९	—३६।४४	—१५।३२
खेड़ा	२२।४५	७२।४०	—३७।२०	—१८।०८	ट्रावनकोर	०९।००	७७।००	—२२।००	—००।४८	फतेहपुर	२७।०६	७७।४०	—१९।२०	+०१।५२	रांची, रामगढ़	२३।२०	८५।२०	+११।२०	+३२।३२
खेरालु	२३।५४	७२।३८	—३७।२८	—१८।१६	टोंक (राज.)	२६।११	७५।५०	—२६।४०	—०५।२८	फर्रूखाबाद	२७।०३	७९।३७	—११।३२	+०९।४०	रामपुर उ.प्र	२८।४७	७९।०२	—१३।५२	+०७।२०
खैरपुर	२७।२८	६८।४७	—५४।५२	—२३।४०	डलहौजी	३२।३०	७५।५४	—२६।२४	—०५।१२	फरीदकोट	३०।४०	७४।४५	—३१।००	—०९।४२	रामेश्वर	०९।१७	७९।१८	—१२।४८	+०८।२४
गया	२४।४८	८५।०१	+१०।०४	+३१।१६	डिवाई	२८।१२	७८।१५	—१७।००	+०४।१२	फिरोजपुर	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।२४	रायबरेली	२६।१४	८१।१३	—०५।०८	+१६।०४
ग्वालियर	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+०३।५२	डिब्रूगढ़	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।५६	फैजाबाद	२६।४७	८२।०८	—०१।२८	+१९।४४	राजमहेन्द्री	१७। ५	८१।४८	—०२।४८	+१८।२४
गाजीपुर	२५।३६	८३।३५	+०४।२२	+२५।३४	डूंगरपुर(राज.)	२३।५०	७३।४३	—३५।०८	—१३।५६	बड़ौदा	२२।१८	७३।१३	—३७।०८	—१५।५६	रायपुर म.प्र.	२१।१५	८१।३८	—०३।२८	+१७।४४
गिद्धौर	२४।५१	८६।०७	+१४।२८	+३५।४०	तलागंग	३२।५६	७२।२८	—४०।०८	—१८।५६	बम्बई	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।२८	रोहतक	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	—०२।१६
गिलगित्त	३५।५४	७४।२२	—३२।३३	—११।२१	त्रिवेन्द्रम	०८।३०	७६।५७	—२२।१२	—०१।००	बरेली	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+०८।४२	रोपड़ पंजाब	३०।५७	७६।३०	—२४।००	—०२।४८
गुरदासपुर	३२।०३	७५।२७	—१८।१२	—०७।००	त्रिचनापल्ली	१०।५०	७८।४२	—१५।१२	+०६।००	बद्रीनाथ	३०।४४	७९।३०	—१२।००	+०९।१२	लखनऊ	२६।५१	८०।५९	—०६।२०	+१४।५२
गोरखपुर	२६।४७	८३।२४	+०३।३६	+२४।४८	दरभंगा	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।५२	बर्धमान	२३।१६	८७।५२	+२१।२८	+४२।४०	लुधियाना	३०।५६	७५।५२	—२६।३२	—०५।२०
गोण्डा	२७।१०	८१।५७	—०२।१२	+१९।००	द्वारका	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—४२।००	बुलन्दशहर	२८।२४	७७।५१	—१८।३६	+०२।३६	शिलांग	२५।३४	९१।५४	+३७।३६	+५८।४८
गोवा	१५।२५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४०	दारजिलिंग	२७।०३	८८।१६	+२३।०४	+४४।१६	बीजापुर	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	—०६।००	शाहजहाँपुर	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+११।००
गोहाटी	२६।११	९१।४५	+३७।००	—५८।१२	दिल्ली	२८।३८	७७।१२	—२१।१२	००।००	बीकानेर	२८।०१	७३।१९	—३६।४४	—१५।३२	शिमला	३१।०६	७७।१०	—२१।२०	—००।०८
चित्तौड़गढ़	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।००	देहरादून	३०।१९	७८।०४	—१७।४४	+०३।२८	बंगलौर	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+०१।३२	श्रीनगर का.	३४।०६	७४।५१	—३०।३६	—०९।२४
चित्रकूट	२५।१२	८०।५४	—०६।२४	+१४।४०	धर्मशाला	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—०३।१६	बाँदा(उ.प्र.)	२५।२८	८०।२१	—०८।३६	+१२।२८	सवाईमाधोपुर	२६।००	७६।२३	—२४।२८	—०३।१६
चेरापूंजी	२५।१६	९१।४५	+३७।००	+५८।१२	धौलपुर	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+०२।४४	बाँसवाड़ा	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+०४।५६	सिकन्दराबाद	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+०५।२४
चम्बा	३२।२५	७६।१०	—२५।२०	—०४।०८	धार (म.प्र.)	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	—०८।००	बिलासपुर(हि.)	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	—०९।२८	सतारा	१७।४२	७४।००	—३४।००	—१२।४८
चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—०१।२०	धूलिया	२०।५८	७४।४२	—३१।१२	—१०।००	बिलासपुर(म.)	२२।०५	८२।१०	—०१।२०	+१९।५२	सागर म.प्र.	२३।५०	७८।४५	—१५।००	+०६।१२
छतरपुर	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+०९।३६	ध्रांगध्रा	२३।००	७१।२८	—४४।०८	—२२।५६	भड़ोंच	२१।४१	७३।००	—३८।००	—१६।४८	सूरत	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।२८
छपरा बिहार	२५।४७	८४।४१	+०८।४४	+२९।५६	नसीराबाद	२६।१८	७४।४६	—३६।५०	—१५।३८	भटिन्डा	३०।११	७४।५७	—३०।१२	—०९।००	सोलन	३०।५५	७७।०९	—२१।२४	—००।१२
छिबरा मऊ	२७।१०	७९।२९	—१२।०४	+०९।०८	नाडियाद	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२०	भरतपुर	२७।१५	७७।३०	—२०।००	—०८।४८	सोलापुर	१७।४०	७५।४८	—२६।४८	—०५।२६
जगन्नाथपुरी	१९।४८	८५।५०	+१३।२०	+३४।३२	नाथद्वारा	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।२६	भुवनेश्वर	२०।२८	८५।५४	+१३।३६	+३४।४८	सोमनाथ	२१।०१	७०।२६	—४८।१६	—२७।०४
जब्बलपुर	२३।१०	७९।५८	—१०।०८	+११।०४	नाभा	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—०४।०८	भोपाल	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+००।४४	सिरोही	२४।५६	७२।५१	—३८।३६	—१७।२४
जयपुर	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—०५।२२	नागपुर	२१।०९	७९।०६	—१३।३६	+०७।३६	भूटान	२७।३०	९०।००	+३०।००	+५१।१२	हरिद्वार	२९।५८	७८।१३	—१७।०८	+०४।०४
जलपाई गुड़ी	२६।३२	८८।४६	+२५।०४	+४६।१६	नासिक	२०।००	७३।४७	—३४।५२	—१३।४०	भुज	२३।१५	६९।००	—५१।१६	—३०।१२	हिसार	२९।१४	७५।४४	—२७।०८	—०५।३६
जम्मू	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	—०९।१२	नैनीताल	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+०९।००	मथुरा	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+ १।५६	हाथरस	२७।३६	७८।०६	—१७।३६	+०३।३६
जसवन्त नगर	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+०६।५२	नीमच	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—००।२४	मद्रास	१३।०५	८०।१७	—०८।५२	+१२।१२	हैदराबाद	१७।२७	७८।३०	—१६।००	+०५।१२
जालन्धर	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—०६।२८	पटना	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६	मण्डी (हि.प्र.)	३१।४३	७६।५८	—२२।०८	—००।५६	होशियारपुर	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	—०५।०८
जामनगर	२२।२७	७०।०५	—४९।४०	—२८।२२	पठानकोट	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—०६।००	मणिपुर स्टेट	२४।२०	९३।५८	+४५।१२	+६७।०४	होशंगाबाद	२२।४६	७७।४३	—१९।०८	+०२।०४
जैसलमेर	२६।५५	७०।५७	—४६।१२	—२५।०८	पटियाला	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—०३।०८	मालेगाँव ना.	२०।३१	७४।३०	—३२।००	—१०।४८	ल्हुवा	२६।१२	८४।०५	+०६।२०	+२७।३२
जोधपुर	२६।१८	७३।०२	—३७।५२	—१६।४०	प्रयागराज	२५।२५	८१।५३	—०२।२८	+१८।४४	मुरादाबाद	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+०६।३२	हरदोई	२७।२३	८०।१०	+०९।२०	+३०।३२
जौनपुर	२५।४६	८२।५३	+००।५२	+२२।०४	पाटन (राज.)	२७।२२	७३।५३	—३४।२८	—१३।२६	मुजफ्फरपुर	२६।०७	८५।२७	+११।४८	+३२।५४	हाजीपुर	२५।३४	[illegible]	[illegible]	[illegible]
जींद	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—०३।२६	पाण्डीचेरी	११।५६	७९।४८	—२०।४८	+०१।२४	मेरठ	२९।०१	७७।४५	—१९।००	+०२।१२	हजारीबाग	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

सूर्योदयास्त स्थानीय मध्यमकाल (बिम्बशीर्ष) घण्टा-मिनटों में

स्टेण्डर्ड टाइम में किसी स्थान का सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए ४ मिनट प्रति अंश की दर से समयावधि का जोड़ करें, जितने रेखांश अभीष्ट स्थल स्टेण्डर्ड रेखांश से पश्चिम है। ४ मिनट प्रति अंश की दर से समयावधि घटा दें, जितने रेखांश अभीष्ट स्थान स्टेण्डर्ड रेखांश से पूर्व में हैं

भारत में भा० स्टे० टा० ज्ञात करने के लिए- यदि स्थान ८२½° रेखांश से पश्चिम में हों तो जोड़ें + ४ x (८२½° – अभीष्ट स्थल का रेखांश) मिनट
और यदि स्थान ८२½° रेखांश से पूर्व में हों तो घटाएं ४ x (अभीष्ट स्थल का रेखांश –८२½°) मिनट

अक्षांश / ता०	०° उदय	०° अस्त	+१०° उदय	+१०° अस्त	+२०° उदय	+२०° अस्त	+३०° उदय	+३०° अस्त	+३५° उदय	+३५° अस्त	+४०° उदय	+४०° अस्त	+४५° उदय	+४५° अस्त	+५०° उदय	+५०° अस्त	+५२° उदय	+५२° अस्त	+५४° उदय	+५४° अस्त	+५६° उदय	+५६° अस्त	+५८° उदय	+५८° अस्त	+६०° उदय	+६०° अस्त
जन. १	५।५९	१८।०७	६।१७	१७।५०	६।३५	१७।३२	६।५६	१७।११	७।०८	१६।५९	७।२२	१६।४५	७।३८	१६।२८	७।५९	१६।०८	८।०८	१५।५८	८।११	१५।४७	८।३२	१५।३५	८।४६	१५।२१	९।०३	१५।०४
४	६।०१	१८।०९	६।१८	१७।५२	६।३६	१७।३४	६।५७	१७।१४	७।०९	१७।०२	७।२२	१६।४८	७।३९	१६।३२	७।५९	१६।१२	८।०८	१६।०३	८।११	१५।५२	८।३०	१५।४०	८।४४	१५।२६	९।०१	१५।१०
८	६।०३	१८।११	६।२०	१७।५४	६।३७	१७।३७	६।५७	१७।१७	७।०९	१७।०५	७।२२	१६।५२	७।३८	१६।३६	७।५७	१६।१७	८।०६	१६।०८	८।१७	१५।५७	८।२८	१५।४६	८।४२	१५।३३	८।५७	१५।१७
१२	६।०५	१८।१२	६।२१	१७।५६	६।३८	१७।३९	६।५७	१७।२०	७।०९	१७।०९	७।२२	१६।५६	७।३७	१६।४१	७।५५	१६।२२	८।०४	१६।१३	८।१४	१६।०४	८।२५	१५।५३	८।३८	१५।४०	८।५३	१५।२५
१६	६।०६	१८।१४	६।२२	१७।५८	६।३८	१७।४२	६।५७	१७।२३	७।०८	१७।१२	७।२०	१७।००	७।३४	१६।४६	७।५३	१६।२८	८।०१	१६।२०	८।१०	१६।१०	८।२१	१६।००	८।३३	१५।४८	८।४७	१५।३४
२०	६।०८	१८।१५	६।२२	१८।००	६।३८	१७।४५	६।५६	१७।२७	७।०६	१७।१६	७।१८	१७।०५	७।३२	१६।५१	७।४९	१६।३४	७।५७	१६।२६	८।०६	१६।१७	८।१६	१६।०७	८।२७	१५।५६	८।४०	१५।४३
२४	६।०९	१८।१६	६।२३	१८।०२	६।३८	१७।४७	६।५५	१७।३०	७।०४	१७।२०	७।१६	१७।१०	७।२९	१६।५६	७।४५	१६।४१	७।५२	१६।३३	८।००	१६।२५	८।१०	१६।१६	८।२०	१६।०५	८।३२	१५।५३
२८	६।१०	१८।१७	६।२३	१८।०४	६।३७	१७।५०	६।५३	१७।३४	७।०२	१७।२४	७।१३	१७।१४	७।२५	१७।०२	७।४०	१६।४७	७।४७	१६।४०	७।५४	१६।३२	८।०३	१६।२४	८।१३	१६।१४	८।२४	१६।०३
फर. १	६।१०	१८।१७	६।२३	१८।०५	६।३६	१७।५२	६।५१	१७।३७	७।००	१७।२८	७।०९	१७।१९	७।२०	१७।०८	७।३४	१६।५४	७।४१	१६।४८	७।४८	१६।४०	७।५६	१६।३३	८।०५	१६।२४	८।१५	१६।१४
५	६।११	१८।१८	६।२२	१८।०६	६।३४	१७।५४	६।४८	१७।४१	६।५६	१७।३२	७।०५	१७।२४	७।१६	१७।१३	७।२८	१७।०१	७।३४	१६।५५	७।४१	१६।४८	७।४८	१६।४१	७।५६	१६।३३	८।०५	१६।२४
९	६।११	१८।१८	६।२२	१८।०८	६।३३	१७।५६	६।४६	१७।४४	६।५३	१७।३६	७।०१	१७।२९	७।१०	१७।१९	७।२२	१७।०८	७।२७	१७।०२	७।३३	१६।५६	७।४०	१६।५०	७।४७	१६।४३	७।५५	१६।३५
१३	६।११	१८।१८	६।२१	१८।०९	६।३१	१७।५८	६।४२	१७।४७	६।४९	१७।४०	६।५६	१७।३३	७।०५	१७।२५	७।१५	१७।१५	७।२०	१७।१०	७।२५	१७।०४	७।३१	१६।५९	७।३७	१६।५२	७।४५	१६।४५
१७	६।११	१८।१८	६।२०	१८।१०	६।२८	१८।००	६।३९	१७।५०	६।४४	१७।४४	६।५१	१७।३८	६।५९	१७।३०	७।०८	१७।२२	७।१२	१७।१७	७।१७	१७।१३	७।२२	१७।०८	७।२७	१७।०२	७।३४	१६।५६
२१	६।११	१८।१७	६।१८	१८।१०	६।२६	१८।०२	६।३५	१७।५४	६।४०	१७।४८	६।४६	१७।४३	६।५२	१७।३६	७।००	१७।२८	७।०४	१७।२५	७।०८	१७।२१	७।१२	१७।१७	७।१७	१७।१२	७।२३	१७।०६
२५	६।१०	१८।१७	६।१६	१८।११	६।२३	१८।०४	६।३१	१७।५६	६।३५	१७।५२	६।४०	१७।४७	६।४६	१७।४१	६।५२	१७।३५	६।५६	१७।३२	६।५९	१७।२९	७।०२	१७।२५	६।०७	१७।२१	६।११	१७।१६
मार्च १	६।०९	१८।१६	६।१५	१८।११	६।२१	१८।०५	६।२७	१७।५९	६।३०	१७।५६	६।३४	१७।५२	६।३९	१७।४७	६।४४	१७।४२	६।४७	१७।३९	६।५०	१७।३६	६।५२	१७।३४	६।५६	१७।३०	६।००	१७।२६
५	६।०९	१८।१५	६।१३	१८।११	६।१७	१८।०७	६।२२	१८।०२	६।२५	१७।५९	६।२८	१७।५६	६।३२	१७।५२	६।३६	१७।४८	६।३८	१७।४७	६।४०	१७।४४	६।४२	१७।४२	६।४५	१७।४०	६।४८	१७।३७
९	६।०८	१८।१४	६।११	१८।११	६।१४	१८।०८	६।१८	१८।०५	६।२०	१८।०३	६।२२	१८।००	६।२४	१७।५८	६।२८	१७।५५	६।२९	१७।५४	६।३१	१७।५२	६।३२	१७।५०	६।३४	१७।४९	६।३६	१७।४७
१३	६।०७	१८।१३	६।०८	१८।११	६।११	१८।०९	६।१३	१८।०७	६।१४	१८।०६	६।१६	१८।०४	६।१७	१८।०३	६।१९	१८।०१	६।२०	१८।०१	६।२१	१८।००	६।२२	१७।५९	६।२३	१७।५८	६।२४	१७।५६
१७	६।०६	१८।१२	६।०६	१८।११	६।०७	१८।११	६।०८	१८।१०	६।०९	१८।०९	६।०९	१८।०९	६।१०	१८।०८	६।११	१८।०८	६।११	१८।०८	६।११	१८।०७	६।११	१८।०७	६।१२	१८।०७	६।१२	१८।०६
२१	६।०४	१८।११	६।०४	१८।११	६।०४	१८।१२	६।०४	१८।१२	६।०३	१८।१३	६।०३	१८।१३	६।०२	१८।१४	६।०२	१८।१४	६।०२	१८।१४	६।०१	१८।१५	६।०१	१८।१५	६।०१	१८।१६	६।००	१८।१६
२५	६।०३	१८।१०	६।०२	१८।११	६।००	१८।१३	५।५९	१८।१४	५।५८	१८।१५	५।५६	१८।१७	५।५५	१८।१८	५।५३	१८।२०	५।५२	१८।२२	५।५१	१८।२२	५।५०	१८।२३	५।४९	१८।२४	५।४८	१८।२६
२९	६।०२	१८।०९	५।५९	१८।११	५।५७	१८।१४	५।५४	१८।१७	५।५२	१८।१९	५।५०	१८।२१	५।४७	१८।२३	५।४५	१८।२७	५।४३	१८।२८	५।४१	१८।३०	५।४०	१८।३१	५।३८	१८।३४	५।३६	१८।३६

अक्षांश / ता०	0°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°		अक्षांश / ता०
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
अप्रेल २	६।०१	१८।०७	५।५७	१८।११	५।५३	१८।१५	५।४९	१८।१९	५।४६	१८।२२	५।४३	१८।२५	५।४०	१८।२९	५।३६	१८।३३	५।३४	१८।३५	५।३२	१८।३७	५।२९	१८।४०	५।२७	१८।४३	५।२४	१८।४५	अप्रेल २
६	६।००	१८।०६	५।५५	१८।१०	५।५०	१८।१६	५।४४	१८।२२	५।४१	१८।२५	५।३७	१८।२९	५।३३	१८।३४	५।२७	१८।३९	५।२५	१८।४२	५।२२	१८।४५	५।१९	१८।४८	५।१६	१८।५२	५।११	१८।५५	६
१०	५।५९	१८।०५	५।५३	१८।१०	५।४७	१८।१७	५।४०	१८।२४	५।३६	१८।२९	५।३१	१८।३३	५।२६	१८।३९	५।१९	१८।४५	५।१६	१८।४९	५।१२	१८।५२	५।०८	१८।५६	५।०५	१९।०१	५।००	१९।०५	१०
१४	५।५८	१८।०४	५।५०	१८।१०	५।४४	१८।१८	५।३५	१८।२७	५।३०	१८।३२	५।२४	१८।३७	५।१८	१८।४४	५।१०	१८।५२	५।०७	१८।५६	५।०३	१९।००	४।५८	१९।०४	४।५४	१९।०९	४।४८	१९।१५	१४
१८	५।५७	१८।०३	५।४८	१८।११	५।४१	१८।१९	५।३१	१८।२९	५।२५	१८।३५	५।१९	१८।४१	५।१२	१८।४९	५।०२	१८।५८	४।५८	१९।०३	४।५४	१९।०७	४।४८	१९।१२	४।४३	१९।१८	४।३६	१९।२५	१८
२२	५।५६	१८।०२	५।४७	१८।११	५।३८	१८।२१	५।२६	१८।३२	५।२०	१८।३८	५।१३	१८।४५	५।०४	१८।५४	४।५४	१९।०४	४।४९	१९।०९	४।४५	१९।१५	४।३८	१९।२०	४।३२	१९।२७	४।२५	१९।३५	२२
२६	५।५५	१८।०२	५।४५	१८।११	५।३५	१८।२२	५।२२	१८।३४	५।१६	१८।४१	५।०७	१८।४९	४।५८	१८।५९	४।४७	१९।१०	४।४१	१९।१६	४।३६	१९।२२	४।२९	१९।२९	४।२१	१९।३६	४।१३	१९।४५	२६
३०	५।५४	१८।०१	५।४३	१८।१२	५।३२	१८।२३	५।१९	१८।३७	५।११	१८।४५	५।०२	१८।५३	४।५२	१९।०४	४।३९	१९।१७	४।३३	१९।२३	४।२७	१९।२९	४।२०	१९।३७	४।११	१९।४५	४।०२	१९।५४	३०
मई ४	५।५४	१८।००	५।४२	१८।१२	५।२९	१८।२५	५।१५	१८।३९	५।०७	१८।४८	४।५७	१८।५७	४।४६	१९।१०	४।३२	१९।२३	४।२६	१९।३०	४।१८	१९।३७	४।११	१९।४५	४।०२	१९।५४	३।५१	२०।०४	मई ४
८	५।५३	१८।००	५।४१	१८।१३	५।२७	१८।२६	५।१२	१८।४२	५।०३	१८।५१	४।५३	१९।०१	४।४०	१९।१४	४।२६	१९।२९	४।१९	१९।३६	४।११	१९।४४	४।०२	१९।५३	३।५२	१९।०३	३।४१	२०।१४	८
१२	५।५३	१८।००	५।४०	१८।१४	५।२५	१८।२८	५।०९	१८।४४	५।००	१८।५४	४।४८	१९।०५	४।३५	१९।१९	४।१९	१९।३५	४।१२	१९।४२	४।०४	१९।५१	३।५४	२०।००	३।४३	२२।११	३।३१	२०।२४	१२
१६	५।५३	१८।००	५।३९	१८।१४	५।२४	१८।२९	५।०६	१८।४७	४।५७	१८।५८	४।४४	१९।०९	४।३१	१९।२३	४।१४	१९।४०	४।०५	१९।४८	३।५७	१९।५८	३।४६	२०।०८	३।३५	२०।२०	३।२१	२०।३४	१६
२०	५।५३	१८।००	५।३८	१८।१५	५।२३	१८।३१	५।०४	१८।४९	४।५४	१९।०१	४।४१	१९।१३	४।२६	१९।२७	४।०९	१९।४६	४।००	१९।५४	३।५०	२०।०४	३।३९	२०।१५	३।२७	२०।२८	३।१२	२०।४३	२०
२४	५।५३	१८।०१	५।३८	१८।१६	५।२२	१८।३३	५।०२	१८।५२	४।५१	१९।०३	४।३८	१९।१६	४।२२	१९।३२	४।०१	१९।५१	३।५५	२०।००	३।४५	२०।१०	३।३३	२०।२२	३।२०	२०।३६	३।०४	२०।५१	२४
२८	५।५४	१८।०१	५।३८	१८।१७	५।२१	१८।३४	५।०१	१८।५४	४।४९	१९।०६	४।३६	१९।२०	४।१९	१९।३६	४।००	१९।५६	३।५०	२०।०६	३।४०	२०।१६	३।२८	२०।२८	३।१३	२०।४३	२।५७	२०।५९	२८
जून १	५।५४	१८।०२	५।३८	१८।१८	५।२०	१८।३६	५।००	१८।५६	४।४८	१९।०९	४।३४	१९।२३	४।१७	१९।३९	३।५७	२०।००	३।४७	२०।१०	३।३५	२०।२१	३।२३	२०।३४	३।०८	२०।४९	२।५०	२१।०७	जून १
५	५।५५	१८।०२	५।३८	१८।१९	५।२०	१८।३७	४।५९	१८।५८	४।४७	१९।११	४।३२	१९।२५	४।१५	१९।४३	३।५४	२०।०४	३।४४	२०।१४	३।३२	२०।२६	३।१९	२०।३९	३।०३	२०।५५	२।४५	२१।१३	५
९	५।५६	१८।०३	५।३९	१८।२०	५।२०	१८।३९	४।५८	१९।००	४।४६	१९।१३	४।३१	१९।२८	४।१४	१९।४५	३।५२	२०।०७	३।४१	२०।१८	३।२९	२०।३०	३।१६	२०।४३	३।००	२०।५९	२।४०	२१।१९	९
१३	५।५७	१८।०४	५।३९	१८।२२	५।२०	१८।४०	४।५८	१९।०२	४।४५	१९।१५	४।३१	१९।३०	४।१३	१९।४७	३।५१	२०।१०	३।४०	२०।२१	३।२८	२०।३३	३।१४	२०।४७	२।५७	२१।०३	२।३७	२१।२३	१३
१७	५।५८	१८।०५	५।४०	१८।२२	५।२१	१८।४१	४।५९	१९।०३	४।४६	१९।१६	४।३१	१९।३१	४।१३	१९।४९	३।५०	२०।१२	३।३९	२०।२३	३।२७	२०।३५	३।१३	२०।४९	२।५६	२१।०६	२।३६	२१।२६	१७
२१	५।५८	१८।०६	५।४१	१८।२३	५।२२	१८।४२	५।००	१९।०४	४।४७	१९।१७	४।३२	१९।३३	४।१३	१९।५१	३।५१	२०।१३	३।४०	२०।२४	३।२८	२०।३६	३।१३	२०।५१	२।५७	२१।०७	२।३६	२१।२८	२१
२५	५।५९	१८।०७	५।४२	१८।२४	५।२३	१८।४३	५।०१	१९।०५	४।४८	१९।१८	४।३३	१९।३३	४।१४	१९।५१	३।५२	२०।१३	३।४१	२०।२४	३।२९	२०।३६	३।१४	२०।५१	२।५८	२१।०७	२।३७	२१।२८	२५
२९	६।००	१८।०७	५।४३	१८।२५	५।२४	१८।४३	५।०२	१९।०५	४।४९	१९।१८	४।३४	१९।३३	४।१६	१९।५१	३।५४	२०।१३	३।४३	२०।२४	३।३१	२०।३६	३।१७	२०।५०	२।००	२१।०६	२।४०	२१।२६	२९
जुलाई ३	६।०१	१८।०८	५।४४	१८।२५	५।२५	१८।४४	५।०३	१९।०५	४।५०	१९।१८	४।३६	१९।३३	४।१८	१९।५०	३।५६	२०।१२	३।४६	२०।२२	३।३४	२०।३४	३।२०	२०।४८	३।०४	२१।०४	२।४४	२१।२४	जुलाई ३
७	६।०१	१८।०९	५।४५	१८।२५	५।२६	१८।४४	५।०५	१९।०५	४।५२	१९।१८	४।३८	१९।३२	४।२१	१९।४९	३।५९	२०।१०	३।४९	२०।२०	३।३७	२०।३२	३।२४	२०।४५	३।०९	२१।०१	२।४९	२१।२०	७
११	६।०२	१८।०९	५।४६	१८।२६	५।२८	१८।४३	५।०७	१९।०४	४।५५	१९।१६	४।४१	१९।३०	४।२४	१९।४७	४।०३	२०।०८	३।५३	२०।१८	३।४२	२०।२९	३।२९	२०।४१	३।१४	२०।५७	२।५६	२१।१४	११
१५	६।०२	१८।१०	५।४७	१८।२६	५।२९	१८।४३	५।०९	१९।०३	४।५७	१९।१५	४।४४	१९।२८	४।२७	१९।४४	४।०७	२०।०४	३।५८	२०।१४	३।४७	२०।२५	३।३४	२०।३७	३।२०	२०।५१	३।०३	२१।०८	१५
१९	६।०३	१८।१०	५।४८	१८।२५	५।३१	१८।४२	५।११	१९।०१	५।००	१९।१३	४।४७	१९।२६	४।३१	१९।४१	४।१२	२०।००	४।०३	२०।१०	३।५२	२०।२०	३।४१	२०।३१	४।२७	२०।४५	३।११	२१।००	१९
२३	६।०३	१८।१०	५।४८	१८।२५	५।३२	१८।४१	५।१३	१८।५९	५।०३	१९।१०	४।५०	१९।२३	४।३५	१९।३८	४।१७	१९।५६	४।०८	२०।०४	३।५८	२०।१४	३।४७	२०।२५	४।३४	२०।३८	३।२०	२०।५२	२३
२७	६।०३	१८।१०	५।४९	१८।२४	५।३४	१८।४०	५।१६	१८।५७	५।०६	१९।०८	४।५४	१९।१९	४।३९	१९।३३	४।२२	१९।५१	४।१४	१९।५८	४।०५	२०।०८	३।५४	२०।१८	४।४२	२०।३०	३।२९	२०।४४	२७
३१	६।०३	१८।१०	५।५०	१८।२४	५।३५	१८।३८	५।१८	१८।५५	५।०९	१९।०४	४।५७	१९।१५	४।४४	१९।२९	४।२७	१९।४५	४।२०	१९।५२	४।११	२०।०१	४।०१	२०।१०	४।५०	२०।२१	३।३८	२०।३४	३१
अग. ४	६।०३	१८।१०	५।५०	१८।२२	५।३७	१८।३६	५।२१	१८।५२	५।१२	१९।००	५।०१	१९।११	४।४८	१९।२३	४।३३	१९।३९	४।२६	१९।४६	४।१८	१९।५३	४।०९	२०।०२	४।५९	२०।१३	३।४७	२०।२४	अग. ४
८	६।०२	१८।०९	५।५१	१८।२१	५।३८	१८।३४	५।२३	१८।४८	५।१५	१८।५६	५।०५	१९।०७	४।५३	१९।१८	४।३९	१९।३२	४।३२	१९।३८	४।२५	१९।४५	४।१६	१९।५४	४।०७	१९।०३	३।५६	२०।१४	८
१२	६।०२	१८।०९	५।५१	१८।१९	५।३९	१८।३१	५।२५	१८।४४	५।१८	१८।५२	५।०८	१९।०२	४।५८	१९।१२	४।४५	१९।२५	४।३९	१९।३१	४।३२	१९।३७	४।२४	१९।४५	४।१६	१९।५३	४।०६	२०।०३	१२
१६	६।०१	१८।०८	५।५१	१८।१८	५।४०	१८।२९	५।२८	१८।४१	५।२१	१८।४८	५।१२	१८।५६	५।०३	१९।०६	४।५०	१९।१७	४।४५	१९।२३	४।३९	१९।२९	४।३२	१९।३६	४।२५	१९।४३	४।१६	१९।५२	१६
२०	६।००	१८।०७	५।५१	१८।१६	५।४२	१८।२६	५।३०	१८।३७	५।२४	१८।४३	५।१६	१८।५०	५।०७	१८।५९	४।५६	१९।०९	४।५२	१९।१४	४।४६	१९।२०	४।४०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२०
२४	६।००	१८।०६	५।५१	१८।१४	५।४३	१८।२३	५।३२	१८।३३	५।२७	१८।३८	५।२०	१८।४४	५।१२	१८।५२	५।०२	१९।०१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४

अक्षांश / ता०	०°		+१०°		+२०°		+३०°		+३५°		+४०°		+४५°		+५०°		+५२°		+५४°		+५६°		+५८°		+६०°		अक्षांश / ता०
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
सित. १	५।४७	१८।०४	५।५१	१८।०१	५।४५	१८।१६	५।३७	१८।२३	५।३३	१८।२८	५।२७	१८।३२	५।२२	१८।३८	५।१४	१८।४५	५।११	१८।४९	५।०८	१८।५२	५।०३	१८।५६	४।५९	१८।००	५।५४	१९।०५	सित. १
५	५।४६	१८।०२	५।५१	१८।०७	५।४६	१८।१२	५।३९	१८।१९	५।३६	१८।२२	५।३१	१८।२६	५।२६	१८।३१	५।२०	१८।३७	५।१८	१८।३९	५।१५	१८।४२	५।११	१८।४५	५।०८	१८।४९	५।०४	१८।५३	५
९	५।४४	१८।०१	५।५०	१८।०५	५।४६	१८।०९	५।४१	१८।१४	५।३९	१८।१६	५।३५	१८।२०	५।३१	१८।२३	५।२६	१८।२८	५।२४	१८।३०	५।२२	१८।३२	५।१९	१८।३५	५।१६	१८।३८	५।१३	१८।४१	९
१३	५।४३	१८।००	५।५०	१८।०२	५।४७	१८।०५	५।४३	१८।०९	५।४१	१८।११	५।३९	१८।१३	५।३६	१८।१६	५।३२	१८।१९	५।३१	१८।२१	५।२९	१८।२२	५।२७	१८।२४	५।२५	१८।२६	५।२२	१८।२९	१३
१७	५।४२	१७।५८	५।५०	१८।००	५।४८	१८।०१	५।४५	१८।०४	५।४४	१८।०५	५।४२	१८।०६	५।४१	१८।०८	५।३८	१८।१०	५।३७	१८।११	५।३६	१८।१२	५।३४	१८।१४	५।३३	१८।१५	५।३२	१८।१६	१७
२१	५।४०	१७।५७	५।४९	१७।५७	५।४९	१७।५८	५।४८	१७।५९	५।४७	१७।५९	५।४६	१८।००	५।४६	१८।००	५।४४	१८।०२	५।४४	१८।०२	५।४३	१८।०२	५।४२	१८।०३	५।४२	१८।०४	५।४१	१८।०४	२१
२५	५।३९	१७।५५	५।४९	१७।५५	५।५०	१७।५४	५।५०	१७।५४	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५०	१७।५३	५।५१	१७।५२	५।५०	१७।५२	५।५१	१७।५२	५।५१	१७।५२	२५
२९	५।३७	१७।५४	५।४९	१७।५२	५।५१	१७।५०	५।५२	१७।४९	५।५३	१७।४८	५।५४	१७।४७	५।५५	१७।४५	५।५६	१७।४४	५।५८	१७।४३	५।५८	१७।४२	५।५८	१७।४२	५।५९	१७।४१	६।००	१७।४०	२९
अक्टू. ३	५।३६	१७।५३	५।४९	१७।५०	५।५२	१७।४७	५।५४	१७।४४	५।५६	१७।४२	५।५८	१७।४०	६।००	१७।३८	६।०२	१७।३५	६।०४	१७।३४	६।०५	१७।३३	६।०६	१७।३१	६।०८	१७।३०	६।०९	१७।२८	अक्टू. ३
७	५।३५	१७।५२	५।४८	१७।४७	५।५३	१७।४४	५।५७	१७।३९	५।५९	१७।३७	६।०२	१७।३४	६।०५	१७।३०	६।०९	१७।२७	६।११	१७।२५	६।१२	१७।२३	६।१४	१७।२१	६।१७	१७।१९	६।१९	१७।१६	७
११	५।३४	१७।५१	५।४८	१७।४५	५।५४	१७।४०	५।५९	१७।३४	६।०३	१७।३२	६।०६	१७।२७	६।१०	१७।२३	६।१५	१७।१८	६।१७	१७।१६	६।२०	१७।१३	६।२२	१७।११	६।२६	१७।०८	६।२९	१७।०४	११
१५	५।३३	१७।५०	५।४९	१७।४३	५।५५	१७।३७	६।०२	१७।३०	६।०६	१७।२६	६।१०	१७।२१	६।१५	१७।१६	६।२१	१७।१०	६।२४	१७।०७	६।२७	१७।०४	६।३१	१७।००	६।३५	१६।५७	६।३८	१६।५२	१५
१९	५।३२	१७।४९	५।४९	१७।४१	५।५६	१७।३४	६।०५	१७।२६	६।०९	१७।२१	६।१४	१७।१५	६।२०	१७।०९	६।२८	१७।०२	६।३१	१६।५९	६।३५	१६।५५	६।३९	१६।५१	६।४४	१६।४६	६।४८	१६।४१	१९
२३	५।३१	१७।४८	५।४९	१७।४०	५।५८	१७।३१	६।०७	१७।२१	६।१३	१७।१६	६।१९	१७।१०	६।२६	१७।०३	६।३४	१६।५४	६।३८	१६।५०	६।४२	१६।४६	६।४७	१६।४१	६।५३	१६।३६	६।५८	१६।३०	२३
२७	५।३१	१७।४८	५।५०	१७।३९	५।५९	१७।२९	६।१०	१७।१८	६।१६	१७।१२	६।२३	१७।०५	६।३१	१६।५६	६।४१	१६।४७	६।४६	१६।४२	६।५०	१६।३७	६।५६	१६।३२	६।०२	१६।२५	७।०९	१६।१९	२७
३१	५।३०	१७।४७	५।५१	१७।३७	६।०१	१७।२६	६।१३	१७।१५	६।२०	१७।०७	६।२८	१७।००	६।३७	१६।५०	६।४८	१६।४०	६।५३	१६।३४	६।५८	१६।२९	७।०४	१६।२३	६।११	१६।१५	७।१९	१६।०८	३१
नव. ४	५।३०	१७।४७	५।५२	१७।३६	६।०३	१७।२४	६।१६	१७।१२	६।२४	१७।०४	६।३२	१६।५५	६।४२	१६।४५	६।५४	१६।३३	७।००	१६।२७	७।०६	१६।२२	७।१३	१६।१४	६।२१	१६।०७	७।२९	१५।५७	नव. ४
८	५।३०	१७।४७	५।५३	१७।३६	६।०५	१७।२३	६।१९	१७।०९	६।२७	१७।००	६।३७	१६।५१	६।४८	१६।४०	७।०१	१६।२६	७।०७	१६।२०	७।१४	१६।१४	७।२१	१६।०६	६।३०	१५।५८	७।३९	१५।४८	८
१२	५।३१	१७।४८	५।५४	१७।३५	६।०७	१७।२२	६।२३	१७।०६	६।३१	१६।५७	६।४२	१६।४७	६।५३	१६।३५	७।०८	१६।२१	७।१४	१६।१४	७।२१	१६।०७	७।३०	१५।५८	६।३९	१५।४९	७।५०	१५।३९	१२
१६	५।३२	१७।४९	५।५५	१७।३५	६।०९	१७।२१	६।२६	१७।०४	६।३५	१६	।४६	१६।४४	६।५८	१६।३१	७।१४	१६।१६	७।२१	१६।०८	७।२९	१६।००	७।३८	१५।५१	६।४८	१५।४१	८।००	१५।३०	१६
२०	५।३२	१७।५०	५।५७	१७।३५	६।१२	१७।२०	६।२९	१७।०२	६।३९	१६।५२	६।५१	१६।४१	७।०४	१६।२७	७।२०	१६।११	७।२८	१६।०३	६।३७	१५।५५	७।४६	१५।४५	६।५७	१५।३४	८।१०	१५।२१	२०
२४	५।३३	१७।५१	५।५८	१७।३५	६।१४	१७।१९	६।३३	१७।०१	६।४३	१६।[illegible]	६।५५	१६।३८	७।०९	१६।२४	७।२६	१६।०७	७।३४	१५।५९	७।४४	१५।५०	७।५४	१५।४०	७।०५	१५।२७	८।१९	१५।१४	२४
२८	५।३४	१७।५२	६।००	१७।३६	६।१७	१७।१९	६।३६	१७।००	६।४७	१६।५०	६।५९	१६।३७	७।१४	१६।२२	७।३२	१६।०४	७।४१	१५।५५	७।५०	१५।४५	८।०१	१५।३४	८।१३	१५।२२	८।२८	१५।०८	२८
दिस. २	५।३६	१७।५३	६।०२	१७।३७	६।१९	१७।२०	६।३९	१७।००	६।५०	१६।४९	७।०३	१६।३६	७।१९	१६।२०	७।३८	१६।०१	७।४७	१५।५२	७।५६	१५।४२	८।०८	१५।३१	८।२१	१५।१७	८।३६	१४।०३	दिस. २
६	५।३७	१७।५५	६।०४	१७।३८	६।२२	१७।२१	६।४२	१७।००	६।५४	१६।४८	७।०७	१६।३५	७।२३	१६।१९	७।४३	१६।००	७।५२	१५।५०	८।०२	१५।३९	८।१४	१५।२८	८।२८	१५।१४	८।४४	१४।५८	६
१०	५।३९	१७।५७	६।०६	१७।४०	६।२४	१७।२२	६।४५	१७।०१	६।५७	१६।४९	७।११	१६।३५	७।२७	१६।१९	७।४७	१५।५९	७।५७	१५।४९	८।०८	१५।३८	८।२०	१५।२६	८।३४	१५।१२	८।५०	१४।५५	१०
१४	५।४१	१७।५८	६।०८	१७।४१	६।२७	१७।२३	६।४८	१७।०२	७।००	१६।५०	७।१४	१६।३६	७।३०	१६।१९	७।५१	१५।५८	८।०१	१५।४९	८।१२	१५।३८	८।२४	१५।२५	८।३९	१५।११	८।५६	१४।५४	१४
१८	५।४३	१८।००	६।१०	१७।४३	६।२९	१७।२४	६।५०	१७।०३	७।०२	१६।५१	७।१७	१६।३७	७।३३	१६।२०	७।५४	१५।५९	८।०४	१५।५०	८।१५	१५।३९	८।२८	१५।२६	८।४३	१५।११	९।००	१४।५४	१८
२२	५।४५	१८।०२	६।१२	१७।४५	६।३१	१७।२६	६।५२	१७।०५	७।०४	१६।५३	७।१९	१६।३८	७।३६	१६।२२	७।५६	१६।०१	८।०६	१५।५१	८।१७	१५।४०	८।३०	१५।२७	८।४५	१५।१२	९।०२	१४।५५	२२
२६	५।४७	१८।०४	६।१४	१७।४७	६।३३	१७।२८	६।५४	१७।०७	७।०६	१६।५५	७।२१	१६।४१	७।३७	१६।२४	७।५८	१६।०४	८।०८	१५।५४	८।१९	१५।४३	८।३२	१५।३०	८।४६	१५।१५	९।०४	१४।५८	२६
३०	५।४९	१८।०६	६।१६	१७।४९	६।३५	१७।३१	६।५६	१७।१०	७।०८	१६।५८	७।२२	१६।४४	७।३८	१६।२७	७।५९	१६।०७	८।०८	१५।५७	८।१९	१५।४३	८।३२	१५।३४	८।४६	१५।१९	९।०४	१५।०२	३०

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर सूर्योदय जानना हो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लेवें, वह मिनट+पूर्व के हो तो इस पंचांग के सूर्योदय में हीन करें और मिनट—पश्चिम के हो तो धन करें अर्थात् जोड़ें। अक्षांशादि सारिणी में देशान्तर मिनट से पहले धन + चिन्ह हों तो ऋण करें, ऋण—चिन्ह हों तो धन करें, यह इष्ट नगर का मध्यम सूर्योदय होगा, पश्चात इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लेवें। रविक्रान्ति और इष्टनगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरांतर मिनट लें, वह धन हो तो ऊपर से आये हुए मध्यम सूर्योदय में जोड़े, ऋण हो तो हीन करें तो वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टें. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। आये हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण से चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह दिनमान में ही हीन करें, ऋण किये हों तो धन करें, वह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घंटा मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से है। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि=२॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें, और बाद के मिनट हों तो उनके जितने पल हों—इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें, तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय तिथ्यादि पंचांग होगा।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष ९ बुधवार ता. ५ सितम्बर २००७ ई. तदनुसार राष्ट्रीय मिति १४ भाद्रपद शाके १९२९ को हैदराबाद नगर का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में दिल्ली का सूर्योदय स्टै. टा. घं. ६ मि. ०५ है। हैदराबाद दिल्ली से ५ मि. पूर्व में (आक्षाशादि सारिणी में देखें) अतः यह ५ मि. इस पंचाग के सूर्योदय घं. ६ मि. ०५ में घटा दिये तो घं. ६ मि. ०० हुए। यह हैदराबाद का इस पंचांग के माध्यम से सूर्योदय हुआ। अब सितम्बर मास की दैनिक-ग्रह सूर्यक्रान्ति में देखें। ता. ५ सितम्बर को रविक्रान्ति उत्तरा ६/४७ है। हैदराबाद के अक्षांश १७।१८ हैं। (अक्षांशादि सारिणी देखो) आगे चरान्तर सारिणी से १७ अक्षांश और ६ क्रान्तयंश के कोष्ठक में ६ मिनट है और ७ क्रान्तयंश में ७ मिनट है, यहां क्रान्तयंश ६।५ होने से क्रान्तयंश ७ से चरान्तर मिनट लेना चाहिए। अतः क्रान्तयंश ७ में चरान्तर मिनट ७ प्राप्त हुए यह मिनट धन आये। ऊपर के मध्यम सूर्योदय घं. ६ मि. ०० में जोड़ दिये तो हैदराबाद में स्टै. टा. घं. ६ मि. ७ यह स्पष्ट सूर्योदय का समय हुआ। आये हुए चरान्तर मिनट ७ को ५ से गुणों तो ३ पल प्राप्त हुए। चरान्तर धन होने के कारण इस पंचांग के दिनमान ३१।१९ में ३५ पल हीन करने (विपरिणयन करने) से ३०।४४ यह हैदराबाद का दिनमान हुआ। इसका घण्टा मिनट किये तो घं. १२ मि. १७ हुए। यह ऊपर आये हुए हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय ६।०७ में जोड़ दिया तो घं. १८ मि. २४। यह हैदराबाद का स्टै. टा. से सूर्यास्त हुआ। यहां हैदराबाद सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय घं. ६ मि. ०५ से २ मिनट बाद में है, इसके घटी पल किये तो ० घटी ५ पल हुए। यह घटी पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से हैदराबाद का स्पष्ट सूर्योदय बाद में होने **से इस पंचांग के तिथ्यादि की घटी पलो में घटा देने से भाद्रपद शुक्ल ७ मंगलवार को तिथि घटयादि ७/२३ अनु. २५/२२** यह हैदराबाद के स्पष्ट सूर्योदय से तिथि नक्षत्र स्पष्ट हुए। इसी प्रकार योग करण की घटी पलों में घटाकर बना लें। इसी प्रक्रिया से संसार के किसी भी नगर का सूक्ष्म पंचांग ''श्रीविश्वविजय पंचांग'' द्वारा बन सकता है। विशेष बात यह है कि ''श्रीविश्वाविजय पंचांग'' में तिथि नक्षत्र योग करण भद्रा चन्द्रमा आदि के घण्टा मिनट दिये हैं। वह भारत में सर्वत्र समान है। यह इसकी अनुपम विशेषता है।

चरान्तर मिनट लाने का उदाहरण

जैसे दि. ४ सितम्बर **२००७ ई.** को हैदराबाद का चरांतर लाना है। तो दैनिक रवि क्राति सारिणी से इस दिन के रवि क्रांति **७.४०** है और हैदराबाद के आक्षांश १७/१८ है। रविक्रान्ति ७ के तुल्य है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रांत्यंश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश का है। क्रांत्यंश ७ तथा अक्षांश १७/१८ में देखो तो अनुपात से दोनों लाइनों के सम्पात में ७ मिनट प्राप्त हुए। अब यहाँ क्रान्ति उत्तर + धन होने से चरान्तर मिनट धन हुए।

चरान्तर सारणी

उत्तराक्षांश : चरान्तर मिनट

यह मिनट क्रान्ति दक्षिण हो तो ऋण और क्रान्ति उत्तर हो तो धन (क्रान्त्यंश १–२९) | क्रान्ति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण (क्रान्त्यंश ३०–४०)

अक्षांश \ क्रान्त्यंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
२	४	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
३	६	६	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	३	३	४
४	८	८	८	८	७	७	७	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५
५	११	१०	१०	१०	९	९	९	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४	४	५	५	६
६	१३	१२	१२	११	११	११	१०	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५	५	६	६	७
७	१५	१४	१४	१३	१३	१२	१२	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	६	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१		३	३	४	४	६	६	७	७	८
८	१७	१७	१६	१५	१५	१४	१४	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६	७	८	९	९
९	१९	१९	१८	१७	१७	१६	१५	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	५	७	८	९	१०	११
१०	२१	२१	२०	१९	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	१	०	१	२	२	४	४	६	६	८	८	१०	११	१२
११	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१४	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३
१२	२६	२५	२४	२३	२२	२२	२१	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	०	१	२	३	४	५	७	७	९	१०	१२	१३	१४
१३	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	५	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०	११	१३	१४	१६
१४	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११	१२	१४	१५	१७
१५	३३	३२	३०	२९	२८	२७	२६	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	७	६	५	३	२	०	१	२	४	५	७	८	१०	१२	१३	१५	१७	१८
१६	३५	३४	३३	३१	३०	२९	२८	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१३	१२	१०	१०	८	७	५	३	२	१	१	२	४	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०
१७	३७	३६	३५	३४	३२	३१	३०	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४	१५	१६	१९	२१
१८	४०	३८	३७	३६	३४	३३	३२	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१५	१३	१२	१०	८	८	६	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४	१६	१८	२०	२२
१९	४२	४१	३९	३८	३६	३५	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	२	१	१	२	४	७	९	११	१४	१५	१७	१९	२१	२४
२०	४४	४३	४२	४०	३९	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	१२	१५	१६	१८	२०	२३	२५
२१	४७	४५	४४	४२	४१	३९	३८	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७	१९	२१	२४	२७
२२	४९	४८	४६	४५	४३	४१	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	७	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८	२०	२३	२५	२८
२३	५२	५०	४९	४७	४५	४३	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	८	५	३	१	१	३	६	९	११	१४	१६	१९	२१	२४	२७	३०
२४	५५	५३	५१	४९	४७	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	९	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०	२२	२५	२८	३१
२५	५७	५५	५३	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१३	११	९	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०	२३	२६	३०	३३
२६	६०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२५	२३	२१	१९	१६	१४	१२	१०	७	४	२	१	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	३१	३५
२७	६३	६१	५९	५७	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३५	३३	३१	२९	२७	२४	२२	२०	१७	१५	१२	१०	७	५	२	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३३	३७
२८	६५	६३	६१	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४४	४२	३९	३७	३५	३२	३०	२८	२५	२३	२०	१८	१५	१३	११	७	५	२	१	४	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३१	३४	३८
२९	६८	६६	६४	६२	५९	५७	५५	५३	५०	४८	४६	४४	४१	३९	३६	३४	३१	२९	२७	२४	२१	१९	१६	१३	११	८	५	२	१	४	७	११	१४	१७	२१	२४	२८	३२	३६	४०
३०	७१	६९	६७	६४	६२	६०	५७	५५	५३	५०	४८	४५	४३	४०	३८	३५	३३	३०	२८	२५	२२	२०	१७	१४	११	८	५	२	१	४	८	११	१५	१८	२२	२६	३०	३४	३८	४२
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०

अक्षांश

यह मिनट क्रांति तुल्य धन या ऋण करें (क्रान्त्यंश १–२९) | क्रांति के विपरीत धन या ऋण करें (क्रान्त्यंश ३०–४०)

विदेशों के स्टेण्डर्ड टाईम और भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम का अन्तर ऋण धन चिह्नानुसार भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संस्कार करने पर विदेशी स्टेण्डर्ड टाईम होता है।

विदेशों के नाम	अन्तर घं.मि.
न्यूजीलैंड (क)	+ ६।०
टस्मानिया, विक्टोरिया, न्यू वेल्स ब्रोकेन हिल छोड़कर क्वीन्सलेण्ड	+ ४।३०
जापान कोरिया	+ ३।३०
दक्षिण आस्ट्रेलिया ब्रोकेनहिल प्रांत उत्तर टेरेटोरी (आस्ट्रेलिया)	+ ४।०
सायबेरिया, रेखांश ९७।३० से १११।३० पूर्व तक तथा चीन हाँगकाँग	+ २।३०
साराबान (ख)	+ २।००
भारत (इण्डिया)	०।००
यूरोपियन (रसिया)	– २।३०
युगेण्डा केनिया कालोनी	– ३।००
पूर्वी यूरोप फिनलैंड (ग) तथा यूरोप कण्ट्री पूर्वीय विभाग तथा यूरोप जोन	– ३।३०
पेलेस्टाइन, सीरिया, इजिप्ट, द. अफ्रीका मध्य यूरोप, नार्वे, स्वीडन, डेनमार्क, लिथुआनिया, जर्मनी, पोलेण्ड चेकोस्लोवाकिया, आस्ट्रीया, हंगरी, स्विटजरलैंड, युगोस्लाविया, अल्बानिया, इटली, सर्वोनिया, सिसलीमाल्टा ग्रीनवीच (घ) ब्रिटिश द्वीप	– ४।३०
पश्चिमी यूरोप (ङ)	– ५।३०
हालैण्ड	– ५।१०
आइसलैण्ड	– ६।३०
पूर्वी ब्राजील	– ८।३०
युरुगुआ	– ९।००
ब्राउंडर न्यूफाउण्डलेण्ड (च)	– ०९।१
अटलांटिका केनेडा सेण्ट्रल ब्राजील	– ०९।०
पूर्वीय केनेडा ६८ से ८९ रेखांश पूर्वीय U.S.A. स्टेट्स चील (छ) पेरु पश्चिमी ब्राजील	– १०।३०
मध्य केनेडा ८९ से १०३ रेखांश पर मध्य U.S.A. स्टेट्स ब्रिटिश होण्डर्स (ज)	– ११।३०
केनेडा (१०३ रेखांश से b.c.) हद तक स्टेट U.S.A.	– १२।३०
(पैसेफिक) ब्रिटिश कोलम्बिया, केलिफोर्निया, नेवड़ा आरगिन, वाशिंगटन	– १३।३०

टिप्पणी (क) अक्टूबर दूसरे रविवार से मार्च तीसरे रविवार तक घं. ६ मि. ३० का अन्तर रहता है।

(ख) सितम्बर ता. १४ से दिसम्बर ता. १४ तक घं. २ मि. २० का अन्तर रहता है।

(ग) जून २० से सितम्बर ता. ३० तक अन्तर घं. २ मि. ३० रहता है।

(घ) अप्रैल ता. २२ से अक्टूबर ता. ७ अन्तर घं. ४ मि. ३० रहता है।

(ङ) फ्रांस और वेल्जियम के लिए ता. १९ अप्रैल से ता. ४ अक्टूबर तक अन्तर घं. ४ मि. ३० रहता है।

(च) मई के पहले रविवार से अक्टूबर के पहले रविवार तक घं. ८ मि. १ का अन्तर रहता है।

(छ) सितम्बर ता. १ से ३१ मार्च तक घं. ९ मि. ३० का अन्तर रहता है.

(ज) अक्टूबर ता. १ से फरवरी ता. १४ तक घं. ११ मि. ० का अन्तर रहता है।

इस प्रकार उपरोक्त कोष्ठक को काम में लाते समय, समय का अन्तर अवश्य ध्यान में रखकर उपयोग करें।

वेलान्तर कोष्ठक (मिनटों में)

तारीख	जन.	फर.	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अग.	सित.	अक्टू.	नव.	दिस.
१	+ ४	+१४	+१२	+ ३	– ३	– ३	+ ३	+ ६	०	– ९	–१६	–११
२	४	१४	१२	३	३	३	४	६	०	१०	१६	११
३	४	१४	१२	२	४	२	४	६	०	१०	१६	११
४	५	१४	१२	२	४	२	४	६	– १	१०	१६	१०
५	५	१४	११	२	४	२	४	६	१	११	१६	१०
६	६	१४	११	२	४	[illegible]	४	६	१	११	१६	१०
७	६	१४	११	०	४	२	४	६	२	११	१६	९
८	७	१५	१०	१	४	१	४	६	२	१२	१६	९
९	७	१५	१०	१	४	१	४	५	२	१२	१६	८
१०	८	१५	१०	१	४	१	५	५	३	१२	१६	८
११	८	१५	१०	+१	४	१	५	५	३	१२	१६	७
१२	८	१५	१०	०	४	– १	५	५	३	१३	१६	६
१३	९	१५	९	०	४	०	५	५	४	१३	१६	६
१४	९	१४	९	०	४	०	५	४	४	१३	१६	६
१५	१०	१४	९	०	४	०	५	४	४	१४	१६	५
१६	१०	१४	८	०	४	०	६	४	५	१४	१६	५
१७	१०	१४	८	– १	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१८	११	१४	[illegible]	१	४	०	६	४	५	१४	१५	४
१९	११	१४	७	१	४	+ १	६	४	६	१४	१५	३
२०	११	१४	७	२	४	१	६	३	६	१४	१५	३
२१	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१४	१४	२
२२	१२	१४	६	२	४	१	६	३	६	१५	१४	२
२३	१२	१४	६	२	४	१	६	३	७	१५	१४	१
२४	१२	१४	५	२	४	२	६	३	७	१५	१४	–१
२५	१२	१३	५	२	४	२	६	२	७	१६	१४	०
२६	१३	१३	५	२	३	२	६	२	८	१६	१३	+१
२७	१३	१३	४	३	३	२	६	२	८	१६	१३	१
२८	१३	१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
२९	१३	+१२	४	३	३	२	६	२	८	१६	१२	२
३०	१४		४	– ३	३	+ ३	६	१	– ९	१६	१२	३
३१	+१४		+ ४		– ३		+ ६	+ १		–१६	–१२	+३

स्टेण्डर्ड स्थानिक मध्यमकाल और स्पष्ट काल- स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाईम से स्थानीय (लोकल) मध्यम टाइम और स्थानिक स्पष्ट टाईम बनाने की विधि यह है कि अक्षांशादि सारिणी में प्रत्येक नगर के स्टेण्डर्डान्तर मिनट लिखे हैं, वे मिनट ऋण हों तो स्टेण्डर्ड टाईम में घटा देने से और धन हों तो जोड़ देने से स्थानिक मध्यम काल (लोकल मीन टाईम) होगा। इस स्थानीय मध्यम टाईम में वेलांतर कोष्ठक से उस तारीख का वेलांतर लेकर ऋण हों तो जोड़ने और धन हो तो घटाने से स्थानिक स्पष्टकाल (लोकल टाईम) का मान होगा।

समय-भेद विवरण- आजकल प्रायः सर्वसाधारण ज्योतिषियों को 'समय भेद' का ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान को लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से एक अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले इस भेद को भलीभांति समझकर तदनन्तर जन्मपत्र आदि बनावें और एक बात का स्मरण रखना चाहिए कि जिस मान का जन्म टाईम हो उसी मान का जहाँ का जन्म हुआ हो वहां का सूर्योदय लेकर ही इष्ट शोधन करना चाहिए। अथवा जहाँ का जन्म [illegible]

मान का जन्म टाइम बनाकर इष्ट शोधन करना चाहिए। कई ज्योतिषी जन्म टाइम स्टैण्डर्ड लेकर दिनार्ध से या दिनमास से इष्ट बना लिया करते है, यह भी सर्वथा अनुचित बात है। दिनमान से इष्ट करना हो तो जन्म टाइम भी स्थानिक दिनमान का टाइम (स्पष्ट टाइम) करना पड़ता है, तदनन्तर इष्ट बनाना आवश्यक है। सरकार ने अपने रेलवे आदि व्यवहारों की सुविधा के लिए एक स्थान के मध्यम टाइम को सर्वत्र मान लिया है, जिससे हिन्दुस्तान में चाहे जिस स्थान में सर्वत्र वही टाइम प्रचार में है और सर्वत्र एक ही समय रहा करता है। सन् १९०६ के पूर्व, भारतवर्ष में मद्रास के टाइम को स्टेण्डर्ड टाइम माना गया था, तदनन्तर ग्रीन्विच नगर से पूर्व की ओर ५॥ घंटे रेखांश ८२।३० पर भारत में जहां जो स्थान है वहां का स्टैण्डर्ड टाइम माना गया है, यह स्थान बनारस से कुछ पूर्व आता है, उस स्थान से कुछ प्रसिद्ध नगरों के स्थानिक मध्यम टाइम और स्टेण्डर्ड टाइम का अन्तर दिया है, उसको स्टेण्डर्डान्तर लिखा है। नगरों से आगे जो स्टेण्डर्डान्तर मिनट है उसके ऋण का धन चिन्ह है, जिसमें ऋण के चिन्ह हो वह नगर स्टैण्डर्ड स्थान के पश्चिम में समझे और धन चिन्ह हो तो पूर्व की ओर है ऐसा समझें।

"वर्षफल"- प्राचीन सौर वर्षमान ३६५।१५।३१।३० है। इसी वर्षमान के अनुसार सब वर्ष बनाये जाते हैं परन्तु आधुनिक विज्ञानवेताओं ने सूक्ष्म यन्त्रों के वेधद्वारा शुद्ध वर्षमान ३६५।१५।२२।५७ निर्धारित किया है। अर्थात् नवीन वर्षमान से प्राचीन वर्षमान ८ पल अधिक है। इस प्रकार ८ वर्ष (७ गताब्द) में ही नवीन वर्षमान और प्राचीन वर्षमान से बनाये वर्ष के इष्ट में एक घटी का अन्तर पड़ जाता है और आगे अधिक गताब्द में अधिक अन्तर पड़ने से प्रायः लग्न भी बदल जाता है। पूना, बम्बई, मद्रास आदि के ज्योतिर्विज्ञान वेत्ताओं का मत है कि वर्ष का फलादेश इसी नवीन मान से बनाये गये वर्ष का ही ठीक मिलता है और कई स्थलों पर हमने भी देखा है कि इसी नवीन मान से फल घटित होता है। यहां विद्वानों के लिए हम नवीन और प्राचीन मान की दोनों वर्ष प्रवेश सारिणियां दे रहे है-

वर्षयोगिनीमते मुद्दादशा

म.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	स.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

वेधसिद्ध नवीनवर्षनामानुसारेण वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२२
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीन मान से वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

मुद्दादशा विधिः जन्म-नक्षत्र की संख्या में गत वर्ष जोड़ के २ घटा दें, ९ से भाग करने पर जो शेष बचे वह सूर्य से लेकर मुद्दा दशा होती है। योगिनी के लिए जन्म नक्षत्र संख्या में गताब्द जोड़कर ३ और जोड़ें, ८ से शेष करें तो मंगलादि योगिनी दशा होती है।

मुद्दादशाक्रम

श.	ग्रह	मा.	दि.
१	सूर्य	०	१८
२	चन्द्र	१	०
३	मं.	०	२१
४	राहु	१	२४
५	बृह.	१	१८
६	शनि	१	२७
७	बुध	१	२१
८	केतु	०	२१
९	शुक्र	२	०.

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी पलभा ६।३२ वर्षादौ केतकी अयनांशा २३

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	२ ४४	२ ५१	२ ५८	३ ५	३ १३	३ २०	३ २७	३ ३४	३ ४२	३ ५०	३ ५९	४ ७	४ १५	४ २३	४ ३२	४ ४०	४ ४८	४ ५६	५ ५	५ १३	५ २१	५ २९	५ ३७	५ ४६	५ ५४	६ २	६ १०	६ १९	६ २७	[illegible]
वृषभ १	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १६	७ २५	७ ३३	७ ४१	७ ५१	८ १	८ ११	८ २१	८ ३१	८ ४१	८ ५१	९ १	९ ११	९ २१	९ ३१	९ ४१	९ ५१	१० १	१० ११	१० २१	१० ३१	१० ४१	१० ५१	११ १	११ ११	[illegible]
मिथुन २	११ ३१	११ ४१	११ ५१	१२ १	१२ ११	१२ २१	१२ ३१	१२ ४१	१२ ५२	१३ ४	१३ १५	१३ २७	१३ ३८	१३ ५०	१४ १	१४ १३	१४ २४	१४ ३६	१४ ४७	१४ ५९	१५ १०	१५ २२	१५ ३३	१५ ४४	१५ ५६	१६ ७	१६ १९	१६ ३०	१६ ४२	[illegible]
कर्क ३	१७ ५	१७ १६	१७ २८	१७ ३९	१७ ५१	१८ २	१८ १४	१८ २५	१८ ३७	१८ ४८	१९ ०	१९ १२	१९ २३	१९ ३५	१९ ४७	१९ ५९	२० १०	२० २२	२० ३४	२० ४५	२० ५७	२१ ९	२१ २०	२१ ३२	२१ ४४	२१ ५६	२२ ७	२२ १९	२२ ३१	[illegible]
सिंह ४	२२ ५४	२३ ६	२३ १७	२३ २९	[illegible] ४१	२३ ५३	२४ ४	२४ १६	२४ २७	२४ ३९	२४ ५०	२५ २	२५ १३	२५ २५	२५ ३६	२५ ४८	२५ ५९	२६ ११	२६ २२	२६ ३४	२६ ४५	२६ ५७	२७ ८	२७ १९	२७ ३१	२७ ४२	२७ ५४	२८ ५	२८ १७	[illegible]
कन्या ५	२८ ४०	२८ ५१	२९ ३	२९ १४	२९ २६	२९ [illegible]	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४६	३० ५७	३१ ९	३१ २०	३१ ३२	३१ ४३	३१ ५४	३२ ६	३२ १८	३२ २९	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १५	३३ २६	३३ ३८	३३ ४९	३४ १	[illegible]
तुला ६	३४ २४	३४ ३५	३४ ४७	३४ ५८	३५ १०	३५ २१	३५ ३३	३५ ४४	३५ ५६	३६ ७	३६ १९	३६ ३१	३६ ४२	३६ [illegible]	३७ ६	३७ १८	३७ २९	३७ ४१	३७ ५३	३८ ४	३८ १६	३८ २८	३८ ३९	३८ ५१	३९ ३	३९ १५	३९ २६	३९ ३८	३९ ५०	[illegible]
वृश्चिक ७	४० १३	४० २५	४० ३६	४० ४८	४१ ०	४१ १२	४१ २३	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५८	४२ ९	४२ २१	४२ ३२	४२ ४४	४२ ५५	४३ ७	[illegible] १८	[illegible] ३०	[illegible] ४१	[illegible] ५३	४४ ४	४४ १६	४४ २७	४४ ३८	४४ ५०	४५ १	४५ १३	४५ २५	४५ ३६	[illegible]
धनु ८	४५ ५९	४६ १०	४६ २२	४६ ३३	४६ ४५	४६ ५६	४७ ८	४७ १९	४७ २९	४७ ३९	४७ ४९	४७ ५९	४८ ९	४८ १९	४८ २९	४८ ३९	४८ ४९	४८ ५९	४९ ९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	४९ ५९	५० ९	५० १९	५० २९	५० ३९	५० ४९	[illegible]
मकर ९	५१ ९	५१ १९	५१ २९	५१ ३९	५१ ४९	५१ ५९	५२ ९	५२ १९	५२ २७	५२ ३५	५२ ४४	५२ ५२	५३ ०	५३ ८	५३ १७	५३ २५	५३ ३३	५३ ४१	५३ ५०	५३ ५८	५४ ६	५४ १४	५४ २२	५४ ३०	५४ ३९	५४ ४७	५४ ५५	५५ ४	५५ १२	[illegible]
कुम्भ १०	५५ २८	५५ ३७	५५ ४५	५५ ५३	५६ १	५६ १०	५६ १८	५६ २६	५६ ३३	५६ ४०	५६ ४७	५६ ५५	५७ २	५७ ९	५७ १६	५७ २३	५७ ३०	५७ ३७	५७ ४४	५७ ५२	५७ ५९	५८ ६	५८ १३	५८ २०	५८ २७	५८ ३४	५८ ४२	५८ ४९	५८ ५६	[illegible]
मीन ११	५९ १०	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २९	० ३६	० ४३	० ५०	० ५७	१ ४	१ ११	१ १८	१ २६	१ ३३	१ ४०	१ ४७	१ ५४	२ १	२ ८	२ १६	२ २३	२ ३०	[illegible]

दशमलग्न सारणीयम् (सर्वत्रोपयोगी)

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष ०	३ ३४	३ ४३	३ ५२	४ २	४ ११	४ २०	४ २९	४ ३८	४ ४८	४ ५८	५ ८	५ १८	५ २८	५ ३८	५ ४८	५ ५८	६ ८	६ १८	६ २८	६ ३८	६ ४८	६ ५८	७ ७	७ १७	७ २७	७ ३७	७ ४७	७ ५७	८ ७	[illegible]
वृषभ १	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५९	१० ९	१० २०	१० ३१	१० ४२	१० ५२	११ ३	११ १४	११ २५	११ ३५	११ ४६	११ ५७	१२ ८	१२ १८	१२ २९	१२ ४०	१२ ५१	१३ २	१३ १२	१३ २३	[illegible]
मिथुन २	१३ ४५	१३ ५५	१४ ६	१४ १७	१४ २८	१४ ३८	१४ ४९	१५ ०	१५ ११	१५ २२	१५ ३२	१५ ४३	१५ ५४	१६ ५	१६ १५	१६ २६	१६ ३७	१६ ४८	१६ ५८	१७ ९	१७ १९	१७ ३०	१७ ४१	१७ ५२	१८ ३	१८ १४	१८ २५	१८ ३५	१८ ४६	[illegible]
कर्क ३	१९ ८	१९ १८	१९ २९	१९ ४०	१९ ५१	२० १	२० १२	२० २३	२० ३३	२० ४३	२० ५३	२१ ३	२१ १३	२१ २३	२१ ३३	२१ ४३	२१ ५३	२२ ३	२२ १३	२२ २३	२२ ३३	२२ ४३	२२ ५२	२३ २	२३ १२	२३ २२	२३ ३२	२३ ४२	२३ ५२	[illegible]
सिंह ४	२४ १२	२४ २२	२४ ३२	२४ ४२	२४ ५२	२५ २	२५ १२	२५ २२	२५ ३१	२५ ४१	२५ ५०	२५ ५९	२६ ८	२६ १८	२६ २७	२६ ३६	२६ ४५	२६ ५५	२७ ४	२७ १३	२७ २२	२७ ३२	२७ ४१	२७ ५०	२७ ५९	२८ ९	२८ १८	२८ २७	२८ ३७	[illegible]
कन्या ५	२८ ५५	२९ ४	२९ १४	२९ २३	२९ ३२	२९ ४१	२९ ५१	३० ०	३० ९	३० १९	३० २८	३० ३७	३० ४६	३० ५६	३१ ५	३१ १४	३१ २३	३१ ३३	३१ ४२	३१ ५१	३२ ०	३२ १०	३२ १९	३२ २८	३२ ३८	३२ ४७	३२ ५६	३३ ५	३३ १५	[illegible]
तुला ६	३३ ३३	३३ ४२	३३ ५२	३४ १	३४ १०	३४ १९	३४ २९	३४ ३८	३४ ४८	३४ ५८	३५ ८	३५ १८	३५ २८	३५ ३८	३५ ४८	३५ ५८	३६ ८	३६ १८	३६ २८	३६ ३८	३६ ४८	३६ ५८	३७ ७	३७ १७	३७ २७	३७ ३७	३७ ४७	३७ ५७	३८ ७	[illegible]
वृश्चिक ७	३८ २७	३८ ३७	३८ ४७	३८ ५७	३९ ७	३९ १७	३९ २७	३९ ३७	३९ ४७	३९ ५८	४० ९	४० २०	४० ३१	४० ४२	४० ५२	४१ ३	४१ १४	४१ २५	४१ ३५	४१ ४६	४१ ५७	४२ ८	४२ १८	४२ २९	४२ ४०	४२ ५१	४३ २	४३ १२	४३ २३	[illegible]
धनुः ८	४३ ४५	४३ ५५	४४ ६	४४ १७	४४ २८	४४ ३८	४४ ४९	४५ ०	४५ ११	४५ २२	४५ ३२	४५ ४३	४५ ५४	४६ ५	४६ १५	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४६ ५८	४७ ९	४७ २०	४७ ३१	४७ ४१	४७ ५२	४८ ३	४८ १४	४८ २५	४८ ३५	४८ ४६	[illegible]
मकर ९	४९ ८	४९ १८	४९ २९	४९ ४०	४९ ५१	५० १	५० १२	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १३	५२ २३	५२ ३३	५२ ४३	५२ ५३	५३ २	५३ १२	५३ २२	५३ ३२	५३ ४२	५३ ५२	[illegible]
कुम्भ १०	५४ १२	५४ २२	५४ ३२	५४ ४२	५४ ५२	५५ २	५५ १२	५५ २२	५५ ३१	५५ ४१	५५ ५०	५५ ५९	५६ ८	५६ १८	५६ २७	५६ ३६	५६ ४५	५६ ५५	५७ ४	५७ १३	५७ २२	५७ ३२	५७ ४१	५७ ५०	५८ ०	५८ ९	५८ १८	५८ २७	५८ ३७	[illegible]
मीन ११	५८ ५५	५९ ४	५९ १४	५९ २३	५९ ३२	५९ ४१	५९ ५१	० ०	० ९	० १९	० २८	० ३७	० ४६	० ५६	१ ५	१ १४	१ २३	१ ३३	१ ४२	१ ५१	२ ०	२ १०	२ १९	२ २८	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १५	३ २४

इष्ट सांपातिक काल से जन्म लग्न ज्ञात करने की सरल विधि

श्री चन्द्रभान भाटिया, एम.एस.सी.

पिछले कुछ वर्षों से आपके प्रिय ''श्रीविश्वविजय पंचांग'' में प्रतिदिन का सांपातिक काल (Sidereal Time) दिया जा रहा है। **अब सांपातिक काल की गणना रेखांश ०°०'(ग्रीनविचि) पर स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time) के ०.०० बजे मध्य रात्रि के आधार मान पर की गयी है।** इससे विश्व के किसी भी स्थान के लिए इष्ट सांपातिक काल की गणना की जा सकती है। इष्ट सांपातिक काल तथा जन्म स्थान की लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न सुगमता से शुद्ध तथा सूक्ष्म रूप से ज्ञात किया जा सकता है।

इस वर्ष लेख में पूर्ण संशोधन कर सांपातिक काल की गणना एवं लग्न ज्ञात करने की प्रक्रिया को कई उदाहरण देकर समझाया गया है। आशा है इससे पाठक लाभान्वित होंगे। -

सम्पादक

इष्ट सांपातिक काल की गणना

— जन्म समय अधिकतर **भारतीय मानक समय (Indian Standard Time)** के अनुसार ज्ञात होता है।

— सर्वप्रथम इसे **स्थानीय मध्यम समय** (Local Mean Time) में परिवर्तित किया जाता है।

— तत्पश्चात् इष्ट दिन का सांपातिक काल पंचांग मे दी गयी दैनिक स्पष्ट ग्रह सारणी से ज्ञात किया जाता है।

— यदि इष्ट दिन विगत अथवा आगामी वर्षों में से हो, तो इसे पंचांग में दिये गए कोष्ठक (अ) (संशोधित), (ब) तथा (स) की सहायता से ज्ञात किया जाता है।

— इस सांपातिक काल की गणना रेखांश ०°०' (ग्रीनविचि) पर स्थानीय मध्यम समय **(L.M.T.)** के ००—०० बजे मध्य रात्रि के अनुसार की गयी है।

— सांपातिक काल की गणना करने के लिए जन्म स्थान के रेखांश के लिए संस्कार किया जाता है। प्रति १° रेखांश के अन्तर के लिए ०.६५७१ सैकन्ड (स्थूलतः२/३सै.) है।

— यदि जन्म स्थान के रेखांश पूर्वी हों संस्कार धनात्मक और यदि रेखांश पश्चिमी हो तो संस्कार ऋणात्मक होगा। इस संस्कार को कोष्ठक (य) में दर्शाया गया है।

— जन्म स्थान संस्कार के संस्कारित इस सांपातिक काल में जन्म समय के स्थानीय (L.M.T.) को जोड़ा जाता है।

— इस योग में प्रति घण्टा १० सै. स्थूल रूप से, अथवा सूक्ष्म रूप से ९.५८६ सै. प्रति घण्टा जोड़ा जाता है। इस संस्कार को कोष्ठक (द) में दर्शाया गया है।

— यदि यह योग २४ घण्टों से अधिक हो तो योग में से २४ घण्टे घटा दिये जाते हैं।

— समय को सर्वदा रेलवे समयानुसार लिखना चाहिए अर्थात दोपहर १ बजकर ४५ मि. को १३ बजकर ४५ मि. रात्रि ११ बजकर २० मिनट को २३ बजकर २० मिनट, मध्य रात्रि के पश्चात २ बजकर १५ मि. को ०२ बजकर १५ मिनट आदि।

— दिनांक का आरम्भ मध्य रात्रि के पश्चात ००—००. बजे से ही मानना चाहिए।

इस प्रकार विश्व के किसी भी स्थान पर इष्ट समय के सांपातिक काल की गणना सरलता से की जा सकती है।

स्थानीय मध्यम समय (Local Mean Time)

हर देश का अपना **मानक समय (Standard Time)** होता है। भारत में पूर्वी रेखांश ८२°३०' के स्थानीय समय (L.M.T.) को ही पूर्ण देश का **मानक समय** (Standard Time) माना गया है। इसी समयानुसार सब सरकारी व गैर सरकारी कार्य होते हैं।

जन्म समय भी अधिकतर इसी मानक समयानुसार ज्ञात होता है। इष्ट सांपातिक काल ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम भा. प्र.स. (I.S.T.) को स्था. म.स. (L.M.T.) में परिवर्तित करते हैं।

— जिस स्थान का स्था. म. स. (L.M.T.) ज्ञात करना हो. उस स्थान के रेखांश यदि पूर्वी रेखांश ८२°३०' से कम हो तो संस्कार ऋणात्मक होगा और यदि स्थान के रेखांश पूर्वी रेखांश ८२°३०' से अधिक हो तो संस्कार धनात्मक होगा।

— स्थानीय रेखांश व पूर्वी रेखांश ८२°३०' के अन्तर को ४ से गुणा करने पर जितना आये, वह मिनट व सैकन्ड में इस संस्कार का मान होगा।

— यह संस्कार **''स्टैण्डर्ड अन्तर''** के नाम से जाना जाता है। इसे प्रत्येक स्थान के लिए पंचांग में दी गयी **''अक्षांशादि सारणी''** में दिया गया है।

उदाहरण: दिल्ली का स्टैण्डर्ड अन्तर कितना है?
दिल्ली के रेखांश पृ. ७७°१२' हैं। अतः (८२°३०')—(७७°१२')=५°१८'। इसे ४ से गुणा करने पर:५°१८'x४=२१ मि. १२ सै.। ये रेखांश पू. रेखांश ८२°३०' से कम होने के कारण ऋणात्मक है।

उदाहरण: दिल्ली में १७ बजकर ३० मि. भा. मा. स. (I.S.T.) का मान स्था. म.स. (L.M.T.) में कितना होगा?
दिल्ली का स्टै. अन्तर = २१ मि. १२सै.।

	घं.	मि.	सैं.	
	१७	३०	००	भा.मा.स.
—		२१	१२	स्टै. अन्तर
	१७	०८	४८	स्था.म.स.

उदाहरण: १० अक्टूबर १९९३ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सां. का. (Sidereal Time) ज्ञात करना।

	घं.	मि.	सैं.	
	१७	५०	०	भा. मा. स.
—		२१	१२	स्टै. अन्तर
	१७	२८	४८	स्था. म.स.

घं. मि. सैं

१ १४ २७ १० अक्टूबर १९९३ का ग्रह स्पष्ट सारणी से लिया ग्रीनविच का सां.का.
– ० ० ५१ दिल्ली के लिए संस्कार, कोष्ठक (य) से
+ १ १३ ३६ दिल्ली का ००-०० बजे स्था.म.स. (L.M.T) का सां.का.
+ १७ २८ ४८ दिल्ली का १७-५० बजे भा.मा.स. (I.S.T) पर स्था.मा.स.(L.M.T)
२ ४८ १७ घंटा का संस्कार कोष्ठक (द) से
+ ५ २९ मि. का संस्कार कोष्ठक (द) से
१८ ४५ १७ इष्ट समय का सां का.

उदाहरण: ४/५ जुलाई १९९३ की रात्रि को कलकत्ते में ०३-१५ बजे भा.मा.स. (I.S.T.) का सां.का. ज्ञात करना।
कलकत्ते के पूर्वी रेखांश ८८°२३' के लिए स्टै. अन्तर +२३ मि. ३२ सैं.

घं. मि. सैं.

०३ १५ ०० भा. मा. स. (I.S.T.)
+ २३ ३२ स्टै. अन्तर
०३ ३८ ३२ कलकत्ता का स्था. मा. स. (L.M.T.)
१८ ५२ ०० ५ जुलाई १९९३ का ग्रह स्पष्ट सारणी से लिया ग्रीनविच का सा. का.
– ५८ पूर्वी रेखांश ८८°२३' के लिए संस्कार, कोष्ठक (य) से:
१८ ५१ ०२ कलकत्ता के लिए ००-०० बजे स्था. म. स. का सां. का.
+ ०३ ३८ ३२ इष्ट समय का स्था. मा. स. (L.M.T)
३० ३ घं. का कोष्ठक (द) से संस्कार
+ ०६ ३८ मि. का कोष्ठक (द) से संस्कार
२२ ३० १० इष्ट समय का सां. का.

अन्य वर्षों के लिए गणना

उदाहरण: बम्बई पू. रेखांश ७२°५०', स्टै अन्तर -३८ मि. ४० सैं. के लिए ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सं. का ज्ञात करना।

घं. मि. सैं.

२३ ५० ०० बम्बई में भा. मा. स.
– ३८ ४० बम्बई के लिए स्टै. अन्तर
२३ ११ २० बम्बई के लिए स्था. मा. स.

पंचांग में दिये गए कोष्ठक (अ), (ब) तथा (स) से ४ फरवरी १९५० के लिए सा. का.

६ ४० १८ कोष्ठक (अ) से १९५० का सां. का.
+ २ २ १३ कोष्ठक (ब) से साधारण वर्ष के लिए फरवरी माह का सां. का.
+ ० ११ ५० कोष्ठक (स) से दिनांक ४ के लिए सां का

८ ५४ २१ रेखांश ०°० का ००-०० बजे स्था.मा.स. पर ४ फरवरी १९५० का सां.का.
– ४८ बम्बई रेखांश ७२°५०' के लिए कोष्ठक (य) से संस्कार
८ ५३ ३३ बम्बई का ००-०० बजे स्था. म. स. पर ४ फरवरी १९५० का सां.का.
+ २३ ११ २० इष्ट समय का स्था. म. स. (L.M.T.)
३ ४७ २३ घं. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+ ०२ ११ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
३२ ८ ४२ योग २४ घं. से अधिक होने पर २४ घं.घटाये
– २४ ०० ००
८ ८ ४२ इष्ट समय का सां. का.

विदेश स्थित स्थान के लिए गणना

उदाहरण: ५ मई १९७६ को लन्दन पश्चिमी रेखांश ०°५' पर १३-३० बजे G.M.T. का सां. का. ज्ञात करना।
लन्दन पश्चिमी रेखांश ०°-५' का स्टैं. अन्तर :-० मि. २० सैं. होगा।

घं. मि. सैं.

१३ ३० ०० (G.M.T.) में समय
– ०० ०० २० स्टैं अन्तर
१३ २९ ४० स्था. म. स. (L.M.T.)
०६ ३९ ०९ कोष्ठक (अ) से १९७६ का सां. का.
+ ०७ ५७ ०३ कोष्ठक (ब) से मई माह का प्लुत वर्ष के लिए
+ ०० १५ ४६ सा. का दिनांक ५ का कोष्ठक (स) से सां. का.
१४ ५१ ५८ रेखांश ०°० पर ५ मई १९७६ को ००-०० बजे स्था. म.स. पर सां. का.
०० ०० ०० पश्चिमी रेखांश ०५' के लिए कोष्ठक (य) से संस्कार
१४ ५१ ५८ लन्दन का ५ मई १९७२ का ००-०० बजे स्था.म.स. से सा.का.
+ १३ २९ ४० इष्ट समय का स्था. स. स.
+ ०० ०२ ०८ १३ घं. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
+ ० ० ०५ २९ मि. के लिए कोष्ठक (द) से संस्कार
२८ २३ ५१
२४ ०० ०० २४ घं. घटाने पर
४ २३ ५१ इष्ट समय का सां. का.

सांपातिक काल व लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न ज्ञात करना

इस वर्ष आपके प्रिय "श्रीविश्वविजय पंचांग" में दिल्ली अक्षांश २८°३८' की लग्न सारणी एवं सर्वोपयोगी दशम सारणी के अतिरिक्त बम्बई अक्षांश १८°५८' के लिए अक्षांश १९° की, कलकत्ता

जा रही है। ये लग्न सारणियां इनके अतिरिक्त भारत के कई स्थानो के लिए भी उपयोगी होंगी।

सभी लग्न सारणियां २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणियां हैं।

यदि जिस समय की गणना हो उस समय यदि अयनांश २३°४५' अयनांश से अधिक हो तो जितना अधिक हो, वह सारणी से ज्ञात लग्न में से घटाना होगा और यदि यह अयनांश २३°४५' अयनांश से कम हो तो जितना कम हो वह सारणी से ज्ञात लग्न में जोड़ना होगा। इस संस्कार को कोष्ठक (र) में दर्शाया गया है।

इन सारणियों के अतिरिक्त अक्षांश ०° से ६०° तक की सायन अर्थात ०° अयनांशीय लग्न सारणियां (कोष्ठक २ क व २ ख) भी दी जा रही है।

उदाहरण: १० अक्टूबर १९९३ को दिल्ली में १७-५० बजे भा. मा. स. के लिए जन्म लग्न ज्ञात करना।

इससे पूर्व उदाहरण में दिल्ली में १० अक्टूबर १९९३ को १७-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का सां. का. १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. ज्ञात कर चुके हैं।

दिल्ली की लग्न सारणी से :

घं.	मि.	सैं.		रा.	अं.	क.
१८	४८	००	सां. का के लिए लग्न	११	२३	१५
१८	४४	००	सां. का. के लिए लग्न --	११	२१	५१
				००	०१	२४

अतः ४ मि. अथवा २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर

अतः २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर ८४' हुआ।

अब इष्ट सां. का. १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. सां. का. १८-४४-० से कितना अधिक है?

१८	४५	३७
− १८	४४	००
००	०१	३७

अर्थात १ मि. ३७ सैं. अथवा ९७ सैं. अधिक है।

२४० सैं. के सां. का. में अन्तर के लिए -- लग्न में ८४' का अन्तर

तो ९७ सैं. के सा. का में अन्तर — $\frac{८४X९७}{२४०}$

= ३३'५७'' का अन्तर होगा।

अतः १८ घं. ४५ मि. ३७ सैं. के सां.का. के लिए लग्नः

रा.	अं.	क.	वि.
११	२१	५१	००
+		३३	५७
११	२२	२४	५७ होगा

यह लग्न सारणी २३°४५' अयनांशीय है।

इस उदाहरण में १० अक्टूबर १९९३ का अयनांश २३°४६'३०'' लग्न सारणी २३°४५' अयनांशीय है।

अन्तर = २३°४६'३०''−२३°४५' = १'३०''

इष्ट दिन का अयनांश अधिक होने के कारण जन्म लग्न में संस्कारः

रा.	अं.	का.	वि.
११	२२	२४	५७
−		१	३० अयनांश संस्कार
११	२२	२३	२७ स्पष्ट व शुद्ध लग्न

उदाहरण: बम्बई पृ. रेखांश ७२°५०, उत्तरी अक्षांश १८°५८' के लिए ४ फरवरी १९५० को २३-५० बजे भा. मा. स. (I.S.T.) का जन्म लग्न ज्ञात करना।

इसके पूर्व के उदाहरण से इष्ट दिन व समय का सां. का. ८ घं. ८ मि. ४२ सैं. ज्ञात कर चुके हैं।

पंचांग में दी गयी बम्बई की लग्न सारणी से:

घं.	मि.	सैं.	रा.	अं.	क.
८	१२	०	६	६	२०
८	८	०	६	५	२४
०	४	०	०	०	५६

अतः ४ मि. अथवा २४० सैं. के लिए लग्न में अन्तर - ५६'

अतः ४२ सैं. के लिए लग्न में अन्तर $\frac{५६X४२}{२४०}$

=९'४८''

अतः जन्म लग्न

रा.	अं.	क.	वि.
६	५	२४	००
+		९	४८
६	५	३३	४८

४ फरवरी १९५० का अयनांश २३°९'३६'' है।

२३°	४५'	००''
-२३	०९	३६
०	३५	२४

यह २३°४५' से ३५'२४'' कम है। अतः स्पष्ट व शुद्ध लग्न

६	५	३३	४८
+		३५	२४
६	६.	०९	१२ होगी

इसी प्रकार दशम लग्न सारणी से दशम भाव स्पष्ट ज्ञात किया जा सकता है।

आगामी वर्ष आपके प्रिय ''श्रीविश्वविजय पंचांग'' में अन्य प्रसिद्ध नगरो की निरयन लग्न सारणियां दी जायेगी।

इस प्रकार इष्ट सांपातिक काल ज्ञात कर विश्व के किसी भी स्थान के लिए शुद्ध निरयन लग्न सुगमतापूर्वक ज्ञात की जा सकती है।

४, तिलक नगर, मथुरा (उ. प्र.) २८१००१

संशोधित कोष्ठक (अ)

प्रत्येक वर्ष की १ जनवरी को मध्यरात्रि ००-०० बजे स्था.म.स.(L.M.T.) के अनुसार रेखांश ००' पर सांपातिक काल कोष्ठक

ई. सन्	सांपातिक काल			ई. सन्	सांपातिक काल			ई. सन्	सांपातिक काल		
	घं.	मि.	सैं.		घं.	मि.	सैं.		घं.	मि.	सैं.
१९२६	६	३९	३३	१९५४	६	४०	२६	१९८२	६	४१	१६
१९२७	६	३८	३५	१९५५	६	३९	२९	१९८३	६	४०	१९
१९२८	६	३७	३८	१९५६	६	३८	३२	१९८४	६	३९	२२
१९२९	६	४०	३८	१९५७	६	४१	३१	१९८५	६	४२	२१
१९३०	६	३९	४१	१९५८	६	४०	३४	१९८६	६	४१	२४
१९३१	६	३८	४४	१९५९	६	३९	३६	१९८७	६	४०	२७
१९३२	६	३७	४७	१९६०	६	३८	३८	१९८८	६	३९	३०
१९३३	६	४०	४६	१९६१	६	४१	३७	१९८९	६	४२	३०
१९३४	६	३९	४९	१९६२	६	४०	४०	१९९०	६	४१	३३
१९३५	६	३८	५२	१९६३	६	३९	४२	१९९१	६	४०	३६
१९३६	६	३७	५५	१९६४	६	३८	४५	१९९२	६	३९	३८
१९३७	६	४०	५४	१९६५	६	४१	४४	१९९३	६	४२	३८
१९३८	६	३९	५७	१९६६	६	४०	४७	१९९४	६	४१	४०
१९३९	६	३८	५९	१९६७	६	३९	५०	१९९५	६	४०	४३
१९४०	६	३८	०२	१९६८	६	३८	५३	१९९६	६	३९	४५
१९४१	६	४१	०१	१९६९	६	४१	५२	१९९७	६	४२	४४
१९४२	६	४०	०३	१९७०	६	४०	५५	१९९८	६	४१	४७
१९४३	६	३९	०५	१९७१	६	३९	५८	१९९९	६	४०	४९
१९४४	६	३८	०८	१९७२	६	३९	०१	२०००	६	३९	५१
१९४५	६	४१	०७	१९७३	६	४२	०१	२००१	६	४२	५०
१९४६	६	४०	१०	१९७४	६	४१	०४	२००२	६	४१	५३
१९४७	६	३९	१२	१९७५	६	४०	०६	२००३	६	४०	५६
१९४८	६	३८	१५	१९७६	६	३९	०९	२००४	६	३९	५९
१९४९	६	४१	१५	१९७७	६	४२	०८	२००५	६	४२	५८
१९५०	६	४०	१८	१९७८	६	४१	१०	२००६	६	४२	०१
१९५१	६	३९	२१	१९७९	६	४०	१२	२००७	६	४१	०४
१९५२	६	३८	२४	१९८०	६	३९	१५	२००८	६	४०	०६
१९५३	६	४१	२४	१९८१	६	४२	१४	२००९	६	[illegible]	०५

संशोधित कोष्ठक (य) सांपातिक के स्थानीय संस्कार हेतु

रेखांश	संस्कार सै.	पू. रेखांश	संस्कार सै.	पू. रेखांश	संस्कार सै.
१°३१'	– १	३९°३४'	– २६	७७°३७'	– ५१
३°०३'	– २	४१°०५'	– २७	७९°०८'	– ५२
४°३४'	– ३	४२°३७'	– २८	८०°३९'	– ५३
६°०५'	– ४	४४°०८'	– २९	८२°११'	– ५४
७°३७'	– ५	४५°३९'	– ३०	८३°४२'	– ५५
९°०८'	– ६	४७°११'	– ३१	८५°१३'	– ५६
१०°३९'	– ७	४८°४२'	– ३२	८६°४५'	– ५७
१२°१०'	– ८	५०°१३'	– ३३	८८°१६'	– ५८
१३°४२'	– ९	५१°४५'	– ३४	८९°४७'	– ५९
१५°१३'	– १०	५३°१६'	– ३५	९१°१९'	– ६०
१६°४४'	– ११	५४°४७'	– ३६	९२°५०'	– ६१
१८°१६'	– १२	५६°१८'	– ३७	९४°२१'	– ६२
१९°४७'	– १३	५७°५०'	– ३८	९५°५३'	– ६३
२१°१८'	– १४	५९°२१'	– ३९	९७°२४'	– ६४
२२°५०'	– १५	६०°५२'	– ४०	९८°५५'	– ६५
२४°२१'	– १६	६२°२४'	– ४१	१००°२६'	– ६६
२५°५२'	– १७	६३°५५'	– ४२	१०१°५८'	– ६७
२७°२४'	– १८	६५°२६'	– ४३	१०३°२९'	– ६८
२८°५५'	– १९	६६°५८'	– ४४	१०५°००'	– ६९
३०°२६'	– २०	६८°२९'	– ४५	१०६°३२'	– ७०
३१°५८'	– २१	७०°००'	– ४६	१०८°०३'	– ७१
३३°२९'	– २२	७१°३२'	– ४७	१०९°३४'	– ७२
३५°००'	– २३	७३°०३'	– ४८	१११°०६'	– ७३
३६°३१'	– २४	७४°३४'	– ४९	११२°३७'	– ७४
३८°०३'	– २५	७६°०६'	– ५०	११४°०८'	– ७५

विशेष : पश्चिम रेखांश के लिए संस्कार धनात्मक होगा।

कोष्ठक (र) अयनांश संस्कार हेतु

सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार	सन्	अयनांश संस्कार
१९०१	+१°१६'	१९२६	+०°५५'	१९५१	+ ०°३४'	१९७६	+ ०°१३'
१९०२	१°१५'	१९२७	०°५४'	१९५२	०°३३'	१९७७	०°१२'
१९०३	१°१४'	१९२८	०°५३'	१९५३	०°३२'	१९७८	०°१२'
१९०४	१°१४'	१९२९	०°५३'	१९५४	०°३२'	१९७९	०°११'
१९०५	१°१३'	१९३०	०°५२'	१९५५	०°३१'	१९८०	०°१०'
१९०६	+१°१२'	१९३१	+०°५१'	१९५६	+ ०°३०'	१९८१	+ ०°९'
१९०७	१°११'	१९३२	०°५०'	१९५७	०°२९'	१९८२	०°८'
१९०८	१°१०'	१९३३	०°४९'	१९५८	०°२८'	१९८३	०°७'
१९०९	१°९'	१९३४	०°४८'	१९५९	०°२७'	१९८४	०°६'
१९१०	१°८'	१९३५	०°४८'	१९६०	०°२७'	१९८५	०°६'
१९११	+१°८'	१९३६	+ ०°४७'	१९६१	+ ०°२६'	१९८६	+ ०°५'
१९१२	१°७'	१९३७	०°४६'	१९६२	०°२५'	१९८७	०°४'
१९१३	१°६'	१९३८	०°४५'	१९६३	०°२४'	१९८८	०°३'
१९१४	१°५'	१९३९	०°४४'	१९६४	०°२३'	१९८९	०°२'
१९१५	१°४'	१९४०	०°४३'	१९६५	०°२२'	१९९०	०°१'
१९१६	+१°३'	१९४१	+ ०°४३'	१९६६	+ ०°२२'	१९९१	+ ०°१'
१९१७	१°३'	१९४२	०°४२'	१९६७	०°२१'	१९९२	०°०'
१९१८	१°२'	१९४३	०°४१'	१९६८	०°२०'	१९९३	— ०°१'
१९१९	१°१'	१९४४	०°४०'	१९६९	०°१९'	१९९४	— ०°२'
१९२०	१°०'	१९४५	०°३९'	१९७०	०°१८'	१९९५	— ०°३'
१९२१	+ ०°५९'	१९४६	+ ०°३८'	१९७१	+ ०°१७'	१९९६	— ०°४'
१९२२	०°५८	१९४७	०°३७'	१९७२	०°१७'	१९९७	— ०°४'
१९२३	०°५८'	१९४८	०°३७'	१९७३	०°१६'	१९९८	— ०°५'
१९२४	०°५७'	१९४९	०°३६'	१९७४	०°१५'	१९९९	— ०°६'
१९२५	०°५६'	१९५०	०°३५'	१९७५	०°१४'	२०००	— ०°७'

कोष्ठक (ब)

प्रतिमास के आरम्भ में साम्पातिक काल की वृद्धि

मास	साधारण वर्ष			प्लुत वर्ष		
	घं.	मि.	सैं.	घं.	मि.	सैं.
जनवरी	०	०	०	०	०	०
फरवरी	२	२	१३	२	२	१३
मार्च	३	५२	३७	३	५६	३३
अप्रैल	५	५४	५०	५	५८	४७
मई	७	५३	७	७	५७	३
जून	९	५५	२०	९	५९	१६
जुलाई	११	५३	३६	११	५७	३३
अगस्त	१३	५५	५०	१३	५९	४६
सितम्बर	१५	५८	३	१६	२	०
अक्टूबर	१७	५६	२०	१८	०	१६
नवम्बर	१९	५८	३३	२०	२	२९
दिसम्बर	२१	५६	५०	२२	०	४६

प्रत्येक तारीख को साम्पातिक काल की वृद्धि

कोष्ठक (स)

ता.	साम्पा. काल			ता.	साम्पा. काल		
	घं.	मि.	सैं.		घं.	मि.	सैं.
१	०	०	०	१६	०	५९	०८
२	०	३	५७	१७	१	३	५
३	०	७	५३	१८	१	७	१
४	०	११	५०	१९	१	१०	५७
५	०	१५	४६	२०	१	१४	५५
६	०	१९	४३	२१	१	१८	५१
७	०	२३	३९	२२	१	२२	४८
८	०	२७	३६	२३	१	२६	४४
९	०	३१	३२	२४	१	३०	४१
१०	०	३५	२९	२५	१	३४	३७
११	०	३९	२६	२६	१	३८	३४
१२	०	४३	२२	२७	१	४२	३०
१३	०	४७	१९	२८	१	४६	२७
१४	०	५१	१५	२९	१	५०	२४
१५	०	५५	१२	३०	१	५४	२०
				३१	१	५८	१७

कोष्ठक (द)

प्रति घंटे (मिनट या सैकेन्ड) के लिए साम्पातिक काल का संस्कार

घं. मि. सैं.	मि. सैं. प्रसे.	सैं. प्रसे. –	प्रसे. – —	घं. मि. सैं.	मि. सैं. प्रसे.	सैं. प्रसे. –	प्रसे. – —
१	०	९	५१	३१	५	५	३३
२	०	१९	४२	३२	५	१५	२४
३	०	२९	३४	३३	५	२५	१६
४	०	३९	२५	३४	५	३५	७
५	०	४९	१६	३५	५	४४	५९
६	०	५९	८	३६	५	५४	५०
७	१	९	०	३७	६	४	४१
८	१	१८	२१	३८	६	१४	३७
९	१	२८	४२	३९	६	२४	२४
१०	१	३८	३४	४०	६	३४	१५
११	१	४८	२५	४१	६	४४	७
१२	१	५८	१७	४२	६	५३	५८
१३	२	८	८	४३	७	३	५०
१४	२	१८	०	४४	७	१३	४१
१५	२	२७	५१	४५	७	२३	३२
१६	२	३७	४२	४६	७	३३	२४
१७	२	४७	३३	४७	७	४३	१५
१८	२	५७	२५	४८	७	५३	३
१९	३	७	१६	४९	८	२	५८
२०	३	१७	८	५०	८	१२	४९
२१	३	२६	५९	५१	८	२२	४१
२२	३	३६	५०	५२	८	३२	३२
२३	३	४६	४२	५३	८	४२	२३
२४	३	५६	३३	५४	८	५२	१५
२५	४	६	२५	५५	९	२	६
२६	४	१६	१६	५६	९	११	५८
२७	४	२६	७	५७	९	२१	४९
२८	४	३५	५९	५८	९	३१	४०
२९	४	४५	५०	५९	९	४१	३२
३०	४	५५	४२	६०	९	५१	२३

अयनांश सारिणी (त)

ई.सन्.	अ.	क.	वि.	ई.सन्.	अ.	क.	वि.
१९५०	२३	९	३१	१९८६	२३	३९	४०
१९५१	२३	१०	२१	१९८७	२३	४०	३०
१९५२	२३	११	११	१९८८	२३	४१	२०
१९५३	२३	१२	०२	१९८९	२३	४२	११
१९५४	२३	१२	५२	१९९०	२३	४३	०२
१९५५	२३	१३	४२	१९९१	२३	४३	५२
१९५६	२३	१४	३२	१९९२	२३	४४	४२
१९५७	२३	१५	२३	१९९३	२३	४५	५०
१९५८	२३	१६	१३	१९९४	२३	४६	२३
१९५९	२३	१७	०३	१९९५	२३	४७	१४
१९६०	२३	१७	५३	१९९६	२३	४८	०४
१९६१	२३	१८	४४	१९९७	२३	४८	५१
१९६२	२३	१९	३४	१९९८	२३	४९	४४
१९६३	२३	२०	२४	१९९९	२३	५०	३४
१९६४	२३	२१	१४	२०००	२३	५१	२४
१९६५	२३	२२	०२	२००१	२३	५२	१४
१९६६	२३	२२	५५	२००२	२३	५३	०४
१९६७	२३	२३	४५	२००३	२३	५३	५४
१९६८	२३	२४	३५	२००४	२३	५४	४४
१९६९	२३	२५	२६	२००५	२३	५५	३५
१९७०	२३	२६	१६	२००६	२३	५६	२५
१९७१	२३	२७	०५	२००७	२३	५७	१५
१९७२	२३	२७	५६	२००८	२३	५८	०६
१९७३	२३	२८	४७	२००९	२३	५८	५६
१९७४	२३	२९	३७	२०१०			
१९७५	२३	३०	२७	२०११			
१९७६	२३	३१	१७	२०१२			
१९७७	२३	३२	०८				
१९७८	२३	३२	५८				
१९७९	२३	३३	४८				
१९८०	२३	३४	३८				
१९८१	२३	३५	२९				
१९८२	२३	३६	१९				
१९८३	२३	३७	०९				
१९८४	२३	३७	५९				
१९८५	२३	३८	५०				

अयनांश सारिणी (थ)
तारीख से अयनगति ज्ञान

मास	ता.	अयनगति विकला	मास	ता.	अयनगति विकला
जनवरी	१	०	जुलाई	२	२५
	८	१		९	२६
	१५	२		१७	२७
	२३	३		२४	२८
	३०	४		३१	२९
फरवरी	६	५	अगस्त	७	३०
	१४	६		१५	३१
	२१	७		२२	३२
	२८	८		२९	३३
मार्च	७	९	सितम्बर	६	३४
	१५	१०		१३	३५
	२२	११		२०	३६
	२९	१२		२७	३७
अप्रैल	६	१३	अक्टूबर	५	३८
	१३	१४		१२	३९
	२०	१५		१९	४०
	२७	१६		२७	४१
मई	५	१७	नवम्बर	३	४२
	१२	१८		१०	४३
	१९	१९		१७	४४
	२७	२०		२५	४५
जून	३	२१	दिसम्बर	२	४६
	१०	२२		९	४७
	१७	२३		१७	४८
	२५	२४		२४	४९
				३१	५०

विदेश और द्वीपान्तरों के अक्षांशादि

नगर देश नाम	अक्षांश अं. क.	ग्रीन्विच से रेखांश अं. क.	दिल्ली से देशान्तर घं. मि.
अदन (एडन अरब)	उ. १३।२५	पू. ४५।००	- २।०९
अर्जेन्टाइना (द. अमे.)	द. २६।१२	पू. ६४।४५	— ९।२८
आस्ट्रेलिया दक्षि.	द. ३२।००	पू. १४६।१७	+ ४।३६
काबुल (अफगानिस्तान)	उ. ३४।३०	पू. ६९।१७	— ०।३२
कांडी (सीलोन लंका)	उ. ०७।११	पू. ८०।३२	+ ०।१३
कांगो (प. अफ्रीका)	द. ०६।००	पू. १५।५०	— ४।०६
काहिरा (मिश्र)	उ. ३०।०२	पू. ३१।१५	— ३।०४
क्वेटा (बिलोचिस्तान)	उ. ३०।१३	पू. ६७।०१	— ०।४१
ग्रीन्विच (यूरोप)	उ. ५१।२०	००।००	— ५।०९
जेनेवा (स्विट्जर. पू.)	उ. ४६।१३	पू. ०६।०७	— ४।४५
जेरूशलम (इजरा.)	उ. ३१।४६	पू. ३५।१४	— २।४८
ट्रांसवाल (द. अफ्रीका)	द. २५।००	पू. २९।००	— ३।१३
ट्रिपोली (उ. अफ्रीका)	उ. ३२।४५	पू. १३।१५	— ४।१६
टोकियो (जापान)	उ. ३५।४२	पू. १३९।४५	+ ४।१०
तेहरान (ईरान)	उ. ३५।४१	पू. ५१।२५	— १।४३
न्यूयार्क (अमेरिका)	उ. ४०।४३	पू. ७४।००	—१०।०५
नाईरोबी (पू. अफ्रीका)	द. ०१।२०	पू. ३६।४९	— २।४२
पेरिस (फ्रांस)	उ. ४८।५०	पू. ०२।२०	— ५।००
पेचिंग (चीन)	उ. ३९।५५	पू. ११६।२४	+ २।३७
बर्लिन (जर्मनी)	उ. ५२।३२	पू. १३।२५	— ४।१५
बल्गारिया (यूरोप)	उ. ४३।१८	पू. २६।१७	— ३।२४
बगदाद (ईराक)	उ. ३३।१८	पू. ४४।२७	— २।११
मका (अरब)	उ. २१।२५	पू. ४०।१२	— २।२८
मास्को (रूस)	उ. ५५।४५	पू. ३७।३७	— २।३९
माण्डले (ब्रह्मा)	उ. २२।००	पू. ९६।०८	+ १।१६
रोम (इटली)	उ. ४१।५५	पू. १२।२८	— ४।१९
लंदन (इंग्लैण्ड)	उ. ५१।३०	पू. ००।०५	— ५।०९
ल्हासा (तिब्बत)	उ. २९।४०	पू. ९१।०५	+ ०।५५
वाशिंगटन (अमेरिका)	उ. ३८।५५	पू. ७७।०४	— १०।१६
सिंगापुर (मलाया)	उ. ०१।१६	पू. १०३।४५	+ १।४६
[illegible] (चीन)	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विश्व के स्टैण्डर्ड टाईम और समय क्षेत्रों का विवरण

विभिन्न देशों के और क्षेत्रों के स्थानीय स्टेण्डर्ड टाईम (U.T.) या ग्रीनविच टाईम (G.M.T.) से आगे का समय (+), पीछे का समय (-)	क्षेत्रीय स्टै. टाईम घं.	याम्योत्तर वृत्त या मेरिडियन	भा.स्टै.टा. से क्षेत्रीय स्टै. टा. का अन्तर (घं.)
अल्जीरिया, एशेन्सन द्वीप, आइसलैण्ड, उत्तरी आयरलैण्ड[A], आइवरी कोस्ट, मौरीटानिया, मोरक्को[A], रियोडि ओरो[B], सेनेगल, सिएरालियोने, टनजिअर, इंग्लैण्ड (यू.के.), गैम्बिया, घाना, आइवरी कोस्ट, जी.एम.टी. या यू.टी.	०	०	-५.५०
अल्बानिया[A], अंगोला, आस्ट्रिया, बेल्जियम, केमरून, सेन्ट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक, कांगो गणराज्य, चेकोस्लोवाकिया, दहोमी, डेनमार्क, जर्मनी, फ्रांस[B], क्रोशिया[B], जिब्राल्टर[B], हंगरी, आइरिश रिपब्लिक, इटली[A], माल्टा, मोनाको[B], नीदरलैण्ड (हालैण्ड, नाइजर, नाईजीरिया, नार्वे[A], पोलैण्ड[A], पुर्तगाल, सारडिनीया, स्पेन[B], स्वीडन, स्विटजरलैण्ड, ट्यूनिशिया[A], यूगोस्लाविया, लक्जमबर्ग[B], केमरून	+ १	१५° पूर्व	- ४.५
बेक्युआनालैण्ड, बल्गारिया, साइप्रस, मिश्र[A], ग्रीस, क्रीट, जोर्डन, मलावी, मोजाम्बिक, रोडेशिया, दक्षिण अफ्रीका गणराज्य, सीरिया[A], टर्की[A], जाम्बिया, लेबनान, लीबिया, जेयरे, सूडान[A],	+ २	३०° पूर्व	- ३.५
अदन, अस्टोनिया, इथोपिया, इराक, केन्या, कुवैत, लाटविया[A], लिथुआनिया, मालागासी गणराज्य, सऊदी अरब का जद्दा क्षेत्र, सोमालिया, तंजानिया, जन्जीबार, रूस का [मास्को क्षेत्र, ४०° पूर्व रेखांश से पश्चिम का क्षेत्र, यूक्रेन,]	+ ३	४५° पूर्व	- २.५
ईरान, ज़िम्बाबवे,	+ ३.५	५२.५° पूर्व	- २
बहरीन द्वीप, मारीशस, ओमान, मस्कट, सलाला, कतर, सऊदी अरब का दहरान क्षेत्र, रूस का [४०°पूर्व रेखांश से ५२.५°पूर्व रेखांश तक का क्षेत्र (काला सागर से कश्यप सागर तक)]	+ ४	६०° पूर्व	- १.५
अफगानिस्तान	+ ४.५	६७.५° पूर्व	- १
चागोस द्वीप समूह, मालदीप द्वीप समूह, पाकिस्तान, रूस का [५२.५° पूर्व रेखांश से ६७.५°पूर्व रेखांश तक का क्षेत्र (सेवरडलोवाक्स और पश्चिमी कजाक)]	+ ५	७५° पूर्व	- ०.५
भूटान, भारत, श्री लंका,	+ ५.५	८२.५° पूर्व	०
रूस का [पूर्व रेखांश ६७.५° से ८२.५° तक का क्षेत्र (ओमस्क, पूर्वी कजाक)], बांग्लादेश	+ ६	९०° पूर्व	+ ०.५
कोकोस-कीलींग द्वीप समूह, म्यामार (बर्मा)	+ ६.५	९७.५	+ १
रूस का [पूर्वी रेखांश ८२.५° से ९७.५° तक का क्षेत्र (क्रासनोयार्स्क, न्यू साइबेरिया)], इंडोनेशिया के [सुमात्रा, जावा, बाली, बंङ्का, बिलियेन, लोमबोक द्वीप], लाओस, थाइलैण्ड (श्याम), कम्बोडिया, वियतनाम,	+ ७	१०५° पूर्व	+ १.५
मलेशिया का, [फेडरेशन ऑफ मलाया क्षेत्र], सिंगापुर,	+ ७.५	११२.५° पूर्व	+ २

	क्षेत्रीय स्टै.टा.घं.	याम्योत्तर वृत्त या मेरिडियन	भा.स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. का अन्तर (घं.)
पश्चिमी आस्ट्रेलिया, चीन, ताइवान, इंडोनेशिया के [बोर्निओ, सेलेबेस, तिमोर, फ्लोरेस, सुम्बावा द्वीप] मलेशिया के [सारावाक और साबाह क्षेत्र], फिलीपीन, रूस का [पूर्व रेखांश ९७.५° से ११२.५° के मध्य का क्षेत्र इरकुत्सक]	+ ८	१२०° पूर्व	+ २.५
इंडोनेशिया के [अरु, केयी, तनिम्बार, मोलुकास, पं. इरियान, द्वीप], जापान, कोरिया, मंचुरिया (चीन), रूस का [पूर्व रेखांश ११२.५° से १२७.५° के मध्य का क्षेत्र, यकुत्सक, चिटीन्स्क]	+ ९	१३५° पूर्व	+ ३.५
आस्ट्रेलिया महाद्वीप में [दक्षिणी आस्ट्रेलिया, नार्दन टेरिटरी, ब्रोकन हिल एरिया]	+ ९.५	१४२.५° पूर्व	+ ४
आस्ट्रेलिया महाद्वीप में [केपीटल टेरिटरी (केनबेरा), विक्टोरिया, न्यू साउथ वेल्स, क्वीन्स लैण्ड, तस्मानिया], केरोलिन द्वीप समूह का [पूर्वी रेखांश १६०° से पश्चिम का क्षेत्र], इरियान (ब्रिटिश न्यू ग्यानिआ), मेरिआना (लाड्रोन) द्वीप, पापुआ द्वीप, रूस का [पूर्व रेखांश १२७.५° से १४२.५° तक का क्षेत्र, खाबरोवास्क, व्लाडीवोस्टोक],	+ १०	१५०° पूर्व	+ ४.५
केरोलिनद्वीप समूह के (ट्रूक, पोनापे द्वीप), न्यू कालेडोनिया, न्यू हेब्राइडस, साखालिन, सोलोमन द्वीप समूह, रूस का [पूर्व रेखांश १४२.५° से १५७.५° तक का क्षेत्र, मगादान], कुरील द्वीप समूह	+ ११	१६५° पूर्व	+५.५
नोरफोक आइलैण्ड,	+ ११.५	१७२.५° पूर्व	+ ६
कैरोलिन द्वीप समूह का [पूर्वी रेखांश १६०° से पूर्व का क्षेत्र], फीजि (एलिस, गिलबर्ट द्विपों सहित), मार्शल आइलैण्डस्, न्यूजीलैण्ड, रूस का [पूर्व रेखांश १५७.५° से १७२.५° तक का क्षेत्र पेट्रोपाव्लोव्स्क)	+ १२	१८०° पूर्व	+ ६.५
टोंगा (फ्रेन्डली आइलैन्ड)	+ १३	१९५° पूर्व	+ ७.५
ग्रीनविच से पश्चिम के समय क्षेत्र			
लाईबेरिया	− ०.७५	११.२५° पश्चिम	− ६.२५
एजोर्स, मदैरा^A, पुर्तगीज़ गाइना,	− १	१५° पश्चिम	− ६.५
केपवर्ड आइलैण्ड, ग्रीनलैण्ड-स्कोर्सबाई साउण्ड,	− २	३०° पश्चिम	− ७.५
अर्जेन्टाइना, ब्राजील का [पूर्वी तटीय क्षेत्र], ग्रीनलैण्ड का [अंगमागसालिक, वेस्टकोस्ट, प. तट] उरुग्वे^A,	− ३	४५° पश्चिम	− ८.५
कनाडा का [न्यू फाउण्डलैण्ड, क्यूबेक, पश्चिमी रेखांश ६३° से पूर्व का क्षेत्र], डच सूरिनाम,	− ३.५	५२.५° पश्चिम	− ९
ब्रिटिश गियाना,	− ३.७५	५६.२५° पश्चिम	− ९.२५
बोलिविया, ब्राजील का (पश्चिमी भाग), चिली, फाकलैण्ड आइलैण्ड (पोर्ट स्टेनले सहित), ग्रीनलैण्ड का (थूले क्षेत्र), फ्रेन्च सूरिनाम, प्राग्वे, प्युर्टोरिको, वेनेजुएला, वेस्ट इंडिज का [बारबाडोस, ग्युडेलोप, लीवार्ड आइल, मार्टिनीक, टोबागो, त्रिनिदाद, विन्डवार्ड आइल], क्यूराको, बरमूडा, बोलिविया, कनाडा^A का [उ.-प. क्षेत्र, पश्चिमी रेखांश ६८° से पूर्व का भाग, न्यू ब्रुन्सविक, नोवा स्कोटिया, प्रिन्स एडवर्ड आइलैण्ड], अटलांटिक टाइम A.T.	− ४	६०° पश्चिम	− ९.५

त्रिनदाद, विन्डवार्ड आइल], क्यूराको, बरमूडा, बोलीविया, कनाडा[A] का [उ.-प. क्षेत्र, पश्चिमी रेखांश ६८° से पूर्व का

	क्षेत्रीय स्टै.टा.घं.	याम्योत्तर वृत्त या मेरिडियन	भा.स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. का अन्तर (घं.)
ब्राजील का एक्रे क्षेत्र, कनाडा[A] का [क्यूबेक, (पश्चिमी रेखांश ६३° से पश्चिम का क्षेत्र), ओन्टारियो, (पश्चिमी रेखांश ९०° से पूर्व का क्षेत्र), ओटावा, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र ६८° प. से ८५° प. तक - **इस्टर्न टाईम E.T.**], हैति, पनामा, पेरू, संयुक्त राज्य अमेरिका[A] का [कानेक्टीकट, डेलवारे, फ्लोरिडा, जार्जिया, मैने, मेरीलैण्ड, मेसाचुसेटस, मिशिगन, न्यूहेम्पशायर, न्यू जर्सी, न्यूयॉर्क, नार्थ केरोलिना, ओहियो, पेन्सिलवानिया, रोडस् आइलैण्ड, साउथ केरोलिना, वरमाउण्ट, विर्जीनिया, वाशिंगटन डी. सी, वेस्ट विर्जीनिया- **इस्टर्न टाईम E.T.**], डोमिनिकन रिपब्लिक[C], बहामास, जमैका, कोलम्बिया, क्यूबा[A], एक्वेडोर	- ५	७५° पश्चिम	- १०.५
ब्रिटिश होन्डुरास[C], ग्वोटेमाला, होन्डुरास, निकारागुआ, कनाडा का [ओन्टारियो, रेखांश ९०° (प.) से पश्चिम का क्षेत्र, मनिटोबा, एन. डब्लू. टेरिटरिज, (प. रेखांश ८५° से १०२°), इस्ट सस्क्टेचेवान], मेक्सिको का मेक्सिको सिटी, संयुक्त राज्य अमेरिका का [अलाबामा, अरकन्सास, इलियोनिस, इण्डियाना, आयोवा, कन्सास, केन्टुकी, ल्युसिन्य, मिनिसोटा, मिसिसिपी, मिसुरी, नेब्रास्का, नोर्थ डकोटा, ओकलहोमा, साउथ डकोटा, टेनेसी, टेक्सास, विस्कोन्सिन] - **सेन्ट्रल - टाईम (सी.टी.)**	- ६	९०° पश्चिम	- ११.५
कनाडा[A] का [वेस्ट सस्क्ट्चेवान, एन. डब्ल्यू टेरिटरीज़ (पश्चिमी रेखांश १०२° से १२०° तक) अल्ब्रेटा] मेक्सिको का [सोनोरा, सिनालोआ, नयरिट, साउदर्न डिस्ट्रिक्ट आफ लोअर केलिफोर्निया] संयुक्त राज्य अमेरिका का [अरिजोना, कोलोराडो, इडाहो, मोन्टाना, न्यू मेक्सिको, साउथ डकोटा (पश्चिमी भाग), ऊटा, वायोमिंग] - **माउन्टेन टाईम (एम.टी)**	- ७	१०५° पश्चिम	- १२.५
कनाडा[A] का [कोलम्बिया, एन. डब्ल्यू टेरिटरीज़ (पश्चिमी रेखांश १२०° से पश्चिम का क्षेत्र)], मेक्सिको का [नार्दन डिस्ट्रिक्ट आफ लोअर केलिफोर्निया], संयुक्त राज्य अमेरिका का [कैलिफोर्निया, नेवाडा, ओरेगान, वाशिंगटन स्टेट], अलास्का का केंट्चीकन से स्कागवे तक का क्षेत्र - **पेसिफिक टाईम (पी.टी.)**	- ८	१२०° पश्चिम	-१३.५
अमेरिका के अलास्का का स्कागवे से प. रेखांश १४१° तक का क्षेत्र	- ९	१३५° पश्चिम	- १४.५
मार्क्यूसस आइलैण्ड	- ९.५	१४२.५° पश्चिम	- १५
अलास्का का [पश्चिमी रेखांश १४१° से १६१° तक का क्षेत्र], आस्ट्रल आइलैण्ड,	- १०	१५०° पश्चिम	- १५.५
कुक आइलैण्डस्	- १०.५	१५७.५° पश्चिम	- १६
अलास्का का [१६१° प. रेखांश से अन्तिमी सूदूरवर्ती पश्चिमी भाग], एल्यूशिन आइलैण्ड, मिडवे आइलैण्ड,	- ११	१६५° पश्चिम	- १६.५

A - इस चिन्ह के क्षेत्रों व देशों में ग्रीष्मकाल में घड़ियों का समय, तत्सम्बन्धित स्टैंडर्ड टाईम से भिन्न होता है। इन क्षेत्रों में ग्रीष्मकाली समय में घड़ियां एक घंटा आगे कर दी जाती हैं।

B - इस चिन्ह के क्षेत्रों में पूरे वर्ष दर्शाया गया समय प्रयुक्त होता है परन्तु यह वहां के (वैधानिक समय) से भिन्न हो सकता है।

C - इस चिन्ह के क्षेत्रों व देशों में शीतकालीन समय का प्रयोग होता है।

टिप्पणी :- उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप में निम्न स्टेण्डर्ड टाईम प्रयुक्त होते हैं। ए.एस.टी., इ.एस.टी., सी.एस.टी., एम.एस.टी. और पी.एस.टी और यह (युनिवर्सल टाईम) या (ग्रीनविच मीन टाईम) से क्रमशः ४.५.६.७ और ८ घंटा पीछे होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में जब ग्रीष्म काल प्रचालित किया जाता है तो इन समयों को क्रमशः (ए.डी.टी., इ.डी.टी., सी.डी.टी., एम.डी.टी. और पी.डी.टी.) के नाम से जाना जाता है और यह (युनिवर्सल टाईम) या (ग्रीनविच मीन टाईम) से क्रमशः ३, ४, ५, ६ और ७ घंटा पीछे होते हैं।

दिल्ली अक्षांश २८°३८' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरण: सांपातिक काल

मि. \ घं.	०			२			४			६			८			१०			१२			१४			१६			१८			२०			२२		
	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.	रा.	अ.	क.
०	२	१८	३१	३	१४	१४	४	९	५७	५	६	१५	६	२	३३	६	२८	१६	७	२३	५९	८	२१	४९	९	२५	२०	११	६	१५	०	१७	१०	१	२०	४१
४		१९	२३		१५	५		१०	५०		७	८		३	२५	६	२९	७		२४	५२		२२	५०		२६	३६		७	४१		१८	२५		२१	४०
८		२०	१६		१५	५६		११	४२		८	०		४	१७	६	२९	५८		२५	४५		२३	५०		२७	५२		९	६		१९	३९		२२	४०
१२		२१	८		१६	४७		१२	३४		८	५३		५	९	७	०	४९		२६	३८		२४	५१		२९	८		१०	३२		२०	५२		२३	३९
१६		२२	०		१७	३८		१३	२६		९	४७		६	१	७	१	४०		२७	३१		२५	५३	१०	०	२५		११	५८		२२	५		२४	३८
२०	२	२२	५२	३	१८	२९	४	१४	१९	५	१०	४०	६	६	५३	७	२	३१	७	२८	२४	८	२६	५५	१०	१	४२	११	१३	२३	०	२३	१८	१	२५	३६
२४		२३	४४		१९	२०		१५	११		११	३२		७	४४		३	२२		२९	१७		२७	५७		३	०		१४	४९		२४	३०		२६	३४
२८		२४	३६		२०	११		१६	३		१२	२५		८	३६		४	१३	८	०	११		२८	५९		४	१९		१६	१३		२५	४१		२७	३२
३२		२५	२८		२१	२		१६	५५		१३	१८		९	२८		५	४		१	४	९	०	२		५	३८		१७	३८		२६	५१		२८	३०
३६		२६	२०		२१	५३		१७	४८		१४	१०		१०	२०		५	५५	८	१	५८		१	६		६	५८		१९	३		२८	२	१	२९	२७
४०	२	२७	११	३	२२	४४	४	१८	४०	५	१५	३	६	११	११	७	६	४६	८	२	५५	९	२	१०	१०	८	१८	११	२०	२७	०	२९	११	२	०	२४
४४		२८	३		२३	३६		१९	३३		१५	५६		१२	३		७	३७		३	४७		३	१५		९	३९		२१	५१	१	०	२१		१	२०
४८		२८	५४		२४	२७		२०	२५		१६	४९		१२	५५		८	२९		४	४१		४	२०		११	०		२३	१५		१	३०		२	१७
५२	२	२९	४६		२५	१९		२१	१८		१७	४२		१३	४६		९	२०		५	३६		५	२५		१२	२१		२४	३८		२	३८		३	१३
५६	३	०	३७		२६	१०		२२	११		१८	३४		१४	३७		१०	११		६	३१		६	३१		१३	४३		२६	१		३	४५		४	९

मि. \ घं.	१			३			५			७			९			११			१३			१५			१७			१९			२१			२३		
०	३	१	२८	३	२७	१	४	२३	३	५	१९	२७	६	१५	२९	७	११	२	८	७	२६	९	७	३८	१०	१५	६	११	२७	२४	१	४	५२	२	५	४
४		२	१९		२७	५३		२३	५६		२०	१९		१६	२०		११	५३		८	२१		८	४५		१६	२९		२८	४७		५	५९		५	५९
८		३	१०		२८	४४		२४	४८		२१	१२		१७	११		१२	४४		९	१७		९	५२		१७	५२	०	०	९		६	५		६	५४
१२		४	१		२९	३५		२५	४१		२२	५		१८	३		१३	३६		१०	१३		११	०		१९	१४		१	३०		७	१०		७	४९
१६		४	५३	४	०	२७		२६	३४		२२	५७		१८	५४		१४	२७		११	१०		१२	९		२०	३९		२	५१		९	१५		८	४३
२०	३	५	४४	४	१	१९	४	२७	२७	५	२३	५०	६	१९	४६	७	१५	१९	८	१२	६	९	१३	१९	१०	२२	३	०	४	१२	१	१०	२०	२	९	३८
२४		६	३५		२	१०		२८	२०		२४	४२		२०	३७		१६	१०		१३	३		१४	२८		२३	२७		५	३२		११	२४		१०	३२
२८		७	२६		३	२	४	२९	१२		२५	३५		२१	२८		१७	२		१४	०		१५	३९		२४	५२		६	५२		१२	३०		११	२६
३२		८	१७		३	५४	५	०	५		२६	२७		२२	१९		१७	५४		१४	५८		१६	४९		२६	१७	०	८	११		१३	३०		१२	१९
३६		९	८		४	४६	५	०	५८		२७	१९		२३	१०		१८	४६		१५	५६		१८	०		२७	४२		९	२९		१४	३३		१३	१३
४०	३	९	५९	४	५	३७	५	१	५०	५	२८	११	६	२४	१	७	१९	३८	८	१६	५४	९	१९	१२	१०	२९	७		१०	४७	१	१५	३५	२	१४	६
४४		१०	५०		६	२९		२	४३	५	२९	४		२४	५२		२०	३०		१७	५२		२०	२५	११	०	३२		१२	५		१६	३७		१४	५९
४८		११	४१		७	२२		३	३७	५	२९	५६		२५	४३		२१	२२		१८	४१		२१	३८		१	५८		१३	२२		१७	३९		१५	४२
५२		१२	३२		८	१३		४	३०	६	०	४८		२६	३४		२२	१४		१९	५०		२२	५१		३	५४		१४	३८		१८	४०		१५	[illegible]
५६	३	१३	२३	४	९	२५	५	५	२२	६	१	४०	६	२०	२५		२३	७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कलकत्ता अक्षांश २२°३५' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरणः सांपातिक काल

(विलासपुर २२°५', द्वारका २२°१६', बड़ौदा २२°१८', राजकोट २२°१८', जामनगर २२°२७', खड़गपुर २२°३०', आनन्द २२°३४', इटारसी २२°३६', नड़ियाद २२°४९' आदि स्थानों के लिए भी इस लग्न-सारिणी का प्रयोग किया जा सकता है।

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १५ ३९	३ १२ २	४ ८ ४४	५ ६ १५	६ ३ ४६	७ ० २८	७ २६ ५१	८ २४ ५७	९ २७ ४६	११ ६ १५	० १४ ४४	१ १७ ३३
४	१६ ३३	१२ ५४	९ ३८	७ १०	४ ४०	१ २१	२७ ४५	२५ ५७	२८ ५८	७ ३५	१५ ५६	१८ ३३
८	१७ २६	१३ ४७	१० ३३	८ ५	५ ३४	२ १३	२८ ३९	२६ ५८	२९ ११	८ ५५	१७ ७	१९ ३२
१२	१८ १९	१४ ४०	११ २७	९ १	६ २८	३ ६	७ २९ ३२	२७ ५८	१० १ २३	१० १४	१८ १७	२० ३१
१६	१९ १३	१५ ३३	१२ २२	९ ५५	७ २२	३ ५८	८ ० २६	८ २८ ५९	२ ३७	११ ३४	१९ २८	२१ ३०
२०	२ २० ६	३ १६ २६	४ १३ १७	५ १० ५२	६ ८ १७	७ ४ ५१	८ १ २१	९ ० ०	१० ३ ५१	११ १२ ५३	० २० ३८	१ २२ २९
२४	२० ५९	१७ १९	१४ ११	११ ४७	९ ११	५ ४४	२ १५	१ २	५ ६	१४ १३	२१ ४८	२३ २७
२८	२१ ५२	१८ १२	१५ ६	१२ ४३	१० ४	६ ३६	३ ९	२ ५	६ २०	१५ ३२	२२ ५७	२४ २५
३२	२२ ४४	१९ ४	१६ १	१३ ३८	१० ५८	७ २९	४ ४	३ ७	७ ३५	१६ ५१	२४ ६	२५ २२
३६	२३ ३७	१९ ५७	१६ ५६	१४ ३४	११ ५२	८ २१	४ ५९	४ १०	८ ५०	१८ ११	२५ १४	२६ २०
४०	२ २४ ३०	३ २० ५०	४ १७ ५१	५ १५ २९	६ १२ ४६	७ ९ १४	८ ५ ४३	५ १४	१० १० ६	११ १९ ३०	० २६ २२	१ २७ १७
४४	२५ २३	२१ ४३	१८ ४६	१६ २४	१३ ४०	१० ६	६ ४८	६ १७	११ २२	२० ४८	२७ २९	२८ १४
४८	२६ १६	२२ ३६	१९ ४०	१७ १९	१४ ३३	१० ५९	७ ४४	७ २१	१२ ३८	२२ ७	२८ ३६	१ २९ ११
५२	२७ ९	२३ ३०	२० ३५	१८ १४	१५ २७	११ ५१	८ ३९	८ २६	१३ ५५	२३ २४	० २९ ४३	२ ० ७
५६	२८ १	२४ २३	२१ ३०	१९ १०	१६ २१	१२.४३	९ ३४	९ ३०	१५ १२	२४ ४२	१ ० ४९	१ ४

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	२ २८ ५४	३ २५ १७	४ २२ २५	५ २० १०	६ १७ १३	७ १३ ३६	८ १० ३०	९ १० ३५	१० १६ ३०	११ २६ ०	१ १ ५५	२ २ ०
४	२ २९ ४७	२६ १०	२३ २०	२१ ०	१८ ७	१४ २९	११ २६	११ ४१	१७ ४८	२७ १८	३ ०	२ ५
८	३ ० ३९	२७ ३	२४ १६	२१ ५५	१९ ०	१५ २१	१२ २३	१२ ४७	१९ ६	२८ ३४	४ ४	३ ५१
१२	१ ३१	२७ ५७	२५ ११	२२ ५०	१९ ५४	१६ १४	१३ १९	१३ ५४	२० २३	२९ ५२	५ ९	४ ४६
१६	२ २४	२८ ५०	२६ ५	२३ ४४	२० ४७	१७ ७	१४ १६	१५ १	२१ ४२	० १ ८	६ १३	५ ४२
२०	३ ३ १७	३ २९ ४४	४ २७ १	५ २४ ३९	६ २१ ४०	७ १८ ०	८ १५ १३	९ १६ ८	१० २३ ०	० २ २४	१ ७ १६	२ ६ ३७
२४	४ ९	४ ० ३८	२७ ५६	२५ ३४	२२ ३३	१८ ५३	१६ १०	१७ १६	२४ १९	३ ४०	८ २०	७ ३१
२८	५ १	१ ३२	२८ ५२	२६ २९	२३ २६	१९ ४६	१७ ८	१८ २४	२५ ३९	४ ५५	९ २३	८ २६
३२	५ ५४	२ २६	४ २९ ४७	२७ २४	२४ १८	२० ३८	१८ ५	१९ ३३	२६ ५८	६ १०	१० २५	९ २१
३६	६ ४६	३ १९	५ ० ४३	२८ १९	२५ ११	२१ ३१	१९ ३	२० ४२	२८ १७	७ २४	११ २७	१० १५
४०	३ ७ ३९	४ ४ १३	५ १ ३८	५ २९ १३	६ २६ ३	७ २२ २४	८ २० १	९ २१ ५२	१० २९ ३७	० ८ ३९	१ १२ २९	२ ११ ९
४४	८ ३२	५ ८	२ ३३	६ ० ८	२६ ५७	२३ १७	२१ ०	२३ २	११ ० ५६	९ ५३	१३ ३१	१२ ३
४८	९ २४	६ २	३ २९	१ ३	२७ ५०	२४ ११	२१ ५९	२४ १३	२ १६	११ ७	१४ ३२	१२ ५७
५२	१० १७.	६ ५६	४ २५	१ ५७	२८ ४३	२५ ४	२२ ५८	२५ २३	३ ३५	१२ १९	१५ ३२	१३ ५१
५६	३ ११ ९	४ ७ ५०	५ ५ २०	६ २ ५२	६ २९ ३६	७ २५ ५७	८ २३ ५७	२६ ३४	११ ४ ५५	० १३ ३२	१ १६ ३३	२ १४ ४५

अक्षांश १९° की २३° ४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी (बंबई अक्षांश १८°५८' के लिए) उपकरण : सांपातिक काल

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १४ ३	३ १० ४६	४ ८ १	५ ६ १५	६ ४ २९	७ १ ४४	७ २८ २७	८ २६ ३८	९ २९ ०	११ ६ १५	० १३ ३०	१ १५ ५२
४	१४ ५७	११ ४०	८ ५७	७ १२	५ २४	२ ३७	२९ २१	२७ ३८	१० ० १०	७ ३२	१४ ४०	१६ ५२
८	१५ ५१	१२ ३४	९ ५३	८ ९	६ २०	३ ३१	८० १५	२८ ३८	१ २१	८ ४९	१५ ५०	१७ ५१
१२	१६ ४५	१३ २७	१० ४९	९ ६	७ १५	४ २४	१ ९	८ २९ ३८	२ ३२	१० ६	१६ ५९	१८ ५०
१६	१७ ३९	१४ २३	११ ४५	१० ३	८ १०	५ १७	२ ४	९ ० २९	३ ४४	११ २२	१८ ८	१९ ४९
२०	२ १८ ३२	३ १५ १५	४ १२ ४१	५ १० ५९	६ ९ ६	७ ६ ११	८२ ५८	९ १ ४०	१० ४ ५६	११ १२ ३९	० १९ १७	१ २० ४७
२४	१९ २६	१६ ९	१३ ३७	११ ५६	१० १	७ ५	३ ५३	२ ४१	६ ८	१३ ५६	२० २५	२१ ४५
२८	२० १९	१७ २	१४ ३३	१२ ५३	१० ५६	७ ५७	४ ४८	३ ४३	१० ७ ३०	१५ १२	२१ ३३	२२ ४३
३२	२१ १३	१७ ५६	१५ २९	१३ ५०	११ ५१	८ ५१	५ ४३	४ ४५	८ ३३	१६ २८	२२ ४०	२३ ४१
३६	२२ ६	१८ ५०	१६ २५	१४ ४७	१२ ४६	९ ४४	६ ३८	५ ५७	९ ४६	१७ ४५	२३ ४७	२४ ३९
४०	२ २३ ०	१९ ४४	४ १७ २१	५ १५ ४३	६ १३ ४१	७ १० ३७	८ ७ ३३	९ ६ ५०	१० ११ ०	११ १९ १	० २४ ५४	१ २५ ३६
४४	२३ ५३	२० ३९	१८ १७	१६ ४०	१४ ३६	११ ३१	८ ५८	७ ५३	१२ १४	२० १७	२६ ०	२६ ३३
४८	२४ ४७	२१ ३३	१९ १४	२ ७ ३७	१५ ३०	१२ २४	९ २४	८ ५६	१३ २८	२१ ३३	२७ ६	२७ ३०
५२	२५ ४०	२२ २७	२० १०	१८ ३४	१६ २५	१३ १७	१० १९	१० ०	१४ ४२	२२ ४८	२८ १२	२८ २६
५६	२६ ३३	२३ २१	२१ ७	१९ ३०	१७ २०	१४ १०	११ १५	११ ४	१५ ५७	२४ ३	० २९ १०	१ २९ २३

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	२ २७ २६	३ २४ १६	४२२ ३	५ २० २७	६ १८ १४	७ १५ ४	८ १२ ११	९ १२ ८	१०१७ ११	११ २५ १८	१ ० २२	२ ० १९
४	२८ २०	२५ १०	२३ ०	२१ २३	१९ ९	१५ ५७	१३ ७	१३ १३	१८ २७	२६ ३३	१ २६	१ १५
८	२ २९ १३	२६ ५	२३ ५६	२२ २०	२० ३	१६ ५०	१४ ४	१४ १८	१९ ४२	२७ ४८	२ ३०	२ ११
१२	३ ० ६	२७ ०	२४ ५३	२३ १६	२० ५७	१७ ४३	१५ ०	१५ २४	२० ५७	११ २९ २	३ ३४	३ ६
१६	३ ० ५९	२७ ५४	२५ ५०	२४ १३	२१ ५१	१८ ३७	१५ ५७	१६ ३०	२२ १३	० ० १६	४ ३७	४ २
२०	३ १ ५३	३ २८ ४९	४ २६ ४७	५ २५ ९	६ २२ ४६	७ १९ ३०	८ १६ ५४	९ १७ ३६	१०२३ २९	० १ ३०	१ ५ ४०	२ ४ ५७
२४	२ ४६	२९ ४४	२७ ४३	२६ ५	२३ ४०	२० २४	१७ ५१	१८ ४३	२४ ४५	२ ४४	६ ४३	५ ५२
२८	३ ३९	४ ० ३९	२८ ४०	२७ १	२४ ३४	२१ १७	१८ ४९	१९ ५०	२६ २	३ ५७	७ ४५	६ ४७
३२	४ ३३	१ ३४	४ २९ ३७	२७ ५७	२५ २८	२२ ११	१९ ४७	२० ५७	२७ १८	५ १०	८ ४७	७ ४२
३६	५ २६	२ २९	५ ० ३४	२८ ५३	२६ २१	२३ ४	२० ४५	२२ ५	२८ ३४	६ २२	९ ४९	८ ३७
४०	३ ६ १९	४ ३ २४	५ १ ३१	५ २९ ४९	६ २७ १५	७ २३ ५८	८ २१ ४३	९ २३ १३	१०२९ ५१	० ७ ३४	१ १० ५०	२ ९ ३२
४४	७ १३	४ २०	२ २७	६ ० ४५	२८ ९	२४ ५१	२२ ४१	२४ २२	११ १ ८	८ ४६	११ ५१	१० २६
४८	८ ६	५ १५	३ २४	१ ४१	२८ ३	२५ ४५	२३ ४०	२५ ३१	२ २४	९ ५८	१२ ५२	११ २२
५२	८ ५९	६ १०	४ २१	२ ३७	६ २९ ५५	२६ ३९	२४ ३९	२६ ४०	३ ४१	११ ९	१३ ५२	१२ १५
५६	३ ९ ५३	४ ७ ६	५ ५ १८	६ ३ ३३	७ ० ५०	७ २७ ३३	८ २५ ३८	९ २७ ५०	११ ४ ५८	० १२ २०	१ १४ ५२	[illegible]

उपकरण : साम्पातिक काल

अक्षांश २५°२३' की २३°४५' अयनांशीय निरयन लग्न सारणी उपकरण : साम्पातिक काल

(वाराणसी २५°१९' हैदराबाद (सिंध) २५°२२' प्रयाग २५°२५' झांसी २५°२७' आदि स्थानों के लिए)

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	२ १६ ५७	३ १३ २	४ ९ १८	५ ६ १५	६ ३ १२	६ २९ २८	७ २५ ३३	८ २३ ३३	९ २६ ४३	११ ६ १५	० १५ ४७	१ १८ ५७
४	१७ ५०	१३ ५४	१० ११	७ ९	४ ५	७ ० २०	२६ २६	२४ ३३	२७ ५६	७ ३७	१७ ०	१९ ५७
८	१८ ४३	१४ ४६	११ ५	८ ४	४ ५८	१ १२	२७ २०	२५ ३४	९ २९ १०	९ ०	१८ १३	२० ५६
१२	१९ ३६	१५ ३८	११ ५८	८ ५८	५ ५२	२ ५	२८ १३	२६ ३५	१० ० २४	१० २२	१९ २५	२१ ५५
१६	२० २९	१६ ३०	१२ ५१	९ ५२	६ ४५	२ ५५	७ २९ ७	२७ ३६	१ ३९	११ ४५	२० ३७	२२ ५४
२०	२ २१ २१	३ १७ २२	४ १३ ४५	५ १० ४६	६ ७ ३७	७ ३ ४७	८ ० १	८ २८ ३८	१० २ ५५	११ १३ ७	० २१ ४८	१ २३ ५३
२४	२२ १४	१८ १४	१४ ३९	११ ४०	८ ३०	४ ३९	० ४४	८ २९ ४०	४ ११	१४ २८	२२ ५९	२४ ५१
२८	२३ ७	१९ ६	१५ ३३	१२ ३५	९ २३	५ ३१	१ ४९	९ ० ४२	५ २७	१५ ४५	२४ ९	२५ ४९
३२	२३ ५९	१९ ५८	१६ २६	१३ २९	१० १६	६ २३	२ ४३	१ ४५	६ ४४	१७ १२	२५ १९	२६ ४६
३६	२४ ५१	५० ५०	१७ २०	१४ २३	११ ९	७ १५	३ ३७	२ ४८	८ १	१८ ३३	२६ २८	२७ ४४
४०	२ २५ ४३	३ २१ ४३	४ १८ १३	५ १५ १७	६ १२ २	७ ८ ७	८ ४ २२	९ ३ ५२	१० ९ १९	११ १९ ५५	० २७ ३७	१ २८ ४१
४४	२६ ३६	२२ ३५	१९ ७	१६ ११	१२ ५५	८ ५८	५ २६	४ ५६	१० ३७	२१ १६	२८ ४५	१ २९ ३८
४८	२७ २८	२३ २७	२० १	१७ ५	१३ ४८	९ ५०	६ २१	६ १	११ ५५	२२ ३६	० २९ ५२	२ ० ३४
५२	२८ २०	२४ २०	२० ५५	१७ ५९	१४ ४०	१० ४२	७ १६	७ ६	१३ १४	२३ ५७	१ ० ५९	१ ३१
५६	२ २९ १३	२५ १२	२१ ४९	१८ ५३	१५ ३३	११ ३४	८ १२	८ ११	१४ ३३	२५ १७	२ ६	२ २७

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	३ ० ४	३ २६ ५	४ २२ ४३	५ १९ ४७	६ १६ २५	७ १२ २६	९ ७	९ ९ १७	१० १५ ५३	११ २६ ३७	१ ३ १३	२ ३ २३
४	० ५६	२६ ५७	२३ ३७	२० ४१	१७ १८	१३ १८	१० ३	१० २४	१७ १३	२७ ५७	४ १९	४ १८
८	१ ४८	२७ ५०	२४ ३१	२१ ३५	१८ १०	१४ १०	१० ५९	११ ३१	१८ ३३	११ २९ १६	५ २४	५ १४
१२	२ ४०	२८ ४२	२५ २५	२२ २९	१९ ३	१५ २	११ ५६	१२ ३८	१९ ५४	० ० ३५	६ २९	६ ९
१६	३ ३२	३ २९ ३५	२६ १९	२३ २३	१९ ५५	१५ ५४	१२ ५२	१३ ४५	२१ १४	१ ५३	७ ३४	७ ४
२०	३ ४ २३	४ ० २८	४ २७ १३	५ २४ १७	६ २० ४७	७ १६ ४७	१३ ४९	९ १४ ५३	१० २२ ३५	० ३ ११	१ ८ ३८	२ ७ ५८
२४	५ १५	१ २१	२८ ७	२५ १०	२१ ४०	१७ ३९	१४ ४६	१६ २	२३ ५७	४ २९	९ ४१	८ ५३
२८	६ ०७	२ १४	२९ १	२६ ४	२२ ३२	१८ ३१	१५ ४४	१७ ११	२५ १८	५ ४६	१० ४५	९ ४७
३२	६ ५९	३ ७	४ २९ ५५	२६ ५७	२३ २४	१९ २३	१६ ४१	१८ २१	२६ ४०	७ ३	११ ४८	१० ४१
३६	७ ५१	४ ०	५ ० ५०	२७ ५१	२४ १६	२० १६	१७ ३९	१९ ३१	२८ २	८ १९	१२ ५०	११ ३५
४०	३ ८ ४३	४ ४ ५३	५ १ ४४	५ २८ ४५	६ २५ ८	७ २१ ९	१८ ३७	९ २० ४२	१० २९ २४	० ९ ३५	१ १३ ५२	२ १२ २९
४४	९ ३५	५ ४५	२ ३८	५ २९ ३९	२६ ०	२२ १	१९ ३६	२१ ५३	११ ० ४६	१० ५१	१४ ५४	१३ २३
४८	१० २६	६ ३८	३ ३२	६ ० ३२	२६ ५२	२२ ५०	२० ३५	२३ ५	२ ८	१२ ६	१५ ५५	१४ १७
५२	११ १८	७ ३२	४ २६	१ २५	२७ ४४	२३ ४७	२१ ३४	२४ १७	३ ३०	१३ २०	१६ ५६	१५ १०
५६	३ १२ १०	४ ८ २५	५ ५ २१	६ २ १९	६ २८ ३५	७ २४ ४०	८ २२ ३३	९ २५ ३०	११ ४ ५३	० १४ ३४	१ १७ ५७	२ १६ ४

सर्वत्रोपयोगी २३°४५' निरयन दशम सारणी उपकरणः सांपातिक काल

मि० \ घं०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
०	११ ६ १५	० ८ २६	१ ८ २०	२ ६ १५	३ ४ १०	४ ४ ४	५ ६ १५	६ ८ २६	७ ८ २०	८ ६ १५	९ ४ १०	१० ४ ५
४	७ २०	९ २८	९ १८	७ १०	५ ७	५ ७	७ २०	९ २८	९ १८	७ १०	५ ७	५ ७
८	८ २६	१० ३१	१० १५	८ ५	६ ५	६ ९	८ २६	१० ३१	१० १२	८ ५	६ ४	६ ८
१२	९ ३१	११ २३	११ १२	८ ०	७ २	७ १२	९ ३१	११ ३३	११ १२	९ ०	७ २	७ १२
१६	१० ३७	१२ ३४	१२ ९	९ ५५	८ ०	८ १५	१० ३७	१२ ३४	१२ ९	९ ५५	८ ०	८ १५
२०	११ ११ ४२	१३ ३६	१३ ५	२ १० ५०	३ ८ ५८	४ ९ १८	५ ११ ४२	६ १३ ३६	६ १३ ५	० १० ५०	९ ८ ५८	१० ९ १८
२४	१२ ४७	१४ ३८	१४ २	११ ४५	९ ५६	१० २२	१२ ४७	१४ ३८	१४ २	११ ४५	९ ५६	१० २२
२८	१३ ५२	१५ ३९	१४ ५८	१२ ४१	१० ५४	११ २५	१३ ५२	१५ ३९	१४ ५८	१२ ४१	१० ५४	११ २५
३२	१४ ५८	१६ ४०	१५ ५५	१३ ३६	११ ५३	१२ २९	१४ ५८	१६ ४०	१५ ५५	१३ ३६	११ ५३	१२ २९
३६	१६ ३	१७ ४१	१६ ५१	१४ ३१	१२ ५२	१३ ३३	१६ ३	१७ ४१	१६ ५१	१४ ३१	१२ ५२	१३ ३३
४०	११ १७ ८	१८ ४२	१ १७ ४७	२ १५ २६	३ १३ ५०	४ १४ ३७	५ १७ ८	६ १८ ४२	७ १७ ४७	८ १५ २६	९ १३ ५०	१० १४ ३७
४४	१८ १३	१९ ४२	१८ ४३	१६ २२	१४ ४९	१५ ४१	१८ १३	१९ ४२	१८ ४३	१६ २२	१४ ४९	१५ ४१
४८	१९ १८	२० ४३	१९ ३९	१७ १७	१५ ४८	१६ ४५	१९ १८	२० ४३	१९ ३९	१७ १७	१५ ४८	१६ ४५
५२	२० २३	२१ ४३	२० ३५	१८ १३	१६ ४८	१७ ४९	२० २३	२१ ४३	२० ३५	१८ १३	१६ ४८	१७ ४९
५६	२१ २७	२२ ४३	२१ ३१	१९ ८	१७ ४७	१८ ५४	२१ २७	६ २२ ४३	३१	१९ ८	१७ ४७	१८ ५४

मि० \ घं०	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३
०	११ २२ ३२	० २३ ४३	१ २२ २६	२ २० ४	३ १८ ४७	४ १९ ५८	५ २२ ३२	६ २३ ४३	७ २२ २६	८ २० ४	९ १८ ४७	१० १९ ५८
४	२३ ३६	२४ ४३	२३ २२	२० ५९	१९ ४७	२१ ३	२३ ३६	२४ ४३	२३ २२	२० ५९	१९ ४७	२१ ३
८	२४ ४१	२५ ४२	२४ १७	२१ ५५	२० ४७	२२ ७	२४ ४१	२५ ४२	२४ १७	२१ ५५	२० ४७	२२ ७
१२	२५ ४५	२६ ४२	२५ १३	२२ ५१	२१ ४७	२३ १२	२५ ४५	२६ ४२	२५ १३	२२ ५१	२१ ४७	२३ १२
१६	२६ ४९	२७ ४१	२६ ८	२३ ४७	२२ ४८	२४ १७	२६ ४९	२७ ४१	२६ ८	२३ ४७	२२ ४८	२४ १७
२०	११ २७ ५३	० २८ ४०	२७ ४	२ २४ ४३	३ २३ ४८	४ २५ २२	५ २७ ५३	६ २८ ४०	७ २७ ४	८ २४ ४३	९ २३ ४८	१० २५ २२
२४	११ २८ ५७	० २९ ४०	२७ ५९	२५ ३९	२४ ४९	२६ २७	५ २८ ५७	६ २९ ३८	२७ ५९	२५ ३९	२४ ४९	२६ २७
२८	० ० १	१ ० ३७	२८ ५४	२६ ३५	२५ ५०	२७ ३२	६ ० १	७ ० ३७	२८ ५४	२६ ३५	२५ ५०	२७ ३२
३२	१ ५	१ ३६	१ २९ ४९	२७ ३२	२६ ५१	२८ ३८	१ ५	१ ३६	७ २९ ४९	२७ ३२	२६ ५१	२८ ३८
३६	२ ८	२ ३४	२ ० ४५	२८ २८	२७ ५२	४ २९ ४३	२ ८	२ ३४	८ ० ४५	२८ २८	२७ ५२	१० २९ ४३
४०	० ३ १२	३ ३२	२ १ ४०	२ २९ २५	३ २८ ५४	५ ० ४८	६ ३ १२	७ ३ ३२	८ १ ४०	८ २९ २५	२८ ५४	११ ० ४८
४४	४ १५	४ ३०	२ ३५	३ ० २१	३ २९ ५६	१ ५३	४ १५	४ ३०	२ ३५	९ ० २१	९ २९ ५६	१ ५३
४८	५ १८	५ २८	३ ३०	१ १८	४ ० ५७	२ ५९	५ १८	५ २८	३ ३०	१ १८	१० ० ५७	२ ५८
५२	६ २२	६ २६	४ २५	२ १५	१ ५९	४ ०४	६ २२	६ २६	४ २५	२ १५	१ ४८	[illegible]
५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक लग्न सारिणी से लग्न ज्ञान

श्रीविश्वविजय पंचांग से भारत भर में अक्षांश ८ से ३५ तक के किसी भी नगर, ग्राम का लग्न समाप्तिकाल भा. स्टे. टा. से जानने की सरल विधि (सारणी) उदाहरण सहित मेरे परम स्नेही पंचांगकार कर्मठ विद्वान् स्व० श्री पीताम्बरदत्तजी ज्योतिषाचार्य के सुपुत्र श्री विनोद विजल्वाण ज्यो. एम. एस. सी. ने परिश्रमपूर्वक भेजी। वह पाठकों के लाभार्थ यहां प्रकाशित की जा रही है।

सम्पादक

श्रीविश्वविजय पंचांग का दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन कोष्ठक

लग्न अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११.	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

इस लग्न सारणी कोष्ठक का श्रीविश्वविजय पंचांग की दैनिक लग्न सारणी में चिन्हानुसार मिनटों का संस्कार करने से तथा अक्षांशादि सारणी पृष्ठ से इष्ट स्थान का चिन्ह धन ऋण के विपरीत मिनटों का देशान्तर संस्कार करने से भारत के ८ से ३५ अक्षांश तक के दैनिक लग्नों का समाप्ति काल जाना जा सकता है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं :-

(१) १ अप्रैल १९९२ को कलकत्ता में मेष लग्न का समाप्ति काल जानना है ? श्रीविश्वविजय पंचांग पृष्ठ १११ में कलकता के अक्षांश २२/३५ व देशान्तर मिनट + ४४/४४ है। लग्न परिवर्तन कोष्ठक में २२ अक्षांश के लिए मेष के नीचे +१२ मिनट व २३ अक्षांश के नीचे +१० मिनट है। अतः अक्षांश २२/३५ के लिए अनुमान से मिनट +११ संस्कार हुआ। पंचांग में पृष्ठ ७८ पर १/४/९२ को मेष लग्न का समाप्ति काल घं० ८ मिनट २३ दिया है। इसमें +११ मिनट चिन्हानुसार युक्त करने पर ८/३४ हुआ। इसमें देशान्तर +४४/४४ मिनट (इसे ४५ मिनट मान लेना चाहिए) को धन चिन्ह के विपरीत ऋण किया तो ७ बजकर ४९ मिनट पर कलकत्ता में १/४/९२ को मेष लग्न का समाप्ति काल आया।

(२) १/८/९२ को जयपुर में सिंह लग्न समाप्ति काल जानना है ? पृष्ठ ११२ में अक्षांश २६/५५ (इसे २७/० मानना चाहिये) व देशान्तर -५ मिनट है। लग्न परिवर्तन कोष्ठक में २७ अक्षांश के सिंह लग्न का संस्कार +१ मिनट है। इसे पृष्ठ ८० के १/८/९२ के सिंह लग्न समाप्तिकाल ९/१३ में युक्त किया ९/१४ हुआ। देशान्तर -५ मिनट को चिन्ह के विपरीत धन किया ९/१९ जयपुर में सिंह लग्न का समाप्ति काल हुआ।

नोट : इस उक्त प्रकार से प्राप्त लग्नों के समाप्ति कालों में स्थिर वार्षिक सस्कार करने से तथा अयन चलन संस्कार करने से सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल आता है। यहां अयन चलन छोड़ दिया है वार्षिक संस्कार ज्ञात करने के लिए सन् को ४ से विभाजित करें जितना शेष बचे उतने मिनट लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। उदाहरण सन् १९८६ को ४ से विभाजित किया तो २ शेष बचा अतः २ मिनट युक्त करने से सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल आयेगा।

जिस ईस्वी सन् में ४ से विभाजित करने पर शून्य शेष आए उस वर्ष १ जनवरी से २८ फरवरी तक के लग्न समाप्ति कालों में ४ मिनट युक्त करें। २८ फरवरी के समय को ही २९ फरवरी का मान कर अन्य लग्न परिवर्तन संस्कार करें। उदाहरणार्थ २९ फरवरी १९८० को चण्डीगढ़ में मेष लग्न का परिवर्तन संस्कार -४ मिनट देशान्तर -१ मिनट है। अतः २८ फरवरी के समय १०/३२ को ही २९ फरवरी का मान कर ४ मिनट ऋण तथा १ मिनट धन किया तो १०/२९ घण्टादि २९ फरवरी १९८० को चण्डीगढ़ में मेष लग्न समाप्ति काल आया।

इस सारणी के निर्माण में पर्याप्त सूक्ष्मता ली गई है। तथापि सेकण्डों को छोड़ देने से समान चालन के कारण १ मिनट की स्थूलता सम्भव है। इससे भारत के प्रायः सभी नगरों का पर्याप्त सूक्ष्म लग्न समाप्ति काल जाना जा सकता है। लगभग ३०० स्थलों के देशान्तर श्रीविश्वविजय पंचांग के पृष्ठ १११ व ११२ में दिये हुए हैं। उससे इतर स्थलों का देशान्तर जानने के लिए रेखांश ७७/१७ व ईष्ट स्थल के रेखांशों का अन्तर करें। ४ मिनट के एक रेखांश (१५ कला का १ मिनट) के अनुपात से देशान्तर मिनट आ जाते हैं यदि ईष्ट स्थल के रेखांश ७७/१७ से कम हों तो देशान्तर ऋण यदि ७७/१७ से अधिक हों तो + धन चिन्ह युक्त समझें। तब चिन्ह के विपरीत देशान्तर संस्कार उदाहरणों के समान करें।

कोष्ठक २ (क) — **सायन लग्न** — **उत्तर अक्षांश**

सा. का.	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.	सा. का.	० अं. क.	५ अं. क.	१० अं. क.	१५ अं. क.	२० अं. क.	२५ अं. क.	३० अं. क.
००।००	०९०।००	०९२।००	०९४।०१	०९६।०५	०९८।१५	१००।३१	१०२।५६	१२।००	२७०।००	२६८।०१	२६५।५९	२६३।५५	२६१।४६	२५९।२९	२५७।०४
००।२०	०९४।३५	०९६।३४	०९८।३४	१००।३७	१०२।४३	१०४।५६	१०७।१६	१२।२०	२७४।३५	२७२।३६	२७०।३४	२६८।२८	२६६।१८	२६३।५७	२६१।२७
००।४०	०९९।११	१०१।०९	१०३।०७	१०५।०७	१०७।१०	१०९।१८	१११।३४	१२।४०	२७९।११	२७७।१२	२७५।१०	२७३।०४	२७०।५१	२६८।२८	२६५।५५
०१।००	१०३।४७	१०५।४४	१०७।४०	१०९।३६	१११।३६	११३।२९	११५।४९	१३।००	२८३।४९	२८१।५१	२७९।५०	२७७।४२	२७५।२९	२७३।०५	२७०।२७
०१।२०	१०८।२८	११०।२१	११२।१३	११४।०६	११६।०१	११७।५९	१२०।०३	१३।२०	२८८।२८	२८६।३२	२८४।३२	२८२।२६	२८०।१२	२७७।४६	२७५।०७
०१।४०	११३।१०	११५।००	११६।४८	११८।३७	१२०।२६	१२२।१९	१२४।१६	१३।४०	२९३।१०	२९१।१६	२८९।१९	२८७।१४	२८५।००	२८२।३५	२७९।५३
०२।००	११७।५५	११९।४१	१२१।२५	१२३।०८	१२४।५२	१२६।३९	१२८।२९	१४।००	२९७।५५	२९६।०५	२९४।१०	२९२।०८	२८९।५५	२८७।३०	२८४।४९
०२।२०	१२२।४३	१२४।२४	१२६।०३	१२७।४१	१२९।२०	१३०।५९	१३२।४२	१४।२०	३०२।४३	३००।५८	२९९।०६	२९७।०७	२९४।५८	२९२।३५	२८९।५४
०२।४०	१२७।३५	१२९।११	१३०।४५	१३२।१६	१३३।४८	१३५।२१	१३६।५६	१४।४०	३०७।३५	३०५।५५	३०४।०९	३०२।१४	३००।०९	२९७।४९	२९५।१०
०३।००	१३२।३२	१३४।०२	१३५।२८	१३६।५३	१३८।१०	१३९।४३	१४१।१०	१५।००	३१२।३२	३१०।५८	३०९।१७	३०७।२८	३०५।२८	३०३।१४	३००।३९
०३।२०	१३७।३३	१३८।५६	१४०।१५	१४१।३३	१४२।५०	१४४।०७	१४५।२५	१५।२०	३१७।३३	३१६।०६	३१४।३३	३१२।५१	३१०।५८	३०८।४९	३०६।२१
०३।४०	१४२।३९	१४३।५४	१४५।०५	१४६।१५	१४७।२३	१४८।३२	१४९।४२	१५।४०	३२२।३९	३२१।२०	३१९।५५	३१८।२१	३१६।३६	३१४।३७	३१२।१७
०४।००	१४७।४९	१४८।५५	१४९।५८	१५०।५९	१५१।५८	१५२।५८	१५३।५९	१६।००	३२७।४९	३२६।३९	३२५।२३	३२३।५९	३२२।२५	३२०।३७	३१८।२९
०४।२०	१५३।०४	१५४।००	१५४।५३	१५५।४५	१५६।३६	१५७।२६	१५८।१७	१६।२०	३३३।०३	३३२।०३	३३०।५८	३२९।४५	३२८।२३	३२६।४८	३२४।५५
०४।४०	१५८।२२	१५९।०८	१५९।५१	१६०।३३	१६१।१४	१६१।५५	१६२।३६	१६।४०	३३८।२२	३३७।३२	३३६।३९	३३५।३९	३३४।३०	३३३।११	३३१।३६
०५।००	१६३।४३	१६४।१८	१६४।५१	१६५।२३	१६५।५४	१६६।२५	१६६।५७	१७।००	३४३।४३	३४३।०५	३४२।२४	३४१।३८	३४०।४५	३३९।४३	३३८।२९
०५।२०	१६९।०७	१६९।३१	१६९।५३	१७०।१५	१७०।३६	१७०।५६	१७१।१७	१७।२०	३४९।०७	३४८।४२	३४८।१४	३४७।४२	३४७।०६	३४६।२४	३४५।३३
०५।४०	१७४।३३	१७४।४५	१७४।५६	१७५।०७	१७५।१८	१७५।२८	१७५।३९	१७।४०	३५४।३३	३५४।२०	३५[illegible]।०६	३५३।५०	३५३।३२	३५३।११	३५२।४४
०६।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८।००	०००।००	०००।००	००[illegible]।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००
०६।२०	१८५।२७	१८५।१५	१८५।०४	१८४।५३	१८४।४२	१८४।३२	१८४।२२	१८।२०	००५।२७	००५।४०	००[illegible]।५४	००६।१०	००६।२८	००६।४०	००७।१६
०६।४०	१९०।५३	१९०।२९	१९०।०७	१८९।४५	१८९।२४	१८९।०४	१८८।४३	१८।४०	०१०।५३	०११।१८	०११।४६	०१२।१८	०१२।५४	०१३।३६	०१४।२७
०७।००	१९६।१७	१९५।४२	१९५।०९	१९४।३७	१९४।०६	१९३।३५	१९३।०४	१९।००	०१६।१७	०१६।४४	०१७।३६	०१८।२२	०१९।१५	०२०।१७	०२१।३३
०७।२०	२०१।३८	२००।५२	२००।०९	१९९।१७	१९८।४६	१९८।०५	१९७।२४	१९।२०	०२१।३८	०२२।२८	०२३।२२	०२४।२२	०२५।३०	०२६।४९	०२८।२५
०७।४०	२०६।५७	२०६।००	२०५।०७	२०४।१५	२०३।२४	२०२।३४	२०१।४३	१९।४०	०२६।५७	०२७।५७	०२९।०२	०३०।१५	०३१।३७	०३३।१२	०३५।०७
०८।००	२१२।११	२११।०५	२१०।०२	२०९।०१	२०८।०२	२०७।०२	२०६।०१	२०।००	०३२।११	०३३।२१	०३४।३७	०३६।०१	०३७।३५	०३९।३३	०४१।३१
०८।२०	२१७।२१	२१६।०७	२१४।५५	२१३।४६	२१२।३७	२११।२८	२१०।१८	२०।२०	०३७।२१	०३८।४०	०४०।०६	०४१।३९	०४३।२४	०४५।२३	०४७।४३
०८।४०	२२२।२७	२२१।०४	२१९।४५	२१८।२७	२१७।११	२१५।५३	२१४।३५	२०।४०	०४२।२७	०४३।५३	०४५।२७	०४७।०९	०४९।०३	०५१।११	०५३।३९
०९।००	२२७।२८	२२५।५८	२२४।३२	२२३।०७	२२१।४२	२२०।१७	२१८।५०	२१।००	०४७।२८	०४९।०२	०५०।४३	०५२।३२	०५४।३२	०५६।४७	०५९।२१
०९।२०	२३२।२५	२३०।४९	२२९।१६	२२७।४४	२२६।१२	२२४।४०	२२३।०४	२१।२०	०५२।२५	०५४।०५	०५५।५१	०५७।४६	०५९।५१	०६२।११	०६४।५०
०९।४०	२३७।१७	२३५।३६	२३३।५७	२३२।१९	२३०।४१	२२९।०१	२२७।१८	२१।४०	०५७।१७	०५९।०३	०६०।५४	०६२।५३	०६५।०२	०६७।२५	०७०।०६
१०।००	२४२।०६	२४०।१९	२३८।३४	२३६।५२	२३५।०८	२३३।२१	२३१।३१	२२।००	०६२।०६	०६३।५५	०६५।५०	०६७।५३	०७०।०५	०७२।३०	०७५।१२
१०।२०	२४६।५०	२४५।००	२४३।१२	२४१।२३	२३९।३४	२३७।४१	२३५।४४	२२।२०	०६६।५०	०६८।४४	०७०।४१	०७२।४६	०७५।००	०७७।२६	०८०।०७
१०।४०	२५१।३२	२४९।३९	२४७।४७	२४५।५४	२४३।५९	२४२।०१	२३९।५७	२२।४०	०७१।३२	०७३।२८	०७५।२८	०७७।३४	०७९।४९	०८२।१४	०८४।५४
११।००	२५६।११	२५४।१६	२५२।२०	२५०।२४	२४८।२४	२४६।२१	२४४।१२	२३।००	०७६।११	०७८।०९	०८०।१०	०८२।१७	०८४।३१	०८६।५६	०८९।३३
११।२०	२६०।४९	२५८।५१	२५६।५३	२५४।५३	२५२।५०	२५०।४२	२४८।२७	२३।२०	०८०।४९	०८२।४८	०८४।५०	०८६।५६	०८९।१०	०९१।३२	०९४।०६
११।४०	२६५।२५	२६३।२६	२६१।२६	२५९।२४	२५७।१९	२५५।०५	२५२।४४	२३।४०	०८५।२५	०८७।२४	०८९।२६	०९१।३२	[illegible]	०९६।०३	०९८।३३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

कोष्ठक २ (ख) सायन लग्न

सा. का.	३५ अं. क.	४० अं. क.	४५ अं. क.	५० अं. क.	५५ अं. क.	६० अं. क.	सा. का.	३५ अं. क.	४० अं. क.	४५ अं. क.	५० अं. क.	५५ अं. क.	६० अं. क.
००।००	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३७	१२४।३५	१२।००	२५४।२६	२५१।३२	२४८।२८	२४४।३८	२४०।२३	२३५।२५
००।२०	१०९।४८	११२।३४	११५।३८	११९।०५	१२३।०३	१२७।४०	१२।२०	२५८।४३	२५५।४२	२५२।२८	२४८।२४	२४३।५३	२३८।३३
००।४०	११३।५१	११६।३६	११९।३०	१२२।४५	१२६।२८	१३०।४५	१२।४०	२६३।०६	२५९।५७	२५६।२३	२५२।२६	२४७।२७	२४१।४३
०१।००	११८।०७	१२०।३६	१२३।२०	१२६।२३	१२९।५०	१३३।४९	१३।००	२६६।३३	२६४।२८	२६०।३४	२५६।२४	२५१।०५	२४४।५६
०१।२०	१२२।२४	१२४।३५	१२७।०८	१२९।५९	१३३।११	१३६।५२	१३।२०	२७२।०९	२६८।४६	२६४।५३	२६०।२९	२५४।५१	२४८।१३
०१।४०	१२६।२९	१२८।३२	१३०।५५	१३३।३४	१३४।३२	१३९।५५	१३।४०	२७६।५२	२७३।३४	२६९।२१	२६४।३३	२५८।४४	२५१।३६
०२।००	१३०।२५	१३२।२८	१३४।४१	१३७।०८	१३९।५२	१४२।५८	१४।००	२८१।४३	२७८।२३	२७४।०१	२६८।५८	२६२।४७	२५५।०६
०२।२०	१३४।३०	१३६।२४	१३८।२७	१४०।४१	१४३।११	१४६।०१	१४।२०	२८६।४९	२८३।२३	२७८।५४	२७३।३८	२६७।०३	२५८।४५
०२।४०	१३८।३५	१४०।२०	१४२।१२	१४४।१५	१४६।३१	१४९।०५	१४।४०	२९२।०६	२८८।२८	२८४।०३	२७८।३४	२७१।३६	२६२।३६
०३।००	१४२।४१	१४४।१६	१४५।५८	१४७।४८	१४९।५१	१५२।०९	१५।००	२९७।४८	२९४।००	२८९।३२	२८३।५२	२७६।२९	२६६।४३
०३।२०	१४६।४७	१४८।१२	१४९।४३	१५१।२२	१५३।११	१५५।१३	१५।२०	३०३।२५	२९९।४१	२९५।२२	२८९।३४	२८१।४९	२७१।१२
०३।४०	१५०।५४	१५२।०९	१५३।२९	१५४।५५	१५६।३१	१५८।१८	१५।४०	३०९।३०	३०६।०३	३०१।३९	२९५।४८	२८७।४३	२७६।१२
०४।००	१५५।०१	१५६।०६	१५७।१५	१५८।३०	१५९।५१	१६१।२३	१६।००	३१५।५४	३१२।३९	३०८।२५	३०२।३८	२९४।२०	२८१।५३
०४।२०	१५९।१०	१६०।०४	१६१।०२	१६२।०४	१६३।१२	१६४।२८	१६।२०	३२२।३६	३१९।३९	३१५।४४	३१०।२२	३०१।५४	२८८।३६
०४।४०	१६३।१९	१६४।०३	१६४।४९	१६५।३९	१६६।३३	१६७।३४	१६।४०	३२९।३७	३२७।०४	३२३।३७	३१८।३६	३१०।४०	२९६।४८
०५।००	१६७।२८	१६८।०१	१६८।३६	१६९।१४	१६९।५५	१७०।४०	१७।००	३३६।५५	३३४।५३	३३२।०४	३२७।५१	३२०।५१	३०७।२६
०५।२०	१७१।३९	१७२।०१	१७२।२४	१७२।४९	१७३।१६	१७३।४७	१७।२०	३४४।२८	३४३।०३	३४१।०२	३३७।५९	३३२।३७	३२०।५८
०५।४०	१७५।४९	१७६।०३	१७६।१२	१७६।२५	१७६।३८	१७६।५३	१७।४०	३५२।११	३५१।२७	३५०।२५	३४८।४७	३४५।५०	३३८।४८
०६।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८०।००	१८।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००	०००।००
०६।२०	१८४।११	१८४।००	१८३।४८	१८३।३६	१८३।२२	१८३।०७	१८।२०	००७।४१	००८।३३	००९।३५	०११।२३	०१४।२०	०२१।१२
०६।४०	१८८।२१	१८७।५९	१८७।३६	१८७।११	१८६।४४	१८६।१३	१८।४०	०१५।३२	०१६।५७	०१८।५८	०२२।०२	०२७।२३	०३९।०२
०७।००	१९२।३२	१९१।५९	१९१।२४	१९०।४६	१९०।०५	१८९।२०	१९।००	०२३।०५	०२५।०७	०२७।५६	०३२।०९	०३९।२०	०५२।४४
०७।२०	१९६।४१	१९५।५८	१९५।११	१९४।२१	१९३।२७	१९२।२६	१९।२०	०३०।२३	०३२।५७	०३६।२३	०४१।२५	०४९।२१	०६३।१२
०७।४०	२००।५१	१९९।५६	१९८।५८	१९७।५६	१९६।४८	१९५।३२	१९।४०	०३७।२४	०४०।२१	०४४।२६	०४९।४८	०५८।०६	०७२।२४
०८।००	२०४।५९	२०३।५४	२०२।४५	२०१।३१	२००।०९	१९८।३७	२०।००	०४४।०६	०४७।२१	०५१।३५	०५७।२२	०६५।४०	०७८।०७
०८।२०	२०९।०७	२०७।५१	२०६।३१	२०५।०५	२०३।२९	२०१।४३	२०।२०	०५०।३०	०५३।५७	०५८।२१	०६४।२२	०७२।२७	०८३।४८
०८।४०	२१३।१३	२११।४८	२१०।१७	२०८।३८	२०६।५०	२०४।४७	२०।४०	०५६।३५	०६०।०९	०६४।३८	०७०।२६	०७८।२१	०८८।४८
०९।००	२१७।२०	२१५।४४	२१४।०३	२१२।१२	२१०।०९	२०७।५१	२१।००	०६२।२२	०६६।००	०७०।२८	०७६।०९	०८३।३१	०९३।१७
०९।२०	२२१।२५	२१९।४०	२१७।४८	२१५।४५	२१३।२९	२१०।५५	२१।२०	०६७।५४	०७१।३२	०७५।५७	०८१।२६	०८८।२४	०९७।२४
०९।४०	२२५।३०	२२३।३६	२२१।३३	२१९।१९	२१६।४९	२१३।५९	२१।४०	०७३।११	०७६।४७	०८१।०६	०८६।२२	०९२।५७	१०१।१६
१०।००	२२९।३५	२२७।३२	२२५।१९	२२२।५२	२२०।०८	२१७।०२	२२।००	०७८।१५	०८१।४८	०८५।५९	०९१।०२	०९७।२३	१०४।५४
१०।२०	२३३।४१	२३१।२८	२२९।०५	२२६।२६	२२३।२८	२२०।०५	२२।२०	०८३।०८	०८६।३६	०९०।३९	०९५।२७	१०१।२६	१०८।२४
१०।४०	२३७।४६	२३५।२५	२३२।५२	२३०।०१	२२६।४९	२२३।०८	२२।४०	०८७।५२	०९१।२४	०९५।०७	०९९।४२	१०५।०९	१११।४७
११।००	२४१।५३	२३९।२४	२३६।४०	२३३।३७	२३०।१०	२२६।११	२३।००	०९२।२७	०९५।४२	०९९।२६	१०३।४७	१०८।५५	११५।०४
११।२०	२४६।०२	२४३।२४	२४०।३०	२३७।१५	२३३।३२	२२९।१५	२३।२०	०९६।५५	१००।०३	१०३।३७	१०७।४४	११२।३३	११८।१७
११।४०	२५०।१२	२४७।२६	२४४।२२	२४०।५५	२३६।५८	२३२।२०	२३।४०	१०१।१७	१०४।२८	१०७।४२	१११।३६	११६।०७	१२१।२७
							२४।००	१०५।३४	१०८।२८	१११।४२	११५।२२	११९।३३	१२४।३५

षट् वर्ग सारणी चक्र

राशि	मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि रा. चक्र		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सि.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि रा. चक्र		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कु.	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
मी	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा. स्टै. टाईम)

तारीख	वाराणसी		बम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला, सोलन		मद्रास		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (काश्मीर)	
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जन.१	०६।४७	१७।१५	०७।१५	१८।०९	०६।२०	१६।५९	०६।१४	१६।३९	०७।१९	१७।४१	०६।५४	१७।३९	०७।२१	१७।२८	०६।३५	१७।५०	०७।२८	१७।२८	०७।३३	१७।३४
६	०६।४९	१७।१९	०७।१७	१८।१२	०६।२२	१७।०३	०६।१४	१६।४२	०७।१९	१७।४४	०६।५४	१७।४३	०७।२२	१७।३२	०६।३७	१७।५३	०७।२८	१७।३२	०७।३४	१७।३७
११	०६।४९	१७।२२	०७।१८	१८।१५	०६।२२	१७।०६	०६।१४	१६।४६	०७।१९	१७।४८	०६।५४	१७।४६	०७।२२	१७।३६	०६।३८	१७।५६	०७।२९	१७।३७	०७।३४	१७।४१
१६	०६।४९	१७।२६	०७।१८	१८।१८	०६।२२	१७।१०	०६।१४	१६।४९	०७।१९	१७।५४	०६।५३	१७।४९	०७।२१	१७।४१	०६।३९	१७।५७	०७।२८	१७।४१	०७।३३	१७।४६
२१	०६।४९	१७।३०	०७।१८	१८।२२	०६।२२	१७।१३	०६।१३	१६।५३	०७।१९	१७।५७	०६।५३	१७।५२	०७।२०	१७।४५	०६।३९	१८।०१	०७।२६	१७।४५	०७।३२	१७।५१
२६	०६।४७	१७।३३	०७।१८	१८।२४	०६।२१	१७।१६	०६।१३	१६।५७	०७।१८	१८।०१	०६।५३	१७।५५	०७।१८	१७।४९	०६।३९	१८।०३	०७।२४	१७।४९	०७।३०	१७।५६
३१	०६।४५	१७।३७	०७।१७	१८।२८	०६।२०	१७।२०	०६।१२	१७।०१	०७।१६	१८।०५	०६।५२	१७।५९	०७।१६	१७।५४	०६।३९	१८।०६	०७।२२	१७।५४	०७।२७	१८।००
फर.५	०६।४३	१७।४१	०७।१५	१८।३०	०६।१८	१७।२३	०६।०९	१७।०५	०७।१३	१८।०९	०६।५२	१८।०२	०७।१४	१७।५८	०६।३८	१८।०८	०७।१९	१७।५९	०७।२४	१८।०५
१०	०६।४०	१७।४४	०७।१३	१८।३३	०६।१५	१७।२६	०६।०२	१७।०८	०७।१०	१८।१३	०६।५१	१८।०५	०७।११	१८।०२	०६।३७	१८।१०	०७।१५	१८।०४	०७।२०	१८।१०
१५	०६।३७	१७।४८	०७।११	१८।३५	०६।१२	१७।२९	०६।०३	१७।१२	०७।०६	१८।१६	०६।४८	१८।०८	०७।०७	१८।०६	०६।३५	१८।११	०७।११	१८।०८	०७।१६	१८।१४
२०	०६।३३	१७।५१	०७।०८	१८।३७	०६।०९	१७।३२	०५।५९	१७।१५	०७।०२	१८।१९	०६।४५	१८।१०	०७।०२	१८।१०	०६।३३	१८।१३	०७।०६	१८।१२	०७।११	१८।१८
२५	०६।२९	१७।५४	०७।०५	१८।३९	०६।०५	१७।३४	०५।५५	१७।१८	०६।५८	१८।२२	०६।४१	१८।१३	०६।५६	१८।१४	०६।३१	१८।१४	०७।००	१८।१६	०७।०६	१८।२२
मार्च२	०६।२४	१७।५६	०७।०१	१८।४१	०६।०१	१७।३७	०५।५०	१७।२१	०६।५४	१८।२५	०६।३८	१८।१५	०६।४९	१८।१८	०६।२८	१८।१४	०६।५३	१८।२०	०७।००	१८।२६
७	०६।२०	१७।५९	०६।५८	१८।४३	०५।५७	१७।३९	०५।४५	१७।२४	०६।४९	१८।२८	०६।३३	१८।१६	०६।४३	१८।२१	०६।२५	१८।१५	०६।४७	१८।२४	०६।५४	१८।२९
१२	०६।१५	१८।०१	०६।५४	१८।४४	०५।५२	१७।४१	०५।४०	१७।२६	०६।४४	१८।३१	०६।२९	१८।१८	०६।३७	१८।२५	०६।२२	१८।१६	०६।४०	१८।२९	०६।४८	१८।३१
१७	०६।१०	१८।०४	०६।५०	१८।४५	०५।४८	१७।४३	०५।३५	१७।२९	०६।३८	१८।३३	०६।२५	१८।२०	०६।३०	१८।२८	०६।१९	१८।१६	०६।३४	१८।३३	०६।४२	१८।३६
२२	०६।०४	१८।०६	०६।४५	१८।४७	०५।४३	१७।४४	०५।२९	१७।३१	०६।३२	१८।३६	०६।२०	१८।२२	०६।२४	१८।३१	०६।१६	१८।१७	०६।२८	१८।३६	०६।३६	१८।३९
२७	०५।५९	१८।०८	०६।४१	१८।४८	०५।३८	१७।४६	०५।२४	१७।३४	०६।२६	१८।३८	०६।१५	१८।२३	०६।१८	१८।३४	०६।१२	१८।१७	०६।२१	१८।३९	०६।२९	१८।४२
अप्रै १	०५।५४	१८।१०	०६।३७	१८।४९	०५।३३	१७।४८	०५।१८	१७।३६	०६।२०	१८।४१	०६।११	१८।२५	०६।१२	१८।३८	०६।०९	१८।१७	०६।१५	१८।४२	०६।२३	१८।४६
६	०५।४९	१८।१३	०६।३३	१८।५०	०५।२९	१७।५०	०५।१३	१७।३८	०६।१५	१८।४४	०६।०६	१८।२६	०६।०६	१८।४१	०६।०६	१८।१८	०६।०८	१८।४५	०६।१७	१८।५०
११	०५।४३	१८।१५	०६।२९	१८।५१	०५।२४	१७।५२	०५।०८	१७।४१	०६।११	१८।४७	०६।०२	१८।२८	०६।०१	१८।४५	०६।०२	१८।१८	०६।०२	१८।४९	०६।११	१८।५३
१६	०५।३९	१८।१७	०६।२५	१८।५३	०५।२०	१७।५३	०५।०३	१७।४३	०६।०६	१८।४९	०५।५८	१८।२९	०५।५५	१८।४८	०५।५९	१८।१८	०५।५६	१८।५२	०६।०५	१८।५६
२१	०५।३४	१८।१९	०६।२१	१८।५४	०५।१५	१७।५५	०४।५८	१७।४५	०६।०१	१८।५१	०५।५४	१८।३१	०५।४९	१८।५१	०५।५७	१८।१९	०५।५०	१८।५६	०५।५९	१८।५९
२६	०५।३०	१८।२२	०६।१८	१८।५५	०५।१२	१७।५७	०४।५४	१७।४८	०५।५६	१८।५४	०५।५०	१८।३३	०५।४४	१८।५४	०५।५४	१८।२०	०५।४५	१८।५९	०५।५३	१९।०३
मई १	०५।२६	१८।२४	०६।१५	१८।५७	०५।०८	१७।५९	०४।५०	१७।५०	०५।५२	१८।५७	०५।४७	१८।३५	०५।३९	१८।५८	०५।५२	१८।२१	०५।४०	१९।०२	०५।४८	१९।०६
६	०५।२२	१८।२७	०६।१२	१८।५९	०५।०५	१८।०२	०४।४६	१७।५३	०५।४८	१८।५९	०५।४४	१८।३७	०५।३५	१९।०१	०५।५०	१८।२२	०५।३६	१९।०६	०५।४३	१९।०९
११	०५।१९	१८।२९	०६।१०	१९।००	०५।०२	१८।०४	०४।४३	१७।५६	०५।४५	१९।०२	०५।४१	१८।३९	०५।३१	१९।०४	०५।४८	१८।२३	०५।३२	१९।०९	०५।३९	१९।१३
१६	०५।१६	१८।३२	०६।०८	१९।०२	०५।००	१८।०६	०४।४०	१७।५९	०५।४२	१९।०५	०५।३८	१८।४१	०५।२८	१९।०८	०५।४७	१८।२४	०५।२८	१९।१३	०५।३६	१९।१६
२१	०५।१४	१८।३५	०६।०६	१९।०४	०४।५८	१८।०८	०४।३८	१८।०१	०५।३९	१९।०८	०५।३७	१८।४३	०५।२५	१९।११	०५।४६	१८।२५	०५।२५	१९।१६	०५।३३	१९।१९
२६	०५।१२	१८।३७	०६।०५	१९।०६	०४।५६	१८।११	०४।३६	१८।०४	०५।३७	१९।११	०५।३६	१८।४५	०५।२२	१९।१४	०५।४५	१८।२७	०५।२२	१९।२०	०५।३०	१९।२१
३१	०५।११	१८।३९	०६।०४	१९।०८	०४।५५	१८।१३	०४।३५	१८।०६	०५।३५	१९।१३	०५।३५	१८।४७	०५।२०	१९।१७	०५।४५	१८।२८	०५।२०	१९।२३	०५।२८	१९।२६
जून ५	०५।११	१८।४२	०६।०४	१९।१०	०४।५५	१८।१५	०४।३४	१८।०८	०५।३५	१९।१५	०५।३५	१८।४८	०५।१९	१९।१९	०५।४५	१८।३०	०५।१९	१९।२५	०५।२७	१९।२९
१०	०५।११	१८।४४	०६।०४	१९।११	०४।५५	१८।१७	०४।३४	१८।११	०५।३५	१९।१८	०५।३५	१८।४९	०५।१९	१९।२१	०५।४५	१८।३१	०५।१८	१९।२७	०५।२७	१९।३२
१५	०५।११	१८।४६	०६।०५	१९।१३	०४।५५	१८।१८	०४।३४	१८।१२	०५।३५	१९।२०	०५।३५	१८।५१	०५।२०	१९।२२	०५।४६	१८।३३	०५।१९	१९।२९	०५।२७	१९।३४
२०	०५।१२	१८।४७	०६।०६	१९।१४	०४।५६	१८।२०	०४।३५	१८।१४	०५।३६	१९।२१	०५।३६	१८।५३	०५।२०	१९।२४	०५।४७	१८।३४	०५।२०	१९।३०	०५।२८	१९।३५
२५	०५।१३	१८।४८	०६।०७	१९।१५	०४।५७	१८।२१	०४।३६	१८।१५	०५।३७	१९।२२	०५।३७	१८।५५	०५।२१	१९।२६	०५।४८	१८।३५	०५।२१	१९।३२	०५।२९	१९।३६
३०	०५।१४	१८।४९	०६।०८	१९।१६	०४।५८	१८।२२	०४।३८	१८।१५	०५।३८	१९।२२	०५।३९	१८।५६	०५।२२	१९।२७	०५।४९	१८।३६	०५।२२	१९।३४	०५।३१	१९।३६

यह सूर्योदयास्त किरण वक्री भवन संस्कार रहित है, यही धर्म कृत्योपयोगी है, किरण भवन उपयोगी संस्कार युक्त सूर्योदयास्त पाश्चात्य पंचांगों में लिखा जाता है।

भारतीय कतिपय प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (भा. स्टे. टाईम)

	वाराणसी		मुम्बई		कलकत्ता		गोहाटी		जयपुर		नागपुर		शिमला, सोलन		मद्रास		धर्मशाला, कांगड़ा		जम्मू (काश्मीर)	
तारीख	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.	उदय घं.मि.	अस्त घं.मि.
जुला.५	५।१६	१८।४९	६।१०	१९।१६	५।००	१८।२२	४।३९	१८।१५	५।४०	१९।२२	५।४०	१८।५६	५।२४	१९।२६	५।५१	१८।३६	५।२४	१९।३५	५।३३	१९।३६
१०	५।१८	१८।४८	६।११	१९।१६	५।०२	१८।२१	४।४१	१८।१५	५।४२	१९।२१	५।४२	१८।५६	५।२६	१९।२५	५।५२	१८।३६	५।२७	१९।३४	५।३५	१९।३५
१५	५।२०	१८।४७	६।१३	१९।१६	५।०४	१८।२१	४।४४	१८।१४	५।४५	१९।२०	५।४४	१८।५५	५।२९	१९।२३	५।५३	१८।३६	५।३०	१९।३२	५।३७	१९।३४
२०	५।२३	१८।४६	६।१५	१९।१५	५।०६	१८।१९	४।४६	१८।१२	५।४८	१९।१८	५।४६	१८।५४	५।३१	१९।२१	५।५५	१८।३६	५।३३	१९।२९	५।४०	१९।३२
२५	५।२५	१८।४४	६।१७	१९।१४	५।०८	१८।१८	४।४९	१८।१०	५।५०	१९।१६	५।४८	१८।५२	५।३४	१९।१९	५।५६	१८।३५	५।३६	१९।२६	५।४३	१९।२९
३०	५।२७	१८।४१	६।१८	१९।१२	५।१०	१८।१५	४।५१	१८।०८	५।५३	१९।१३	५।५०	१८।५०	५।३८	१९।१६	५।५७	१८।३४	५।३९	१९।२३	५।४७	१९।२६
अग.४	५।३०	१८।३८	६।२०	१९।१०	५।१२	१८।१३	४।५३	१८।०५	५।५६	१९।१०	५।५२	१८।४८	५।४१	१९।१२	५।५८	१८।३२	५।४२	१९।१९	५।५०	१९।२२
९	५।३२	१८।३५	६।२२	१९।०७	५।१४	१८।१०	४।५६	१८।०१	५।५८	१९।०६	५।५३	१८।४५	५।४४	१९।०७	५।५९	१८।३०	५।४६	१९।१५	५।५३	१९।१७
१४	५।३४	१८।३१	६।२३	१९।०४	५।१६	१८।०६	४।५८	१७।५७	६।०१	१९।०२	५।५५	१८।४२	५।४७	१९।०२	६।००	१८।२८	५।४९	१९।१०	५।५६	१९।१२
१९	५।३६	१८।२७	६।२४	१९।०१	५।१८	१८।०२	५।०१	१७।५३	६।०३	१८।५७	५।५७	१८।३८	५।५०	१८।५७	६।००	१८।२५	५।५२	१९।०४	६।००	१९।०६
२४	५।३९	१८।२२	६।२६	१८।५७	५।२०	१७।५८	५।०३	१७।४८	६।०५	१८।५३	५।५८	१८।३४	५।५३	१८।५२	६।०१	१८।२२	५।५५	१८।५८	६।०३	१९।०१
२९	५।४१	१८।१७	६।२७	१८।५३	५।२१	१७।५४	५।०५	१७।४३	६।०७	१८।४८	६।००	१८।३०	५।५६	१८।४६	६।०१	१८।१९	५।५९	१८।५१	६।०६	१८।५६
सित.३	५।४३	१८।१२	६।२७	१८।४९	५।२३	१७।४९	५।०७	१७।३८	६।०९	१८।४२	६।०१	१८।२५	५।५८	१८।४०	६।०१	१८।१५	६।०२	१८।४५	६।०९	१८।५०
८	५।४४	१८।०७	६।२८	१८।४५	५।२४	१७।४४	५।०९	१७।३३	६।१२	१८।३७	६।०२	१८।२१	६।०१	१८।३४	६।०१	१८।१३	६।०६	१८।३८	६।१२	१८।४३
१३	५।४६	१८।०२	६।२९	१८।४१	५।२६	१७।४०	५।११	१७।२७	६।१४	१८।३१	६।०३	१८।१६	६।०४	१८।२८	६।०१	१८।०९	६।०९	१८।३२	६।१५	१८।३७
१८	५।४८	१७।५६	६।३०	१८।३६	५।२७	१७।३४	५।१३	१७।२२	६।१७	१८।२६	६।०४	१८।११	६।०७	१८।२१	६।०१	१८।०५	६।१२	१८।२५	६।१८	१८।३०
२३	५।५०	१७।५१	६।३१	१८।३२	५।२९	१७।२९	५।१५	१७।१६	६।१८	१८।२०	६।०६	१८।०७	६।१०	१८।१५	६।०१	१८।०२	६।१५	१८।१८	६।२१	१८।२४
२८	५।५२	१७।४६	६।३२	१८।२७	५।३०	१७।२५	५।१७	१७।११	६।२०	१८।१४	६।०७	१८।०२	६।१४	१८।०८	६।०२	१७।५८	६।१८	१८।११	६।२४	१८।१७
अक्टू.३	५।५४	१७।४०	६।३३	१८।२३	५।३२	१७।२०	५।२०	१७।०५	६।२३	१८।०९	६।०९	१७।५७	६।१७	१८।०१	६।०२	१७।५५	६।२२	१८।०५	६।२८	१८।११
८	५।५६	१७।३५	६।३४	१८।१९	५।३४	१७।१५	५।२२	१७।००	६।२६	१८।०४	६।१०	१७।५३	६।२१	१७।५५	६।०२	१७।५२	६।२५	१७।५८	६।३१	१८।०५
१३	५।५९	१७।३०	६।३५	१८।१५	५।३५	१७।१०	५।२४	१६।५५	६।२८	१७।५८	६।१२	१७।४८	६।२४	१७।५०	६।०२	१७।४८	६।२९	१७।५२	६।३४	१७।५९
१८	६।०१	१७।२५	६।३७	१८।११	५।३७	१७।०६	५।२७	१६।५०	६।३१	१७।५३	६।१३	१७।४४	६।२८	१७।४४	६।०३	१७।४६	६।३२	१७।४६	६।३७	१७।५३
२३	६।०४	१७।२१	६।३९	१८।०८	५।४०	१७।०२	५।३०	१६।४५	६।३४	१७।४९	६।१६	१७।४१	६।३१	१७।३९	६।०४	१७।४३	६।३६	१७।४१	६।४१	१७।४८
२८	६।०७	१७।१७	६।४०	१८।०५	५।४२	१६।५९	५।३३	१६।४१	६।३७	१७।४४	६।१८	१७।३७	६।३५	१७।३४	६।०५	१७।४१	६।४०	१७।३६	६।४५	१७।४३
नवं.२	६।१०	१७।१४	६।४२	१८।०२	५।४५	१६।५६	५।३६	१६।३८	६।४०	१७।४०	६।२०	१७।३४	६।३९	१७।३०	६।०६	१७।३९	६।४४	१७।३२	६।४९	१७।३८
७	६।१३	१७।१०	६।४५	१८।००	५।४८	१६।५३	५।३९	१६।३४	६।४३	१७।३७	६।२३	१७।३२	६।४४	१७।२६	६।०८	१७।३८	६।४९	१७।२९	६।५३	१७।३४
१२	६।१६	१७।०८	६।४७	१७।५८	५।५१	१६।५१	५।४३	१६।३२	६।४७	१७।३४	६।२६	१७।३०	६।४८	१७।२३	६।१०	१७।३६	६।५३	१७।२५	६।५८	१७।३०
१७	६।२०	१७।०६	६।५०	१७।५७	५।५४	१६।४९	५।४६	१६।३०	६।५१	१७।३२	६।२९	१७।२९	६।५२	१७।२०	६।१२	१७।३६	६।५७	१७।२२	७।०३	१७।२७
२२	६।२३	१७।०५	६।५३	१७।५७	५।५७	१६।४८	५।५०	१६।२८	६।५५	१७।३१	६।३२	१७।२८	६।५६	१७।१८	६।१४	१७।३६	७।०२	१७।१९	७।०८	१७।२५
२७	६।२७	१७।०४	६।५६	१७।५७	६।०१	१६।४८	५।५४	१६।२८	६।५९	१७।३१	६।३५	१७।२७	७।००	१७।१७	६।१७	१७।३६	७।०६	१७।१७	७।१२	१७।२४
दिसं.२	६।३१	१७।०४	६।५९	१७।५७	६।०४	१६।४८	५।५७	१६।२७	७।०२	१७।३१	६।३८	१७।२८	७।०३	१७।१६	६।१९	१७।३७	७।१०	१७।१६	७।१६	१७।२४
७	६।३४	१७।०४	७।०२	१७।५८	६।०७	१६।४८	६।०१	१६।२८	७।०६	१७।३१	६।४१	१७।२८	७।०७	१७।१६	६।२२	१७।३८	७।१३	१७।१६	७।२०	१७।२४
१२	६।३७	१७।०५	७।०५	१७।५९	६।१०	१६।५०	६।०४	१६।२९	७।०९	१७।३२	६।४५	१७।३०	७।११	१७।१७	६।२५	१७।४०	७।१६	१७।१७	७।२३	१७।२५
१७	६।४१	१७।०७	७।०८	१८।०१	६।१३	१६।५१	६।०७	१६।३१	७।१२	१७।३४	६।४८	१७।३२	७।१४	१७।१८	६।२८	१७।४२	७।१९	१७।१८	७।२६	१७।२६
२२	६।४३	१७।०९	७।११	१८।०३	६।१६	१६।५४	६।१०	१६।३२	७।१५	१७।३६	६।५०	१७।३४	७।१७	१७।२०	६।३०	१७।४४	७।२२	१७।२०	७।२९	१७।२८
२७	६।४५	१७।१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

...जैसे वृश्चिक का केतु स्वराशि का समझा जाता है वैसे ही मीन का

हर्शल का संक्षिप्त फल-विचार

सूर्य की एक प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग ८४ वर्ष लगते हैं, अर्थात् यह एक राशि में लगभग ७ वर्ष तक रहता है। यह ग्रह शनि से अत्यन्त खल बलिष्ठ तमोगुणी अशुभ ग्रह है। आकस्मिक घटना तथा रोगोत्पादक विलक्षण प्रकृति का वियोग और स्थान त्याग प्रिय है। वर्तमान समय इस जगत में मोटर, रेलवे, तार, बिजली, टेलीफोन आदि यन्त्रों का शोध तथा नित्य प्रयोग में और वायुप्रकोप सम्बन्धी इन्फ्लूएंजा आदि रोगों से यथा सुधार प्रिय देशों में स्त्री, पति, माता, पिता, बन्धु आदि के त्याग से सिद्ध होता है कि इस ग्रह का प्रभाव जगत के मनुष्य प्राणी पर पड़ने लगा है। इस ग्रह की कुम्भ राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि शनि कुम्भ का स्वामी नहीं, प्रत्युत जैसे वृषभ और तुला का स्वामी शुक्र होता है, फिर भी वृषभ राशि का राहु स्वगृही माना जाता है, इसी प्रकार कुम्भ में हर्शल हो तो स्वगृही माना जाता है। यह वायुवेग-प्रिय गृह है। जिस पुरुष की कुण्डली में चन्द्र हर्शल से युक्त और स्त्री की कुण्डली में रवि हर्शल से युक्त हो अथवा केन्द्र तथा प्रतियोग करता हो तो ऐसे पुरुष या स्त्री को पूर्ण दाम्पत्य सुख नहीं होता। एवम् पाँचवें सातवें स्थान में हर्शल हो तो उस पुरुष और स्त्री की चित्त-वृत्ति को चंचल करता है।

राशि विचार- हर्शल मिथुन, तुला और कुम्भ राशि में अत्यन्त बलवान समझा जाता है। मेष और वृश्चिक राशि में अत्यन्त घातक फल देता है।

भाव विचार- यह ग्रह ५-९-१०-११ वें स्थान में शुभ और अन्य स्थानों में अशुभ माना गया है। लग्न में हर्शल हो तो मनुष्य विलक्षण स्वभाव का होगा। किन्तु मिथुन, तुला, कुम्भ राशि का हो तो तीव्र बुद्धि और शोधक होगा। द्वितीय भाव में हो तो कौटुम्बिक सुख के लिए प्रतिकूल और अशुभ राशि का हो तो द्रव्य- हानि। तृतीय भाव में भ्रातृ सुख विघातक, सदा स्थानान्तर, यान्त्रिक वाहन से प्रवास योग। चतुर्थ भाव में आप्तवर्गों से शत्रुत्व, आयुष्य के अन्त समय में द्रव्य-हानि भूमि-सम्बन्धी कलह। पंचम भाव में सन्तति प्रतिबन्ध अथवा नाश, सन्तति सुख का अभाव। षष्ठ भाव में मातुल सुख का अभाव, रोग वृद्धि। सप्तम भाव में वैवाहिक जीवन दाम्पत्य सुख का नाश, परराष्ट्र सम्बन्ध। अष्टम भाव में आकस्मिक मृत्यु। नवम भाव में धार्मिक संस्था से सम्बन्ध, शास्त्रीय शोध में रुचि। दशम भाव में अधिकारी वर्ग से सम्बन्ध। ग्यारहवें भाव में कायदे कौंसिल देशी संस्था आदि से सम्बन्ध। बारहवें भाव में द्रव्य हानि, ऋण-योग, शत्रु के कारण कष्ट।

नेपच्यून का संक्षिप्त फल-विचार

सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इस ग्रह को लगभग १६५ वर्ष का समय लगता है, अर्थात् एक राशि में लगभग १३$\frac{3}{4}$ वर्ष तक रहता है। यह जल राशि ग्रह है। अर्थात् मीन इसकी राशि है। इसका आशय यह नहीं है कि मीन राशि का स्वामी बृहस्पति नहीं है, प्रत्युत मेष और वृश्चिक का स्वामी मंगल होते हुए भी जैसे वृश्चिक का केतु स्वराशि का समझा जाता है वैसे ही मीन का नेपच्यून स्वगृही माना जाता है। इसका अर्थ, धर्म गुरु चन्द्रमा के समान शुभ है। जल में रंग मिलने से जिस प्रकार जल का रंग बदल जाता है- उसी प्रकार नेपच्यून से जो ग्रह युक्त होगा, वैसे ही वह फल देता है। इसका प्रभाव रुधिराभिसरण में अधिक होता है। यह ग्रह १-५-९वें स्थान में सत्वप्रधान, २-४-६-८-१२ वें में तम प्रधान, ३-७-१०-११वें स्थान में रज प्रधान समझा जाता है। किन्तु यदि अशुभ स्थान और राशि में हो तो मनुष्य का स्वभाव पापवृत्ति की ओर होता है। इस ग्रह को ११-७-३-४-१२ इस क्रम से राशि प्रियतर है। शेष राशियाँ अप्रिय हैं। यह ग्रह १-३-५-९-११वें स्थान में कर्क, वृश्चिक, मीन, मिथुन, तुला राशि में स्थित हो तो ऊँचा फल मिलना निश्चित है।

भावफल- लग्न में नेपच्यून हो तो जल प्रवासी, गौरवपूर्ण, निद्रारोगी। दूसरे भाव में हो तो साम्पत्तिक-हानि, कुटुम्ब-हानि। तीसरे भाव में १-३-५-९-११वें स्थान के स्वामी शुभ योग करता हो तो प्रवास से लाभ, मानसिक उत्कर्ष। चतुर्थ भाव में माता को कष्ट, सांपत्न मातृ योग, पापग्रह से युक्त हो तो कारावास, कृषि में हानि। पंचम भाव में पंचमेश और गुरु से युक्त हो तो पुत्र सन्तति, पंचमेश और शुक्र से युक्त हो तो कन्या सन्तति, शुक्र से अशुभ योग करता हो तो व्यभिचार वृत्ति। छठे भाव में र. चं. से युक्त या दृष्ट हो तो मूत्राशय रोग, अतिसार, संग्रहणी, विश्वासघात। ७वें भाव में सुन्दर रूप और स्वभाव की स्त्री का लाभ, स्त्री राशि या स्त्री ग्रह से युक्त हो तो स्त्री से लाभ, पापग्रह से पीड़ित हो तो स्त्री कष्ट। श. मं. रा. से युक्त और दृष्ट हो तो अत्यन्त अशुभ। अष्टम भाव में शुभ ग्रह से युक्त हो तो आकस्मिक लाभ पापग्रह से युक्त और दृष्ट हो तो गुह्य भाग में विकार, राज दरबार में हानि। नवम् भाव में चर राशि का हो तो प्रवासी। दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट, व्यापार में हानि। ग्यारहवें भाव में हो तो मित्र, जामाता, बन्धु लाभ आदि विचार करें। बारहवें भाव में चन्द्र से युक्त हो तो जहाज में नौकरी का योग, मंगल से युक्त हो तो अस्पताल सम्बन्धी नौकरी, शनि से युक्त हो तो गुप्त विभाग की नौकरी। यह ग्रह हर्शल से अधिक सामर्थ्यवान है। संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। इस भाव की राशि, स्वामी, ग्रह-दृष्टि ग्रहपूर्ति आदि का शुभाशुभ विचार कर फलादेश कहना चाहिए।

मंगली योग परिहार- यदि कन्या की जन्मकुण्डली में १-४-७-८-१२वें घर में मंगल हो और केन्द्र त्रिकोण १-४-५-७-९-१०वें बृहस्पति हो तो मंगली दोष न होकर वह कन्या सुख-सौभाग्य सम्पन्न रहती है। यथा-

"वाचस्पतौ नवमपंचमकेन्द्र-संस्थे जाताऽङ्गना भवति पूर्ण-विभूतियुक्ता।
साध्वी सुपुत्रजननी सुखिनी गुणाढ्या सप्ताष्टके यदि भवेदशुभग्रहोऽपि।।"

होरा चक्र ज्ञान

सिद्ध होरा मुहूर्त्त

यस्य ग्रहस्य कर्म किंचित् प्रकीर्तितम्। तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वकर्म विधीयते॥

इष्ट कार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त सर्वश्रेष्ठ है। होरा के अनुसार काम आरम्भ करके प्रत्येक व्यक्ति किसी भी नेष्ट समय में से अभीष्ट होरा निकाल कर अपनी वांछित कार्य सिद्धि प्राप्त कर सकता है। सप्त ग्रहों की अपनी-अपनी होराएं भी कुल मिलाकर सात होती हैं। रवि की होरा शासकीय कार्य, नौकरी आदि के लिए शुभ होती हैं। निविदाओं के आदान-प्रदान तथा सरकारी कार्य के दायित्व लेने व देने के लिए भी शुभ होती हैं। चन्द्रमा की होरा सर्वकार्य सिद्धि के लिए उत्तम होती है। भौम की होरा युद्ध, मुकदमा, विवाद, जुआ, यात्रा, ऋण देने, सभा और समाज में आने-जाने के लिए शुभ होती हैं। बुध की होरा कला, काव्य, गणित आदि का शुभारम्भ 'धन संग्रह करना तथा व्यापार आरम्भ करना, पुस्तक प्रकाशन तथा आवेदन प्रस्तुत करने हेतु' शुभ होती है। बृहस्पति की होरा विवाह आदि मांगलिक कार्य, पूजन, यज्ञ आदि शुभ कार्य हेतु, वृद्ध व आदरणीय व्यक्तियों के दर्शन हेतु, कोष संचय के लिए, विद्या व ज्ञान प्राप्ति के लिए, नव काव्य सम्पादन व प्रकाशन हेतु अनेक कार्यों में सिद्धि हेतु अभीष्ट है। शुक्र की होरा नववस्त्र, आभूषण धारण करने के लिए, यात्रारम्भ तथा विवाह सम्बन्धी सौभाग्यवर्धक कार्यों के लिए, कलात्मक कार्य, नाटक, चलचित्र सम्बन्धी सभी कार्यों के लिए शुभ होती हैं। शनि की होरा धन संग्रह, नवगृह तथा भवन निर्माण आरम्भ करने के लिए, भूमि तथा भवन की नींव रखने के लिए, कल-कारखानों, यन्त्रों सम्बन्धी कार्य सिद्ध करने हेतु तथा सर्व प्रकारेण स्थिर कार्य सिद्धि हेतु शुभ होती हैं। प्रत्येक होरा का समय अढ़ाई घड़ी अर्थात् साठ मिनट यानि एक घंटे का होता है। जिस दिन जो वार होता है उस वार की प्रथम होरा सूर्योदय के समय से शुरू होकर एक घंटा तक की समयावधि की होती है। इसके पश्चात दूसरी होरा उस दिन से छठे वार की होती है। इसी क्रमानुसार दूसरी होरा के दिन से छठे दिन की तीसरी होरा होती है। इस तरह से सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक साठ घड़ी अर्थात २४ घंटों में २४ होराएं घूम जाती हैं। अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए जो होरा अनुकूल, उपरोक्त क्रम में कहीं है उसके अनुसार ही निर्दिष्ट समय में कार्यारम्भ करने से वांछित परिणाम मिलेंगे। आर्ष ग्रन्थों में इसी होरा को क्षणवार भी कहा गया है। यदि क्षणवार तथा ग्रहवार या दिनवार दोनों अनुकूल हों तो कार्य सिद्धि निर्विघ्न व निश्चित हैं। वर्जित दिन में अनुकूल होरा पर यात्रा करने से भी दिक् शूल का परिमार्जन हो जाता है।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

अर्थात् भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित हो उस राशि का स्वामी ही अनित्य कारक कहलाता है। सर्व फल का दाता वही है। यदि वह बलशाली हो- उच्चस्थ, स्वक्षेत्री, वर्गोत्तम, मित्रक्षेत्री आदि और शुभ कर्तरी में हो तो श्रेष्ठ फल देता है। यदि नीचस्थ, शत्रु दृष्ट, अशुभ दृष्ट, अस्त हो तो शुभ फल नहीं देता।

स्वक्षेत्र वर्गोत्तम तुङ्ग मित्र शुभ ग्रहाणां यदि मध्यवासः।
स कारको भद्रतरं करोति नीचारि मूढोऽशुभदृग विहीनः।। *(द्वितीय/३२९)*

२. अंशादि स्फुटः- ये योग ग्रन्थ में नाड़ी फल में कहे गए हैं।

ये पांच योग गुरु के गोचर वश स्फुट योग से बनते हैं।

(i) .... सुखेशांश त्रिकोणगे।।१९२६ *(प्रथम भाग)*

स्फुट योगं गते जीवे विवाहोत्सवमादिशेत।

चतुर्थेश जिस राशि में हो वह राशि अथवा चतुर्थेश से पूर्ण दृष्टि से देखे जानी वाली राशि में, अथवा चतुर्थेश नवमांश में जिस राशि में हो तो वह राशि, अथवा उसकी दोनों त्रिकोण राशियों में, चतुर्थेश के अंश के ऊपर जब गुरु गोचर करे तो जातक का विवाह कहे।

(ii) .... सुतेशांश त्रिकोणगे।। *(प्रथम भाग, १८४६)*

स्फुट योगं गते जीवे विवाहोत्सवमादिशेत्।

पंचमेश जिस राशि में हो वह राशि अथवा पंचमेश से दृष्ट राशि; पंचमेश नवांश में जिस राशि में हो वह राशि तथा उसकी दोनों त्रिकोण राशियों में, पंचमेश के अंश पर जब गोचर में गुरु भ्रमण करे तो जातक का विवाह कहे।

(iii) .... मदेशांश त्रिकोणगे।

स्फुटयोगं गते जीवे विवाहोत्सवमादिशेत्।। *(प्रथम/२७९५-९६)*

सप्तमेश जिस राशि में हो वह राशि अथवा सप्तमेश से दृष्ट राशि में; सप्तमेश नवांश में जिस राशि मे हो वह राशि तथा उसकी दोनों त्रिकोण राशियों में; सप्तमेश के अंश ऊपर जब गुरु गोचर करे तो जातक का विवाह कहे।

(iv) ...... भाग्येशांश त्रिकोणगे।

स्फुटयोगं गते जीवे विवाहोत्सवमादिशेत्।। *(प्रथम/२३६७)*

नवमेश जिस राशि में हो वह राशि अथवा नवमेश से दृष्ट राशि में; नवमेश नवांश में जिस राशि में हो वह राशि अथवा उसकी दोनों त्रिकोण राशियों में, नवमेश के अंश ऊपर जब गोचर में गुरु भ्रमण करे तो विवाह कहे।

(v) .... कर्मेशांश त्रिकोणगे।

स्फुट योगं गते जीवे विवाहोत्सवमादिशेत्।। (प्रथम/२६९६)

दशमेश जिस राशि में हो वह राशि अथवा दशमेश से दृष्ट राशि में; अथवा दशमेश नवांश में जिस राशि में हो वह राशि अथवा उसकी दोनों त्रिकोण राशियों में; दशमेश के अंश पर जब गोचर में गुरु भ्रमण करे तो जातक का विवाह कहे।

अब कुछ उदाहरण देते हैं।

उदाहरण-१

जन्मतिथि : २७ मार्च, १९६९
जन्म समय : १६ बजकर ५ मिनट (सायंकाल ४ बजकर ५ मिनट)
जन्म स्थान : अक्षांश २८।३८ चित्रा पक्ष अयनांश : २३।२५।३८
रेखांश : ७७।१२ निरयन लग्न : ४।१०।५८
भोग्य गुरु दशा ५ वर्ष ९ मास १८ दिन (१५ जनवरी १९७५ तक)

ग्रह	स्फुटांश	नवांश राशि	ग्रह	स्फुटांश	नवांश राशि
सू.	११।१३।९।३६	७	चं.	२।२८।३०।४८	३
मं.	७।१८।१३	९	बु.	११।१।४।२३	४
गु.	५।७।१	१२	शु.	०।१।४५	१
श.	०।२।२१	१	रा.	११।६।३९	५
के.	५।६।३९	११	लग्न	४।१०।५८	४
			दशम	१।९।१८	

जन्म लग्न ४।१०।८

गु. के. ६ | ५ | ४ | चं. ३ | २ | ७ | मं. ८ | ११ | ९ | १० | १२ | शु. श. १

विवाह तिथि :- ९ फरवरी, १९९२

जातक को शनि महादशा में गुरु का अंतर ३ जुलाई १९९१ से प्रारम्भ होकर १५ जनवरी १९९४ तक था। शनि यद्यपि नीचस्थ है परन्तु वर्गोत्तमी होने से दोष न्यून है। गुरु पंचमेश है तथा स्वनवांश मीन में है। इस प्रकार सप्तमेश पंचमेश की दशा, अंतर्दशा विवाह का संकेत देती है। गुरु १ फरवरी को सिंह राशि में वक्र गति से भ्रमण कर रहा था। स्पष्टांश १८।२०। इस कुण्डली में चतुर्थेश मंगल के स्पष्टांश ७।१८।१३ है तथा नवमांश में वह धनु राशि में है जिसकी दो त्रिकोण राशियां सिंह और मेष हैं। गुरु का स्पष्टांश चतुर्थेश के स्पष्टांश तुल्य ही है। इस प्रकार अंशादि स्फुट के नियम (१) के अंतर्गत विवाह समय ठीक उसी दिन का आता है।

उदाहरण-२

जन्म तिथि : १२-११-१९३४
जन्म समय : ०४:०४ (भारतीय स्टैण्डर्ड समय) सूर्योदय से पूर्व
जन्म स्थान : अक्षांश २८।१३ चित्रा पक्षीय अयनांश : २२:५६:५१
रेखांश : ७७:५० निरयन लग्न : ५।२२।१४
भोग्य सूर्य दशा ५ वर्ष ८ मास (११ जुलाई, १९४० तक)

शेष पृष्ठ : २४ पर

१४९

सौन्दर्य-लहरी का चमत्कारी प्रयोग

लेखिका- राजराजेश्वरी उपाध्याय

सौन्दर्य लहरी के चमत्कारी प्रयोग शीर्षक से विगत वर्षों से श्रीविश्वविजय पंचांग के माध्यम से सौन्दर्य लहरी के विविध प्रयोग व उपलब्धियां तथा 'दीक्षा रहस्य'' आदि प्रसंगों को सुधि पाठकों ने बहुत अपनाया अब इस श्रृंखला में श्लोक संख्या ६ से १५ तक १० श्लोकों के क्रमशः मंत्र, न्यास, ध्यान एवं प्रयोग विधि प्रस्तुत की जा रही है।

विशेष दृष्टव्य:- श्री विद्या साधना-सपर्या-वरिवश्या यह गुरुगम्य है, इसमें ''मतयो: यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति वानरा:'' नहीं होना है- शास्त्राणी यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति ते नरा:।।'' शास्त्र चक्षु से कर्त्तव्य, विधि निषेध का पालन करना परमावश्यक है।

''सौन्दर्य लहरी के समग्र प्रयोग'' हेतु प्रथमत: गुरु दीक्षा अनिवार्य है- सौन्दर्य लहरी एवं श्री विद्या साधना के प्रमाणिक ग्रन्थों में श्रीविद्या वरिवश्या, श्रीविद्या सपर्या पद्धति, लेखक धर्म सम्राट स्वामी करपात्री जी महाराज, स्वामीजी दतिया, चण्डी कार्यालय की सार्थ सौन्दर्यलहरी तथा द्वारका शारदापीठ द्वारा प्रकाशित सौन्दर्यलहरी प्रमाणिक साहित्य है।

''दीक्षा रहस्य'' सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सामग्री श्रीविश्वविजय पंचांगम् सं. २०६३ के पृष्ठ १९०-१९१ पर गत वर्ष प्रकाशित है कृपया पुन: अवलोकन करें।

सौन्दर्य लहरी ''श्रीविद्या'' दीक्षा के सम्बन्ध में कुछ जान लेना आवश्यक है। ''पूर्णाभिषिक्त'' साधक ही इसकी दीक्षा दे सकते हैं। आजकल तथाकथित श्री विद्या साधक, श्रीविद्या श्रीयन्त्र बेचने वालों की बाढ़ जैसी आ रही है अत: जल्दबाजी करके जोश में होश नहीं खोवें। कारण आज

''गली-गली में गुरु घूमे बान्ध लटकाये थेला।
आवो रे कोई दीक्षा ले लो बन जावो रे चेला।।
गुरु आप अग्यानी जुगत न जानी चेला मुक्ति चहन्दा है,
अन्धे पर अन्धा धर कर कन्धा खरड़ खप्प खपिन्दा है।''

इस तरह की ठगों धूर्त, ढोंगी लोगों से सावधान रहें तथा- साधक जन भी पात्रता देखकर ही श्रीविद्या दीक्षा दें ऐसा कहा गया है क्योंकि ''अपात्र के हाथ में आया हुआ शस्त्र-शास्त्र का दुरुपयोग होता है अत: महर्षियों ने पात्रता की पहचान एवं योग्यता की शर्त रखी है श्रीविद्या दीक्षा के सम्बन्ध में यह पंक्ति ध्यान देने योग्य है-

अतिप्रियतमं देयं सुतदाराधनादिकम्। राज्यदेयं शिरोदेयं न देया पञ्चदशाक्षरी।।

- विधि निषेधों का पालन करते हुए साधना की जाये तो भगवती अवश्य कामना पूर्ण करती हैं पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि भगवती के द्वारा तत्काल होती है-

अर्थ की वृद्धि महेश करें, कमलापति केवल मुक्ति निसेनी,
कामना पूर गनेस करें, निजदासन की मति राखत पेनी।
धर्म कला को प्रकाशत भानु जथा दरसे परसे तिरवेनी,
सज्जन देखो विचारि हिये जगदम्ब जू चारों पदारथ देनी।।

साधक के क्षेम लाभार्थ अहर्निश जगदम्बा-प्रत्यक्ष रहती है लिखा है-

''अस्माकं क्षेमलाभाय जागर्ति जगदम्बिका।''

जगदम्बा के आराधकों के लिए कहा है -

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्ष:, यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोग:।
श्रीसुन्दरीसाधनतत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्य एव।।

प्रयोग सं. ६, इसमें सौन्दर्यलहरी के छठे श्लोक का आधार है

श्लोक का स्वरूप-

''धनु: पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्च विशिखा........''

इस श्लोक के आधार से भगवती की सपर्या करें।

सन्तान प्राप्ति प्रयोग
क्लीं क्लीं क्लीं साध्यम् क्लीं क्लीं क्लीं

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्णपत्र में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो २१ दिन तक प्रतिदिन ५०० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'धं' है। जप का दशांश हवन 'धं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'धं मार्जयामि नम:' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'धं तर्पयामि नम:' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। गन्ने के टुकड़े का नैवेद्य विहित है।

इस यन्त्र के प्रयोग से नपुंसकता की निवृत्ति होती है तथा सन्तान सुख मिलता है।।६।।

विनियोग - अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'धनु: पौष्पं मौर्वी' इति षष्ठमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषि:। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। धं बीजं। ह्रीं शक्ति:। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोग:।

कराङ्गन्यासौ - ह्रां .... अंगुष्ठाभ्यां नम: .... हृदयाय नम:।
ह्रीं .... तर्जनीभ्यां स्वाहा .... शिरसे स्वाहा।।
ह्रूं .... मध्यमाभ्यां वषट् .... शिखायै वषट्।
ह्रैं .... अनामिकाभ्यां हुं .... कवचाय हुम्।
ह्रौं .... कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ..... नेत्रत्रयाय वौषट्।
ह्र: .... करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ...... अस्त्राय फट्।

ऋष्यादिन्यास - ईशान भैरवाय ऋषये नमः .... शिरसि।
गायत्र्यनुष्टप छन्दोभ्यां नमः .... मुखे।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः .... हृदि।
धं बीजाय नमः .... लिंगे।
ह्रीं शक्तये नमः .... नाभौ।
ॐ आं ह्रीं कीलकाय नमः .... पादयोः।
मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ सर्वाङ्गे।

ध्यानम् -

षड्भुजां मेघवर्णां च रक्ताम्बरधरां पराम्। वरदां शुभदां रम्यां चतुर्वर्ग-प्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वा धकारं तु मन्त्रं च दशधा जपेत्। त्रिकोणरूपरेखायां त्रयो देवा वसन्ति च। विश्वेश्वरी विश्व-माता विश्वस्य-धारिणीति च।

पञ्चोपचार पूजन

लं पृथिवीतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै.......................... गन्धं परिकल्पयामि।
हं आकाशतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै.......................... पुष्पं परिकल्पयामि।
मं वायुतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै.......................... धूपं परिकल्पयामि।
रं वह्नितत्वात्मिकायै ललितादेव्यै.......................... दीपं परिकल्पयामि।
वं जलतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै.......................... नैवेद्यं परिकल्पयामि।
सं सर्वतत्वात्मिकायै ललितादेव्यै...................... सर्वोपचारान् परिकल्पयामि।

प्रयोग सं. ७ में सातवें श्लोक का आधार है

सप्तम श्लोक का स्वरूप-

"क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता......।।

शत्रु-विजय प्रयोग

क्लीं

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्णपत्र में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो ४५ दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'क्वं' (क्+व) है। जप का दशांश हवन 'क्वं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'क्वं मार्जयामि नमः' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'क्वं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करे। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। पुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। क्षीर तथा पायस का नैवेद्य विहित है।

मतान्तर में भस्म अभिमन्त्रित कर धारण करना चाहिए। इस प्रयोग से शत्रु पर विजय प्राप्त की जा सकती है।।७।।

विनियोग - अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'क्वणत्काञ्चीदामा' इति सप्तममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। क्वं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

कराङ्गन्यासौ - पूर्व वर्णित कराङ्गन्यास के अनुसार करें।

ऋष्यादिन्यास - बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें।

बीज न्यासः- क्वं बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् -

जपापावकसिन्दूरसदृशीं कामिनीं परां। चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च बाहुवल्लीविराजिताम्। कदम्बकोरकाकारः स्तनयुग्मविराजिताम्। रत्नकङ्कणकेयूरहारनूपुरभूषिताम्। एवं ककारंध्यात्वा तु हन्मत्रं दशधा जपेत्। शङ्खकुन्दसमा कीतिर्मात्रा साक्षात् सरस्वती। कुण्डलीचांकुशाकारा कोटिविद्युल्लताऽऽकृतिः। कोटिचन्द्रप्रतीकाशो मध्ये शून्यः सदाशिवः। शून्यगर्भस्थिता काली कैवल्यपददायिनी। अर्थश्च जायते देवि! तथा धर्मश्च नान्यथा। आसनं त्रिपुरा देव्याः ककारः पञ्चदेवतः। ईश्वरो यस्तु देवेशि! त्रिकोणे तत्त्वसंस्थितः। त्रिकोणमेतत् कथितं योनिमण्डलमुत्तमम्। कैवल्यं प्रपदे यस्याः कामिनी सा प्रतीर्तिता। एषा सा कादिविद्या चतुर्वर्गफलप्रदा। कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणम्। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्वलां पराम्। साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेविताम्। एवं ध्यात्वा 'व' कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। 'व' कारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययम्। पञ्चदेवमयं वर्ण पीतविद्युल्लतामयम्। चतुर्वर्गप्रदं शान्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।

पञ्चोपचार पूजन - पूर्ववत् करें।

प्रयोग सं. ८ में ८वें श्लोक का आधार है

आठवां श्लोक का स्वरूप- "सुधा सिन्धुधर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते.....।।

कारागार निवृत्ति प्रयोग

रं

प्रस्तुत यन्त्र को लाल चन्दन के टुकड़े में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो १२ दिन तक प्रतिदिन १२०० मन्त्र का जाप करें। (बीजाक्षर 'सुं' (स्+उ) है। जप का दशांश हवन 'सुं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'सुं मार्जयामि नमः' से तथा मार्जन का दशांश दर्पण 'सुं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। काली मिर्च का नैवेद्य विहित है।

लाल चन्दन के टुकड़े में यन्त्र लिखकर अनुष्ठान के बाद गले में धारण करने का भी विधान है। इस यन्त्र के प्रयोग से सकलकार्य जय तथा कारागार से निवृत्ति होती है।।८।।

विनियोग - अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'सुधासिन्धोर्मध्ये' इति अष्टममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सुं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

करान्न्यासौ – पूर्व वर्णित करान्न्यास के अनुसार करें।
ऋष्यादिन्यास – बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें
बीज न्यासः– सुं बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् –
करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्टभुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्। नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं श्रृणु चार्वाङ्गि शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पञ्चदेव मयं देवि पञ्चप्राणात्मकं सदा। रजसत्वतमोयुक्तं त्रिविन्दुसहितं सदा। पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि! अधः कुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें।

प्रयोग सं. ९ में ९वें श्लोक का प्रयोग है

श्लोक का स्वरूप-

"महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरेहुतवहं......।"

पञ्चभूत विजय प्रयोग

यं यं यं
साध्यम्
आं क्रों

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्णपत्र में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो १० दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'मं' है। जप का दशांश हवन 'मं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'मं मार्जयामि नमः' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'मं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। क्षीर तथा पायस का नैवेद्य विहित है।

इस यन्त्र के प्रयोग से बाहर गये व्यक्ति का प्रत्यागमन एवं पञ्चभूत जय की प्राप्ति होती है।।९।।

विनियोग – अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'महीं मूलाधारे' इति नवममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। 'मं' बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

करान्न्यासौ – पूर्व वर्णित करान्न्यास के अनुसार करें।
ऋष्यादिन्यास – बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें ।
बीज न्यासः– मं बीजाय नमः .... लिंगे।
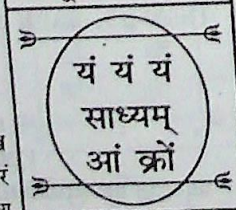
ध्यानम् –
कृष्णां दशभुजां भीमां पीतलोहितलोचनाम्। कृष्णाम्बरधरां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां मकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। मकारं श्रृणु चार्वाङ्गि। स्वयं परमकुण्डली। तरुणादित्यसङ्काशं चतुर्वर्गप्रदायकम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पञ्चप्राणमयं तथा।

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें।

प्रयोग सं. १०– इसमें दसवें श्लोक की अराधना है–

"सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितैः......।"

शरीरशुद्धि/वीर्यवृद्धि प्रयोग

ह्रीं
ह्रीं क्लीं ह्रीं
ह्रीं
ह्रीं क्लीं ह्रीं
ह्रीं

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्णपत्र में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो ६ दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'सुं' है। जप का दशांश हवन 'सुं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'सुं मार्जयामि नमः' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'सुं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। केले का नैवेद्य विहित है।

मतान्तर में लाल धागे में यन्त्र को बांध धारण करें। इस यन्त्र के प्रयोग से वीर्य वृद्धि एवं रजोदर्शन होता है।।१०।।

विनियोग – अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'सुधा-धारा-सारैश्चरण' इति दशममन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। सुं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

करान्न्यासौ – पूर्व वर्णित करान्न्यास के अनुसार करें।
ऋष्यादिन्यास – बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें।
बीज न्यासः– सुं बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् –
करीषभूषिताङ्गीं च साट्टहासां दिगम्बराम्। अस्थिमाल्यामष्ट भुजां वरदामम्बुजेक्षणाम्। नागेन्द्रहारभूषाढ्यां जटामुकुटमण्डिताम्। सर्वसिद्धिप्रदां नित्यां धर्मकामार्थमोक्षदाम्। एवं ध्यात्वां सकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। सकारं शृणु चार्वाङ्गि। शक्तिबीजं परात्परम्। कोटिविद्युल्लताकारं कुण्डलीमयसंयुतम्। पीतकर्णां त्रिनयनां च पीताम्बरधरां पराम्। द्विभुजां जटिलां भीमां सर्वसिद्धिप्रदायिनीम्। एवं ध्यात्वां सुरश्रेष्ठां तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। उकारं परमेशानि! अधः कुण्डलिनी स्वयम्। पीतचम्पकसङ्काशं पञ्चदेवमयं सदा। पञ्चप्राणमयं देवि! चतुर्वर्गप्रदायकम्।

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें।

बन्ध्यात्व निवृत्ति प्रयोग

श्रीं
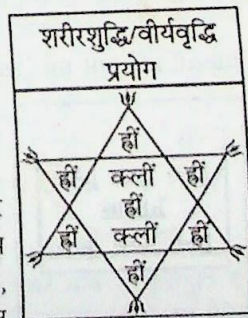
प्रयोग सं. ११ में एकादश श्लोक का वर्णन है-

"चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि.......।"

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्णपत्र में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो ८९ दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'चं' है। जप का दशांश हवन 'चं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'चं मार्जयामि नमः' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'चं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात् १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। गुड़ की खीर का नैवेद्य विहित है।

इस मन्त्र के प्रयोग से बाँझपन से निवृत्ति प्राप्त होती है और दीर्घजीवी बुद्धिमान संतान प्राप्त होती है।।११।।

विनियोग - अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'चतुर्भि श्रीकण्ठैः शिव' इति एकादशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। चं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

कराङ्गन्यासौ - पूर्व वर्णित कराङ्गन्यास के अनुसार करें।

ऋष्यादिन्यास - बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें।

बीज न्यासः- चं बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् -

तुषार-कुन्द-पुष्पाभां नानालङ्कार-भूषिताम्। सदा षोडश-वर्षीयां वराभय-करां पराम्।
शुक्ल-वस्त्रावृतकटीं शुक्लवस्त्रोत्तरीयिणीं। वरदां शोभनां रम्यामष्ट-बाहु-समन्विताम्।
च-वर्णं श्रृणु सु-श्रोणि चतुर्वर्ग-फलं प्रदं। कुण्डली-सहित धूम्रं महा-चण्डार्चितं पुरा।
सततः कुण्डली-युक्तं पञ्च-देव-मयं सदा। सर्व-सृष्टि-प्रदं वर्णं पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये!।

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें।

कवित्वशक्ति प्राप्ति प्रयोग

सौः

सौः

प्रयोग सं. १२- इसमें १२वें श्लोक की आराधना है-

"त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं...........।"

प्रस्तुत यन्त्र को जल में मध्यमा उँगली से लिखकर पूर्वाभिमुख हो ४५ दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'त्वं' है। जप का दशांश हवन 'त्वं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'त्वं मार्जयामि नमः' से, तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'त्वं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य हैं। मधु का नैवेद्य विहित है। इस अनुष्ठान का फल अतिविशिष्ट है तथा सद्यःफल प्रदायक है।
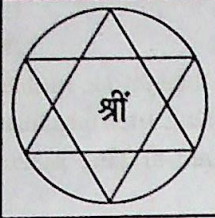
इस यन्त्र के प्रयोग से वशीकरण एवं कवित्व शक्ति प्राप्त होती है, मूक भी वाक्पटु हो जाते हैं।।१२।।

विनियोग - अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'त्वदीयं सौन्दर्यं' इति द्वादशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। त्वं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

कराङ्गन्यासौ - पूर्व वर्णित कराङ्गन्यास के अनुसार करें।

ऋष्यादिन्यास - बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें।

बीज न्यासः- त्वं बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् -

चतुर्भुजां महाशान्तां महामोक्षप्रदायिनीं सदाषोडशवर्षीयां रक्ताम्बरधरां पराम्।
नानालङ्कारभूषां व सर्वसिद्धिप्रदायिनीं। एवं ध्यात्वा तकारं तु मन्त्ररूपं सदा यजेत्।
तकारं चञ्चलापाङ्गि स्वयं परमकुण्डली। पञ्चदेवात्मकं वर्णं पञ्चप्राणात्मकं तथा।
त्रिशक्ति सहितं वर्णं आत्मादितत्वसंयुतम्। त्रिबिन्दुसहितं वर्णं पीतविद्युत्समप्रभम्।
कुन्दपुष्पप्रभां देवीं द्विभुजां पङ्कजेक्षणाम्। शुक्लमाल्याम्बरधरां रत्नहारोज्जवलां पराम्।
साधकाभीष्टदां सिद्धां सिद्धिदां सिद्धसेवितां। एवं ध्यात्वा वकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्
वकारं चञ्चलापाङ्गि कुण्डलीमोक्षमव्ययं। पञ्चप्राणमयं वर्णं त्रिशक्तिसहितं सदा।
त्रिबिन्दुसहितं मन्त्रमात्मादि तत्वसंयुतम्। पञ्चदेवमयं वर्णं पीतविद्युल्लतामयम्।

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें

वशीकरण प्रयोग

क्लीं क्लीं क्लीं
साध्यम्
क्लीं क्लीं क्लीं

प्रयोग सं. १३ में १३वें श्लोक का प्रयोग है

"नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं.......।"

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्णपत्र में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो ६ दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'नं' है। जप का दशांश हवन 'नं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'नं मार्जयामि नमः' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'नं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। त्रिमधु का नैवेद्य विहित है।

अनुष्ठान के अनन्तर अभिमन्त्रित यन्त्र को विधानपूर्वक गले में धारण करें। इस यन्त्र के प्रयोग से स्त्री-पुरुष का परस्पर वशीकरण होता है।।१३।।

विनियोग - अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'नरं वर्षीयांसं' इति त्रयोदशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। नं

बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

कराङ्गन्यासौ – पूर्व वर्णित कराङ्गन्यास के अनुसार करें।

ऋष्यादिन्यास – बीज न्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें।

बीज न्यासः– नं. बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् –

दलिताञ्जनवर्णाभां ललज्जिह्वां सुलोचनाम्। चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चिताम्। कृष्णाम्बर-परीधानां ईशद्धास्यमुखीं सदा। एवं ध्यात्वां नकारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। नकारं शृणु चार्वङ्गि! रक्तविद्युल्लताकृतिः। पञ्चदेवमयं वर्णं स्वयं परमकुण्डली। त्रिगुणाशक्तिसंयुक्तं हृदि भावय पार्वतिः!

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें

प्रयोग सं. १४ में १४वें श्लोक का प्रयोग है

"क्षितौ षट्पञ्चाशद्द्विसमधिकपञ्चाशदुदके.....।"

दुर्भिक्ष/रोगनिवृत्ति प्रयोग	
श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्ण पत्र में चन्दन से लिखकर पूर्वाभिमुख हो ४५ दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'क्षं' है। जप का दशांश हवन 'क्षं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'क्षं मार्जयामि नमः' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'क्षं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य हैं। क्षीर तथा पायस का नैवेद्य विहित है।

एकान्त स्थान में विधिवत् अनुष्ठित यह अनुष्ठान शीघ्र फल प्रदान करने वाला है। इस यन्त्र के प्रयोग से दुर्भिक्ष निवारण तथा वसन्तादिरोग की निवृत्ति होती है।।१४।।

विनियोग – अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'क्षितौषट्-पञ्चाशद' इति चतुर्दशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। क्षं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

कराङ्गन्यासौ – पूर्व वर्णित कराङ्गन्यास के अनुसार करें।

ऋष्यादिन्यास – बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें।

बीज न्यासः– क्षं बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् –

चतुर्भुजां त्रि-नयनां बाहु-वल्ली-विराजिताम्। रत्न-कङ्कण-केयूर-हार-नूपुर-भूषिताम्। शुक्लाम्बरांशुक्ल वर्णां द्विभुजां रक्त-लोचनाम्। श्वेत-चन्दन-लिप्ताङ्गीं मुक्ताहारोप-शोभिताम्।। एवं ध्यात्वां क्ष-कारं तु तन्मन्त्रं दशधा जपेत्। क्षकारं शृणु चार्वङ्गि! कुण्डलीत्रयसंयुतम्। चतुर्वर्ग-मयं वर्णं पञ्च-देव-मयं तु तत्। आघण्ट-सिंह बीजं च पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये!। शरच्चन्द्र-प्रतीकाशं हृदि भावय सुन्दरि!।

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें।

प्रयोग १५ में १५वें श्लोक का वर्णन है

"शरज्जयोत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमुकुटां......।"

विद्या-कवित्व-प्राप्ति प्रयोग	
सं	सं
सं	सं
सं	सं

प्रस्तुत यन्त्र को स्वर्णपत्र अथवा जल में चन्दन अथवा उँगली से लिखकर पूर्वाभिमुख हो ४१ दिन तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जाप करें। बीजाक्षर 'शं' है। जप का दशांश हवन 'शं स्वाहा' से, हवन का दशांश मार्जन 'शं मार्जयामि नमः' से तथा मार्जन का दशांश तर्पण 'शं तर्पयामि नमः' से करें। तर्पण के पश्चात १० बार मन्त्र का पाठ करें। फिर एक बार मन्त्र से पूर्णाहुति दें। रक्तपुष्प, बिल्व, तिल, यव तथा घृत हवनीय द्रव्य है। मधु, केला तथा चीनी का नैवेद्य विहित है।

जल में यन्त्र लिखें तो अनुष्ठान के बाद उसे पी जाय और स्वर्ण गले में धारण करें। इस मन्त्र के प्रयोग से ज्ञान और कवित्व शक्ति की प्राप्ति होती है।।१५।।

विनियोग – अस्य श्री त्रिपुरसुन्दरीमहाविद्याशताक्षरीबीजमन्त्राणां 'शरज्ज्योत्सना-शुद्धां' इति पञ्चदशमन्त्रस्य ईशान भैरवो ऋषिः। गायत्र्यनुष्टुप् छन्दसी। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता। शं बीजं। ह्रीं शक्तिः। ॐ आं ह्रीं कीलकम्। मम सर्वकामनापूर्त्यर्थे जपे विनियोगः।

कराङ्गन्यासौ – पूर्व वर्णित कराङ्गन्यास के अनुसार करें।

ऋष्यादिन्यास – बीजन्यास के अतिरिक्त पूर्ववत् करें।

बीज मन्त्र न्यासः– शं बीजाय नमः .... लिंगे।

ध्यानम् –

चतुर्भुजां चकोराक्षीं चारु-चन्दन-चर्चितां। शुक्लवर्णां त्रिनयनां वरदां च शुचिस्मिताम्। रत्नालङ्कारभूषाढ्यां श्वेतमाल्योपशोभितां। देववृन्दैरभिवन्द्यां सेवितां मोक्षकांक्षिभिः। शकारं परमेशानि शृणु वर्णं शुचिस्मिते! रक्त-वर्ण प्रभाकारं स्वयं परम-कुण्डली। चतुर्वर्ग-प्रदं देवि! शकारं ब्रह्मविग्रहं। पञ्चदेव मयं वर्णं पञ्च-प्राणात्मकं प्रिये!। त्रिशक्ति-सहितं वर्णं आत्मादि-तत्त्व-संयुतम्। रत्न-पञ्च-तमोयुक्तं त्रिकूट-सहितं सदा।

पञ्चोपचार पूजन पूर्ववत् करें।

"श्रीविद्यादीक्षा" श्रीविद्यासाहित्य एवं प्रमाणित स्फटिक श्रीयन्त्रो के समन्बन्ध में जानकारी हेतु कृपया निम्न पते पर सम्पर्क करें।

लेखक प्रस्तोता- पं. कृष्णानन्द उपाध्याय "किशन महाराज"
धर्मशाला रोड, पोस्ट. किशनगंज, बिहार, सम्पर्क-०६४५६-२२३९९३, ०९४३१४-११६.०

प्रत्यक्ष वेध-गणित से स्खलित भारतीय पञ्चाङ्ग

लेखक- शास्त्री भोलादत्त महातौल्य

हमारी मन्दाकिनी के अन्तर्गत गतिशील इस सृष्टि के रचनाकार को **'अयोनिजब्रह्म'** कहा गया है। यजुर्वेद (४०।८) में सृष्टिकर्ता को **'स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्'** बताते हुए योनिज जीवों से भिन्न कर दिया है अर्थात् वह 'परि अगात्' यानि कि चारों ओर को समान रूप से व्याप्त है। शरीर रहित (अकायम्) है। यदि शरीर रहेगा तो उसका कोई न कोई आकार अर्थात् एक निश्चित् सीमा अवश्य होगी तब वह 'परिअगात्' नहीं हो सकता। परन्तु वह है। शरीर होगा तो उसमें विकारों का होना स्वाभाविक है। परन्तु वह अस्नाविरम्, अव्रणम्, शुद्ध और अपापविद्ध है। मुण्डकोपनिषद् (१।१) में सृष्टिकर्ता के निमित्त 'ब्रह्मा देवानां प्रथमं बभूव विश्वस्यकर्ता भुवनस्य गोप्ता' कहा है। ब्रह्मा ने इस चराचर जगत में जड़-स्थावर-जंगम की रचना करके मनुष्य नाम के प्राणी को सार्थक वाणी और बुद्धि से युक्त भी कर दिया, उसे भौतिक सुख-सम्पदा-ज्ञान-विज्ञान की प्राप्ति के लिए अपराविद्या और मोक्ष रूप में ईश्वर की प्राप्ति के लिए परविद्या को प्रकाशित किया। देखें मुण्डकोपनिषद् (१।४-५) के निम्न दोनों मन्त्र-

'द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद् ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च।।४।। तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेद: सामवेदोऽथर्ववेद: शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति। अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते।।५।।

अपरा विद्या के अन्तर्गत चारों वेद ही उस अक्षर ब्रह्म के चार मुख हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष को वेदांग कहा गया है। चार वेद, चार उपवेद, छ: वेदांग, १०८ उपनिषद्, १८ पुराण, १८ उपपुराण तथा स्मृति व नीति ग्रन्थों के अतिरिक्त रामायण-महाभारतादि में अपरा विद्या का विस्तार हुआ है और सदैव ही होता रहेगा। वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में वेदांगों का समग्र वर्णन नहीं मिल पाता यह अन्यत्र विकसित है।

ज्योतिष नामक वेदांग को वेदों का नेत्र कहा गया है। नेत्रों का काम देखना है। अत: ज्योतिष में वर्णित विषयों की पुष्टि देखने के बाद ही मान्य है। जैसे कि यदि किसी ज्योतिष ग्रन्थ या किसी पंचांग में किसी अभीष्ट दिन-दिनांक को मकरार्क, उत्तरायण, शिशिरर्तु का प्रारम्भ लिखा हो तो केवल लिखने मात्र से सही नहीं मानना चाहिए क्योंकि सूर्य प्रत्यक्ष दृश्य पदार्थ है। सूर्य-चन्द्र दोनों को आबाल-वृद्ध, साक्षर-निरक्षर, स्त्री-पुरुष सभी जानते-पहचानते हैं। दोनों का उदयास्त और याम्योत्तर लंघन देखकर सत्यासत्य की परीक्षा की जा सकती है। सिद्धान्त गणित के सभी ग्रन्थों में ग्रहों के परीक्षण का आदेश है। सूर्य सिद्धान्त में स्पष्ट घोषणा है कि 'स्फुटं दृक्तुल्यतां गच्छे दयने विषुवे द्वये' अर्थात् दोनों अयन संक्रान्तियों और दोनों विषुव संक्रान्तियों के दिनों में दोपहर के समय छायार्क के द्वारा पंचांगीय सूर्य की तुलना अवश्य कर लेनी चाहिए। विषुव दिनों में दोपहर के समय १२ अंगुल लम्बे शंकु की छाया से ही पलभा का निर्धारण युगों से किया जाता रहा है। भास्कराचार्य ने सन् ११३० में ३६ वर्षायु होने पर खगोल विद्या के अनुपम ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणि की रचना कर ली थी। परन्तु जब उन्होंने देखा कि केवल मन्दफल संस्कार से गणितागत सूर्य मध्यान्ह के समय छायार्क से नहीं मिलता तो ३७वें वर्ष बीजोपनय नामक एक लघु पुस्तिका की रचना करके यह आदेश दिया कि केवल प्रत्यक्ष दृक्तुल्य सूर्य-चन्द्र ही धर्म-कर्मोपयोगी है, अन्यथा त्याज्य है। देखें पुस्तिका का ५६वाँ छन्द-

अत: कुमध्याद् गत खार्ध सूत्रे दृक्तुल्यतामेति नभश्चरो य:।
स एव शुद्ध परमार्थत: स्यात्स्फुटस्ततोन्ये विहगास्त्वतथ्या:।।

अर्थ है कि जो ग्रह स्वस्थान के सममण्डल (Prime Vertical) में गणितागत रूप से दृक्तुल्य हो केवल वही शुद्ध है अन्य सब व्यर्थ हैं।

भास्कराचार्य के उक्त कथन के अनुसार हमने वि. संवत् २०६१ की मकर संक्रांति के गणित को जाँचने का मन बनाया। सूर्य सिद्धान्त के आधार पर बने काशी-विश्वपंचांग के पृष्ठ २९ में १४ जनवरी २००५ को घं. १०।२५ बजे सूर्य की मकर संक्रांति लिखी है। मकर संक्रांति की मुख्य पहचान यह है कि भूमध्य रेखा से उत्तर (आर्यावर्त) में इस दिन सबसे छोटा दिन होता है और अगले दिन से दिनमान क्रमश: बढ़ने लगता है। यदि १०।२५ बजे का सूर्य स्पष्ट ८।२९°।५९'।६०'' हो तो सूर्य को मकर या २७०वें अंश में जाता हुआ मानेंगे। ऐसी दशा में इस समय की सूर्य क्रान्ति ठीक परमक्रान्ति के तुल्य होनी ही चाहिए। सूर्य सिद्धान्त में परमक्रान्ति २४ अंश और उसकी ज्या को १३९७ माना गया है। देखें- सू.सि. २/२८ का श्लोकार्ध 'परमापक्रमज्यातु सप्तरन्ध्र गुणेन्दव:'। परन्तु विश्व पंचांग में इस दिन की सूर्य क्रान्ति २१ अंश २२ कला मुद्रित है। अत: प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित हो गया कि मकर संक्रान्ति या फिर सूर्य क्रान्ति दोनों अथवा दोनों में से एक अवश्य अशुद्ध है। इस दोगले पन को क्या कहा जाय, समझ से परे है। सभी को सोचना चाहिए।

तब हमने काशी से ही प्रकाशित चिन्तामणिजन्त्री को देखा तो उसमें २१ दिसम्बर २००४ को घं. १८।१२ बजे सूर्य सायन मकर में उत्तरायण शिशिरर्तु लिखा हुआ मिला। पुन: १४ जन. २००५ को भी सूर्य की मकर संक्रान्ति घं. ५।४२ बजे (विश्वपंचांग से ४ घं. ४३ मि. पहले) लिखी हुई मिली। एक ही पंचांग में दो-दो मकर संक्रान्तियां? क्या आकाश में दो-दो सूर्य या दो-दो राशि चक्र सम्भव हैं? कदापि नहीं। तब फिर दो-दो अप्रामाणिक कथन क्यों? ज्योतिष शास्त्र में बिना प्रमाण के बिना वेधोपलब्ध ग्रहों

के कुछ भी लिखा मारना 'ब्रह्महत्या' के तुल्य होता है। बीजोपनय में भास्कराचार्य ने कहा भी है-

ज्योतिर्गणे शास्त्रपथातिवृत्तौ यद् ब्रह्महत्यां मुनयो वदन्ति।
नित्यं ग्रहाणामहरर्ध काले निर्णयमेतत्तु परीक्ष दक्षैः।।५७।।

अर्थ का सार ऊपर दे चुके हैं। देश के प्रसिद्ध ज्योतिषी लोगों को वेदांग के रूप में प्रसिद्ध ज्योतिर्गणित की सत्यता दिखाने और 'ब्रह्महत्या' के पाप से बचाने को 'छायार्क गणित' के द्वारा यह बताने का प्रयास करेंगे कि वर्षानुवर्ष की अवशिष्टि के कारण सूर्य संक्रान्तियां तथा सभी व्रत पर्व कहां के कहां चले गये हैं। इनमें प्रत्यक्ष गणित के द्वारा सुधार परमावश्यक हो गया है।

२१ दिसम्बर २००४ को रुद्रपुर का मध्यान्ह घं. १२।१० बजे था। हमने ४-५ दिन पहले से एक तख्ते में १२ डेसी मी. लम्बी एक मजबूत छड़ लम्बवत् ठोंक दी थी। छड़ की जड़ से लेकर लगभग १ मी. दूर तक हमने मि.मि. युक्त एक पैमाना चिपका दिया था। २१ ता. को हमने १२ बजे की शंकुछाया ११५ मिमि. (या १.१५ डेसी. मी.), १२।१० बजे की छाया १.१० डेसी मी. और पुनः १२।२० बजे की छाया १.१३ डेसी मी. मापी थी। इससे सूक्ष्म छाया मापने का हमारे पास कोई अन्य साधन न था और न भविष्य में हो सकता है। तीनों का औसत १.१५ + १.१० + .१.१३ = ३.३८ ÷ ३ = १.१२६६७ (५ अंक तक) लिया।

हमने सूर्य सिद्धान्त के अनुसार छाया कर्ण, सूर्य नतांश, नतांश-अक्षांश के द्वारा क्रान्ति को सिद्ध किया तो वह भारतीय खगोल पंचांग से नहीं मिली। इस समय की परमक्रान्ति का सूक्ष्म मान २३° २६' २६.६'', सूर्य भोग २६९° ४४' ४०'' और तज्जन्य सूर्य क्रान्ति २३° २६' २५.७'' आयेगी क्योंकि ज्या भोग × ज्या परमक्रान्ति = ज्या इष्ट क्रान्ति यह सू. सि. के सूत्र (२।२८) का एक रूपान्तरण ही है।

छाया को हम निकटतम मि.मी. से अधिक सूक्षम नहीं माप सकते। साथ ही 'खगोल पंचांग' द्वारा उपलब्ध आंकड़ों पर अविश्वास करना भी युक्ति युक्त नहीं है, क्योंकि वेधक्रिया खगोलीय अपरा विद्या का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अदृश्य तो केवल वही एक 'अदृश्य' है, बस।

∵ छायाकर्ण = $\sqrt{\text{छाया}^2 + \text{शंकु}^2} = \sqrt{१.१२६६७^2 + १२^2} = \sqrt{१४५.२६९३९}$ = १२.०५२७७५२ डेसीमी यह 'छायाकर्ण' का मान आया। यदि छाया में छायाकर्ण से भाग (आधार ÷ कर्ण) दिया जाय तो शीर्ष कोण (जो कि सूर्य का नतकोण है) की ज्या (Sine) आयेगी। इसे हमने अपने ही शीघ्र प्रकाश्यमान ग्रन्थ 'ललितार्क ज्योतिष' में स्वकर्ण भाजिता छाया नतांशज्या फलं रवेः' कहा है। सू.सि. (३।१४) से तुलना प्रार्थनीय है।

∵ नतांश ज्या = छाया ÷ छायाकर्ण = १.१२६६७ ÷ १२.०५२७७५२ = ०.०९३४७८१

इस नतांश ज्या का चाप (ज्या $^{-1}$) ५°२१' ४९'' यह मध्यान्ह कालिक रवि नतांश है। चूंकि सूर्य भूमध्य रेखा से दक्षिण में है अतः छाया नतांश दोनों उत्तर की ओर (+धनात्मक) रहेंगे। नतांश प्रकरण में उत्तर गोलीय अक्षांश ऋणात्मक माने जाते हैं। दोनों के चिन्ह भिन्न होने पर जो अन्तर हो वह मध्यान्ह कालिक 'सूर्यक्रान्ति' होती है।

∴ सूर्य क्रान्ति = अक्षांश + नतांश या - २८°४८'१४'' + ५° २१'४९' = -२३°२६' २५''

यह सूर्य की दक्षिणा क्रान्ति आ गयी। २८° ४८'१४'' रुद्रपुर का वेधोपयोगी अक्षांश (भौगोलिक २८°।५८') है। यहां पर भौगोलिक अक्षांश त्याज्य है।

'पराक्रान्ति ज्यया भक्ता क्रान्तिज्या ज्या रविर्धनुः' के अनुसार क्रान्तिज्या में परम क्रान्ति ज्या से भाग देने पर सूर्य की भुज ज्या आती है। प्रथम पद में भुजज्या का चाप ही सूर्य होता है। द्वितीयपद में प्राप्त चाप को १८०° अंश में घटा देते हैं। तृतीय पद में १८० अंश जोड़ते हैं। चतुर्थ पद में चाप को ३६०° अंश में घटा देते हैं। (सूर्य सिद्धान्त ३।१७-१९)।

∴ सूर्य भुजज्या = ज्या सूर्य क्रान्ति ÷ ज्या परम क्रान्ति
= ज्या २३° २६' २५'' ÷ ज्या २३° २६' २६.६''
= .३९७७९३ ÷ .३९७८ = .९९९९८२४ = ८९° ३९' ३६''

यह सूर्य का प्रथम पदीय भोग आया। यदि हम २१-२२ जून को छायार्क लिये होते अथवा भविष्य में कभी लेंगे तो लगभग (+ १° अंश) यही सूर्य आयेगा। परन्तु हम २१ दिसम्बर को छाया-छायार्क ला रहे हैं अतः ८९°३९'३६'' में १८०° अंश जोड़ने से खगोलीय सूर्य भोग (छायार्क) २६९°३९'३६'' आया। नैनीताल की वेधाशाला से सम्पर्क करने पर बाद में खगोल पंचांग वाले सूर्य २६९°४४'४०'' (+ १'') की ही पुष्टि हुई। स्पष्ट है कि सूर्य सिद्धान्त से गणित करने पर छायार्क भोग वास्तविक खगोलीय भोग २६९°४४'४०'' से मात्र ५'०४'' कम है। परन्तु इससे सूक्ष्म औसत छाया लाने के लिए हमें ५-६ बार छाया माप कर फिर औसत लेना होगा। भविष्य में पुनः पुनः करते रहने का विचार है।

यदि हम सूर्य सिद्धान्त के अनुसार २१-१२-२००४ को युगादि अहर्गण लायें तो वह २० दिस. २००४ को घं. २४।२७ बजे १८६४८९५ होंगे। इनके द्वारा घं. १२।१० बजे का मन्द फल संस्कृत सूर्यभोग २४५°३०'२४'' आता है। अर्थात् वेधागत सूर्य से

२४°१४'१६'' पीछे होने के कारण यह कर्मोपयोगी नहीं है। कुछ लट्ठ बुद्धि के लोग भारतीय खगोल पंचांग के सूर्यभोग को विदेशी गणित वाला सूर्य कह देते हैं। परन्तु हम कहना चाहते हैं कि पूर्ण रूप से भारतीय गणित करने के बाद हमारा छायार्क राफेल, अमेरिकन या फ्रैन्च पंचांगों से तो मिल रहा है किन्तु किसी भी भारतीय पंचांग से क्यों नहीं मिल रहा होगा? कारण के बारे में सोचने वाला कोई नहीं है। कोई भी यह नहीं सोचता कि भारत के खगोलीय गणित से निकाला गया सूर्यभोग विदेशी पंचांगों से इसलिए मिलता है कि वही वास्तविक भारतीय गणित है। उसी के द्वारा परिगणित ग्रह भोगों से ग्रहणादि दृश्य घटनाएं, शुद्धतम् रूप से दृश्य होती हैं। भारत के किसी भी प्राचीन ग्रन्थ से दृश्य घटनाओं को सही-सही नहीं दिखाया जा सकता है। सच को सच न मानना कौन सी परम्परा है?

पाठकों को सोचना चाहिए कि जिन पंचांगों से ग्रहण, चन्द्र दर्शन तथा उसका शौकल्य ठीक-ठीक नहीं बताया जा सकता है तो जातक की जन्म कुण्डली सही कैसी बनेगी? हमने २१ दिसम्बर २००४ को घं. १२।१० बजे का काशी विश्वपंचांग का सूर्य २४५°३०'२४'' निकाला है। परन्तु इस सूर्य से शुद्ध क्रान्ति नहीं लायी जा सकती। यदि क्रान्ति शुद्ध नहीं होगी तो शुद्ध चर एवं शुद्ध सूर्योदयास्त, दिन-रात्रि मान शुद्ध कैसे होंगे? तब फिर शुद्ध इष्टकाल तथा मुहूर्त शास्त्रों का क्या होगा? परन्तु भारतीय ज्योतिषी और यहां के धर्मशास्त्री लोग मकरार्क सबसे छोटे दिन के बजाय २४ दिन बाद बताते हैं। कुछ पंचांगों में तो दैनिक क्रान्ति दी ही नहीं जाती यदि होती है तो उसे सूर्य के द्वारा कदापि सिद्ध नहीं कर सकते हैं जैसे कि उक्त सूर्य २४५°३०'२४'' से विश्वपंचांग की सूर्यक्रान्ति २१°२२' नहीं आयेगी। धन्य है यहाँ के रूढ़िवादी धर्मान्ध लोग जो हमारे गणितीय सच को सच नहीं मानना चाहते और अशुद्ध पंचांगों की 'अन्धी दौड़' में आखें मूंदकर दौड़े जा रहे हैं। इस दौड़ के बारे में मुण्डकोपनिषद (१-८) ने क्या सुन्दर बता कही है-

अविद्यायामन्तरे वर्तमाना: स्वयंधीरा: पण्डितं मन्यमाना:।
जंघन्यमाना: परयन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धा:।।८।।

मन्त्रार्थ तो सरल है लेकिन विमर्श यह है कि कुछ लोग अविद्या के घने अन्धकार में इतने गहरे धंस जाते हैं कि उनको अपनी मूर्खता भी प्रिय लगती है। वे इसी में मग्न रहते हुए स्वयं को बहुत बड़ा धीर-वीर और 'महापण्डित' समझते रहते हैं परन्तु ऐसे मूर्ख लोग सत्य को जानते हुए भी सत्य न कह पाने के कारण अपने ज्ञानान्धरूपी कुएं में बार-बार भटकते हुए उसी तरह कष्ट पाते हैं जैसे कि 'अन्ध-कूप-न्याय के अनुसार अन्धे व्यक्ति के द्वारा ले जाये जाने वाले लोग (सही लक्ष्य न मिलने से) कष्ट पाते हैं और व्यर्थ इधर-उधर भटकते रहते हैं।

भास्करादि लोगों ने व्रत-पर्वों के निमित्त भूकेन्द्रीय ग्रह-गणित तथा प्रत्यक्ष्य दृश्य घटनाओं या जातकादि के लिए भू-पृष्ठीय ग्रह-गणित का आदेश दिया था। आज से २५-३० वर्ष पहले हमें भी यही लगता था कि जो कुछ पूर्वज करके गये हैं उसी पर चलते रहना ठीक है परन्तु जब हमने देखा कि प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर जो गणित किया जाता है उसकी पुष्टि वेधशाला नहीं करती हैं तो हमने पंचांग-गणित बन्द कर दिया था।

किसी शिशु का जन्म और सूर्य ग्रहण 'भूपृष्ठीय' घटनाएं हैं। इन दोनों के निमित्त भूपृष्ठीय ग्रह ही सार्थक होते हैं जैसे कि सूर्य ग्रहण के स्पर्श-मध्य-मोक्ष रुद्रपुर, दिल्ली या हरिद्वार हेतु अलग-अलग होते हैं तो इन स्थानों पर जन्मे जातकों के ग्रह-भोगांश भी अलग-अलग क्यों नहीं होने चाहिए? हमारे पंचांगों के ग्रह स्पष्ट भूपृष्ठ से लगभग ६३७० किमी. भीतर केन्द्र मान भूकेन्द्रीय गणित से बने होते हैं। २१ दिसम्बर वाले उदारहण में जो सूर्य भोग वेधशाला नैनीताल ने २६९°४४'४०'' के रूप में मान्य किया था, वह भी भूकेन्द्र से परिगणित है। आगामी दिनों में यदि कभी २१-२२ दिसम्बर को सूर्य ग्रहण हो (जैसे २०१४ ई.) तो वहां पर २४५° अंश वाला सूर्य काम नहीं आयेगा। वहां पर सूर्य-चन्द्र-राहु तीनों को भूपृष्ठीय बनाना पड़ेगा। पंचांगों में लिखा गया अमान्त काल में भी स्थान-स्थान के लिए भूपृष्ठीय संस्कार करना होगा यदि पंचांगीय ग्रहों में २४ अंश का अन्तर होगा तो ग्रहण का स्पर्श मोक्ष भी अन्तरित हो जायेगा जो चन्द्र ग्रहण गणित सही नहीं देगा तो वह 'दशाफल' सही कैसे दे सकता है? कृपया सोचें।

२२ दिसम्बर २०१४ को अद्यतन संशोधित भूकेन्द्रीय वेध सिद्ध गणित से 'अमान्त काल' घं. ७।०५ बजे होगा। इस समय का भूकेन्द्रीय सूर्य-चन्द्र भोग (लगभग) २७०°०६'३०'' के तुल्यतर और स्पष्ट राहु भोग लगभग १९६°१५'५७'' के आसन्न (∓ २'') होगा। मान्यता है कि औरस पुत्र के 'बात-बाप' दो नहीं होते हैं। अत: हम २२ दिसम्बर २०१४ तक जीवित रहने वाले या उस समय के गणमान्य लोगों से आग्रह करते हैं कि जो लोग इन दिनों प्रचलित सूर्य सिद्धान्त, मकरन्द, ग्रह लाघव, केतकी ग्रह गणित, सर्वानन्दकरण, रामविनोदादि से पंचांग बनाते हैं वे उक्त दिन का ग्रहण-गणित और ठीक अमान्त काल से कुछ आगे-पीछे जन्मे कल्पित शिशु का जन्मांग एक ही नियम से बना देवें। यदि तब तक जीवित रहे तो देखेंगे परन्तु कमलाकरभट्ट की भांति निम्न श्लोक मत गाइयेगा यथा- **'अदृष्टफल सिद्ध्यर्थंयथार्काद् युक्तितः कुरु। गणितं यदि दृष्ट्यर्थंतद् दृष्ट्युद्भवत: सदा।।'** (यदि व्रत पर्वादि या जातक सम्बन्धी न दिखाई देने वाली बातों का गणित हो तो उसे सूर्य सिद्धान्त से करो, परन्तु ग्रहणादि दृश्य पदार्थों का गणित हो तो उसे दृक्तुल्य गणित से ही बनाओ।)

यदि सूर्य सिद्धान्तकार का ऐसा विचार होता तो सू. सि. में ही उक्त श्लोक होता।

बाद के गणितज्ञ गणेश, मुनीश्वर, रंगनाथ, नित्यानन्द, केतकर, आप्टे तथा दफ्तरी आदि लोग भी उक्त नियम का पालन करते। परन्तु एक ने भी ऐसा नहीं किया। अतः सूर्य ग्रहण भूपृष्ठीय घटना होने के कारण उसका स्पर्श-मोक्षादि उक्त ग्रह भोगों से ही प्राप्त होगा। जबकि कम्प्यूटर वाले ७।०५ बजे जन्मे शिशु का चन्द्रभोग २४६°२'२७'' मानकर दशा-साधन करेंगे। सूर्यादि ग्रहों का प्रभाव उनकी रश्मियों के द्वारा ही मनुष्यों पर पड़ता है। जैसा कि हमने कहा भी है-

शुभानि विपरीतानि यच्छन्ति जन्मतो ग्रहाः। मारकाः कारकाः सन्ति स्वरश्मीषां प्रभावतः। जन्म से ही सूर्यादि ग्रह अपनी रश्मियों प्रभाव से शुभाशुभ और कारक-मारक का फल देते हैं।

ग्रहाणां रश्मयो नूनं भूतलैवापतन्ति हि। कुकेन्द्रे ताः कथं यान्ति किं धरा काच निर्मिता? ग्रह-रश्मियां भूतल पर पड़ती है। उन्हें भूकेन्द्रीय क्यों बनाते होंगे? भूकेन्द्र तक रश्मियां नहीं जा सकती हैं। पृथ्वी क्या कांच की बनी है?

प्राचीन आचार्य भी यह अवश्य जानते होंगे कि 'ग्रहणां चंचला गतिः'। अतः कोई भी मूलांक सदैव स्थिर नहीं रह सकता। शायद भास्कराचार्योवत बीजसंस्कार इसी बात को सिद्ध करने में सक्षम होता है। भास्कर स्पष्ट घोषणा करते हैं कि-

दृक्करणैक्य विहीनाः खेटाः स्थूला न कर्मणामर्हाः।
अतः इह तदर्हतायै तात्कालिक बीजविस्तरं वक्षे।।३।। *(बीजोपनय।)*

अर्थ है कि दृक्तुल्यता रहित 'ग्रह स्पष्ट' स्थूल होने से व्रत पर्व तथा अन्य कार्यों के योग्य कदापि नहीं हैं। अतः मैं ग्रहों को दृक्तुल्य बनाने हेतु 'बीज संस्कार' तात्कालिकरूप से कहता हूँ।

भास्कराचार्य का उक्त छन्द ११३१ ई. की रचना है, तब से आज तक ज्योतिष सूत्रों में अनेक संस्कार हो चुके हैं। सूर्य सिद्धान्त के मत से सूर्य की दैनिक मध्यम गति ५९'०८.१६९६'' या ३५४८.१६९६'' विकला है किन्तु इसे ५९'०८'' विकला ही प्रयोग किया जाता है और .१६९६ विकला भाग छूट जाता है। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के साथ भी होता है। कभी-कभी तो अहर्गण बनाने में पूरे एक दिन का अन्तर होने पर अहर्गण में एक दिन घटा-बढ़ाकर अभीष्ट वार से मिलाना पड़ता है। इस प्रकार के छूटे हुए भाग को 'प्रयोगात्मक च्युति' कहते हैं। यही च्युति १ वर्ष में ६१.९'' विकला और लगभग १२७३५८५ दिनों में एक अंश तक हो जाती है। इसी च्युति का परिमार्जन ही दृक्तुल्यता है।

जब भी सूर्य भोग शून्य, क्रान्ति शून्य और विषुवांश शून्य होता है, ठीक वही क्षण सौर वर्षारम्भ माना गया है। ऐसा होने के बाद दिनानुदिन ३५४८''.१७ विकला की मध्यम गति से ३६५.२४२१९ दिनों के बाद सूर्यभोग पुनः शून्यमय होता है। परन्तु कुछ लोग इन दिनों को ३६५.२५८७५६५ मानते हैं। इस प्रकार दोनों के मध्य .०१६५६६५ दिनों के अन्तर को सुधार कर सूर्य के शून्य भोग की जांच ही दृक्तुल्यता है। जो लोग छायार्क की भांति दृक्तुल्यता जांचे बिना केवल पंचांगों के सहारे 'महा ज्योतिषी' बने होते हैं, वे छल करते हैं। यथा-

प्रत्यक्ष दृश्यैस्तु खगैर्विनैव फलं वदेन्नेति हि भास्करोक्तिः।
भावस्थितैर्दृश्य ग्रहैर्हि नूनं योगोत्थ सर्वाणि फलानि सन्ति।। (ल.ज्यो.)

(भास्कराचार्य ने सि.शि. और बीजोपनय में स्पष्ट किया है कि प्रत्यक्ष दृश्य ग्रहों के बिना कोई भी शुभाशुभ फल कदापि नहीं कहना चाहिए। क्योंकि दृश्य ग्रहों की भाव स्थिति के द्वारा ही योगोत्थ फल अवश्य प्राप्त होते रहते हैं।)

अतः अब समय आ गया है कि पंचांगों में व्याप्त कदाचार का परिमार्जन किया ही जाना चाहिए। उत्तरायण का त्यौहार केवल सबसे छोटे दिन को मनाना चाहिए। उत्तरायण के बाद आने वाले (या १-२ दिन पहले भी) अमान्त से ही माघ शुक्ल और पूर्णिमा के बाद माघ-कृष्ण होना चाहिए। क्योंकि हमारा नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के साथ तो प्रारम्भ होता है किन्तु चैत्रमास मात्र १५ दिन में समाप्त कर दिया जाता है। ऐसा क्यों? है कोई सोचने वाला? ज्योतिष के नाम पर काल सर्पदोष या फिर वास्तु दोष के सहारे रोजी-रोटी कमाने वालों को चेतना चाहिए। 'अयने विषुवे द्वये' के घोष को अमान्य करके दक्षिणायन को सबसे बड़े दिन और उत्तरायण को सबसे छोटे दिन में न मनाना प्रथम दृष्ट्या ही शास्त्र विरोध है। जो व्यक्ति मोहान्धकार या अन्य किसी कामना से कार्य करता है वह यहाँ-वहाँ असिद्धि को पाता है। काली कमाई सद्गति तो दे ही नहीं सकती है। कृष्ण ने क्या सुन्दर बात कही है?

'यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
नरा सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।'

अतः हे भारत के ज्योतिषी! उठ और शास्त्रोक्त विधि से काम कर। तू चाहे तो कर सकता है।

'तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्मकतुमिहार्हसि।।'

हमें आशा है कि ज्योतिर्विदों की धृतराष्ट्र सभा में से कोई तो सत्य को समझने वाला होगा।

पत्र संकेत- श्री देवभूमि ज्योतिष शिक्षा केन्द्र,
बी-८१६, 'ललितार्थ' आवास विकास,
पो. रुद्रपुर (उत्तरांचल) पिन-२६३१५३, फोन- ९४१२९५९५१५

॥ ॐ श्री शरभ-शालुव-पक्षिराजाय नमः ॥

दुर्लभ-स्तोत्र, मन्त्र-विधान

पं० भूपेन्द्र दत्त शर्मा
'ज्योतिर्विद'

।।पूर्व-कथन।।

स्नेही–पाठकों व जिज्ञासु–साधकों एवं आदरणीय विद्जनों से सुप्रतिष्ठित–प्रसिद्ध 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग' के माध्यम द्वारा मुझे जो स्नेह–सम्मान, यश–कीर्ति प्राप्त हो रही है, वही मेरा पारश्रमिक है। दुर्लभ–अप्राप्य–लुप्त तथा गोपनीय साधनात्मक–विषय को ही देना, पञ्चाङ्ग के माध्यम से उनकों आप सभी के सम्मुख प्रकट करना मेरा अपना परम–दायित्व बनता है तथा यही मेरा लक्ष्य भी है। जिससे कि आपके द्वारा यह 'आगमोक्त साधन–निधि' व प्रयोग सुरक्षित–सङ्हित रह सके। मेरा कार्य तो मात्र इन विषय को यथा–सम्भव शुद्ध–प्रकार व परिचय देकर, उनका उद्धार कर प्रस्तुत करना है। यह विषय, यह मार्ग साधारण नहीं! केवल शब्दोबद्ध कार्य–रूपी नहीं! अपितु अति–रहस्यपूर्ण तथा सिद्धि–प्रदा व प्रतिष्ठा–दायक भी है, किन्तु इसमें है बड़ा ही अवरोध! अवरोध का तात्पर्य – कि साधना–मार्ग में साधक का जब मात्र चञ्चु–भर ही प्रवेश होता है, तब साधक पर उच्चाटन–आलस्य–काम –क्रोध–भय–रोग–क्लेश आदि और भी स्वाभाविक तथा अन्य और भी अस्वाभाविक शत्रुओं का प्रभाव बन उठता है। क्षोभ–दोष से परस्पर सामना करना पड़ता है। फल–स्वरूप इन सभी कार्य–कारणों से साधक की मनःस्थिति त्रस्त–ग्रस्त अथवा प्रतिकूल हो उठती है, जिससे कि साधना अपूर्ण ही हो पाती है। किन्तु साधना में यह सभी कार्य–कारण परीक्षावत् ही होते हैं। इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो पाना अर्थात् इन कार्य–कारणों पर विजय प्राप्त कर लेना ही साधना–सफलता की उच्चतर गति–स्थिति, सिद्धि के परम–लक्षण हैं। यहाँ यह कथन उन्हीं साधकों के लिए हो रहा है, जिनका लक्ष्य इस मार्ग में उच्च–स्थिति को प्राप्त करना है, न कि उन अल्प–समयावधि के साधकों के लिए, जो मात्र अपनी कामना–कार्य–पूर्ति हेतु ३–११ या २१ दिवसों के प्रयोग–अनुष्ठान सम्पन्न करने तक ही सीमित रहते हैं। अस्तु...

✡ विधान व प्रयोग–विधि सहित ✡

।। निग्रह-दारुण-सप्तक ।।

स्नेही–पाठकों व जिज्ञासु–साधकों के सस्नेह आग्रह से प्रेरित व प्रभावित हो पुनः 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग' में एक और अन्य विशेष, सिद्ध करने की विधि व परिचय–प्रयोग सहित 'निग्रह–दारूण–सप्तक' को प्रस्तुत किया जा रहा है। प्रस्तुत विषय मेरी गुरू–परम्परा व मेरे व्यक्ति–गत पुस्तकालय से ही प्रेषित है। जहाँ, जिज्ञासु–साँधकों व पाठकों के लिए यह विषय विशेष होगा, वहीं 'तन्त्र–विषय' में शोधरत अनुसन्धान–कर्ताओं, विद्वान् के लिए भी यह विषय महत्वपूर्ण होगा।

यह विषय 'आकाश–भैरव कल्पोक्त' है, 'आकाश–भैरव–कल्प'– (अध्याय–१६, १८ व ८१) में यह मन्त्र व स्तोत्र प्रकट हैं। मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय के 'हस्तलिखित' ग्रन्थ–सङ्ह में भगवान् श्री शरभेश्वर के कुछ साधनात्मक 'हस्तलिखित' ग्रन्थ हैं, जैसे–**शरभ–पञ्चाङ्ग, शरभार्चन–पद्धति, शरभ–पटल, शरभ शाबर–मन्त्र, शरभ–नित्यार्चन– पद्धति**–(जिसमें प्रातः कृत्य, अर्चन–पद्धति, काम्य–प्रयोग, कवच, सहस्रनाम, शरभाष्टक, दिव्य शतनाम्–स्तोत्र, मन्त्र–विधान, माला–मंत्र, चित्रकलाकर्षण–मन्त्र, व निग्रह–दारूण–सप्तक विषय लिपिबद्ध हैं), **शरभ सहस्राक्षरी–मन्त्र, मन्त्रात्मक शरभ–कवच, चित्तकलाकर्षण–मन्त्र, शरभ–षट्कर्म–प्रयोग** व–(कई प्रकार के प्रयोग–विधि सहित)–**'निग्रह–दारूण–सप्तक'** एवं **'आकाश–भैरव कल्प'** आदि। अधिकांश–रूप से ये विषय भगवान् श्री शरभेश्वर के परिचय व उनसे सम्बन्धित अनुसन्धानात्मक लेखों व दुर्लभ–चित्रों सहित 'श्री विश्व–विजय पञ्चाङ्ग'–(सम्वत् २०५७ से २०६० तक) में प्रकाशित हो चुके हैं। **श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप**–(परिचय व प्रयोग–खण्ड) में भी उक्त विषय, कुछ अन्य और विषय–वृद्धि के साथ दृष्टव्य होंगे। इन्हीं में से एक 'हस्त–लिखित' ग्रन्थ से यहाँ यह

साधना–विधान प्रेषित है, किन्तु विधान प्रस्तुत करने से पूर्व सर्व–प्रथम विधान के, अधिष्ठिता–देवता श्री शरभेश्वर का कुछ परिचय ज्ञात करें (यह परिचयादि पञ्चाङ्ग के पूर्व के अङ्कों में प्रकाशित हो चुके हैं)——

।।श्री शरभेश्वर-परिचय।।

भगवान् श्री विष्णु के उग्रावतार श्री नृसिंह के गर्व–मर्दन हेतु भगवान् शिव ने 'शरभावतार'–(आठ–पैरों से युक्त, जिसका आधा–शरीर पक्षी व आधा– शरीर मृग का था) लिया था। शिव के इस विचित्र–रूप को नृसिंहजित्, महा–रूद्र, महा–भैरव, महा–स्कन्धिन्, आकाश–भैरव, आशु–गारूड, अष्ट–पाद, शरभ,शालुव, पक्षिराज, पक्षीन्द्र, पक्षेश्वर, खगेश्वर, खगपति, नील–रूद्र, नील–भैरव आदि कहा जाता है। शिव व लिङ्ग पुराणोक्त इनकी अवतरण–कथा का सार कुछ इस–प्रकार से है ——

जब भगवान् श्री विष्णु के अंशात्मक अवतार भी नृसिंह ने महा–बली दैत्य हिरण्यकशिपु का वध कर दिया, तब कार्य उपरान्त उनको श्री विष्णु के तेज में विलीन हो जाना चाहिए था। किन्तु श्री नृसिंह ऐसा न कर सके। अहङ्कार–वश व क्रोध के प्रभाव में, वे अपनी क्रोधाग्नि के प्रचण्ड–तेज से विश्व को दग्ध करने लगे, तो सम्पूर्ण प्राणियों को अत्यन्त कष्ट होने लगा। त्राहि–त्राहि मच गई। देवता उनकी स्तुति करने लगे, उनको समझाने भी लगे, किन्तु देवता भी उनके महा–क्रोध के आगे टिक न सके। तभी सभी देवों ने देवाधिदेव महादेव का ध्यान किया। तब भगवान् शिव ने अपने प्रिय–गण वीरभद्र को आदेश दिया कि वे जाकर श्रीनृसिंह को समझाएँ, उनका क्रोध शान्त कराएँ। वीरभद्र उनको समझाने गए, उन्होंने वीरभद्र की भी एक न सुनी और विपरीत वीरभद्र को ही मारने के लिए दौड़ पड़े। यह देख उसी–क्षण भगवान् शिव ने एक ऐसे विचित्र व विशाल–पक्षी का रूप धारण किया, जो देखने में बड़ा ही भयानक था। इस पक्षी का आधा–शरीर मृग व आधा–शरीर पक्षी का था। जिसके तीन–नेत्र थे, जिसमें चन्द्र, सूर्य व अग्नि का वास था। वज्र के समान नख, अत्यन्त–उग्र व चञ्चल– जीभ, बड़े–बड़े पङ्ख, जिनमें काली व दुर्गा विराजित थी। कण्ठ में–(काल) भैरव, हृदय व उदर–भाग में प्रलय–काल वाडवाग्नि और जङ्घाओं में व्याधि व मृत्यु तथा अष्ट–पादों (पैरों) में शिव की अष्ठ–मूर्तियाँ (शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, ईशान, महादेव और पशुपति) विराजित थी और पैर के नखों में इन्द्र का वास था। इनके उड़ने की गति अति–प्रचण्ड वायु के वेग वाली थी—— यही 'शरभावतार' था। इन्हीं अष्टपाद–(आठ–पैरों वाले) शरभ–पक्षिराज ने अपने तीक्ष्ण–पञ्जों से भगवान् श्री नृसिंह को पकड़ उठा लिया और आकाश–मार्ग में इतना भीषण चक्कर लगाया कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पलय के समान डोल गया। अपनी तीखी–चोञ्च से श्री नृसिंह की त्वचा को इन्होंने उखाड़ फेंका। यह सब घटित होता देख श्री नृसिंह आश्चर्य में पड़ गए और अपने–आपको 'पक्षिराज' के कठोर–बन्धनों से मुक्त करने का प्रयास करने लगे, किन्तु मुक्त न हो सके, तब श्री नृसिंह का क्रोध–अहङ्कार दूर हो पाया और वह दुःखी पीड़ित–व्याकुल हो, अपनी मुक्ति के लिए भगवान् श्री शरभेश्वर–(पक्षिराज) की स्तुति करने लगे, क्षमा याचना करने लगे। तब जाकर भगवान् श्री शरभेश्वर ने उनको अपने बन्धनों से मुक्त किया।

प्रस्तुत कथा 'श्री शिव महा–पुराण –(तृतीय शत–रूद्र संहिता, अध्याय–१०–१२), 'लिङ्ग –पुराण'–(अध्याय–६५–६६) में विस्तार–पूर्वक आई है। 'कालिका–पुराण'–(अध्याय २९–३० व ३५) में भी 'शरभावतार' की कथा का वर्णन आया है, किन्तु उसमें श्री विष्णु के 'वराहावतार' को संयमित करने के उद्देश्य से शिव का 'शरभावतार' लेने का प्रसङ्ग व दोनों में परस्पर घोर–युद्ध का वर्णन हुआ है। यद्यपि उक्त–पुराणों में इनकी कथा का वर्णन है। तथापि, फिर भी व्यवहारिक दृष्टि से जन–साधारण में इनके स्वरूप चरित्र व ज्ञान का वर्णन लुप्त है। शिव के इस विचित्र लीलामय रौद्रावतार स्वरूप होते हुए भी इनका परिचय जन–साधारण में तो क्या, 'तन्त्र–साधक–समुदाय' के मध्य भी पूर्ण–रूप से परिचित–प्रसिद्ध नहीं! उच्च–कोटि के साधकों को भी 'शरभ' विषय–परिचय का ज्ञान नहीं! किन्तु जिन साधकों को इनके विषय–परिचय का ज्ञान है, वे इनकी महत्ता को एक ही स्वर में उच्च–उद्घोष के साथ स्वीकार करते हैं। ये साधकों के संरक्षक एवं प्रबल से प्रबल शत्रुओं को घोर–दण्ड देने के लिए सर्व–प्रथम एवं अंतिम देवता के रूप में पूजित हैं। शत्रु–हन्ता, शत्रु–दमनकर्ता, प्रचण्ड–संहारक भगवान् श्री शरभेश्वर अपनी कृपा–दृष्टि से साधकों को अभेदीय–कवच प्रदान कर, सदैव सुरक्षित रखते हैं। इनकी साधना से साधक अपने शत्रुओं को एच्छिक दण्ड देने की सामर्थ्य रखता है।

।। कुछ सामान्य नियम-निर्देश।।

श्री शरभेश्वर–पक्षिराज की साङ्गोपाङ्ग साधना——जिसमें यन्त्रावरण पूजा–पद्धति, मन्त्र–जप–पुरश्चरण, कवच, स्तव–स्तोत्र–अष्टक, सहस्त्र–नाम आदि विषय–विधानों का समावेश हो अथवा कोई भी काम्य–प्रयोगार्थ कर्म–साधना हो, वह अत्यन्त–उग्र होती है। इसी–कारण इनकी साधना अथवा कोई काम्य–प्रयोग करना प्रत्येक के लिए

सम्भव भी नहीं! कोई –कोई साधक ही इनकी साधना में उत्तीर्ण–प्रवीण हो पाता है। यहाँ इनका सुप्रसिद्ध 'निग्रह–दारूण–सप्तक' –(मन्त्र–विधान सहित) ही प्रयोगार्थ रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसका मुख्य कार्य–फल शत्रु को घोरत्तम दण्ड देना होता है। साधकों का अन्तिम अकाट्य–अव्यर्थ व पूर्ण–विश्वसनीय एवं देवों द्वारा परमादरणीय इस महा–दिव्य व महिमाशाली 'निग्रह–दारूण–सप्तक' के समस्त श्लोकों में शत्रु को किस–किस विधि–प्रकार से दण्ड देने, क्रोधावेश से युक्त यमगणों द्वारा शत्रु के प्राण को हरण करने, तीखी–पैनी चोञ्च से शत्रु के अङ्गों को खण्ड–खण्ड करने, उसको गदा–मूसल आदि अस्त्रों से प्रहारित कर मार देने, अपनी कठोर महा–शक्तिशाली मुष्टिका से शत्रु के मस्तिष्क को जीर्ण–क्षीर्ण कर देने तथा शत्रु को शीघ्राति–शीघ्र–त्वरित ही यमपुरी का निवासी बना देने, शत्रु की भयङ्कर–घोर–विभस्त–दयनीय स्थिति बना देने की प्रार्थना भगवान् श्री शरभ–राज महादेव से की गई है। भगवान् शिव के सत्य–कथन व साधकों के अनुभव से प्रबल से प्रबल शत्रु भी इस 'दारूण–सप्तक' के पाठ–प्रयोग से समूल नष्ट हो जाता है–(यद्यपि भगवान् श्री शरभेश्वर के प्रत्येक मन्त्र–स्तोत्र आदि कर्म–विधानों में भी यही विशेषता है)। इस स्तोत्र के पाठानुष्ठान व प्रयोगकर्ता साधक को कुछ सामान्य–बातें ध्यान में रखनी चाहिए, यथा—

* 'निग्रह–दारूण–सप्तक' अपने श्री गुरूदेव की आज्ञा प्राप्त करके ही करें। यदि दीक्षित न हो तो किसी श्रेष्ठ मुहूर्त–पर्व में श्रेष्ठ ब्राह्मण–साधक से दीक्षा–रूप में प्राप्त कर आरम्भ करें।

* दीक्षा–प्राप्ति के पश्चात् अपने श्री गुरूदेव के मार्ग–निर्देशन में साधक इस प्रस्तुत–विधान को रविवार के दिन से आरम्भ करे। १० दिन, रात्रि के समय, उत्तराभिमुख होकर, प्रति–रात्रि 'दारुण–सप्तक' के दो सौ पाठ –(दो माला) करे – (यहाँ यह 'दारुण–सप्तक' सम्पुट रहित ही करना है)।

* विधान दिवसों के अन्तर्गत साधक पूर्णतः पवित्रावस्था में रहे, ब्रह्मचर्य का पालन हो, भूमि पर शयन करें तथा पर निन्दा–स्तुति करने व सुनने से बचे। शुद्ध सात्विक व अल्पहार गृहण करे एवं परान्न–जल से दूर रहे।

* पाठ के समय साधक स्वच्छ रक्त–वस्त्र–(बिना–सिले) धारण करे, रक्त कम्बलासन पर बैठें। रुद्राक्ष या भद्राक्ष की माला से जप–पाठ करें। दीप में गौघृत का उपयोग करें। नित्य भोग हेतु तीखे व मधुर दोनों प्रकार के पदार्थ हो। सभी पात्र कास्य अथवा ताम्र–धातु के हों।

* नित्य प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर शिवालय में जाकर भगवान् श्री शरभेश्वर का ध्यान करते हुए 'शिव–लिङ्ग' पर 'रुद्र–सूक्त' के द्वारा जलाभिषेक करे। यदि 'रुद्र–सूक्त' के पाठ का अभ्यास न हो, तो श्री शरभ–शिव का ध्यान करते हुए 'शिव–लिङ्ग' पर जलाभिषेक अवश्य करें।

* भगवान् श्री शरभेश्वर की प्रसन्नता एवं विधान की निर्विघ्नता हेतु साधक नित्य प्रति–दिन बटुक व कुमारी को कुछ न कुछ फल–मिष्ठान–द्रव्य प्रदान करे।

* १०वें दिन ही जितने पाठ हुए हैं, उनका दशांश–संख्या में हवन करें (अशक्त होने पर दशांश का दोगुणा पाठ व जप पृथक से कर लें), तब एक माला मूल मन्त्र व दस पाठ दारुण–सप्तक से हवन कर लें। ध्यान रहे दशांश तर्पण, मार्जनादि का क्रम अपरिवर्तनीय ही रहेगा।

* हवन हेतु समिधा बिल्व, आम्र व शमी तथा शाकल्य काले–तिल, पञ्च–मेवा, गुग्गल, शर्करा, मधु, बिल्व के पत्र–फल व अन्य सामान्य सामग्री का उपयोग हो।

* ब्राह्मण भोजन में कुमारी व बटुक को भी भोजन द्रव्य–दक्षिणा से संतुष्ट करना आवश्यक है।

* सम्पुटित 'निग्रह–दारुण–सप्तक' का पाठ तभी करें, जब किसी शत्रु पर प्रयोग करना हो, अन्यथा मूल–पाठ ही दैनिक–साधना में पर्याप्त है। जब मूल–पाठ करना हो, तब विनियोग अपनी कामना के अनुसार करे, जैसे, श्री शरभेश्वर कृपा प्राप्त्यर्थे, सर्व–रोग निवारणार्थे या अमुक–रोग शमनार्थे, धमार्थ–काम–मोक्षार्थे, अमुक ग्रह–पीड़ा निवारणार्थे, सर्व–शत्रु दमनार्थे या निष्काम–भाव से 'श्री शरभेश्वर प्रीत्यर्थे' व्यक्त करे (निष्काम–भाव से इस स्तोत्र का पाठ अपने गृह–स्थित पूजा–कक्ष में करें। इससे स्वतः ही वर्तमान व भावी–शत्रु व शत्रुकृत् आपदाओं का नाश होता है) और यदि सम्पुटित–पाठ ही करना हो, तब राष्ट्र में शान्ति की, समाज में प्रगति की कामना करते हुए तथा जिनके कारण राष्ट्र में अशान्ति व असुरक्षा की वृद्धि हो रही है, ऐसे **'राष्ट्र व समाज'** के शत्रुओं के विनाश हेतु : **'अमुक शत्रुणां'** के स्थान पर अपनी कामना संयुक्त करें (देखें, जैसा कि लेख के अंत में 'विचारणीय–कथन' के अन्तर्गत व्यक्त हुआ है)।

* प्रयोग समाप्ति के पश्चात् 'शान्ति' हेतु साधक गऊ दुग्ध, दही, घृत व शर्करा, मधु के पञ्चामृत द्वारा शिव–लिङ्ग पर 'रुद्र–सूक्त' से अभिषेक करे (या करायें) तथा शान्ति–पाठ कर 'क्षमा–प्रार्थना' करें।

* जब शत्रु अकारण बाधा पहुँचाए, शत्रु से वाद–विवाद हो, व्याधि–कष्ट

रोगादि से व्यक्ति पीड़ित हो, तब प्रयोग–रूप में, निराहार रहकर–(भूखे पेट अर्थात् पाठ करने से पूर्व कुछ भी न खाएँ), 'निग्रह–दारूण–सप्तक' स्तोत्र का पाठ रविवार से मङ्गलवार–(३ दिन) तक दस–पाठ नित्य–रात्रि में करे। निश्चित–रूप से फल की प्राप्ति होगी, शत्रु को अवश्य ही दण्ड मिलेगा, शत्रु–रूपी व्याधि–कष्ट से मुक्ति मिलेगी। ध्यान रहे कि अभिचार–प्रयोग शास्त्रों में निन्दनीय बताए गये हैं, किन्तु स्वरक्षा अथवा असहाय रक्षार्थ शत्रु को दण्ड देना निन्दनीय नहीं है। नित्य प्रति–दिन ही दस–पाठ करने से साधक के बाहरी शत्रुओं का नाश तो होता ही है, साथ ही साथ साधक के आन्तरिक षड्–रिपु अर्थात् शत्रुओं–(काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद व मात्सर्य) का भी दमन होता है।

* 'निग्रह–दारूण–सप्तक' का पाठ भूलवश भी भगवान् श्री विष्णु–नृसिंह के मंदिर में न करें। अन्यथा यह पाठ अति–उग्र हो जाता है–(यह नियम सामान्य साधकों के लिए है, 'शाक्त–सम्प्रदाय' के पूर्णाभिषिक्त, महा–विद्या की कृपा से अनुग्रहित साधकों के लिए वह नियम नहीं है)। काम्य–प्रयोगार्थ इसका पाठ–कर्म किसी शक्ति–पीठ या एकलिङ्ग-शिवालय, वीरभद्र अथवा बटुक–भैरव मंदिर या विशेष निर्देशिष्ट श्मशान–भूमि आदि स्थानों में करना चाहिए।

अनिवार्य :

किसी भी देवता की पूजा–पाठ–साधना से पूर्व स्वस्ति–वाचन, गुरू–गणपति पूजन, प्रथम अनिवार्य कर्म है। विशेष तो यह है कि इष्ट–देव की पूजा से पूर्व आसन–स्थापना, तीर्थावाहन, पवित्रीकरण, आचमन, दीप–स्थापन, श्री गुरूदेव–गणपति स्मरण–पूजन, (श्री शरभ)–सङ्कल्प, आसन–शोधन, पृथ्वी–प्रार्थना, शिखा–बन्धन, दिग्बन्धन, भूतापसारण, भू–शुद्धि, भैरव–नमस्कार व साधना–कर्म की आज्ञा, भूत–शुद्धि व आत्मप्राण–प्रतिष्ठा तथा अन्तर्मातृका व बहिर्मातृका–न्यास अवश्य कर लेने चाहिए। एक सामान्य–साधक इस क्रम से भले ही परिचित न हों, किन्तु जिज्ञासा उत्पन्न होने पर वह इस क्रम को अपने श्री गुरूदेव या किसी भी साधक से सुलभता से ज्ञात कर सकता है।

।। विधान व प्रयोग-कर्म आरम्भ।।

'मन्त्र व माला–मन्त्र विधान'

विनियोग :–

ॐ अस्य श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज मन्त्रस्य श्री कालाग्नि–रूद्र ऋषिः, जगती–छन्दः, श्री शरभेश्वरो देवता, खं बीजं, स्वाहा शक्तिः, फट् कीलकं शत्रु–संहारणार्थे श्री शरभेश्वर मन्त्र–जपे विनियोगः।

अपने दाएँ हाथ में जल लेकर–(आचमनी अथवा हथेली में) उपरोक्त विनियोग का उच्चारण करें, पश्चात् जल को किसी पात्र में छोड़ दें। तत्पश्चात् ऋष्यादि–न्यास तथा कर व हृदयादि षडङ्ग न्यास करें–

ऋष्यादि न्यास :–

ॐ श्री कालाग्नि–रुद्र ऋषये नमः शिरसि।
जगति–छन्दसे नमः मुखे।
श्री शरभेश्वर–देवतायै नमः हृदये।
खं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा–शक्तयै नमः पादयोः।
फट् कीलकाय नमः नाभौ।
शत्रु–संहारणार्थे श्री शरभेश्वर मन्त्र–जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर–न्यास :–

ॐ खें खां खं फट् अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् तर्जनीभ्यां नमः।
सर्व–शत्रु संहारणाय मध्यमाभ्यां नमः।
शरभ–शालुवाय अनामिकाभ्यां नमः।
पक्षिराजाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
हुं फट् स्वाहा करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि षडङ्ग –न्यास :–

ॐ खें खां खं फट् हृदयाय नमः।
प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् शिरसे स्वाहा।
सर्व–शत्रु संहारणाय शिखायै वषट्।
शरभ–शालुवाय कवचाय हुं।
पक्षिराजाय नेत्रत्रयाय वौषट्।
हुं फट् स्वाहा अस्त्राय फट्।

एवं

ॐ खें खां खं श्री शरभास्त्राय हुं फट्–(मात्र उच्चारण करें)।

अनामिका एवं अङ्गुष्ठ के योग से –(तत्व–मुद्रा द्वारा) सम्पूर्ण न्यास करें। वैसे प्रत्येक न्यास के लिए पृथक–पृथक मुद्रा निर्मित की जाती है, किन्तु 'तत्व–मुद्रा' द्वारा भी–(सुलभता की दृष्टि से) न्यास सम्पन्न किया जाता है। न्यास के पश्चात् दिग्बन्धन करें–

दिग्बन्धन :–

ॐ भूर्भवः स्वः ॐ। अपने चारों ओर तीन चुटकी बजाकर,–'अस्त्र–मुद्रा' द्वारा अर्थात् दाएँ हाथ की तर्जनी व मध्याङ्गुली से बाएँ हाथ की हथेली पर तीन–ताली बजाएँ।

स्पष्टीकरण :–

'दिग्बन्धन' के अनेक प्रकार हैं, जिनमें कुछ का विस्तारमय–क्रम है, तो कुछ का मध्यम। प्रस्तुत 'दिग्बन्धन' लघु–क्रम में है। वैसे भगवान् श्री शरभेश्वर का भी 'दिग्बन्धन–मन्त्र' है, जो कुछ विस्तार–पूर्वक है। अन्य कुछ देवताओं के भी स्वतन्त्र 'दिग्बन्धन–मन्त्र' प्राप्त होते हैं।

'दिग्बन्धन' के पश्चात् भगवान् श्री शरभेश्वर का मूल–ध्यान' करें–

ध्यान :–

चन्द्रार्काग्निस्त्रि–दृष्टिः कुलिश–वर– नखश्चञ्चलोऽत्युग्र–जिह्वः।
काली–दुर्गा च पक्षौ हृदय–जठरगो भैरवो वाडवाग्नि।।
ऊरूस्थौ व्याधि–मृत्यू शरभ–वर–खगश्चण्ड–वातातिं–योगः।
संहर्ता सर्व–शत्रून् स जयति शरभः शालुवः पक्षिराजः।।१।।
मृगस्त्वर्ध–शरीरेण पक्षाभ्यां चञ्चुना द्विजः,
अधो–वक्त्रश्चतुष्पाद ऊर्ध्ववक्त्रश्चतुर्भुजः।
कालाग्नि–दहनोपेतो नील–जीमूत–सन्निभः,
अरिस्तद् दर्शना देव विनष्ट बल–विक्रमः।।२।।
सटा–छटोग्र–रूपाय पक्ष–विक्षिप्त–भूभृते।
अष्ट–पादाय रूद्राय नमः शरभ–मूर्तये।।३।।

स्पष्टीकरण :–

प्रस्तुत ध्यान भगवान् श्री शरभेश्वर का मूल व वृहद् ध्यान है, किन्तु कुछ साधक–जन इनका ध्यान **'चन्द्रार्काग्निस्त्रि दृष्टि..... शरभः शालुवः पक्षिराजः'** तक ही करते हैं और कुछ अन्य ध्यानों को स्वीकारते हैं–(क्योंकि भगवान् श्री शरभेश्वर के कई संख्या में ध्यान प्राप्त होते हैं, जिनमें कुछ ध्यान 'शतनाम, सहस्रनाम–स्तोत्र, तो कुछ काम्य–प्रयोगों के आधार पर हैं)। अन्य ध्यानों में एक ध्यान यह भी है–**'मृगस्त्वर्ध–शरीरेण पक्षाभ्यां.... अष्ट–पादाय रूद्राय नमः शरभ–मूर्तये'** जो इसी वृहद् ध्यान के अंतिम दो श्लोक हैं। कई ग्रन्थों, जैसे 'मन्त्र–कोष'–(पृष्ठ–७८), 'पुरश्चर्यार्णव–तन्त्र'–(पृष्ठ–७०४–५, अष्टम–तरङ्ग) में उक्त 'संयुक्त' श्लोकों का ही ध्यान हैं, तो कुछ ग्रन्थ, जैसे श्री बटुक–भैरव–साधना'–(पृष्ठ–१८८) व 'शरभ–कल्प' (पृष्ठ–२०) आदि में एक ही ध्यान को दो भागों में विभक्त कर पृथक–पृथक ध्यान दिया है। स्पष्ट तो यह है कि अन्तिम के दो श्लोकों में वर्णित ध्यान, प्रथम श्लोकों में वर्णित ध्यान का ही विस्तार करते हैं– (ऐसा स्पष्टीकरण 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग 'सम्वत् २०५८, पृष्ठ–१४५ में भी दिया गया है)।

ध्यान के पश्चात् 'मानस–पूजन' करें–

मानस–पूजन :–

१. अधोमुख कनिष्ठाङ्गुष्ठ से **'गन्ध–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।
२. अधोमुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज प्रीतये समर्पयामि नमः।
३. ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज प्रीतये घ्रापयामि नमः।
४. ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से **'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज प्रीतये दर्शयामि नमः।
५. ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से **'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए–
ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज प्रीतये निवेदयामि नमः।
६. ऊर्ध्व–मुख सर्वाङ्गुलियों से **'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए –
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज प्रीतये कल्पयामि नमः।

स्पष्टीकरण :–

उपरोक्त 'मानस–पूजन' का प्रस्तुत क्रम मूल 'हस्त–लिखित' विधान में नहीं था, 'हस्त–लिखित' विधान में लिपिबद्ध 'मानस–पूजन' का क्रम उपरोक्त से पूर्णतः पृथक है। यद्यपि उसमें अन्तिम का एक क्रम अधिक है, फिर भी 'मुद्रा–निर्माण' में भिन्नता–भेद प्रकट होने से सम्पूर्ण–क्रम में संशयात्मक स्थिति बनती है। जिज्ञासु साधक–जनों को 'मानस–पूजन' करने में 'उचित व ज्ञानात्मक–क्रम' ज्ञात हो, इस हेतु ही–(उपरोक्त) प्रयोगार्थ–क्रम देना आवश्यक समझा। प्रसङ्ग–वश मूल 'हस्त–लिखित'

विधान में 'मानस–पूजन' का जो क्रम है, मात्र परिचय–ज्ञान हेतु यहाँ उद्धृत किया जा रहा है। यदि जिज्ञासु–साधक चाहे तो इसकी 'मुद्रा–निर्माण विधि' को उपरोक्त क्रम के अनुसार परिवर्तित कर—— इस 'मानस–पूजन' का भी प्रयोग कर सकते हैं।

मानस–पूजन (पृथक–क्रम) :–

१. लं पृथिव्यात्मने गन्ध–तन् मात्र प्रकृत्या नन्दात्मने श्री शरभ–शालुव भैरवाय **'अङ्गुष्ठानामिका योगात्'** लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।

२. हं आकाशात्मने परमात्मने शब्द–तन् मात्र प्रकृत्या नन्दात्मने श्री शरभ–शालुव भैरवाय **'अङ्गुष्ठ–तर्जनी योगात्'** हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।

३. यं वायव्यात्मने स्पर्श–तन् मात्र प्रकृत्या नन्दात्मने श्री शरभ–शालुव भैरवाय **'अङ्गुष्ठ–मध्यमा योगात्'** यं वायव्यात्मकं धूपं समर्पयामि।

४. रं तेजात्मने रूप–तन् मात्र प्रकृत्या नन्दात्मने श्री शरभ–शालुव भैरवाय **'अङ्गुठानामिका योगात्'** रं तेजात्मकं दीपं समर्पयामि।

५. वं अमृतात्मने–परमात्मने रस–तन् मात्र प्रकृत्या–नन्दात्मने श्री शरभ–शालुव भैरवाय **'अङ्गुष्ठ–मध्यमानामिका योगात्'** वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।

६. स शक्त्यात्मने परमात्मने सर्व–तन् मात्र प्रकृत्या नन्दात्मने श्री शरभ–शालुव भैरवाय **'सर्वाङ्गुली योगात्'** सं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि।

७. हिं हिरण्यात्मने–परमात्मने रत्न–तन् मात्र प्रकृत्या नन्दात्मने श्री शरभ–शालुव भैरवाय **'पादुका–मुद्रया'** हिं हिरण्यात्मकं दक्षिणां समर्पयामि।

स्पष्टीकरण :–

उपरोक्त 'मानस–पूजन' में क्रम–७ पर 'पादुका–मुद्रा' का उल्लेख हुआ है, किन्तु यह मुद्रा कैसे निर्मित होती है, ज्ञात नहीं! नित्यार्चन में भी कभी 'पादुका–मुद्रा' का प्रयोग नहीं हुआ, 'तन्त्र–सार', 'मन्त्र–महार्णव' 'मुद्राएँ एवं उपचार' आदि ग्रन्थों में इस मुद्रा की निर्माण–विधि को खोजा, किन्तु इस मुद्रा की निर्माण–विधि का कहीं भी उल्लेख प्राप्त नहीं हुआ। सम्भव हो कि इस मुद्रा व इसकी निर्माण–विधि को ग्रन्थों में खोजने पर मुझसे 'दृष्टि–हीनता' भी हुई हो। क्योंकि इस मुद्रा का प्रमाण 'तन्त्र–ग्रन्थों' में अवश्य है, तभी तो इसका उल्लेख उपरोक्त क्रम–७ में हुआ है। यदि किसी विद्वान को इसकी मुद्रा निर्माण–विधि ज्ञात हो, तो इस अल्पज्ञ को अवश्य ही बताने की कृपा करें।

उल्लेखनीय :–

'तन्त्र–साधना' में इष्ट–शक्ति के अर्चन–क्रम के अन्तर्गत 'गुरु–पादुका–मन्त्र' जपादि क्रम का भी विधान–नियम है। यह 'पादुका–मन्त्र' लघु–पादुका, स्थूल अथवा मध्यम–पादुका और वृहत् या महा–पादुका तीन क्रम–भेद से शिष्य की सुपात्रता व साधना में दक्षता के आधार पर–(क्रमशः), श्री गुरूदेव द्वारा शिष्य को प्राप्त होती है। जिसका साधना में महत्व अति–विशेष है। जिस–प्रकार पादुका अर्थात् खड़ाऊ पैरों में पहनने से मार्ग के अवरोध–रूपी काँटे व कङ्कड़ों से मनुष्य की रक्षा होती है, उसी–प्रकार इस संसार–यात्रा के समय विभिन्न विघ्न–रूपी काँटों से 'गुरू–पादुका–मन्त्र' के द्वारा साधक की रक्षा होती है–(इस 'पादुका–मन्त्र' के विषय उल्लेख का उक्त 'पादुका–मुद्रा' से कोई सम्बन्ध नहीं। यहाँ 'पादुका' नाम होने से प्रसङ्ग–वश ऐसा कथन प्रस्तुत कर दिया गया है)।

'मानस–पूजन' के पश्चात् 'धेनू' व 'योनि–मुद्राओं' का प्रदर्शन करें, यथा–

धेनू–मुद्रा :–

दोनों हाथों की दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलियों को दोनों अनामिकाङ्गुलियों से परस्पर मिलाएँ फिर दोनों मध्यमाङ्गुलियों को दोनों तर्जनी–अङ्गुलियों से मिलाकर दोनो अङ्गूठों को पृथक रखने से 'धेनू–मुद्रा' बनती है। इस मुद्रा का मुख्य–प्रदर्शन पात्रस्थ जल–द्रव्य को 'अमृती–करण' करने के लिए होता है।

योनि–मुद्रा :–

दोनों हाथों की दोनों कनिष्ठिकाङ्गुलियों को एक–दूसरे से सम्बद्ध करें, दाएँ हाथ की तर्जनी–अङ्गुली से बाएँ हाथ की अनामिकाङ्गुली को और बाएँ हाथ की तर्जनी–अङ्गुली से दाएँ हाथ की अनामिकाङ्गुली को आबद्ध करें। फिर दोनों अनामिकाङ्गुलियों के अग्र–भाग में दोनों मध्यमाङ्गुलियों को जोड़कर फैलाएँ। साथ ही उन्हीं दोनों मध्यमाङ्गुलियों के मूल में दोनों अङ्गूठे भी लगा दें। यही 'योनि–मुद्रा' होगी।

स्पष्टीकरण :–

जिस–प्रकार एक ही स्तोत्र अर्थात् 'निग्रह–दारुण–सप्तक' में अनेकों पाठ–भेद–प्रकार प्रकट–रूप से दृष्टि–गोचर होते हैं, उसी–प्रकार इस स्तोत्र के असंख्य–विधान भी हैं–(देखें, श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप, प्रयोग–खण्ड)। विधान के अन्तर्गत यह अधिकांश–रूप से दृष्टव्य हुआ है कि 'निग्रह–दारुण–सप्तक' में 'मुद्रा–प्रदर्शन' में भी परिवर्तन व क्रम–भेद है। उदाहरण स्वरूप, जैसे ..... स्तोत्र में कहीं–कहीं 'हृदयादि–न्यास' के पश्चात् 'मुद्रा–प्रदर्शन' है, तो कहीं ध्यान के पश्चात् और कहीं मानस–पूजन' के पश्चात् व स्तोत्र–पाठ से पूर्व मुद्राओं के प्रदर्शन का कथन है। 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग'–'सम्वत्–२०५७–(पृष्ठ–१४५–४८) में प्रकाशित

रिपु–मर्दनात्मक 'निग्रह–दारूण–सप्तक'–विधान में–('धेनू' व 'योनि') मुद्राओं का प्रदर्शन न्यास के पश्चात् हुआ। 'ध्यान' व 'मानस–पूजन' का क्रम बाद में आया है। सम्वत् – २०६० के इसी पञ्चाङ्ग –(पृष्ठ–१६६–७१) में –(रिपु–दमनार्थ 'निग्रह–दारूण–सप्तक' के ही अन्तर्गत) ' मुद्रा–प्रदर्शन' कुछ विशेष किन्तु भिन्न–रीति से हुआ है। इसमें भगवान् श्री शरभेश्वर के ध्यान के पश्चात्–('लिङ्ग ' व 'योनि') मुद्राओं का प्रदर्शन–('धेनू–मुद्रा का नहीं') पश्चात् 'मानस–पूजन' तत्पश्चात् –(पुनः) नौ अन्य मुद्राओं –(शङ्ख, चक्र, त्रिशूल, डमरू, धनु, बाण, परशु, पाश व अङ्कुश) प्रदर्शन का उल्लेख हुआ है। यहाँ एक स्पष्ट स्व–कथन कह देना उचित है कि भगवान् श्री शरभेश्वर के मुख्य साधनाधार ग्रन्थ 'आकाश–भैरव–कल्प'–(अध्याय–८१, 'निग्रह–दारूण–सप्तक) में 'मुद्रा–निर्माण–प्रयोग' के विषय में उल्लेख प्राप्त नहीं होता और न ही 'शरभ–तन्त्र' व 'श्री बटुक–भैरव–साधना' आदि ग्रन्थों में भी इस स्तोत्र–विधान के अन्तर्गत 'मुद्रा–निर्माण–प्रयोग' का ऐसा कहीं सङ्केत है। मात्र स्वतन्त्र निग्रह–दारूण–सप्तक' की कुछ 'हस्त–लिखित' प्रतियों अथवा 'गुरू–परम्परागत' कुछ विधानों में ही 'मुद्रा–निर्माण–प्रयोग' का कथन है, किन्तु प्रयोगार्थ रूप में यह कथन है अति–प्रभावी!

प्रस्तुत विधान में यही मुद्रा–प्रदर्शन', 'मन्त्र–साधन' के अन्तर्गत 'मानस–पूजन' के पश्चात् हुआ है, क्योंकि यहाँ 'मन्त्र–साधन' 'माला–मन्त्र' व 'निग्रह–दारूण–सप्तक' क्रम एक ही विधान में सम्मिलित हैं।

'मुद्राओं' के प्रदर्शन के पश्चात् 'मूल–मन्त्र' का १०८ जप 'रूद्राक्ष' या 'भद्राक्ष' की माला से करें–(जपारम्भ करने से पूर्व माला का भी पूजन–नमस्कार कर लेना चाहिए)। जप करते समय अन्य किसी को भी माला का स्पर्श न होने दें, अतः माला को गौमुखी के अन्दर रखकर ही जप करें। 'मूल–मन्त्र' यह है–

मूल–मन्त्र :–

ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।

स्पष्टीकरण :–

श्री शरभेश्वर के 'मूल–मन्त्र' के अन्तर्गत भी कई पाठ–भेद, शब्द–परिवर्तन विभिन्न मुद्रित व हस्त–लिखित प्रतियों में देखने को मिलते हैं, जैसे..... मन्त्र के विनियोग में **'ऋषि वामदेव'**, **'छन्द'** में **'अति–जगती'** व **'गायत्री'** भी एवं **'बीजं'** में **'खें'** —–आदि का पाठान्तर दृष्टि–गोचर होता है। 'मूल–मन्त्र' में भी ऐसे ही कई पाठ–भेद देखने को मिल जाएँगे, जैसे.....**'प्राण–ग्रहासि** के स्थान पर **प्राण–ग्रहसि, प्राण–ग्रहणासि, प्राण–ग्रसिसि** एवं **'संहारणाय** के स्थान पर **'संहारकाय'** आदि–आदि ....। यद्यपि मन्त्र एक ही है, फिर भी पाठ–भेद अनेक हैं। (श्री शरभेश्वर के मूल–मन्त्र की भाँति कुछ अन्य विशिष्ट व लघु– मन्त्रों का सङ्ग्रह –समह 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग' सम्वत्–२०६०– (पृष्ठ–१६४–६६) में दृष्टव्य है। इन सभी, प्रत्येक मन्त्रों की साधन–विधि व पाठ–भेद युक्त समीक्षा विस्तार के साथ 'श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप'–(प्रयोग– खण्ड) में प्राप्य है)।

'मन्त्र–जप' के पश्चात् 'श्री शरभ माला–मन्त्र' का भी कम से कम एकादश बार जप करें। 'माला–मन्त्र' यह है :——

माला–मन्त्र :–

ॐ नमो भगवते पक्षिराजाय निशित–कुलिश वर–दंष्ट्रा–नखाय अनेक कोटि ब्रह्म–कपाल मालालङ्ताय सकल–कुल महा–नागभूषणाय सकल–भूत निवारणाय नृसिंह–गर्व–निर्वापण कारणाय सकल–रिपु–रम्भाटवी–विमोटन महानिलाय ॐ शरभ–शालुव–पक्षिराजाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं प्रवेशय–प्रवेशय, रोग–ग्रहं बन्धय–बन्धय, बाल–ग्रहं बन्धय–बन्धय, यक्ष–ग्रहं बन्धय–बन्धय आवेशय–आवेशय, भाषय–भाषय, मोहय–मोहय, क्रोद्यातय–द्यातय, कुम्भय–कुम्भय, भूत–ग्रहं बन्धय–बन्धय, यक्ष–ग्रहं बन्धय–बन्धय, तापस–ग्रहं, बन्धय–बन्धय, चातुर्थ्य–ग्रहं बन्धय–बन्धय, भीम–ग्रहं बन्धय–बन्धय, अपस्मार–ग्रहं बन्धय–बन्धय, उन्मत–ग्रहं बन्धय–बन्धय, ब्रह्म–राक्षस ग्रहं बन्धय–बन्धय, ज्वाला–ग्रहं बन्धय–बन्धय, ज्वालामुख ग्रहं बन्धय–बन्धय, तमोहार ग्रह बन्धय–बन्धय, भूचर–ग्रहं बन्धय–बन्धय, खेचर–ग्रहं बन्धय–बन्धय, बेताल–ग्रहं बन्धय, कूष्माण्ड–ग्रहं बन्धय–बन्धय, स्त्री–ग्रहं बन्धय–बन्धय, आवेश–ग्रहं बन्धय–बन्धय, अनावेश–ग्रहं बन्धय–बन्धय, त्रोटय–त्रोटय, प्रैं त्रैं भें हैं मारय–मारय, शीघ्रं मारय–मारय, मुञ्च–मुञ्च, दह–दह, पच–पच, नाशय–नाशय, सर्व–दुष्टान्नाशय–नाश्य हुं फट् स्वाहा।

स्पष्टीकरण :–

यह 'माला–मन्त्र' 'आकाश–भैरव–कल्प'–(अध्याय–१८) में वर्णित है, किन्तु यहाँ प्रस्तुत और उक्त ग्रन्थ में वर्णित ..... इन दोनों के मिलान पर कुछ पाठ–भेद भी प्रकट होते हैं, दोनों में कहीं शब्द–वृद्धि है, तो कहीं शब्दों का ह्रास। इस 'माला–मन्त्र' के स्वतन्त्र पाठ–साधन में श्री शरभेश्वर का एक पृथक ध्यान भी है, जो 'आकाश–भैरव–कल्प'–(वही, अध्याय–१८) में प्राप्य है। यद्यपि मे स्वेच्छा से एक

अन्य 'माला–मन्त्र' भी इस विधान में सम्मिलित करना चाहता था, किन्तु इससे विधान में अनावश्यक हस्तक्षेप होता।

।।स्तोत्र–पाठ।।

'मूल–मन्त्र व 'माला–मन्त्र' जप के पश्चात् 'श्री वडवानल–भैरव' व 'श्री शरभेश्वर के बीजाक्षर' मन्त्र से सम्पुटित 'निग्रह–दारूण–सप्तक' का पाठ करें, मन्त्र में अमुक के स्थान पर शत्रु के नाम का उच्चारण करें। प्रथम विनियोग पश्चात् 'तत्व–मुद्रा' द्वारा न्यासादि कर, पाठ करें–

विनियोग :–

ॐ अस्य श्री निग्रह–दारूण–सप्तक स्तोत्र महा–मन्त्रस्य श्री वामदेव ऋषिः, अति–जगती छन्दः, श्री शरभ–शालुव–रूपी कालाग्नि–रूद्रो देवता, खं बीजं, ह्रीं शक्तिः, हुं फट् कीलकं शत्रु–संहारणार्थे, श्री निग्रह–दारूण–सप्तकं पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास :–

ॐ श्री वामदेव–ऋषये नमः शिरसि।
अति–जगती छन्दसे नमः मुखे।
श्री शरभ–शालुव–रूपी कलाग्नि–रूद्रो देवतायै नमः हृदये।
खं बीजाय नमः गुह्ये।
ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः।
हुं फट् कीलकाय नमः नाभौ।
शत्रु–संहारणार्थे श्री निग्रह–दारूण–सप्तकं पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर–न्यास :–

ॐ ह्रां खां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रीं खीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ ह्रूं खूं मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ ह्रैं खैं अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रौं खौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ ह्रः खः करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि षङ्ग–न्यास :–

ॐ ह्रां खां हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं खीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं खूं शिखायै वषट्।
ॐ ह्रैं खैं कवचाय हुं।
ॐ ह्रौं खौं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ह्रः खः अस्त्राय फट्।

स्पष्टीकरण :–

'निग्रह–दारूण–सप्तक' स्तोत्र के 'विनियोग' में दो प्रकार पाए जाते हैं। एक प्रकार तो प्रस्तुत है ही, दूसरा प्रकार 'सङ्कल्प' की भाँति 'भाषा–शैली' में पाया जाता है, जो निम्न–रूप से परिवर्तित होता है, यथा......**'शत्रु–संहारणार्थे.....** पाठे विनियोगः के स्थान पर .....**मम ये ये प्रतिकूल कारिणस्तेषां पलायनार्थे निग्रह–दारूण–सप्तक**–(कहीं–कहीं 'शरभ' या 'शरभ–शालुव दारूण–सप्तक' कहा गया है) **परायणमहं करिष्ये'** आदि.....। प्रयोग हेतु इस स्तोत्र का अनुष्ठान मात्र तीन–दिवसीय है–(जैसा कि फल–श्रुति में कहा गया है), जो 'परायण–विधान' रूप से 'तन्त्र–साधकों' में प्रसिद्ध है—– किसी कर्म को तत्परता व लीनता से निरन्तर आवर्ती–पूर्वक–(कर्म–समाप्ति तक) करते रहने को 'परायण–(या पारायण) कहते हैं। यद्यपि ऐसा नियम तो प्रत्येक मन्त्रानुष्ठान साधन–प्रयोग के लिए होता है, किन्तु फिर भी अन्य किसी 'मन्त्र–साधना' या 'स्तोत्र–विधान' की अपेक्षा यह स्तोत्र–(प्रयोग–रूप में) 'परायण–विधान' नाम से विद् साधकों के मध्य अधिक चर्चित है। इसी–कारण विनियोग में.....**'परायणमहं करिष्ये'** भी कहा जाता है।

ध्यान व मानस–पूजन :–

यह क्रम प्रारम्भ में 'मूल–मन्त्र साधन–विधान' के अन्तर्गत आ गए हैं, यदि मात्र 'निग्रह–दारूण–सप्तकं' स्तोत्र–पाठ ही करना होता, तो यहाँ 'ध्यान' व 'मानस–पूजन' का क्रम भी संयुक्त रहता।

।। पाठ-आरम्भ ।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरु–कुरु हुं फट्, ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।

कोपोद्रेकाऽति–निर्यन् निखिल परिचरत् ताम्र–भार प्रभूतम्। ज्वाला–मालाग्र दग्ध स्मर–तनु सकलं त्वामहं शालुवेशम्।। याचे त्वत्पाद–पद्म–प्रणिहित–मनसं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः। तस्य प्राण प्रयाणं पर–शिव!

भवतः शूल–भिन्नस्य तूर्णम्।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट्, ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।।१।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट्, ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।

शम्भो! त्वद्धस्त–कुन्तक्षत–रिपु–हृदयान्निस्रवल्लोहितौघम्। पीत्वा–पीत्वाऽति–दर्पःदश–दिशि विचारास्त्वद् गणाश्चण्ड मुख्याः।। गर्ज्जन्तु क्षिप्रवेगा निखिल–जयकराः भीकराः खेल–लोलाः। सन्त्रस्त ब्रह्मदेवाः शरभ खग–पते! त्राहि नः शालुवेश!।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।।२।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।

सर्वाद्यं सर्व–निष्ठं सकल लयकरं त्वत्स्वरूपं शरण्यम्। याचेऽहं त्वाममोघं परिकर–सहितं द्वेष्टि मां यः क्रियाभिः।। श्री शम्भो! त्वत्कराब्ज–स्थित हल कठिनाघात वक्ष–स्थलस्य। प्राणाः प्रेतश–दूत–ग्रहण–परिभावऽऽक्रोश–पूर्व प्रयान्तु।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।।३।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः [illegible]मुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।

द्विष्मः क्षोण्यां वयं हि तव पद–कमल–ध्यान– निर्दग्ध–पापाः। कृत्याकृत्यैर्विमुक्ताः विहग कुल–पते! खेलया बद्ध–मूर्ते! तूर्णं त्वत्पाणि–पद्म प्रधृत–परशुना तुण्ड–खण्डी–कृताङ्गः। तद् द्वेषी यातु याम्यां पुरमति–कलुषं काल–पाशाग्र–बद्धः।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।।४।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वलं वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।

भीम! श्री शालुवेश! प्रणत–भय–हर! प्रणिनां दुर्मदानाम्। याचेऽहं चास्य–गर्व–प्रशमन–विहित–स्वेच्छयाऽऽबद्धमूर्ते! त्वामेवाशु त्वंघग्रष्टक–नख–विलुठद्ग्रीव–जिह्वोदरस्य। प्राणोत्काम–प्रमाद प्रकटित–हृदयस्यायुरल्पायतेश।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।।५।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।

श्रीशूलं ते कराग्र–स्थित–मुसल–गदाऽऽवर्त–वाताभिघाताद्। यातायातारि यूथ त्रिदश–रिपु–गणोद्भूत–रक्तच्छटार्दम्।। सन्दृष्ट्वाऽऽयोधने ज्यामखिल–सुर–गणश्चाशु नन्दन्तु नाना भूता वेताल पुगः पिबतु तदखिलं प्रीत–चित्तः प्रमत्तः।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।।६।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह–दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे हुं फट्।

त्वद्दोर्दण्डाग्रमुष्टि–प्रकटित–विनमच्चण्ड कोदण्ड–मुक्तैर्बाणैर्दिव्यैरनेकैः शिथिलित वपुषः क्षीण कोलाहलस्य।। तस्य प्राणावसानं पर–शरभ! विभोऽहं त्वादाज्ञा प्रभावैस्तूर्णं पश्यामि यो मां परि–हसति सदा त्वादि मध्यान्त–हेतो।।

ॐ नमो भगवते वडवानल–भैरवाय ज्वल–ज्वल वैरि–कुलं दह– दह वर्म–वर्म ठः ठः अमुक शत्रूणां मारय–मारय भस्मी कुरू–कुरू हुं फट् ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे

हुं फट्।।७।।

।।फल–श्रुति।।

इति निशि प्रयतस्तु निरासनो यम मुखः शिवभावमनुस्मरन्।
प्रति–दिनं दशवारं दिनत्रयं जपति निग्रह–दारुण–सप्तकम्।।
इति गुह्यं महा–वीर्यं परमं रिपु–नाशनम्।
भानुवारं समारभ्य मङ्गलान्तं जपेत् सुधीः।।

प्रति–दिन रात्रि–काल में दक्षिण–दिशा की ओर मुख करके निराहार, (भूखे पेट) इस स्तोत्र के दस पाठ–(तीन–दिन तक) करने चाहिए। दसवें पाठ पर 'फल–श्रुति' अवश्य ही पढ़नी–(उच्चारित) चाहिए। 'फल–श्रुति' के पश्चात् पुनः ध्यान कर 'मानस–पूजन' करें, तत्पश्चात् जप–समर्पण करें तथा क्षमा–प्रार्थना करें–

जप–समर्पण :–

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत्प्रसादान्शरभेश्वर।।

क्षमा–प्रार्थना :–

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजा–कर्म न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरः।।
मन्त्र–हीनं क्रिया–हीनं, भक्ति–हीनं शरभेश्वर।
मयायत्–पूजितं देव! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

स्पष्टीकरण :–

प्रयोग सङ्कलन ग्रन्थों में तथा कुछ हस्त–लिखित प्रतियों में 'निग्रह–दारुण–सप्तक' के पाठानुष्ठान में प्रतिदिन पाठ संख्या–१० तथा तीन–दिवस की अवधि बताई गई है, जैसे कि प्रस्तुत सप्तक स्तोत्र की फलश्रुति में, यथा—–

प्रतिदिनं दशवारं दिन–त्रय जपति निग्रह–दारुण–सप्तकम्। किन्तु कहीं–कहीं यह दिन अवधि दस–दिन उल्लेखित की गई है, जैसे कि मूल ग्रन्थ 'आकाश–भैरव–कल्प' – (प्रकाशित व हस्त–लिखित) में यह अवधि स्पष्ट की गई है। पाठ संख्या में भी दस–पाठ प्रतिदिन नहीं, अपितु दो सौ पाठ प्रतिदिन (अर्थात् दो माला) करने का स्पष्ट कथन है, यथा —–

दशादिनं प्रतिवार–शतद्वयं जपतु निग्रह–दारुण–सप्तकम्।
भानुवासरमाभ्य मङ्गलान्तं जपेत्सुधीः।

(देखें, 'आकाशः–भैरव–कल्प', अध्याय–८१, श्लोक ९ व १०)

उक्त कथन से स्पष्ट है कि रविवार से आरम्भ, मङ्गल को समापन तथा प्रतिदिन दो सौ पाठ। यदि दिन–क्रम अवधि की गणना करें, तो प्रथम की गणना में रविवार से मङ्गलवार तक तीन ही दिन हुए और दूसरी गणना में भी रविवार से दसवें दिन अर्थात् मङ्गलवार ही है, किन्तु दूसरा मङ्गलवार। इसमें दो रविवार व दो मङ्गलवार गणना में आते हैं। दस दिन व तीन दिन के कथन में तथा दो सौ पाठ व दस पाठ नित्य–इन कथनों के कारण साधक भ्रमित हो सकते हैं कि किस दिन संख्या व पाठ संख्या को मानकर साधना–कर्म आरम्भ किया जाये?

हमारे अनुभव व मत से प्रतिदिन दस पाठ का तीन–दिवसीय प्रयोग ही स्वीकार्य है। इसमें आवश्यक इतना ही है कि प्रयोग से पूर्व साधक इस स्तोत्र का प्रारम्भ में बताई गयी रीति अनुसार अनुष्ठान सम्पन्न कर ले–(या जैसे अपने श्री गुरुदेव से शिष्य को परम्परा–रूप से विधि प्राप्त हो) अधिकांश विद्वानों ने भी तीन दिवसीय मत को ही ग्रहण किया है, यद्यपि 'आकाश–भैरव–कल्प' के 'निग्रह–दारुण–सप्तक' के अध्याय में 'दस–दिन' की अवधि व्यक्त है, किन्तु ग्रन्थ के प्रारम्भ में दिए गए 'हिन्दी–भाष्य' में तीन–दिवसीय का ही मत ग्रहण कर भाष्य में व्यक्त किया है। इतने पर भी यहाँ यह कह देना उचित होगा कि यह मत भी निराधार नहीं, शास्त्रोक्त है, जिसका आधार 'गुरु–परम्परा' है।

● दो सौ पाठ प्रतिदिन दस–दिन वाला मत 'दारुण–सप्तक' के अनुष्ठान पूर्ण करने के लिए ग्रहण करें, प्रयोग हेतु नहीं। प्रारम्भ में बताई गई रीति में भी यही कथन व्यक्त किया गया है।

स्पष्टीकरण :–

'निग्रह–दारुण–सप्तक' नामक इस महा–प्रभावी स्तोत्र का पाठ–(काम्य–प्रयोग हेतु) अधिकांश–रूप से मन्त्र सम्पुट लगाकर किया जाता है, विशेषतः वडवानल–भैरव के मन्त्र का। किन्तु इसके 'मन्त्र–सम्पुट' क्रम में भी भेद है। कुछ 'मुद्रित' व 'हस्त–लिखित' प्रतियों में देखने में आया कि प्रथम श्लोक से पूर्व **"ॐ ह्रीं खें खां खं फं घृणे–(घ्राणे) हुं फट्"**–(यह 'माया–बीज' सहित श्री शरभेश्वर का बीजाक्षर मन्त्र है, जो सम्पुट के लिए प्रयोग हुए मन्त्र का संयुक्त भाग है और पृथक–रूप से स्वतन्त्र मन्त्र भी। इसमें भी कहीं–कहीं शब्द–परिवर्तन, पाठ–भेद देखने को मिलता है) मन्त्र का सम्पुट लगाकर स्तोत्र–पाठ आरम्भ किया जाता है। श्लोकान्त में पूर्ण मन्त्र, पुनः श्लोक पश्चात् पूर्ण मन्त्र.....क्रम से मन्त्र सम्पुटित स्तोत्र–पाठ पूर्ण किया जाता है, किन्तु यहाँ प्रस्तुत यह क्रम ऐसा नहीं, इसमें प्रथम

पूर्ण मन्त्र पश्चात् श्लोक, पुनः मन्त्र पश्चात् पुनः मन्त्र व श्लोक, पुनः मन्त्र अर्थात् प्रत्येक श्लोक के आदि व अन्त में मन्त्र का सम्पुट, प्रत्येक श्लोक ही मन्त्र से सम्पुटित हैं। ऐसा ही इस स्तोत्र का मन्त्र सम्पुटित क्रम सम्वत्–२०६० के 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग'–(पृष्ठ–१६६–६०) में प्रस्तुत हुआ था, उसमें मन्त्र–सम्पुट की गति–स्थिति में कुछ भेद था। कुछ भी हो, ऐसे क्रम परम्परा के आधार पर ही हैं, जो भेदाभेद की स्थिति प्राप्त होते हुए भी पूर्ण फलदाई होते हैं– (श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप के 'प्रयोग–खण्ड' में इस स्तोत्र का 'कई संख्याओं में एक ही स्थान पर एकत्रित कर' अद्‌भुत सङ्हात्नक–स्वरूप, अव्यर्थ प्रयोग–विधि सहित दृष्टव्य है)।

यद्यपि मूल–स्तोत्र के पाठ से ही अभीष्ट कार्य सिद्ध–सम्पन्न होते हैं, फिर भी रोग–नाश, शत्रु–नाश, पुत्र–प्राप्ति, पदार्थ–रक्षा, वस्तु–आगमन, मोहनादि कामना–पूर्ति के लिए और भी अन्य देवताओं, जैसे–काल भैरव, वीरभद्र, रक्त–चामुण्डा, नारसिंहि आदि के मन्त्रों से भी इस स्तोत्र का सम्पुटिकरण किया जाता है, (इन देवताओं के मन्त्रों का उल्लेख श्री शरभ–कवच के मूल–पाठ व फल–श्रुति में आया है, जिसका स्वरूप व प्रयोग श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप (प्रयोग–खण्ड) में दृष्टव्य है), इसमे 'वडवानल–भैरव' के मन्त्र से सम्पुटिकरण 'शत्रुनाश' के लिए विशेष प्रसिद्ध है। कहा भी गया है...... **'वडवानल मन्त्रेण सम्पुटाद्वैरि नाशनम्'**–(देखें, 'आकाश–भैरव–कल्प' अध्याय–८१, फलश्रुति–श्लोक–६–१६)।

पुनः–

सम्पुटित प्रक्रिया के अनुसार इस स्तोत्र को 'वडवानल–भैरव' के मन्त्र से सम्पुट देने का निर्देश है, किन्तु अधिकांश यह मन्त्र भी शरभेश्वर के बीजाक्षरों से युक्त मिश्रित देखने को मिलता है। कुछ ऐसे भी मन्त्र प्राप्त होते हैं, जिनमें 'वडवानल–भैरव, श्री शरभेश्वर का मन्त्र–(अथवा बीजाक्षर), कालाग्नि–रूद्र एवं पाशुपतास्त्र बीज–मन्त्र का भी 'एकसाथ' संयुक्तिकरण–(मिश्रण) है, तो कुछ में वैदिक–ऋचाओं का भी समावेश प्राप्त होता है–(देखें, 'श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप'–'प्रयोग–खण्ड' जिनमें ऐसे मिश्रित मन्त्र, पृथक–रूप से 'वडवानल–भैरव' के मन्त्र सम्पुण्ट प्रयोगार्थ हेतु असंख्य रूप से प्राप्त होंगे। मिश्रित–सम्पुट मन्त्रों की गणना में ही महा–विद्या 'धूमावती' का भी प्रयोगार्थ एक मन्त्र 'प्रयोग–खण्ड' में द्रष्टव्य है) प्रसङ्ग–वश यहाँ 'वडवानल–भैरव' का कथासार–रूप में परिचय भी प्रस्तुत है–

'वडवानल'

• 'आकाश–भैरव–कल्प'–(अध्याय–३७) में इनका ध्यान, मन्त्र–साधन व प्रयोग–विधि का है। प्रायः अन्य किसी 'तन्त्र–ग्रन्थों' में इनकी साधना–विधि अथवा परिचय प्राप्य नहीं होता – ('कल्याण–मन्दिर–प्रकाशन', 'प्रयाग–राज' से प्रकाशित 'शाबर–मन्त्र–सङ्ग्रह', भाग–२, पृष्ठ १७५ (क्रम–२) व ८२–(क्रम–२) में संस्कृत–भाषा में वर्णित 'वडवानल–भैरव' के कुछ मन्त्र प्राप्य होते हैं, यह मन्त्र शाबर ही है अथवा अन्य किसी 'तन्त्र–ग्रन्थ' से उद्धृत! ज्ञात नहीं)। 'आकाश–भैरव–कल्प'–(या श्री शरभ–विषयक कुछ ग्रन्थों में) से पृथक अन्य किसी 'तन्त्र–ग्रन्थ' में इनकी साधना–पद्धति प्राप्त होना एक दुर्लभ व महत्व–पूर्ण-प्रयास ही होगा। यद्यपि 'तन्त्र–सम्प्रदाय' में वृहद्–वडवानल–तन्त्र की भी नाम–प्रतिष्ठा है, जिनकी कई संख्या है और विशेष साधना–परम्परा इस तन्त्र के आधार पर भी प्राप्त होती है, किन्तु यह है अत्यन्त गोपनीय व दुर्लभ! 'नेपाल–राष्ट्र' में 'शाक्त–साधना–परम्परा' इसी तन्त्र पर आधारित है– ऐसा कुछ–कुछ साङ्केतिक ही ज्ञात है। अस्तु.....

'वडवानल'–(वाडवानल या बडवानल) भगवान् शिव का ही स्वरूप–तेज है। कामदेव को भस्म करने हेतु शिव के तृतीय–नेत्र से उत्पन्न क्रोधानल–(क्रोधाग्नि) को 'वडवानल' नाम ब्रह्माजी ने दिया था। 'श्री शिव महापुराण'–(शत–रूद्र संहिता, तृतीय–(पार्वती–खण्ड, अध्याय–२०) के अनुसार भगवान् शिव ने अपने तृतीय–नेत्र से भयङ्कर अग्नि को प्रकट कर कामदेव को उसी अग्नि से त्वरित भस्म कर दिया था। भयङ्कर महा–ज्वालामय यह अग्नि कामदेव के भस्मी–करण के पश्चात् सर्वत्र चारो ओर फैलने लगी, जिससे जगत के सम्पूर्ण प्राणियों में हाहाकार होने लगा। इस अग्नि से रक्षा प्राप्त करने हेतु समस्त देवता, ऋषि आदि ब्रह्माजी के समीप गए और स्तुति कर अपना दुःख प्रकट किया, स्वयं ब्रह्माजी भी शिव की 'क्रोधाग्नि' के प्रभाव से अमुक्त थे। तब ब्रह्माजी ने उन सभी ऋषि व देवगणों के साथ भगवान् शिव का स्मरण कर, उस 'महा–अग्नि' को 'लोक–रक्षार्थ' स्तम्भित कर दिया। तीनों लोकों को दग्ध–भस्म करने की सामर्थ्य रखने वाली, शिव के परम–तेज से सम्पन्न, इस अग्नि को ब्रह्माजी ने एक 'अश्व' –(अर्थात् वडवा अथवा वाडव) के रूप में परिवर्तित कर दिया, जिसके मुख से सौम्य ज्वालाएँ निकासित हो रही थी। शिव की इच्छानुसार ब्रह्माजी उस वाडव–शरीर अर्थात् अश्व–(घोड़े) रूपी अग्नि को लेकर समुद्र–तट पर गए। ब्रह्मा व समुद्र–देव के परस्पर सम्मान उपरान्त ब्रह्माजी ने उस 'अश्व' की ओर सङ्केत करते हुए समुद्र से कहा कि अश्व–रूप में यह भगवान् शिव का परम–शक्तिशाली क्रोध है। इस प्रलयङ्कारी क्रोधाग्नि ने कामदेव को भस्म कर दिया, उपरान्त यह अब समस्त लोकों को भी दग्ध करने के लिए उद्यत हो गयी। समस्त

लोकों के रक्षार्थ इस 'क्रोधाग्नि' को मैंने स्तम्भित कर इसको 'वडवा–शरीर' दे दिया। हे समुद्र देव! यह शिव का अद्भुत 'अनल' जो अब 'अश्व–रूप' में है, अपने मुख से ज्वालाओं को बाहर फेंक रहा है, अन्यत्र कहीं भी यह अग्नि विश्व को दग्ध करने की सामर्थ्य रखती है। मात्र आप ही इसको अपनी अपार जल–राशि के प्रभाव से नियंत्रण में रख सकते हैं। अतः आप सम्पूर्ण लोक–प्राणियों के हितार्थ इसको प्रलयकाल तक अपनी जल–राशि में ऊपर ही रखना, अधिक अथवा अनन्त जल–राशि में इसको स्थान न देना। तुम्हारा जल ही इसका आहार होगा। ब्रह्माजी के ऐसे कथनादेश पर समुद्र–देव ने उस 'वडवानल' को अपने में धारण कर लिया और यह 'वडवाग्नि' अपनी भयङ्कर ज्वालाओं से समुद्र की जल–राशि को नित्य दहन करने लगी–(अर्थात् दहन करना ही इसका आहार हुआ)।

उपरोक्त कथासारानुसार यही 'शिव का क्रोधानल'–(जो ब्रह्माजी द्वारा अश्व–रूप में परिवर्तित कर दिया गया था) 'वडवानल' नाम से प्रसिद्ध हुआ, जो शास्त्र मान्यतानुसार भगवान् शिव का ही एक नाम है। यद्यपि शिव के क्रोधानल की नाम–संज्ञा 'वडवानल' अर्थात् अश्व–रूप शरीर के कारण है, तथापि इस परम–तेजस्वी अग्नि के स्वामी स्वयं भगवान् शिव ही हैं, जिनका (उक्त कथानुसार) 'वडवानल–भैरव' के नाम से स्मरण–पूजन किया जाता है। इसके ध्यान, विनियोग व मन्त्रादि में वडवामुख, वडवा–मुखाग्नि आदि नामों का प्रयोग है, तो कहीं ध्यान में उक्त सम्बोधन का प्रयोग हुआ ही नहीं! ये भगवान् श्री शरभेश्वर–(शरभ–शालुव–पक्षिराज) के अङ्ग देवताओं में से एक हैं, ये उनके हृदय व उदर–भाग में प्रतिष्ठित–पूजित हैं। भगवान् श्री वडवानल–भैरव की साधना के प्रभाव से शत्रु, शत्रु का क्षेत्र–दल, गृह–वास, उसकी कुल–सम्पत्ति आदि सर्वस्व भस्म हो जाता है, 'आग्नेयास्त्र' का भी इन्हीं से सम्बन्ध है, जिसका साधन–प्रयोग व प्रयोग का निराकरण 'वैदिक–ऋचाओं' के साथ किया जाता है।

स्पष्टीकरण :–

भगवान् श्री नीलकण्ठ, नृसिंह व हनुमान् के नामों के साथ भी 'वडवानल' नाम का सम्बोधन हुआ है, जैसे ...भगवान् श्री नीलकण्ठ का 'वडवानल श्री नीलकण्ठास्त्र'। श्री नृसिंह भगवान् का 'ज्वाला–नृसिंह पञ्चाङ्ग, जिसमें विषय के मध्य व अन्त में 'वडवानल–नृसिंह' का अनेकों स्थानों पर सम्बोधन हुआ है–(यह 'ज्वाला–नृसिंह पञ्चाङ्ग' (रुद्रयामल–तन्त्रोक्त) मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय के 'हस्त–लिखित' ग्रन्थ सङ्क्रह में सङ्ग्रहित व सुरक्षित है)। रुद्रावतार हनुमान जी का 'वडवानलास्त्र' तो प्रसिद्ध है ही।

● सूर्य की पत्नी भी 'वडवा' नाम से प्रसिद्ध है। एक बार इसने अश्विनी (वडवा अर्थात् घोड़ी) का रूप धारण किया था, तब सूर्य ने भी अश्व का रूप धारण करके इसके साथ समागम किया, जिससे दो पुत्र उत्पन्न हुए, जो अश्विनी कुमार कहलाये (यह कथन मात्र 'वडवा' नाम से है, उक्त 'वडवानल' से नहीं)।

आगे 'निग्रह–दारूण–सप्तक' के कुछ प्रयोग प्रस्तुत हैं। ध्यान रहे कि ये प्रयोग अत्यन्त ही उग्र हैं, जिनको अति–गम्भीर स्थिति आने पर ही, आत्म–रक्षा अथवा दूसरों की रक्षा हेतु ही विचार–पूर्वक निर्णय कर तथा अपने श्री गुरुदेव की आज्ञा–निर्देश प्राप्त करके ही करें। श्री शरभेश्वर की साधना तथा ऐसे प्रयोग करने से पूर्व 'शरभ–कवच' का पाठ कर स्वयं को संरक्षित भी अवश्य ही करें।

।। प्रयोग ।।

१. शत्रु के पैरों के नीचे की मृतिका उठाकर, उसमें चतुष्पथ एवं श्मशान–भूमि के द्वार की मृत्तिका मिलाकर बारह–अङ्गुल की पुतली बनाएँ। इसमें शत्रु की भावना रखते हुए, प्राण–प्रतिष्ठा मन्त्रों द्वारा शत्रु–रूपी इस पुतली की प्राण–प्रतिष्ठा करें। ध्यान रहे कि प्राण–प्रतिष्ठा मन्त्रों में **'सुखं'** के स्थान पर **'दुःखं'** शब्द का प्रयोग–(उच्चारण) होना चाहिए। रात्रि में 'दारूण–सप्तक' के दस–पाठ करें। ग्यारहवें पाठ के प्रत्येक श्लोक पूर्ण होने पर शत्रु–रूपी पुतली के अभीष्ट अङ्गों को, बबूल के काँटे से वेध दें। प्रत्येक श्लोक पर नए काँटे का प्रयोग करें। इस–प्रकार प्रथम–दिवस पुतली में सात काँटे वेधे जाएँगे। ऐसा तीन–दिन करें। तीन–दिन के कर्म समाप्ति पर काँटों से बेधित पुतली को निर्जन स्थान में फेंक आएँ। इस उग्र–प्रयोग से निश्चित ही प्रबल से प्रबल शत्रु का नाश होगा।

२. उक्त प्रकार से ही पुतली बनाएँ। मुँह में काली–मिर्च चबाते हुए, क्रोधावेग–पूर्वक 'दारूण–सप्तक' का पाठ करें तथा शत्रु के नाश की भावना रखकर, अपने बाएँ हाथ से उस पुतली को नीचे –(पैरों की ओर से) के अङ्गों को शनैः–शनैः, कठोर–मन से मर्दन करते जाएँ, अन्त में –(अर्थात् जब 'दारूण–सप्तक' के पाठ की दसवीं संख्या पूर्ण होने को हो तब) उस पुतली को–(मर्दन किए हुए अङ्गों के कारण पुतली की रूप–रेखा भले ही परिवर्तित हो) उठाकर शिला पर पटक दें। ऐसा कार्य क्रमबद्ध तीन–दिवस होगा। नित्य ही पुतली का निर्माण व प्राण–प्रतिष्ठा होगी। इस प्रयोग से शत्रु कहीं भी हो, कैसा भी हो और वह किसी उच्च–कोटि के देवता–शक्ति का उपासक भी क्यों

न हो! वह निश्चित ही श्री शरभ–राज के क्रोध से अन्त–गति को प्राप्त होगा।

३. महिष के गोबर में तिक्त रक्त–मिर्च, चतुष्पथ की मृतिका तथ शत्रु के पैरों के नीचे की मृतिका को परस्पर मिलाकर उक्त विधि–आकार में पुतली निर्माण कर उसमें प्राण–प्रतिष्ठा करें। श्मशान–भूमि में गड्ढा खोदकर उसको अधोमुखी खड़ा कर दबाएँ। उस पर आसन की स्थापना कर, नित्य–रात्रि 'दारूण–सप्तक' का दस–पाठ करें। इस कर्म में 'श्री शरभ–सहस्रनाम' का एक पाठ भी अवश्य करें– (आकाश–भैरव–कल्प, शरभ–तन्त्र व श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग, सम्वत्–२०५८ में यह सहस्रनाम प्राप्य है)। तीसरे दिन रात्रि में जब कर्म–पाठ पूर्ण हो, तब उस शत्रु–रूपी पुतली को गड्ढे से निकालकर, दाएँ–हाथ में ऊपर की ओर कर चिताग्नि में पटक मारे – (क्रोध– मुद्रा द्वारा)। इस प्रयोग के प्रभाव से कैसा भी शत्रु हो वह यमपुरी का अति–शीघ्र अतिथि अवश्य ही बनेगा।

उल्लेखनीय :–

अभिचारिक प्रयोग निन्दनीय है–ऐसा शास्त्रों का वचन भी है और विद्जनों का कथन भी! अभिचार–प्रयोग वहाँ निन्दनीय है, जहाँ किसी ब्राह्मण, कन्या, सज्जन–सुपात्र मनुष्य, निर्दोष–असहाय–बलहीन व्यक्ति पर ऐसे प्रयोग किए जाते हों। किन्तु यदि कोई आपका शत्रु हो–(या समाज–वर्ग का) जिससे आपको धन–प्राण–सम्मान की हानि रही हो या शत्रु द्वारा कृत कृत्यों से असहाय व्यक्ति की सहन–शक्ति सीमा का उल्लङ्घन कर रही हो, तो अभीष्ट शत्रु पर किए गए ऐसे प्रयोग कदापि भी निन्दनीय नहीं हैं। इसी कथन पर विचारणीय योग्य एक लघु किन्तु सत्य–प्रसङ्ग प्रस्तुत है–

एक ग्राम में एक दुष्ट व्यक्ति अत्याधिक मद्यपान का व्यसन करता तथा वह अपनी पालतू गाय व उसके शिशु–(बछड़े) को भी नलुकी – (बाँस की एक पोर में लेखनी के आकार का बनाया गया एक पात्र) में मद्य भरकर पिलाता पश्चात् इन निर्दोष धर्म–प्राणियों को बड़ी ही क्रूरता पूर्वक तीव्र–गति से मारता–पीटता जाता। इस हिंसात्मक कार्य से उसका स्वयं का मनोरञ्जन भी होता था। घोर मार से दोनों मूक–भोले–(व पूजनीय) जीवों की पीठ, घुटने, पूँछ सूज कर रक्तवर्णी हो जाते। गऊ के तो–कान तथा पूंछ शक्तिहीन–(मृतप्रायः) ही हो गए थे। दुःखी–पीडित व असहाय गऊ स्वयं को तो कभी अपने बछड़े को अश्रुपूर्ण नेत्रों से देखती। दुष्ट की दुष्टता के भय से कोई इस घोर हिंसक–कर्म का विरोध भी न करता, यदि कोई सज्जन–व्यक्ति विरोध भी करता तो उसको अपमानित ही होना पड़ता। इस दुष्टात्मा के दो भाई भी उसी जैसी प्रवृति के थे।

मेरे पूज्य–पिताजी – (ब्रह्मलीन) पं० रामेश्वर दत्त जी शर्मा को एक अवसर पर पूजा–पाठ कराने उस ग्राम में उसी दुष्ट के गृह के समीप–(पड़ोस) में जाना पड़ा। संयोग से उस दिन भी वह गऊ व उसके शिशु को पीट रहा था। समीप हो रहे इस घोर–हिंसक कृत्य–दृश्य को मेरे पिताजी ने बड़े ही कठोर हृदय से, अपनी आँखों से देखा। दुष्ट की प्रवृति को उन्होंने पूर्व से ही ज्ञात कर लिया था। अतः गऊ माता व उसके शिशु की दयनीय–दशा को देख वे मौन ही रहे तथा हृदय में अत्यन्त पीड़ा लिए, घोर–कृत्य करने वाले उस दुष्ट को अभिचार कर्म–प्रयोग करके घोरोत्तम दण्ड देने का सङ्कल्प भी कर उठे। पूज्य–पिताजी ने दुष्ट–व्यक्ति तथा उसके अन्य दोनों भाइयों के नाम–गोत्रादि ज्ञात कर और युक्ति–पूर्वक उनके निवास के प्रवेश द्वार देहली– मध्य की कुछ मात्रा में मिट्टी भी उठवाकर प्राप्त करा ली। अपने नगर–निवास आकर अभिचार–कर्म–प्रयोग हेतु उचित–स्थान का चयन कर–(एक भग्न शिव– मंदिर) उन्होंने उस दुष्टात्मा व उसके भाइयों पर अभिचार–कर्म–प्रयोग, आरम्भ कर दिये। वे नित्य–रात्रि में भगवान् श्री शरभेश्वर का पूजन कर कवच–सहस्रनाम का पाठ करते तथा 'निग्रह–दारूण–सप्तक' का–(प्रयोग क्रमानुसार) पाठ करते एवं 'श्री शरभ–शालुव–पक्षिराज' के मूल–मन्त्र का लोम–विलोम–(प्रति–वर्ण विलोम) रीति से जप भी करते, वे प्रति–दिन जप संख्या में वृद्धि भी करते जाते। अभिचार–कर्म पुतली माध्यम से था। प्रयोग–साधन के निश्चित दिवसों की अवधी पूर्ण भी नहीं हो पाई थी– (अर्थात् प्रयोग–कर्म दिवसों के मध्य) कि एक दिन रात्रि के समय उस दुष्टात्मा व उसके भाइयों में परस्पर द्वन्द–युद्ध हुआ, उठा–पटक चली तथा एक भाई ने–(जो कि उस दुष्ट से छोटा था) उस दुष्ट के सिर पर किसी भारी–भरकम वस्तु का 'पूर्ण बलावेग से' प्रहार कर दिया। दुष्टात्मा की वहीं एडियाँ रगड़–रगड़कर कुछ ही क्षणों में मृत्यु हो गयी, चिकित्सा कराने का भी समय न दे पाया। घातक प्रहार करने वाला भाई इस अकस्मात हुई घटना को घटित होते देख अत्यन्त भयभीत हो गया, भय के प्रभाव से उसने उसी घटना के समय उपरान्त बिना सन्देह उत्पन्न किए घर में रखे घातक विष–('सल्फास' जो गेहूँ में 'कीट–नाशक' दवा के रूप में रखा जाता है) का सेवन कर लिया। दुष्टात्मा की अनायास हुई मृत्यु से घर में वैसे ही शोक लहरों का आगमन हो चुका था। क्या करें? क्या न करें? यह विचारते हुए कुछ ही समय व्यतीत हुआ कि 'कीट–नाशक' विष का सेवन किए हुए उस छोटे भाई का स्वास्थ्य क्षीण होने लगा, वह पीड़ा से [illegible]

विरोध भी करता तो उसको अपमानित ही होना पड़ता। इस दृष्टान्त के दो भाई भी

है, यह ज्ञात कर परिवार के सभी सदस्य स्तम्भित हो उठे। अर्द्ध–मूर्छित अवस्था में चिकित्सालय तक ले गए, किन्तु वहाँ उसको बचाया न जा सका, उसकी मृत्यु हो गयी। तीसरा भाई कुछ दिनों पश्चात् विक्षिप्त हो गया था, सुना गया था कि उसको घर में लोहे की साङ्कल से बाँधकर रखा जाता था। उसके पागलपन को ठीक करने के लिए अनेकों चिकित्सा–उपाय किए गए, किन्तु सभी व्यर्थ–(कुछ माह पश्चात् उसकी भी मृत्यु हो गयी थी)।

अभिचार प्रयोग–कर्म २१ दिन में सम्पन्न हुआ। पापात्माओं को उनके किए हुए घोर–अधर्म कृत्यों के कारण घोरोत्तम–दण्ड भोगना ही पड़ा। इन सब घटना के पश्चात् एक सज्जन गौभक्त किसान गऊ व उसके बछड़े को खरीदकर अपने यहाँ ले आए।

घटना वर्षों पुरानी है, किशोरावस्था में था, तब मैंने एक प्रसङ्ग में सुनी थी। यह घटना निर्णय देती है कि अभिचार कर्म–प्रयोग किस पर, कब और क्यों करना चाहिए।

।। विचारणीय ।।

सम्पूर्ण 'साधना–मार्ग' में भगवान् श्री शरभेश्वर ही एकमात्र ऐसे देवता हैं, जिनकी साधना में 'राष्ट्र–कल्याण' की भावना व्यक्त हुई है। श्री शरभेश्वर 'राष्ट्र–भक्ति' के कारक देवता हैं, कहा भी गया है–––

राष्ट्रं शान्ति करः पातु राजनं धर्म–शासनः।

एवं– **न वदन्त्व शुभं वाक्यं जन्तवो मम देशके।**

मास्तु वैरं तु जन्तू नामन्योन्यं मम राज्यके।।

तथा– **सर्वे सर्वाश्च नन्दन्तु सन्तु कल्याण–कारिणः।**

राजवन्ती मही चास्तु राजा भवतु धार्मिकः।।(शरभ–कवच)

उक्त प्रस्तुत श्लोक–पंक्तियों से यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि भगवान् श्री शरभेश्वर से किस–प्रकार राष्ट्र और समाज की भलाई, शान्ति, सुरक्षा तथा प्रगति की कामना व्यक्त की गई है। राष्ट्र में, राज्य में, नगर में, ग्राम में निवास या प्रवेश करने वाले कपटी–दुष्टी–भ्रष्टी–क्रोधी–छद्मी– तस्कर–शत्रु आदि से रक्षा व उनके पलायन की प्रार्थना इन्हीं की साधना में हुई है।

इस कलियुग में जब वैदिक – साधनाएँ पानी के सर्प की भाँति फिसल जाती हैं–(क्योंकि इसमें समय–शुद्धि नियम–अनुशासन का आधार है) और आगमोक्त–साधनाएँ विशेष फलदाई होती हैं और जिन विकट–विषम परि–स्थितियों से यह 'भारत–वर्ष' देश गुजर रहा है, जहाँ आज राष्ट्र–द्रोहियों, आततायियों, निर्दोषजनों का संहार करने वाले आतङ्कवादियों का मृत्यु–ताण्डव तथा घुसपैठ है––– **विशेषकर काश्मीर**, तो ऐसी इस गम्भीर परि–स्थिति में हम भगवान् श्री शरभेश्वर की शरण में न जाएँ और उनकी साधना न करें, तो यह ऐसा–दुर्भाग्य होगा जैसे कि कोई सामर्थ्यवान् व्यक्ति सर्व–सुविधा सम्पन्न होते हुए भी भरे–पूरे बाजार में भूख से मर जाए और यदि ऐसा होता है, तो यह उसकी मूर्खता है।

जब हमारे ऋषियों ने व्यक्तितित एवं सामाजिक–प्रगति सुरक्षा–समृद्धि के लिए **'शरभोपासना'** जैसी अचूक–विधि सर्जित की है, तो उनको न अपनाना और तदानुसार साधना न करना — इस देश के आ[illegible]क–जनों के लिए एक घोर–विडम्बना है।

राष्ट्र में शान्ति हो, चाहे वह वार्ता के माध्यम से अथवा युद्ध के माध्यम से ––– श्री शरभेश्वर दोनों ही प्रकार से फलीभूत हैं। ये जहाँ राष्ट्र में शान्ति की व्यवस्था रचते हैं, वहीं युद्ध की परि–स्थिति में वीर–सैनिकों के आत्म–बल व उनके साहस में वृद्धि करते हैं तथा उनके द्वारा शत्रुओं को मृत्यु प्रदान करते हैं। ऐसे देवता की विशेषता–महत्ता से प्रत्येक के लिए यह परम–विचारणीय, परम–दायित्व बन पडता है कि अपने निहित स्वार्थों का परि–त्याग कर इनकी साधना तथा प्रयोगों को 'राष्ट्र–हित' में आरम्भ व सम्पन्न करना चाहिए।

यद्यपि भगवान् श्री शरभेश्वर की विस्तृत एवं साङ्गोपाङ्ग साधना सभी के लिए आज के युग में सम्भव नहीं है। ऐसे व्यक्तियों के लिए उनका 'निग्रह–दारुण–सप्तक' सर्व–विध आपत्तियों से अपनी आत्मा, अन्तःकरण और शरीर की रक्षा के लिए पर्याप्त है। दतिया के महाराज पूज्यपाद राष्ट्र–गुरु श्री स्वामी जी ने आत्म–शुद्धि एवं काम–क्रोधादि शत्रुओं के शमन के लिए 'निग्रह–दारुण–सप्तक' का प्रयोग बताया है, किन्तु इसके साथ ही सभी–प्रकार की आपत्तियों से रक्षा और शत्रु–संहार के लिए इस सप्तक का प्रयोग साधना जगत में प्रचलित है, इसके लिए इस सप्तक के विनियोग में तदानुसार अपनी कामना का उल्लेख करके यथा वाञ्छित फल–प्राप्त किया जा सकता है। कहने का आशय 'राष्ट्र–कल्याण' हेतु ही है अर्थात् जिस–प्रकार यहाँ 'निग्रह–दारुण–सप्तक' व उसके प्रयोग प्रस्तुत हुए हैं, उसमें 'राष्ट्र–हित' को ही अपनी व्यक्ति–गत कामना मान कर, (भले ही समय–समय पर) इस महिमा–शाली सप्तक की साधना व प्रयोग को 'राष्ट्र–द्रोही', आतङ्कवादियों के विरुद्ध सरलता से सम्पन्न कर सकते हैं, उदाहरणतः विनियोग में कामना इस–प्रकार व्यक्त कर सकते

हैं–––

काश्मीर सहित समस्त भारत–राष्ट्रे सर्वेभ्यो, आन्तरिकेभ्यो, वाह्येभ्यो शत्रुभ्यो सुरक्षणाय एवं अस्माकं देशस्य सर्व–विद्य कल्याण विकासाय च दारुण–सप्तक नाम श्री शरभ–स्तोत्रस्य परायणं करिष्यामि।

तथा–

वडवानल–मन्त्र में 'अमुक शत्रुणां' के स्थान पर–

......'मम भारत देशस्य सर्व–आन्तरिक शत्रुणां वाह्य–आक्रमणकारिणां विनाशय–विनाशय' उच्चारित करें।

इस–प्रकार श्री शरभेश्वर की यह साधना राष्ट्र–हित, समाज–कल्याण, जन–शान्ति तथा प्रगति–कारक सिद्ध होगी, जिससे हमारा राष्ट्र के प्रति दायित्व का भी निर्वाह होगा।

।।अति–दुर्लभ।।

।।श्री शरभ-शाबर महा-मन्त्रराज।।

प्रस्तुत शाबर मन्त्र भगवान श्री शरभेश्वर का अत्यन्त दुर्लभ व प्रत्यक्ष सिद्धि–प्रद मन्त्र है, शाबर मन्त्र श्रेणी में इस मन्त्र को महा मन्त्र–राज तथा महा चमत्कारी कहा गया है। अपने व्यक्ति–गत पुस्तकालय में रखे 'हस्तलिखित' ग्रन्थ से शुद्ध करके साधकों के लाभार्थ इसको प्रस्तुत–प्रकाशित किया जा रहा है। इसके नित्य तीन पाठ करते रहने से सर्वाभीष्ट कामना की पूर्ति होती है, असाध्य से असाध्य कार्य पूर्ण–रूप से साध्य हो जाता है। राज–भय, चोर–भय, शत्रु–भय, रोग–भय आदि सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिलती है तथा दैनिक दिनचर्या में अनेक आश्चर्य साधक के समक्ष घटित होते रहते हैं। यह परम–हितैषी मन्त्र है, इसके द्वारा अभिचार–कर्म दोष को भी त्वरित ही नष्ट किया जाता है। नित्य जप–करते समय धूप–दीप का प्रयोग अवश्य करें–

ॐ नमो आदेश गुरु को। आदिमायेचे स्वरूप तेजोमयाय अग्नि–दंष्ट्रा करालाय श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय नवनाथाय ओङ्काराय कृपा–कराय थर–थर कांपे हु हुं हुङ्कारे अगन–पसारे, पवन चले, जल चले चल–चल कर–पिण्ड कु रक्षण करावे, त्रिवार मन्त्र जपावे मनः कामना पूर्ण करावे।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय कोया कोन–कोन कु मारे नव–नरसिंग कु मारे, नव–हनुमान कु मारे, छप्पन–भैरव कु मारे, क्षेत्रपाल कु मारे, अठ्ठासी–सहस्र कोटि चामुण्डा कु मारे, तैंतीस – कोटि देवता कु मारे, देव–कान्ता कु मारे, नव–कोटि कात्यायनी कु मारे, चन्द्र कु मारे, सूरज कु मारे, परशु–राम कु मारे, पाँच–पाण्डव कु मारे, अष्ट–कुली नाग कु मारे, तैजपाल कु मारे, अजय – पाल कु मारे, अजान्त–पालक कु मारे, काल कु मारे, महा–काल कु मारे, काल–चक्र कु मारे, छत्तीस–वेताल कु मारे, एक–वीस म्हैसासुर कु मारे, आठरासे जोगिनी कु मारे, वारा–सटव्या कु मारे, सात–असरा कु मारे, एक–लाख अस्सी–हजार पीर–पैगम्बर कु मारे, नव–लाख तारा कु मारे, नव–ग्रह कु मारे कटकान् ताडय–ताडय, मारय–मारय, शोषय–शोषय, ज्वालय–ज्वालय, हारय–हारय, सकल–देवतान् नाशय–नाशय, अति–शोषय–शोषय, मम सर्वत्र रक्षय–रक्षय ॐ खे खां खं हुं फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।१।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय स्वर्ग–लोक कु बाँधु, मृत्यु–लोक कु बाँधु, नव–लाख कुण्ड कु बाँधु, नव–लाख द्वार कु बाँधु, नव–लाख खैर कु बाँधु, चार–चक्रकु बाँधु, चवदा–भुवन कु बाँधु, साठ–संवत्सर कु बाँधु, दो–अयन कु बाँधु, छः ऋतु , बाँधु, बारा–मास कु बाँधु, दोन–पक्ष कु बाँधु, पंधरा–तिथि कु बाँधु, अठ्ठावी -नक्षत्र कु बाँधु, सत्रावीस– योग कु बाँधु, ग्यारा–करण कु बाँधु, सात–वार व बाँधु, बारा–राशि कु बाँधु, बारा–संक्रमण कु बाँधु, बारा–लग्न कु बाँधु बन्धय–बन्धय, छेदय–छेदय, ताडय–ताडय, मारय–मारय, शोषय–शोषय, ज्वालय–ज्वालय, हारय–हारय, नाशय–नाशय, मम सर्वत्र रक्षय–रक्षय ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।२।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय पाशुपतास्त्र कु बाँधु, नारायणास्त्र कु बाँधु, ब्रह्मास्त्र कु बाँधु, वडवानलास्त्र कु बाँधु, प्रजन्यास्त्र कु बाँधु, वातास्त्र कु बाँधु, पर्वतास्त्र कु बाँधु, गरुडास्त्र कु बाँधु, सर्पास्त्र कु बाँधु, मारणास्त्र कु बाँधु, मोहनास्त्र कु बाँधु, वशीकरणास्त्र कु बाँधु, स्तम्भनास्त्र कु बाँधु, जृम्भणास्त्र कु बाँधु, आकर्षणास्त्र कु बाँधु, उच्चाटनास्त्र कु बाँधु, गदास्त्र कु बाँधु, त्रिशूलास्त्र कु बाँधु, पाशास्त्र कु बाँधु, शक्ति–अस्त्र कु बाँधु, खेटकास्त्र कु बाँधु, तोमरास्त्र कु बाँधु, खड्गास्त्र कु बाँधु, शरास्त्र कु बाँधु, शापास्त्र कु बाँधु, सकल–यन्त्रास्त्र कु बाँधु निवारय–निवारय, मुञ्चय–मुञ्चय, ज्वालय–ज्वालय

न शय–नाशय, मम सर्वत्र रक्षय–रक्षय ॐ खे खां ख फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।३।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय जल कु बँधु, थल कु बाँधु, काष्ठ कु बाँधु, पवन कु बाँधु, पृथ्वी कु बाँधु, आकाश कु बाँधु, सप्त–द्वीप कु बाँधु, सप्त–पर्वत कु बाँधु, सप्त–पुरी कु बाँधु, नव–खण्ड कु बाँधु, छप्पन–देश कु बाँधु, नदी कु बाँधु, नाले कु बाँधु, कुवा कु बाँधु, बावड़ी कु बाँधु, तालाब कु बाँधु, घाट कु बाँधु, वाट कु बाँधु, आठरा–भार वनस्पति कु बाँधु, बन्धय–बन्धय, छेदय–छेदय, नाशय–नाशय, ज्वालय–ज्वालय, शोषय–शोषय, हारय–हारय मम सर्वत्र रक्षय–रक्षय ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।४।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय एकाहिक–ज्वर कु बाँधु, द्वाहीक–ज्वर कु बाँधु, त्राहीक–ज्वर कु बाँधु, चातुर्थीक– ज्वर कु बाँधु, शीत–ज्वर कु बाँधु, विषम–ज्वर कु बाँधु, ब्रह्म–ज्वर कु बाँधु, विष्णु–ज्वर कु बाँधु, रुद्र–ज्वर कु बाँधु, गुङ्गाई कु बाँधु, वाय–शूल कु बाँधु, नाक–शूल कु बाँधु, अक्ष–शूल कु बाँधु, गुद–शूल कु बाँधु, कटि–शूल कु बाँधु, जानु–शूल कु बाँधु, जङ्घा–शूल कु बाँधु, हस्त–शूल कु बाँधु, पाद–शूल कु बाँधु, कपाल–शूल कु बाँधु, शिर–शूल कु बाँधु, तिथा–वर्णा कु बाँधु, काल–वर्णा कु बाँधु, तिडका कु बाँधु, विस्फोटक कु बाँधु, गण्ड–माला कु बाँधु, शिर–शिरा कु बाँधु, पेट के दर्द कु बाँधु, डूने कु बाँधु, धरनी कु बाँधु, आसि के दर्द कु बाँधु, ऊर्ध्व–वायु–मस्तका कु बाँधु, निकाला–रोग कु बाँधु, किर्म्या–दोष कु बाँधु, सन्निपात–दोष कु बाँधु, माण्डदवरी कु बाँधु, बोल–व्याधी कु बाँधु, आलक–वाणी कु बाँधु, वरण–वसुवन कु बाँधु, धन–धुनला कु बाँधु, लुला कु बाँधु, लङ्गडा कु बाँधु, गुङ्ग । कु बाँधु, बहिरा कु बाँधु, रेचनादि सकल–रोग कु बाँधु, रेचनादि सकल–रोगान निर्मूलय–निर्मूलय, ताडय–ताडय, मारय–मारय, ज्वालय–ज्वालय, हारय–हारय, नाशय–नाशय, शोषय–शोषय, मम सर्वत्र रक्षय–रक्षय ॐ खें खां ख फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हु फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय– पक्षिराजाय हु फट् स्वाहा।।५।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुव–पक्षिराजाय–नवनाथाय दानव कु बाँधु, दैत्य कु बाँधु, आठ–कोटि भूतावल कु बाँधु, सवा–लक्ष भूतनी कु बाँधु, सवा–लक्ष झोटिङ्ग कु बाँधु, छत्तीस–मसान कु बाँधु, नव–लाख खब्बीस कु बाँधु, नवसे मानविन्या कु बाँधु, आठ–कोटि सातसे सोळङ्डे कु बाँधु, छत्तीस–कोटि बारासे बावन नदी कु बाँधु, शाकिनी कु बाँधु, डाकिनी कु बाँधु, हाडी–बाई कु बाँधु, धना–बाई कु बाँधु, सहित सात–बहिणी कु बाँधु, दुहादे कु बाँधु, डाकू कु बाँधु, शङ्कु–देव कु बाँधु, देवता कु बाँधु, मुंज्या कु बाँधु, माडया कु बाँधु, खुडया कु बाँधु, खुडवान कु बाँधु, ब्रह्म–राक्षस कु बाँधु, लाग्या भूत कु बाँधु, जीन्द–भूत कु बाँधु, जिन्दाड़–भूत कु बाँधु, समंधीत–बाधा कु बाँधु, पिशाच कु बाँधु, प्रेत कु बाँधु, चलती–खोपड़ी कु बाँधु, चुच साडे बारा–खण्डे विद्या कु बाँधु, अविद्या कु बाँधु, तेलङ्गी–विद्या कु बाँधु, बङ्गाली–विद्या कु बाँधु, कानड़ी–विद्या कु बाँधु, द्रविड़–देश कु बाँधु, बङ्गाल–गोडे कु बाँधु, कावेरी–देश कु बाँधु, उल्टी कु बाँधु, सिधी कु बाँधु बन्धय–बन्धय, नाशय–नाशय, मारय–मारय, शोषय–शोषय, ज्वालय–ज्वालय, हारय–हारय, देवता नाशय–नाशय, प्रहारय–प्रहारय, भस्मी कुरु–कुरु ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहारि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।६।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय वनिज कु बाँधु, रावुल कु बाँधु, देवल कु बाँधु, राजा कु बाँधु, प्रजा कु बाँधु, पापी कु बाँधु, पाखण्डी कु बाँधु, अगवाड़ी कु बाँधु, पिछवाड़ी कु बाँधु, अड़ोसी कु बाँधु, पड़ोसी कु बाँधु, नायका कु बाँधु, धोबी का कुवा कु बाँधु, काटका कु बाँधु, किटीका कु बाँधु, झूला–झूल कु बाँधु, आठरा–वर्ण कु बाँधु, छत्तीस–जात कु बाँधु, शिर–शूल कु बाँधु, सखी कु बाँधु, साली कु बाँधु, परदेशी कु बाँधु, मुसाफिर कु बाँधु, वातीचे वस्त्र–परी कु बाँधु, आह्वान–चक्र कु बाँधु, सभा–चक्र कु बाँधु, चहुँ–देशीचा चपेड़ा कु बाँधु, टाना कु बाँधु, टोना कु बाँधु, चेटकी कु बाँधु, दृष्टि कु बाँधु, मुष्टि कु बाँधु, धरची कु बाँधु, दारची कु बाँधु, उड़ती कु बाँधु, खेलती कु बाँधु, करेका कु बाँधु, कुर्तकका कु बाँधु, साधन कु बाँधु, साधक की क्रिया–कराय उस जाणते कु बाँधु, कराया कु बाँधु, जाणते का मुख बाँधु, कामीहा कु बाँधु, मारते के हाथ कु बाँधु, चलते के पाव कु बाँधु बन्धय–बन्धय, छेदय–छेदय, ताडय–ताडय, मारय–मारय, शोषय–शोषय, ज्वालय–ज्वालय, हारय–हारय, नाशय–नाशय, मम सर्वत्र रक्षय–रक्षय, कोई दृष्टि करे, कोई मुष्टि करे, कोई जन्तर करे, कोई मन्तर करे उलट–बलाय उसी पर पड़े, द्वन्दी–दुश्मन की तीन–सौ साठ मुञ्जा आवे तो फेर देना, फेर न देवे तो आधी– बीच खण्ड करे, आधी–बीच खण्ड न कर डाल तो गगन पोहचावे, गगन से फिरावे, दुश्मन

पर दुश्मन के गुरु घट–पिण्ड में प्रकाश करे। इस स्थल का धड़–पिण्ड पर कड़कड़ा सरे, इस बालक के घट–पिण्ड में जागती–ज्योत। श्री शरभेश्वर थाड़े।

श्री शरभेश्वराय–नवनाथाय ईश्वरी वाचा, थोड़े कुवाचा, चले न चले तो धोबी के कुण्ड में पड़े। ॐ नमो, ॐ नमो, ॐ नमो फट् स्वाहा करावे, गुरु–नारायण की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। ॐ खें खां खं फट् प्राणग्रहासि–प्राणग्रहासि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।७।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय करा विनाय, गुरु की सङ्गत, आदि–दिगम्बर की वाचा ॐ खें खां खं फट् प्राण–ग्रहासि प्राण–ग्रहासि हुं फट् सर्व–शत्रु संहारणाय शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा। ॐ खें खां खं हुं फट् प्राण–ग्रासय–ग्रासय शीघ्रं शत्रु संहारय–संहारय श्री शरभेश्वराय–नवनाथाय–पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।८।।

ॐ नमो भगवते श्री शरभ–शालुवाय–पक्षिराजाय–नवनाथाय ॐ नमो भगवते इं रूं क्लीं वं गं न वं वां कूं वां दिनी स्वाहा।।६।।

ये इदं पठते नित्यं सकल–दोष निवारणं, श्रीमद् दत्रात्रेय सद्गुरु नाथामृत मच्छिन्द्रनाथादि नवनाथ मन्त्रेण सकल–ज्वरादि सकल भूत–प्रेत–पिशाच समंधिक बाधादि नवनाथ समर्थेन सकल–भस्म कुरु–कुरु स्वाहा।।१०।।

।। शत्रु-संहाराष्टक ।।

'शत्रु–संहाष्टक' एक सिद्ध–साधक की रचना है, जो अत्यन्त प्रभाव–शाली होने के साथ–साथ उग्र भी है। 'विध्याञ्चल' पर्वत पर अष्ट–भुजा देवी के पश्चिम में अवस्थित 'सीता–कुण्ड' पर एक सिद्ध शाक्त–साधक श्री गुरू दत्तानन्द महाराज जी रहा करते थे, वे मात्र गौ–दुग्ध ही पीया करते थे। इनके समय में 'सीता–कुण्ड' के पास एक बस्ती भी थी। उन बस्ती के लोग महाराज जी को नाना–प्रकार के विघ्नों से तङ्ग किया करते थे तथा अपने पशुओं को इनकी फुलवाडी में छोडकर, फुलवाडी को नष्ट कर दिया करते थे। महाराज जी ने इन लोगों को अनेक बार समझाया, किन्तु दुष्टवृत्ति के ये लोग नहीं माने। एक बार इन लोगों ने महाराज श्री को कुछ अधिक ही तङ्ग कर दिया, तब महाराज श्री ने अति दुःखी हो, रुदन मन से भगवान् श्री भैरव जी का यह 'शत्रु–संहाष्टक' का निर्माण कर, स्तुति की। फल–स्वरूप उस बस्ती में हैजे का प्रकोप हो गया, जिससे पूरी बस्ती नष्ट हो गयी। आज भी वह स्थान निर्जन है, जङ्गल ही जङ्गल है।

यह 'शत्रु–संहाराष्टक' सर्व–प्रथम 'चण्डी' –(वर्ष–५०, अङ्क १२) में प्रयागराज निवासी ब्रह्मलीन वैद्य पण्डित श्री कृष्णानन्द जी के द्वारा प्रस्तुत हुआ था। जो सुप्रसिद्ध सिद्ध–शाक्त साधक स्वामी श्री अक्षोभ्यानन्द जी के शिष्य थे। स्वामी श्री अक्षोभ्यानन्द जी श्री विध्याञ्चल के 'भैरव–कुण्ड' पर रहा करते थे, जो 'शत्रु–संहाष्टक' के रचियता के पौत्र भी थे। 'चण्डी' में यह 'शत्रु–संहाष्टक' मात्र मूलवत् ही था, अर्थात् इसकी कोई पूजा–विधि आदि नहीं थी। लगभग ८ वर्ष पूर्व, जब मैं प्रयागराज गया–तब मैंने पूज्य वैद्य जी से भेंट की, तथा वार्ता में 'शत्रु–संहाष्टक' के विषय में कुछ जानकारी चाही, तब इस विषय पर मात्र उन्होंने इतना ही कहा कि, जब व्यक्ति किसी शत्रु के द्वारा अत्यन्त दुःखी हो जाये, तब श्रद्धा–विश्वासपूर्वक इस 'शत्रु–संहाष्टक' का श्री भैरव जी के सम्मुख ११ या २१ बार नित्य पाठ करे, कोई भी समय हो। श्री भैरव जी की यथा–शक्ति पूजा भी करे। ऐसा क्रम ११ दिन का ही रखे। श्री भैरव जी कृपा से साधक की सर्वत्र रक्षा होगी तथा उसके शत्रु का संहार होगा। कार्य–पूर्ण होने पर श्री भैरव जी के प्रति सदा भक्ति बनाये रखें।

।। पाठ ।।

हन–हन दुष्टन को, प्राणनाथ हाथ गहि, पटकि मही–तल मिटाओ सब शोक को।
हमें जो सतावे जन, काम–मन–वाक्यन ते, बार–बार तिनको पठाओ यम–लोक को।
भवन मसान करौ संसत शृगाल रोवैं, रुधिर कपाल भरो उर शूल चोक को।
भैरो महाराज ! मम काज आज एही करौ, शरण तिहारो वेग माफ करो चूक को।।१

भल–भल करे ओ विपक्षी पक्ष, आपनो टरे न टारे, काहू के त्रिशूल दण्ड रावरो।
घेरि–घेरि छलिन छकाओ, छिति छल माहिं बचै नाहीं, नाती–पूत–सहित स पाँवरो।
हेरि–हेरि निन्दक सकल निरमूल करो, चूसि लेहु रुधिर–रस धारो शत्रु–सागरो।
झपटि–झपटि झूमि–झूमि काल–दण्ड मारो, जाहि यम–लोक वैरि–वृन्द को विदा करो।।२

झपटि के सारमेय पीठ पै सवार होहु, दपटि दबाओ तिरशूल, देर ना करो।
रपटि–रपटि रहपट एक मारो, नाथ! नाक से रुधिर गिरै, मुण्ड से व्यथा करो।
हरषि निरखि यह काम मेरो, जल्दी करो सुनि के कृपा–निधान भैरोजी! कृपा करो।
हरो धन–दार–परिवार, मारो पकरि के, बचै सो बनि जाइ नारी–नार जा मरो।।३

जाहि जर–मूर से रहे न वाके बंस कोई, रोइ–रोइ छाती पीटै, करै हाइ–हाइ के।
रोग अरु दोष कर, प्राणी विललाइ, वोकैं कोई न सहाइ लागै, मरै धाई–धाई के।
खलन खधारि, दण्ड देहु दीना–नाथ ! मैं तो परमै अनाथ, दया करो आइ–आइ के।
जनम–जनम गुन गाइ के बितैहों दिन, भैरो महाराज ! वैरी मारो, जाइ – जाइ के।।४
रात–दिन पीरा उठै, लोहू कटि–कटि गिरै, फारि के करेजा ताके बंस में समाइ जा।
रिरिकि–रिरिकि मरै, काहू को उपाय कछू लागै नाहीं एको जुक्ति, हाड़–माँस खाइ जा।
फिरत–फिरत फिरि आवै, चाहे चारो ओर यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र को प्रभाव विनसाइ जा।
भैरो महाराज ! मम काज आज एही करौ, शत्रुन के मारि दुख – दुसह बढ़ाइ जा।।५
झट – झट पेट चीर–चीर के बहाइ देह, भूत औ पिशाच पीवैं रुधिर अधाइ कैं।
रटि–रटि कहत–सुनत नाहीं, भूत–नाथ ! तुम बिनु कवन सहाय करै आइ कैं?
भभकि – भभकि रिपु–तन से रुधिर गिरे, चभकि – चभकि पिओ कुकुर लिआइ कैं।
हहरि – हहरि हिआ फाटै सब शत्रुन को, सुनहु सवाल हाल कासौं कहँ जाइ कैं।।६
जरै ज्वर–जाल–काल भृकुटि कराल करौ, शत्रुन की सेखि देखि जात नहीं नेक हूँ।
तेरो है विश्वास, त्रास एको नहिं काहू केर लागत हमारे, कृपा – दृष्टि कर देख हूँ।
भैरो ! उनमत्त ताहि कीजिए, उनमत्त आज गिरै जम–ज्वाल–नदी जल्दी से फेंक हूँ।
यम कर दूत जहाँ भूत–सम दण्ड मारै, फूटे शिर, टूटे हाड़, बचै नहिं एक हूँ।।७
हवकि–हवकि मास काटि दाँतन से, बोटि–बोटि वीरन के, नवो नाथ खाइ जा।
भूत–वैताल ववकारत, पुकार करैं, आज नर–रुधिर पर वहै आइ जा।
डाकिनी अनेक डडकारैं, सब शत्रुन के रुधिर कपाल भरि–भरि के पिआइ जा।
भैरो भूत– नाथ! मेरो काज आज एही करौ, दुर्जन के तन–धन अबहीं नसाइ जा।।८

।। फल–श्रुति ।।

शत्रुन संहार आज, अष्ट्क बनाए आज, षट–जुग ग्रह शशि सम्वत में सजि कैं।
फागुन अजोरे पाख, वाण तिथि, सोमवार, पढ़त जो प्रातः–काल उठि नींद तजि कैं।
शत्रुन संहार होत, आपन सब काज होत, सन्तन सुतार होत, नाती–पूत रजि कैं।
कहँ गुरु–दत्त तीनि मास, तीनि साल महँ, शत्रु जम–लोक जैहै बचिहै न भजि कैं।।६

।। कुलोनुकूल-मनोच्छित व शीघ्र-विवाहार्थ ।।

गन्धर्व-राज श्री विश्वावसु मन्त्र-साधन एवं प्रयोग

वर्तमान समय में प्रत्येक मनुष्य–प्राणी कहीं न कहीं, कोई न कोई, प्रारब्ध अथवा भावी, कारण अथवा अकारण, किसी न किसी समस्या–बाधा से त्रस्त–ग्रस्त है। व्यक्ति की वह समस्या अथवा बाधा आकस्मिक धन–लाभ या आजीविका की प्राप्ति हो। व्यापार–वृद्धि या उच्च–शिक्षा व इच्छित प्रशासनिक सेवा एवं उसमें प्रगति (PROMOTION) हो या फिर भौतिक सुख–सम्पदा का सङ्ग्रह एवं स्वयं का गृह–भवन अथवा शारीरिक–स्वास्थ्य, असाध्य–रोग, शत्रु–बाधा, सामाजिक मान–प्रतिष्ठा....... आदि .... आदि से सम्बन्धित कोई भी, कैसी भी समस्या या बाधा हो सकती है। इन समस्याओं के दूरस्थिकरण हेतु व्यक्ति नित–प्रतिदिन अपनी शक्ति–सामर्थ्य के अनुसार सङ्घर्ष व उपाय करता रहता है, जिनमें वह अपने कर्म व भाग्य के बल से समस्या का निवारण करने में सफल भी होता है, किन्तु कुछ समस्याएँ ऐसी भी हैं, जिनके निवारण में व्यक्ति पूर्णतः असहाय व निराश होकर स्वयं को दुर्भाग्य–शाली समझने लगता है। ऐसी ही समस्याओं में से अब की सर्वाधिक प्रसिद्ध एक समस्या या बाधा है ——— **किन्हीं व्यक्तियों का समय पर विवाह न होना या विवाह ही न होना।**

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, 'जो उच्च–शिक्षा, श्रेष्ठ धन–सङ्ग्रह व उत्तम स्वास्थ्य एवं अन्य और भी गुणों से युक्त होते हुए भी' उनका समय पर विवाह नहीं हो पाता, जबकि उनकी आयु विवाह–समय की सीमा का उल्लङ्घन भी कर बैठती है। विवाह हेतु पारीवारिक–सम्बन्ध बनाने के लिए अनेकानेक यत्न–प्रयत्न भी किए जाते हैं, अनेक मध्यस्थाएँ सम्पन्न की जाती हैं। कुण्डली–मिलान पर उत्तम ग्रह–स्थिति व श्रेष्ठ गुणों की प्राप्ति आदि सभी दृष्टियों से सहमति व विवाह–मुहूर्त की निश्चित योजना के चलते, किसी अन्य के कारण–वश या किन्हीं कारण अथवा बिना किसी भी कारण के सभी प्रयास यत्न–प्रयत्न विफल हो उठते हैं। और ऐसा एक बार नहीं! अनेकों बार होता है, होता रहता है।

कुछ व्यक्तियों का वर्ग ऐसा भी है, जो अपने विवाह से प्रसन्न नहीं रह पाते। क्योंकि उनको अपने या अपने परिवार के अनुकूल पत्नी की प्राप्ति नहीं हो पाती, जिसके फल–स्वरूप पति और पत्नी—— इन दोनों के मध्य दाम्पत्य–जीवन कलह–पूर्ण बना रहता है, दोनों ही परस्पर एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप मण्डित करने में लगे रहते हैं, इसमें दो परिवारों की मान–मर्यादा का समाज–समक्ष घोर–ह्रास भी हो उठता है। ऐसे में दोनों के सम्बन्ध विच्छेद भी हो जाते हैं।

अविवाहित व्यक्ति के विवाह होने में क्या बाधा है? क्यों विलम्ब हो रहा है? कारण क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर–प्राप्ति हेतु जन्म–पत्रिका दिखाई जाती है, जिसमें उत्तर–रूप में प्राप्त ग्रह–दोष से उत्पन्न बाधा–योग के निवाणार्थ उपाय किये जाते

हैं। किन्तु दुर्भाग्य–वश किए गए उपाय–प्रयोग भी व्यर्थ। समय पर विवाह न होना या मनोच्छित पत्नी की प्राप्ति न होना ---- इस समस्या से ग्रसित व्यक्ति अपने मित्रजनों के मध्य हीन–भावना उत्पन्न कर बैठता है तथा स्वयं को कुण्ठा–ग्रसित भी करने लगता है।

प्रायः सभी युवक, जिनकी आयु विवाह करने के लिए ठीक होती है और उनके विवाह हेतु परिवार में जब विषय–चर्चा आरम्भ होती है, तो उस–समय या उससे पूर्व ही, वे युवक यही इच्छा रखते हैं कि मुझे अति–सुन्दर पत्नी की प्राप्ति हो, जो अन्य और गुणों से भी सम्पन्न हो। किन्तु यह इच्छा सभी युवकों की पूरी हो, ऐसा सम्भव नहीं। और इसी इच्छा–पूर्ति की आशा में किन्हीं युवकों के विवाह में विलम्ब होता जाता है। या फिर ऐसे ही किसी युवक का जब किसी युवती के प्रति आकर्षण–भाव उत्पन्न हो तथा उस युवक की युवती से विवाह करने की प्रबल इच्छा हो, किन्तु विवाह से युवती असहमत हो अथवा उस युवक को वह युवती मन से स्वीकार करने की इच्छा ही न रखती हो, भले ही वह युवक कितना सुन्दर–सुशील–शिक्षित व धन–सम्पन्न ही क्यों न हो! तब भी, ऐसे में भी हताश–निराश युवक की यही इच्छा बनी रहती है कि 'मेरा विवाह उसी अमुक युवती से ही होना चाहिए' जिसके प्रति मेरा मन आकर्षट् है आदि...... आदि........।

ऐसी और इस विशेष समस्या के निवारण हेतु, इस बार यहाँ 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग' में ऐसे साधन–प्रयोग प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनके साधन–उपाय–प्रयोग से समय पर विवाह होता है। अपने और अपने कुल के अनुकूल कन्या–(वधू) की प्राप्ति होती है अर्थात् जो सुन्दर हो, सुशील हो, जो गृह–कार्य में दक्ष हो व धर्माचरण में प्रवीण हो। अविवाहित–व्यक्ति जिस–रूप में इच्छित कन्या की प्राप्ति चाहता है, उसको वैसी ही कन्या वधू–रूप में प्राप्त होती है। विवाहार्थ 'तन्त्र–शास्त्र' सम्मत जितने भी उपाय–साधन व प्रयोग हैं, उन सभी में सर्व–श्रेष्ठ, अचूक, अकाट्य, अव्यर्थ व त्वरित फल–प्रद साधन–उपाय व प्रयोग हैं ---- **गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु की मन्त्र–साधना।** इनकी साधना से मनोच्छित पत्नी की प्राप्ति ही नहीं होती, अपितु मन्त्र–साधना के फल–स्वरूप विवाह उपरान्त पति और पत्नी दोनों का ही दाम्पत्य–जीवन–सम्बन्ध अति–मधुर व आनन्द–मय हो उठता है।

श्री विश्वावसु गन्धर्व–राज की साधना विशेषतः विवाह व प्रबल–वशीकरण हेतु होती है। इनकी साधना से जहाँ मनोच्छित व कुल के अनुकूल पत्नी की प्राप्ति होती है, वहीं इनकी साधना के प्रभाव से प्रेम में आहात, असफल, निराश व्यक्ति भी बड़े ही अकल्पनीय–ढङ्ग से अपनी प्रेयसी को पत्नी–रूप में प्राप्त कर लेता है। यही नहीं......! 'विवाह के उपरान्त' पत्नी–प्रताडित पति अर्थात् जिस–पुरुष की स्त्री एकदम कठोर, निष्ठुर, दम्भी, हठी, कलह–प्रिया व दुष्भाषी हो---- गन्धर्व–राज की साधना–प्रयोग के प्रभाव से ऐसी अवगुणों–लक्षणों से सम्पन्न नारी को भी 'वह पुरुष' अति–आश्चर्यजनक रूप से वशीभूत कर मनोनुकूल कर लेता है।

महा–भारत एवं प्रायः सभी पुराणों में गन्धर्वों का उल्लेख–वर्णन हुआ है। यक्ष, नाग, किन्नर, विद्याधर की भाँति अति–रूपवान् गन्धर्व भी उप–देवता की श्रेणी में आते हैं। ये सङ्गीत में पूर्ण–पारङ्गत व उसमें सर्वाङ्ग–रूप से अधिकार रखते हैं, तथा सङ्गीत –माध्यम से स्वर्ग में देवताओं का मनोरञ्जन करना इनका कार्य है। जिस–प्रकार साधक यक्ष, नाग, किन्नर, वेताल अथवा विद्याधर की साधना कर सर्व–सम्पन्न स्थिति को प्राप्त कर लेता है, उसी–प्रकार गन्धर्व की साधना से भौतिक सुख–समृद्धि इत्यादि अभीष्ट कामनाओं की पूर्ति होती है, जिसमें साधक को जगत–सम्मोहन व वशीकरण–आकर्षण का विशेष–बल भी प्राप्त होता है। शास्त्रों के अनुसार सम्पूर्ण गन्धर्व–समूह में चित्रचेन, अभ्राच, अन्धारि, रम्भारि, सूर्यवर्चा, कृधु, हस्त, सुहस्त, मूर्धवान्, महामना, विश्वावसु व कृशानु नामक प्रमुख गन्धर्व हैं, इनमें विश्वावसु (और चित्रसेन) की महत्ता सर्वाधिक है। ध्यान के अनुरूप कल्पतरू के नीचे मणि–मण्डप में सुन्दर सिंहासन पर विराजमान तथा अति–सुन्दर युवतियों से घिरे हुए इन गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु का यद्यपि पुराणादि में संक्षिप्त–रूप से ही परिचय मिलता है–(मार्कण्डेय–पुराण, अध्याय–६६ में इनका उल्लेख आया है, ये महासती मदालसा के पिता थे), तथापि 'तन्त्र' के साधना–पद्धति विषयक कई लघु व वृहद् ग्रन्थों में स्थान–स्थान पर इन्हीं की साधना पर प्रकाश डाला गया है–(अर्थात् अन्य गन्धर्वों की साधना की अपेक्षा)। 'तन्त्र–शास्त्रों' में प्रतिष्ठित व प्रमाणिक 'रुद्र–यामल महा–तन्त्र' में गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु का पञ्चाङ्ग – (पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम व स्तव) भी सम्मलित है।

प्रस्तुत श्री विश्वावसु के कई मन्त्र–विधान 'विभिन्न दुर्लभ मन्त्र–प्रयोगों से पूर्ण एक प्राचीन हस्त–लिखित ग्रन्थ से प्रेषित है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर दे कि इनकी विशिष्ट–रीति से साधना 'शाक्त–सम्प्रदाय' में 'कौलाचार' विधि के अन्तर्गत भी है। 'कौलाचार–विधि' के सभी जन पात्र न होने के कारण, उस विधि को यहाँ प्रकट करना उचित भी नहीं। ध्यान यह भी रहे कि इन मन्त्र–विधानों के प्रयोगों का लाभ विवाह

साधना में शीघ्र–अनुभव व सफलता

में आई बाधा दूर करने, मनोनुकूल पत्नी की प्राप्ति अथवा गृहस्थ–जीवन में आनन्द–मय स्थिति को प्राप्त करने के लिए ही है, न कि अपने क्षुद्र स्वार्थ–वश, किसी स्त्री पर अपनी वासना–पूर्ति हेतु।

कुछ निर्देश व प्रयोग

- प्रस्तुत मन्त्र–साधन–विधानों को आरम्भ व प्रयोग अपने श्री गुरूदेव (या किसी विद्वान ब्राह्मण) की आज्ञा–निर्देश व दीक्षा लेकर ही करें।
- यह साधना–विधान शुक्ल–पक्ष की पूर्णिमा की रात्रि से आरम्भ करें।
- साधना–स्थल इक्षु–(गन्ने) अथवा कदली–(केले) का खेत या नदी तट हो तो उत्तम अथवा एकान्त स्थान हो। साधना–स्थल सुगन्धमय रहे—— इस बात का विशेष ध्यान रखें।
- साधना–काल में स्वच्छ–पवित्रावस्था व अन्य आवश्यक नियमों का पालन रहे।
- साधना काल में श्वेत–वस्त्र धारण करें। आसन भी श्वेत–कम्बल का हो। माला–शुद्ध स्फटिक की होनी चाहिए।
- जप पूर्व अथवा उत्तर–दिशा की ओर मुख करके करें।
- जप से पूर्व गुरु–गणपति व कुल–देवता आदि के पूजन–नियम को भी ध्यान में रखें।
- साधना गोपनीय ही रखें। किसी से विषय–चर्चा कदापि भी न करें।
- अकारण अथवा किसी की देहाकर्षण से आसक्त हो या फिर अपने मनोरञ्जन हेतु इस साधना को आरम्भ व प्रयोग कदापि भी न करें।
- नित्य–जप पूर्ण होने के पश्चात् पुनः गन्धर्व–राज का ध्यानादि पूजन कर जप का समापन करें।
- श्री विश्वावसु के सभी मन्त्र–विधानों की निश्चित जप संख्या सवा–लक्ष है। सवा–लक्ष मन्त्र–जप पूर्ण होने पर बिल्व व आम्र की समिधाओं में त्रिमधु–(घृत, मधु व शर्करा) अथवा गुग्गल, घृत या फिर पायसान्न से जप–संख्या का दशांश हवन करें। दशांश–हवन–आहुति का दशांश–तर्पण, दशांश–तर्पण संख्या का दशांश–मार्जन व मार्जन की संख्या के दशांश–ब्राह्मण–भोजन कर्म करें। जप–दिवस की अवधि २५ दिन है।
- जप तक साधक जप–कर्म करें, उसके नित्य प्रातः स्नान करने के पश्चात् श्री विश्वावसु का ध्यान कर मूल–मन्त्र का जप करते हुए १०८ बार गन्धर्व–राज को जलाञ्जलि प्रदान करें। १०८ में अशक्त होने पर ७ बार जलाञ्जलि तो अवश्य दें। इससे मन्त्र–साधना में शीघ्र–अनुभव व सफलता प्राप्त होगी।
- मन्त्र में अमुकी अथवा देवदत्ता के स्थान पर अभीष्ट कन्या का नाम संयुक्त करें। यदि अमुकी या देवदत्ता पद मन्त्र से पृथक कर जप किया जाये, तो स्त्री–वर्ग पर साधक के आकर्षण का प्रभाव होगा।
- जिसके गृहस्थ–जीवन में स्त्री के प्रति दुविधा हो, कलह–पूर्ण वातावरण हो अथवा स्त्री आज्ञाकारिणी न हो, यदि वह व्यक्ति अपनी स्त्री का ध्यान करके विधान–पूर्वक जप करे तो उसका गृहस्थ–जीवन अति–आनन्द के साथ व्यतीत होगा तथा पत्नी का गृहस्थ आनन्द–सुख प्राप्ति के प्रति भरपूर सहयोग प्रदान होगा —— ऐसा प्रभाव विश्वावसु के मन्त्र–विधान का है।
- शाल–वृक्ष की ११ अङ्गुल प्रमाण की कील को १०८ बार मन्त्र से अभिमन्त्रित कर, अभीष्ट कन्या के गृह–निवास में रखने अथवा युक्ति से, सहजता–पूर्वक उसको अभिमन्त्रित रक्त या श्वेत–पुष्प देने से अभीष्ट कन्या पर त्वरित आकर्षण–वशीकरण प्रयोग सफल होता है।
- अविवाहित व्यक्ति जब इस मन्त्र अनुष्ठान को करता है, तो फल–स्वरूप उसके विवाहार्थ मनोनुकूल कन्या के यहाँ से प्रस्ताव आने लगते हैं। अर्थात् श्री विश्वावसु के मन्त्रानुष्ठान के प्रभाव से शीघ्र ही उसका मनोवाञ्छित कन्या से विवाह हो जाता है।
- मनोच्छिक कन्या से विवाह के लिए श्री विश्वावसु गन्धर्व–राज का यह मन्त्र–अनुष्ठान अविवाहितजनों के लिए एक मात्र साधन है।

आगे गन्धर्व–राज के मन्त्र–साधन–विधान–प्रस्तुत हैं ——

।। मन्त्र-साधना ।।

विनियोग

ॐ अस्य गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु मन्त्रस्य श्री कामदेव–ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री विश्वावसु गन्धर्व–राज देवता, क्लीं बीजं, स्वाहा शक्तिः, श्री विश्वावसु नाम गन्धर्वः कीलकं, श्री विश्वावसु गन्धर्व–राज प्रीति–पूर्वक ममाभिलषितां अमुकीं कन्यां प्राप्त्यर्थे–जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास

ॐ श्री कामदेव–ऋषये नमः —— शिरसि। विराट् छन्दसे नमः —— मुखे। श्री विश्वावसु गन्धर्व–राज देवतायै नमः —— हृदये। क्लीं बीजाय नमः —— गुह्ये।

स्वाहा शक्तये नमः — पादयोः। श्री विश्वावसु नाम गन्धर्वः कीलकाय नमः — नाभौ। श्री विश्वावसु गन्धर्व–राज प्रीति–पूर्वक ममाभिलाषितां अमुकीं कन्यां प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे।

कर–न्यास

ॐ क्लां — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं — तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लूं — मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्लैं — अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लौं — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्लः — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि–न्यास

ॐ क्लां — हृदयाय नमः। ॐ क्लीं — शिरसे स्वाहा। ॐ क्लूं — शिखायै वषट्। ॐ क्लैं — कवचाय हुं। ॐ क्लौं — नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्लः — अस्त्राय फट्।

पुनः कर–न्यास

ॐ क्लीं विश्वावसु नाम गन्धर्वः – अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कन्या नामधिपतिः — तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं लभामि देवदत्तां — मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कन्यां सुरुपां — अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं सालङ्कारां — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तस्मै विश्वावसवे स्वाहा — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि–न्यास

ॐ क्लीं विश्वावसु नाम गन्धर्वः — हृदयाय नमः। ॐ क्लीं कन्यानामी धपतिः — शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं लभामि देवदत्तां — शिखायै वषट्। ॐ क्लीं कन्यां सुरुपां — कवचाय हुं। ॐ क्लीं सालङ्कारां — नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्लीं तस्मै विश्वावसवे स्वाहा — अस्त्राय फट्।

दिग्बन्धन

'ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ' — मन्त्र का उच्चारण कर अपने चारों ओर तीन चुटकी बजाएँ तथा 'ॐ रां रं रं तेजोज्ज्वल प्रकाशाय नमः' — मन्त्र का उच्चारण कर यह भावना करें कि मेरे चारों ओर अग्नि के तीन वलय – (घेरे) हैं।

दिग्बन्धन के पश्चात् अपने शरीर में 'पीठ–न्यास' करें —

पीठ–न्यास

मं मण्डुकाय नमः — मूलाधारे। कां कालाग्नि–रुद्राय नमः — स्वाधिष्ठाने। कं कच्छपाय नमः — हृदये। आं आधार–शक्तये नमः। कं कूर्माय नमः। धं धरायै नमः। क्षीं क्षीर–सागराय नमः। श्वें श्वेत–दीपाय नमः। कं कल्प–वृक्षाय नमः। मं मणि–प्रकाराय नमः। हें हेम–पीठाय नमः। धं धर्माय नमः — दक्ष–स्कन्धे। ज्ञां ज्ञानाय नमः — वाम–स्कन्धे। वैं वैराग्य नमः — दक्ष–जानुनि। ऐं ऐश्वर्याय नमः — वाम–जानुनि। अं अधर्माय नमः — मुखे। अं अज्ञानाय नमः — वाम–पार्श्वे। अं अवैराग्याय नमः — नाभौ। अं अनैश्वर्याय नमः — दक्ष–पार्श्वे।

● ध्यान रहे कि 'कं कच्छपाय नमः' से लेकर 'हें हेम–पीठाय नमः' तक न्यास हृदय में होगा। शेष, जहाँ–जहाँ अङ्गों का सङ्केत दिया गया है, वहाँ–वहाँ उस अङ्ग में न्यास करना होगा। आगे सभी मन्त्रों से न्यास हृदय में ही होगा।

अं अनन्ताय नमः। चं चतुर्विंशति–तत्वेभ्यो नमः। पं पद्माय नमः। आं आनन्द–कन्दाय नमः। सं सम्विन्नालाय नमः। विं विकारमय–केसरेभ्यो नमः। प्रं प्रकृत्यात्मक–पत्रेभ्यो नमः। पञ्चाशद् वर्णाढ्य–कर्णिकायै नमः। सं सूर्य–मण्डलाय नमः। चं चन्द्र–मण्डलाय नमः। वैं वैश्वनार–मण्डलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। आं आत्मने नमः। अं अन्तरात्मने नमः। पं परमात्मने नमः। ज्ञां ज्ञानात्मने नमः। मां माया–तत्वात्मने नमः। कं कला–तत्वात्मने नमः। विं विद्या–तत्वात्मने नमः। पं पर–तत्वात्मने नमः।

हृदय में न्यास सम्पन्न कर चुकने के पश्चात्, हृदय में ही 'अष्ट दल कमल' की भावना करते हुए, उन दलों के मध्य, निम्न–मन्त्रों से क्रम–पूर्वक–(ऊपर दाएँ से आरम्भ कर अर्थात् प्रदक्षिणा की भाँति) पीठ–शक्तियों का न्यास करें—

कां कान्त्यै नमः। प्रं प्रभायै नमः। रं रमायै नमः। विं विद्यायै नमः। मं मदनायै नमः। मं मदनातुरायै नमः। रं रम्भायै नमः। मं मनोज्ञायै नमः।

तथा 'कर्णिका में' — ह्रीं सर्व–शक्ति कमलासनाय नमः।

न्यासादि कर चुकने के पश्चात् गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु का ध्यान व मानस–पूजन उसी हृदयस्थ पीठ में करें, जहाँ उपरोक्त 'पीठ–न्यास' पूर्ण किया है।

ध्यान

हस्ताब्धं विनिधाय पाणि कमले स्वीये तदीयं वरम्।
कन्यां प्रार्थयते वराय ददतं सद्वस्त्रभूषोज्जवलम्।।
कन्याभिः परितो वृत्तं नतमुखाम्भोजाभिरानन्दितम्।
नाना कल्प–कला कलाप कलितं विश्वावसुं चिन्तयेत्।।

मानस–पूजन

अधो–मुख कनिष्ठिकाङ्गुष्ठ से 'गन्ध–मुद्रा' दिखाते हुए —

ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।

अधो–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए—

ॐ हं आकाश–तत्वात्मक पुष्पं गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु प्रीतये समर्पयामि नमः।

ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'धूप–मुद्रा'** दिखाते हुए —

ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु प्रीतये घ्रापयामि नमः

ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से **'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए —

ॐ रं अग्नि – तत्वात्मकं दीपं गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु प्रीतये दर्शयामि नमः

ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से **'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए —

ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु प्रीतये निवेदयामि नमः।

ऊर्ध्व–मुख सर्वाङ्गुलियों से **'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए —

ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु प्रीतये कल्पयामि नमः।

ध्यान व 'मानस–पूजन' के पश्चात् पद्म, ताम्बूल और योनि–मुद्रा को प्रदर्शित करें, यथा —

पद्म–मुद्रा

दोनों हाथों को परस्पर मिलाएँ तथा सभी अङ्गुलियों को पुष्प की कली के समान ऊर्ध्व की ओर खड़ी करें और दोनों अङ्गूठों को अङ्गुलियों के तल से स्पर्श कराएँ तो **'पद्म–मुद्रा'** निर्मित होती है।

ताम्बूल–मुद्रा

अङ्गूठे और अनामिका के अग्र–भाग मिलाने से 'तत्व–मुद्रा' बनती है, इसी 'तत्व–मुद्रा' से 'ताम्बूल' देने के प्रक्रिया की भाँति **'ताम्बूल–मुद्रा'** निर्मित होती है।

योनि–मुद्रा

दोनों हाथों की दोनों कनिष्ठाङ्गुलियों को एक–दूसरे से सम्बद्ध करें, दाएँ हाथ की तर्जनी–अङ्गुली से बाएँ हाथ की अनामिकाङ्गुली को और बाएँ हाथ की तर्जनी–अङ्गुली से दाएँ हाथ की अनामिकाङ्गुली को आबद्ध करें। फिर दोनों अनामिकाङ्गुलियों के अग्र–भाग में दोनों मध्यमाङ्गुलियों को जोड़कर फैलाएँ। साथ ही उन्हीं दोनों मध्यमाङ्गुलियों के मूल में दोनों अंगूठे भी लगा दें। यही **'योनि–मुद्रा'** होगी।

मुद्राओं के प्रदर्शन के पश्चात् श्री विश्वावसु के गायत्री–मन्त्र का १० बार और मूल–मन्त्र का निर्धारित संख्या में जप करें —

गायत्री–मन्त्र

ॐ क्लीं गन्धर्व–राजाय विद्महे कन्याभिः परिवारिताय धीमहि तन्नो विश्वावसु प्रचोदयात् क्लीं।

मूल–मन्त्र

ॐ क्लीं विश्वावसु नाम गन्धर्वः कन्या नामधिपतिः लभामि देवदत्तां कन्यां सुरूपां सालङ्कारां तस्मै विश्वावसवे स्वाहा।

मूल–मन्त्र के निर्धारित जप के पश्चात् श्री विश्वावसु के 'माला–मन्त्र' का १२ बार जप करें —

माला–मन्त्र

ॐ क्लीं विश्वासु गन्धर्व–राजाय नमः ॐ ऐं क्लीं सौः हंसः सोहं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सौः ब्लूं ग्लौं क्लीं विश्वावसु गन्धर्व–राजाय कन्याभिः परिवारिताय कन्या–दान रतोद्यमाय धृत–मालाय भक्तानां भग–भाग्यादि वर–प्रदानाय सालङ्कारां सुरूपां दिव्य–कन्या–रत्नं मे देहि–देहि, मद् विवाहाभीष्टं कुरु–कुरु, सर्व–स्त्री वशमानय, मे लिङ्गोत्कृष्टबलं प्रदापय, मत्स्तोकं विवर्धय–विवर्धय, भग–लिङ्गानन्दं कुरू–कुरू, भग–लिङ्ग–रोगान् अपहर, मे भग–भाग्यादि महदैश्वर्यं देहि–देहि, प्रसन्नो मे वरदो भव, ऐं क्लीं सौः हंसः सोहं ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं सौः ब्लूं ग्लौं क्लीं नमः स्वाहा।।

जप–समर्पण

जप के पश्चात् पुनः ध्यान–पूजन करें तथा निम्न–मन्त्र द्वारा जप–फल को गन्धर्व–राज को अर्पण कर दें–

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्गन्धर्वेश्वर।।

पश्चात् क्षमा–प्रार्थना भी करें–

क्षमा–प्रार्थना–

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजा–कर्म न जानामि, क्षमस्व गन्धर्वेश्वरः।।
मन्त्र–हीनं क्रियां–हीनं, भक्ति–हीनं विश्वावसो।
मयायत् पूजित देव। परिपूर्णं तदास्तु मे।।

स्पष्टीकरण

श्री विश्वावसु के प्रस्तुत मन्त्र–विधान मेरे व्यक्ति–गत पुस्तकालय के प्राचीन हस्त–लिखित ग्रन्थ से प्रेषित हैं तथा गुरु परम्परागत भी। कई ग्रन्थकारों ने इस मन्त्र–विधान को अपने–अपने सङ्कालात्मक ....विधान के ग्रन्थों में भी दिए हैं। प्रस्तुत विधान में जो प्रथम विधान है। वह विधान विस्तारात्मक है। प्रथम विधान की भाँति शेष विधान को भी विस्तारमय किया जा सकता है, इसके लिए अपने भी गुरुदेव

का मार्गदर्शन अपेक्षित रहेगा।

'शाक्त–धर्म' की प्रख्यात पत्रिका 'चण्डी' वर्ष–५१ अङ्क ७ व ११ में भी इस विषय-पर मन्त्र विधान व कवच प्रकाशित हुआ है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना उचित रहेगा कि 'चण्डी' के उक्त अंङ्क में कवच के साथ, जो मन्त्र प्रस्तुत किया है, वही मन्त्र यहाँ प्रस्तुत है, भेद इतना है कि उसमें इस मन्त्र को 'माला–मन्त्र' व्यक्त नहीं किया गया था, उसमें इसके विनियोग–न्यास का भी वर्णन है। मेरे पास विधान में इसको 'माला–मन्त्र' ही कहा गया है, जैसा कि प्रस्तुत है।

गन्धर्व–राज श्री विश्वावसु के तीन अन्य और विधान प्रस्तुत हैं। साधक–जन प्रथम विधान की भाँति, इन विधानों को भी विस्तारमय कर साधनोपयोगी कर सकते हैं।

(१)

विनियोग

ॐ अस्य श्री गन्धर्व–राज विश्वावसु मन्त्रस्य गौतम–ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, गन्धर्व–राजो श्री विश्वावसु देवता, ह्रीं बीजं, क्लीं शक्तिः अमुक नामस्य अभिलाषित कन्यां प्राप्त्यर्थे लक्ष–संख्याकं पुरुश्चरणां कृत्वेन चतुसहस्र–संख्याक जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास

ॐ गौतम–ऋषये नमः — शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः — मुखे। गन्धर्व–राजो श्री विश्वावसु देवतायै नमः — हृदये। ह्रीं बीजाय नमः — गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः — पादयोः। अमुक नामस्य अभिलाषित कन्यां प्राप्त्यर्थे जपे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे।

कर–न्यास

ॐ ह्रीं क्लीं गन्धर्व–राज — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ विश्वावसो — तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ममाभिलाषितां — मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कन्यां — अनामिकाभ्यां नमः। ॐ प्रयच्छ — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि – न्यास

ॐ ह्रीं क्लीं गन्धर्व–राज — हृदयाय नमः। ॐ विश्वावसो — शिरसे स्वाहा। ॐ ममाभिलषितां — शिखायै वषट्। ॐ कन्यां — कवचाय हुं। ॐ प्रयच्छ — नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ स्वाहा — अस्त्राय फट्।

ध्यान

गन्धर्व–राज निज दक्ष पाणीं, कन्यां दधानां कमलायताक्षम्।
करेण सव्येन् धृताब्जयुग्मं, दिव्याङ्गरागाभरणं नमामि।।

मानस–पूजन

पूर्वोक्त विधान में द्रष्टव्य।

मूल–मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं गन्धर्व–राज विश्वावसो ममाभिलाषितां कन्यां प्रयच्छ स्वाहा।

जप–समर्पण

पूर्वोक्त विधान में दृष्टव्य।

क्षमा–प्रार्थना

पूर्वोक्त विधान में दृष्टव्य।

● मन्त्र सहस्र चतुष्टयं नित्यं जपेत्। एनं मन्त्रं जपधा पश्चाध्यानं कृत्वा समर्पयेत्। पञ्च–विंशति दिने जपेत् तदनंतर होमं दशांश, तद्दशांश तर्पणं, तद्दशांश मार्जनं, तद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

(२)

विनियोग

ॐ अस्य श्री गन्धर्व–राज मन्त्रस्य, कौशिक ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री विश्वावसु नाम गन्धर्व–राजो देवता, ॐ बीजं, स्वाहा शक्तिः मम इष्ट कन्या प्राप्त्यर्थे श्री विश्वावसु मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास

ॐ कौशिक–ऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप् छन्दसे नमः — मुखे। श्री विश्वावसु नाम गन्धर्व–राजो देवतायै नमः — हृदये। ॐ बीजाय नमः — गुह्ये। स्वाहा शक्तये नमः — पादयोः। मम इष्ट कन्या प्राप्त्यर्थे श्री विश्वावसु मन्त्र जपे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे।

कर–न्यास

ॐ नमो भगवते — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ गन्धर्व–राज— तर्जनीभ्यां नमः। ॐ विश्वावसु — मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ममाभिलाषितां — अनामिकाभ्यां नमः। ॐ अमुक नाम्नीं कन्यां–कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ प्रयच्छ स्वाहा — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि–न्यास

ॐ नमोभगवते—हृदयाय नमः। ॐ गन्धर्व–राज—शिरसे स्वाहा। ॐ विश्वावसु—शिखायै वषट्। ॐ ममाभिलाषितां—कवचाय हुं। ॐ अमुक नाम्नी कन्यां—नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ प्रयच्छ स्वाहा—अस्त्राय फट्।

ध्यान

यद्वादिक्षुरसौदधौरथवरे दुग्धेक्षुभिः कल्पिते।
कल्हारस्त्रज निर्मिताक्ष युगले कन्या–गणैः सेविते।।
गन्धर्वाधिपते प्रसन्न–वदन विश्वावसु यः पुमान्।
मन्त्रं तस्य जपे लभेद् नियतो कन्यामसौकांक्षिताम्।।

मानस–पूजन

पूर्वोक्त विधान में दृष्टव्य।

मूल–मन्त्र

ॐ नमो भगवते गन्धर्व–राज विश्वावसो ममाभिलषितां अमुक नाम्नी कन्यां प्रयच्छ स्वाहा।

जप–समर्पण

पूर्वोक्त विधान में दृष्टव्य।

क्षमा–प्रार्थना

पूर्वोक्त विधान में दृष्टव्य

जपन्ति पुनर्न्यासं कुर्यात् पश्चाद्विसर्जनम्।
कृतेनानेन ॐ विश्वावसु गन्धर्व–राज प्रीयताम्।।

(३)

विनियोग

ॐ अस्य श्री गन्धर्व–राज मन्त्रस्य यक्षसेनाधिपति ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, श्री विश्वावसु देवता ममेष्ट कन्या प्राप्त्यर्थे श्री विश्वावसु मन्त्र जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास

ॐ यक्षसेनाधिपति ऋषये नमः —– शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः —– मुखे। श्री विश्वावसु देवतायै नमः —– हृदये। ममेष्ट कन्या प्राप्त्यर्थे श्री विश्वावसु मन्त्र – जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

कर–न्यास

ॐ क्लीं नमो —– अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ विश्वावसु —– तर्जनीभ्यां नमः। ॐ गन्धर्व–राज —– मध्यमाभ्यां नमः। ॐ यक्षसेनाधिपतये —– अनामिकाभ्यां नमः। ॐ इष्ट कन्यां मे देहि–देहि —– कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ दापय–दापय स्वाहा —– करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि–न्यास

ॐ क्लीं नमो —– हृदयाय नमः। ॐ विश्वावसु —– शिरसे स्वाहा। ॐ गन्धर्व–राज —– शिखायै वषट्। ॐ यक्षसेनाधिपतये —– कवचाय हुं। ॐ इष्ट कन्यां मे देहि–देहि —– नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ दापय–दापय स्वाहा —– अस्त्राय फट्।

ध्यान

ॐ विश्वावसु महाकाय कन्या–गण समन्वितः।
भजामि कन्या प्राप्त्यर्थं सर्वयक्षाधिपं विभुम्।।

मानस–पूजन

पूवोक्त विधान मे द्रष्टव्य।

मूल–मन्त्र

ॐ क्लीं नमो विश्वावसु गन्धर्व–राज यक्षसेनाधिपतये इष्ट कन्यां मे देहि देहि दापय–दापय स्वाहा।

जप–समर्पण

पूर्वोक्त विधान में दृष्टव्य।

क्षमा–प्रार्थना

पूर्वोक्त विधान में दृष्टव्य।

'कन्या के शीघ्र-विवाहार्थ'

कल्याण-गौरी मन्त्र-साधन

पूर्वोक्त विधान में अविवाहित युवकों में बाधा के कारण – कथन व्यक्त किये गए हैं। उन्हीं की भाँति समस्याएँ कन्या के विवाह में भी बाधक बन प्रकट होती हैं। अनेक परिवारों में यह प्रत्यक्ष देखने में आया है कि सुन्दर, गुणवती, सुशील, शिक्षित कन्या का विवाह सम्बन्ध समयानुकूल से नहीं बन पाता। माता–पिता अपनी कन्या के सुयोग्य वर की प्राप्ति व विवाह के प्रति चिन्तित रहने लगते हैं। अनेक प्रयास–प्रयत्न करते हुए भी, उनकों अपनी कन्या के अनुकूल श्रेष्ठ–वर की प्राप्ति में असम्भवता सी प्रतीत होने लगती है। माता–पिता की चिन्ता व्यर्थ नहीं! उनकी तथा कन्या की दृष्टि में समयानुकूल कन्या को श्रेष्ठ वर व परिवार की प्राप्ति हो तथा विवाह सम्पन्न हो, यही उत्तम है। इस समस्या के हेतु यहाँ कन्या के शीघ्र विवाहार्थ कुछ मन्त्र–प्रयोग साधन–विधान प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनकों श्रद्धा–भाव के साथ करने से कन्या को इच्छित वर की प्राप्ति हो, शीघ्र विवाह सम्पन्न हो जाता है।

विनियोग

ॐ अस्य श्री कल्याण–गौरी मन्त्रस्य श्री वामदेव–ऋषिः, गायत्री–छन्दः, श्री कल्याण–गौरी देवता, ॐ बीजं, ह्रीं शक्तिः, मम शीघ्र विवाहार्थे श्री कल्याण–गौरी मन्त्र–जपे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास

ॐ श्री वामदेव–ऋषये नमः — शिरसि। गायत्री–छन्दसे नमः — मुखे। श्री कल्याण–गौरी देवतायै नमः — हृदये। ॐ बीजाय नमः — गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः — पादयोः। मम शीघ्र विवाहार्थे श्री कल्याण–गौरी मन्त्र–जपे विनियोगाय नमः — सर्वाङ्गे।

कर–न्यास

ॐ — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं — तर्जनीभ्यां नमः। नमो भगवती — मध्यमाभ्यां नमः। माहेश्वरी — अनामिकाभ्यां नमः। कल्याण–गौरी — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि–न्यास

ॐ — हृदयाय नमः। ह्रीं — शिरसे स्वाहा। नमो भगवती — शिखायै वषट्। माहेश्वरी — कवचाय हुं। कल्याण–गौरी — नेत्रत्रयाय वौषट्। स्वाहा— अस्त्राय फट्।

ध्यान

धृतं कराभ्याय भयं च कन्याम्,
धृतं कटिस्थानिदुकूल सूत्रो —
तां देवता शीघ्र विवाह पद–दायिनीम्,
कल्याण–गौरी मनसा स्मरामि।।

मानस–पूजन

अधो–मुख कनिष्ठिकाङ्गुष्ठ से **'गन्ध–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ लं पृथ्वी – तत्वात्मकं गन्धं जगदम्बा श्री कल्याण–गौरी प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।
अधो–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं जगदम्बा श्री कल्याण–गौरी प्रीतये समर्पयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'धूप–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं जगदम्बा श्री कल्याण–गौरी प्रीतये धापयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से **'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं जगदम्बा श्री कल्याण–गौरी प्रीतये दर्शयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से **'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं जगदम्बा श्री कल्याण–गौरी प्रीतये निवेदयामि नमः।
ऊर्ध्वं –मुख सर्वाङ्गलियो से **'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं जगदम्बा श्री कल्याण–गौरी प्रीतये कल्पयामि नमः।

मूल–मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो भगवती माहेश्वरी कल्याण गौरी स्वाहा।

जप–समर्पण

ॐ गुह्याति गुह्य गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वप्रसादान्महेश्वरि !

क्षमा–प्रार्थना

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजा–कर्म न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि !।।
मन्त्र–हीनं क्रिया–हीनं, भक्ति–हीनं महेश्वरि !।
यत्पूजितं मया देवि! परिपूर्णं तदस्तु मे।।

मन्त्र–विधान

सर्व–प्रथम किसी भी शुभ–पर्व पर किसी विद्वान ब्राह्मण से इस मन्त्र की साधना–आज्ञा–निर्देश कन्या भली–भाँति ज्ञात– प्राप्त कर ले। पवित्र–स्थान–(पूजा–कक्ष अथवा कोई स्वच्छ एकान्त स्थान) में इस मन्त्र का जप आरम्भ करें। जप–काल–दिवसों के अन्तर्गत सात्विक आचार–विचार व आहार का ध्यान रखें। स्नानादि कर स्वच्छ–वस्त्र धारण कर, पूर्वाभिमुख हो, रक्तासन पर बैठकर, रक्त–चन्दन की माला से नित्य प्रातः ११ माला जप करें, ११ दिन तक। यद्यपि मन्त्र–पुरश्चरण सवा–लक्ष जप का है, किन्तु ११ हजार तप से भी कार्य–सिद्धि होती है। जप आरम्भ से पूर्व श्री गुरू, गणपति एवं कुल–देवता आदि का स्मरण–पूजन कर लें। उचित होगा कि जप–स्थान में भगवती पार्वती का कोई शास्त्रोक्त ध्यान–चित्र स्थापित कर, उसमें भगवती का मानसिक–भाव से आवाहन कर, सम्मुख गौ–घृत का दीप भी प्रज्वलित करें। भगवती से यही धरणा–कामना रखें कि **'मुझे शीघ्र ही मेरे अनुकूल वर की प्राप्ति हो, जो मेरे परिवार के अनुकूल भी हो'** .... आदि अपनी सत्व–धारणा–कामना भगवती के समक्ष मानसिक–रूप से कहें। ग्यारहवें दिवस को आम्र की समिधाओं में गौघृत

व लाजा-(खील) से मन्त्र-संख्या का दशांश हवन कर दें। दशांश-तर्पण, दशांश-मार्जन तथा वटुक-कुमारी व ब्राह्मण-भोजन भी करें। उचित होगा कि हवन-दिवस पर हवनादि क्रिया हेतु किसी ब्राह्मण का सहयोग-मार्गदर्शन लें। अथवा हवन में अशक्त होने पर हवन में प्रर्युक्त होने वाली दशांश-संख्याओं का दुगना जप पृथक से कर लें और १ माला का ही हवन कर लें। एक-एक वटुक-कुमारी व ब्राह्मण को भोजन अवश्य कराएँ। इस विधान से कन्या को शीघ्र ही सुयोग्य वर की प्राप्ति होती है। यह विधान मेरे द्वारा कई कन्याओं को अनुभूत हुआ है, जिनके विवाह होने में कारण-अकारण कई बाधाएँ-विलम्बताएँ प्रकट होती रहती थी। आज वे उत्तम-वर की प्राप्ति कर अपने गृहस्थ-जीवन में सुख-शान्ति व आनन्द का अनुभव कर रही हैं।

कन्या के विवाहार्थ कुछ और मन्त्र-विधान

१. मन्त्र

हे गौरि शङ्करार्धाङ्गि! यथात्वं शङ्कर-प्रिया !
तथा मां कुरू कल्याणि ! कान्तकान्तां सुदुर्लभाम्।।

विधान

उपरोक्त मन्त्र का जप किसी शुभ-पर्व पर प्रातः के समय आरम्भ करें। भगवती पार्वती के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर यथोपचार पूजन कर पाँच माला नित्य जप करना है। शीघ्र ही उत्तम वर की प्राप्ति होगी। कार्य पूर्ण होने पर बटुक व कुमारी को फल-दक्षिणा प्रदान करें।

२. मन्त्र

ॐ श्री दुर्गायै सर्व-विघ्न-विनाशिन्यै नमः स्वाहा। सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये, सर्व-काम-प्रदे शिवे! देहि मे वाञ्छितं नित्यं, नमस्ते शङ्कर-प्रिये ! दुर्गे शिवेऽभये माये, नारायणि! सनातनि! जपे में मङ्गले देहि, नमस्ते सर्व-मङ्गले।।

विधान

किसी भी शुभ-पर्व पर प्रातः के समय स्नानादि से निवृत्त हो, भगवती गौरी के सम्मुख गौ-घृत दीप प्रज्वलित कर देवी का ध्यान व पूजन करें तथा उक्त मन्त्र-स्तुति का १०८ बार पाठ करें। पाठ-प्रभाव से कुछ ही दिनों में कन्या को मनोवाञ्छित वर की प्राप्ति होती है। यह वही विधान-स्तुति है, जिसको भगवती सीता ने भगवती गौरी की उपासना में किया था, फल-स्वरूप उनको वर रूप में भगवान् श्री राम की प्राप्ति हुई थी।

३. मन्त्र

कत्यायानि! महा-माये! महा-योगिन्यधीश्वरि!
नन्द-गोप-सुतं देवि! पतिं मे कुरू ते नमः।।

विधान

किसी भी शुभ-पर्व पर स्नानादि कर पवित्र वस्त्र धारण कर प्रातः व सायं दोनों ही समय में भगवती गौरी के सम्मुख गौ-घृत दीप प्रज्ज्वलित कर, ध्यान-पूजन कर उक्त मन्त्र की ३-३ माला का जप करें। नित्य कुछ न कुछ फल-दक्षिणा कुमारी व बटुक को देते रहने चाहिए। मन्त्र-प्रभाव के फल-सवरूप शीघ्र ही कन्या को मनोवाञ्छित वर की प्राप्ति होगी। यह विधान भी कई कन्याओं द्वारा अनुभूत है।

४. मन्त्र

ॐ देवेन्द्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्रप्रिय भामिनि !
विवाहं भाग्यमारोग्यं शीघ्र लाभं च देहि मे।।

विधान

किसी भी शुभ-पर्व पर प्रातः के समय, स्नानादि से निवृत हो सर्व-प्रथम तुलसी-वृक्ष की पूजा करें। पश्चात् उक्त मन्त्र का १०८ बार जप तुलसी की माला से करें। जप के पश्चात् तुलसी की १२ परिक्रमा करें। उपरान्त अपने दाएँ हाथ में दूध और बाएँ हाथ में जल का लोटा लेकर, एक साथ ही भगवान् सूर्य देव को अर्घ्य दें। अर्घ्य देते समय उक्त मन्य का १२ बार जप करें। इस भाँति से नित्य विधि करते रहने पर शीघ्र ही कन्या को उत्तम वर की प्राप्ति होती है।

५. मन्त्र

ॐ शं शङ्कराय सकल जन्मार्जित पाप विध्वंसनाय पुरुषार्थ चतुष्टय लाभाय च पतिं मे देहि कुरुं कुरू स्वाहा।

विधान

शुक्ल-पक्ष सोमवार के दिन, प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर, धूप-दीपादि प्रज्वलित कर भगवान् शिव व भगवती पार्वती का पूजन करें। पूजा-स्थान पर ही एक गमले में केले के पौधे के पूर्व से व्यवस्था कर रखें। उस केले पर मौली को ११ बार लपेट दें और उसकी धूप-दीप-गन्धादि से पूजा करें, जल दें। पश्चात् उपरोक्त मन्त्र की ३ माला जप करें। जप के पश्चात् केले की १२ बार प्रदक्षिणा करें। ऐसा क्रम करते रहें। फल-स्वरूप कन्या को शीघ्र ही मनोनुकूल वर की प्राप्ति होगी। ध्यान रहे कि केले को मौली प्रथम-दिवस ही बाँधनी है।

निर्देश

सभी जप–विधानों को करना विवाह योग्य कन्या का ही कर्म है, अन्य का नहीं। उल्लेखित विधानों में प्रायः दिन संख्या निर्धारित नहीं, कर्म जब तक करते रहें जब तक कार्य पूर्ण नहीं हो जाता। जप–कर्म दिवसों में फल की प्राप्ति के सङ्केत प्राप्त होने लगेंगे। कार्य–सिद्धि में अवश्य ही सफलता प्राप्त होगी। कार्य–पूर्ण होने पर यथा शक्ति कुमारी–बटुक व ब्राह्मण को भोजन–वस्त्र–दक्षिणा आदि प्रदान कर उनको सन्तुष्ट करें। ध्यान यह भी रखें कि सभी जप विधानों में रक्तासन, रक्त–वस्त्र, रक्त–पुष्प एवं जप हेतु रक्त–चन्दन की माला का उपयोग हो (जहाँ तुलसी की माला का निर्देश है, वहाँ तुलसी की माला लें)। पूजा–जप पूर्वाभिमुख होकर करें।

मुक्ति-चिन्तामणि

।। श्री गायत्री-कवच ।।

श्री विक्रम–सम्वत्–२०६० 'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग' में 'दुर्लभ–स्तोत्र, मन्त्र–विधान' के अन्तर्गत–(पृष्ठ १८३) **'श्री गायत्री–भुजङ्ग –स्तोत्र'** प्रकाशित हुआ था, जो साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ। उसी भाँति भगवती गायत्री का **'मुक्ति–चिन्तामणि कवच'** भी यहाँ प्रेषित है, जो साधकों के लिए अत्यन्त प्रभावशाली व साधनोपयोगी सिद्ध होगा। मेरे व्यक्तिगत पुस्तकालय के प्राचीन हस्त–लिखित ग्रन्थ–सङ्ग्रह में 'गायत्री–पञ्चाङ्ग' की एक प्राचीन हस्त–लिखित प्रति सङ्ग्रहित–सुरक्षित है, जो 'रुद्रयामल–तन्त्रोक्त' है। उसी से यह कवच उद्धृत प्रस्तुत किया गया है। आशा है कि साधक–जन इस कवच को अपनी दैनिक साधना में सम्मिलित कर अवश्य ही लाभान्वित होंगे।

● *अत्यन्त दुर्लभ 'गायत्री–पञ्चाङ्ग', प्रकाशित 'गायत्री–पञ्चाङ्ग' से पूर्णतः भिन्न है। इस पञ्चाङ्ग की विशेषता यह है कि इसमें सम्पूर्ण विषय –(पटल, पद्धति, कवच, सहस्रनाम व स्तवराज) 'कौलाचार' सिद्धान्त–पद्धति के अनुरूप है, जो अन्यत्र कहीं भी, किसी भी प्रकाशित 'गायत्री–विषयक' स्वतन्त्र या सङ्कलित ग्रन्थों में दृष्टि–गोचर नहीं हुए। मात्र, आचार्य श्री रुद्रदेव जी त्रिपाठी के प्रकाशित ग्रन्थ 'रुद्रयामल–तन्त्र' (पृष्ठ २३८–४२) में प्रस्तुत 'मुक्ति–चिन्तामणि कवच' तथा 'त्रिपदागायत्री स्तवराज' (पृष्ठ २४३–४६ पर) एवं 'गायत्री–वीरवस्या'–(पृष्ठ ६५–६७) में वही, 'त्रिपदा–गायत्री स्तवराज' पाठ–भेद सहित अवश्य ही प्राप्य है। इस पञ्चाङ्ग के कवच–(उक्त, जो कि प्रस्तुत है), सहस्रनाम व स्तवराज विषयों का सम्पादन संशोधन तो हो चुका है, पटल व पद्धति का संशोधन कार्य अभी शेष है।*

।। श्री देव्युवाच पूर्व–पीठिका ।।

भगवन् सर्व–लोकेश! वेद–तत्वाधि–सागर।
सर्वज्ञ भैरवेशान, जगन्नाथ कृपा–निधे।।
कवचं देवी गायत्र्याः सर्व–तत्वमयं परम्।।
मुक्ति–चिन्तामणिं नाम त्वयामे प्राङ्निवेदितम्।।
मन्त्र–गर्भं सुरैः पूज्यं, सर्वापत्तारणं विभो।
ब्रह्म–विद्यामयं ब्रूहिं, यद्यऽहं तव बल्लभा।।

।। श्री भैरवोवाच ।।

शृणु देवि! प्रवक्ष्यामि, तव स्नेहाद् रहस्यकम्।
कवचं तत्व–भूतं ते, सर्व–मन्त्रैक विग्रहम्।।
मुक्ति–चिन्तामणिं नाम गायत्री–मन्त्र विग्रहम्।
मातृका–बीज निलयं व्याहृति ब्रह्म–सम्मितम्।।
सर्व शक्ति–मयं देवि! सर्वारिष्ट विमर्दनम्।
महा–पातक विघ्नौघ, ब्रह्म–हत्यादि नाशनम्।।

विनियोग

ॐ अस्य मुक्ति–चिन्तामणि श्री गायत्री–कवचस्य, सदाशिव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, देवी श्री गायत्री देवता, प्रणव बीजं, लक्ष्मी शक्तिः, शिवा–भीमा कीलकं धमार्थ–काम–मोक्षार्थे मुक्ति–चिन्तामणि श्री गायत्री–कवच पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि–न्यास

ॐ सदाशिव ऋषये नमः — शिरसि। त्रिष्टुप् छन्दसे नमः — मुखे। देवी श्री गायत्री–देवतायै नमः — हृदये। प्रणव–बीजाय नमः — गुह्ये। लक्ष्मी–शक्तये नमः — पादयोः। शिवा–भीमा कीलकाय नमः — नाभौ। धमार्थ–काम–मोक्षार्थे मुक्ति–चिन्तामणि श्री गायत्री–कवच पाठे विनियोगाय नमः –सर्वाङ्गे।

कर – न्यास

ॐ सौः ह्सौः सौः ऐं — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं भैं — तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ग्लां गायत्री — मध्यमाभ्यां नमः। ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं — अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं यं — कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ श्रां ह्रां स्वाहा — करतल–कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि–न्यास

ॐ सौः ह्सौः सौः ऐं — हृदयाय नमः। ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं भैं — शिरसे स्वाहा। ॐ ग्लां गायत्री — शिखायै वषट्। ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं — कवचाय हुं। ॐ ह्रीं ह्रीं ऐं यं — नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ श्रां ह्रां स्वाहा — अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ॐ पञ्च–वक्त्रा चतुर्हस्ता, प्रति–वक्त्रां त्रिलोचनाम्।
नटा–किरीटा षट्कुक्षिस्त्रिपदी स्फटिक–प्रभाम्।।
अक्ष–सूत्राम्बुजे दिव्ये दधती दक्ष–हस्तयोः।
रत्न–कुण्डल केयूर–हार कङ्कण–नुपूरैः।।
चरणोद्दाम बन्धाद्यैरन्यैराभरणैर्वरैः।
शोभिता रत्न–पीठस्था गायत्री मोक्ष–दायिनी।।

मानस–पूजा

अधो–मुख कनिष्ठिकाङ्गुष्ठ से **'गन्ध–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्धं देवी श्री गायत्री प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।
अधो–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'पुष्प–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं देवी श्री गायत्री प्रीतये समर्पयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से **'धूप–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं देवी श्री गायत्री प्रीतये घ्रापयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से **'दीप–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं देवी श्री गायत्री प्रीतये दर्शयामि नमः।
ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से **'नैवेद्य–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं देवी श्री गायत्री प्रीतये निवेदयामि नमः।
ऊर्ध्व –मुख सर्वाङ्गुलियो से **'ताम्बूल–मुद्रा'** दिखाते हुए —
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं देवी श्री गायत्री प्रीतये कल्पयामि नमः।

मन्त्र

ॐ सौः ह्सौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भैं ग्लां गायत्री श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं यं श्रां ह्रां स्वाहा।। (१०८ या ११ बार जप करें)

● प्रणव से पृथक उक्त मन्त्र २४ वर्ण का है, कवच–पाठ में प्रणव सहित मन्त्र के पृथक–पृथक वर्ण को मातृका–वर्ण के साथ श्लोक के प्रारम्भ में संयुक्त किया गया है।

।। कवच–पाठ ।।

ॐ अं ॐ शिरो मेऽवाद्देवी, गायत्री परमार्थदा।
ॐ आं सौः मेऽवताद्देवी, भालं वेदार्थ–सुन्दरी।।
ॐ इं ह्सौः भ्रुवौ पातु, मम तन्त्रार्थ–सुन्दरी।
ॐ ईं सौः नयने पातुः मम व्याहृति–सुन्दरी।।
ॐ उं ऐं मेऽवताद् कर्णौ, सदा भूर्लोक–सुन्दरी।
ॐ ऊं क्लीं मेऽवताद् गण्डौ, श्री भुवोलोक–सुन्दरी।।
ॐ ऋं ह्रीं मेऽवताद् नासां सदा स्वर्लोकैक–सुन्दरी।
ॐ ॠं श्रीं मेऽवतादोष्ठौ महर्लोकैक–सुन्दरी।।
ॐ ऌं भैं मेऽवताद् दन्तान् जनः लोकैक–सुन्दरी।
ॐ ॡं ग्लां मेऽवताज्जिह्वां तपोलोकैक–सुन्दरी।।
ॐ एं गां पातु मे वक्त्रं, सत्यलोकैक–सुन्दरी।
ॐ ऐं यं पातु मे कण्ठं, सदाभुवन–सुन्दरी।।
ॐ ओं त्रीं पातु मे स्कन्धौ, सदा ब्रह्माण्ड–सुन्दरी।
ॐ औं श्रीं पातु मे बाहू, सदा सर्वाङ्ग–सुन्दरी।।
ॐ अं श्रीं पातु मे हस्तौ, सदा सर्वार्थ–सुन्दरी।
ॐ अः ह्रीं पातु मे वक्षः सदा देवेन्द्र–सुन्दरी।।
ॐ कं श्रीं पातु मे पृष्ठं, सदा दानव–सुन्दरी।
ॐ खं ह्रीं पातु मे पार्श्वौ श्री विद्याधर–सुन्दरी।।
ॐ गं ह्रीं पातु मे कुक्षी अप्सरा–लोक–सुन्दरी।
ॐ घं ऐं पातु मे नाभिं यक्ष लोकैक–सुन्दरी।।
ॐ ङं यं मेऽवतान्मेढ्रं रक्षलोकैक–सुन्दरी।
ॐ चं श्रां मेऽवताच्छिश्नं सदा गन्धर्व–सुन्दरी।।
ॐ छं ह्रां मेऽवताद् गुह्यं सदा किन्नर–सुन्दरी।
ॐ जं स्वां मे कटिं पातु सदा पैशाच–सुन्दरी।।
ॐ झं हां पातु मे ऊरू सदा गुह्यक–सुन्दरी।
ॐ ञ हां पातु मे जानू सिद्धलोकैक–सुन्दरी।।
ॐ टं स्वां पातु मे जङ्घौ भूतलोकैक–सुन्दरी।
ॐ ठं ह्रां पातु मे गुल्फौ नागलोकैक–सुन्दरी।।
ॐ डं श्रां पातु मे पादौ मर्त्यलोकैक–सुन्दरी।

ॐ ढं यं पातु मे विस्मारितं च तत्स्थानं यत्स्थानं नाम–वर्जितम तत्सर्वं वपुस्त्रिपुर–सुन्दरी।।

ॐ णं ऐं पूर्वं इन्द्रोऽव्यात्।

ॐ तं ह्रीं अग्निरग्रतः।।

ॐ थं ह्रीं दक्षिणे धर्मो।

ॐ दं श्रीं निऋत्तिः स्वतः।।

ॐ धं ह्रीं श्रीं वरुणः पातु पश्चिमे मां जलेश्वरः।

ॐ नं श्रीं वायुतो वायुर्वायव्ये मां सदाऽवतु।।

ॐ पं श्रीं मामुत्तरे पातु कुबेरो यक्षराट् सदा।

ॐ फं त्रीं मामीश्वरः पातु स्वयमीशान नायकः।।

ॐ बं यं ऊर्ध्वमात्म भूर्भगवान् सर्वदाऽवतु।

ॐ भं गां पातु मां विष्णुरधस्तात सर्वदा हरिः।।

ॐ मं ग्लां मे गुरू प्रातः।

ॐ यं भैं मां परम–गुरू मध्य–वासरे।।

ॐ रं श्रीं मेऽवताद् सायं परमेष्ठि गुरूस्तथा।

ॐ लं ह्रीं मां निशीथेऽव्यात् परात्पर गुरूः सदा।।

ॐ वं क्लीं मां निशीथान्ते पातु साधक–नायकी।

ॐ शं ऐं सर्वत्र सर्वदा पातु सर्व–नायकी।।

ॐ षं सौः सदा पातु कुटुम्बं कुल–नायकी।

ॐ सं हसौः मेऽवतान्नित्यं विघ्नो वाम–नायकी।।

ॐ हं सौः मां चक्रतः पातु गायत्री चक्र–नायकी।

ॐ लं क्षं ॐ सौः हसौः सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भैं ग्लां गायत्री श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं यं श्रां ह्रां स्वाहा मां पायाद सदा ब्रह्म–नायकी।।

ॐ ऐं मां भगवती ब्रह्म–रूपा दिनेऽवतु।

ॐ क्लीं मां जगन्माता विष्णु–रूपा सदाऽवतु–(मध्याह्ने)।

ॐ सौः मां वेदमाता शिव–रूपा सदाऽवतु–(सायाह्ने)।।

लक्ष्मीर्लक्ष्मीं सदा पातु, कीर्ति कीर्तिः सदाऽवतु।

धृतिं धैर्यं सदा पातु, धन्या भाग्यं ममाऽवतु।।

स्थिति स्थिता सदा पातु, शान्तिः शान्तिः प्रयच्छतु।

विभा दीप्तिं सदा पातु, मतिर्बुद्धिं ममाऽवतु।।

गतिर्गतिं च मे पातु, भ्रान्तिर्भ्रान्तिं सदाऽवतु।

नतिर्नतिं च मे पातु, वाणी वाणीं प्रयच्छतु।।

प्रभा सेनाधिपत्यं मे, शोभा शोभां प्रयच्छतु।

क्रिया देवी क्रिया–सिद्धिं नुतिर्नुतिः प्रयच्छतु।

एताः षोडश–पत्रस्थाः पान्तु मां सर्वतो भयात्।।

ब्राह्मी पूर्व–दले पातु, वह्नौ नारायणी तथा।

दक्षिणे पातु मां चण्डी, नैऋते शाम्भवी तथा।।

पश्चिमेऽपराजिताऽव्यात्कौमारी वायु–कोणतः।

वाराही चोत्तरे पातु, ईशाने नारसिंहिका।।

रूरू सङ्गमतः पातु, चण्डो धूप भयात् सदा।

करालोऽव्यात् श्मशाने –– मां संहारोऽव्यात् समुद्रतः।।

भीषणः पातु दुर्भिक्षात्, कालाग्निः काल–पाशतः।

उन्मत्तः पातु मां चौरात् क्रोधोऽव्यान्मां विपत्तितः।

एते सशक्तिकाः पान्तु, वसु–पत्रेषु भैरवाः।।

सरस्वती गिरं पातु, सती सत्यं सदाऽवतु।

दुर्गा दुर्गतितो रक्षेत्, सावित्री [illegible]सु रक्षतु।।

श्री ब्रह्म–वादिनी ज्ञानं, श्रीमती श्रियमुत्त[illegible]म्।

कुब्जिका च कुलं क्षिप्रं, पाशं संसार–ब[illegible]नात्।।

तारिणी चारितो रक्षेद् ध्रुवं [illegible] विश्व–मङ्गला।

बहिर्दशार–चक्रस्था, पातु मां सर्वतः सदा।।

त्रिपुरा पातु मां नित्यं, कालिकाऽवतु मां सदा।

तारा मां पातु सततं, सुमुखी च सर्वदाऽवतु।।

बगला पातु मां नित्यं, बाला मां पातु सर्वतः।

बैखरी पातु मां नित्यं, देवी तुर्या सदाऽवतु।।

छिन्नशीर्षावतान्नित्यं, पातु मां भुवनेश्वरी।

अन्तर्दशार–चक्रस्था देवता पातु मां सदा।।

गङ्गा मां पापनः (पावनः) यमुना पातु सर्वदा।

सरस्वती च मां पातु त्रिकोणस्थाश्च देवताः।।

मुल–विद्यां च मां पातु, गायत्री त्रिपदास्तवा।

चतुर्मुखः शिवः पातु, पातु पद्मासनः प्रभुः।।

अक्ष–सूत्रं च मां पातु, पद्मं पातु शिव–प्रियः।
त्रिशूलं सर्वदा पातु, लगूडं पातु सर्वदा।।
मूलं च सर्वदा पातु, चतुर्विंशाक्षरात्मकम्।
सर्वत्र सर्वदा पातु, परमार्थाधि–देवता।।

।। फल-श्रुति ।।

इति मन्त्रमयं दिव्यं, कवचं देव–दुर्लभम्।
गायत्र्यास्त्रिपदा देव्या लयाङ्गनिलयं परम्।।
मूल–विद्यामयं ब्रह्म–विद्या–निधिमयं परम्।
सर्व–देव प्रियं मुक्तेः, साधनं भुक्ति–वर्धनम्।।
मुक्ति–चिन्तामणिर्नाम, गायत्री–तत्वकारिणी।
मारणं सर्व–शत्रूणां, वारणं सकलापदाम्।।
तारणं च भवाम्भोधेः, सर्वैश्वर्यैक कारणम्।
रवौ यो ह्यष्ट–गन्धेन्, लिखेद् भुर्जे महेश्वरि!।।
श्वेत–सूत्रेण संवेष्ट्ये सौवर्णनाथ वेष्टयेत्।
पञ्च–गव्येन संशोध्य, गायत्री–रूपेण स्मरेत्।।
तामर्चयेन्महादेवि! विद्यया यन्त्र राजवत्।
मकारैः पञ्चभिर्गोप्यर्महार्चन–क्रमेश्वरः।।
यथार्थतस्तत् सम्पूज्य, गुटिं भोगापवर्गदाम्।
बध्नीयात् कण्ठ–देशे तु सर्व–सिद्धिः प्रजायते।।
शिरःस्था गुटिका देवि! राज–लोक वंशकरी।
भूतस्था गुटिका देवी। रणे विजय–दायिनी।।
कुक्षिस्थारोग–शमनी, वक्षःस्थापुत्र–पौत्रदा।
कण्ठस्थैश्वर्यदा लोके, सर्व–सारस्वत–प्रदा।।
इत्येवं कवचं देवि। गायत्री–तत्वमुत्तमम्।
गुह्य गोप्यत्रमं देवि। गोपनीयं स्वयोनिवत्।।
।इतिश्री रूद्रयामले महा–तन्त्रे मुक्ति–चिन्तामणिर्नाम श्री गायत्री–कवचं समाप्तम्।।

।। पञ्च-मुखी श्री वीर हनुमन्त-कवच ।।

श्री हनुमन्त–साधना पर अनेकों ग्रन्थ प्राप्य होते हैं। वैष्णव–प्रधान आगम–पञ्चरात्र में तो इनकी प्रतिष्ठा–पूजा का सम्पूर्ण विधान है। श्री हनुमन्तोपासना में प्रायः श्री राम–चन्द्र–(अथवा ब्रह्मा) ऋषि हैं, इनकी साधना की दीक्षा स्वयं श्री राम ने विभीषण को दी थी। विष्णु–मन्दिर हो या शिव–मन्दिर अथवा कोई भी शक्ति–पीठ हो— वहाँ श्री हनुमान् जी की प्रतिष्ठा अवश्य ही दृष्टित होती है। कुछ स्थानों में तो स्वयं श्री हनुमान् जी ही प्रधान–देवता हैं। विशेष–रूप से प्रत्येक सनातनी गृह–मन्दिर में इनका अपना स्थान है। यूँ तो श्री राम भक्ति के **'दास–भाव'** के कारण श्री हनुमान् जी की उपासना सौम्यता की प्रतीक है, किन्तु **'वीर–भाव'** में इनका जो 'रौद्र–रूप' है – (जिसका वर्णन गोस्वामी श्री तुलसी दास जी ने – **'बजरङ्ग–बाण'** में अच्छी–प्रकार से किया है), वही रौद्र अर्थात् 'क्रोध–रूप' तन्त्र–साधना का मुख्य–रूप–भाव व आधार है, क्योंकि श्री हनुमान् जी 'रूद्रावतार' हैं। स्वयं महा–काल शिव ने ही 'रावण' के विनाश हेतु श्री राम–चन्द्र जी की सहायतार्थ 'एकादश–रूद्र' के रूप में अवतार गृहण किया था।

श्री हनुमान् जी के इसी 'वीर–भाव', 'रौद्र–रूप' के अन्तर्गत 'तन्त्र–साधना' के लिए अन्य और विशेष–रूपों की साधना भी शास्त्रों में निहित है, जैसे कि पञ्च–मुखी, सप्त–मुखी व एकादश–मुखी श्री हनुमन्त–साधना। इन रूपों में भी पञ्च–मुखी श्री हनुमान् का रूप कुछ अधिक ही प्रसिद्ध है। जन–साधारण भी इस रूप से भली–भाँति परिचित है। इसी कारणवश साधना में पञ्च–मुखी श्री हनुमान–कवच के पाठ का प्रचलन–महत्व भी — 'एक–मुखी, सप्त–मुखी व एकादश–मुखी' श्री हनुमान् जी के, इन रूपों के स्तोत्र–कवचादि की अपेक्षा सर्वाधिक, अति–विशेष माना गया है। पञ्च–मुखी श्री हनुमन्त–कवच त्वरित फल–प्रद व अनेकों असाध्य कार्यों को सुसिद्ध करने के लिए प्रसिद्ध व प्रभावी है। यद्यपि यह कवच अनेक प्रकाशन–संस्थानों द्वारा प्रकाशित व प्राप्य है, किन्तु प्रायः सभी प्रतियों में इस कवच का स्वरूप संक्षिप्त ही प्राप्त होता है, तो कहीं गति–भ्रामक व भेद–युक्त! श्री हनुमान साधना–विषयक सङ्कलित–सङ्गहित व स्वतन्त्र–ग्रन्थों में भी यह कवच पूर्ण–रूप से प्राप्त नहीं होता, जैसे कि 'खेमराज श्री कृष्णदास श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस–(मुम्बई) से प्रकाशित 'वृहद ज्योतिषार्णवान्तर्गत' श्री हनुमन्तोपासनाध्याय, श्री ठाकुर–प्रसाद पुस्तक–भण्डार–(वाराणसी) से प्रकाशित 'श्री हनुमद्रहस्य', आनन्द–प्रकाशन–(बुलन्दशहर) से प्रकाशित 'अद्भुत हनुमान', कलपतरू रिसर्च एकादमी–(बैंगलोर) से प्रकाशित 'हनुमत् कोश' (भाग–१) व मोतीलाल–बनारसीदास प्रकाशन–(दिल्ली) से प्रकाशित 'शत्रु–शमन' आदि किसी भी ग्रन्थ में यह कवच पूर्ण–रूप से प्राप्त नहीं हो सका। (या फिर अन्य

बहुत से लेखक की 'श्री हनुमन्त–साधना' विषयक कृतियों में भी) संक्षिप्त–रूप से ही यह कवच इन ग्रन्थों में प्रस्तुत–प्रकाशित हुआ है, वह भी एक–दूसरे के मिलान से पाठ–भेद–(जो कि स्वाभाविक है) व भ्रामकता उत्पन्न किए हुए। वाराणसी के सुप्रसिद्ध व सम्मानित विद्वान व अनेकों ग्रन्थों के यशस्वी लेखक–टीकाकार–आचार्य श्री शिवदत्त मिश्र जी शास्त्री द्वारा सम्पादित–सङ्कलित उक्त ग्रन्थ 'श्री हनुमद् रहस्य'–(पृष्ठ–१३२–४०)' में पञ्च–मुखी श्री हनुमत् कवच के प्रारम्भ में ही दिए गए विनियोग में भ्रम प्रकट होता है, उदाहरणतः **ॐ अस्य श्री पञ्च–मुख हनुमन्मन्त्रस्य ब्रह्मा–ऋषिः, गायत्री–छन्दः, पञ्च–मुख विराट् हनुमान् देवता, ह्रीं बीजं, श्री शक्तिः, क्रौं कीलकं, क्रूं कवचं, क्रैं अस्त्राय फट्।** इति दिग्बन्धः। ....(?)

'श्री हनुमद् रहस्य' में प्रकाशित उक्त पंक्तियों से यह निर्णय करना असम्भव है कि यह विनियोग है अथवा न्यास–(अङ्) या फिर अन्त में कहा गया –– **'इति दिग्बन्धः'** –– दिग्बन्धन! यद्यपि आचार्य श्री ने उक्त पंक्तियों के मार्ग–निर्देश में यही कहा है कि 'साधक को चाहिए कि सर्व–प्रथम **'ॐ अस्य श्री पञ्च–मुख हनुमन्मन्त्रस्य** से लेकर **क्रैं अस्त्राय फट्** पर्यन्त मन्त्र पढ़कर, दसों दिशाओं में चुटकी बजाता हुआ दिग्बन्धन करे।' सत्य तो यह है कि यह भ्रान्ति–युक्त विनियोग है, न कि दिग्बन्धन! कोई भी विद्वान यह तो साधारण–रूप से ज्ञान रखता ही है कि किसी भी मन्त्र–स्तोत्र अथवा कवच के विनियोग में ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति, कीलक व अभीष्ट फल–कामना निहित रहती है– (कहीं–कहीं संक्षिप्त–रूप से मात्र ऋषि, छन्द व देवता का ही 'अभीष्ट फल–कामना सहित उल्लेख रहता है, यह भी मान्य है)। प्रस्तुत उक्त विनियोग (!) में 'अभीष्ट फल–कामना सहित 'विनियोग शब्द–सम्बोधन लुप्त है, किन्तु अन्य शब्दों में वृद्धि है– (देखें)। इसी–प्रकार पृष्ठ –१३५ में भी एक और अन्य विनियोग है, इन दोनों विनियोगों में से किसी एक में भी 'कवच' शब्द का उल्लेख नहीं हुआ, विशेषतः दूसरे विनियोग में।

● पुनः पृष्ठ–१३७ पर इसी कवच का ही एक अन्य और विनियोग आया है, जो कि एक मन्त्र का स्वरूप गृहण किए हुए है, किन्तु अन्त की पंक्ति में विनियोग का ही उच्चारण है! ऋषि, छन्द, देवतादि का उसमें उल्लेख ही नहीं हुआ! तब भी निर्देश में उसको विनियोग ही निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम व अन्तिम विनियोग यदि विनियोग ही है–(प्रथम विनियोग, विनियोग ही है, किन्तु है भ्रामक!) तो उनको ऋष्यादि–न्यास के लिए कैसे विभाजित करेंगे? क्योंकि किसी भी मन्त्र–स्तोत्र या कवच–पाठ से पूर्व यह न्यास करना आवश्यक है और यह न्यास विनियोग के आधार पर ही निर्मित हो, किया जाता है।

स्पष्ट तो यह है कि 'प्राचीन–प्रति के अनुसार ही' यह दोष प्रायः सभी ग्रन्थों–प्रतियों में प्रकाशित 'पञ्च–मुखी श्री हनुमन्त–कवच'–(जो कि संक्षिप्त है) में है, जिसको शुद्ध करने का प्रयास नहीं किया गया। तभी तो 'अद्भुत हनुमान्' व 'शत्रु–शमन' में भी उक्त ऐसा ही दोष व्याप्त है। 'शत्रु–शमन'–(पृष्ठ ६८–१०१) में इस कवच–विषय को 'श्री हनुमद् रहस्य' के समान ही, शब्दोशब्द–रूप में प्रस्तुत किया गया है--(अर्थात् उक्त दोष पर ध्यान न देकर, वैसे ग्रन्थ की लेखिका सौ० मृदुला त्रिवेदी जी ने इसी ग्रन्थ के पृष्ठ–२८४–६४ पर 'पक्षिराज–प्रयोग' विषय भी प्रस्तुत किया है। लेखिका महोदया ने इस विषय में अपूर्णता, भ्रान्ति–पूर्ण वाक्य–कथन व अनर्गल शीर्षकादि दोषों का समावेश किया है, जिसका उल्लेख विस्तार के साथ'श्री शरभेश्वर साधना–प्रदीप' के 'परिचय व प्रयोग–खण्ड' में सप्रमाण दिया गया है)। हाँ. .... 'अद्भुत–हनुमान'–(पृष्ठ – १०५–७) में उक्त प्रारम्भ के दोनों विनियोगों में अवश्य ही 'कवच' नाम का उल्लेख हुआ है, जो कि 'श्री हनुमद् रहस्य' व 'शत्रु–शमन' में नहीं! किन्तु तीसरे विनियोग के निर्देश में ध्यान कहा गया है। यह वही विनियोग है, जो एक मन्त्र का स्वरूप गृहण किये है, जिसमें ऋषि, छन्द, देवतादि किसी का भी उल्लेख नहीं हुआ। इस [illegible] से न तो यह ध्यान ही है, न मन्त्र और न ही विनियोग। प्रश्न यह भी उत्पन्न ह[illegible] है कि इस तीसरे विनियोग (!) को देने का क्या तात्पर्य है? आश्चर्य है कि 'प्राच्य–प्रकाशन'–(वाराणसी) से प्रकाशित 'मन्त्र–महार्णव'–(देवता–खण्ड, नवम–तरङ्ग, पृष्ठ – ५५२) में भी मन्त्र को विनियोग का ही स्वरूप दे भ्रामकता उत्पन्न की गई है (और वह सभी भ्रामकताएँ भी, जो उक्त ग्रन्थों में युक्त है)। सम्भवतः 'श्री हनुमद् रहस्य, 'अद्भुत–हनुमान्', 'शत्रु–शमन' आदि ग्रन्थों ने यह विषय 'मन्त्र–महार्णव' से ही उद्धृत कर गृहण किया हो, क्योंकि 'मन्त्र–महार्णव' नामक ग्रन्थ का प्रकाशन बहुत वर्षों पूर्व का है–(यह ग्रन्थ 'खेमराज श्री कृष्ण–दास' श्री वेङ्कटेश्वर–प्रेस–(मुम्बई) से भी प्रकाशित है) वैसे उक्त ग्रन्थों के अनुसार ही –– इसी कवच को –(एक–मुखी श्री हनुमन्त–कवच सहित) प्रसिद्ध धूप 'हरि–दर्शन' के प्रकाशन–मन्दिर–(दिल्ली) ने भी कुछ समय पूर्व प्रकाशित किया, जिसके सम्पादक कोई डॉ० आर०पी० दास हैं। इन प्रस्तुत–कर्ता महोदय ने इस कवच को अपनी विचित्र सम्पादन–शैली के द्वारा और भी अधिक अर्थ–हीन, भ्रामक–रूप में प्रस्तुत कर दिखाया है। इन महोदय ने इस कवच के विनियोग–(पृष्ठ–४ वही, भ्रान्ति–युक्त!) में आए **'अस्त्राय–फट्'** में **'फट्'** को 'शाबर मन्त्र–बीज' कह

अपनी विद्वता का परिचय प्रारम्भ में ही प्रस्तुत–प्रमाणित कर दिखाया है। इस प्रति में आगे भी ऐसे ही कई प्रमाण हैं, जिनको अब यहाँ देना, स्वयं भी भ्रमित हो जाने के प्रमाण तुल्य होगा। अस्तु.......

● प्रथम विनियोग पञ्च–मुखी श्री हनुमन्त मन्त्र–विधान व दूसरा विनियोग कवच का है (जो शुद्ध–क्रम है)। किन्तु कहीं–कहीं प्रारम्भ का विनियोग ही कवच का और कहीं प्रथम विनियोगादि विषय–क्रम को त्याज्य कर, दूसरे विनियोग से आरम्भ हो पञ्च–मुखी श्री हनुमन्त–मन्त्र या स्तोत्र–विधान के नाम से प्रचलित है और कहीं प्रथम विनियोगादि के अन्तर्गत मन्त्र को दूसरे विनियोगादि मन्त्र–क्रम में अर्थात् एक–दूसरे में स्थान परिवर्तन होते भी प्रकाशित प्रतियों में देखा गया है। यह एक ऐसा संयुक्ति–करण साधन–विषय है–(वह भी अपूर्ण), जिसमें भ्रामकता ही उत्पन्न होती है और निर्णय करना कठिन हो जाता है कि मन्त्र–विधान व कवच–विधान कहाँ से आरम्भवत रूप में है?

स्पष्टीकरण

'फट्' शब्द **'तन्त्र–साधना'** में एक **'अस्त्र–बीज'** है। इसके द्वारा **'अस्त्र–क्रिया'** की जाती है। **'अस्त्र'** शब्द **'अस्'** और **'त्र'** धातुओं से बना है, जिसका अर्थ है फेंकना या जलाना। इसके द्वारा साधक आध्यात्मिक, आधि–दैविक और आधि–भौतिक––– इन तीनों प्रकार के तापों को दूर फेंककर ज्ञानाग्नि में जलाकर भस्म करने की भावना करता है। व्यवहारिक दृष्टि–कोण से **'अस्त्र'** शब्द के अर्थ से जन–साधारण परिचित है ही। अस्त्र–युक्त व्यक्ति रक्षित रहता है, अस्त्र व्यक्ति की रक्षा करता है या शत्रु का संहार करता है–(वह **'अस्त्र'** जिसे फेंक कर या भेजकर शत्रु पर चलाया जाता हो, जैसे बाण–(जो मन्त्र–पूरित भी हो सकते हैं, शक्ति या शत्रु द्वारा फेंके गए अस्त्र–शस्त्रों को रोकने वाला अस्त्र, जैसे ढाल)। अतः **'प्रायोगिक–दृष्टि'** से इसी–कारण **'तन्त्र–साधना'** में इस **'फट्'** अर्थात् **'अस्त्र–बीज'** का प्रयोग न्यास व दिग्बन्धन–क्रिया में किया जाता है, जिसमें यहाँ **'अस्त्र–मुद्रा'** का प्रदर्शन भी होता है। इस विधि–क्रिया में **'अस्त्राय फट्'** या **'फट्'** का उच्चारण विभिन्न विघ्नों का नाश कर साधक की रक्षा करता है–(क्योंकि 'फट्' एक **'अस्त्र–बीज'** है, जो संहारक है–इसलिए)। प्रकट व गुप्त शत्रु के प्रति 'अभिचार–कर्म–प्रयोग–(संहारक–क्रिया) से सम्बन्धित मन्त्रों में **'स्वाहा'** के स्थान पर **'फट्'** का ही उच्चारण होता है––– **स्वाहाकार स्थाने फडित्याभिचारे।** **'फट्'** एक विशेष प्रधान ध्वनि–मय शब्द है, जिसके उच्चारण से अन्तरिक्ष–वायु–मण्डल में तीव्र–स्फोटक तरङ्ग–मय गति का सञ्चार उत्पन्न होता है। विशेष–रूप से यह **'अस्त्र–बीज'** उग्र व घोर ध्वनि प्रधानात्मक मन्त्रों के मध्य अथवा अन्त में घाताघात–क्रिया के बोधन–हेतु संयुक्त किया जाता है।

प्रस्तुत पञ्च–मुख श्री हनुमत् कवच मेरे व्यक्तिगत–पुस्तकालय के प्राचीन **'हस्त–लिखित'** ग्रन्थ से प्रेषित है। इस कवच की मूल **'हस्त–लिखित'** प्रति अत्यन्त प्राचीन एवं जीर्ण–क्षीर्णावस्था में थी। उसको अध्ययन कर प्रति–लिपि रूप में तैयार किया गया। इस हस्तलिखित प्रति में **'हनुमन्त–प्रत्यङ्गिरा'** भी लिपिबद्ध थी, किन्तु समय के प्रभाव से दोनों ही विषय अपनी मौलिकता नष्ट कर बैठे। क्योंकि हस्त–स्पर्श से ही पत्र–टूटने लगते थे। बड़ी कठिनाई से मात्र कवच को ही अध्ययन–पूर्वक उसकी प्रति–लिपि रूप पूर्ण किया गया।

।। कवच ।।

विनियोग

ॐ अस्य श्री पञ्च–––मुख वीर–––हनुमन्त कवच–––स्तोत्र–––मन्त्रस्य, ब्रह्मा–––ऋषिः, गायत्री–––छन्दः, पञ्च–––मुखी श्री वीर–––हनुमान् देवता, रां बीजं, मं शक्तिः, चन्द्र कीलकं, पञ्चमुखान्तर्गत श्री वीर हनुमन्त कृपा–––प्रसाद प्राप्त्यर्थे कवच–––पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि–––न्यास

ॐ श्री ब्रह्मा–––ऋषये नमः–––शिरसि। गायत्री–––छन्दसे नमः–––मुखे। पञ्च–––मुखी श्री वीर–––हनुमान् देवतायै नमः–––हृदये। रां बीजाय नमः–––गुह्ये। मं शक्तये नमः–––पादयोः। चन्द्र कीलकाय नमः–––नाभौ। पञ्चमुखान्तर्गत श्री हनुमन्त कृपा–––प्रसाद प्राप्त्यर्थे कवच–––पाठे विनियोगाय नमः–––सर्वाङ्गे।

कर–––न्यास

ॐ रां–––अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रीं–––तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रूं–––मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रैं–––अनामिका नमः। ॐ रौं–––कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ रः–––करतल–––कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि षडाङ्ग–––न्यास

ॐ रां–––हृदयाय नमः। ॐ रीं–––शिरसे स्वाहा। ॐ रूं–––शिखायै वषट्। ॐ रैं––– कवचाय हुं। ॐ रौं–––नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ रः–––अस्त्राय फट्।

दिग्बन्धन

ॐ भूर्भुव स्वः ॐ कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं

धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ल क्षं स्वाहा–(दशो दिशाओं में दृष्टिपात करते हुए अपने चारों ओर तीन चुटकी बजाएँ तथा 'अस्त्र–मुद्रा' निर्मित कर बाएँ हाथ की हथेली पर तीन ताली बजाएँ)।

ध्यान

वन्दे वानर–नारसिंह–खगराट् क्रोडाश्ववक्त्रान्वितम्।
दिव्यालङ्करणं त्रिपञ्च–नयनं दैदीप्यमानं ऋचा।।
हस्ताब्जैरसिखेट–पुस्तकं सुधा–कुम्भ अङ्कुशादीन्हलान्।
खट्वाङ्गं फणिभूरुहं दश–भुजं सर्वारिदर्पापहम्।।
पञ्च–वक्त्रं महा–भीमं त्रिपञ्च–नयनैर्युतम्।
दशभिर्बाहुभिर्युक्तं सर्व–कामार्थ सिद्धिदम्।।

पूर्व–दिशा को मुख–

पूर्वे तु वानरं वक्त्रं कोटि–सूर्य–समप्रभम्।
दष्ट्रा–कराल–वदनं भृकुटी–कुटीलेक्षणम्।।

दक्षिण–दिशा को मुख –

अस्यैव दक्षिणे वक्त्र नारसिंहं महादभुतम्।
अत्युग्र तेजो–ज्वलितं भीषणं भय–नाशनम्।।

पश्चिम–दिशा को मुख –

पश्चिमे गारूडं वक्त्रं वज्र–तुण्ड महा–बलम्।
सर्व–नाग–प्रशमनं विष–भूतादि कृन्तनम्।।

उत्तर–दिशा को मुख –

उत्तरे सूकरं वक्त्रं कृष्णादित्य महोज्वलम्।
पाताल–सिद्धिदं नृणां ज्वर–रोगादि नाशनम्।।

ऊर्ध्व–दिशा को मुख –

ऊर्ध्वं हयाननं घोरं दानवान्तकरं परम्।
येन वक्त्रेण विपेन्द्र सर्व–विद्याविनिर्ययु।।
एतत्पञ्च–मुखं तस्य ध्यायत्तोम् भयङ्करम्।।

।। आयुधादि ध्यान ।।

खड्गं त्रिशूलं खट्वाङ्गं पाशाङ्कुश–पर्वतम्।
खेटांसीनिपुस्तं च सुधा–कुम्भ–कलं तथा।।
एतान्यायुध जातानि धारयन्तं भजामहे।
प्रेतासनोपविष्ठं तु दिव्याभरण–भूषितम्।
दिव्य–मालाम्बर–धरं दिव्य–गन्धानुलेपनम्।।
सर्वेश्वर्यमयं देवमनन्तं विश्वतो मुखम्।
एवं ध्यायेत् पञ्च–मुखं सर्व–काम फल–प्रदम्।।
पञ्चास्यमच्युतमनेक विचित्र–वीर्यम्।
श्री शङ्ख चक्र रमणीय भुजाग्र–देशम्।।
पीताम्बरं मुकुटं कुण्डलं नूपुराङ्गम्।
उद्द्योतिं कपि–वरं हृदि भावयामि।।
चन्द्रार्द्ध चरणावरविन्द–युगलं कौपीन मौजी–धरम्।
नाभ्यां वैकटि–सूत्र–बद्ध–वसनं यज्ञोपवीतं शुभम्।।
हस्ताभ्यामवलम्ब्य चांचलि–पुटं हारावलिं कुण्डलम्।
बिभ्रद्वीर्य–शिखं प्रसन्न–वदनं विद्याजनेयं भजे।।
ॐ मर्कटेश महोत्साह सर्व–शोक–विनाशन।
शत्रून्संहार मां रक्ष श्रियं दापय मे प्रभो!।।

स्पष्टीकरण

पञ्च–मुख श्री हनुमन्त के ध्यान में जो प्रथम तीन श्लोक हैं, वह संयुक्त ध्यान हैं। तत्पश्चात् किस–किस दिशा में कौन–कौन सा मुख है, उसका ध्यान पृथक–पृथक आया है। तत्पश्चात् पञ्च–मुख श्री हनुमन्त के हाथों में कौन–कौन से आयुध हैं तथा वस्त्राभूषणादि क्या है, उनका उल्लेख आयुधादि–ध्यान के अन्तर्गत हुआ है।

मानस–पूजन

१. अधो–मुख कनिष्ठिकाङ्गुष्ठ से 'गन्ध–मुद्रा' दिखाते हुए —
ॐ लं पृथ्वी–तत्वात्मकं गन्ध पञ्च–मुख श्री वीर हनुमन्त–देवता प्रीतये परि–कल्पयामि नमः।

२. अधो–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से 'पुष्प–मुद्रा' दिखाते हुए —
ॐ हं आकाश–तत्वात्मकं पुष्पं पञ्च–मुख श्री वीर हनुमन्त–देवता प्रीतये समर्पयामि नमः।

३. ऊर्ध्व–मुख तर्जनी–अङ्गुष्ठ से 'धूप–मुद्रा' दिखाते हुए —
ॐ यं वायु–तत्वात्मकं धूपं पञ्च–मुख श्री वीर हनुमन्त–देवता प्रीतये घ्रापयामि नमः।

४. ऊर्ध्व–मुख मध्यमाङ्गुष्ठ से 'दीप–मुद्रा' दिखाते हुए —
ॐ रं अग्नि–तत्वात्मकं दीपं पञ्च–मुख श्री वीर हनुमन्त–देवता प्रीतये दर्शयामि नमः।

५. ऊर्ध्व–मुख अनामिकाङ्गुष्ठ से 'नैवेद्य–मुद्रा' दिखाते हुए —
ॐ वं जल–तत्वात्मकं नैवेद्यं पञ्च–मुख श्री वीर हनुमन्त–देवता प्रीतये निवेदयामि नमः।

६. ऊर्ध्वं –मुख सर्वाङ्गुलियो से 'ताम्बूल–मुद्रा' दिखाते हुए —
ॐ सं सर्व–तत्वात्मकं ताम्बूलं पञ्च–मुख श्री वीर हनुमन्त–देवता प्रीतये कल्पयामि नमः।

पञ्च–मुख श्री हनुमत् के पृथक–पृथक मुखों के गायत्री–मन्त्र सहित मन्त्र का पाठ —

ॐ पूर्व–दिशायां श्री कपि–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः। ॐ राम–दूताय विद्महे पवन–पुत्राय धीमहि तन्नो वीरः प्रचोदयात्। ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट्। ॐ वं वं वं वं वं हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ पञ्च–वदनाय पूर्वे कपि–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः।

ॐ दक्षिण–दिशायां श्री नारसिंह–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः। ॐ व्रज–नखाय तीक्ष्ण–दंष्ट्राय च धीमहि तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात्। ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट्। ॐ फं फं फं फं फं हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ पञ्च–वदनाय दक्षिणे श्री नारसिंह–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः।

ॐ पश्चिम–दिशायां श्री गरुड़–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः। ॐ वीनता सुताय विद्महे सुवर्ण–पक्षाय च धीमहि तन्नो गरुडः प्रचोदयात्। ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट्। ॐ खं खं खं खं खं हुं फट् घे घे घे मारणाय स्वाहा। ॐ पञ्च–वदनाय पश्चिमे श्री गरुड़–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः।

ॐ उत्तर–दिशायां श्री वराह–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः। ॐ नारायणाय विद्महे विष्णु–स्वरूपाय च धीमहि तन्नो वराहः प्रचोदयात्। ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट्। ॐ ठं ठं ठं ठं ठं हुं फट् घे घे घे स्तम्भनाय स्वाहा। ॐ पञ्च–वन्दनाय उत्तरे श्री वराह–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः।

ॐ ऊर्ध्व–दिशायां श्री अश्व–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः। ॐ वागीश्वराय विद्महे हयग्रीवाय च धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात्। ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट्। ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ हुं फट् घे घे घे आकर्षण–सकल–सम्पत्कराय स्वाहा। ॐ पञ्च–वदनाय ऊर्ध्वे श्री अश्व–मुखाय श्री वीर–हनुमते नमः।

दिशान्तर्गत श्री पञ्च–मुख श्री हनुमत् के पृथक–पृथक मुख के मन्त्र का पाठ—

ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते पञ्च–वदनाय पूर्वे श्री कपि–मुखाय ॐ नमो श्री वीर–हनुमते ॐ ठं ठं ठं ठं ठं सकल–शत्रु विनाशनाय सर्व शत्रु–संहारणाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते पञ्च–वदनाय दक्षिणे कराल–वदन श्री नारसिंह–मुखाय ॐ नमो श्री वीर–हनुमते ॐ हं हं हं हं हं सकल–भूत–प्रेत–दमनाय ब्रह्म–हत्या समंध बाधा निवारणाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते पञ्च–वदनाय पश्चिमे श्री वीर–गरूड़–मुखाय ॐ नमो श्री वीर–हनुमते ॐ मं मं मं मं मं महा–रुद्राय सकल रोग–विष–हरणाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते पञ्च–वदनाय उत्तरे श्री आदि वराह–मुखाय ॐ नमो श्री वीर–हनुमते ॐ लं लं लं लं लं लक्ष्मण प्राण–दात्रे, लङ्का–पुरी दाहनाय सकल–सम्पत–कराय पुत्र–पौत्राद्यभि वृद्धि–कराय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ हरि–मर्कट महा–मर्कटाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते पञ्च–वदनाय ऊर्ध्व–दिशे श्री अश्व–मुखाय श्री नमो श्री वीर–हनुमते ॐ रूं रूं रूं रूं रूं रुद्र–मूर्तये वेद–विद्या–स्वरूपिणे सकल–लोक–कारणाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

।। कवच माला–मन्त्र पाठ ।।

ॐ नमो भगवते आञ्जेनाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते प्रबल–पराक्रमाय आक्रान्ताय सकल–दिग्मण्डलाय, शोभितानयाय, धवलीकृताय, जगत्त्रयाय, वज्र–देहाय, रुद्रावताराय, लङ्का–पुरी दाहनाय, उदधिलङ्घनाय, सेतु–बन्धनाय, दश–कण्ठ–शिराक्रान्ताय, सीताऽऽश्वासनाय, अनन्त–कोटि–ब्रह्माण्ड–नायकाय, महा–बलाय, वायु–पुत्राय, अञ्जनी–देवी गर्भ–सम्भूताय, श्री राम लक्ष्मणानन्दकराय, कपि–सैन्य प्रिय–कराय, सुग्रीव सहायकारण कार्य–साधकाय, पर्वतोत्पातनाय, कुमार–ब्रह्मचारिणे, गम्भीर–शब्दोदयाय ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व–दुष्ट–ग्रह–निवारणाय, सर्व–रोग ज्वरोच्चाटनाय, डाकिनी–शाकिनी–विध्वंसनाय ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते महा–बलाय, सर्व–दोष निवारणाय, सर्व–दुष्ट–ग्रह–रोगानुच्चाटनाय, सर्व–भूत–मण्डल, प्रेत–मण्डल, सर्व–पिशाच मण्डलादि सर्व–दुष्ट–मण्डलोच्चाटनाय–उच्चाटनाय ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते सर्व–भूत ज्वरं, सर्व–प्रेत–ज्वरं, एकाहिक–ज्वरं, द्वाहिक–ज्वरं, त्र्याहिक–ज्वरं, चातुर्थिक–ज्वरं, संतप्त–विषम ज्वरं, गुप्त–ज्वरं, ताप–ज्वरं, शीत–ज्वरं, माहेश्वरी–ज्वरं, वैष्णवी ज्वरादि सर्व–ज्वरान् छिन्दि–छिन्दि, भिन्दि–भिन्दि यक्ष–राक्षसान् भूत–प्रेत–वेताल–पिशाचन् उच्चाटोच्चाटय ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः आहो–आहो असई–असई एहि–एहि ॐ ओहो ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते पवनात्मजाय डाकिनी–शाकिनी–लाकिनी–काकिनी–साकिनी–हाकिनी पर–प्रभाव चूर्णय–चूर्णय त्रोट्य–त्रोट्य, उच्चाटय–उच्चाटय ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते सिंह–शार्दूल –व्याघ्र–गण्ड–भैरूण्ड पुरूषामृगाणां आसानिर्वासिनो आक्रमणं कुरू–कुरू, सर्व–रोगान् निवारय–निवारय, हरय–हरय, आक्रोशय–आक्रोशय, सर्व–शत्रून् मर्दय–मर्दय, उन्माद भयं छिन्दि–छिन्दि, भिन्दि–भिन्दि, विषादय–विषादय, मारय–मारय, शोषय–शोषय, मोहय–मोहय, ज्वालय–ज्वालय, प्रहराय–प्रहराय, मम सकल–रोगान् छेदय–छेदय ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते सर्व–रोग दुष्ट–ग्रहान् उच्चाटय–उच्चाटय पर–बलान् क्षोभय–क्षोभय सर्व–कार्याणि साधय–साधय, शृङ्खला–बन्धनं मोक्षय–मोक्षय, कारागृहादिभ्यः मोचय–मोचय, शिर–शूल, कर्ण–शूल, अक्षि–शूल, कुक्षि–शूल, पार्श्व–शूलादि महा–रोगान् निवारय–निवारय, सर्व–शत्रु कुलं संहारय–संहारय, नाग–पाशं काट्य–काट्य निर्मूलय–निर्मूलय ॐ अनन्त–वासुकि–तक्षक–कर्कोटकालीय– कुलिक– पद्म–महापद्म–कुमुद, जलचर, रात्रिचर, दिवाचरादि सर्व–विषं निर्विषं कुरू, निर्विषं–कुरू, सर्व रोगनिवारणं कुरू, निवारणं कुरू, सर्व–वश्यं कुरू, वश्यं–करू, सर्व–दुष्ट–जन मुख–स्तम्भनं कुरू, स्तम्भनं कुरू, सर्वराज–भयं, चोर भयं, अग्नि–भयं प्रशमनं कुरू, प्रशमनं कुरू, सर्व पर–यन्त्र, पर–मन्त्र, पर–तन्त्र, पर–विद्या प्रकाट्य–प्रकाट्य छेद्य–छेदय, सन्त्रासय–सन्त्रासय, मम सर्व–विद्या प्रकटय–प्रकटय, पोषय–पोषय, सर्वारिष्टं शमय–शमय मम सर्व–शत्रून् प्रहारय–प्रहारय, मर्दय–मर्दय, संहारय–संहारय, तापय–तापय, सर्व–रोग पिशाच–बाधान् निवारय–निवारय, विष–बाधा निवारय–निवारय, असाध्य–कार्य साधय–साधय ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महा–बलाय हुं फट् घे घे घे स्वाहा। ॐ नमो भगवते श्री वीर–हनुमते अभीष्ट वर.पद्रदायकाय मम सर्वाभीष्ट सर्व–सम्पद्रक्षणाय ॐ जं जं जं जं जं जगज्जीवनाय हुं फट् ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे स्वाहा। ॐ श्री कपि–मुखाय नमः। ॐ श्री नरसिंहमुखाय नमः। ॐ श्री गरुड–मुखाय नमः। ॐ श्री वराह–मुखाय नमः। ॐ श्री अश्व–मुखाय नमः। ॐ पञ्च मुख श्री वीर–हनुमते नमः।

।। फल-श्रुति ।।

यं इदं कवचं नित्यं यः पठेत्प्रयतो नरः।
एक–वारं पठेन्नित्यं सर्व–शत्रु निवारणम्।।
द्विवारं तु पठेन्नित्यं सर्व–शत्रु वशीकरम्।
त्रिवारं तु पठेन्नित्यं सर्व–सम्पत्करं शुभम्।।
चतुर्वारं पठेन्नित्यं सर्व–रोग निवारणम्।
पञ्च–वारं पठेन्नित्यं पुत्र–पौत्र प्रवर्धनम्।।
षड्वारं पठेन्नित्यं सर्व–देव वशीकरम्।
सप्त–वारं पठेन्नित्यं सर्व–सौभाग्य दायकम्।।
अष्ट–वारं पठेन्नित्यं इष्ट–कामार्थ सिद्धिदम्।
नव–वारं सप्रकेन सर्व–राज्य–भोग समन्वितम्।।
दशवारं सप्तकेन् त्रैलोक्य–ज्ञान दर्शनम्।

एकादश–वारं पठणात् इमं मन्त्र त्रिसप्तकम्।।
स्वजनैहतु समायुक्तो त्रैलोक्य विजयी भवेत्।

सर्व–रोगान् सर्व–बाधान् सर्व–भूत–प्रेत–पिशाच ब्रह्म–राक्षस वेताल ब्रह्म–हत्यादि सम्बन्ध सकल बाधान् निवारय–निवारय दूरय–दूरय ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हुं फट् घे घे घे स्वाहा। कवच स्मरण व महा–फलमवाप्तुयात्। पूजा–काले पठेद्यस्तु सर्व–कार्यार्थ सिद्धिदम्।

।।इति श्री सुदर्शन–संहितायां रुद्र–यामले अथर्वण–रहस्यं सीताराम मनोहर पञ्च–मुखी श्री वीर–हनुमत् कवच–स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

कुछ विशेष क्रियाएँ

।। हनुमन्त कृपा-प्राप्ति प्रयोग ।।

पुष्य नक्षत्र में गाय का गोबर हाथ में पात्र में उठाकर लायें, फिर ७ तालाब की मिट्टी मिलाकर उसमें केशर, लाल–चन्दन मिलाकर अङ्गुष्ठमय हनुमान् जी की प्रतिमा वनाले प्राण–प्रतिष्ठा करके एक डिबिया में रखकर सिन्दूर का चोला चढ़ावें। पूजन करके हनुमान चालीसा का १०८ बार पाठ करें। ४० दिन का प्रयोग है, इन दिवसों के अन्तर्गत श्री हनुमान् जी की कृपा व चमत्कार प्रत्यक्ष प्रकट होने लगते हैं।

।। भैरव कृपा-प्राप्ति-प्रयोग ।।

कुछ (थोड़ी) सौंफ, लौंग इलायची पीस कर एक सेर आटे में मिला दें। पाव भर शक्कर का घोल इतना ही पानी में बनावें ताकि आसानी से आटा गूंदा जा सके। एक रोटी ही बनावें। उसे भली प्रकार झाड़–पौंछ कर तेल से चोपड़ दें। बीच में सिन्दूर की टीकी लगा देवें। बीच में से दी हुई टीकी से कुछ दूरी पर गोलाकार टुकड़ा काटें। इस टुकड़े को बीच से काट कर दो बराबर भाग बनावें, जैसे (नींबू के दो भाग करते हैं)। फिर उनको वापस जोड़कर रोटी के बीच में बराबर रख देवें तथा भैरव जी के भोग रखें, धूप–दीप करें। भोग के पश्चात् बीच के गोल टुकड़े के ऊपर का हिस्सा टीका लगा हुआ वाले कुत्ते को देवें तथा नीचे का टुकड़ा किसी कुएँ में डाल देवें। बची हुई रोटी के टुकड़े करके अन्य कुत्तों को डाल देवें। उसमें से एक टुकड़ा घर लाकर अलग से थैले में रख देवें।

इस क्रिया के फल–स्वरूप श्री भैरव जी की कृपा से असाध्य कार्य सिद्ध होता है। इस क्रिया को कार्य सिद्धि के लिए ही करें– अन्यथा नहीं।

।। कामनापूर्ति काली-विधान ।।

एक डिब्बी में अधखिला गुड़हल अथवा नीली अपराजिता का पुष्प रखकर उसको माँ आद्या का स्वरूप मानते हुए पूजन करें तथा **ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा** का १०८ बार जप करें। तत्पश्चात् ककारादि काली–सहस्रनाम का एक पाठ करें –– ११ दिन तक। हर स्थिति–परिस्थिति में भगवती की कृपा से साधक की मनोकामना पूरी होगी।

।। अति-शीघ्र धन-प्राप्ति हेतु शाबर-प्रयोग।।

मन्त्र

ग्लोड प्लाड धिन् धिन् सुड धेबिसन धनचर विक्रट रहा
ब्लैण्ड हबतायै, ॐ महारुद्राय नमः।

विधान

यह एक कपालिक मन्त्र है। पहले इस मन्त्र का ११ माला जप करें। पश्चात् कमलगट्टे के बीजों को गोघृत में डुबोकर उक्त मन्त्र के जप के दशांस संख्या का हवन् करें। कुल ११ दिन करें। समय निश्चित हो। ६–७ दिनों के अन्तर्गत ही धन–प्राप्ति होने लगती है। जितना आवश्यक है, उसी के अनुकूल धन–प्राप्ति के योग बनने लगते हैं। प्रयोग किसी भी शुभ दिन पर आरम्भ किया जाये। विधानक्रम २१ दिन में पूर्ण करें।

प्रस्तुत साधना–विधान विषयों के अध्यनोपरान्त कुछ पाठकों व जिज्ञासु साधकों को यदि कहीं कोई त्रुटि दृष्टि–गोचर हो अथवा कोई शङ्का प्रतीत हो, तो मुझ अकिञ्चन–अल्पज्ञ को अवश्य ही अवगत कराने की कृपा करें। यदि त्रुटि है, तो उस त्रुटि को अवश्य ही दूर किया जायेगा तथा शङ्का का निवारण भी अवश्य होगा।

सम्वत् २०६२ के **'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग'** में **'दुर्लभ–स्तोत्र, मन्त्र–विधान'** के अन्तर्गत प्रकाशित साधना विधान–विषयों में कुछ त्रुटियाँ हो गयी थी, कृपया उनको निम्न–प्रकार से शुद्ध करने का कष्ट करें, यथा––

'चित्र–माला–मन्त्र', पृष्ठ–१५३ में ऋष्यादि–न्यास में **'श्री आकाश–भैरव–देवतायै नमः हृदये'** मुद्रित होना छूट गया था, इसका पाठ–न्यास **गायत्री–छन्दसे नमः मुखे** के पश्चात् संयुक्त कर लें। पृष्ठ–१६४ **'वीर–गोपाल–कवच'** की पंक्ति–६ में **'श्रृब्ला'** के स्थान पर **'श्रृङ्खला'** तथा पृष्ठ–१६६ **'श्री तुलसी–आराधना'** के श्लोक–पाठ में **'वन्दा'** के स्थान पर शुद्ध **'वृन्दा'** पाठ कर लें।

इसी–प्रकार गत–सम्वत्–२०६३ के अङ्क में **'मुहूर्त–मुक्तावलि'** विषय के

अन्तर्गत पृष्ठ–१५४, श्लोक–१८ के अनुवाद में भी शब्द–त्रुटियाँ हो गई थी, कृपया उनको शुद्ध करने का कष्ट करें, यथा––

पृष्ठ–१५४, श्लोक–१८ के अनुवाद की प्रथम पंक्ति के उत्तरार्ध में **स्वाती–(शाक्र–इन्द्र)** अशुद्ध है, इसका शुद्ध क्रम–पाठ **स्वाती–(मरुत), ज्येष्ठा–(शाक्र)** है।

यहाँ इस बार यह स्पष्ट कर दें कि साधना–विषय के मार्ग–दर्शन–**(इष्ट–देवता चयन)** सहित कुछ व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के निवारण में मार्ग–दर्शन की इच्छा रखते हैं। उनसे यही प्रार्थना है कि इस हेतु वे अपनी जन्म–पत्रिका **'डाक–द्वारा'** प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे जन्म–पत्रिका के अध्ययनोपरांत ही उचित मार्ग–दर्शन किया जा सके।

प्रिय पाठकों व जिज्ञासु साधकों, आगामी सम्वत्–२०६५ के **'श्री विश्वविजय–पञ्चाङ्ग'** में **'दुर्लभ–स्तोत्र, मन्त्र–विधान'** के अन्तर्गत विस्तृत परिचय व लेख के साथ श्री कार्त्तवीर्यार्जुन के साधना–विषय को प्रस्तुत किया जायेगा, जो विशेष पठनीय व साधनोपयोगी हो... साथ ही **'आसुरी–दुर्गा महा–कल्प'** व **'घण्टाकर्ण–कल्प'** का भी प्रस्तुतिकरण ह... सभी विषय अति–दुर्लभ व गोपनीय हैं, जो सामान्य साधक की खोज–दृष्टि से दूर ...हे हैं। साधना विषयक लुप्त प्रायः विषयों का संरक्षण हो तथा साधना क्षेत्र के अन्तर्गत इन विषयों का लाभ जन–साधारण तक पहुँचे, इसी हेतु मैं इन साधना–विषयों को प्रस्तुत–प्रकाशित करने का कारण मानता हूँ, जिसके प्रेरणा स्रोत आप सभी स्नेही पाठकजन व जिज्ञासु–साधक हैं। प्रस्तुत विषयों के सम्बन्ध में इस अल्पज्ञ, अकिञ्चन लेखक को आप सभी की टिप्पणियाँ–सम्मतियाँ अपेक्षित रहेंगी।

आपका स्नेहाकाँक्षी –
पं० भूपेन्द्र दत्त शर्मा
'ज्योर्तिविद'

सम्पर्क सूत्र –
पं० भूपेन्द्र दत्त शर्मा
'ज्योर्तिविद'
145–नया बाँस, नदी रोड,
मुजफ्फरनगर–(उ०प्र०) – 251 001
दूरभाष – (0131) 2451827, सचल – 09897185342, 09997025342

।। श्री बगला हृदय-स्तोत्रम् ।।

— यश प्रकाश

गत वर्षों के अनुभव से यह पाया कि सामान्य साधक महाविद्या से आकर्षित तो होते हैं, परन्तु अनेक भ्रम ग्रस्त भी रहते हैं, जिसका प्रमुख कारण उनके अनुभवी गुरू की कमी का होना है। गुरू महाविद्या साधक का होना ही अनिवार्य है। अध्यात्मिक गुरू से मक्सदपूर्ण नहीं होता जैसे गुरू कृपाचार्य व गुरू द्रोणाचार्य दोनों की अलग–अलग पहचान है। यहाँ पर स्थान अभाव वश अधिक नहीं लिखा जा सकता, परन्तु यह सलाह है कि पहले इस महाविद्या के बारे में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करें, केवल मूल ग्रन्थों को ही पढ़ें, तब अनुभवी साधक गुरू की तलाश करके इस साधना में अग्रसर हों।

यह तन्त्र–साधना है जो कि हम वेदाचार व तन्त्राचार से करते हैं, ताकि सामान्य जीवन में रहते हुए भी सम्पन्न कर पायें। अधिक कठोर नियम सामान्य अनुभवहीन साधक नहीं कर पाते और जल्दी फल सफलता न मिलने पर निराश हो जाते हैं। साधनालीन होने पर धैर्य भाव श्रद्धा महत्व है। इन सब से अधिक गुरू में विश्वास है। सामान्यतः पढ़े–लिखे साधक पुस्तकों के अनुसार अनुचरण करते हैं, परन्तु ये नहीं जानते कि अधिकतर पुस्तकें गैर साधकों के द्वारा लिखी गई हैं। हर लेखक साधक नहीं होता। यहाँ इस बार साधकों के लाभार्थ श्री बगलाहृदय स्तोत्र को प्रस्तुत किया जा रहा है, यह स्तोत्र 'सिद्धेश्वर–तन्त्र' के उत्तर–खण्ड से प्रेषित है तथा अत्यन्त प्रभावशाली है। साधकों को यही निर्देश है कि इसका पाठ–प्रयोग अच्छी प्रकार से समझकर, अपने श्री गुरुदेव की आज्ञा–निर्देश में प्रारम्भ करें। महाविद्या बगला के साधकों के लिए क्या–क्या नियम अपेक्षित हैं, यह सर्व–विदित है। सामान्य–रूप से साधक इस स्तोत्र को अपनी दैनिक साधना में सम्मिलित कर भगवती बगला का विशेष अनुग्रह प्राप्त कर सकता है। साधकों को यदि कहीं, कोई जिज्ञासा व शंका प्रकट हो, तो निःसङ्कोच पत्र व्यवहार अथवा दूरभाष से सम्पर्क कर अपनी जिज्ञासा व शंका का निवारण कर सकते हैं।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीहृदय–स्तोत्र मन्त्रस्य नारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीबगलामुखीदेवता, ह्ल्रीं बीजम्, क्लीं शक्तिः, ऐं कीलकम्, श्रीबगलामुखी प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

न्यासः

ॐ नारद ऋषये नमः शिरसि। ॐ अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। ॐ श्रीबगलामुख्यै देवतायै नमो हृदये। ॐ ह्ल्रीं बीजाय नमो गुह्ये। ॐ क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ॐ ऐं कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

कराङ्गन्यासः

ॐ ह्ल्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ऐं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्ल्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः

ॐ ह्ल्रीं हृदयाय नमः। ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऐं शिखायै वषट्। ॐ ह्ल्रीं कवचाय हुम्। ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ऐं अस्त्राय फट्। ॐ ह्लीं क्लीं ऐ 'इति' दिग्बन्धः।

ध्यानम्

पीताम्बरां पीतमाल्यां पीताभरण – भूषिताम्।
पीतकज्पदद्वन्दां बगलाऽम्बां भजेऽहर्निशम्।।

प्रार्थना

पीत–शङ्ख–गदाहस्ते पीत–चन्दन–चर्चिते।
बगले ! मे वरं देहि शत्रुसङ्घ–विदारिणि ! ।।

प्रार्थना–मन्त्र

ॐ ह्लीं क्लीं ऐं बगलामुख्यै गदाधारिण्यै प्रेतासनाध्यासिन्यै स्वाहा। (११ बार)

।। पाठ ।।

वन्देऽहं बगलां देवीं पीत–भूषण–भूषिताम्।
तेजोरूपमयीं देवीं पीततेजः स्वरूपिणीम्।।
गदाभ्रमणभिन्नाभ्रां भृकुटी–भीषणाननाम्।
भीषयन्तीं भीमशत्रून् भजे भक्तस्य भव्यदाम्।।
पूर्णचन्द्रसमानास्यं पीतगन्धाऽनुलेपनाम्।
पीताम्बर–परीधानां पवित्रामाश्रयाम्यहम्।।
पालयन्तीमनुबलं प्रसमीक्ष्याऽवनीतले।
पीताचाररतां भक्तांस्तां भवानीं भजाम्यहम्।।
पीत–पद्म–पदद्वन्द्वां चम्पकारण्यरोपिणीम्।
पीतावतंसां परमां वन्दे पद्मज–वन्दिताम्।।
लसच्चारु शिञ्चत् – सुमञ्चीरपादां

चलत् – स्वर्णकर्णावतंसाञ्चितास्याम्।
चलत्पीत – चन्द्राननां चन्द्रवन्द्यां
भजे पद्मजादीडय – सत्पादपद्याम्।।
सुपीताभयामालया पूतमन्त्रं
परं ते जपन्तो जयं संलभन्ते।
रणे राग–रोषाप्लुतानां रिपूणां
विवादे बलाद् वैरकृद्धातमातः! ।।
भरत्पीत – भास्वत्प्रभाहस्कराभां
गदागञ्चितामित्रगर्वा गरिष्ठाम्।
गरीयो गुणागार – गात्रां गुणाढयां
गणेशादि–गम्यां श्रये निर्गुणाढयाम्।।
जना ये जपन्त्युग्रबीजं जगत्सु
परं प्रत्यहं ते स्मरन्तः स्वरूपम्।
भवेद् वादिनां वाङ् – मुख – स्तम्भ आद्ये
जयो जायते जल्पतामाशु तेषाम्।।
तव ध्याननिष्ठा प्रतिष्ठात्म – प्रज्ञा –
वतां पादपद्यार्चने प्रेमयुक्ताः।
प्रसन्ना नृपाः प्राकृताः पण्डिता वा
पुराणादिका दासतुल्या भवन्ति।।
नमामस्ते मातः ! कनक–कमनीयाऽङ्घ्रि–जलजं
बलद्–विद्युद्–वर्णघन–तिमिर–विध्वंसकरणम्
भवाब्धौ मग्नात्मोत्तरणकरणं सर्वशरणं
प्रपन्नानां मातर्जगति बगले! दुःखदमनम्।।
ज्वलज्जयोत्स्नारत्नाकर – मणिविषक्ताङ्ग्यभवनं
स्मरामस्ते धाम स्मर–हर–हरीन्द्रेदु– प्रमुखैः।
अहोरात्रं प्रातः प्रण्य–नवनीयं सुविशदं,
परं पीताकारं परिचित–मणिद्वीप–वसनम्।।
वदामस्ते मातः! श्रुतिसुखकरं नाम ललितं
लसन्मात्रावर्णां जगति बगलेति प्रचरितम्।
चलन्तस्तिष्ठन्तो वयमुपविशन्तोऽपि शयने
लभेमो यच्छेयो दिवि दुरवलभ्यं दिविषदाम्।।
पदर्च्चायां प्रीतिः प्रतिदिनमपूर्वा प्रभवतु
यथा ते प्रासन्नयं प्रतिपलमपेक्ष्यं प्रणमताम्।
अनल्पं तं मातर्भवति भृतभक्त्या भवतु नो
दिशातः सद्भक्तिं भुवि भगवतांभूरि–भवदाम्।।
मम सकलरिपूर्णां वाङ्मुखे स्तम्भयाशु
भगवति! रिपुजिह्वां कीलय प्रस्थतुल्याम्।
व्यवसित–खलबुद्धिं नाशयाऽऽशु प्रगल्भां
मम कुरू बहुकार्यं सत्कृपेऽम्ब! प्रसीद।।
व्रजन्तु मम रिपूणां सद्मनि प्रेतसंस्था
कर–धृत–गदया तां घातयित्वाऽऽशु रोषात्।
सधन–वसन–धान्यं सद्म तेषां प्रदह्य
पुनरपि बगला स्वस्थानमायातु शीघ्रम्।।
कर–धृत–रिपुजिह्वा – पीडन–व्यग्रहस्तां
पुनरपि गदया तांस्ताडयन्तीं सुतन्त्राम्।
प्रणत–सुरगणानां पालिकां पीतवस्त्रां
बहुबल–बगलां तां पीतवस्त्रां नमामः।।
हृदय–वचन–कायैः कुर्वतां भक्ति–पुञ्चं
प्रकटित–करुणार्द्रा प्रीणती जल्पतीति।
धनमथ बहुधान्यं पुत्र – पौत्रादि–वृद्धिः
सकलमपि किमेभ्यो देयमेवं त्ववश्यम्।।
तव चरण – सरोजं सर्वदा सेव्यमानं
द्रुहिण – हरि – हराद्यैर्देववृन्दैः शरण्यम्।
मृदुमपि शरणं ते शर्मदं सूरिसेव्यं
वयमिह करवामो मातरेतद् विधेयम्।।

ग्रहों के परस्पर अंशात्मक योग

संकेत चिन्ह :- सू. = सूर्य, चं. = चन्द्र, मं. = मंगल, बु. = बुध, गु. = गुरु, शु. = शुक्र, श. = शनि, ०° = युति या योग, ३०° = द्विर्द्वादश, दूसरा - बारहवाँ, ४५° = अर्द्धकेन्द्र, अष्टमांश, ६०° = त्रैकादश, तीसरा - ग्यारहवाँ, षष्टांश, षडष्टक, ९०° = केन्द्र, चौथा - दसवाँ, १२०° = नवम - पंचम, तृतीयांश, १३५° = अष्टमांश रहित प्रतियोग, १५०° = द्वादशांश रहित प्रतियोग, १८०° = प्रतियोग या समसप्तक, योग = अंशात्मक योग। ग्रहों के परस्पर विभिन्न योगों का समय भा. स्टे. टा. में घं. मि. में दिया गया है।

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
मार्च-२००७					
२०	चं.	३०	रा.	११	४७
"	चं.	४५	बु.	१३	३६
"	चं.	६०	मं.	१४	०४
"	चं.	१२०	श.	१७	४०
"	चं.	१२०	गु.	१७	५१
२१	चं.	३०	सू.	११	०८
"	चं.	४५	रा.	११	३४
"	चं.	६०	बु.	१५	०३
"	चं.	०	शु.	१७	४२
"	चं.	१३५	गु.	१७	५१
"	शु.	१३५	गु.	१९	१२
२२	चं.	६०	रा.	११	३९
"	च.	४५	सू.	१३	०३
"	चं.	९०	मं.	१६	४६
"	चं.	९०	श.	१७	१४
"	चं.	१५०	गु.	१८	११
२३	चं.	१८०	श.	०१	०५
"	चं.	६०	सू.	१५	३८
"	चं.	९०	बु.	१९	५२
"	चं.	६०	गु.	२१	३२
"	चं.	३०	शु.	२३	२६
२४	चं.	९०	रा.	१३	४०
"	चं.	६०	श.	१९	३४
"	चं.	१८०	गु.	२०	५५
"	चं.	१२०	मं.	२२	१३
२५	सू.	१३५	श.	००	२९
"	चं.	४५	शु.	०३	४४
"	चं.	४५	श.	२१	५९
"	चं.	९०	सू.	२३	४७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२६	चं.	१३५	मं.	०२	२६
"	चं.	१२०	बु.	०४	५५
"	चं.	६०	शु.	०१	१२
"	चं.	१२०	रा.	१८	५७
२७	चं.	३०	श.	०१	१८
"	चं.	१५०	गु.	०३	०४
"	चं.	१५०	मं.	०७	४५
"	चं.	१३५	बु.	११	२२
"	चं.	१३५	रा.	२२	५३
२८	चं.	१३५	गु.	०८	२८
"	चं.	१२०	सू.	१२	२४
"	चं.	१५०	बु.	१९	०३
"	चं.	९०	शु.	२३	३७
२९	चं.	१५०	रा.	०३	३६
"	चं.	०	श.	१०	२६
"	चं.	१२०	गु.	१२	३७
"	चं.	१३५	सू.	२०	१०
"	चं.	१८०	मं.	२१	१६
३०	शु.	६०	रा.	१५	०३
३१	चं.	१५०	सू.	०४	३९
"	चं.	१८०	बु.	१३	२६
"	चं.	१८०	रा.	१४	५०
"	चं.	१२०	शु.	१७	३४
"	चं.	३०	श.	२१	५८
अप्रैल-२००७					
१	चं.	९०	गु.	००	२९
"	बु.	०	रा.	०१	१९
"	सू.	४५	मं.	०४	५३
"	चं.	१५०	मं.	१३	२५
२	चं.	१३५	शु.	०३	१६

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२	चं.	४५	श.	०४	१३
"	शु.	९०	श.	१२	३२
"	चं.	१३५	मं.	२१	५६
"	चं.	१८०	सू.	२२	४६
३	चं.	१५०	रा.	०३	१६
"	चं.	१५०	बु.	१०	०८
"	चं.	६०	श.	१०	३५
"	चं.	१५०	शु.	१३	०७
"	चं.	६०	गु.	१३	२१
"	बु.	१५०	शु.	१३	५०
"	शु.	१५०	गु.	१५	३१
४	चं.	१२०	मं.	०६	३०
"	चं.	१३५	रा.	०९	३४
"	बु.	९०	गु.	१२	४८
"	चं.	४५	गु.	१९	४७
"	चं.	१३५	बु.	२०	४५
५	सू.	३०	रा.	०२	१३
"	चं.	१२०	रा.	१५	४४
"	चं.	१५०	सू.	१७	०२
"	चं.	९०	श.	२३	०८
६	चं.	३०	गु.	०२	०२
"	चं.	१२०	बु.	०७	१४
"	चं.	१८०	शु.	०८	२६
"	चं.	९०	मं.	२३	०१
७	चं.	१३५	सू.	०१	४४
"	बु.	६०	शु.	२१	४१
८	चं.	९०	रा.	०३	०९
"	चं.	१२०	सू.	०९	५२
"	चं.	१२०	श.	१०	२९
"	चं.	०	गु.	१३	२६

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
८	सू.	१२०	श.	१७	२७
९	चं.	१५०	शु.	०१	४८
"	चं.	९०	बु.	०२	४६
"	चं.	६०	मं.	१३	२८
"	चं.	१३५	श.	१५	२०
१०	सू.	१२०	गु.	०५	३८
"	चं.	१३५	शु.	०९	११
"	चं.	६०	रा.	१२	१६
"	चं.	४५	मं.	१९	२६
"	चं.	१५०	श.	१९	२६
"	चं.	३०	गु.	२२	१३
"	चं.	९०	सू.	२३	३५
११	चं.	१२०	शु.	१५	२८
"	चं.	४५	रा.	१५	३९
"	चं.	६०	बु.	१८	३७
१२	चं.	३०	मं.	००	२२
"	चं.	४५	गु.	०१	२२
"	चं.	३०	रा.	१८	०९
१३	चं.	४५	बु.	००	४३
"	चं.	१८०	श.	०१	०२
"	बु.	१३५	श.	०३	१६
"	चं.	६०	गु.	०३	३८
"	चं.	६०	सू.	०१	००
१४	चं.	९०	शु.	००	३०
"	चं.	३०	बु.	०५	३८
"	चं.	०	मं.	०७	०३
"	चं.	४५	सू.	१२	०५
"	चं.	०	रा.	२०	३८
१५	बु.	३०	मं.	०२	०९
"	चं.	१५०	श.	०३	१४

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१५	चं.	९०	गु.	०५	३८
"	चं.	३०	सू.	१४	१८
१६	चं.	१३५	श.	०३	२१
"	चं.	६०	शु.	०५	३५
"	चं.	३०	मं.	१०	१८
"	चं.	०	बु.	१२	३९
"	चं.	३०	रा.	२०	३६
१७	चं.	१२०	श.	०३	०५
"	चं.	१२०	गु.	०५	२०
"	चं.	४५	शु.	०७	१५
"	चं.	४५	मं.	११	१४
"	चं.	०	सू.	१७	०७
"	चं.	४५	रा.	२०	१०
१८	चं.	१३५	गु.	०४	५२
"	चं.	३०	शु.	०८	४८
"	चं.	६०	मं.	१२	०५
"	चं.	३०	बु.	१८	१४
"	चं.	३०	रा.	१९	४६
१९	चं.	९०	श.	०२	२३
"	चं.	१५०	गु.	०४	३३
"	बु.	३०	रा.	०६	२६
"	सू.	४५	रा.	१४	२१
"	चं.	३०	सू.	२०	०१
"	चं.	४५	बु.	२१	३२
२०	चं.	०	शु.	१२	५८
"	चं.	९०	मं.	१४	५६
"	चं.	९०	रा.	२०	०१
"	चं.	४५	सू.	२२	२०
२१	चं.	६०	बु.	०१	४८
"	चं.	६०	श.	०३	१६

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.	ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२१	चं.	१८०	गु.	०५	२२	२८	चं.	१३५	सू.	१२	१७	६	बु.	१५०	गु.	०४	५२	१३	चं.	४५	सू.	२०	०३	२१	मं.	१३५	श.	०२	१३
"	बु.	१२०	श.	१२	४१	"	शु.	१८०	गु.	१८	१५	"	चं.	१८०	शु.	१०	२१	१४	चं.	३०	रा.	०४	२६	"	चं.	१३५	रा.	०८	३२
२२	चं.	६०	सू.	०१	४०	२९	चं.	४५	श.	०१	५०	"	गु.	१२०	श.	१२	४३	"	चं.	१२०	गु.	१२	३१	"	चं.	६०	सू.	१३	१७
"	बु.	१२०	गु.	०४	१०	"	बु.	१३५	गु.	१०	३८	"	चं.	१३५	सू.	१५	५३	"	चं.	१२०	श.	१४	१३	"	बु.	६०	श.	१६	१९
"	चं.	४५	श.	०४	४९	"	चं.	१५०	बु.	११	२७	"	चं.	१३५	श.	२१	२४	"	चं.	४५	बु.	१८	३८	"	चं.	१३५	गु.	१६	४७
"	चं.	३०	शु.	२०	४९	"	चं.	१५०	सू.	२१	२९	७	चं.	१३५	बु.	००	५३	"	चं.	३०	सू.	२१	५७	"	चं.	४५	बु.	२१	२७
"	चं.	१२०	मं.	२१	१५	३०	चं.	१५०	रा.	०६	२६	"	चं.	६०	रा.	१५	३१	१५	चं.	४५	रा.	०४	२७	"	चं.	१२०	मं.	२१	५३
"	चं.	१२०	रा.	२३	३४	"	बु.	४५	शु.	०७	०७	"	चं.	१२०	सू.	२२	४३	"	बु.	३०	शु.	०६	१९	२२	चं.	१५०	रा.	११	५९
२३	चं.	३०	श.	०७	२५	"	मं.	१५०	श.	०९	४१	८	चं.	३०	गु.	०१	३१	"	चं.	३०	मं.	०७	४३	"	चं.	३०	शु.	१८	०२
"	चं.	१५०	गु.	०९	३१	"	चं.	६०	श.	१६	२३	"	चं.	१५०	श.	०१	५२	"	चं.	१३५	गु.	१२	२०	"	चं.	१२०	गु.	२०	२३
"	शु.	९०	मं.	११	०१	"	चं.	१५०	मं.	१६	५०	"	चं.	१२०	बु.	१०	५४	"	चं.	६०	शु.	२१	०९	२३	चं.	०	श.	००	५८
"	चं.	९०	बु.	१४	४१	"	चं.	६०	गु.	१७	३७	"	चं.	६०	मं.	१३	०६	"	चं.	३०	बु.	२२	०८	"	चं.	१३५	मं.	०३	४४
२४	चं.	१३५	मं.	०२	१३	"	चं.	१२०	शु.	२२	५८	"	चं.	४५	रा.	१९	२४	१६	चं.	६०	रा.	०४	१४	"	चं.	६०	बु.	०५	३६
"	चं.	४५	शु.	०२	४३	**मई-२००७**						९	चं.	१५०	शु.	००	१७	"	चं.	४५	मं.	०८	५०	"	शु.	१५०	गु.	१९	४८
"	चं.	१३५	रा.	२	४५	१	मं.	९०	गु.	०३	५३	"	चं.	४५	गु.	०५	०६	"	चं.	१५०	गु.	१२	००	२४	चं.	४५	शु.	०१	३१
"	शु.	९०	रा.	०२	४६	"	चं.	१३५	रा.	१२	४४	"	बु.	६०	मं.	०६	१०	"	चं.	९०	श.	१४	१०	"	चं.	९०	सू.	०२	३४
"	मं.	०	रा.	१०	११	"	चं.	४५	गु.	२३	४९	"	सू.	१५०	गु.	०८	४१	"	चं.	४५	शु.	२२	५१	"	चं.	१५०	मं.	१०	४५
"	चं.	९०	सू.	१२	०७	२	चं.	१३५	मं.	०१	१९	"	सू.	९०	मं.	१७	३६	१७	चं.	०	सू.	००	५८	"	चं.	१८०	रा.	२१	४६
"	चं.	१३५	गु.	१३	०८	"	चं.	१३५	शु.	०८	३०	"	चं.	४५	मं.	१८	१६	"	चं.	६०	मं.	१०	०२	२५	चं.	९०	गु.	०६	२३
२५	सू.	१३५	गु.	००	४८	"	चं.	१८०	बु.	१३	३१	"	चं.	३०	रा.	२२	३८	"	बु.	९०	रा.	२१	५४	"	चं.	६०	शु.	१०	०५
"	चं.	१५०	रा.	०६	५८	"	चं.	१८०	सू.	१५	४०	१०	चं.	१३५	शु.	०५	५६	१८	चं.	३०	शु.	००	५०	"	चं.	३०	श.	१२	०५
"	चं.	१५०	मं.	०८	२४	"	चं.	१२०	रा.	१८	५१	"	चं.	६०	गु.	०७	५९	"	चं.	९०	रा.	०४	०८	२६	चं	९०	बु.	०१	०९
"	चं.	६०	शु.	०९	५६	३	चं.	९०	श.	०५	०३	"	चं.	१८०	श.	०८	५०	"	चं.	०	बु.	०५	०२	"	शु.	३०	श.	१०	०८
"	चं.	०	श.	१५	४५	"	चं.	३०	गु.	०५	४६	"	चं.	९०	सू.	०९	५८	"	चं.	१८०	गु.	१	५४	"	चं.	४५	श.	१८	३३
"	चं.	१२०	गु.	१७	४३	"	चं.	१२०	मं.	०९	३०	"	चं.	३०	मं.	२२	३४	"	चं.	६०	श.	१४	३९	"	चं.	१२०	सू.	१९	५३
२६	चं.	१२०	बु.	१०	३१	"	बु.	०	सू.	.०९	३७	११	चं.	९०	बु.	०३	१८	१९	चं.	३०	सू.	०५	१३	२७	चं.	१८०	मं.	०३	०९
"	बु.	४५	रा.	११	३९	"	बु.	६०	रा.	१४	३४	"	चं.	१२०	शु.	१०	३७	"	चं.	९०	मं.	१३	५८	"	चं.	१५०	रा.	१०	०१
२७	चं.	१२०	सू.	०३	२५	"	चं.	१५०	शु.	१७	३९	"	शु.	४५	श.	१८	३१	"	चं.	४५	श.	१५	४६	"	चं.	६०	गु.	१८	३०
"	चं.	१८०	रा.	१७	४५	४	सू.	६०	रा.	०५	१०	१२	चं.	०	रा.	०२	५५	"	शु.	१२०	रा.	१९	५५	२८	चं.	६०	श.	०१	१३
"	चं.	१३५	बु.	२२	३५	५	चं.	९०	रा.	०६	०६	"	चं.	९०	गु.	११	३४	२०	चं.	१२०	रा.	०६	०८	"	चं.	९०	शु.	०४	४५
"	चं.	१८०	मं.	२३	४३	"	चं.	१५०	सू.	०८	२२	"	चं.	१५०	श.	१२	५२	"	चं.	०	शु.	०७	०१	"	चं.	१३५	सू.	०५	०४
२८	शु.	६०	श.	०१	३८	"	चं.	१५०	बु.	१३	५१	"	चं.	६०	सू.	१७	३३	"	चं.	४५	सू.	८	३८	"	चं.	१३५	रा.	१६	२
"	चं.	३०	श.	०३	२३	"	चं.	१२०	श.	१६	२३	१३	चं.	०	मं.	०४	३२	"	बु.	१८०	गु.	११	०२	"	च.	१२०	बु.	२१	४८
"	चं.	९०	शु.	०३	३४	"	चं.	०	गु.	१६	३५	"	चं.	१३५	श.	१३	४९	"	चं.	१५०	गु.	१४	१३	२९	चं.	४५	गु.	००	३७
"	चं.	९०	गु.	०५	०२	६	चं.	९०	मं.	००	२९	"	चं.	६०	बु.	१४	३३	"	चं.	३०	बु.	१४	४३	"	चं.	१५०	सू.	१४	०५
"	बु.	४५	मं.	०८	२३	"	बु.	९०	श.	०४	२६	"	चं.	९०	शु.	१७	११	"	चं.	३०	श.	१७	४६	"	चं.	१५०	मं.	२०	०१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२९	चं.	१२०	रा.	२२	२६
३०	चं.	३०	गु.	०६	२७
"	शु.	४५	सू.	०७	२०
"	चं.	१३५	बु.	०७	२२
"	चं.	९०	श.	१३	५९
"	चं.	१२०	शु.	२२	४३
३१	चं.	१३५	मं.	०३	५३
"	मं.	३०	रा.	०८	२९
"	चं.	१५०	बु.	१६	०६

जून-२००७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	१८०	सू.	०६	३५
"	चं.	१३५	शु.	०६	४९
"	चं.	९०	रा.	०९	२४
"	चं.	१२०	मं.	११	०९
"	चं.	०	गु.	१६	५०
२	चं.	१२०	श.	०१	०२
"	शु.	१३५	रा.	१३	२६
"	चं.	१५०	शु.	१४	१६
"	बु.	४५	श.	१४	२८
"	सू.	९०	रा.	१७	३४
३	चं.	१३५	श.	०५	४९
"	चं.	१८०	बु.	०६	४८
"	चं.	६०	रा.	१८	२६
"	चं.	१५०	सू.	२०	३६
"	चं.	९०	मं.	२३	५५
४	चं.	३०	गु.	०१	१८
"	चं.	१५०	श.	१०	०७
"	मं.	१२०	गु.	२०	२९
"	चं.	४५	रा.	२२	१५
५	चं.	१३५	सू.	०२	४२
"	चं.	१८०	शु.	०३	१५
"	चं.	४५	गु.	०४	५०
"	चं.	१५०	बु.	१८	३३
"	शु.	१३५	गु.	२२	१०
६	चं.	३०	रा.	०१	३५
"	सू.	१८०	गु.	०४	४४
६	चं.	६०	गु.	०७	५४
"	चं.	१२०	सू.	०८	११
"	चं.	६०	मं.	१०	२२
"	चं.	१८०	श.	१७	१५
"	चं.	१३५	बु.	२३	१०
७	चं.	१५०	शु.	१३	४०
"	चं.	४५	मं.	१४	४२
८	चं.	१२०	बु.	०२	५९
"	चं.	०	रा.	०६	४६
"	चं.	९०	गु.	१२	३२
"	चं.	९०	सू.	१७	१४
"	चं.	१३५	शु.	१७	५२
"	चं.	३०	मं.	१८	२३
"	चं.	१५०	श.	२२	१७
९	चं.	१२०	शु.	२१	२२
१०	चं.	१३५	श.	००	००
"	चं.	९०	बु.	०८	२०
"	चं.	३०	रा.	०९	४७
"	चं.	१२०	गु.	१५	०६
"	चं.	६०	सू.	२३	४०
"	चं.	०	मं.	२३	५५
११	चं.	१२०	श.	०१	१३
"	चं.	४५	रा.	१०	३७
"	चं.	१३५	गु.	१५	४३
"	सू.	६०	मं.	१५	५८
१२	सू.	६०	श.	०१	११
"	चं.	४५	सू.	०२	०५
"	चं.	९०	शु.	०२	३९
"	मं.	१२०	श.	०४	१४
"	चं.	६०	बु.	११	०६
"	चं.	६०	रा.	११	०७
"	बु.	१२०	रा.	१२	३४
"	चं.	१५०	गु.	१६	०२
१३	चं.	९०	श.	०२	३७
"	चं.	३०	मं.	०३	४०
"	चं.	३०	सू.	०४	१४
१३	चं.	४५	बु.	११	४५
१४	चं.	४५	मं.	०५	२२
"	चं.	६०	शु.	०६	४८
"	चं.	९०	रा.	११	५०
"	चं.	३०	बु.	१२	४०
"	चं.	१८०	गु.	१६	३०
१५	चं.	६०	श.	०३	५६
"	चं.	६०	मं.	०७	२०
"	चं.	०	सू.	०८	४४
"	चं.	४५	शु.	०९	०७
१६	चं.	४५	श.	०५	०८
"	चं.	३०	शु.	१२	०१
"	चं.	१२०	रा.	१३	४१
"	चं.	०	बु.	१४	५२
"	चं.	१५०	गु.	१८	१६
१७	चं.	३०	श.	०७	०२
"	शु.	१५०	रा	११	५५
"	चं.	९०	मं.	१३	१०
"	चं.	१३५	रा.	१५	३६
"	चं.	३०	सू.	१५	३७
"	चं.	१३५	गु.	२०	११
१८	बु.	३०	शु.	०५	११
"	चं.	१५०	रा.	१८	२३
"	चं.	३०	बु.	१९	२४
"	शु.	४५	सू.	२०	२८
"	चं.	०	शु.	२०	३७
"	चं.	४५	सू.	२०	३७
"	चं.	१२०	गु.	२३	००
१९	मं.	४५	रा.	०५	५१
"	चं.	०	श.	१३	३५
"	चं.	४५	बु.	२२	५०
"	चं.	१२०	मं.	२३	०८
२०	चं.	६०	सू.	०२	५३
"	शु.	१२०	गु.	०४	१९
२१	चं.	१८०	रा.	०२	५०
"	चं.	६०	बु.	०३	०१
२१	चं.	१३५	मं.	०५	५१
"	चं.	९०	गु.	०७	३१
"	चं.	३०	शु.	०९	५१
२२	चं.	३०	श.	००	०३
"	मं.	१३५	गु.	०६	१३
"	चं.	१५०	मं.	१३	३१
"	चं.	४५	शु.	१७	५६
"	चं.	९०	सू.	१८	४६
२३	चं.	४५	श.	०६	२३
"	चं.	९०	बु.	१२	५३
"	चं.	१५०	रा.	१४	२५
"	चं.	६०	गु.	१८	५८
२४	चं.	६०	शु.	०२	३१
"	चं.	६०	श.	१३	०१
"	चं.	१३५	रा.	२०	५१
२५	चं.	४५	गु.	०१	०६
"	चं.	१८०	मं.	०६	०९
"	चं.	१२०	सू.	१२	४८
"	चं.	१२०	बु.	२३	०४
२६	चं.	१२०	रा.	०२	५०
"	चं.	३०	गु.	०७	०४
"	चं.	९०	शु.	१९	२४
"	चं.	१३५	सू.	२१	३१
२७	चं.	९०	श.	०१	५४
"	चं.	१३५	बु.	०३	४१
"	चं.	१५०	मं.	२१	५२
२८	चं.	१५०	सू.	०५	५४
"	चं.	१५०	बु.	०७	४८
"	बु.	४५	श.	१०	४१
"	चं.	९०	रा.	१३	४८
"	चं.	०	गु.	१७	४०
२९	बु.	०	सू.	००	११
"	चं.	१३५	मं.	०४	४३
"	चं.	१२०	शु.	०९	४९
"	सू.	४५	श.	११	१२
"	चं.	१२०	श.	१२	४४
३०	बु.	४५	शु.	०१	०५
"	चं.	१२०	मं.	१०	४९
"	चं.	१८०	बु.	१४	२४
"	चं.	१३५	शु.	१५	५०
"	चं.	१३५	श.	१७	१२
"	चं.	१८०	सू.	१९	२०
"	चं.	६०	रा.	२२	२५

जुलाई- २००७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	३०	गु.	०१	५४
"	शु.	०	श.	२०	१०
"	चं.	१५०	श.	२१	०४
"	चं.	१५०	शु.	२१	०७
२	बु.	६०	मं.	००	३९
"	चं.	४५	रा.	०१	५३
"	चं.	४५	गु.	५	११
"	सू.	१२०	रा.	११	४६
"	चं.	१५०	बु.	१९	१०
"	चं.	९०	मं.	२०	५९
३	चं.	३०	रा.	०४	५३
"	चं.	१५०	सू.	०६	१६
"	चं.	६०	गु.	०८	००
"	चं.	१३५	बु.	२१	०३
४	चं.	१८०	श.	०३	२३
"	सू.	१५०	गु.	०४	४४
"	चं.	१८०	शु.	०५	५२
"	चं.	१३५	सू.	१०	५५
"	चं.	१२०	बु.	२२	४२
५	चं.	६०	मं.	०५	०५
"	चं.	०	रा.	०९	३८
"	चं.	९०	गु.	१२	३२
"	चं.	१२०	सू.	१५	०७
६	चं.	१५०	श.	०८	११
"	चं.	४५	मं.	०८	३२
"	चं.	१५०	शु.	१२	४४
७	चं.	९०	बु.	०१	२६
"	चं.	१३५	श.	१०	०७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
७	चं.	३०	मं.	११	३७
"	चं.	३०	रा.	१३	०६
"	चं.	१३५	शु.	१५	३५
"	चं.	१२०	गु.	१५	४९
"	चं.	९०	सू.	२२	२५
८	चं.	१२०	श.	११	४६
"	चं.	४५	रा.	१४	२६
"	मं.	६०	रा.	१५	३३
"	चं.	१३५	गु.	१७	०४
"	चं.	१२०	शु.	१८	०५
९	चं.	६०	बु.	०३	४०
"	चं.	६०	रा.	१५	३६
"	चं.	०	मं.	१६	५६
"	चं.	१५०	गु.	१८	०८
१०	चं.	६०	सू.	०४	३२
"	चं.	४५	बु.	०४	४४
"	चं.	९०	श.	१४	३
"	मं.	१५०	गु.	१४	५६
"	चं.	९०	शु.	२२	२५
११	चं.	३०	बु.	०५	५६
"	चं.	४५	सू.	०७	२५
"	चं.	९०	रा.	१७	३९
"	चं.	१८०	गु.	२०	०४
"	चं.	३०	मं.	२१	४५
१२	चं.	३०	सू.	१०	२४
"	चं.	६०	श.	१७	१६
१३	चं.	४५	मं.	००	२२
"	चं.	६०	शु.	०२	४३
"	चं.	०	बु.	०९	०४
"	चं.	४५	श.	१९	०२
"	चं.	१२०	रा.	२०	२०
"	चं.	१५०	गु.	२२	४२
१४	चं.	६०	मं.	०३	२४
"	चं.	४५	शु.	०५	२०
"	चं.	०	सू.	१७	३५

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१४	चं.	३०	श.	२१	१८
"	चं.	१३५	रा.	२२	१९
१५	चं.	१३५	गु.	००	४३
"	चं.	३०	शु.	०८	३१
"	चं.	३०	बु.	१४	५०
१६	चं.	१५०	रा.	००	५८
"	चं.	१२०	गु.	०३	२४
"	चं.	९०	मं.	११	३७
"	चं.	४५	बु.	१९	१३
१७	चं.	३०	सू.	०३	५६
"	चं.	०	श.	०४	०४
"	सू.	३०	श.	०५	४७
"	सू.	१३५	रा.	०९	२३
"	चं.	०	शु.	१७	११
१८	चं.	६०	बु.	००	१९
"	चं.	१८०	रा.	०८	४१
"	चं.	४५	सू.	१०	४१
"	चं.	९०	गु.	११	१५
"	सू.	१३५	गु.	१७	४१
"	चं.	१२०	मं.	२३	३७
१९	चं.	३०	श.	१४	१४
"	चं.	६०	सू.	१८	२८
२०	चं.	३०	शु.	०५	०६
"	चं.	१३५	मं.	०७	००
"	चं.	९०	बु.	१५	४३
"	चं.	१५०	रा.	१८	२७
"	चं.	४५	श.	२०	२५
"	चं.	६०	गु.	२२	१२
२१	चं.	१५०	मं.	१५	००
२२	चं.	१३५	रा.	०१	१७
"	चं.	६०	श.	०३	००
"	चं.	४५	गु.	०४	२१
"	चं.	९०	सू.	१२	००
"	चं.	६०	शु.	१८	४७
२३	बु.	४५	श.	०५	२८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२३	चं.	१२०	रा.	०७	२०
"	चं.	१२०	बु.	१०	०३
"	चं.	३०	गु.	१०	३४
"	बु.	१५०	गु.	१५	१८
२४	चं.	१८०	मं.	०७	१४
"	चं.	९०	श.	१६	०१
"	चं.	१३५	बु.	१९	२६
२५	चं.	१२०	सू.	०५	२२
"	चं.	९०	शु.	०७	३५
"	चं.	९०	रा.	१९	१२
"	चं.	०	गु.	२१	५७
२६	चं.	१५०	बु.	०४	२२
"	शु.	३०	सू.	११	४७
"	चं.	१३५	सू.	१३	०१
"	चं.	१५०	मं.	२१	१९
२७	चं.	१२०	श.	०२	५६
"	चं.	१२०	शु.	१७	२५
"	चं.	१५०	सू.	१९	४२
२८	चं.	१३५	मं.	०३	०३
"	चं.	६०	रा.	०४	००
"	चं.	३०	गु.	०६	३९
"	चं.	१३५	श.	०७	१४
"	चं.	१८०	बु.	१९	५८
"	चं.	१३५	शु.	२१	०२
२९	बु.	४५	शु.	०४	४०
"	चं.	४५	रा.	०७	१५
"	चं.	१२०	मं.	०७	५४
"	चं.	४५	गु.	०९	५३
"	चं.	१५०	श.	१०	४६
"	चं.	१५०	शु.	२३	५२
३०	चं.	१८०	सू.	०६	१९
"	चं.	३०	रा.	०९	५१
"	चं.	६०	गु.	१२	२९
३१	चं.	१५०	बु.	०८	३२
"	चं.	९०	मं.	१५	२६
"	चं.	१८०	श.	१५	५९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
अगस्त- २००७					
१	चं.	१८०	शु.	०३	४०
"	मं.	९०	श.	०५	३१
"	सू.	१५०	रा.	०६	४०
"	बु.	१३५	रा.	१०	४३
"	चं.	०	रा.	१३	३६
"	चं.	१३५	बु.	१४	०३
"	चं.	१५०	सू.	१४	१०
"	चं.	९०	गु.	१६	१७
२	बु.	१३५	गु.	०७	०६
"	चं.	१३५	सू.	१७	३०
"	चं.	१२०	बु.	१९	१९
"	चं.	१५०	श.	१९	३७
"	सू.	१२०	गु.	२०	४३
"	चं.	६०	मं.	२१	०८
"	बु.	३०	श.	२१	४०
३	चं.	१५०	शु.	०५	५४
"	बु.	६०	मं.	१५	२४
"	चं.	३०	रा.	१६	१५
"	चं.	१२०	गु.	१९	०१
"	चं.	१२०	सू.	२०	३८
"	चं.	१३५	श.	२१	०१
"	चं.	४५	मं.	२३	४०
४	चं.	१३५	शु.	०६	४३
"	चं.	४५	रा.	१७	२६
"	चं.	१३५	गु.	२०	१५
"	चं.	१२०	श.	२२	३८
५	चं.	३०	मं.	०२	०१
"	चं.	९०	बु.	०५	४४
"	चं.	१२०	शु.	०७	२७
"	बु.	३०	शु.	१६	३२
"	चं.	६०	रा.	१८	३७
"	चं.	१५०	गु.	२१	३२
६	चं.	९०	सू.	०२	५१
७	चं.	९०	श.	०१	४७
"	चं.	०	मं.	०७	२१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
७	चं.	९०	शु.	०८	५७
"	चं.	६०	बु.	१६	५४
"	चं.	९०	रा.	२१	२२
८	चं.	१८०	गु.	००	३०
"	शु.	९०	मं.	०५	०७
"	चं.	६०	सू.	०९	३८
"	बु.	१५०	रा.	२२	४९
"	चं.	४५	बु.	२३	०४
९	चं.	६०	श.	०५	४२
"	चं.	६०	शु.	१०	५८
"	चं.	३०	मं.	१३	२८
"	चं.	४५	सू.	१३	३१
"	बु.	१२०	गु.	२१	०७
१०	चं.	१२०	रा.	०१	०५
"	चं.	१५०	गु.	०४	३१
"	चं.	३०	बु.	०५	४९
"	चं.	४५	श.	०८	१०
"	चं.	४५	शु.	१२	२२
"	चं.	४५	मं.	१७	०८
"	चं.	३०	सू.	१७	५३
११	चं.	१३५	रा.	०३	३१
"	चं.	१३५	गु.	०७	०९
"	चं.	३०	श.	११	०७
"	चं.	३०	शु.	१४	०८
"	चं.	६०	मं.	२१	२२
१२	चं.	१५०	रा.	०६	२९
"	चं.	१२०	गु.	१०	२०
"	चं.	०	बु.	२१	४४
१३	चं.	०	सू.	०४	३४
"	चं.	०	श.	१८	४६
"	चं.	०	शु.	१९	०५
१४	शु.	०	श.	००	४७
"	चं.	९०	मं.	०७	५५
"	चं.	१८०	रा.	१४	१९
"	चं.	९०	गु.	१८	३८
१५	चं.	३०	बु.	१७	४८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१५	चं.	३०	सू.	१८	३१
१६	बु.	०	सू.	०१	२७
"	चं.	३०	शु.	०२	१३
"	चं.	३०	श.	०५	११
"	चं.	१२०	मं.	२१	३२
१७	चं.	१५०	रा.	००	४२
"	चं.	४५	सू.	०२	४३
"	चं.	४५	बु.	०५	२२
"	चं.	६०	गु.	०५	३७
"	चं.	४५	शु.	०६	३२
"	बु.	०	शु.	१०	५८
"	चं.	४५	श.	११	१९
१८	चं.	१३५	मं.	०५	१६
"	चं.	१३५	रा.	०६	४०
"	शु.	०	सू.	०९	१२
"	चं.	६०	शु.	११	१३
"	चं.	६०	सू.	११	३०
"	चं.	४५	गु.	११	५२
"	चं.	६०	बु.	१७	३७
"	चं.	६०	श.	१७	५२
"	बु.	०	श.	१९	१५
१९	मं.	९०	रा.	०५	४८
"	चं.	१२०	रा.	१२	५२
"	चं.	१५०	मं.	१३	१८
"	चं.	३०	गु.	१८	२०
२०	चं.	९०	शु.	२०	५१
२१	चं.	९०	सू.	०५	२५
"	चं.	९०	श.	०८	०५
"	चं.	९०	बु.	१७	५१
२२	चं.	९०	रा.	००	४९
"	चं.	१८०	मं.	०४	४५
"	सू.	०	श.	०५	००
"	चं.	०	गु.	०६	३८
२३	चं.	१२०	शु.	०५	२०
"	बु.	१८०	रा.	१३	३८
"	चं.	१२०	श.	१८	२५

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२३	चं.	१२०	सू.	२१	०७
"	मं.	१८०	गु.	२१	३४
२४	चं.	१३५	शु.	०८	४०
"	चं.	६०	रा.	१०	२४
"	चं.	१२०	बु.	१४	०६
"	चं.	३०	गु.	१६	२३
"	चं.	१५०	मं.	१७	१४
"	चं.	१३५	श.	२२	५१
२५	चं.	१३५	सू.	०३	२५
"	बु.	९०	गु.	०६	३४
"	चं.	१५०	शु.	११	१६
"	चं.	४५	रा.	१३	५५
"	चं.	४५	गु.	१९	५७
"	बु.	९०	मं.	२१	३०
"	चं.	१३५	मं.	२१	५८
"	चं.	१३५	बु.	२२	०१
२६	चं.	१५०	श.	०२	२२
"	चं.	१५०	सू.	०८	३६
"	चं.	३०	रा.	१६	३५
"	चं.	६०	गु.	२२	३९
२७	चं.	१२०	मं.	०१	४२
"	चं.	१५०	बु.	०४	३२
"	चं.	१८०	शु.	१४	२१
२८	चं.	१८०	श.	०६	५५
"	चं.	१८०	सू.	१६	०६
"	चं.	०	रा.	१९	४७
२९	चं.	९०	गु.	०१	५७
"	चं.	९०	मं.	०६	५०
"	चं.	१८०	बु.	१४	२४
"	चं.	१५०	शु.	१५	१८
"	बु.	३०	शु.	२०	४३
३०	चं.	१५०	श.	०९	१३
"	चं.	१३५	शु.	१५	२१
"	सू.	१८०	रा.	२०	३८
"	चं.	३०	रा.	२१	११
"	चं.	१५०	सू.	२१	१४

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
३१	चं.	१२०	गु.	०३	३७
"	चं.	१३५	श.	१०	०१
"	चं.	६०	मं.	१०	१५
"	चं.	१२०	शु.	१५	२१
"	चं.	४५	रा.	२१	४१
"	चं.	१५०	बु.	२२	११
"	चं.	१३५	सू.	२३	३३

सितम्बर- २००७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	१३५	गु.	०४	१९
"	चं.	१२०	श.	१०	५०
"	चं.	४५	मं.	११	५२
"	चं.	६०	रा.	२२	१७
२	चं.	१२०	सू.	०१	५१
"	चं.	१३५	बु.	०२	०४
"	चं.	१५०	गु.	०५	१०
"	चं.	३०	मं.	१३	४२
"	चं.	९०	शु.	१५	५१
३	चं.	१२०	बु.	०६	१८
"	चं.	९०	श.	१३	१०
४	चं.	९०	रा.	००	२०
"	शु.	६०	मं.	०५	०७
"	सू.	९०	गु.	०५	३५
"	चं.	१८०	गु.	०७	५४
"	चं.	९०	सू.	०८	०३
"	चं.	६०	शु.	१७	५४
"	चं.	०	मं.	१८	३७
५	चं.	९०	बु.	१६	३२
"	चं.	६०	श.	१७	१८
"	चं.	४५	शु.	१९	४७
"	बु.	३०	श.	२३	३६
६	चं.	१२०	रा.	०४	१२
"	चं.	१५०	गु.	१२	४०
"	चं.	६०	सू.	१६	३४
"	बु.	४५	शु.	१९	०५
"	चं.	४५	श.	२०	१२
"	चं.	३०	शु.	२२	१७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
७	चं.	३०	मं.	०१	५२
"	चं.	१३५	रा.	०६	५९
"	चं.	१३५	गु.	०५	५५
"	चं.	४५	सू.	२१	५४
"	चं.	३०	श.	२३	४२
८	चं.	६०	बु.	०५	४३
"	चं.	४५	मं.	०६	२७
"	चं.	१५०	रा.	१०	२२
"	चं.	१२०	गु.	१९	४७
९	चं.	३०	सू.	०३	५८
"	चं.	०	शु.	०५	१८
"	चं.	६०	मं.	११	४१
"	चं.	४५	बु.	१३	२९
"	बु.	१५०	रा.	१९	५७
"	शु.	३०	सू.	२१	४८
१०	चं.	०	श.	०८	२९
"	चं.	१८०	रा.	१८	४८
"	चं.	३०	बु.	२१	५९
११	चं.	९०	गु.	०५	१७
"	चं.	३०	शु.	१४	५९
"	चं.	०	सू.	१८	१५
१२	चं.	९०	मं.	००	०२
"	च.	३०	श.	१९	३१
"	चं.	४५	शु.	२०	४७
१३	चं.	१५०	रा.	०५	१६
"	बु.	६०	गु.	१६	१४
"	चं.	६०	गु.	१६	५५
"	चं.	०	बु.	१७	००
१४	चं.	४५	श.	०१	४४
"	चं.	६०	शु.	०३	०९
"	चं	३०	सू	११	०३
"	चं.	१३५	रा.	११	११
"	चं.	१२०	मं.	१४	३१
"	चं.	४५	गु.	२३	२१
१५	चं.	६०	श.	०८	१७
"	चं.	१२०	रा.	१७	२१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१५	चं.	४५	सू.	२०	०४
"	चं.	१३५	मं.	२२	१६
१६	चं.	३०	गु.	०६	००
"	चं.	३०	बु.	१३	३९
"	चं.	९०	शु.	१७	०२
१७	बु.	४५	श.	०२	२५
"	चं.	६०	सू.	०५	१२
"	चं.	१५०	मं.	०६	०३
"	चं.	९०	श.	२१	३८
"	चं.	४५	बु.	२३	५२
१८	सू.	९०	मं.	०२	२०
"	बु.	६०	श.	०२	५९
"	चं.	९०	रा.	०५	४४
"	चं.	०	गु.	१९	०५
१९	चं.	१२०	शु.	०६	५७
"	चं.	६०	बु.	०९	२८
"	चं.	१८०	मं.	२०	३४
"	चं.	९०	सू.	२२	१९
२०	बु.	१३५	रा.	[illegible]	२७
"	चं.	१२०	श.	०९	३५
"	चं.	१३५	शु.	१३	१०
"	चं.	६०	रा.	१६	१७
"	चं.	३०	गु.	०६	०३
"	चं.	१३५	श.	१४	२५
"	चं.	१५०	शु.	१८	३४
"	चं.	४५	रा.	२०	४०
२१	चं.	३०	गु.	६	०३
"	चं.	१३५	श.	१४	२५
"	चं.	१५०	शु.	१८	३४
"	चं.	४५	रा.	२०	४०
२२	चं.	९०	बु.	०१	२४
"	चं.	१५०	मं.	०७	५०
"	चं.	४५	गु.	१०	१३
"	चं.	१२०	सू.	११	४६
"	चं.	१५०	श.	१८	१६
"	चं.	३०	रा.	२३	५७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२३	चं.	१३५	मं.	११	५०
"	चं.	६०	गु.	१३	२३
"	चं.	१३५	सू.	१६	५१
२४	चं.	१८०	शु.	०२	२३
"	चं.	१२०	बु.	११	५४
"	चं.	१२०	मं.	१४	४५
"	चं.	१५०	सू.	२०	२६
"	चं.	१८०	श.	२३	०१
२५	चं.	०	रा.	०३	४४
"	चं.	१३५	बु.	१५	१८
"	चं.	९०	गु.	१६	५५
२६	चं.	१५०	शु.	०६	३२
"	सू.	३०	श.	१४	३२
"	बु.	४५	गु.	१५	०६
"	चं.	१५०	बु.	१७	४८
"	चं.	९०	मं.	१८	०२
"	बु.	१२०	मं.	२३	२४
२७	चं.	१५०	श.	००	३९
"	चं.	१८०	सू.	०१	१६
"	चं.	३०	रा.	०४	३७
"	चं.	१३५	शु.	०७	४१
"	चं.	१२०	गु.	१७	५४
२८	चं.	१३५	श.	००	४८
"	चं.	४५	रा.	०४	२९
"	चं.	१२०	शु.	०८	३४
"	चं.	१३५	गु.	१८	००
"	चं.	६०	मं.	१९	३०
"	चं.	१८०	बु.	२१	२१
२९	चं.	१२०	श.	००	५२
"	सू.	१५०	रा.	०१	५१
"	चं.	६०	रा.	०४	१७
"	चं.	१५०	सू.	०४	२७
"	चं.	१५०	गु.	१८	१२
"	चं.	४५	मं.	२०	१४
३०	चं.	१३५	सू.	०६	१४
"	चं.	९०	शु.	१०	४१
"	चं.	३०	मं.	२२	१९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
अक्टूबर- २००७					
१	चं.	१५०	बु.	०१	०६
"	चं.	९०	श.	०१	४१
"	चं.	९०	रा.	०४	३९
"	चं.	१२०	सू.	०८	३२
"	बु.	६०	श.	११	४७
"	चं.	१८०	गु.	१९	४७
२	चं.	१३५	बु.	०३	४४
"	चं.	६०	शु.	१५	०२
३	चं.	०	मं.	०१	२६
"	चं.	६०	श.	०४	४८
"	चं.	१२०	बु.	१७	०९
"	चं.	१२०	रा.	०७	२१
"	बु.	१२०	रा.	१०	२०
"	चं.	९०	सू.	१५	३७
"	चं.	४५	शु.	१८	३२
४	चं.	१५०	गु.	००	१०
"	चं.	४५	श.	०७	३४
"	चं.	१३५	रा.	०९	५४
"	चं.	३०	शु.	२३	०३
५	चं.	१३५	गु.	०३	३८
"	चं.	३०	मं.	०८	५६
"	चं.	३०	श.	११	१०
"	चं.	१५०	रा.	१३	१४
"	चं.	९०	बु.	१६	२४
६	चं.	६०	सू.	०२	४४
"	चं.	१२०	गु.	०७	५५
"	चं.	४५	मं.	१३	५९
७	चं.	४५	सू.	०९	४३
"	चं.	०	शु.	१०	५१
"	चं.	६०	मं.	१९	४४
"	चं.	०	श.	२०	३८
"	चं.	१८०	रा.	२२	०१
८	चं.	६०	बु.	०४	१६
"	चं.	३०	सू.	१७	२७
"	चं.	९०	गु.	१८	३४

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
९	मं.	६०	श.	०९	१५
"	सू.	६०	गु.	०९	३६
"	चं.	४५	बु.	१०	४४
१०	चं.	३०	शु.	०१	५७
"	चं.	३०	श.	०८	१८
"	चं.	९०	मं.	०८	५२
"	चं.	१५०	रा.	०८	५५
"	मं.	१२०	रा.	०९	५६
"	शु.	४५	सू.	१२	१३
"	चं.	३०	बु.	१७	१७
११	चं.	६०	गु.	०७	०६
"	श.	१८०	रा.	०८	५१
"	चं.	४५	शु.	१०	११
"	चं.	०	सू.	१०	३२
"	चं.	४५	श.	१४	४०
"	चं.	१३५	रा.	१४	५३
१२	चं.	४५	गु.	१३	४७
"	चं.	६०	शु.	१८	४४
"	चं.	१२०	रा.	२१	०३
"	चं.	६०	श.	२१	१४
"	चं.	१२०	मं.	२३	१४
१३	चं.	०	बु.	०६	०२
"	सू.	१३५	रा.	१२	२५
"	सू.	४५	श.	१७	४५
"	चं.	३०	गु.	२०	३६
१४	शु.	१८०	रा.	०१	०७
"	चं.	३०	सू.	०४	४३
"	चं.	१३५	मं.	०६	३५
"	शु.	०	श.	१०	००
१५	चं.	९०	रा.	०९	३०
"	चं.	९०	श.	१०	३०
"	चं.	९०	शु.	१२	१२
"	चं.	४५	सू.	१३	४९
"	चं.	१५०	मं.	१३	५०
"	चं.	३०	बु.	१७	२२
१६	चं.	०	गु.	१०	०३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१६	चं.	४५	बु.	२२	०९
"	चं.	६०	सू.	२२	३६
"	शु.	६०	मं.	२३	०८
१७	बु.	६०	शु.	०८	४८
"	बु.	१२०	मं.	१४	०७
"	चं.	६०	रा.	२१	०३
"	चं.	१२०	श.	२२	४८
१८	चं.	६०	बु.	०२	०९
"	चं.	१८०	मं.	०३	१४
"	चं.	१२०	शु.	०४	३८
"	चं.	३०	गु.	२१	५५
१९	चं.	४५	रा.	०२	०२
"	चं.	१३५	श.	०४	०५
"	चं.	१३५	शु.	११	४६
"	चं.	९०	सू.	१४	०४
"	बु.	६०	श.	१९	२५
२०	चं.	४५	गु.	०२	४३
"	चं.	३०	रा.	०६	१२
"	चं.	९०	बु.	०७	२७
"	चं.	१५०	श.	०८	२९
"	चं.	१५०	मं.	१३	३८
"	चं.	१५०	शु.	१७	४९
२१	चं.	६०	गु.	०६	३२
"	चं.	१३५	मं.	१७	१६
२२	चं.	१२०	सू.	०१	०७
"	बु.	४५	गु.	०५	०३
"	चं.	१२०	बु.	०८	५४
"	चं.	०	रा.	११	३३
"	चं.	१८०	श.	१४	१८
"	चं.	१२०	मं.	१९	५०
२३	चं.	१८०	शु.	०२	२१
"	चं.	१३५	सू.	०४	४७
"	चं.	१३५	बु.	०८	२१
"	चं.	९०	गु.	११	०४
२४	बु.	०	सू.	०५	२६
"	चं.	१५०	बु.	०७	०५

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२४	चं.	१५०	सू.	०७	२२
"	चं.	३०	रा.	१३	१८
"	चं.	१५०	श.	१६	२१
"	बु.	४५	शु.	२०	२९
"	चं.	९०	मं.	२२	०९
२५	चं.	१५०	शु.	०६	४३
"	चं.	१२०	गु.	१२	१५
"	चं.	४५	रा.	१३	१०
"	चं.	१३५	श.	१६	२२
२६	चं.	१८०	बु.	०३	१७
"	चं.	१३५	शु.	०७	५८
"	चं.	१८०	सू.	१०	२३
"	चं.	१३५	गु.	१२	०७
"	चं.	६०	रा.	१२	४१
"	चं.	१२०	श.	१६	०३
"	चं.	६०	मं.	२२	१३
२७	चं.	१२०	शु.	०९	०३
"	चं.	१५०	गु.	११	५४
"	सू.	४५	गु.	१९	०३
"	सू.	१२०	रा.	२०	२१
"	चं.	४५	मं.	२२	०६
"	चं.	१५०	बु.	२३	१६
२८	चं.	९०	रा.	११	४४
"	चं.	१५०	सू.	१२	५०
"	चं.	९०	श.	१५	३२
"	चं.	१३५	बु.	२१	४८
"	चं.	३०	मं.	२२	१८
२९	चं.	९०	शु.	१२	११
"	चं.	१८०	गु.	१२	२०
"	शु.	९०	गु.	१४	४०
"	चं.	१३५	सू.	१४	४५
"	चं.	१२०	बु.	२१	०४
३०	सू.	६०	श.	०९	१३
"	चं.	१२०	रा.	१२	३४
"	चं.	६०	श.	१७	०३
"	चं.	१२०	सू.	१७	३५

२०३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
३१	चं.	०	मं.	००	४२
"	चं.	१३५	रा.	१४	१२
"	चं.	१५०	गु.	१५	४०
"	चं.	६०	शु.	१८	५०
"	चं.	४५	श.	१९	०६
"	चं.	९०	बु.	२२	४४

नवम्बर- २००७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	१५०	रा.	१६	५०
"	चं.	१३५	गु.	१८	५२
"	चं.	३०	श.	२२	११
२	चं.	४५	शु.	००	०१
"	चं.	९०	सू.	०२	४९
"	चं.	३०	मं.	०६	५३
"	बु.	३०	शु.	१९	५९
"	चं.	१२०	गु.	२३	०६
३	चं.	६०	बु.	०५	४५
"	चं.	३०	शु.	०६	३
"	चं.	४५	मं.	११	२९
४	चं.	१८०	रा.	००	५५
"	चं.	०	श.	०७	१७
"	चं.	४५	बु.	११	२३
"	सू.	१२०	मं.	१६	५०
"	चं.	६०	मं.	१६	५५
"	चं.	६०	सू.	१६	५५
५	चं.	९०	गु.	१०	१५
"	चं.	३०	बु.	१८	१७
"	चं.	०	शु.	२२	३५
६	चं.	४५	सू.	०१	१९
"	चं.	१५०	रा.	११	५५
"	चं.	३०	श.	१९	११
७	चं.	९०	मं.	०५	२२
"	चं.	३०	सू.	१०	१४
"	चं.	१३५	रा.	१८	००
"	चं.	६०	गु.	२३	३१
८	चं.	४५	श.	०१	३८
"	चं.	०	बु.	१०	५५

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
८	चं.	३०	शु.	१६	५७
९	चं.	१२०	रा.	००	१२
"	चं.	४५	गु.	०६	२६
"	चं.	६०	श.	०८	१२
"	चं.	१२०	मं.	१८	३४
१०	चं.	४५	शु.	०२	२०
"	चं.	०	सू.	०४	३४
"	चं.	३०	गु.	१३	१९
११	चं.	१३५	मं.	०१	०४
"	चं.	३०	बु.	०५	३८
"	चं.	६०	शु.	११	३९
"	चं.	९०	रा.	१२	३५
"	चं.	९०	श.	२१	०८
"	शु.	१५०	रा.	२१	३६
१२	चं.	१५०	मं.	०७	२६
"	चं.	४५	बु.	१५	१४
"	चं.	३०	सू.	२२	२१
१३	चं.	०	गु.	०२	४०
१४	चं.	६०	रा.	००	१४
"	चं.	६०	बु.	००	४३
"	चं.	९०	शु.	०५	२९
"	चं.	४५	सू.	०६	५७
"	चं.	१२०	श.	०९	१२
"	चं.	१८०	मं.	१९	०३
१५	चं.	४५	रा.	०५	३३
"	सू.	३०	गु.	१२	४३
"	चं.	१३५	श.	१४	३७
"	चं.	३०	गु.	१४	४२
"	चं.	६०	सू.	१४	५०
१६	शु.	३०	श.	००	५९
"	चं.	३०	रा.	१०	१५
"	चं.	९०	बु.	१८	१४
"	चं.	१५०	श.	१९	२४
"	चं.	४५	गु.	१९	५०
"	चं.	१२०	शु.	२१	०३
१७	चं.	१५०	मं.	०४	३१

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१७	बु.	६०	श.	०४	५३
"	बु.	४५	गु.	१०	२९
१८	चं.	६०	गु.	००	१०
"	चं.	१३५	शु.	०३	२७
"	चं.	९०	सू.	०४	०४
"	चं.	१३५	मं.	०८	०४
"	चं.	०	रा.	१७	२५
१९	चं.	१८०	श.	०२	३१
"	चं.	१२०	बु.	०७	५२
"	चं.	१५०	शु.	०८	४१
"	चं.	१२०	मं.	१०	४०
२०	चं.	९०	गु.	०६	००
"	सू.	१३५	मं.	०६	०५
"	शु.	९०	मं.	०७	५०
"	बु.	१२०	मं.	०८	२४
"	बु.	३०	शु.	१०	०५
"	चं.	१३५	बु.	१२	५०
"	चं.	१२०	सू.	१२	५१
"	चं.	३०	रा.	२१	०४
२१	शु.	४५	सू.	००	४४
"	चं.	१५०	श.	०५	५६
"	चं.	९०	मं.	१३	०८
"	चं.	१३५	सू.	१५	३६
"	चं.	१८०	शु.	१५	४३
"	चं.	१५०	बु.	१६	३८
"	चं.	४५	रा.	२१	४०
२२	चं.	१३५	श.	०६	२६
"	चं.	१२०	गु.	०८	१४
"	चं.	१५०	सू.	१७	३०
"	चं.	६०	रा.	२१	३७
२३	चं.	१२०	श.	०६	२२
"	चं.	१३५	गु.	०८	२५
"	चं.	६०	मं.	१२	४८
"	चं.	१५०	शु.	१९	२४
"	चं.	१८०	बु.	२१	५०
२४	चं.	१५०	गु.	०८	१७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२४	चं.	४५	मं.	१२	०७
"	शु.	१३५	रा.	१८	५६
"	चं.	१८०	सू.	२०	०१
"	चं.	९०	रा.	२०	३९
"	चं.	१३५	शु.	२०	४७
२५	सू.	९०	रा.	०५	००
"	चं.	९०	श.	०५	३५
"	चं.	३०	मं.	११	२९
"	चं.	१२०	शु.	२२	२२
२६	चं.	१५०	बु.	०२	२६
"	चं.	१८०	गु.	०८	२२
"	चं.	१२०	रा.	२०	१८
"	चं.	१५०	सू.	२३	१७
२७	चं.	१३५	बु.	०५	३६
"	चं.	६०	श.	०५	५२
"	चं.	०	मं.	११	२४
"	चं.	१३५	रा.	२१	०२
२८	चं.	१३५	सू.	०२	०६
"	चं.	९०	शु.	०३	४३
"	चं.	४५	श.	०७	०५
"	चं.	१२०	बु.	०९	५४
"	चं.	१५०	गु.	१०	५१
"	बु.	३०	गु.	१९	४२
"	चं.	१५०	रा.	२२	४०
२९	चं.	१२०	सू.	०६	०८
"	बु.	१३५	मं.	०६	२३
"	चं.	३०	श.	०९	१८
"	चं.	१३५	गु.	१३	३५
"	चं.	३०	मं.	१४	२५
"	शु.	४५	श.	२२	१८
३०	चं.	६०	शु.	१३	५७
"	चं.	४५	मं.	१७	२५
"	चं.	१२०	गु.	१७	२८
"	चं.	९०	बु.	२२	५६

दिसम्बर- २००७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	सू.	९०	श.	०१	५४
१	चं.	१८०	रा.	०५	००
"	चं.	०	श.	१६	५८
"	चं.	९०	सू.	१८	१५
"	चं.	४५	शु.	२१	११
"	चं.	६०	मं.	२१	२३
२	शु.	६०	गु.	१३	४५
"	बु.	९०	रा.	२२	५०
३	सू.	१५०	मं.	०१	५८
"	चं.	९०	गु.	०४	२२
"	चं.	३०	शु.	०५	३७
"	चं.	१५०	रा.	१५	१६
"	चं.	६०	बु.	१७	४७
४	मं.	३०	श.	०४	१४
"	चं.	९०	मं.	०७	२९
"	चं.	१३५	रा.	२१	१७
५	चं.	४५	बु.	०४	३४
"	चं.	४५	श.	१०	३६
"	चं.	६०	गु.	१७	५३
"	चं.	४५	सू.	२०	०७
६	चं.	०	शु.	००	३५
"	चं.	१२०	रा.	०३	३२
"	चं.	३०	बु.	१५	३८
"	चं	६०	श.	१७	०५
"	चं.	१२०	मं.	१८	५०
७	चं.	४५	गु.	००	५४
"	बु.	९०	श.	०२	४७
"	शु.	१२०	रा.	०५	१२
"	चं.	३०	सू.	०५	२३
"	बु.	१५०	मं.	१२	३०
८	चं.	१३५	मं.	००	२५
"	चं.	३०	गु.	०७	४७
"	चं.	९०	रा.	१५	५२
"	चं.	३०	शु.	१९	५०
९	चं.	९०	श.	०५	४०
"	चं.	१५०	मं.	०५	४६
"	मं.	६०	श.	०९	३०

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
९	चं.	०	बु.	१३	११
"	चं.	०	सू.	२३	११
१०	चं.	४५	शु.	०४	४८
"	चं.	०	गु.	२०	४०
११	चं.	६०	रा.	०३	१३
"	चं.	६०	शु.	१३	३९
"	चं.	१८०	मं.	१५	२९
"	चं.	१२०	श.	१७	०१
१२	शु.	१२०	मं.	०४	४७
"	चं.	४५	रा.	०८	२१
"	चं.	३०	बु.	०८	५१
"	चं.	३०	सू.	१५	१७
"	चं.	१३५	श.	२२	०७
१३	शु.	६०	श.	०१	०४
"	चं.	३०	गु.	०८	०२
"	चं.	३०	रा.	१३	०२
"	चं.	४५	बु.	१७	४७
"	चं.	४५	सू.	२२	३२
"	चं.	१५०	मं.	२३	३९
१४	चं.	१५०	श.	०२	४६
"	चं.	९०	शु.	०५	२३
"	चं.	४५	गु.	१३	००
१५	चं.	६०	बु.	०१	५१
"	चं.	१३५	मं.	०३	०१
"	चं.	६०	सू.	०५	०७
"	चं.	६०	गु.	१७	२२
"	चं.	०	रा.	२०	५४
१६	चं.	१२०	मं.	०५	४९
"	चं.	१८०	श.	१०	२१
"	चं.	१२०	शु.	१८	१४
१७	चं.	९०	बु.	१५	३४
"	चं.	९०	सू.	१५	४९
"	बु.	०	सू.	२०	५८
"	चं.	१३५	शु.	२३	१८
"	चं.	९०	गु.	२३	५८
१८	चं.	३०	रा.	०२	१५

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१८	शु.	४५	गु.	०८	३८
"	चं.	९०	मं.	०९	२७
"	चं.	१५०	श.	१५	१०
१९	चं.	१५०	शु.	०३	२५
"	चं.	४५	रा.	०३	५०
"	चं.	१३५	श.	१६	२९
"	चं.	१२०	सू.	२२	५४
२०	चं.	१२०	बु.	०१	०४
"	चं.	१२०	गु.	०३	३४
"	चं.	६०	रा.	०४	४५
"	चं.	६०	मं.	१०	२७
"	चं.	१२०	श.	१७	१२
२१	चं.	१३५	सू.	०१	१७
"	बु.	०	गु.	०३	२५
"	चं.	१३५	गु.	०४	२५
"	चं.	१३५	बु.	०४	३१
"	चं.	१८०	शु.	०९	१२
"	बु.	६०	रा.	१०	०३
"	चं.	४५	मं.	१०	१०
"	शु.	१३५	मं.	१८	३०
२२	चं.	१५०	सू.	०३	११
"	चं.	१५०	गु.	०४	५४
"	चं.	९०	रा.	०५	०९
"	चं.	१५०	बु.	०७	२९
"	चं.	३०	मं.	०९	३७
"	चं.	९०	श.	१७	२६
"	गु.	६०	रा.	१८	००
२३	बु.	१८०	मं.	००	००
"	सू.	६०	रा.	०६	५२
"	सू.	०	गु.	११	२७
"	चं.	१५०	शु.	१३	२६
२४	चं.	१२०	रा.	०५	०४
"	चं.	१८०	गु.	०५	४४
"	चं.	१८०	सू.	०६	४७
"	चं.	०	मं.	०८	३०
"	चं.	१८०	बु.	१३	२४

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२४	चं.	१३५	शु.	१५	४७
"	चं.	६०	श.	१७	४२
२५	सू.	१८०	मं.	०१	१८
"	चं.	१३५	रा.	०५	२८
"	चं.	४५	श.	१८	२९
"	चं.	१२०	शु.	१८	४८
२६	बु.	१२०	श.	०४	४१
"	चं.	१५०	रा.	०६	३१
"	चं.	१५०	गु.	०८	१३
"	चं.	३०	मं.	०८	५७
"	चं.	१५०	सू.	१२	२४
"	चं.	३०	श.	२०	०१
"	चं.	१५०	बु.	२२	०२
२७	मं.	१८०	गु.	०१	२३
"	चं.	४५	मं.	१०	१८
"	चं.	१३५	गु.	१०	४३
"	चं.	१३५	सू.	१६	४४
"	बु.	४५	शु.	२२	०६
२८	चं.	९०	शु.	०४	०४
"	चं.	१३५	बु.	०४	१६
"	चं.	१८०	रा.	११	१९
"	चं.	६०	मं.	१२	३४
"	चं.	१२०	गु.	१४	१५
"	चं.	१२०	सू.	२२	२२
२९	चं.	०	श.	०१	५७
"	चं.	१२०	बु.	१२	०२
३०	बु.	४५	रा.	११	२९
"	चं.	६०	शु.	१८	३९
"	सू.	१२०	श.	१८	५४
"	चं.	९०	मं.	१९	५५
"	चं.	१५०	रा.	२०	०१
३१	चं.	९०	गु.	००	३१
"	शु.	१५०	मं.	०४	४०
"	चं.	९०	रा.	०७	१८
"	चं.	३०	श.	११	४७
"	चं.	९०	सू.	१३	२२

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
जनवरी- २००८					
१	चं.	९०	बु.	७	४१
"	चं.	४५	श.	१७	४३
२	चं.	१२०	मं.	६	०३
"	चं.	१२०	श.	७	३६
"	चं.	३०	शु.	१३	२१
"	चं.	६०	गु.	१३	४५
"	बु.	३०	गु.	१८	१३
३	चं.	६०	श.	००	०१
"	चं.	६०	सू.	७	२७
"	चं.	१३५	मं.	११	३४
"	चं.	४५	गु.	२०	४५
४	चं.	६०	बु.	६	००
"	बु.	१३५	श.	८	१५
"	चं.	४५	सू.	१६	३७
"	चं.	१५०	मं.	१७	०२
"	चं.	९०	श.	२०	०१
५	चं.	३०	गु.	०३	०४
"	चं.	०	शु.	८	४९
"	चं.	९०	श.	१२	२३
"	चं.	४५	बु.	१६	५२
६	चं.	३०	सू.	०१	२४
"	सू.	४५	रा.	६	४१
"	शु.	९०	श.	१९	०९
७	बु.	१५०	मं.	०३	०२
"	चं.	१८०	मं.	०२	०५
"	चं.	३०	बु.	०३	०५
"	चं.	६०	रा.	७	१५
"	चं.	०	गु.	१५	५६
"	चं.	१२०	श.	२३	१२
८	चं.	३०	शु.	२	२०
"	बु.	३०	रा.	९	४३
"	चं.	४५	रा.	१२	०८
"	चं.	०	सू.	१७	०७
९	चं.	१३५	श.	३	५१
"	चं.	४५	शु.	१०	०३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
९	चं.	१५०	मं.	११	२५
"	चं.	३०	रा.	१६	३१
"	चं.	०	शु.	२१	०८
१०	चं.	३०	गु.	२	१०
"	चं.	१५०	श.	७	५९
"	चं.	१३५	मं.	१४	५४
"	चं.	६०	शु.	१७	०५
११	चं.	१३५	सू.	६	१३
"	चं.	४५	गु.	६	३०
"	चं.	१२०	मं.	१७	५९
"	शु.	३०	गु.	१९	१९
"	चं.	०	रा.	२३	२९
१२	चं.	६०	गु.	१०	१९
"	चं.	४५	सू.	११	५१
"	चं.	३०	बु.	१२	०५
"	चं.	१८०	श.	१४	३९
१३	चं.	९०	श.	५	२९
"	बु.	१५०	श.	१०	४७
"	चं.	६०	सू.	१६	५४
"	चं.	४५	बु.	१८	२६
"	चं.	९०	मं.	२२	५४
१४	सू.	१५०	श.	१	०४
"	चं.	३०	रा.	५	१७
"	चं.	९०	गु.	१६	३१
"	चं.	१५०	श.	१९	४८
१५	चं.	६०	बु.	००	०४
"	बु.	१३५	मं.	०५	३६
"	चं.	४५	रा.	०७	२९
"	चं.	१२०	शु.	१४	५९
"	चं.	१३५	श.	२१	३७
१६	चं.	९०	सू.	१	१६
"	चं.	६०	मं.	२	११
"	चं.	६०	रा.	८	५६
"	सू.	१५०	मं.	११	५९
"	चं.	१३५	शु.	१८	५९
"	चं.	१२०	गु.	२०	२९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१६	चं.	१२०	श.	२३	०१
१७	चं.	४५	मं.	३	१५
"	चं.	९०	बु.	९	१०
"	चं.	१३५	गु.	२२	२२
"	चं.	१५०	शु.	२२	५९
१८	चं.	३०	मं.	४	००
"	चं.	१२०	सू.	७	३५
"	चं.	९०	रा.	११	०३
"	चं.	१५०	गु.	२३	३८
१९	चं.	९०	श.	००	५०
"	चं.	१५०	सू.	१०	१७
"	चं.	१२०	बु.	१६	०५
२०	चं.	१८०	शु.	४	४३
"	चं.	०	मं.	५	०५
"	सू.	३०	रा.	६	३२
"	शु.	१८०	मं.	८	४०
"	चं.	१२०	रा.	१२	२८
"	चं.	१५०	सू.	१२	२८
"	चं.	१३५	बु.	१९	२०
२१	चं.	१८०	गु.	२	०१
"	चं.	६०	श.	२	१६
"	चं.	१३५	रा.	१३	१८
"	गु.	१२०	श.	१४	४४
"	चं.	१५०	बु.	२२	२०
२२	चं.	४५	श.	३	१६
"	चं.	३०	मं.	६	३९
"	चं.	१५०	शु.	११	२९
"	चं.	१५०	रा.	१४	३०
"	चं.	१८०	सू.	१९	०५
२३	चं.	३०	श.	४	४४
"	चं.	१५०	गु.	५	३०
"	चं.	४५	मं.	८	०६
"	चं.	१३५	शु.	१५	४५
"	शु.	६०	रा.	२०	५२
२४	चं.	१८०	बु.	५	४३
"	चं.	१३५	गु.	८	१०
"	चं.	६०	मं.	१०	१४

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२४	चं.	१८०	रा.	१८	४१
"	चं.	१२०	शु.	२०	५९
२५	चं.	१५०	सू.	४	०७
"	चं.	०	शु.	९	४३
"	चं.	१२०	गु.	११	४१
२६	चं.	१३५	सू.	१०	१२
"	चं.	१५०	बु.	१५	२३
"	चं.	९०	मं.	१७	०२
२७	चं.	१५०	रा.	२	०७
"	चं.	९०	शु.	१०	५५
"	चं.	१२०	सू.	१७	२६
"	चं.	३०	श.	१८	०४
"	चं.	१३५	बु.	२०	५९
"	चं.	९०	गु.	२१	२७
२८	सू.	१५०	श.	००	५०
"	चं.	१३५	रा.	७	०६
"	चं.	४५	श.	२३	२६
२९	चं.	१२०	बु.	२	५०
"	चं.	१२०	मं.	३	१७
"	चं.	१२०	रा.	१२	४५
"	सू.	१३५	मं.	२०	४६
३०	चं.	६०	सू.	५	०२
"	चं.	६०	श.	५	२०
"	सू.	३०	गु.	६	२२
"	सू.	१२०	श.	७	४९
"	चं.	१३५	मं.	९	२१
"	चं.	६०	गु.	१०	१५
"	चं.	९०	सू.	१०	३२
३१	चं.	९०	बु.	१४	०४
"	चं.	४५	श.	१४	५१
"	चं.	१५०	मं.	१५	४०
"	चं.	४५	गु.	१७	०८

फरवरी- २००८

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१	चं.	९०	रा.	१	०२
"	शु.	०	गु.	१७	०३
"	चं.	९०	श.	१७	३३
"	चं.	३०	गु.	२३	५३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२	चं.	३०	शु.	०	३२
"	चं.	३०	सू.	४	४१
३	चं.	६०	रा.	१२	३५
"	चं.	४५	सू.	१६	०६
४	चं.	४५	बु.	२	१८
"	चं.	१२०	श.	४	२९
"	चं.	०	गु.	११	५६
"	चं.	४५	रा.	१३	२५
"	चं	४५	रा.	१७	३१
"	चं.	०	शु.	१७	५९
"	चं.	३०	सू.	२०	४२
५	चं.	३०	बु.	४	४८
"	चं.	१३५	श.	९	०१
"	चं.	१५०	मं.	१३	५५
"	चं.	३०	रा.	२१	५७
६	चं.	१५०	श.	१२	५१
"	चं.	१३५	मं.	१७	५६
"	चं.	३०	गु.	२१	१०
"	सू.	०	बु.	२३	१०
७	चं.	३०	शु.	७	४७
"	चं.	०	बु.	७	४८
"	चं.	०	सू.	९	१५
"	चं.	१२०	मं.	२१	२०
८	चं.	४५	गु.	००	४४
"	चं.	०	रा.	४	१८
"	चं.	४५	शु.	१३	२५
"	चं.	१८०	श.	१८	३८
९	चं.	६०	गु.	३	४३
"	चं.	३०	बु.	८	५१
"	चं.	६०	शु.	१८	२२
"	चं.	३०	सू.	१८	४५
१०	चं.	९०	मं.	२	३५
"	चं.	३०	रा.	८	४३
"	चं.	४५	बु.	८	५९
"	शु.	३०	सू.	१६	२९
"	शु.	१३५	श.	१९	५९
"	चं.	१५०	श.	२२	३३

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१०	चं.	४५	सू.	२२	४३
११	चं.	९०	गु.	८	२६
"	चं.	६०	बु.	८	५८
"	चं.	४५	रा.	१०	२३
"	चं.	३०	गु.	१४	१६
१२	चं.	१३५	श.	०	०३
"	चं.	६०	सू.	२	२०
"	चं.	९०	शु.	२	५५
"	चं.	६०	मं.	६	३०
"	चं.	६०	रा.	११	५१
१३	चं.	१२०	श.	१	२३
"	चं.	४५	मं.	८	२२
"	चं.	९०	बु.	८	५८
"	चं.	१२०	गु.	१२	०९
"	बु.	१३५	मं.	२१	०७
१४	शु.	१५०	मं.	०	५९
"	चं.	९०	सू.	९	०४
"	चं.	३०	मं.	९	५१
"	चं.	१२०	शु.	१०	३५
"	चं.	१३५	गु.	१३	५२
"	चं.	९०	रा.	१४	२६
"	सू.	१२०	मं.	२२	०९
१५	चं.	९०	श.	३	५०
"	चं.	१२०	बु.	९	३२
"	चं.	१३५	शु.	१४	२२
"	चं.	१५०	गु.	१५	३६
"	गु.	४५	रा.	२१	४९
१६	शु.	३०	रा.	५	१२
"	चं.	१३५	बु.	१०	१३
"	चं.	०	मं.	१३	१८
"	चं.	१२०	सू.	१५	४७
"	चं.	१२०	रा.	१७	०५
"	चं.	१५०	शु.	१८	१७
१७	चं.	६०	श.	६	३१
"	सू.	०	रा.	९	०५
"	चं.	१५०	बु.	११	१७
"	चं.	१३५	रा.	१८	३९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१७	चं.	१३५	सू.	१९	२६
"	चं.	१८०	गु.	१९	२७
"	सू.	४५	गु.	१९	५१
१८	चं.	४५	श.	८	०९
"	चं.	३०	मं.	१७	३२
"	चं.	१५०	रा.	२०	२८
"	चं.	१५०	सू.	२३	२५
१९	चं.	१८०	शु.	२	५८
"	चं.	३०	श.	१०	०७
"	चं.	१८०	बु.	१४	५६
"	चं.	४५	मं.	२०	१२
२०	चं.	१५०	गु.	००	२८
"	चं.	६०	मं.	२३	२३
२१	चं.	१८०	रा.	१	२२
"	चं.	१३५	गु.	३	४१
"	चं.	१८०	सू.	९	०१
"	चं.	१५०	शु.	१३	५०
"	चं.	०	श.	१५	२६
"	चं.	१५०	बु.	२१	२५
२२	शु.	१५०	श.	५	५३
"	चं.	१२०	गु.	७	३१
"	चं.	१३५	शु.	२२	२८
२३	चं.	१३५	बु.	४	०२
"	चं.	९०	मं.	७	४५
"	चं.	१५०	रा.	८	३३
"	चं.	१५०	सू.	२१	४०
"	चं.	३०	श.	२३	१२
२४	चं.	१२०	शु.	४	०१
"	चं.	१२०	बु.	७	३९
"	चं.	१३५	रा.	१३	१०
"	सू.	१८०	श.	१४	१८
"	चं.	९०	गु.	१७	१९
"	मं.	१२०	रा.	१८	१३
२५	चं.	४५	श.	४	०५
"	चं.	१३५	सू.	५	२०
"	चं.	१२०	रा.	१८	२६
"	चं.	१२०	मं.	१९	०४

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२६	चं.	६०	श.	९	३५
''	चं.	१२०	सू.	१३	४५
''	चं.	९०	शु.	२१	४७
''	चं.	९०	बु.	२१	५१
''	बु.	०	शु.	२३	२१
२७	चं.	१३५	मं.	१	४२
''	चं.	६०	गु.	५	४३
२८	चं.	९०	रा.	६	२१
''	चं.	१५०	मं.	८	४०
''	चं.	४५	गु.	१२	२८
''	शु.	१३५	मं.	२१	२६
''	चं.	९०	श.	२१	३६
२९	चं.	९०	सू.	७	४८
''	चं.	६०	बु.	१४	३४
''	चं.	६०	शु.	१७	१८
''	चं.	३०	गु.	१९	१०
मार्च- २००८					
१	बु.	१३५	मं.	१२	४३
''	शु.	३०	गु.	१४	०२
''	चं.	६०	श.	१८	२२
''	चं.	१८०	मं.	२२	२३
''	चं.	४५	बु.	२२	५५
२	चं.	४५	शु.	२	३८
''	चं.	१२०	श.	९	९
''	चं.	४५	रा.	२३	४२
३	चं.	६०	सू.	००	४२
''	चं.	३०	बु.	६	४३
''	चं.	०	गु.	७	१३
''	चं.	३०	शु.	११	७
''	चं.	१३५	श.	१४	४
''	बु.	३०	गु.	१४	१६
४	चं.	३०	रा.	४	१७
''	चं.	४५	सू.	७	४९
''	चं.	१५०	मं.	९	४६
''	चं.	१५०	श.	१८	१०
५	चं.	३०	सू.	१३	४९
''	चं.	१३५	मं.	१६	७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
५	चं.	३०	गु.	१६	०२
''	चं.	०	बु.	१९	३६
६	चं.	०	शु.	००	४०
''	चं.	०	रा.	१०	५३
''	चं.	१२०	मं.	१७	३४
''	चं.	४५	गु.	१९	७
''	चं.	१८०	श.	२३	५१
७	सू.	६०	गु.	००	३४
''	चं.	६०	गु.	२१	२४
''	चं.	०	सू.	२२	४५
८	चं.	३०	बु.	४	४५
''	चं.	३०	शु.	९	५७
''	चं.	३०	रा.	१४	२८
''	चं.	९०	मं.	२२	१६
९	चं.	१५०	श.	२	४५
''	चं.	४५	बु.	८	१८
''	चं.	४५	शु.	१३	२९
''	चं.	९०	रा.	१५	२९
''	चं.	९०	गु.	२३	२२
१०	चं.	१३५	श.	३	३४
''	चं.	३०	सू.	४	४९
''	चं.	६०	बु.	११	३१
''	चं.	०	रा.	११	४९
''	चं.	६०	रा.	१६	१४
''	चं.	६०	शु.	१६	४०
११	चं.	६०	मं.	००	१७
''	चं.	१२०	श.	४	१३
''	चं.	४५	सू.	७	२५
१२	चं.	१२०	गु.	२	२९
''	चं.	४५	मं.	२	४२
''	चं.	६०	सू.	१०	०४
''	बु.	०	रा.	१४	५८
''	चं.	९०	रा.	१७	४०
''	चं.	९०	बु.	१७	५७
''	चं.	९०	शु.	२२	५७
१३	चं.	१३५	गु.	३	४२
''	चं.	३०	मं.	४	१७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
१३	चं.	९०	श.	५	४३
१४	चं.	१५०	गु.	४	१२
''	चं.	९०	सू.	१६	१६
''	चं.	१२०	रा.	२०	०२
१५	चं.	९०	बु.	१	५४
''	मं.	६०	श.	२	५४
''	चं.	९०	मं.	६	३४
''	चं.	६०	श.	८	२२
''	चं.	०	मं.	८	३३
''	मं.	४५	गु.	१३	२२
''	चं.	१३५	रा.	२१	४९
१६	शु.	१८०	श.	१	४६
''	चं.	१३५	बु.	६	३८
''	चं.	१८०	गु.	९	२८
''	चं.	४५	श.	१०	२०
''	चं.	१३५	शु.	११	१४
''	शु.	१२०	मं.	१३	५१
''	शु.	३०	रा.	१९	००
१७	चं.	१५०	रा.	००	०३
''	चं.	१२०	सू.	००	२८
''	बु.	४५	गु.	११	१०
''	चं.	१५०	बु.	१२	२६
''	चं.	३०	श.	१२	४५
''	चं.	३०	मं.	१४	४६
''	बु.	१८०	श.	१५	१७
''	चं.	१५०	शु.	१६	३०
१८	चं.	१३५	सू.	५	२८
''	चं.	१५०	गु.	१५	३९
''	गु.	१३५	श.	१६	११
''	बु.	१२०	मं.	१७	७
''	चं.	४५	मं.	१८	४१
१९	चं.	१८०	रा.	५	५७
''	चं.	१५०	सू.	११	०४
''	चं.	०	श.	१९	०३
''	चं.	१३५	गु.	१९	२९
''	चं.	६०	मं.	२३	०८
२०	चं.	१८०	बु.	१	५९

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
२०	चं.	१८०	शु.	५	०१
''	चं.	१२०	गु.	२३	५०
२१	चं.	१५०	रा.	१३	४७
''	चं.	१८०	सू.	१२	००
२२	चं.	३०	श.	३	१८
''	चं.	९०	मं.	९	४५
''	चं.	१३५	रा.	१८	२८
''	चं.	१५०	बु.	१८	४५
''	चं.	१३५	शु.	२०	१४
२३	चं.	४५	श.	८	११
''	चं.	९०	गु.	१०	०४
''	चं.	१५०	श.	१३	३१
''	चं.	१२०	रा.	२३	३८
२४	चं.	१३५	बु.	४	२४
''	चं.	१३५	शु.	४	५३
''	चं.	६०	श.	१३	३३
''	चं.	१५०	सू.	१५	५०
''	बु.	०	शु.	१८	५९
''	चं.	६०	मं.	२२	३७
२५	चं.	६०	शु.	१४	०९
''	चं.	६०	बु.	१४	५०
''	चं.	६०	गु.	२२	१५
२६	चं.	१३५	सू.	००	३२
''	चं.	१३५	मं.	०५	४७
''	चं.	९०	रा.	११	१५
२७	चं.	९०	श.	००	२६
''	चं.	१३५	गु.	०४	५१
''	चं.	१२०	सू.	०९	३४
''	चं.	१५०	मं.	१२	१२
२८	बु.	६०	गु.	००	२६
''	चं.	९०	शु.	०९	४३
''	चं.	३०	गु.	११	२९
''	चं.	९०	बु.	१३	१०
''	चं.	६०	रा.	२३	३४
२९	शु.	६०	गु.	०४	२४
''	चं.	६०	श.	१३	३७
३०	चं.	९०	सू.	२	१७

ता.	ग्रह	योग	ग्रह	घं.	मि.
३०	चं.	१८०	मं.	३	४४
''	चं.	४५	रा.	५	२३
''	सू.	९०	मं.	१२	५०
''	चं.	१३५	श.	१९	०९
''	चं.	०	गु.	२३	४४
३१	चं.	६०	बु.	१०	२४
''	चं.	३०	रा.	१०	३३
''	बु.	३०	रा.	११	२९
''	मं.	१३५	रा.	२०	०९
''	चं.	१५०	श.	२३	५८
अप्रैल- २००८					
१	चं.	४५	शु.	११	५०
''	चं.	१५०	मं.	१५	३९
''	चं.	६०	सू.	१७	५८
''	चं.	४५	बु.	१९	२२
२	चं.	३०	गु.	८	५२
''	चं.	३०	शु.	१८	१४
''	चं.	०	रा.	१८	१६
''	शु.	३०	रा.	१८	३०
''	चं.	१३५	मं.	२०	०३
''	चं.	४५	सू.	२३	३०
३	चं.	३०	बु.	०२	५४
''	चं.	१८०	श.	६	४६
''	चं.	४५	गु.	११	५५
''	चं.	१२०	मं.	२३	२२
४	चं.	३०	सू.	३	४९
''	बु.	१५०	श.	६	५१
''	चं.	६०	गु.	१३	५९
''	चं.	३०	रा.	२२	०९
५	चं.	०	शु.	०३	१३
''	चं.	१५०	श.	९	५२
''	चं.	०	बु.	१३	५६
''	चं.	४५	रा.	२२	५५
६	चं.	९०	शु.	०३	१६
''	चं.	०	सू.	०९	२६
''	चं.	१३५	श.	१०	२२
''	चं.	९०	गु.	१५	५२
''	सू.	१३५	श.	२२	५२

— मार्च २००७ के लिए पृष्ठ २४ देखें

मार्च २००७ के लिए पृष्ठ २४ देखें

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अप्रैल २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	उफा	२	१६	०९	००	१५	४५	२२	३०
२।३	हस्त	५	१५	१२	०१	१८	४७	०१	३३
३।४	चित्रा	८	१९	१५	०५	२१	५१	०४	३७
४।५	स्वाती	११	२२	१८	०७	००	५२	०७	३६
५।६	विशाखा	१४	१८	२१	०१	०३	४३	१०	२४
६।७	अनुराधा	१७	०३	२३	४२	०६	१९	१२	५५
७।८	ज्येष्ठा	१९	२९	०२	०२	०८	३३	१५	०२
८।९	मूल	२१	२९	०३	५५	१०	१८	१६	४०
९।१०	पूषा	२२	५८	०५	१५	११	२९	१७	४१
१०।११	उषा	२३	४९	०५	५६	१२	००	१८	०१
११।१२	श्रवण	२३	५९	०५	५५	११	४९	१७	३९
१२।१३	धनिष्ठा	२३	२६	०५	१२	१०	५५	१६	३५
१३।१४	शतभिषा	२२	१२	०३	४८	०९	२१	१४	५१
१४।१५	पूभा	२०	२०	०१	४७	०७	१२	१२	३५
१५।१६	उभा	१७	५६	२३	१७	०४	३६	०९	५४
१६।१७	रेवती	१५	१०	२०	२७	०१	४२	०६	५७
१७।१८	अश्वि	१२	११	१७	२६	२२	४०	०३	५५
१८।१९	भरणी	९	१०	१४	२६	१९	४२	०१	००
१९	कृतिका	६	१८	११	३८	१६	५९	२२	२२
२०	रोहिणी	३	४६	०९	१३	१४	४२	२०	१३
२१	मृगशिर	१	४५	०७	२२	१३	००	१८	४१
२२	आर्द्रा	००	२५	०६	१२	१२	०२	१७	५५
२२।२३	पुनर्वसु	२३	५१	०५	५०	११	५३	१७	५८
२४	पुष्य	००	०६	०६	१८	१२	३३	१८	५१
२५	आश्लेषा	१	११	०७	३५	१४	०१	२०	२९
२६	मघा	३	००	०९	३४	१६	०९	२२	४६
२७।२८	पूफा	५	२४	१२	०५	१८	४७	०१	३०
२८।२९	उफा	८	१४	१५	००	२१	४५	०४	३१
२९।३०	हस्त	११	१८	१८	०५	००	५२	०७	३९
३०।१म.	चित्रा	१४	२५	२१	११	०३	५७	१०	४३

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मई २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	स्वाती	१७	२७	००	१२	०६	५५	१३	३८
२।३	विशाखा	२०	१९	०३	००	०९	४०	१६	१८
३।४	अनुराधा	२२	५६	०५	३३	१२	०८	१८	४२
५	ज्येष्ठा	१	१४	०७	४७	१४	१७	२०	४६
६	मूल	३	१३	०९	३९	१६	०४	२२	२७
७	पूषा	४	४७	११	०८	१७	२६	२३	४२
८।९	उषा	५	५६	१२	०८	१८	१९	००	२७
९।१०	श्रवण	६	३३	१२	३८	१८	४०	००	४१
१०।११	धनिष्ठा	६	३८	१२	३४	१८	२७	००	१९
११	शतभिषा	६	०७	११	५४	१७	३९	२३	२१
१२	पूभा	५	०१	१०	३९	१६	१५	२१	४९
१३	उभा	३	२०	०८	५१	१४	२०	१९	४६
१४	रेवती	१	११	०६	३६	११	५८	१७	२०
१४।१५	अश्वि	२२	४०	०४	००	०९	१९	१४	३७
१५।१६	भरणी	१९	५५	०१	१३	०६	३१	११	४८
१६।१७	कृतिका	१७	०६	२२	२५	०३	४४	०९	०४
१७।१८	रोहिणी	१४	२५	१९	४८	०१	११	०६	३७
१८।१९	मृगशिर	१२	०३	१७	३२	२३	०३	०४	३६
१९।२०	आर्द्रा	१०	११	१५	४९	२१	२०	०३	१३
२०।२१	पुनर्वसु	८	५९	१४	४८	२०	४०	०२	३५
२१।२२	पुष्य	८	३३	१४	३५	२०	४०	०२	४८
२२।२३	आश्लेषा	८	५९	१५	१४	२१	३१	०३	५१
२३।२४	मघा	१०	१४	१६	४१	२३	१०	०५	४२
२४।२५	पूफा	१२	१५	१८	५१	०१	३०	०८	०९
२५।२६	उफा	१४	५०	२१	३४	०४	१८	११	०३
२६।२७	हस्त	१७	४८	००	३५	०७	२२	१४	०८
२७।२८	चित्रा	२०	५५	०३	४२	१०	२८	१७	१३
२८।२९	स्वाती	२३	५७	०६	४२	१३	२५	२०	०७
३०	विशाखा	२	४७	०९	२७	१६	०५	२२	४२
३१।१जू.	अनुराधा	५	१७	११	५१	१८	२४	००	५५

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जून २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	ज्येष्ठा	७	२४	१३	५३	२०	१९	२	४५
२।३	मूल	९	०८	१५	३१	२१	५२	४	११
३।४	पूषा	१०	२८	१६	४५	२३	००	५	१४
४।५	उषा	११	२६	१७	३७	२३	४७	५	५५
५।६	श्रवण	१२	०१	१८	०७	०	१०	६	१३
६।७	धनिष्ठा	१२	१३	१८	१३	०	१०	६	०७
७।८	शतभिषा	१२	०१	१७	५४	२३	४६	५	३५
८।९	पूभा	११	२३	१७	१०	२२	५५	४	३९
९।१०	उभा	१०	२०	१६	०१	२१	३९	३	१७
१०।११	रेवती	८	५२	१४	२७	२०	००	१	३२
११	अश्वि	७	०२	१२	३३	१८	०१	२३	२९
१२	भरणी	४	५६	१०	२३	१५	४९	२१	१४
१३	कृतिका	२	३९	८	०५	१३	३०	१८	५६
१४	रोहिणी	०	२१	५	४८	११	१४	१६	४२
१४।१५	मृगशिर	२२	१०	३	४१	९	१२	१४	४५
१५।१६	आर्द्रा	२०	१८	१	५५	७	३३	१३	१३
१६।१७	पुनर्वसु	१८	५४	०	३९	६	२६	१२	१५
१७।१८	पुष्य	१८	०७	०	०३	६	००	१२	०१
१८।१९	आश्लेषा	१८	०४	०	११	६	२०	१२	३३
१९।२०	मघा	१८	४८	१	०७	७	२८	१३	५२
२०।२१	पूफा	२०	१९	२	४८	९	२०	१५	५४
२१।२२	उफा	२२	३०	५	०९	११	४८	१८	३०
२३	हस्त	१	१२	७	५६	१४	४१	२१	२६
२४।२५	चित्रा	४	११	१०	५७	१७	४३	०	२८
२५।२६	स्वाती	७	१३	१३	५८	२०	४१	३	२३
२६।२७	विशाखा	१०	०४	१६	४४	२३	२३	५	५९
२७।२८	अनुराधा	१२	३४	१९	०८	१	४०	८	१०
२८।२९	ज्येष्ठा	१४	३७	२१	०४	३	२८	९	५०
२९।३०	मूल	१६	१०	२२	३०	४	४६	११	०१
३०।१जु.	पूषा	१७	१४	२३	२६	५	३६	११	४४

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जुलाई २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	उषा	१७	५१	२३	५६	६	००	१२	०३
२।३	श्रवण	१८	०३	००	०३	६	०२	११	५९
३।४	धनिष्ठा	१७	५५	२३	५०	५	४४	११	३७
४।५	शतभिषा	१७	२८	२३	२०	५	०९	१०	५८
५।६	पूभा	१६	४६	२२	३३	४	१९	१०	०४
६।७	उभा	१५	४८	२१	३२	३	१४	८	५६
७।८	रेवती	१४	३७	२०	१७	१	५७	७	३६
८।९	अश्वि	१३	१३	१८	५१	०	२८	६	०४
९।१०	भरणी	११	४०	१७	१६	२२	५१	४	२५
१०।११	कृतिका	१०	००	१५	३४	२१	०९	२	४३
११।१२	रोहिणी	८	१८	१३	५३	१९	२८	१	०४
१२	मृगशिर	६	४०	१२	१८	१७	५५	२३	३४
१३	आर्द्रा	५	१४	१०	५५	१६	३८	२२	२२
१४	पुनर्वसु	४	०६	९	५४	१५	४३	२१	३४
१५	पुष्य	३	२६	९	२१	१५	१८	२१	१७
१६	आश्लेषा	३	१९	९	२३	१५	३०	२१	३९
१७	मघा	३	५०	१०	०४	१६	२१	२२	४०
१८।१९	पूफा	५	०२	११	२६	१७	५३	०	२२
१९।२०	उफा	६	५३	१३	२७	२०	०२	२	३९
२०।२१	हस्त	९	१७	१५	५८	२२	४०	५	२३
२१।२२	चित्रा	१२	०६	१८	५०	१	३५	८	२०
२२।२३	स्वाती	१५	०४	२१	५०	४	३४	११	१८
२३।२४	विशाखा	१८	००	०	४२	७	२२	१४	०१
२४।२५	अनुराधा	२०	३८	३	१५	९	४९	१६	२०
२५।२६	ज्येष्ठा	२२	५०	५	१८	११	४४	१८	०७
२७	मूल	००	२७	६	४६	१३	०३	१९	१७
२८	पूषा	१	२८	७	३८	१३	४६	१९	५१
२९	उषा	१	५४	७	५५	१३	५४	१९	५२
३०	श्रवण	१	४७	७	४१	१३	३३	१९	२३
३१	धनिष्ठा	१	१२	७	००	१२	४७	१८	३२

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अगस्त २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	शतभिषा	०	१६	५	५९	११	४१	१७	२३
१।२	पूभा	२३	०३	४	४३	१०	२२	१६	०१
२।३	उभा	२१	३९	३	१७	८	५५	१४	३२
३।४	रेवती	२०	०९	१	४६	७	२३	१३	००
४।५	अश्वि	१८	३६	०	१३	५	५०	११	२७
५।६	भरणी	१७	०४	२२	४२	४	२०	९	५८
६।७	कृतिका	१५	३७	२१	१६	२	५६	८	३६
७।८	रोहिणी	१४	१७	१९	५९	१	४१	७	२४
८।९	मृगशिर	१३	०७	१८	५२	०	३८	६	२५
९।१०	आर्द्रा	१२	१२	१८	०१	२३	५१	५	४३
१०।११	पुनर्वसु	११	३५	१७	२९	२३	२५	५	२२
११।१२	पुष्य	११	२०	१७	२१	२३	२२	५	२६
१२।१३	आश्लेषा	११	३१	१७	३९	२३	४८	५	५९
१३।१४	मघा	१२	१२	१८	२८	०	४५	७	०४
१४।१५	पूफा	१३	२५	१९	४९	२	१४	८	४१
१५।१६	उफा	१५	१०	२१	४२	४	१५	१०	४९
१६।१७	हस्त	१७	२५	०	०३	६	४३	१३	२३
१७।१८	चित्रा	२०	०५	२	४८	९	३१	१६	१६
१८।१९	स्वाती	२३	००	५	४५	१२	३०	१९	१५
२०	विशाखा	१	५९	८	४४	१५	२७	२२	०९
२१।२२	अनुराधा	४	५०	११	३०	१८	०९	०	४५
२२।२३	ज्येष्ठा	७	१९	१३	५३	२०	२३	२	५२
२३।२४	मूल	९	१७	१५	४१	२२	०२	४	२१
२४।२५	पूषा	१०	३६	१६	५०	२३	००	५	०८
२५।२६	उषा	११	१३	१७	१६	२३	१६	५	१३
२६।२७	श्रवण	११	०८	१७	०१	२२	५१	४	३९
२७।२८	धनिष्ठा	१०	२४	१६	०९	२१	५०	३	३०
२८।२९	शतभिषा	९	०८	१४	४६	२०	२१	१	५५
२९।३०	पूभा	७	२७	१२	५९	१८	३०	०	००
३०	उभा	५	२८	१०	५७	१६	२५	२१	५३
३१	रेवती	३	२०	८	४८	१४	१६	१९	४३

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
सितम्बर २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	अश्वि	१	११	६	३९	१२	०८	१७	३८
१।२	भरणी	२३	०७	४	३८	१०	१०	१५	४३
२।३	कृतिका	२१	१६	२	५१	८	२७	१४	०४
३।४	रोहिणी	१९	४२	१	२३	७	०४	१२	४७
४।५	मृगशिर	१८	३१	०	१७	६	०५	११	५४
५।६	आर्द्रा	१७	४४	२३	३७	५	३२	११	२८
६।७	पुनर्वसु	१७	२५	२३	२५	५	२६	११	२८
७।८	पुष्य	१७	३३	२३	३९	५	४७	११	५७
८।९	आश्लेषा	१८	०८	०	२२	६	३७	१२	५३
९।१०	मघा	१९	११	१	३१	७	५३	१४	१६
१०।११	पूफा	२०	४०	३	०७	९	३५	१६	०४
११।१२	उफा	२२	३५	५	०८	११	४२	१८	१७
१३	हस्त	०	५३	७	३१	१४	१०	२०	५०
१४	चित्रा	३	३१	१०	१३	१६	५६	२३	४०
१५।१६	स्वाती	६	२४	१३	०९	१९	५४	२	३९
१६।१७	विशाखा	९	२४	१६	१०	२२	५५	५	४०
१७।१८	अनुराधा	१२	२४	१९	०८	१	५०	८	३२
१८।१९	ज्येष्ठा	१५	११	२१	५०	४	२७	११	०२
१९।२०	मूल	१७	३५	०	०७	६	३६	१३	०२
२०।२१	पूषा	१९	२६	१	४८	८	०६	१४	२२
२१।२२	उषा	२०	३५	२	४६	८	५३	१४	५८
२२।२३	श्रवण	२०.५९		२	५८	८	५३	१४	४६
२३।२४	धनिष्ठा	२०	३६	२	२४	८	०८	१३	५०
२४।२५	शतभिषा	१९	२९	१	०७	६	४२	१२	१५
२५।२६	पूभा	१७	४५	२३	१५	४	४२	१०	०७
२६।२७	उभा	१५	३१	२०	५४	२	१६	७	३७
२७।२८	रेवती	१२	५६	१८	१६	२३	३४	४	५३
२८।२९	अश्वि	१०	११	१५	२९	२०	४८	२	०६
२९	भरणी	७	२५	१२	४५	१८	०६	२३	२८
३०	कृतिका	४	५०	१०	१४	१५	४०	२१	०६

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
अक्टू. २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	रोहिणी	२	३४	८	०५	१३	३७	१९	११
२	मृगशिर	०	४६	६	२५	१२	०५	१७	४८
२ । ३	आर्द्रा	२३	३३	५	२०	११	१०	१७	०२
३ । ४	पुनर्वसु	२२	५७	४	५४	१०	५४	१६	५६
४ । ५	पुष्य	२३	००	५	०७	११	१६	१७	२८
५ । ६	आश्लेषा	२३	४१	५	५८	१२	१६	१८	३६
७	मघा	०	५७	७	२१	१३	४७	२०	१४
८	पूफा	२	४३	९	१४	१५	४५	२२	१९
९ । १०	उफा	४	५३	११	२९	१८	०६	०	४४
१० । ११	हस्त	७	२२	१४	०२	२०	४३	३	२४
११ । १२	चित्रा	१०	०६	१६	४९	२३	३३	६	१६
१२ । १३	स्वाती	१३	००	१९	४५	२	३०	९	१५
१३ । १४	विशाखा	१६	००	२२	४६	५	३१	१२	१६
१४ । १५	अनुराधा	१९	०१	१	४६	८	३०	१५	१३
१५ । १६	ज्येष्ठा	२१	५५	४	३७	११	१८	१७	५८
१७	मूल	०	३६	७	१३	१३	४९	२०	२२
१८	पूषा	२	५४	९	२४	१५	५१	२२	१७
१९	उषा	४	३९	११	००	१७	१८	२३	३३
२० । २१	श्रवण	५	४५	११	५५	१८	०२	०	०५
२१	धनिष्ठा	६	०६	१२	०४	१७	५९	२३	५०
२२	शतभिषा	५	३९	११	२५	१७	०८	२२	४८
२३	पूभा	४	२५	१०	००	१५	३३	२१	०३
२४	उभा	२	३०	७	५६	१३	२०	१८	४२
२५	रेवती	०	०१	५	२१	१०	३८	१५	५४
२५ । २६	अश्वि	२१	०९	२	२३	७	३७	१२	५०
२६ । २७	भरणी	१८	०३	२३	१६	४	२९	९	४२
२७ । २८	कृतिका	१४	५५	२०	१०	१	२६	६	४२
२८ । २९	रोहिणी	११	५९	१७	१८	२२	[illegible]	४	०१
२९ । ३०	मृगशिर	९	२५	१४	५१	२०	[illegible]	१	५०
३० । ३१	आर्द्रा	७	२३	१२	५९	१८	३८	०	४९
३१	पुनर्वसु	६	०२	११	५०	१७	३९	२३	३२

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
नवम्बर २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१	पुष्य	५	२८	११	२७	१७	२९	२३	३४
२ । ३	आश्लेषा	५	४२	११	५३	१८	०७	०	२३
३ । ४	मघा	६	४२	१३	०४	१९	२८	१	५५
४ । ५	पूफा	८	२३	१४	५४	२१	२७	४	०१
५ । ६	उफा	१०	३७	१७	१५	२३	५४	६	३४
६ । ७	हस्त	१३	१४	१९	५७	२	४०	९	२३
७ । ८	चित्रा	१६	०६	२२	५१	५	३६	१२	२१
८ । ९	स्वाती	१९	०५	१	५१	८	३६	१५	२१
९ । १०	विशाखा	२२	०५	४	५०	११	३५	१८	१९
११	अनुराधा	१	०२	७	४६	१४	२९	२१	११
१२	ज्येष्ठा	३	५२	१०	३४	१७	१४	२३	५३
१३ । १४	मूल	६	३२	१३	१०	१९	४६	२	२२
१४ । १५	पूषा	८	५६	१५	२९	२२	०१	४	३१
१५ । १६	उषा	१०	५८	१७	२५	२३	५०	६	५०
१६ । १७	श्रवण	१२	३३	१८	५२	१	०८	७	२२
१७ । १८	धनिष्ठा	१३	३३	१९	४३	१	४९	७	५३
१८ । १९	शतभिषा	१३	५३	१९	५२	१	४७	७	४०
१९ । २०	पूभा	१३	२९	१९	१७	१	०१	६	४३
२० । २१	उभा	१२	२२	१७	५९	२३	३३	५	०४
२१ । २२	रेवती	१०	३३	१६	०१	२१	२६	२	५०
२२ । २३	अश्वि	८	११	१३	३१	१८	५०	०	०७
२३	भरणी	५	२२	१०	३८	१५	५२	२१	०६
२४	कृतिका	२	१९	७	३३	१२	४६	१७	५९
२४ । २५	रोहिणी	२३	१३	४	२७	९	४२	१४	५८
२५ । २६	मृगशिर	२०	१५	१	३४	६	५४	१२	१६
२६ । २७	आर्द्रा	१७	३९	२३	०५	४	३२	१०	०३
२७ । २८	पुनर्वसु	१५	३५	२१	११	२	४९	८	२९
२८ । २९	पुष्य	१४	१३	२०	००	१	५०	७	४४
२९ । ३०	आश्लेषा	१३	४०	१९	४०	१	४३	७	४९
३० । १दि.	मघा	१३	५८	२०	११	२	२७	८	४५

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
दिसम्बर २००७	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१ । २	पूफा	१५	०६	२१	३१	३	५८	१०	२८
२ । ३	उफा	१६	५९	२३	३४	६	१०	१२	४७
३ । ४	हस्त	१९	२७	२	०८	८	५०	१५	३३
४ । ५	चित्रा	२२	१७	५	०२	११	४७	१८	३३
६	स्वाती	१	१८	८	०४	१४	५०	२१	३६
७ । ८	विशाखा	४	२०	११	०५	१७	५०	०	३३
८ । ९	अनुराधा	७	१६	१३	५८	२०	३९	३	२०
९ । १०	ज्येष्ठा	९	५९	१६	३८	२३	१६	५	५२
१० । ११	मूल	१२	२८	१९	०३	१	३६	८	०८
११ । १२	पूषा	१४	३९	२१	१०	३	३९	१०	०७
१२ । १३	उषा	१६	३३	२२	५८	५	२२	११	४५
१३ । १४	श्रवण	१८	०५	०	२५	६	४३	१३	००
१४ । १५	धनिष्ठा	१९	१४	१	२७	७	३९	१३	४८
१५ । १६	शतभिषा	१९	५५	२	०१	८	०४	१४	०६
१६ । १७	पूभा	२०	०५	२	०२	७	५७	१३	५०
१७ । १८	उभा	१९	४०	१	२९	७	१६	१३	००
१८ । १९	रेवती	१८	४१	०	२१	५	५९	११	३५
१९ । २०	अश्वि	१७	०९	२२	४१	४	११	९	४०
२० । २१	भरणी	१५	०७	२०	३३	१	५८	७	२१
२१ । २२	कृतिका	१२	४३	१८	०५	२३	२६	४	४६
२२ । २३	रोहिणी	१०	०५	१५	२५	२०	४५	२	०४
२३	मृगशिर	७	२४	१२	४५	१८	०६	२३	२७
२४	आर्द्रा	४	५०	१०	१४	१५	३९	२१	०६
२५	पुनर्वसु	२	३४	८	०५	१३	३७	१९	१२
२६	पुष्य	०	४८	६	२७	१२	०९	१७	५३
२६ । २७	आश्लेषा	२३	४०	५	३०	११	२३	१७	१९
२७ । २८	मघा	२३	१७	५	१९	११	२४	१७	३२
२८ । २९	पूफा	२३	४३	५	५८	१२	१५	१८	३५
३०	उफा	०	५८	७	२४	१३	५२	२०	२३
३१	हस्त	२	५५	९	३१	१६	०८	२२	४७

चन्द्रमा का नक्षत्र चरणों में प्रवेश काल (भा.स्टैं.टा.)

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
जनवरी २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	चित्रा	५	२७	१२	०९	१८	५२	१	३५
२।३	स्वाती	८	१९	१५	०५	२१	५०	४	३६
३।४	विशाखा	११	२१	१८	०६	०	५१	७	३५
४।५	अनुराधा	१४	१८	२१	०१	३	४२	१०	२३
५।६	ज्येष्ठा	१७	०१	२३	४०	६	१६	१२	५१
६।७	मूल	१९	२५	१	५७	८	२८	१४	५७
७।८	पूषा	२१	२४	३	५१	१०	१६	१६	३९
८।९	उषा	२३	००	५	२०	११	३९	१७	५६
१०	श्रवण	०	११	६	२५	१२	३८	१८	४९
११	धनिष्ठा	०	५८	७	०७	१३	१४	१९	२०
१२	शतभिषा	१	२४	७	२७	१३	२९	१९	२९
१३	पूभा	१	२७	७	२५	१३	२१	१९	१६
१४	उभा	१	०८	७	०१	१२	५१	१८	४१
१५	रेवती	०	२८	६	१५	१२	००	१७	४४
१५।१६	अश्वि	२३	३६	५	०८	१०	४८	१६	२७
१६।१७	भरणी	२२	०५	३	४२	९	१८	१४	५२
१७।१८	कृतिका	२०	२६	२	००	७	३२	१३	०४
१८।१९	रोहिणी	१८	३५	०	०६	५	३६	११	०७
१९।२०	मृगशिर	१६	३६	२२	०७	३	३७	९	०८
२०।२१	आर्द्रा	१४	३८	२०	१०	१	४२	७	१५
२१।२२	पुनर्वसु	१२	४८	१८	२४	०	००	५	३७
२२।२३	पुष्य	११	१५	१६	५६	२२	३८	४	२२
२३।२४	आश्लेषा	१०	०७	१५	५५	२१	४५	३	३७
२४।२५	मघा	९	३१	१५	२८	२१	२८	३	३०
२५।२६	पूफा	९	३३	१५	४१	२१	५१	४	०३
२६।२७	उफा	१०	१८	१६	३६	२२	५६	५	१९
२७।२८	हस्त	११	४४	१८	१२	०	४२	७	१४
२८।२९	चित्रा	१३	४८	२०	२४	३	०२	९	४२
२९।३०	स्वाती	१६	२२	२३	०४	५	४७	१२	३०
३०।३१	विशाखा	१९	१४	२	५९	८	४४	१५	२८

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
फरवरी २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
३१ज.।१	अनुराधा	२२	१२	४	५६	११	३९	१८	२१
२	ज्येष्ठा	१	०१	७	४२	१४	२०	२०	५७
३	मूल	३	३२	१०	०६	१६	३७	२३	०७
४।५	पूषा	५	३४	१२	०१	१८	२४	०	४६
५।६	उषा	७	०५	१३	२३	१९	३८	१	५२
६।७	श्रवण	८	०२	१४	१२	२०	१९	२	२५
७।८	धनिष्ठा	८	२८	१४	३०	२०	३०	२	२८
८।९	शतभिषा	८	२४	१४	२०	२०	१४	२	०६
९।१०	पूभा	७	५६	१३	४६	१९	३५	१	२२
१०।११	उभा	७	०८	१२	५४	१८	३८	०	२२
११	रेवती	६	०४	११	४७	१७	२९	२३	०९
१२	अश्वि	४	४९	१०	३०	१६	०९	२१	४८
१३	भरणी	३	२७	९	०६	१४	४४	२०	२२
१४	कृतिका	२	००	७	३९	१३	१७	१८	५५
१५	रोहिणी	०	३२	६	११	११	५०	१७	२८
१५।१६	मृगशिर	२३	०७	४	४७	१०	२७	१६	०७
१६।१७	आर्द्रा	२१	४७	३	२९	९	११	१४	५४
१७।१८	पुनर्वसु	२०	३७	२	२२	८	०७	१३	५३
१८।१९	पुष्य	१९	४०	१	२९	७	१८	१३	०९
१९।२०	आश्लेषा	१९	०१	०	५५	६	५०	१२	४७
२०।२१	मघा	१८	४४	०	४५	६	४६	१२	५०
२१।२२	पूफा	१८	५५	१	०२	७	१२	१३	२३
२२।२३	उफा	१९	३५	१	५१	८	०९	१४	२८
२३।२४	हस्त	२०	४९	३	१३	९	३९	१६	०६
२४।२५	चित्रा	२२	३६	५	०७	११	४१	१८	१६
२६	स्वाती	०	५२	७	३०	१४	१०	२०	५१
२७	विशाखा	३	३२	१०	१५	१६	५८	२३	४२
२८।२९	अनुराधा	६	२६	१३	१०	१९	५४	२	३८
२९।१मा.	ज्येष्ठा	९	२१	१६	०४	२२	४६	५	२६

नक्षत्र चरण		१		२		३		४	
मार्च २००८	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
१।२	मूल	१२	०५	१८	४३	१	१९	७	५४
२।३	पूषा	१४	२५	२०	५६	३	२४	९	४९
३।४	उषा	१६	१२	२२	३३	४	५१	११	०७
४।५	श्रवण	१७	१९	२३	३०	५	३८	११	४३
५।६	धनिष्ठा	१७	४५	२३	४५	५	४३	११	३८
६।७	शतभिषा	१७	३०	२३	२१	५	१०	१०	५६
७।८	पूभा	१६	४०	२२	२३	४	०४	९	४४
८।९	उभा	१५	२१	२०	५८	२	३३	८	०८
९।१०	रेवती	१३	४०	१९	१३	०	४५	६	१६
१०।११	अश्वि	११	४६	१७	१७	२२	४७	४	१८
११।१२	भरणी	९	४७	१५	१८	२०	४९	२	१९
१२।१३	कृतिका	७	५०	१३	२३	१८	५५	०	२९
१३	रोहिणी	६	०२	११	३८	१७	१४	२२	५१
१४	मृगशिरा	४	२९	१०	०९	१५	४९	२१	३१
१५	आर्द्रा	३	१४	८	५८	१४	४४	२०	३१
१६	पुनर्वसु	२	१९	८	०९	१४	००	१९	५३
१७	पुष्य	१	४७	७	४३	१३	३९	१९	३८
१८	आश्लेषा	१	३७	७	३९	१३	४१	१९	४५
१९	मघा	१	५१	७	५८	१४	०६	२०	१६
२०	पूफा	२	२७	८	४१	१४	५५	२१	११
२१	उफा	३	२८	९	४७	१६	०७	२२	२९
२२।२३	हस्त	४	५२	११	१७	१७	४३	०	११
२३।२४	चित्रा	६	४०	१३	१२	१९	४४	२	१८
२४।२५	स्वाती	८	५२	१५	२९	२२	०७	४	४६
२५।२६	विशाखा	११	२५	१८	०७	०	४९	७	३२
२६।२७	अनुराधा	१४	१५	२०	५९	३	४३	१०	२८
२७।२८	ज्येष्ठा	१७	१२	२३	५७	६	४१	१३	२५
२८।२९	मूल	२०	०७	२	४९	९	३०	१६	१०
२९।३०	पूषा	२२	४८	५	२४	११	५९	१८	३१
३१	उषा	१	०१	७	३०	१३	५५	२०	१८

मार्च २००७ के लिए पृष्ठ १० देखें

सन् २००७ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

अप्रैल	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई		मई	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००७	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	सन् ई. २००७	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	१७ ३६	०५ २१	१६ ५०	०४ ३४	१७ ५४	०५ ३७	१७ २३	०५ ०५	१	१८ १०	०४ ४४	१७ १५	०४ ०६	१८ १५	०५ १३	१७ ३६	०४ ४८
२	१८ २८	०५ ४७	१७ ३९	०५ ०३	१८ ४१	०६ ०७	१८ ०७	०५ ३८	२	१९ ०५	०५ १४	१८ ०७	०४ ३८	१९ ०५	०५ ४७	१८ २५	०५ २५
३	१९ २१	०६ १३	१८ २८	०५ ३३	१९ २९	०६ ३९	१८ ५३	०६ १२	३	२० ०२	०५ ४८	१९ ०२	०५ १५	१९ ५९	०६ २५	१९ १६	०६ ०५
४	२० १५	०६ ४१	१९ १९	०६ ०४	२० १८	०७ ११	१९ ४०	०६ ४७	४	२१ ००	०६ २६	१९ ५८	०५ ५६	२० ५४	०७ ०७	२० ०९	०६ ४९
५	२१ ११	०७ १२	२० १२	०६ ३७	२१ १०	०७ ४६	२० २९	०७ २५	५	२१ ५७	०७ ११	२० ५४	०६ ४२	२१ ४९	०७ ५५	२१ ०४	०७ ३८
६	२२ ०८	०७ ४७	२१ ०७	०७ १४	२२ ०३	०८ २५	२१ २०	०८ ०६	६	२२ ५२	०८ ०२	२१ ४८	०७ ३३	२२ ४३	०८ ४७	२१ ५८	०८ ३०
७	२३ ०६	०८ २७	२२ ०३	०७ ५७	२२ ५९	०९ ०९	२२ १४	०८ ५१	७	२३ ४२	०८ ५९	२२ ४०	०८ २९	२३ ३५	०९ ४३	२२ ५१	०९ २६
८	- -	०९ १३	२२ ५९	०८ ४४	२३ ५४	०९ ५७	२३ ०८	०९ ४१	८	- -	०९ ५९	२३ २६	०९ २८	- -	१० ४१	२३ ४१	१० २३
९	०० ०३	१० ०६	२३ ५३	०९ ३७	- -	१० ५१	- -	१० ३५	९	०० २६	११ ०२	- -	१० २९	०० २३	११ ४०	- -	११ २०
१०	०० ५६	११ ०५	- -	१० ३५	०० ४८	११ ४९	०० ०३	११ ३१	१०	०१ ०६	१२ ०६	०० ०९	११ २९	०१ ०७	१२ ३९	०० २७	१२ १६
११	०१ ४५	१२ ०८	०० ४४	११ ३६	०१ ३९	१२ ४८	०० ५५	१२ २९	११	०१ ४२	१३ १०	०० ४९	१२ २९	०१ ४८	१३ ३७	०१ ११	१३ ११
१२	०२ २९	१३ १३	०१ ३०	१२ ३८	०२ २७	१३ ४९	०१ ४५	१३ २८	१२	०२ १५	१४ १४	०१ २६	१३ २९	०२ २७	१४ ३५	०१ ५३	१४ ०६
१३	०३ ०८	१४ १९	०२ १३	१३ ४०	०३ ११	१४ ४९	०२ ३२	१४ २५	१३	०२ ४८	१५ १९	०२ ०२	१४ ३१	०३ ०६	१५ ३४	०२ ३४	१५ ०१
१४	०३ ४४	१५ २५	०२ ५३	१४ ४३	०३ ५३	१५ ५०	०३ १७	१५ २२	१४	०३ २२	१६ २६	०२ ४०	१५ ३४	०३ ४६	१६ ३५	०३ १८	१५ ५९
१५	०४ १९	१६ ३२	०३ ३१	१५ ४५	०४ ३३	१६ ५०	०४ ००	१६ २०	१५	०३ ५८	१७ ३७	०३ २०	१६ ४०	०४ २८	१७ ४०	०४ ०४	१७ ००
१६	०४ ५३	१७ ४०	०४ ०९	१६ ५०	०५ १३	१७ ५२	०४ ४४	१७ १८	१६	०४ ३९	१८ ४९	०४ ०५	१७ ४९	०५ १५	१८ ४७	०४ ५३	१८ ०५
१७	०५ २८	१८ ५०	०४ ४८	१७ ५६	०५ ५५	१८ ५६	०५ २९	१८ १९	१७	०५ २७	२० ०३	०४ ५५	१९ ००	०६ ०७	१९. ५६	०५ ४९	१९ १२
१८	०६ ०७	२० ०३	०५ ३१	१९ ०४	०६ ४०	२० ०३	०६ १७	१९ २२	१८	०६ २२	२१ १२	०५ ५२	२० ०८	०७ ०६	२१ ०४	०६ ४९	२० १८
१९	०६ ५२	२१ १६	०६ १९	२० १४	०७ ३०	२१ १२	०७ १०	२० २८	१९	०७ २४	२२ १४	०६ ५५	२१ ११	०८ ०९	२२ ०६	०७ ५२	२१ २१
२०	०७ ४२	२२ २७	०७ १२	२१ २३	०८ २५	२२ १९	०८ ०७	२१ ३४	२०	०८ २९	२३ ०७	०७ ५९	२२ ०५	०९ १३	२३ ०१	०८ ५५	२२ १८
२१	०८ ४०	२३ ३२	०८ ११	२२ २८	०९ २४	२३ २३	०९ ०८	२२ ३८	२१	०९ ३५	२३ ५०	०९ ०३	२२ ५२	१० १५	२३ ४९	०९ ५६	२३ ०८
२२	०९ ४३	- -	०९ १३	२३ २५	१० २६	- -	१० १०	२३ ३६	२२	१० ३८	- -	१० ०३	२३ ३२	११ १३	- -	१० ५२	२३ ५१
२३	१० ४६	०० २८	१० १५	- -	११ २८	०० २१	११ १०	- -	२३	११ ३७	०० २७	१० ५९	- -	१२ ०८	०० ३०	११ ४४	- -
२४	११ ४८	०१ १५	११ १५	०० १५	१२ २७	०१ ११	१२ ०७	०० २८	२४	१२ ३३	०० ५९	११ ५२	०० ०७	१२ ५८	०१ ०७	१२ ३२	०० ३०
२५	१२ ४८	०१ ५४	१२ १२	०० ५७	१३ २२	०१ ५५	१३ ००	०१ १४	२५	१३ २६	०१ २७	१२ ४२	०० ३८	१३ ४७	०१ ४०	१३ १८	०१ ०६
२६	१३ ४५	०२ २८	१३ ०६	०१ ३४	१४ १४	०२ ३३	१३ ४९	०१ ५५	२६	१४ १८	०१ ५३	१३ ३१	०१ ०८	१४ ३४	०२ ११	१४ ०२	०१ ४०
२७	१४ ३९	०२ ५७	१३ ५७	०२ ०७	१५ ०३	०३ ०७	१४ ३६	०२ ३२	२७	१५ १०	०२ २०	१४ २०	०१ ३७	१५ २२	०२ ४२	१४ ४७	०२ १४
२८	१५ ३२	०३ २५	१४ ४७	०२ ३७	१५ ५१	०३ ३९	१५ २१	०३ ०६	२८	१६ ०३	०२ ४७	१५ १०	०२ ०७	१६ १०	०३ १४	१५ ३३	०२ ४८
२९	१६ २४	०३ ५१	१५ ३५	०३ ०६	१६ ३८	०४ १०	१६ ०५	०३ ४०	२९	१६ ५८	०३ १६	१६ ०२	०२ ३९	१७ ००	०३ ४७	१६ २०	०३ २४
३०	१७ १६	०४ १७	१६ २४	०३ ३५	१७ २६	०४ ४१	१६ ५०	०४ १३	३०	१७ ५५	०३ ४८	१६ ५५	०३ १४	१७ ५३	०४ २४	१७ ११	०४ ०३
									३१	१८ ५३	०४ २५	१७ ५१	०३ ५४	१८ ४७	०५ ०५	१८ ०३	०४ ४५

सन् २००७ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

जून	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई		जुलाई	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	सन् ई.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
२००७	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	२००७	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१	१९ ५१	०५ ०८	१८ ४८	०४ ३८	१९ ४३	०५ ५१	१८ ५८	०५ ३४	१	२० २२	०५ ४५	१९ २१	०५ १५	२० १७	०६ २८	१९ ३३	०६ ११
२	२० ४७	०५ ५८	१९ ४४	०५ २९	२० ३९	०६ ४२	१९ ५३	०६ २६	२	२१ ०५	०६ ४८	२० ०७	०६ १६	२१ ०४	०७ २८	२० २३	०७ ०९
३	२१ ३९	०६ ५३	२० ३६	०६ २४	२१ ३२	०७ ३८	२० ४७	०७ २१	३	२१ ४४	०७ ५२	२० ४९	०७ १७	२१ ४७	०८ २८	२१ ०९	०८ ०६
४	२२ २५	०७ ५४	२१ २५	०७ २३	२२ २१	०८ ३६	२१ ३८	०८ १८	४	२२ १८	०८ ५६	२१ २७	०८ १७	२२ २७	०९ २६	२१ ५१	०९ ०२
५	२३ ०६	०८ ५६	२२ ०९	०८ २३	२३ ०६	०९ ३५	२२ २६	०९ १५	५	२२ ५०	०९ ५९	२२ ०२	०९ १७	२३ ०५	१० २३	२२ ३२	०९ ५६
६	२३ ४३	१० ००	२२ ४८	०९ २३	२३ ४८	१० ३४	२३ १०	१० ११	६	२३ २२	११ ०१	२२ ३८	१० १५	२३ ४२	११ २०	२३ १३	१० ४९
७	- -	११ ०२	२३ २६	१० २३	- -	११ ३१	२३ ५२	११ ०६	७	२३ ५५	१२ ०४	२३ १४	११ १४	- -	१२ १७	२३ ५४	११ ४३
८	०० १६	१२ ०४	- -	११ २१	०० २६	१२ २८	- -	११ ५९	८	- -	१३ ०८	२३ ५३	१२ १५	०० २०	१३ १६	- -	१२ ३९
९	०० ४८	१३ ०७	०० ०१	१२ २०	०१ ०४	१३ २४	०० ३२	१२ ५३	९	०० ३०	१४ १५	- -	१३ १८	०१ ०१	१४ १७	०० ३८	१३ ३७
१०	०१ २०	१४ ११	०० ३७	१३ २०	०१ ४२	१४ २३	०१ १३	१३ ४८	१०	०१ १०	१५ २४	०० ३६	१४ २४	०१ ४७	१५ २१	०१ २६	१४ ३८
११	०१ ५४	१५ १८	०१ १४	१४ २३	०२ २१	१५ २४	०१ ५६	१४ ४६	११	०१ ५६	१६ ३४	०१ २५	१५ ३१	०२ ३८	१६ २७	०२ १९	१५ ४२
१२	०२ ३२	१६ २८	०१ ५६	१५ २९	०३ ०५	१६ २८	०२ ४२	१५ ४७	१२	०२ ५०	१७ ४०	०२ २१	१६ ३७	०३ ३५	१७ ३२	०३ १७	१६ ४६
१३	०३ १५	१७ ३९	०२ ४२	१६ ३८	०३ ५३	१७ ३५	०३ ३४	१६ ५१	१३	०३ ५२	१८ ४१	०३ २२	१७ ३८	०४ ३६	१८ ३३	०४ २०	१७ ४८
१४	०४ ०६	१८ ५०	०३ ३५	१७ ४७	०४ ४८	१८ ४३	०४ ३०	१७ ५७	१४	०४ ५७	१९ ३३	०४ २७	१८ ३२	०५ ४०	१९ २८	०५ २३	१८ ४४
१५	०५ ०४	१९ ५६	०४ ३५	१८ ५२	०५ ४९	१९ ४८	०५ ३२	१९ ०२	१५	०६ ०३	२० १६	०५ ३१	१९ १८	०६ ४३	२० १६	०६ २३	१९ ३५
१६	०६ ०९	२० ५४	०५ ३९	१९ ५१	०६ ५३	२० ४७	०६ ३६	२० ०३	१६	०७ ०८	२० ५३	०६ ३२	१९ ५९	०७ ४३	२० ५७	०७ २१	२० १९
१७	०७ १६	२१ ४२	०६ ४५	२० ४२	०७ ५७	२१ ३९	०७ ३९	२० ५७	१७	०८ ०८	२१ २५	०७ ३०	२० ३४	०८ ३८	२१ ३४	०८ १४	२० ५९
१८	०८ २१	२२ २२	०७ ४८	२१ २६	०८ ५९	२२ २४	०८ ३८	२१ ४४	१८	०९ ०६	२१ ५४	०८ २४	२१ ०६	०९ ३०	२२ ०८	०९ ०३	२१ ३५
१९	०९ २४	२२ ५७	०८ ४७	२२ ०४	०९ ५६	२३ ०३	०९ ३३	२२ २६	१९	१० ०१	२२ २१	०९ १५	२१ ३७	१० २०	२२ ४०	०९ ५०	२२ १०
२०	१० २२	२३ २७	०९ ४२	२२ ३७	१० ५०	२३ ३८	१० २४	२३ ०३	२०	१० ५४	२२ ४८	१० ०५	२२ ०६	११ ०८	२३ १२	१० ३६	२२ ४४
२१	११ १७	२३ ५४	१० ३४	२३ ०८	११ ४०	- -	११ १२	२३ ३९	२१	११ ४७	२३ १६	१० ५५	२२ ३७	११ ५७	२३ ४४	११ २१	२३ १९
२२	१२ ११	- -	११ २४	२३ ३७	१२ २८	०० १०	११ ५७	- -	२२	१२ ४०	२३ ४६	११ ४६	२३ १०	१२ ४५	- -	१२ ०७	२३ ५६
२३	१३ ०३	०० २१	१२ १४	- -	१३ १६	०० ४२	१२ ४२	०० १३	२३	१३ ३५	- -	१२ ३८	२३ ४६	१३ ३६	०० १९	१२ ५६	- -
२४	१३ ५६	०० ४८	१३ ०३	०० ०७	१४ ०४	०१ १३	१३ २७	०० ४७	२४	१४ ३२	०० १९	१३ ३२	- -	१४ २९	०० ५६	१३ ४६	०० ३६
२५	१४ ५०	०१ १६	१३ ५४	०० ३८	१४ ५३	०१ ४६	१४ १४	०१ २२	२५	१५ ३०	०० ५७	१४ २८	०० २६	१५ २४	०१ ३८	१४ ३९	०१ २०
२६	१५ ४६	०१ ४७	१४ ४७	०१ १२	१५ ४५	०२ २२	१५ ०४	०२ ००	२६	१६ २८	०१ ४२	१५ २५	०१ १२	१६ २०	०२ २५	१५ ३५	०२ ०८
२७	१६ ४४	०२ २२	१५ ४३	०१ ५०	१६ ३९	०३ ०१	१५ ५६	०२ ४१	२७	१७ २४	०२ ३३	१६ २०	०२ ०५	१७ १५	०३ १८	१६ ३०	०३ ०२
२८	१७ ४२	०३ ०३	१६ ३९	०२ ३३	१७ ३५	०३ ४५	१६ ५०	०३ २७	२८	१८ १५	०३ ३१	१७ १३	०३ ०२	१८ ०९	०४ १५	१७ २४	०३ ५८
२९	१८ ३९	०३ ५१	१७ ३६	०३ २२	१८ ३१	०४ ३५	१७ ४६	०४ १८	२९	१९ ०१	०४ ३४	१८ ०१	०४ ०३	१८ ५८	०५ १६	१८ १६	०४ ५७
३०	१९ ३३	०४ ४५	१८ ३०	०४ १६	१९ २६	०५ ३०	१८ ४२	०५ १३	३०	१९ ४२	०५ ३९	१८ ४५	०५ ०५	१९ ४३	०६ १७	१९ ०४	०५ ५६
									३१	२० १८	०६ ४५	१९ २५	०६ ०७	२० २४	०७ १७	१९ ४८	०६ ५४

सन् २००७ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

अगस्त	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००७	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	२० ५२	०७ ४९	२० ०३	०७ ०८	२१ ०४	०८ १६	२० ३१	०७ ४९
२	२१ २४	०८ ५३	२० ३९	०८ ०८	२१ ४२	०९ १४	२१ १२	०८ ४४
३	२१ ५७	०९ ५७	२१ १५	०९ ०८	२२ २१	१० १२	२१ ५३	०९ ३९
४	२२ ३१	११ ०१	२१ ५३	१० ०९	२३ ०१	११ १०	२२ ३७	१० ३४
५	२३ ०९	१२ ०८	२२ ३५	११ ११	२३ ४५	१२ ११	२३ २३	११ ३२
६	२३ ५३	१३ १६	२३ २१	१२ १६	- -	१३ १४	- -	१२ ३२
७	- -	१४ २४	- -	१३ २२	०० ३३	१४ १८	०० १४	१३ ३४
८	०० ४४	१५ ३१	०० १४	१४ २७	०१ २७	१५ २३	०१ १०	१४ ३७
९	०१ ४१	१६ ३२	०१ १२	१५ २८	०२ २६	१६ २४	०२ ०९	१५ ३८
१०	०२ ४४	१७ २६	०२ १४	१६ २४	०३ २८	१७ २०	०३ ११	१६ ३६
११	०३ ४९	१८ १२	०३ १८	१७ १२	०४ ३०	१८ ०९	०४ १२	१७ २७
१२	०४ ५४	१८ ५१	०४ १९	१७ ५५	०५ ३१	१८ ५३	०५ १०	१८ १३
१३	०५ ५५	१९ २४	०५ १८	१८ ३२	०६ २७	१९ ३१	०६ ०४	१८ ५५
१४	०६ ५४	१९ ५४	०६ १३	१९ ०५	०७ २१	२० ०६	०६ ५५	१९ ३२
१५	०७ ५०	२० २२	०७ ०६	१९ ३६	०८ १२	२० ३९	०७ ४३	२० ०८
१६	०८ ४४	२० ४९	०७ ५७	२० ०६	०९ ०१	२१ ११	०८ २९	२० ४२
१७	०९ ३७	२१ १६	०८ ४७	२० ३६	०९ ४९	२१ ४३	०९ १५	२१ १७
१८	१० ३१	२१ ४५	०९ ३७	२१ ०८	१० ३८	२२ १६	१० ०१	२१ ५३
१९	११ २५	२२ १७	१० २९	२१ ४३	११ २८	२२ ५२	१० ४८	२२ ३१
२०	१२ २१	२२ ५३	११ २२	२२ २१	१२ १९	२३ ३२	११ ३७	२३ १३
२१	१३ १८	२३ ३४	१२ १७	२३ ०४	१३ १३	- -	१२ २९	२३ ५९
२२	१४ १६	- -	१३ १२	२३ ५३	१४ ०८	०० १७	१३ २३	- -
२३	१५ १२	०० २२	१४ ०८	- -	१५ ०३	०१ ०६	१४ १८	०० ५०
२४	१६ ०४	०१ १६	१५ ०२	०० ४७	१५ ५७	०२ ०१	१५ १२	०१ ४४
२५	१६ ५२	०२ १७	१५ ५२	०१ ४६	१६ ४८	०३ ००	१६ ०४	०२ ४२
२६	१७ ३५	०३ २१	१६ ३८	०२ ४८	१७ ३५	०४ ००	१६ ५४	०३ ४१
२७	१८ १४	०४ २७	१७ २०	०३ ५१	१८ १९	०५ ०१	१७ ४१	०४ ३९
२८	१८ ४९	०५ ३३	१७ ५९	०४ ५३	१९ ००	०६ ०२	१८ २५	०५ ३७
२९	१९ २३	०६ ३८	१८ ३६	०५ ५५	१९ ३९	०७ ०१	१९ ०७	०६ ३३
३०	१९ ५६	०७ ४४	१९ १३	०६ ५७	२० १८	०८ ०१	१९ ५०	०७ २९
३१	२० ३१	०८ ५०	१९ ५२	०७ ५९	२० ५९	०[illegible] ०१	२० ३३	०८ २६

सितम्बर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००७	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	२१ ०९	०९ ५७	२० ३३	०९ ०२	२१ ४२	१० ०३	२१ २०	०९ २४
२	२१ ५१	११ ०७	२१ १९	१० ०८	२२ ३०	११ ०६	२२ १०	१० २५
३	२२ ४०	१२ १६	२२ १०	११ १४	२३ २३	१२ ११	२३ ०५	११ २८
४	२३ ३६	१३ २४	२३ ०७	१२ २०	- -	१३ १६	- -	१२ ३१
५	- -	१४ २७	- -	१३ २३	०० २१	१४ १८	०० ०४	१३ ३३
६	०० ३७	१५ २२	०० ०८	१४ २०	०१ २१	१५ १५	०१ ०५	१४ ३१
७	०१ ४१	१६ १०	०१ १०	१५ १०	०२ २३	१६ ०६	०२ ०५	१५ २३
८	०२ ४४	१६ ५०	०२ ११	१५ ५३	०३ २३	१६ ५१	०३ ०३	१६ १०
९	०३ ४६	१७ २५	०३ १०	१६ ३१	०४ २०	१७ ३०	०३ ५७	१६ ५२
१०	०४ ४५	१७ ५६	०४ ०६	१७ ०५	०५ १४	१८ ०६	०४ ४९	१७ ३१
११	०५ ४१	१८ २४	०४ ५९	१७ ३७	०६ ०५	१८ ३९	०५ ३७	१८ ०७
१२	०६ ३६	१८ ५१	०५ ५०	१८ ०७	०६ ५४	१९ ११	०६ २४	१८ ४१
१३	०७ २९	१९ १८	०६ ४०	१८ ३७	०७ ४३	१९ ४३	०७ ०९	१९ १६
१४	०८ २२	१९ ४६	०७ ३०	१९ ०८	०८ ३१	२० १६	०७ ५५	१९ ५१
१५	०९ १७	२० १७	०८ २१	१९ ४१	०९ २१	२० ५०	०८ ४२	२० २९
१६	१० १२	२० ५१	०९ १४	२० १८	१० ११	२१ २९	०९ ३०	२१ ०९
१७	११ ०८	२१ २९	१० ०७	२० ५९	११ ०४	२२ ११	१० २१	२१ ५३
१८	१२ ०५	२२ १४	११ ०२	२१ ४५	११ ५८	२२ ५८	११ १३	२२ ४१
१९	१३ ०१	२३ ०५	११ ५७	२२ ३६	१२ ५२	२३ ४९	१२ ०७	२३ ३३
२०	१३ ५८	- -	१२ ५१	२३ ३२	१३ ४६	- -	१३ ००	- -
२१	१४ ४३	०० ०१	१३ ४१	- -	१४ ३७	०० ४५	१३ ५३	०० २८
२२	१५ २७	०१ ०२	१४ २८	०० ३२	१५ २५	०१ ४४	१४ ४२	०१ २५
२३	१६ ०७	०२ ०६	१५ ११	०१ ३२	१६ ०९	०२ ४३	१५ ३०	०२ २३
२४	१६ ४४	०३ ११	१५ ५१	०२ ३४	१६ ५१	०३ ४३	१६ १४	०३ २०
२५	१७ १८	०४ १७	१६ २९	०३ ३६	१७ ३१	०४ ४३	१६ ५८	०४ १६
२६	१७ ५२	०५ २३	१७ ०७	०४ ३८	१८ ११	०५ ४३	१७ ४१	०५ १३
२७	१८ २७	०६ ३०	१७ ४५	०५ ४१	१८ ५२	०६ ४४	१८ २४	०६ १०
२८	१९ ०४	०७ ३९	१८ २७	०६ ४५	१९ ३५	०७ ४६	१९ ११	०७ १०
२९	१९ ४६	०८ ५०	१९ १२	०७ ५२	२० २३	०८ ५१	२० ०२	०८ ११
३०	२० ३४	१० ०२	२० ०३	०९ ०१	२१ १५	०९ ५९	२० ५७	०९ १६

सन् २००७ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

अक्टूबर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई		नवम्बर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	सन् ई.	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
२००७	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	२००७	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
१	२१ २९	११ १३	२१ ००	१० १०	२२ १३	११ ०६	२१ ५६	१० २१	१	२३ ३३	१२ ४९	२२ ५९	११ ५०	- -	१२ ४७	२३ ४९	१२ ०५
२	२२ ३०	१२ १९	२२ ०१	११ १६	२३ १५	१२ ११	२२ ५८	११ २५	२	- -	१३ २८	२३ ५६	१२ ३२	०० १०	१३ ३०	- -	१२ ५१
३	२३ ३४	१३ १८	२३ ०४	१२ १५	- -	१३ ११	२३ ५९	१२ २६	३	०० ३४	१४ ०१	- -	१३ ०९	०१ ०६	१४ ०८	०० ४२	१३ ३२
४	- -	१४ ०९	- -	१३ ०८	०० १७	१४ ०४	- -	१३ २०	४	०१ ३१	१४ ३१	०० ५१	१३ ४१	०१ ५८	१४ ४३	०१ ३२	१४ ०९
५	०० ३८	१४ ५१	०० ०६	१३ ५३	०१ १८	१४ ५०	०० ५८	१४ ०९	५	०२ २६	१४ ५८	०१ ४२	१४ १२	०२ ४८	१५ १५	०२ १९	१४ ४४
६	०१ ४०	१५ २७	०१ ०५	१४ ३२	०२ १५	१५ ३१	०१ ५४	१४ ५२	६	०३ १९	१५ २५	०२ ३२	१४ ४२	०३ ३६	१५ ४६	०३ ०४	१५ १८
७	०२ ३९	१५ ५९	०२ ०१	१५ ०७	०३ १०	१६ ०७	०२ ४५	१५ ३१	७	०४ १२	१५ ५२	०३ २२	१५ १२	०४ २४	१६ १८	०३ ४९	१५ ५२
८	०३ ३६	१६ २७	०२ ५४	१५ ३९	०४ ०१	१६ ४१	०३ ३४	१६ ०७	८	०५ ०५	१६ २१	०४ १२	१५ ४४	०५ १२	१६ ५२	०४ ३५	१६ २८
९	०४ ३०	१६ ५४	०३ ४५	१६ ०९	०४ ५०	१७ १३	०४ २१	१६ ४२	९	०५ ५९	१६ ५३	०५ ०३	१६ १८	०६ ०२	१७ २८	०५ २२	१७ ०७
१०	०५ २३	१७ २१	०४ ३५	१६ ३९	०५ ३८	१७ ४४	०५ ०६	१७ १६	१०	०६ ५५	१७ २८	०५ ५६	१६ ५६	०६ ५३	१८ ०७	०६ १२	१७ ४८
११	०६ १६	१७ ४९	०५ २५	१७ १०	०६ २७	१८ १६	०५ ५२	१७ ५१	११	०७ ५१	१८ ०९	०६ ५०	१७ ३९	०७ ४६	१८ ५१	०७ ०३	१८ ३३
१२	०७ १०	१८ १८	०६ १६	१७ ४२	०७ १६	१८ ५१	०६ ३८	१८ २८	१२	०८ ४७	१८ ५५	०७ ४५	१८ २६	०८ ४०	१९ ३९	०७ ५५	१९ २३
१३	०८ ०५	१८ ५१	०७ ०८	१८ १८	०८ ०६	१९ २८	०७ २६	१९ ०७	१३	०९ ४१	१९ ४७	०८ ३८	१९ १८	०९ ३३	२० ३२	०८ ४८	२० १५
१४	०९ ०१	१९ २८	०८ ०१	१८ ५७	०८ ५८	२० ०८	०८ १६	१९ ५०	१४	१० ३२	२० ४३	०९ २९	२० १३	१० २५	२१ २६	०९ ४०	२१ ०९
१५	०९ ५७	२० १०	०८ ५५	१९ ४१	०९ ५१	२० ५३	०९ ०७	२० ३६	१५	११ १८	२१ ४३	१० १७	२१ १०	११ १३	२२ २२	१० २९	२२ ०३
१६	१० ५३	२० ५८	०९ ५०	२० २९	१० ४५	२१ ४३	१० ००	२१ २६	१६	११ ५९	२२ ४३	११ ००	२२ ०८	११ ५७	२३ १९	११ १६	२२ ५७
१७	११ ४६	२१ ५२	१० ४३	२१ २३	११ ३८	२२ ३६	१० ५३	२२ १९	१७	१२ ३५	२३ ४४	११ ४०	२३ ०६	१२ ३९	- -	१२ ००	२३ ५१
१८	१२ ३६	२२ ५०	११ ३३	२२ १९	१२ २९	२३ ३२	११ ४४	२३ १४	१८	१३ ०९	- -	१२ १७	- -	१३ १७	०० १५	१२ ४१	- -
१९	१३ २१	२३ ५१	१२ २०	२३ १८	१३ १७	- -	१२ ३४	- -	१९	१३ ४२	०० ४५	१२ ५३	०० ०३	१३ ५५	०१ १०	१३ २२	०० ४४
२०	१४ ०१	- -	१३ ०४	- -	१४ ०१	०० ३०	१३ २०	०० १०	२०	१४ १४	०१ ४७	१३ २९	०१ ०२	१४ ३३	०२ ०७	१४ ०३	०१ ३७
२१	१४ ३८	०० ५३	१३ ४४	०० १७	१४ ४३	०१ २८	१४ ०५	०१ ०५	२१	१४ ४७	०२ ५१	१४ ०६	०२ ०२	१५ १२	०३ ०५	१४ ४५	०२ ३१
२२	१५ १२	०१ ५६	१४ २१	०१ १७	१५ २२	०२ २६	१४ ४७	०२ ००	२२	१५ २५	०३ ५८	१४ ४७	०३ ०४	१५ ५५	०४ ०६	१५ ३१	०३ २९
२३	१५ ४५	०३ ००	१४ ५८	०२ १७	१६ ०१	०३ २४	१५ २९	०२ ५५	२३	१६ ०७	०५ ०८	१५ ३३	०४ ११	१६ ४४	०५ ११	१६ २३	०४ ३१
२४	१६ १९	०४ ०६	१५ ३६	०३ १९	१६ ४१	०४ २३	१६ १२	०३ ५१	२४	१६ ५८	०६ २२	१६ २६	०५ २२	१७ ३९	०६ १९	१७ २०	०५ ३६
२५	१६ ५५	०५ १३	१६ १६	०४ २२	१७ २३	०५ २४	१६ ५८	०४ ४९	२५	१७ ५६	०७ ३७	१७ २६	०६ ३४	१८ ४०	०७ ३०	१८ २३	०६ ४५
२६	१७ ३६	०६ २४	१७ ००	०५ २८	१८ ०९	०६ २९	१७ ४७	०५ ५०	२६	१९ ०२	०८ ४७	१८ ३२	०७ ४३	१९ ४६	०८ ३९	१९ २९	०७ ५३
२७	१८ २२	०७ ३७	१७ ५०	०६ ३८	१९ ०१	०७ ३६	१८ ४२	०६ ५५	२७	२० १०	०९ ४९	१९ ३९	०८ ४६	२० ५३	०९ ४२	२० ३४	०८ ५७
२८	१९ १६	०८ ५१	१८ ४६	०७ ४९	१९ ५९	०८ ४६	१९ ४१	०८ ०२	२८	२१ १८	१० ४१	२० ४५	०९ ४१	२१ ५७	१० ३७	२१ ३६	०९ ५५
२९	२० १७	१० ०३	१९ ४८	०८ ५९	२१ ०१	०९ ५५	२० ४५	०९ १०	२९	२२ २३	११ २४	२१ ४६	१० २७	२२ ५६	११ २५	२२ ३४	१० ४५
३०	२१ २२	११ ०८	२० ५२	१० ०४	२२ ०६	११ ००	२१ ४९	१० १४	३०	२३ २३	१२ ००	२२ ४४	११ ०७	२३ ५१	१२ ०६	२३ २६	११ २८
३१	२२ २९	१२ ०३	२१ ५७	११ ०१	२३ ०९	११ ५७	२२ ५१	११ १३									

सन् २००७-२००८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

दिसम्बर	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई		जनवरी	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००७	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	– –	१२ ३२	२३ ३७	११ ४१	– –	१२ ४२	– –	१२ ०७	१	०० ५२	१२ २४	०० ०१	११ ४५	०१ ०३	१२ ५२	०० २७	१२ २७
२	०० २०	१३ ००	– –	१२ १३	०० ४३	१३ १६	०० १५	१२ ४४	२	०१ ४६	१२ ५४	०० ५२	१२ १८	०१ ५२	१३ २६	०१ १४	१३ ०३
३	०१ १४	१३ २८	०० २८	१२ ४४	०१ ३२	१३ ४८	०१ ०१	१३ १८	३	०२ ४१	१३ २७	०१ ४४	१२ ५३	०२ ४२	१४ ०३	०२ ०२	१३ ४३
४	०२ ०७	१३ ५५	०१ १८	१३ १४	०२ २०	१४ १९	०१ ४७	१३ ५३	४	०३ ३७	१४ ०४	०२ ३७	१३ ३३	०३ ३४	१४ ४४	०२ ५२	१४ २६
५	०३ ००	१४ २३	०२ ०८	१३ ४५	०३ ०८	१४ ५२	०२ ३२	१४ २८	५	०४ ३३	१४ ४७	०३ ३१	१४ १७	०४ २७	१५ ३०	०३ ४३	१५ १३
६	०३ ५४	१४ ५४	०२ ५८	१४ १८	०३ ५८	१५ २८	०३ १९	१५ ०६	६	०५ २९	१५ ३६	०४ २६	१५ ०७	०५ २२	१६ २०	०४ ३६	१६ ०४
७	०४ ४९	१५ २८	०३ ५०	१४ ५५	०४ ४८	१६ ०६	०४ ०७	१५ ४६	७	०६ २३	१६ ३१	०५ २०	१६ ०१	०६ १५	१७ १४	०५ ३०	१६ ५७
८	०५ ४५	१६ ०७	०४ ४४	१५ ३७	०५ ४१	१६ ४९	०४ ५८	१६ ३१	८	०७ १२	१७ २९	०६ १०	१६ ५८	०७ ०६	१८ ११	०६ २२	१७ ५३
९	०६ ४१	१६ ५२	०५ ३९	१६ २३	०६ ३५	१७ ३६	०५ ५०	१७ १९	९	०७ ५७	१८ ३०	०६ ५७	१७ ५७	०७ ५३	१९ ०८	०७ ११	१८ ४८
१०	०७ ३७	१७ ४३	०६ ३३	१७ १४	०७ २९	१८ २७	०६ ४४	१८ १०	१०	०८ ३७	१९ ३१	०७ ३९	१८ ५५	०८ ३७	२० ०५	०७ ५७	१९ ४३
११	०८ २९	१८ ३९	०७ २६	१८ ०९	०८ २१	१९ २२	०७ ३६	१९ ०४	११	०९ १२	२० ३२	०८ १८	१९ ५३	०९ १७	२१ ०१	०८ ४०	२० ३५
१२	०९ १६	१९ ३७	०८ १५	१९ ०६	०९ १०	२० १८	०८ २७	१९ ५९	१२	०९ ४५	२१ ३२	०८ ५४	२० ४९	०९ ५५	२१ ५५	०९ २०	२१ २७
१३	०९ ५८	२० ३७	०८ ५९	२० ०३	०९ ५६	२१ १४	०९ १४	२० ५४	१३	१० १६	२२ ३२	०९ २९	२१ ४६	१० ३१	२२ ५०	१० ००	२२ १९
१४	१० ३६	२१ ३८	०९ ४०	२१ ०१	१० ३८	२२ १०	०९ ५८	२१ ४७	१४	१० ४७	२३ ३४	१० ०३	२२ ४३	११ ०८	२३ ४६	१० ३९	२३ ११
१५	११ १०	२२ ३८	१० १७	२१ ५७	११ १७	२३ ०५	१० ४०	२२ ३९	१५	११ १९	– –	१० ३९	२३ ४३	११ ४६	– –	११ २०	– –
१६	११ ४२	२३ ३७	१० ५३	२२ ५३	११ ५४	२३ ५९	११ २०	२३ ३०	१६	११ ५५	०० ३७	११ १८	– –	१२ २७	०० ४४	१२ ०४	०० ०६
१७	१२ १३	– –	११ २७	२३ ५१	१२ ३०	– –	११ ५९	– –	१७	१२ ३६	०१ ४४	१२ ०२	०० ४६	१३ १३	०१ ४५	१२ ५२	०१ ०४
१८	१२ ४५	०० ३८	१२ ०२	– –	१३ ०७	०० ५४	१२ ३९	०० २२	१८	१३ २४	०२ ५३	१२ ५३	०१ ५२	१४ ०५	०२ ४९	१३ ४७	०२ ०६
१९	१३ १९	०१ ४१	१२ ४०	०० ५०	१३ ४७	०१ ५२	१३ २२	०१ १६	१९	१४ २०	०४ ०३	१३ ५०	०३ ००	१५ ०४	०३ ५६	१४ ४७	०३ ११
२०	१३ ५७	०२ ४७	१३ २२	०१ ५२	१४ ३१	०२ ५२	१४ ०९	०२ १४	२०	१५ २३	०५ १०	१४ ५४	०४ ०६	१६ ०८	०५ ०२	१५ ५१	०४ १६
२१	१४ ४२	०३ ५७	१४ १०	०२ ५८	१५ २१	०३ ५७	१५ ०१	०३ १५	२१	१६ ३२	०६ १०	१६ ०१	०५ ०८	१७ १४	०६ ०४	१६ ५६	०५ १९
२२	१५ ३५	०५ १०	१५ ०५	०४ ०८	१६ १८	०५ ०५	१६ ००	०४ २१	२२	१७ ४१	०७ ०३	१७ ०७	०६ ०२	१८ १९	०६ ५९	१७ ५९	०६ १६
२३	१६ ३७	०६ २२	१६ ०८	०५ १८	१७ २२	०६ १४	१७ ०५	०५ २९	२३	१८ ४८	०७ ४७	१८ ११	०६ ५०	१९ २१	०७ ४८	१८ ५८	०७ ०७
२४	१७ ४५	०७ २८	१७ १५	०६ २५	१८ २९	०७ २०	१८ ११	०६ ३५	२४	१९ ५१	०८ २४	१९ ११	०७ ३१	२० १८	०८ ३०	१९ ५३	०७ ५३
२५	१८ ५५	०८ २६	१८ २३	०७ २४	१९ ३६	०८ २१	१९ १७	०७ ३७	२५	२० ५०	०८ ५७	२० ०६	०८ ०७	२१ १२	०९ ०८	२० ४४	०८ ३४
२६	२० ०४	०९ १४	१९ २९	०८ १६	२० ३९	०९ १३	२० १८	०८ ३१	२६	२१ ४६	०९ २७	२१ ००	०८ ४०	२२ ०४	०९ ४३	२१ ३२	०९ ११
२७	२१ ०८	०९ ५५	२० ३०	०९ ००	२१ ३८	०९ ५८	२१ १४	०९ १९	२७	२२ ४१	०९ ५५	२१ ५१	०९ १२	२२ ५४	१० १६	२२ १९	०९ ४७
२८	२२ ०८	१० २९	२१ २६	०९ ३७	२२ ३३	१० ३८	२२ ०६	१० ०२	२८	२३ ३६	१० २३	२२ ४३	०९ ४३	२३ ४३	१० ४९	२३ ०६	१० २३
२९	२३ ०४	११ ००	२२ २०	१० ११	२३ २४	११ १३	२२ ५५	१० ४०	२९	– –	१० ५३	२३ ३५	१० १५	– –	११ २३	२३ ५४	११ ००
३०	२३ ५९	११ २८	२३ ११	१० ४३	– –	११ ४७	२३ ४१	११ १६	३०	०० ३१	११ २५	– –	१० ५०	०० ३४	१२ ००	– –	११ ३८
३१	– –	११ ५६	– –	११ १४	०० १४	१२ १९	– –	११ ५१	३१	०१ २६	१२ ००	०० २८	११ २८	०१ २५	१२ ३९	०० ४३	१२ २०

सन् २००८ ई. के दैनिक चन्द्रोदयास्त भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम में संवत् २०६४ वि.

फरवरी	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०२ २३	१२ ४१	०१ २२	१२ ११	०२ १८	१३ २३	०१ ३४	१३ ०५
२	०३ १९	१३ २७	०२ १६	१२ ५८	०३ १२	१४ ११	०२ २७	१३ ५४
३	०४ १४	१४ १९	०३ १०	१३ ५०	०४ ०५	१५ ०४	०३ २०	१४ ४७
४	०५ ०५	१५ १७	०४ ०२	१४ ४७	०४ ५७	१६ ००	०४ १३	१५ ४२
५	०५ ५२	१६ १७	०४ ५१	१५ ४५	०५ ४७	१६ ५७	०५ ०३	१६ ३८
६	०६ ३३	१७ १९	०५ ३५	१६ ४४	०६ ३२	१७ ५५	०५ ५१	१७ ३३
७	०७ ११	१८ २२	०६ १६	१७ ४३	०७ १४	१८ ५२	०६ ३६	१८ २८
८	०७ ४५	१९ २३	०६ ५३	१८ ४२	०७ ५४	१९ ४८	०७ १८	१९ २१
९	०८ १७	२० २५	०७ २९	१९ ३९	०८ ३१	२० ४४	०७ ५८	२० १४
१०	०८ ४९	२१ २७	०८ ०४	२० ३८	०९ ०८	२१ ४१	०८ ३८	२१ ०७
११	०९ २१	२२ ३१	०८ ४०	२१ ३८	०९ ४६	२२ ३९	०९ १९	२२ ०२
१२	०९ ५६	२३ ३६	०९ १८	२२ ४०	१० २७	२३ ३९	१० ०३	२२ ५९
१३	१० ३५	- -	१० ०१	२३ ४४	११ ११	- -	१० ५०	- -
१४	११ २०	०० ४४	१० ४८	- -	१२ ००	०० ४२	११ ४१	०० ००
१५	१२ १२	०१ ५३	११ ४२	०० ५०	१२ ५६	०१ ४७	१२ ३८	०१ ०२
१६	१३ १२	०३ ००	१२ ४३	०१ ५६	१३ ५६	०२ ५२	१३ ४०	०२ ०६
१७	१४ १७	०४ ०१	१३ ४७	०२ ५८	१५ ००	०३ ५३	१४ ४३	०३ ०८
१८	१५ २४	०४ ५५	१४ ५२	०३ ५३	१६ ०४	०४ ५०	१५ ४५	०४ ०६
१९	१६ ३१	०५ ४१	१५ ५५	०४ ४२	१७ ०६	०५ ४०	१६ ४४	०४ ५८
२०	१७ ३४	०६ २०	१६ ५६	०५ २५	१८ ०४	०६ २४	१७ ४०	०५ ४५
२१	१८ ३५	०६ ५४	१७ ५३	०६ ०३	१९ ००	०७ ०३	१८ ३२	०६ २७
२२	१९ ३३	०७ २५	१८ ४७	०६ ३७	१९ ५२	०७ ३९	१९ २२	०७ ०६
२३	२० २९	०७ ५४	१९ ४०	०७ ०९	२० ४३	०८ १३	२० १०	०७ ४३
२४	२१ २४	०८ २२	२० ३२	०७ ४१	२१ ३३	०८ ४६	२० ५८	०८ १९
२५	२२ १९	०८ ५२	२१ २४	०८ १३	२२ २४	०९ २०	२१ ४६	०८ ५६
२६	२३ १५	०९ २३	२२ १७	०८ ४७	२३ १५	०९ ५६	२२ ३५	०९ ३४
२७	- -	०९ ५७	२३ ११	०९ २४	- -	१० ३४	२३ २५	१० १४
२८	०० ११	१० ३५	- -	१० ०४	०० ०८	११ १६	- -	१० ५८
२९	०१ ०८	११ १९	०० ०५	१० ५०	०१ ०१	१२ ०२	०० १७	११ ४५

मार्च	दिल्ली		कलकत्ता		मुम्बई		चेन्नई	
सन् ई. २००८	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.	उदय घं. मि.	अस्त घं. मि.
१	०२ ०३	१२ ०८	०१ ००	११ ३९	०१ ५५	१२ ५३	०१ १०	१२ ३६
२	०२ ५५	१३ ०३	०१ ५२	१२ ३३	०२ ४७	१३ ४७	०२ ०२	१३ २९
३	०३ ४३	१४ ०२	०२ ४१	१३ ३०	०३ ३७	१४ ४३	०२ ५३	१४ २५
४	०४ २७	१५ ०३	०३ २७	१४ २९	०४ २४	१५ ४०	०३ ४१	१५ २०
५	०५ ०६	१६ ०५	०४ ०९	१५ २८	०५ ०७	१६ ३८	०४ २७	१६ १५
६	०५ ४२	१७ ०७	०४ ४९	१६ २७	०५ ४८	१७ ३५	०५ ११	१७ ०९
७	०६ १५	१८ १०	०५ २६	१७ २६	०६ २७	१८ ३२	०५ ५३	१८ ०३
८	०६ ४८	१९ १३	०६ ०२	१८ २६	०७ ०५	१९ ३०	०६ ३४	१८ ५७
९	०७ २१	२० १८	०६ ३८	१९ २७	०७ ४३	२० २९	०७ १५	१९ ५३
१०	०७ ५५	२१ २५	०७ १६	२० ३०	०८ २४	२१ ३०	०७ ५९	२० ५१
११	०८ ३४	२२ ३४	०७ ५८	२१ ३५	०९ ०८	२२ ३४	०८ ४६	२१ ५२
१२	०९ १८	२३ ४४	०८ ४५	२२ ४३	०९ ५७	२३ ३९	०९ ३७	२२ ५५
१३	१० ०९	- -	०९ ३८	२३ ४९	१० ५१	- -	१० ३३	- -
१४	११ ०६	०० ५३	१० ३७	- -	११ ५१	०० ४५	११ ३४	०० ००
१५	१२ ०९	०१ ५६	११ ४०	०० ५२	१२ ५३	०१ ४८	१२ ३६	०१ ०२
१६	१३ १५	०२ ५१	१२ ४४	०१ ४९	१३ ५७	०२ ४५	१३ ३८	०२ ०१
१७	१४ २१	०३ ३९	१३ ४७	०२ ३९	१४ ५८	०३ ३६	१४ ३७	०२ ५४
१८	१५ २४	०४ १९	१४ ४७	०३ २३	१५ ५६	०४ २१	१५ ३३	०३ ४१
१९	१६ २४	०४ ५४	१५ ४४	०४ ०१	१६ ५१	०५ ०१	१६ २५	०४ २४
२०	१७ २२	०५ २६	१६ ३८	०४ ३६	१७ ४४	०५ ३७	१७ १५	०५ ०३
२१	१८ १८	०५ ५५	१७ ३१	०५ ०९	१८ ३५	०६ १२	१८ ०३	०५ ४१
२२	१९ १३	०६ २३	१८ २३	०५ ४०	१९ २५	०६ ४५	१८ ५०	०६ १७
२३	२० ०९	०६ ५२	१९ १५	०६ १२	२० १५	०७ १९	१९ ३८	०६ ५३
२४	२१ ०५	०७ २२	२० ०८	०६ ४५	२१ ०७	०७ ५४	२० २७	०७ ३०
२५	२२ ०१	०७ ५५	२१ ०२	०७ २१	२१ ५९	०८ ३१	२१ १७	०८ १०
२६	२२ ५७	०८ ३२	२१ ५६	०८ ००	२२ ५२	०९ १२	२२ ०८	०८ ५३
२७	२३ ५३	०९ १४	२२ ५०	०८ ४४	२३ ४५	०९ ५६	२३ ०१	०९ ३८
२८	- -	१० ००	२३ ४३	०९ ३१	- -	१० ४४	२३ ५३	१० २८
२९	०० ४६	१० ५२	- -	१० २३	०० ३८	११ ३६	- -	११ १९
३०	०१ ३५	११ ४८	०० ३३	११ १८	०१ २८	१२ ३१	०० ४३	१२ १३
३१	०२ २०	१२ ४७	०१ २९	१२ १५	०२ २५	१३ २७	०१ ३२	१३ ०७

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६४ वि.

द = दक्षिण

ता.	अप्रैल २००७ ई.			मई २००७ ई.			जून २००७ ई.			जुलाई २००७ ई.			ता.
	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	
१	उ. ४.३०९९	उ. २.५६९४	द. ०.५५९७	उ. १४.८९६८	द. १२.६१८३	द. ३.२७०५	उ. २१.९७३१	द. २६.८३३०	द. ४.९९२०	उ. २३.१४७३	द. २६.८३५१	द. ४.१४४३	१
२	४.६९५८	द. ३.११११२	१.६२०८	१५.१९९७	१७.४९३१	४.००१८	२२.१०९४	२८.१०६४	४.९१२५	२३.०८०७	२४.०६३४	३.३७३७	२
३	५.०८०४	८.६६५१	२.६०७१	१५.४९८३	२१.७२५६	४.५६१०	२२.२३९४	२७.९४९४	४.५९४०	२३.००७५	१९.९६७६	२.४०६८	३
४	५.४६३४	१३.९१३८	३.४७९५	१५.७९२७	२५.०८९२	४.९२१३	२२.३६२९	२६.३१०१	४.०४१५	२२.९२७६	१४.७९५०	१.२९०४	४
५	५.८४४८	१८.६६८०	४.२०२९	१६.०८२८	२७.३५३७	५.०६२२	२२.४७९९	२३.२५९८	३.२७२६	२२.८४१०	८.८३५५	०.०८४२	५
६	६.२२४६	२२.७२२१	४.७४७१	१६.३६८४	२८.३१८२	४.९७०१	२२.५९०३	१८.९६९९	२.३१७४	२२.७४७८	२.३९२३	उ. १.१४२६	६
७	६.६०२६	२५.८५६२	५.०८७०	१६.६४९५	२७.८५०८	४.६३९९	२२.६९४२	१३.६७२४	१.२१८२	२२.६४७९	उ. ४.२२६५	२.३१५५	७
८	६.९७८८	२७.८४११	५.२०२७	१६.९२६०	२५.९२०५	४.०७५९	२२.७९१४	७.६२७५	०.०२९४	२२.५४१६	१०.६९९७	३.३६००	८
९	७.३५३०	२८.५०६९	५.०८००	१७.१९७९	२२.६०१३	३.२९२४	२२.८८२०	१.११११५	उ. १.१८३९	२२.४२८७	१६.६७८४	४.२०६४	९
१०	७.७२५२	२७.६९९५	४.७११०	१७.४६५०	१८.०५१३	२.३१५५	२२.९६५९	उ. ५.५७५४	२.३४७७	२२.३०९३	२१.७७९३	४.७९५९	१०
११	८.०९५३	२५.३९०६	४.०९५९	१७.७२७२	१२.४८५१	१.१८४६	२३.०४३०	१२.०९१६	३.३८२५	२२.१८३५	२५.६०३९	५.०८६९	११
१२	८.४६३१	२१.६४७६	३.२४५८	१७.९८४५	६.१५६६	उ. ०.०४५६	२३.११३४	१८.०३९०	४.२११०	२२.०५१३	२७.८००३	५.०६०४	१२
१३	८.८२८६	१६.६३१०	२.१८५९	१८.२३६८	उ. ०.६३८९	१.३०३६	२३.१७६९	२२.९६९४	४.७६७१	२१.९१२८	२८.१६१०	४.७२२९	१३
१४	९.१९१७	१०.५७८३	०.९६१६	१८.४८४०	७.५५१५	२.५०३२	२३.२३३७	२६.४३४६	५.००७०	२१.७६८०	२६.७०२८	४.१०६०	१४
१५	९.५५२२	३.७९५०	उ. ०.३५८५	१८.७२६०	१४.१६३२	३.५५०९	२३.२८३६	२८.०८९९	४.९१७१	२१.६१७०	२३.६६१८	३.२६१५	१५
१६	९.९१०१	उ. ३.३४८८	१.६८२९	१८.९६२७	१९.९९३५	४.३५९२	२३.३२६६	२७.८११२	४.५१५९	२१.४५९९	१९.४०४४	२.२५३७	१६
१७	१०.२६५३	१०.३९९५	२.९०६४	१९.१९४१	२४.५४२१	४.८६२४	२३.३६२८	२५.७४२१	३.८४८९	२१.२९६७	१४.३२०३	१.१५००	१७
१८	१०.६१७६	१६.८७४७	३.९२६६	१९.४२०१	२७.३८३०	५.०२८४	२३.३९२१	२२.२२३८	२.९७८१	२१.१२७५	८.७५३६	०.०१४२	१८
१९	१०.९६७१	२२.२६३३	५.६६२२	१९.६४०५	२८.२८८५	४.८६२२	२३.४१८५	१७.६६६३	१.९७०९	२०.९५२३	२.९८०३	द. १.०९८१	१९
२०	११.३१३५	२६.११७७	५.०६७०	१९.८५५३	२७.२८५०	४.४००२	२३.४३०१	१२.४४७०	०.८९१४	२०.७७१३	द. २.७८४३	२.१४०१	२०
२१	११.६५६७	२८.१४३९	५.१३३१	२०.०६८५	२४.६५७९	३.६९८०	२३.४३८७	६.८६८८	द. ०.२०४०	२०.५८४४	८.३६५५	३.०७३७	२१
२२	११.९९६८	२८.२७६१	४.८८५०	२०.२६८०	२०.७९०६	२.८१८८	२३.४४०४	१.१६१९	१.२६७५	२०.३९१७	१३.६०६६	३.८६७७	२२
२३	१२.३३३५	२६.६७७४	४.३६७८	२०.४६५६	१६.०६७२	१.८२४०	२३.४३५२	द. ४.४९४०	२.२५९०	२०.१९३४	१८.३४६७	४.४९५१	२३
२४	१२.६६६८	२३.६६०१	३.६३५९	२०.६५७४	१०.८०७५	०.७६८८	२३.४२३२	९.९४४४	३.१४४३	१९.९८९५	२२.४०३८	४.९३२२	२४
२५	१२.९९६६	१९.५७८५	२.७४४७	२०.८४३२	५.२५८९	द. ०.२९८३	२३.४०४३	१५.०३५३	३.८९२७	१९.७८०१	२५.४६६७	५.१५७३	२५
२६	१३.३२२८	१४.७५५७	१.७४६९	२१.०२३१	द. ०.३८६७	१.३३५५	२३.३७८५	१९.५९३३	४.४७६१	१९.५६५२	२७.६०४४	५.१५१८	२६
२७	१३.६४५३	९.४५७३	०.६९०६	२१.१९६८	५.९६८१	२.३०४९	२३.३४५८	२३.४१३७	४.८६७९	१९.३४४९	२८.२९७९	४.९०२०	२७
२८	१३.९६४०	३.८९६६	द. ० ३७९९	२१.३६४५	११.३३०४	३.१७१९	२३.३०६४	२६.२६२३	५.०४४७	१९.११९३	२७.४९३२	४.४०२७	२८
२९	१४.२७८९	द. १.७४७०	१.४२३०	२१.५२६०	१६.३०५७	३.९०३४	२३.२६०१	२७.८९८९	४.९८८०	१८.८८८५	२५.१५१९	३.६६१२	२९
३०	उ. १४.५८९९	द. ७.३०८२	द. २.३९९१	२१.६८१३	२०.६९९९	४.४६८२	उ. २३.२०७१	द. २८.१२४०	द. ४.६८७६	१८.६५२५	२१.३७३१	२.७०१८	३०
३१				उ. २१.८३०३	द. २४.२८९३	द. ४.८३८७				उ. १८.४११४	द. १६.३७५७	द. १.५६८०	३१

मार्च २००७ के लिए पृष्ठ २२० देखें

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६४ वि.

द = दक्षिण

ता.	अगस्त २००७ ई.			सितम्बर २००७ ई.			अक्टूबर २००७ ई.			नवम्बर २००७ ई.			ता.
	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	
१	उ.१८.१६५३	द.१०.४५७२	द.०.३२२१	उ.८.४९६४	उ.१४.००७६	उ.४.०२४२	द.२.९५२५	उ.२६.३८८५	उ.५.२०७७	द.१४.२३३८	उ.२३.७३७८	उ.३.१०१९	१
२	१७.९१४३	३.९५३७	उ.०.९५९२	८.१३४२	११.६९१०	४.७५५०	३.३४०३	२८.१२३३	५.०६७०	१४.५५४६	१९.६१८५	२.०९८७	२
३	१७.६५८३	उ.२.७८५६	२.१९२५	७.७६९७	२४.१७२५	५.१७७८	३.७२७६	२८.००२६	४.६२६६	१४.८७१४	१४.७०२२	१.०१८०	३
४	१७.३९७६	९.४०७१	३.२९५६	७.४०३१	२७.१२६२	५.२७८१	४.११४२	२६.१७९७	३.९३६१	१५.१८४३	९.२९९८	द.०.०८४२	४
५	१७.१३२१	१५.५५१९	४.१९६२	७.०३४५	२८.३४७१	५.०६५५	४.५००१	२२.९४८९	३.०५२३	१५.४९३०	३.६५६८	१.१५९३	५
६	१६.८६२०	२०.८५३०	४.८३७५	६.६६३९	२७.८०१८	४.५६८८	४.८८५०	१८.६५३६	२.०३३६	१५.७९७५	द.२.०२८१	२.१६४३	६
७	१६.५८७३	२४.९४६८	५.१८१९	६.२९१५	२५.६३५५	३.८३०९	५.२६९०	१३.६१९३	०.९३७०	१६.०९७७	७.५८००	३.०६१५	७
८	१६.३०८१	२७.५१२१	५.२१३७	५.९१७३	२२.१२१२	२.९०३६	५.६५१९	८.१२७०	द.०.१८३५	१६.३९३३	१२.८२९२	३.८१७७	८
९	१६.०२४५	२८.३३८३	४.९३८५	५.५४१५	१७.५८६३	१.८४४०	६.०३३६	२.४१३८	१.२७७८	१६.६८४४	१७.५९७८	४.४०४९	९
१०	१५.७३६६	२७.३९२०	४.३८२०	५.१६४१	१२.३५२५	०.७१०९	६.४१४०	द.३.३१५३	२.२९९८	१६.९७०८	२१.६९३६	४.८००२	१०
११	१५.४४४५	२४.८३२८	३.५८७३	४.७८५२	६.७०७५	द.०.४३८०	६.७९३०	८.८७२३	३.२०८७	१७.२५२४	२४.९१४४	४.९८७३	११
१२	१५.१४८३	२०.९६०८	२.६०९८	४.४०५०	०.८९८४	१.५४८८	७.१७०४	१४.०७४९	३.९६९६	१७.५२९०	२७.०६४०	४.९५६८	१२
१३	१४.८४८०	१६.१३१४	१.५१२४	४.०२३५	द.४.८६१०	२.५७३९	७.५४६२	१८.७३७५	४.५५४२	१७.८००६	२७.९७९४	४.७०६९	१३
१४	१४.५४३८	१०.६८७६	०.३५८८	३.६४०८	१०.३८०१	३.४७२७	७.९२०३	२२.६६८१	४.९४१०	१८.०६७०	२७.५६२८	४.२४३१	१४
१५	१४.२३५७	४.९२६१	द.०.७९०६	३.२५७१	१५.४७९७	४.२१२४	८.२९२६	२५.६७१७	५.११५४	१८.३२८२	२५.८००९	३.५७८३	१५
१६	१३.९२३९	द.०.९०८७	१.८८३२	२.८७२३	१९.९८११	४.७६७४	८.६६२९	२७.५६३४	५.०६९५	१८.५८४०	२२.७६४०	२.७३२८	१६
१७	१३.६०८४	६.६१४७	२.८७४४	२.४८६७	२३.६९९३	५.११८८	९.०३११	२८.१९१३	४.८००५	१८.८३४३	१८.५८५६	१.७३४८	१७
१८	१३.२८९३	१२.०१६९	३.७२८३	२.१००३	२६.४४२०	५.२५२६	९.३९७१	२७.४६१५	४.३११६	१९.०७९०	१३.४३९२	०.६२१९	१८
१९	१२.९६६७	१६.९४९५	४.४१६३	१.७१३२	२८.०२०३	५.१५८९	९.७६०९	२५.३४६२	३.६११५	१९.३१७९	७.४२५६	उ.०.५५७३	१९
२०	१२.६४०७	२१.२४०२	४.९१५४	१.३२५५	२८.२७२६	४.८३१९	१०.१२२३	२१.९३५८	२.७१७०	१९.५५११	१.०७७१	१.७४०९	२०
२१	१२.३११४	२४.६११३	५.२०६४	०.९३७३	२७.०९६०	४.२७०९	१०.४८११	१७.३२७७	१.६५४९	१९.७७८४	उ.५.६२२६	२.८४३२	२१
२२	११.९७९०	२७.११९२	५.२७३०	०.५४८६	२४.४७२३	३.४८३०	१०.८३७४	११.७१४४	०.४६६६	१९.९९९७	१२.२१४०	३.८०८८	२२
२३	११.६४३३	२८.२९१८	५.१०२३	०.१५९७	२०.४७८६	२.४८७२	११.१९०९	५.३३१८	उ.०.७८८६	२०.२१४८	१८.२४६२	४.५२२२	२३
२४	११.३०४७	२८.०४४५	४.६८६१	द.०.२२९४	१५.२८२२	१.३१९३	११.५४१६	उ.१.५२१३	२.०३१८	२०.४२३८	२३.११५६	४.९२३४	२४
२५	१०.९६३१	२६.२८५२	४.०२४६	०.६१८७	९.१२९३	०.०३६४	११.८८९४	८.४६९२	३.१६८५	२०.६२६५	२६.५४५३	४.९७३४	२५
२६	१०.६१८६	२३.०३६३	३.१३०९	१.००८०	२.३३७१	उ १.२८२५	१२.२३४२	१५.०४३५	४.१०११	२०.८२२९	२७.९२७४	४.६७३३	२६
२७	१०.२७१४	१८.४९१२	२.०३५८	१.३९७३	उ.४.७११०	२.४८०९	१२.५७५८	२०.७५४९	४.७४५५	२१.०१२८	२७.२६१०	४.०६३०	२७
२८	९.९२१५	१२.७४५९	०.७९१६	१.७८६५	११.४७५२	३.६३७५	१२.९१४३	२५.०५५६	५.०४८७	२१.१९६२	२४.७७३९	३.२०९६	२८
२९	९.५६८९	६.२७१०	उ.०.५२८०	२.१७५५	१७.७८००	४.४८३१	१३.२४९४	२७.५४९४	४.९९८०	२१.३७३०	२०.८८३९	२.१९२०	२९
३०	९.२१३९	उ.०.६१४३	१.८३२८	द.२.५६४१	उ.२२.८५३३	उ.५.०१४४	१३.५८११	२८.०५८५	४.६१८९	द.२१.५४३०	उ.१६.०४२९	उ.१.०८६७	३०
३१	उ.८.८५६३	उ.७.५११४	३.०२७४				द.१३.९०९३	उ.२६.६८३६	उ.३.९६४७				३१

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६४ वि.

द = दक्षिण

ता.	दिसम्बर २००७ ई.			जनवरी २००८ ई.			फरवरी २००८ ई.			मार्च २००८ ई.			ता.
	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.	
१	द. २१.७०६२	उ. १०.६३४३	द. ०.०३९६	द. २३.०६९०	द. १०.३४७१	द. ३.८३५२	द. १७.३३६५	द. २५.४७७६	द. ५.२५०१	द. ७.५२४८	द. २७.९५३४	द. ४.८५३३	१
२	२१.८६२६	४.९५७४	१.१३२२	२२.९८९२	१५.३६७७	४.४५६०	१७.०५३६	२७.३८०१	५.०७८९	७.१४३५	२७.७२६५	४.३१५८	२
३	२२.०१११	द. ०.७६६८	२.१४७१	२२.९०१८	१९.७८९६	४.८८२२	१६.७६५७	२८.०२२१	४.६८१६	६.७६०५	२६.१३८७	३.५७२४	३
४	२२.१५४२	६.३६२१	३.०४८२	२२.८०६७	२३.४३७४	५.०९९५	१६.४७२९	२७.२९९०	४.०६४३	६.३७५९	२३.२२०९	२.६४२१	४
५	२२.२८९४	११.६७१४	३.८०५७	२२.७०४०	२६.११८९	५.०९७४	१६.१७५२	२५.१८६०	३.२४१८	५.९८९८	१९.०८३३	१.५५५२	५
६	२२.४१७३	१६.५३४७	४.३९४३	२२.५९३९	२७.६४३३	४.८७०३	१५.८७३०	२१.७६०८	२.२४०५	५.६०२४	१३.९०५५	०.३५६२	६
७	२२.५३८०	२०.७७५७	४.७१२७	२२.४७६२	२७.८५६७	४.४१९४	१५.५६६१	१७.१८९१	१.१०११	५.२१३६	७.९२४८	उ. ०.८९४०	७
८	२२.६५१३	२४.१९८५	४.९८४३	२२.३५१२	२६.६८३४	३.७५५२	१५.२५४९	११.७०५९	उ. ०.१२१५	४.८२३८	१.४२८८	२.११९५	८
९	२२.७५७३	२६.५९९३	४.९५८२	२२.२१८८	२४.१५१९	२.८९८६	१४.९३९३	५.५८२५	१.३५९४	४.४३२८	उ. ५.२४९७	३.२३५९	९
१०	२२.८५५७	२७.७९४६	४.७१०६	२२.०७९२	२०.३९१६	१.८८३०	१४.६१९५	उ. ०.८८१९	२.५३७५	४.०४१०	११.७३७२	४.१६०३	१०
११	२२.९४६७	२७.६५९३	४.२४५९	२१.९३२३	१५.६०५३	०.७५३३	१४.२९५७	७.३७१०	३.५७९५	३.६४८३	१७.६२८५	४.८२२७	११
१२	२३.०३०१	२६.१५९८	३.५७८१	२१.७७८४	१०.०३४९	उ. ०.४३५३	१३.९६७९	१३.५५००	४.४१५८	३.२५४९	२२.४०७०	५.१७५८	१२
१३	२३.१०५९	२३.३६२७	२.७३०४	२१.६१७३	३.९३७८	१.६२०१	१३.६३६३	१९.०६२१	४.९८९७	२.८६१०	२५.९८५७	५.१९९९	१३
१४	२३.१७४०	१९.४१४७	१.७३५५	२१.४४९४	उ. २.४२०६	२.७३४०	१३.३०१०	२३.५३३६	५.२६२३	२.४६६५	२७.७७१९	४.९०२५	१४
१५	२३.२३४५	१४.५१०१	०.६३४९	२१.२७४५	८.७६०४	३.७०९३	१२.९६२२	२६.६०२४	५.२१५३	२.०७१७	२७.७३९४	४.३१४०	१५
१६	२३.२८७२	८.८६७१	उ. ०.५२१८	२१.०९२८	१४.७७०४	४.४८१३	१२.६१९८	२७.९८०६	४.८५२६	१.६७६६	२५.९६३४	३.४८२४	१६
१७	२३.३३२१	२.७१०५	१.६७७१	२०.९०४४	२०.०९३१	४.९९३०	१२.२७४१	२७.५३६३	४.१९९६	१.२८१४	२२.६८८३	२.४६६५	१७
१८	२३.३६९३	उ. ३.७१२९	२.७६५८	२०.७०९४	२४.३२५८	५.२००९	११.९२५२	२५.३४३६	३.३०१७	०.८८६१	१८.२४९३	१.३३१२	१८
१९	२३.३९८७	१०.११६८	३.७१७१	२०.५०७८	२७.०६१५	५.०८१४	११.५७३२	२१.६६१३	२.२२०१	०.४९०८	१२.९९८४	०.१४३५	१९
२०	२३.४२०२	१६.१५०१	४.४५८२	२०.२९९८	२७.९८३५	४.६३६७	११.२१८१	१६.८५२८	१.०२६६	०.०९५६	७.२६०७	द. १.०३१९	२०
२१	२३.४३४०	२१.३८३१	४.९२२७	२०.०८५५	२६.९८००	३.८९७०	१०.८६०१	११.३०२६	द. ०.२०३६	उ. ०.२९९४	१.३२१८	२.१३५२	२१
२२	२३.४३९९	२५.३३१२	५.०६१७	१९.८६४९	२४.११९०	२.९१८९	१०.४९९४	५.३६२६	१.३९९०	०.६९४०	द. ४.५६९७	३.११५०	२२
२३	२३.४३८०	२७.५४४४	४.८५४८	१९.६३८२	१९.९९२४	१.७७७४	१०.१३५९	द. ०.६६७५	२.४९७७	१.०८८३	१०.१९३२	३.९३०४	२३
२४	२३.४२८२	२७.७५३६	४.३१७७	१९.४०५४	१४.७९६४	०.५५५६	९.७६९८	६.५३९४	३.४५१०	१.४८२१	१५.३४६८	४.५५१८	२४
२५	२३.४१०६	२५.९८६७	३.५०००	१९.१६६७	९.०२७६	द. ०.६६७३	९.४०१२	१२.०४४६	४.२२३५	१.८७५३	१९.८४०३	४.९६०५	२५
२६	२३.३८५२	२२.५५३५	२.४७६४	१८.९२२२	३.०३३१	१.८२३३	९.०३०३	१६.९९९८	४.७९२१	२.२६७८	२३.४९१५	५.१४७६	२६
२७	२३.३५२०	१७.९०९५	१.३३११	१८.६७१६	द. २.९१६३	२.८५९२	८.६५७०	२१.२३३५	५.१४३४	२.६५९६	२६.१३०२	५.१११३	२७
२८	२३.३११०	१२.५१०५	०.१४५४	१८.४१५५	८.६०९८	३.७३६७	८.२८१६	२४.५७७४	५.२७११	३.०५०५	२७.६०९४	४.८५५९	२८
२९	२३.२६२१	६.७३३८	द. १.०११८	१८.१५३९	१३.८७४०	४.४२९३	द. ७.९०४२	द. २६.८६६९	द. ५.१७३७	३.४४०४	२७.८२३०	४.३८९८	२९
३०	२३.२०५५	०.८६४३	२.०८६५	१७.८८६७	१८.५४९७	४.९१९४				३.८२९३	२६.७२३२	३.७२५७	३०
३१	द. २३.१४१२	द. ४.८८५६	द. ३.०३७७	द. १७.६१४२	द. २२.४७५०	द. ५.१९५६				उ. ४.२१७१	द. २४.३२८५	द. २.८८११	३१

सूर्य तथा चन्द्रमा की क्रान्ति तथा चन्द्रशर (प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६४ वि.

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर द = दक्षिण

मार्च २००७ ई.

ता.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.
२०	द. ०.३९७४	उ. ६.६६४६	उ. २.२७०६
२१	०.००१९	१३.४९९६	३.४३६४
२२	उ. ०.३९३३	१९.४७०३	४.३५२२
२३	०.७८८२	२४.१५३७	४.९६२४
२४	१.१८२७	२७.२२९१	५.२४६४
२५	१.५७६६	२८.५३३४	५.२१३३
२६	१.९६९८	२८.०८९६	४.८९२६
२७	२.३६२३	२६.०८४१	४.३२५५
२८	२.७५३९	२२.७९९६	३.५५८४
२९	३.१४४६	१८.५४१९	२.६३९२
३०	३.५३४२	१३.५९४०	१.६१५४
३१	उ. ३.९२२७	उ. ८.२०००	उ. ०.५३३८

अप्रैल २००८ ई.

ता.	सू. क्रां अं. दशम.	चं. क्रां अं. दशम.	चं. शर अं. दशम.
१	उ. ४.६०३६	द. २०.७२०३	द. १.८८०४
२	४.९८८७	१६.०३३२	०.७५७९
३	५.३७२४	१०.४४७३	उ. ०.४३९३
४	५.७५४५	४.१९०३	१.६४८४
५	६.१३५०	२.४५२९	२.७९१६
६	उ. ६.५१३७	द. ९.१२९४	उ. ३.७८१६

पृष्ठ २२४ का शेष

यूरेनस, नेपच्यून के क्रांति शर

(प्रातः ५ घं. ३० मि. भा.स्टे.टा.) संवत् २०६४ वि.

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर द = दक्षिण

तारीख सन् ई. २००७	यूरेनस क्रान्ति अं. दशम.	यूरेनस शर अं. दशम.	नेपच्यून क्रान्ति अं. दशम.	नेपच्यून शर अं. दशम.
मार्च २०	द. ६.४०	द. ०.७४	द. १४.७५	द. ०.२४
,, २५	६.२९	०.७४	१४.७०	०.२४
अप्रैल १	६.१४	०.७४	१४.६४	०.२४
,, ९	५.९८	०.७४	१४.५८	०.२४
,, १७	५.८३	०.७४	१४.५२	०.२४
,, २५	५.७०	०.७५	१४.४८	द. ०.२५
मई १	५.६०	०.७५	१४.४५	०.२४
,, ९	५.४८	०.७५	१४.४२	०.२५
,, १७	५.३९	०.७५	१४.४१	०.२५
,, २५	५.३१	०.७६	१४.४०	०.२५
जून १	५.२६	०.७६	१४.४१	०.२५
,, ९	५.२१	०.७७	१४.४३	०.२६
,, १७	५.१९	०.७७	१४.४५	०.२६
,, २५	५.१९	०.७८	१४.४९	०.२६
जुलाई १	५.२०	०.७८	१४.५३	०.२६
,, ९	५.२३	०.७९	१४.५८	०.२७
,, १७	५.२८	०.७९	१४.६४	०.२७
,, २५	५.३५	०.७९	१४.७०	०.२७
अगस्त १	५.४३	०.८०	१४.७६	०.२७
,, ९	५.५२	०.८०	१४.८३	०.२७
,, १७	५.६३	०.८०	१४.९०	०.२७
,, २५	५.७५	०.८१	१४.९७	०.२८
सितम्बर १	५.८५	०.८१	१५.०३	०.२८
,, ९	५.९८	०.८१	१५.१०	०.२८
,, १७	६.१०	०.८१	१५.१५	०.२८
,, २५	द. ६.२२	द. ०.८१	द. १५.२०	द. ०.२८

तारीख सन् ई. २००७	यूरेनस क्रान्ति अं. दशम.	यूरेनस शर अं. दशम.	नेपच्यून क्रान्ति अं. दशम.	नेपच्यून शर अं. दशम.
अक्टूबर १	द. ६.३१	द. ०.८०	द. १५.२४	द. ०.२८
,, ९	६.४१	०.८०	१५.२७	०.२८
,, १७	६.५०	०.८०	१५.३०	०.२८
,, २५	६.५८	०.७९	१५.३१	०.२८
नवम्बर १	६.६४	०.७९	१५.३२	०.२८
,, ९	६.६८	०.७९	१५.३१	०.२८
,, १७	६.७१	०.७८	१५.२९	०.२८
,, २५	६.७१	०.७७	१५.२७	०.२८
दिसम्बर १	६.७०	०.७७	१५.२४	०.२८
,, ९	६.६७	०.७७	१५.१९	०.२८
,, १७	६.६१	०.७६	१५.१३	०.२८
,, २५	६.५४	०.७६	१५.०७	०.२८
२००८ ई.				
जनवरी १	६.४६	०.७५	१५.००	०.२८
,, ९	६.३५	०.७५	१४.९२	०.२९
,, १७	६.२३	०.७४	१४.८४	०.२९
,, २५	६.०९	०.७४	१४.८४	०.२९
फरवरी १	६.०९	०.७४	१४.७४	०.२९
,, ९	५.७९	०.७३	१४.५७	०.२९
,, १७	५.६२	०.७३	१४.४७	०.२९
,, २५	५.४५	०.७३	१४.३७	०.२९
मार्च १	५.३४	०.७३	१४.३१	०.२९
,, ९	५.१६	०.७३	१४.२२	०.२९
,, १७	४.९८	०.७३	१४.१४	०.३०
,, २५	४.८०	०.७३	१४.०५	०.३०
अप्रैल १	४.६५	०.७३	१३.९९	०.३०
,, ६	द. ४.५५	द. ०.७४	द. १३.९५	द. ०.३१

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः ५ घं. ५ मि. ३० भा.स्टे.टा.) संवत २०६४ वि. द = दक्षिण

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रात: घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६४ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००७	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	२००७
मार्च १९	द.१७.१३३६	द.१.१२२३	द.११.९०४७	द.०.६४९६	द.२२.२८८४	उ.०.७२१७	उ.१२.०५१०	उ.०.१२९०	उ.१६.३७८८	उ.१.३३००	मार्च १९
२२	१६.४६२३	१.१५०३	११.३६१८	१.१३०८	२२.२९८५	०.७२३७	१३.४३८५	०.२९०८	१६.४२६४	१.३२९५	२२
२५	१५.७६६८	१.१७७६	१०.५७६७	१.५४००	२२.३०६५	०.७२५५	१४.७७८९	०.४५५१	१६.४६९५	१.३२८६	२५
२८	१५.०४८६	१.२०४२	९.५६६२	१.८७६६	२२.३१२३	०.७२७३	१६.०६६७	०.६२०९	१६.५०७८	१.३२७४	२८
३१	१४.३०८८	१.२३०१	८.३४४८	२.१४०५	२२.३१६१	०.७२९०	१७.२९६५	०.७८७३	१६.५४१३	१.३२६०	३१
अप्रैल १	१४.०५७६	१.२३८६	७.८९२९	२.२१२२	२२.३१६९	०.७२९५	१७.६९२६	०.८४२७	१६.५५१४	१.३२५४	अप्रैल १
४	१३.२९११	१.२६३४	६.४०९३	२.३७८७	२२.३१७८	०.७३११	१८.८३७०	१.००८४	१६.५७८३	१.३२३६	४
७	१२.५०५९	१.२८७४	४.७४२०	२.४७१६	२२.३१६८	०.७३२५	१९.९११७	१.१७२६	१६.६००२	१.३२१६	७
१०	११.७०३५	१.३१०४	२.९०१४	२.४९०२	२२.३१३७	०.७३३८	२०.९१११	१.३३४१	१६.६१७१	१.३१९४	१०
१३	१०.८८५२	१.३३२४	०.८९८४	२.४३३६	२२.३०८७	०.७३४९	२१.८३३१	१.४९२०	१६.६२८९	१.३१७१	१३
१६	१०.०५२७	१.३५३५	उ. १.२५५३	२.३०१२	२२.३०१७	०.७३५८	२२.६७०९	१.६४५२	१६.६३५६	१.३१४६	१६
१९	९.२०७३	१.३७३५	३.५४५४	२.०९२७	२२.२९२६	०.७३६५	२३.४२१२	१.७९२६	१६.६३७१	१.३१२०	१९
२२	८.३५०५	१.३९२६	५.९५३४	१.८०८७	२२.२८१६	०.७३६९	२४.०८०६	१.९३३१	१६.६३३५	१.३०९२	२२
२५	७.४८४०	१.४१०५	८.४५३४	१.४५२१	२२.२६८७	०.७३७०	२४.६४६०	२.०६५६	१६.६२४८	१.३०६४	२५
२८	६.६०८९	१.४२७३	११.००८५	१.०२८६	२२.२५३९	०.७३६८	२५.११४८	२.१८९१	१६.६११०	१.३०३५	२८
मई १	५.७२६६	१.४४२९	१३.५६६४	०.५४९३	२२.२३७०	०.७३६२	२५.४८५३	२.३०२५	१६.५९२३	१.३००६	मई १
४	४.८३८२	१.४५७२	१६.०५६८	०.०३२३	२२.२१८१	०.७३५३	२५.७५६३	२.४०४९	१६.५६८६	१.२९७७	४
७	३.९४५३	१.४७०२	१८.३९३९	उ. ०.४९६७	२२.१९७२	०.७३४१	२५.९२७५	२.४९५०	१६.५४०१	१.२९४७	७
१०	३.०४९१	१.४८१९	२०.४८६७	१.००५९	२२.१७४४	०.७३२५	२५.९९९१	२.५७१९	१६.५०६८	१.२९१८	१०
१३	२.१५११	१.४९२२	२२.२५७१	१.४६२०	२२.१४९७	०.७३०४	२५.९७१९	२.६३४४	१६.४६८८	१.२८८९	१३
१६	१.२५२८	१.५०१२	२३.६५५९	१.८३५६	२२.१२३०	०.७२८०	२५.८४७५	२.६८१४	१६.४२६०	१.२८६०	१६
१९	०.३५५६	१.५०८८	२४.६६८७	२.१०५५	२२.०९४५	०.७२५०	२५.६२८०	२.७११८	१६.३७८७	१.२८३२	१९
२२	उ. ०.५३८९	१.५१५०	२५.३१०२	२.२५८४	२२.०६४४	०.७२१६	२५.३१६६	२.७२४६	१६.३२६९	१.२८०५	२२
२५	१.४२९६	१.५१९७	२५.६१४४	२.२८७६	२२.०३२७	०.७१७८	२४.९१७०	२.७१८६	१६.२७०७	१.२७७९	२५
२८	२.३१५१	१.५२३०	२५.६२४५	२.१९०५	२१.९९९५	०.७१३४	२४.४३३२	२.६९२९	१६.२१०३	१.२७५३	२८
३१	३.१९६५	१.५२४७	२५.३८७०	१.९६६८	२१.९६५०	०.७०८६	२३.८७०२	२.६४६३	१६.१४५७	१.२७२९	३१
जून १	३.४८६०	१.५२४९	२५.२६०९	१.८६४३	२१.९५३२	०.७०६९	२३.६६५७	२.६२५९	१६.१२३३	१.२७२१	जून १
४	४.३५५३	१.५२४५	२४.७६४८	१.४७४४	२१.९१७४	०.७०१५	२३.००५०	२.५४९८	१६.०५३३	१.२६९९	४
७	५.२१५५	१.५२२५	२४.१२६२	०.९६४५	२१.८८०७	०.६९५७	२२.२७७४	२.४५०१	१५.९७९५	१.२६७८	७
१०	६.०६५४	१.५१८८	२३.३८६७	०.३४२४	२१.८४३५	०.६८९४	२१.४८८८	२.३२५७	१५.९०१९	१.२६५८	१०
१३	६.९०३७	१.५१३७	२२.५८६७	द. ०.३७७८	२१.८०५९	०.६८२७	२०.६४५१	२.१७५२	१५.८२०६	१.२६४०	१३
१६	७.७२९१	१.५०६९	२१.७६५१	१.१५२७	२१.७६८४	०.६७५५	१९.७५२६	१.९९७५	१५.७३५६	१.२६२३	१६
१९	८.५४०४	१.४९८८	२०.९६४०	२.००५९	२१.७३१४	०.६६७९	१८.८१८३	१.७९११	१५.६४७२	१.२६०९	१९
२२	९.३३६५	१.४८८६	२०.२२१५	२.८२६५	२१.६९५०	०.६६००	१७.८४९४	१.५५४९	१५.५५५६	१.२५९५	२२
२५	१०.११६४	१.४७६९	१९.५७९३	३.५७१७	२१.६५९६	०.६५१६	१६.८५३३	१.२८७४	१५.४६०७	१.२५८४	२५
२८	उ. १०.८७९३	द. १.४६३५	उ. १९.०७७३	द. ४.१७५६	द. २१.६२५६	उ. ०.६४३०	उ. १५.८३८०	उ. ०.९८७३	उ. १५.३६२७	उ. १.२५७५	२८

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६४ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००७	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	२००७
जुलाई १	उ. ११.६२४४	द. १.४४८४	उ. १८.७५०१	द. ४.५८३५	द. २१.५९३२	उ. ०.६३४१	उ. १४.८११४	उ. ०.६५३०	उ. १५.२६१८	उ. १.२६६८	जुलाई १
४	१२.३५०६	१.४३१५	१८.६२०९	४.७६४२	२१.५६२८	०.६२५०	१३.७८२०	०.२८३३	१५.१५२८	१.२५६२	४
७	१३.०५७१	१.४१३०	१८.६९५४	४.७१५२	२१.५३४७	०.६१५६	१२.७५८५	द. ०.१२३३	१५.०५१९	१.२५५९	७
१०	१३.७४२९	१.३९२७	१८.९५९५	४.४५८७	२१.५०९०	०.६०६०	११.७४९९	०.५६८१	१४.९४२९	१.२५५८	१०
१३	१४.४०७२	१.३७०८	१९.३८०१	४.०३०९	२१.४८६३	०.५९६३	१०.७६६४	१.०५१८	१४.८३१५	१.२५५९	१३
१६	१५.०४९०	१.३४७२	१९.९०८७	३.४७३०	२१.४६६७	०.५८६३	९.८१९४	१.५७४९	१४.७१७८	१.२५६३	१६
१९	१५.६६७८	१.३२१९	२०.४८४४	२.८२४९	२१.४५०५	०.५७६२	८.९२२४	२.१३६४	१४.६०२०	१.२५६८	१९
२२	१६.२६२९	१.२९४८	२१.०३५९	२.१२३३	२१.४३७७	०.५६६१	८.०८६६	२.७३४४	१४.४८४२	१.२५७६	२२
२५	१६.८३४०	१.२६५९	२१.४८३४	१.४०२१	२१.४२८७	०.५५५९	७.३३००	३.३६४६	१४.३६४५	१.२५८६	२५
२८	१७.३८०७	१.२३५१	२१.७४११	०.६९४१	२१.४२३४	०.५४५६	६.६६७५	४.०२०२	१४.२४३२	१.२५९९	२८
३१	१७.९०२८	१.२०२५	२१.७२३९	०.०३१७	२१.४२२१	०.५३५४	६.११५१	४.६९०८	१४.१२०३	१.२६१४	३१
अगस्त १	१८.०७१३	१.१९१२	२१.६४३९	उ. ०.१७३५	२१.४२२५	०.५३२०	५.९५८०	४.९१५३	१४.०७९०	१.२६२०	अगस्त १
४	१८.५५९८	१.१५६२	२१.१५२७	०.७२७४	२१.४२६५	०.५२१८	५.५७५२	५.५८२६	१३.९५४३	१.२६३८	४
७	१९.०२२९	१.११९३	२०.२६६४	१.१७०९	२१.४३४३	०.५११६	५.३३३१	६.२२४४	१३.८२८४	१.२६५९	७
१०	१९.४६०४	१.०८०७	१८.९९७५	१.४९०४	२१.४४६३	०.५०१५	५.२३८६	६.८१७०	१३.७०१३	१.२६८३	१०
१३	१९.८७२२	१.०४०३	१७.३९५१	१.६८४१	२१.४६२३	०.४९१४	५.२९२३	७.३३४७	१३.५७३३	१.२७०९	१३
१६	२०.२५८३	०.९९७९	१५.५२७६	१.७५९८	२१.४८२२	०.४८१४	५.४८७२	७.७५३४	१३.४४४६	१.२७३७	१६
१९	२०.६१८९	०.९५३६	१३.४६६७	१.७३१३	२१.५०५९	०.४७१५	५.८०७६	८.०५३४	१३.३१५४	१.२७६८	१९
२२	२०.९५४५	०.९०७२	११.२७६१	१.६१४२	२१.५३३४	०.४६१७	६.२२९९	८.२२२७	१३.१८५८	१.२८०२	२२
२५	२१.२६५५	०.८५८७	९.००८२	१.४२४०	२१.५६४४	०.४५२१	६.७२५३	८.२५९३	१३.०५६०	१.२८३९	२५
२८	२१.५५२४	०.८०८१	६.७०३९	१.१७४४	२१.५९८९	०.४४२६	७.२६२५	८.१७०३	१२.९२६२	१.२८७८	२८
३१	२१.८१५६	०.७५५३	४.३९४५	०.८७७५	२१.६३६६	०.४३३२	७.८१०७	७.९७०४	१२.७९६५	१.२९२०	३१
सितम्बर १	२१.८९८२	०.७३७२	३.६२७९	०.७६९८	२१.६४९९	०.४३०२	७.९१११	७.८८२४	१२.७५३३	१.२९३४	सितम्बर १
४	२२.१३१०	०.६८१६	१.३४८७	०.४२५७	२१.६९१५	०.४२१०	८.५१२४	७.५६४६	१२.६२४०	१.२९८०	४
७	२२.३४१७	०.६२३७	द. ०.८८६३	०.०५६४	२१.७३६१	०.४१२०	८.९८९४	७.१८१६	१२.४९५३	१.३०२९	७
१०	२२.५३१३	०.५६३४	३.०६१५	द. ०.३३०६	२१.७८३३	०.४०३१	९.४०६९	६.७५१४	१२.३६७२	१.३०८०	१०
१३	२२.७००९	०.५००९	५.१६३०	०.७२८४	२१.८३२८	०.३९४४	९.७५४३	६.२८९५	१२.२४०२	१.३१३४	१३
१६	२२.८५१५	०.४३५८	७.१७७१	१.१३०४	२१.८८४५	०.३८५८	१०.०२४०	५.८०८२	१२.११४३	१.३१९१	१६
१९	२२.९८४७	०.३६७९	९.०८९९	१.५३०१	२१.९३८०	०.३७७४	१०.२११०	५.३१७३	११.९८९६	१.३२५०	१९
२२	२३.१०१७	०.२९७२	१०.८८५५	१.९२०५	२१.९९३१	०.३६९२	१०.३११८	४.८२४४	११.८६६६	१.३३१३	२२
२५	२३.२०८०	०.२२३६	१२.५४५५	२.२९३९	२२.०४९६	०.३६१२	१०.३२४४	४.३३५४	११.७४५३	१.३३७९	२५
२८	उ. २३.२९३०	द. ०.१४७०	द. १४.०४६८	द. २.६४०८	द. २२.१०७२	उ. ०.३५३३	उ. १०.२४७६	द. ३.८५४६	उ. ११.६२६०	उ. १.३४४७	२८

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर
मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.)

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६४ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००७	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	२००७
अक्टूबर १	उ. २३.३७०३	द. ०.०६७४	द. १५.३५९९	द. २.९४९९	द. २२.१६५६	उ. ०.३४५६	उ. १०.०८१०	द. ३.३८५५	उ. ११.५०८७	उ. १.३५१८	अक्टूबर १
४	२३.४३७६	उ. ०.०१५५	१६.४४५३	३.२०२३	२२.२२४७	०.३३८०	९.८२५७	२.९३०४	११.३९३७	१.३५९३	४
७	२३.४९६९	०.१०१७	१७.२४८६	३.३७७८	२२.२८४१	०.३३०६	९.४८३६	२.४९१२	११.२८१३	१.३६६९	७
१०	२३.५५०१	०.१९१४	१७.६९५८	३.४४४१	२२.३४३७	०.३२३३	९.०५७५	२.०६८८	११.१७१६	१.३७४९	१०
१३	२३.५९११	०.२८४९	१७.६८९३	३.३५८१	२२.४०३०	०.३१६२	८.५५०३	१.६६४१	११.०६४९	१.३८३२	१३
१६	२३.६४६२	०.३८२३	१७.११५२	३.०६७६	२२.४६२०	०.३०९२	७.९६५४	१.२७७८	१०.९६१४	१.३९१८	१६
१९	२३.६९३४	०.४८३९	१५.८८२२	२.५२३९	२२.५२०३	०.३०२४	७.३०६३	०.९१०४	१०.८६१३	१.४००६	१९
२२	२३.७४२८	०.५८९७	१४.०१६५	१.७१८०	२२.५७७८	०.२९५७	६.५७७०	०.५६२३	१०.७६४९	१.४०९७	२२
२५	२३.७९६३	०.६९९८	११.७७८८	०.७२५६	२२.६३४१	०.२८९२	५.७८१२	०.२३३९	१०.६७२३	१.४१९१	२५
२८	२३.८५६०	०.८१४३	९.६५५९	उ. ०.२९०१	२२.६८९१	०.२८२८	४.९२२९	उ. ०.०७४४	१०.५८३७	१.४२८८	२८
३१	२३.९२३८	०.९३३३	८.१३५८	१.१५५३	२२.७४२५	०.२७६५	४.००६५	०.३६२५	१०.४९९२	१.४३८७	३१
नवम्बर १	२३.९४८५	०.९७३९	७.८१४६	१.३९०३	२२.७६००	०.२७४५	३.६८९१	०.४५३९	१०.४७२०	१.४४२१	नवम्बर १
४	२४.०३०२	१.०९८८	७.४३२९	१.९१६५	२२.८१११	०.२६८४	२.७०३४	०.७१४८	१०.३९३५	१.४५२४	४
७	२४.१२४३	१.२२८३	७.८२६८	२.१९१२	२२.८६०२	०.२६२४	१.६७२०	०.९५५४	१०.३११७	१.४६२९	७
१०	२४.२३२२	१.३६२२	८.७९८२	२.२६१६	२२.९०७१	०.२५६५	०.६००३	१.१७५७	१०.२५०८	१.४७३६	१०
१३	२४.३५४९	१.५००४	१०.१४५१	२.१८०५	२२.९५१६	०.२५०७	द. ०.५०६१	१.३७५८	१०.१८६९	१.४८४६	१३
१६	२४.४९३०	१.६४२४	११.७०३८	१.९९३२	२२.९९३६	०.२४५१	१.६४१५	१.५५५८	१०.१२८३	१.४९५९	१६
१९	२४.६४६२	१.७८७८	१३.३५५४	१.७३४३	२३.०३२९	०.२३९६	२.८००३	१.७१५९	१०.०७५२	१.५०७३	१९
२२	२४.८१३९	१.९३५७	१५.०१७७	१.४२९२	२३.०६९३	०.२३४२	३.९७७०	१.८५६१	१०.०२७६	१.५१८९	२२
२५	२४.९९४४	२.०८५३	१६.६३४९	१.०९६२	२३.१०२७	०.२२८८	५.१६६२	१.९७६६	९.९८५७	१.५३०७	२५
२८	२५.१८५९	२.२३५४	१८.१६८६	०.७४८७	२३.१३३१	०.२२३६	६.३६२०	२.०७७७	९.९४९५	१.५४२७	२८
दिसम्बर १	२५.३८५५	२.३८४८	१९.५९१४	०.३९६६	२३.१६०३	०.२१८४	७.५५८६	२.१६००	९.९१९३	१.५५४८	दिसम्बर १
४	२५.५८९९	२.५३२२	२०.८८२८	०.०४७४	२३.१८४२	०.२१३३	८.७४९५	२.२२३७	९.८९५२	१.५६७०	४
७	२५.७९४७	२.६७५८	२२.०२६८	द. ०.२९२७	२३.२०४६	०.२०८३	९.९२८७	२.२६९६	९.८७७३	१.५७९३	७
१०	२५.९९५३	२.८१३८	२३.०१००	०.६१८६	२३.२२१६	०.२०३४	११.०८९७	२.२९८२	९.८६५६	१.५९१७	१०
१३	२६.१८६७	२.९४४५	२३.८२०७	०.९२५८	२३.२३५१	०.१९८५	१२.२२६५	२.३०९९	९.८६०१	१.६०४२	१३
१६	२६.३६४३	३.०६६०	२४.४४८१	१.२०९९	२३.२४५०	०.१९३७	१३.३३२८	२.३०५४	९.८६११	१.६१६७	१६
१९	२६.५२३४	३.१७६४	२४.८८२१	१.४६६७	२३.२५१३	०.१८९०	१४.४०२५	२.२८५४	९.८६८३	१.६२९३	१९
२२	२६.६६०८	३.२७४५	२५.११३१	१.६९१४	२३.२५४०	०.१८४४	१५.४२९६	२.२५०४	९.८८१७	१.६४१७	२२
२५	२६.७७४२	३.३५९०	२५.१३२३	१.८७८९	२३.२५३०	०.१७९७	१६.४०८२	२.२०१२	९.९०१३	१.६५४२	२५
२८	२६.८६२३	३.४२९४	२४.९३१६	२.०२३४	२३.२४८५	०.१७५२	१७.३३२५	२.१३८८	९.९२७१	१.६६६५	२८
३१	उ. २६.९२५४	उ. ३.४८५३	द. २४.५०४१	द. २.११७८	द. २३.२४०४	उ. ०.१७०६	द. १८.१९६३	उ. २.०६३९	उ. ९.९५८९	उ. १.६७८७	३१

दशम. = दशमलव
उ = उत्तर

मंगल आदि ग्रहों के क्रान्ति शर (प्रातः घं. ५ मि. ३० भा.स्टैं. टा.) संवत् २०६४ वि.

द = दक्षिण

तारीख	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		तारीख
सन् ई.	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	क्रान्ति	शर	सन् ई.
२००८	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	अ. दशम.	२००८
जनवरी १	उ. २६.९४१०	उ. ३.५००७	द. २४.३१०२	द. २.१३६८	द. २३.२३६९	उ. ०.१६९१	द. १८.४६९७	उ. २.०३६४	उ. ९.९७०९	उ. १.६८२८	जनवरी १
४	२६.९७२५	३.५३७५	२३.५७३२	२.१५१५	२३.२२३९	०.१६४६	१९.२४४०	१.९४६४	१०.०१०६	१.६९४८	४
७	२६.९८३०	३.५६०७	२२.६०३९	२.०९४५	२३.२०७५	०.१६०२	१९.९४४९	१.८४६१	१०.०५६१	१.७०६६	७
१०	२६.९७५७	३.५७०९	२१.४०९५	१.९५३५	२३.१८७६	०.१५५८	२०.५६७२	१.७३६५	१०.१०७१	१.७१८२	१०
१३	२६.९५३७	३.५६९४	२०.००८१	१.७१४२	२३.१६४४	०.१५१५	२१.१०६३	१.६१८५	१०.१६३५	१.७२९६	१३
१६	२६.९२०६	३.५५७३	१८.४३५९	१.३६११	२३.१३७९	०.१४७१	२१.५५८२	१.४९३०	१०.२२५०	१.७४०६	१६
१९	२६.८७९५	३.५३५८	१६.७५६३	०.८७९२	२३.१०८२	०.१४२८	२१.९१९२	१.३६०९	१०.२९११	१.७५१३	१९
२२	२६.८३३४	३.५०६३	१५.०७१३	०.२५९०	२३.०७५५	०.१३८५	२२.१८६३	१.२२३२	१०.३६१६	१.७६१६	२२
२५	२६.७८४७	३.४७०१	१३.५२८१	उ. ०.४९४८	२३.०३९९	०.१३४१	२२.३५७०	१.०८०९	१०.४३६२	१.७७१५	२५
२८	२६.७३५२	३.४२८३	१२.३१०८	१.३४८९	२३.००१५	०.१२९८	२२.४२९२	०.९३५१	१०.५१४६	१.७८१०	२८
३१	२६.६८६५	३.३८२१	११.६०३०	२.२२५१	२२.९६०५	०.१२५५	२२.४०१९	०.७८६८	१०.५९६४	१.७९००	३१
फरवरी १	२६.६७०६	३.३६५९	११.५०३१	२.५०११	२२.९४६२	०.१२४१	२२.३७०५	०.७३६९	१०.६२४४	१.७९२९	फरवरी १
४	२६.६२४२	३.३१५१	११.६२३६	३.२०२९	२२.९०१९	०.११९८	२२.२०९७	०.५८६७	१०.७१०१	१.८०१२	४
७	२६.५८०१	३.२६१९	१२.२८१९	३.६१०४	२२.८५५४	०.११५५	२१.९४९४	०.४३६२	१०.७९८२	१.८०९०	७
१०	२६.५३८१	३.२०६८	१३.२५५३	३.६५८५	२२.८०६९	०.१११२	२१.५९०७	०.२८६२	१०.८८८४	१.८१६३	१०
१३	२६.४९७७	३.१५०४	१४.२९७७	३.३८६८	२२.७५६५	०.१०६८	२१.१३५६	०.१३७७	१०.९८००	१.८२२९	१३
१६	२६.४५८४	३.०९३२	१५.२३२०	२.८४७९	२२.७०४५	०.१०२५	२०.५८६५	द. ०.००८६	११.०७२५	१.८२९०	१६
१९	२६.४१९४	३.०३५६	१५.९६६५	२.२९६३	२२.६५१२	०.०९८०	१९.९४६५	०.१५१८	११.१६५६	१.८३४४	१९
२२	२६.३७९८	२.९७७९	१६.४६६१	१.६५८२	२२.५९६८	०.०९३६	१९.२१९०	०.२९१०	११.२५८९	१.८३९२	२२
२५	२६.३३८३	२.९२०५	१६.७२३७	१.०२९८	२२.५४१४	०.०८९१	१८.४०७७	०.४२५६	११.३५१८	१.८४३४	२५
२८	२६.२९३९	२.८६३५	१६.७४३३	०.४३६५	२२.४८५३	०.०८४६	१७.५१६९	०.५५४६	११.४४३८	१.८४७०	२८
मार्च १	२६.२६२१	२.८२५८	१६.६२७८	०.०६७२	२२.४४७७	उ. ०.०८१६	१६.८८१०	०.६३७२	११.५०४५	१.८४९०	मार्च १
४	२६.२१०३	२.७६९९	१६.२६७६	द. ०.४४२२	२२.३९१०	०.०७७०	१५.८६७९	०.७५५७	११.५९४३	१.८५१५	४
७	२६.१५२६	२.७१४८	१५.६९०१	०.८९४९	२२.३३४४	०.०७२४	१४.७८८१	०.८६७०	११.६८२१	१.८५३४	७
१०	२६.०८७५	२.६६०४	१४.९०२७	१.२८८७	२२.२७८१	०.०६७७	१३.६४६९	०.९७०६	११.७६७५	१.८५४६	१०
१३	२६.०१४०	२.६०६९	१३.९१२०	१.६२२३	२२.२२२४	०.०६३०	१२.४४९४	१.०६६१	११.८५००	१.८५५२	१३
१६	२५.९३१०	२.५५४३	१२.७२४३	१.८९४४	२२.१६७५	०.०५८१	११.२०१२	१.१५३०	११.९२९२	१.८५५३	१६
१९	२५.८३७६	२.५०२६	११.३४५२	२.१०३७	२२.११३९	०.०५३२	९.९०७६	१.२३१०	१२.००४९	१.८५४७	१९
२२	२५.७३२८	२.४५१८	९.७८०१	२.२४८४	२२.०६१७	०.०४८२	८.५७३८	१.२९९६	१२.०७६८	१.८५३६	२२
२५	२५.६१५६	२.४०२१	८.०३४२	२.३२६५	२२.०१११	०.०४३२	७.२०५०	१.३५८५	१२.१४४५	१.८५२०	२५
२८	२५.४८५३	२.३५३३	६.११३२	२.३३५७	२१.९६२४	०.०३८०	५.८०६३	१.४०७६	१२.२०७७	१.८४९८	२८
३१	२५.३४१२	२.३०५४	४.०२३६	२.२७३८	२१.९१६०	०.०३२८	४.३८३३	१.४४६६	१२.२६६३	१.८४७२	३१
अप्रैल १	२५.२८९९	२.२८९७	३.२९१०	२.२३६९	२१.९०११	०.०३१०	३.९०४४	१.४५७४	१२.२८४८	१.८४६२	अप्रैल १
४	२५.१२६०	२.२४३०	०.९९००	२.०७६६	२१.८५८२	०.०२५७	२.४५७१	१.४८२९	१२.३३६८	१.८४३०	४
७	उ. २४.९४६५	उ. २.१९७२	उ. १.४५५०	द. १.८४०६	द. २१.८१८१	उ. ०.०२०३	द. ०.९९७९	द. १.४९८३	उ. १२.३८३६	उ. १.८३९४	७

शेष पृष्ठ २२० पर

पृष्ठ ४१ का शेष

भाव में स्थित हो गया है। तृतीयेश अष्टमस्थ है तथा तृतीय भाव में राहु के भी स्थित

विश्व परिदृश्य

अमेरिका- वर्ष प्रवेश लग्न तुला है। लग्नेश लग्न को देख रहा है किन्तु लग्नेश पर शनि की दशम दृष्टि एवं भौम की चतुर्थ दृष्टि है इसके प्रभाव से लग्नेश पीड़ित है अत: शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। द्वितीयेश उच्च का है तथा शनि से दृष्ट है इसके प्रभाववश लोगों में अशान्ति एवं भय का वातावरण बनेगा। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष शुभफल प्रद है। तृतीय भाव का अधिपति द्वितीय भाव में मित्र के घर स्थित है इसके प्रभाव से किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा एवं टकराव की स्थिति उत्पन्न होगी। चतुर्थ भाव का अधिपति वक्र होकर दशम भाव में स्थित होकर चतुर्थ भाव को देख रहा है तथा द्वितीयेश मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है तथा शनि-मंगल का प्रतियोग भी बन रहा है इसके प्रभाव से दुर्घटना, अग्निकाण्ड या किसी राष्ट्र विरोधी आतंकी कार्यवाही के फलस्वरूप किसी बड़ी दुर्घटना के होने की सम्भावना है तथा प्राकृतिक प्रकोप से भी हानि होगी। पंचम भाव में राहु स्थित है तथा पंचमेश केन्द्र में स्थित है इसके प्रभाव से नीति निर्धारण त्रुटिपूर्ण होगा एवं नयी प्रकार की समस्या उत्पन्न होगी। यद्यपि तकनीकी दृष्टि से शुभफल प्रद है किन्तु योजना सुविचारित नहीं होगी जिसके आगे चलकर परिणाम विपरीत होंगे। रिपुभाव में दशमेश एवं लग्नेश स्थित है तथा षष्टेश द्वितीय भाव में है अत: शत्रु की वृद्धि, नयी प्रकार की समस्या का उद्भव होगा। रिपुभावेश ही तृतीयेश भी है इसके प्रभाववश किसी राष्ट्र से सम्बन्धों में गतिरोध होगा- ऐसे राष्ट्र से सम्बन्धों में गतिरोध होने की सम्भावना है जिससे सहयोग पूर्ण सम्बन्ध चल रहे हों। सप्तम भाव का अधिपति उच्च का है तथा सप्तम भाव में अष्टमेश भी स्थित है तथा शनि की दृष्टि भी है। अत: विदेश व्यापार में वृद्धि होगी, हथियारों के निर्यात के बड़े रक्षा सौदे होंगे एवं तकनीकी हस्तान्तरण व्यापारिक लाभ के लिए किया जायेगा। अष्टम स्थान का अधिपति सप्तम में स्थित होने से व्यापार वृद्धि होने से आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। नवम भाव का अधिपति राहु के साथ त्रिकोण में स्थित है अत: धर्म राष्ट्र नीति का निर्धारक तत्त्व होगा। दशम भाव में शनि स्थित है तथा दशमेश रिपुभाव में है इसके प्रभाव से शासक को भारी असहज स्थिति एवं विरोधों का सामना करना पड़ेगा तथा शासक की सत्ता पर पकड़ कमजोर होगी। भारत के साथ व्यापारिक सम्बन्धों में वृद्धि होगी।

ब्रिटेन- वर्ष प्रवेश के समय धनु लग्न है। लग्न का स्वामी द्वादश भाव में है। इसके प्रभाववश इस राष्ट्र को विषम स्थिति का सामना करना पड़ेगा। धन भाव का अधिपति अष्टम स्थान में स्थित है तथा द्वादशेश भौम द्वितीय भाव में स्थित होकर शनि से भी दृष्ट है अत: इस राष्ट्र को किसी बड़ी आतंकी कार्यवाही के प्रति सतर्क रहना चाहिए क्योंकि चतुर्थ भाव का अधिपति भी द्वादश भाव में स्थित है तथा अष्टमेश चतुर्थ भाव में स्थित हो गया है। तृतीयेश अष्टमस्थ है तथा तृतीय भाव में राहु के भी स्थित होने से किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में भारी गतिरोध उत्पन्न होने की सम्भावना है। चतुर्थ भाव अष्टमेश युक्त होने से आन्तरिक अशान्ति एवं भय युक्त वातावरण रहेगा। पंचमेश भौम उच्च का होने से तथा रिपुभावेश के पंचमस्थ होने से इस राष्ट्र की नीति कठोर होगी एवं आतंकी राष्ट्र एवं आतंकवाद के प्रति इस राष्ट्र का व्यवहार कठोर होगा। ग्रह स्थिति से लगता है कि आतंकवाद के विरुद्ध यह राष्ट्र किसी बड़ी कार्यवाही में एकतरफा या सहभागिता से भाग लेगा। शिक्षा व तकनीकी क्षेत्र में सुधार होगा। व्यापार में वृद्धि होगी। राजकोष की स्थिति कुछ अवधि के लिए संतोषजनक नहीं होगी। कानून व्यवस्था की किसी भाग विशेष में समस्या उत्पन्न होगी। दशमेश राहु के साथ है एवं दशम भाव पर शनि की दृष्टि भी है अत: प्रधान शासक को उलझनभरी असहज स्थिति का सामना करना पड़ेगा तथा सत्ता पर पकड़ कमजोर होगी।

पाकिस्तान- लग्नेश एवं राज्येश गुरु भाग्य स्थान में मित्र के घर स्थित है अत: यह राष्ट्र अपने संसाधन जुटाने में सफल होगा। प्रधान शासक की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी। पंचम भाव में शनि द्वादशेश होकर स्थित है तथा पंचम भाव पर भौम की दृष्टि भी है इससे यह राष्ट्र आतंकवाद को प्रोत्साहित एवं पोषित करने की नीति पर चलता रहेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति द्वादश भाव में राहु के साथ स्थित है इससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार नहीं होगा एवं अशान्ति का वातावरण बनेगा एवं प्राकृतिक प्रकोपों एवं रोगों आदि से लोग पीड़ित होंगे। पंचम भाव का अधिपति लग्न में यद्यपि अस्त होकर स्थित है तथापि पंचमेश एवं पंचम भाव दोनों पर गुरु की दृष्टि होने से शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के प्रयास होंगे। रिपुभाव का अधिपति लग्न में स्थित है इसके फलस्वरूप कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। सप्तमेश द्वादश भाव में राहु के साथ स्थित है इसके फलस्वरूप महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं होगा एवं कुछ राष्ट्रों से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा एवं व्यापारिक (निर्यात) सम्बन्धों में भी कुछ राष्ट्रों से गतिरोध उत्पन्न होने की सम्भावना है। भारत के सन्दर्भ में यह देश अपनी भीतर घात की नीति पर चलता रहेगा। शनि-मंगल के समसप्तक योग का प्रभाव इस देश के नीति निर्धारण पर पड़ेगा। इसके फलस्वरूप शस्त्रास्त्रों के निर्माण व घातक शस्त्रास्त्रों के परिक्षण एवं आयात से उपमहाद्वीप में शस्त्रों की प्रतिस्पर्धा को बल मिलेगा।

फ्रांस- लग्न का स्वामी द्वादश भाव में मित्र के घर स्थित है तथा लग्नेश ही चतुर्थेश भी है इसके प्रभाववश इस राष्ट्र की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धनभाव में उच्च का भौम पंचमेश होकर स्थित है अत: शस्त्रास्त्रों के उत्पादन एवं निर्यात में वृद्धि होगी। तकनीकी क्षेत्र में भी यह देश प्रगति करेगा। द्वितीय भाव का अधिपति अष्टम स्थान में वक्री होकर स्थित है तथा अष्टमेश चतुर्थ भाव में स्थित है इसके प्रभाववश आन्तरिक अशान्ति एवं भय का वातावरण बना रहेगा तथा राष्ट्र विरोधी एवं समाज विरोधी

आतंकवादी षड्यन्त्र रचकर अव्यवस्था एवं अशान्ति उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे। तृतीयेश अष्टम स्थान में स्थित है तथा राहु भी तृतीयस्थ है अत: किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। शिक्षा एवं तकनीक के क्षेत्र में प्रगति होगी। सप्तम स्थान का अधिपति पराक्रम भाव में होने से व्यापार निर्यात में वृद्धि होगी। शासक को सत्ता पर पकड़ बनाये रखने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे। आर्थिक दृष्टि से राष्ट्र सुदृढ़ होगा।

इण्डोनेशिया- वृष लग्न वर्ष प्रवेश के समय है तथा लग्नाधिपति द्वादश भाव में है लग्नेश ही रिपुभावेश भी है अत: शासक का उसके ही लोग विरोध करेंगे। सत्ता पर शासक की पकड़ कमजोर होगी। कुटुम्बेश मित्र राशि में राहु के साथ है तथा सुखभाव में केतु भी स्थित है अत: आन्तरिक शांति बनाये रखने के लिए शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। तृतीय भाव पर भौम की दृष्टि है इसके फलस्वरूप निकट सहयोगी राष्ट्रों से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। कृषि क्षेत्र व कृषि की प्राकृतिक प्रकोपों से हानि होने का योग है। पंचमेश केन्द्र में मित्र के घर है। इसके फलस्वरूप शिक्षा में सुधार होगा तथा सुविचारित योजनाओं के होने से राष्ट्र की प्रगति द्रुत गति से होगी। सप्तम भाव का अधिपति उच्च का होकर स्थित होने से महिलाओं के कल्याण की योजना बनेगी साथ ही महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी एवं तलाक के मामलों में इस वर्ष भारी वृद्धि होने की सम्भावना है तथा व्यापार निर्यात में वृद्धि होगी। कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए शासक कठोरता से कार्य करेगा। धार्मिक दृष्टि से विचार करने पर स्पष्ट है कि धार्मिक कट्टरतावाद इस राष्ट्र के लिए समस्या पैदा होने का कारण बनेगा।

इजाराईल- कुम्भ लग्न के समय वर्ष प्रवेश होगा। लग्न का स्वामी रिपुभाव में वक्री होकर स्थित है अत: राष्ट्र विशेष से शत्रुता रहेगी तथा विरोधों एवं राष्ट्र विरोधी कार्रवाइयों का दृढ़तापूर्वक यह देश विरोध करेगा। धन स्थान का स्वामी केन्द्र में स्थित है तथा धनभाव में सप्तमेश रिपुभावेश के साथ स्थित है अत: आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी एवं लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। स्पर्धा में आगे उन्नति होगी। पराक्रमेश उच्च का द्वादश भाव में स्थित होने से अपनी दृढ़ नीति पर यह देश चलता रहेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति तृतीय भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप कृषि क्षेत्र एवं कुछ आवासीय क्षेत्रों की प्राकृतिक या अन्य कारणों से हानि सम्भव है किन्तु गुरु की चतुर्थभाव में दृष्टि होने से यह हानि अल्प होगी। पंचम भाव का अधिपति लग्न में स्थित है अत: विकास योजनाएं राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करेंगी। शिक्षा एवं बाल विकास कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन होगा। रिपुभावेश द्वितीय स्थान में स्थित है इससे राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में भारी गतिरोध होगा एवं रक्षा व्यय में भारी वृद्धि होगी। सप्तम भाव का अधिपति द्वितीय भाव में स्थित है अत: उद्योग व्यापार में वृद्धि होगी। अष्टमेश लग्न में है राजकोष की स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। दशमभाव का अधिपति उच्च का होकर द्वादश भाव में है। इसके फलस्वरूप शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत रहेगी एवं विदेशों से सम्बन्धों में कुछ अपवादों को छोड़कर प्रगाढ़ता आयेगी तथा सैन्यशक्ति में वृद्धि होगी।

कनाडा- लग्नेश लग्न (तुला) को देख रहा है तथा द्वितीयेश चतुर्थ भाव में उच्च का होकर स्थित है इसके प्रभाववश राष्ट्र की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। आर्थिक सुदृढ़ता बढ़ेगी। पराक्रमेश द्वितीय भाव में स्थित है इससे राष्ट्रों से सम्बन्धों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। चतुर्थेश चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। अत: आवासीय क्षेत्र, कृषि क्षेत्र दोनों का ही विकास होगा एवं धनेश के चतुर्थ में उच्च का होने से आर्थिक समृद्धि होगी। पंचम भाव का स्वामी केन्द्र में स्थित है तथा पंचम भाव में राहु है अत: शिक्षा व तकनीक की दृष्टि से योजनाओं का अपेक्षित लाभ लोगों को नहीं मिलेगा। सप्तम स्थान का स्वामी उच्च का होकर केन्द्र में स्थित है अत: व्यापार वृद्धि व औद्योगिक विकास तेजी से व लाभप्रद होगा। तलाक के मामलों में एवं महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी किन्तु अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के लिए ग्रह स्थिति अनुकूल है। दशमाधिपति रिपुभाव में स्थित है इसके फलस्वरूप शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा तथा सत्ता पर पकड़ कमजोर होगी।

जर्मनी- धनु लग्न के समय वर्ष प्रवेश होगा। लग्नाधिपति व्यय भाव में स्थित है तथा प्लूटों लग्न में है। द्वितीय भाव में द्वादशेश मंगल उच्च का होकर स्थित है अत: यह राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में दृढ़ता का परिचय देगा। तृतीय भाव में राहु एवं बुध के स्थित होने से शोधपूर्ण विकास, संचार व्यवस्था में उन्नति होगी। किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। सुखभाव का स्वामी व्यय भाव में स्थित है एवं अष्टमेश भी चतुर्थभाव में स्थित है इसके फलस्वरूप लोगों को प्राकृतिक प्रकोपों, रोगों आदि से कष्ट होगा तथा कृषि एवं कृषि क्षेत्र की प्राकृतिक प्रकोपों, रोगों आदि से हानि होने का योग है। पंचम भाव का अधिपति एवं पंचम भाव शनि की दृष्टि से युक्त होने के कारण बालमृत्युदर में इस वर्ष वृद्धि होने की सम्भावना है। पंचमेश उच्च का होने से तकनीकी क्षेत्र में सुधार-प्रगति होगी। सप्तम भाव का अधिपति पराक्रम भाव में राहु के साथ स्थित है इसके प्रभाव से किसी देश विशेष के साथ व्यापारिक सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा एवं महिलाओं को कष्ट अधिक उठाने पड़ेंगे। आर्थिक दृष्टि से, राजकोष की स्थिति की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल नहीं है। प्रधान शासक को कुछ आन्तरिक विरोधों का भी सामना करना पड़ेगा।

रुस- मकर वर्ष लग्न है तथा लग्न का स्वामी सप्तम भाव में स्थित है एवं शनि-

मंगल का प्रतियोग भी लग्नस्थ मंगल से बना हुआ है अत: यह वर्ष विशेष घटनापूर्ण रहेगा तथा राष्ट्राध्यक्ष- प्रधान शासक दृढ़ता का परिचय देंगे एवं विश्वशान्ति स्थापना

व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी। किसी रोग के महामारी का रूप लेने की सम्भावना है। दशमेश रिपु भाव में है अत: प्रधान शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। निकट

मंगल का प्रतियोग भी लग्नस्थ मंगल से बना हुआ है अतः यह वर्ष विशेष घटनापूर्ण रहेगा तथा राष्ट्राध्यक्ष- प्रधान शासक दृढ़ता का परिचय देंगे एवं विश्वशान्ति स्थापना में इस राष्ट्र का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। द्वितीय भाव का अधिपति भौम से दृष्ट है तथा द्वितीय भाव में रिपुभावेश एवं राहु दोनों स्थित है इससे लोगों को राष्ट्र विरोधी, आतंकवादी, समाजविरोधी लोगों से कष्ट होगा तथा कुछ बड़ी दुर्घटनायें आतंकवादियों के कृत्यों का परिणाम होंगी। तृतीय भाव में अष्टमेश स्थित है अतः किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। चतुर्थभाव का अधिपति यद्यपि उच्च का होकर लग्नस्थ है किन्तु शनि की दृष्टि चतुर्थेश एवं चतुर्थ भाव दोनों पर पड़ रही है इसके फलस्वरूप आन्तरिक अशान्ति बढ़ेगी तथा कृषिक्षेत्र एवं कृषि की रोगों एवं प्राकृतिक प्रकोपों आदि से हानि होगी। संचार के क्षेत्र में इस वर्ष कोई विशेष उपलब्धि शोध आदि द्वारा सम्भव है। पंचम भाव का अधिपति शनि द्वारा दृष्ट है तथा गुरु की दृष्टि भी पंचम भाव पर पड़ रही है अतः शिक्षा व तकनीकी क्षेत्र में प्रसार, सुधार एवं उन्नति होगी। रिपु भावेश की स्थिति के कारण इस वर्ष कुछ आन्तरिक अशान्ति अधिक होने की सम्भावना है। सप्तमेश अस्त होकर तृतीयस्थ होने से महिलाओं के लिए यह वर्ष अनुकूल कम है तथा विदेश व्यापार में अपेक्षित वृद्धि इस वर्ष नहीं होगी। अष्टम स्थान में केतु व द्वितीय भाव में रिपुभावेश एवं राहु के स्थित होने से अर्थव्यवस्था में आकस्मिक उतार चढ़ाव होंगे। दशम भाव का स्वामी दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अतः प्रधान शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत होगी एवं राष्ट्र प्रगति करेगा तथा राष्ट्र की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

चीन- मिथुन लग्न में वर्ष प्रवेश हो रहा है लग्नेश नवम भावस्थ है अतः राष्ट्र की प्रगति एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धन भाव का अधिपति केन्द्र में यद्यपि अस्त होकर स्थित है किन्तु गुरु की शुभ दृष्टि धन भाव एवं धनेश दोनों पर है अतः आर्थिक प्रगति सन्तोषपूर्ण होगी। पराक्रम भाव का स्वामी मित्र के घर केन्द्र में स्थित है अतः औद्योगिक विकास द्रुतगति से होगा। चतुर्थेश राहु के साथ नवमस्थ है अतः कृषि एवं कृषि क्षेत्र का विकास होगा। प्राकृतिक प्रकोपों से कुछ भागों में कृषि, कृषिक्षेत्र एवं आवासीय क्षेत्र की भारी हानि होने का ग्रह स्थिति संकेत दे रही है। पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अतः सुविचारित योजनायें, शिक्षा में सुधार, बाल विकास एवं ऐश्वर्य प्रसाधनों के उत्पादन को ध्यान में रखकर बनायी जायेंगी। शुक्र ऐश्वर्य प्रसाधनों एवं मनोरंजन तथा वाहनों व सजावटी वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करता है अतः शुक्र के पंचमेश होने से शुक्र की ये वस्तुएं योजनाओं का महत्वपूर्ण भाग होंगी। रिपु भावेश उच्च का होकर अष्टमस्थ है अतः किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में तीव्र गतिरोध उत्पन्न होगा। सप्तमेश रिपुभाव में है अतः महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं होगी। व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी। किसी रोग के महामारी का रूप लेने की सम्भावना है। दशमेश रिपु भाव में है अतः प्रधान शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। निकट सहयोगी ही प्रबल विरोधी बनेंगे।

मैक्सिको- तुला लग्नाधिपति सप्तमस्थ होकर लग्न को देख रहा है अतः राष्ट्र की प्रतिष्ठा की दृष्टि से वर्ष अनुकूल है। द्वितीयभाव का अधिपति उच्च का होकर स्थित होने से आर्थिक दृष्टि से विशेष उन्नति होगी। पराक्रमेश धन भाव में मित्र के घर स्थित है अतः औद्योगिक विकास दर बढ़ेगी। चतुर्थेश चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा उच्च का भौम चतुर्थस्थ है अतः प्रकृतिक प्रकोपों, रोगादि से कृषि की हानि होगी तथा कृषि एवं आवासीय क्षेत्रों की भी हानि प्राकृतिक कारणों से होगी किन्तु कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा। पंचम भाव का अधिपति केन्द्र में स्थित है तथा बुध नवमेश होकर पंचमस्थ राहु के साथ है अतः विकास योजनाओं का क्रियान्वयन अपेक्षित गति से नहीं होगा। शिक्षा के क्षेत्र में भी अपेक्षित सुधार नहीं होंगे। सप्तमेश उच्च का होकर स्थित है अतः व्यापार में वृद्धि होगी एवं विदेशों से सम्बन्ध प्रायः सामान्य रहेंगे। राज्येश अस्त होकर रिपुभाव में स्थित है तथा राज्य स्थान पर भौम की दृष्टि है अतः शासक को भारी विरोधों का सामना करना पड़ेगा।

कोरिया प्रायद्वीप- लग्नेश नवमभाव में मित्र के घर स्थित है अतः राष्ट्र की प्रगति के लिए ग्रह अनुकूल है। धनभाव का अधिपति दशम भाव में स्थित है अतः आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। पराक्रमेश केन्द्रस्थ है तथा तृतीय भाव में केतु स्थित है अतः किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में भारी गतिरोध होगा। शनि-मंगल का प्रतियोग शस्त्रास्त्रों के उत्पादन-परीक्षण एवं निर्यात के लिए प्रेरित करेगा। चतुर्थेश की नवमस्थ स्थिति औद्योगिक, कृषि, आवासीय, तकनीकी क्षेत्रों में प्रगति कराने वाली है। दशमेश रिपुभावस्थ होने से शासक को भारी विरोधों का भी सामना करना पड़ेगा।

ईरान- रिपुभाव का स्वामी लग्नस्थ होने से इस राष्ट्र को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। धन भाव का स्वामी लाभ में उच्च का होकर स्थित होने से आर्थिक समृद्धि बढ़ेगी। पराक्रमेश धन भाव में है तथा सुखेश व्यय भाव में राहु के साथ है तथा धन भाव पर शनि की अशुभ दृष्टि भी है इसके फलस्वरूप यह वर्ष इस राष्ट्र के लिए कुछ प्रतिकूल है। कुछ देशों से या किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में भारी गतिरोध उत्पन्न होगा। जिसकी परिणती आर्थिक प्रतिबन्ध या अन्य किसी भारी विरोध के रूप में परिलक्षित होगी। पंचमेश लग्नस्थ है तथा भौम की दृष्टि पंचम भाव पर है इसके प्रभाव से इस देश की नीति में दृढ़ता रहेगी तथा शनि भी पंचम भाव में स्थित होकर भौम से समसप्तक योग बना रहा है जिसके फलस्वरूप नीति निर्धारण त्रुटिपूर्ण होगा। दशमेश नवमस्थ है अतः शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत रहेगी।

अफगानिस्तान- मेष लग्नेश उच्च का होकर दशमस्थ है अतः यह देश प्रगति करेगा। दशमस्थ भौम पर तथा लग्न पर शनि की दृष्टि भी है जिससे आतंकी गतिविधियों एवं विरोधों से शासक को विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पराक्रमेश लाभ में स्थित है अतः विकास की दर बढ़ेगी। चतुर्थ भाव में शनि स्थित है तथा भौम से दृष्ट है एवं चतुर्थेश व्यय भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप लोगों को प्राकृतिक प्रकोपों या अन्य कारणों से कष्ट होगा। आवासीय तथा कृषि क्षेत्र की हानि होने की सम्भावना है। पंचम भाव में केतु स्थित है तथा पंचमेश व्यय भाव में है अतः शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित सुधार नहीं होंगे। व्यापारिक गतिविधियों एवं व्यापार में वृद्धि होगी।

जापान- लग्नेश नवम भाव में स्थित है अतः राष्ट्र की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। धनेश केन्द्र में स्थित है तथा गुरु की शुभ दृष्टि धन भाव व भावाधिप पर होने से आर्थिक प्रगति होगी। पराक्रम भाव में केतु है तथा पराक्रमेश केन्द्र में स्थित है अतः तकनीकी एवं आर्थिक विकास में भारी वृद्धि होगी किन्तु किसी राष्ट्र विशेष से सम्बन्धों में गतिरोध उत्पन्न होगा। शिक्षा के क्षेत्र में सुधार होगा। कृषि क्षेत्र, कृषि उत्पादन, आवासीय क्षेत्रों का विकास होगा। दशम स्थान का अधिपति रिपु भाव में स्थित है अतः शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। अपने घनिष्ठ सहयोगी ही विरोध करेंगे। सप्तमेश रिपुभावस्थ होने से व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि होगी। अष्टमेश अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अतः राजकोष की स्थिति सुदृढ़ होगी।

प्रान्तीय राज्य संघ

इस पंचांग में प्रतिवर्ष ग्रह-गणना के आधार पर केन्द्र एवं प्रान्तों का संक्षिप्त भविष्य विवेचन यथामति विगत ६३ वर्षों से करा जा रहा है। अब यहाँ इस वर्ष सं. २०६४ वि. के वर्ष लग्न कुण्डली और केन्द्र एवं प्रान्तों की ग्रह स्थिति कूर्मचक्र विचारादि से संक्षेप में भारत के प्रमुख प्रान्तों का भविष्य विवेचन किया जाता है। प्रान्त एवं नगरों की प्रभाव राशियों पर प्रामाणिक निर्णय अभी तक सर्वसम्मत नहीं हो पाया है। कोई भारत की मकर राशि मानते हैं तो कुछ विद्वान कन्या राशि मानते हैं यही स्थिति प्रान्तों की भी है। यद्यपि अब राजतंत्र तो है नहीं, प्रजातंत्र में हर पांचवें वर्ष में मंत्रीमंडल एवं प्रधान शासक बदलते रहते हैं-उनकी प्रामाणिक जन्म कुंडलियां उपलब्ध न होने से केवल नाम राशि एवं सत्तारूढ़ लग्न से यथामति विचार लिखा जाता है, जिसके लिए यह नहीं कहा जा सकता कि यह विचार शत-प्रतिशत सही ही उतरेगा। तथापि गोचर स्थिति से मध्यम मानेन जो प्रान्तों का भविष्य लिखा जाता है वह ७५ प्रतिशत सही होता है ऐसा पंचांग पाठकों का मत है।

उत्तर प्रदेश- धनु राशि से प्रभावित इस राज्य का स्वामी द्वादश भाव में मित्र के घर स्थित है अतः यह राज्य असंतुलित प्रगति करेगा। द्वादशेश उच्च का होकर धन भावस्थ है तथा कुटुम्बेश अष्टमस्थ होकर मंगल-शनि का प्रतियोग बना रहा है अतः आन्तरिक अशान्ति बढ़ेगी व आर्थिक प्रगति अपेक्षित गति से नहीं होगी। तृतीय का अधिपति अष्टमस्थ है तथा तृतीय भाव में राहु स्थित है अतः संचार एवं यातायात साधनों में सुधार होगा तथा किसी राज्य या केन्द्र से मतभेद बढ़ेंगे। चतुर्थेश व्ययस्थ है तथा अष्टमेश चतुर्थ भाव में स्थित है। इस ग्रह स्थिति के प्रभाववश प्राकृतिक प्रकोपों, रोगादि कारणों से कृषि की हानि होगी तथा कृषि भूमि एवं आवासीय भाग भी प्रभावित होंगे किन्तु गुरु की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा। पंचमेश उच्च का होकर स्थित होने से विकास योजनाओं का क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से होगा। शनि की दृष्टि पंचम भाव में होने से विकास योजनाओं के लिए धन की उपलब्धता में बाधा होगी। जनसंख्या वृद्धि चिंता का कारण बनेगी। भ्रूण हत्या के मामलों में भी भारी वृद्धि होगी। शिक्षा के क्षेत्र में अपेक्षित सुधार नहीं होगा। तकनीकी शिक्षा का विस्तार होगा। अनैतिकता, अनाचार एवं आपराधिक घटनाओं में भारी वृद्धि शनि की दृष्टि के कारण होगी। सप्तम भाव का अधिपति राहु के साथ स्थित होने से महिलाओं के शोषण, तलाक एवं अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। व्यापारिक, औद्योगिक विकास की दृष्टि से यह राज्य पर्याप्त विकास करेगा। रन्ध्रस्थान में शनि की स्थिति व मंगल से प्रतियोग आर्थिक स्थिति, राजकोष की स्थिति के चिन्ताजनक होने को दर्शा रहा है। नवम भाव का अधिपति केन्द्र में मित्र के घर है तथा नवम भाव पर भौम की दृष्टि है तथा नवम भाव में केतु भी स्थित अतः सामान्यतया कानून व्यवस्था की स्थिति सन्तोष जनक रहेगी किन्तु कुछ भागों में बड़ी दुर्घटनाएं होंगी एवं कानून व्यवस्था की स्थिति नियंत्रित करने हेतु शासन को बलप्रयोग करना पड़ेगा। धर्म का राजनीतिक लाभ हेतु प्रयोग होगा तथा अधिकांश धार्मिक नेताओं का आचरण धार्मिक मर्यादाओं के अनुकूल नहीं होगा। राज्येश राहु के साथ तृतीय भाव में स्थित है तथा शनि की तृतीय दृष्टि भी राज्य स्थान पर है अतः शासक की शासन पर पकड़ कमजोर होगी एवं शासक को भारी विरोधों का सामना करना पड़ेगा। इस वर्ष इस राज्य में राजनीतिक अस्थिरता सम्भव है।

पंजाब- मीन राश्याधिप नवम भाव में मित्र के घर स्थित है अतः राज्य का चहुंमुखी विकास होगा। लग्न में रिपु भावेश स्थित है इसके प्रभाव से शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। धन भाव का अधिपति उच्च का होकर लाभस्थान में स्थित है इसके प्रभाव से राज्य की आर्थिक स्थिति अनुकूल होगी एवं लोगों में धन-समृद्धि बढ़ेगी। पराक्रम भाव का अधिपति शुक्र धन भाव में स्थित है अतः संचार यातायात में उन्नति सुधार होगा तथा अन्य राज्यों से सम्बन्ध प्रायः सामान्य रहेंगे। चतुर्थ भाव का अधिपति व्यय भाव में राहु के साथ स्थित है अतः कृषि को प्राकृतिक प्रकोपों रोगादि

से हानि सम्भव है तथा कृषि उत्पादों के निर्यात में वृद्धि ... दृष्टि है अतः अलगाववादी संगठन सक्रिय रहेंगे एवं

से हानि सम्भव है तथा कृषि उत्पादों के निर्यात में वृद्धि होगी। पंचमेश अस्त होकर लग्नस्थ है तथा पंचम भाव पर स्थित शनि पर मंगल की पूर्ण दृष्टि है तथा गुरु की पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि है अत: औद्योगिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जायेगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति होगी। तकनीकी शिक्षा का विस्तार होगा। भ्रूण हत्या के मामलों वृद्धि होगी। भौम की दृष्टि से बाल मृत्युदर में भारी वृद्धि हो सकती है। रिपु भाव के स्वामी की लग्न में स्थिति होने से शासक के निकट के लोग अप्रत्यक्ष रूप से शासक का विरोध करेंगे। सप्तम भाव का अधिपति व्यय भाव में राहु के साथ स्थित है तथा सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि है अत: महिलाओं पर अत्याचार की बढ़ती घटनायें चिन्ता का कारण बनेंगी तथा तलाक के मामलों में भारी वृद्धि होगी। विदेश व्यापार निर्यात में वृद्धि होगी। अष्टम भाव का अधिपति अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। इसके फलस्वरूप राजकोष की स्थिति सुदृढ़ होगी। नवमाधिपति लाभ स्थान में उच्च का होकर स्थित होने से कानून व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक रहेगी। दशमभाव का अधिपति नवम भाव में मित्र के घर स्थित है अत: शासक अपना कार्य सुचारू रूप से करेंगे। प्लूटोग्रह दशम भाव में स्थित है यह शासक को अधिनायकवादी प्रवृत्ति का बनायेगा।

हरियाणा- मिथुन राशि से प्रभावित इस राज्य का राश्याधिप नवम भाव में राहु के साथ स्थित है अत: यह राज्य प्रगति करेगा तथा राज्य के सर्वांगीण विकास के प्रयास होंगे। धन भाव में शनि स्थित है तथा धनेश अस्त होकर दशमस्थ है अत: विकास योजनाओं में आर्थिक समस्या कुछ बाधा उत्पन्न करेगी। पराक्रम भाव का अधिपति केन्द्र में स्थित है अत: औद्योगिक विकास की गति तेज होगी। भौम की अष्टम दृष्टि कुछ विवाद उत्पन्न करने वाली है। चतुर्थ भाव का स्वामी नवमस्थ होने से कृषि का उत्पादन पर्याप्त होगा। कुछ प्राकृतिक प्रकोपादि के कारण से कृषि की हानि चतुर्थेश के साथ राहु के स्थित होने से होगी। चतुर्थ स्थान पर शनि की दृष्टि किसी प्राकृतिक या अन्य कारण से लोगों को सुरक्षा की दृष्टि से अन्य सुरक्षित स्थान में जाने को बाध्य करेगी ऐसा ग्रह स्थिति से संकेत है। शनि-मंगल का समसप्तक योग किसी बड़ी दुर्घटना आदि का भी संकेत दे रहा है। पंचम भाव का अधिपति पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है इसके फलस्वरूप शिक्षा में सुधार होगा। विकास योजनाओं का क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से किया जायेगा। सप्तमेश रिपुभाव में स्थित होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी तथा महिला कल्याण पर ध्यान दिया जायेगा। अष्टमेश की अष्टम पर दृष्टि राजकोष की स्थिति को सन्तोषजनक रखेगी। भौम के कारण कुछ अवधि चिन्ताजनक रहेगी। लग्नेश रिपु भाव में स्थित होने से शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा किन्तु शासक की सत्ता पर मजबूत पकड़ बनी रहेगी।

काश्मीर- तुला राशि से प्रभावित इस राज्य का लग्नेश लग्न को देख रहा है तथा लग्नेश पर दशमस्थ शनि की दृष्टि है अत: अलगाववादी संगठन सक्रिय रहेंगे एवं नित्य नयी समस्या उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे। धन भाव का स्वामी उच्च का होकर स्थित है तथा शनि से दृष्ट है तथा रिपुभाव का स्वामी धन भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप आन्तरिक समस्याएं बनी रहेंगी तथा लोगों में भय एवं अशान्ति का वातावरण बनेगा। शत्रु इस राज्य में अशान्ति एवं अस्थिरता उत्पन्न करने का पूर्ण प्रयास करेगा। चतुर्थ भाव का अधिपति चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा शनि-मंगल का समसप्तक योग आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि, अग्निकाण्ड, बम्ब विस्फोट एवं आतंकी हमलों द्वारा हत्याओं की घटनाओं में वृद्धि का संकेत दे रहा है। ग्रह स्थिति कश्मीर समस्या के समाधान का संकेत नहीं दे रही है। तृतीय भाव का स्वामी द्वितीय भाव में है तथा तृतीय भाव का स्वामी ही रिपु भाव का भी स्वामी है अत: पड़ौसी देश आतंकवाद को पोषित एवं प्रोत्साहित करके इस राज्य की शान्ति को भंग कर भय का वातावरण उत्पन्न करके अस्थिरता उत्पन्न करने का प्रयास करेगा। पंचमेश वक्री होकर दशमस्थ है तथा पंचम भाव में राहु एवं बुध के स्थित होने से शिक्षा एवं बाल विकास कार्यक्रम एवं महत्वपूर्ण योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से नहीं हो पायेगा। सप्तम भाव का स्वामी चतुर्थ भाव में उच्च राशि का होकर स्थित है तथा शनि की सप्तम दृष्टि सप्तमेश पर एवं दशम दृष्टि सप्तम स्थान पर है। महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। तलाक के मामलों में भी भारी वृद्धि होगी। नवम भाव का अधिपति पंचम भाव में राहु के साथ स्थित है इसके फलस्वरूप धर्म का राजनीति में विघटनकारी तत्त्वों द्वारा दुरुपयोग किया जायेगा। राज्य में कानून व्यवस्था की स्थिति संतोष जनक नहीं होगी। दशम-भाव का स्वामी अस्त होकर रिपुभाव में स्थित है तथा रिपुभाव का अधिपति नवम दृष्टि से दशमभाव को देख रहा है जिसके प्रभाववश शासक को प्रबल विरोधों का सामना करना पड़ेगा तथा शासक की सत्ता पर पकड़ कमजोर होगी तथा हिंसक विरोध होने की प्रबल संभावना होगी। अत: शासक को सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए प्रबल प्रयास करने पड़ेंगे।

हिमाचल प्रदेश- मीन राशि से प्रभावित इस प्रदेश का राश्याधिप नवम भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप यह राज्य प्रगति पथ पर चलेगा। धन स्थान का अधिपति लाभस्थान में उच्च का होकर स्थित होने से आन्तरिक स्थिति सुदृढ़ होगी तथा राज्य की अर्थव्यवस्था में भारी प्रगति होगी। तृतीय भाव का स्वामी द्वितीय भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप परिवहन व्यवस्था एवं संचार व्यवस्था में सुधार होगा। चतुर्थ भाव का स्वामी द्वादश भाव में राहु के साथ स्थित है इसके प्रभाव से कृषि एवं कृषि क्षेत्र की हानि प्राकृतिक प्रकोपों, ओलावृष्टि, रोगादि से होगी एवं लोगों को भी कष्ट होगा। पंचम भाव का स्वामी लग्न में स्थित है तथा पंचम भाव में शनि भी स्थित है। पंचम भाव का प्रभाव

जनसंख्या, शिक्षा, बालविकास एवं विकास योजनाओं पर होने से सामान्य शुभफलप्रद होगा। अत: शिक्षा में सुधार होगा, शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। भ्रूण हत्या में भारी वृद्धि होगी। रिपु भाव का स्वामी ग्रह धन भाव में स्थित है तथा अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है इसके प्रभाववश समाज विरोधी, राष्ट्र विरोधी तत्व अशान्ति का वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे या रोगों की वृद्धि होगी। सप्तम स्थान का स्वामी उच्च का होने से महिला कल्याण पर ध्यान दिया जायेगा। नवमेश पंचम में होने से कानून-व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक रहेगी। दशमाधिपति नवमस्थ होने से शासक की सत्ता पर पकड़ रहेगी एवं राज्य विकास के मार्ग पर अग्रसर होगा।

मध्य प्रदेश- लग्न का स्वामी शुभ ग्रह द्वादश भाव में स्थित होने से यह वर्ष सामान्य शुभ रहेगा। धन भाव का स्वामी दशम भाव में मित्र के घर स्थित होने से आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी एवं राज्य विकास के पथ पर अग्रसर होगा। तृतीय भाव का स्वामी लाभ स्थान में स्थित होने से तथा तृतीय भाव में स्थित शनि पर नवमस्थ भौम की दृष्टि होने से औद्योगिक विकास की दर बढ़ेगी तथा कुछ बड़ी दुर्घटनाओं के घटने की भी सम्भावना होगी। चतुर्थभाव में केतु स्थित है एवं चतुर्थभाव का स्वामी रवि लाभ स्थान में चन्द्र के साथ स्थित है अत: यद्यपि कृषि की हानि होगी किन्तु कृषि का उत्पादन पर्याप्त होगा। आवासीय क्षेत्र का भी विकास होगा। पंचम भाव का स्वामी दशम भाव में राहु के साथ स्थित है अत: शिक्षा में सुधार होगा एवं लोगों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। बाल मृत्युदर में भी वृद्धि होने की सम्भावना है। शनि की तृतीय दृष्टि पंचम भाव पर है इसके प्रभाव से रोगादि से बालक ज्यादा पीड़ित होंगे तथा विकास योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से नहीं होगा। सप्तम भाव का अधिपति उच्च का है अत: महिला कल्याण पर विशेष ध्यान दिया जायेगा, निर्यात में वृद्धि होगी। नवमेश-दशमेश पराक्रम में स्थित होने से धर्म का राजनीति में उपयोग होगा। शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा तथापि शासक की सत्ता पर अपने पराक्रम से पकड़ बनी रहेगी।

गुजरात- लग्न का स्वामी अष्टम स्थान में स्थित है तथा लग्न में केतु भी है अत: शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा। कुटुम्ब भाव का अधिपति सप्तम भाव में स्थित है अत: आर्थिक दृष्टि से राज्य प्रगति करेगा। पराक्रम भाव का स्वामी पराक्रम भाव को देख रहा है अत: संचार व्यवस्था, यातायात व्यवस्था में सुधार होगा। चतुर्थभाव का अधिपति रिपुभाव में उच्च का होकर स्थित है अत: लोगों का जीवन स्तर उठेगा तथा आवासीय योजनायें, कृषि क्षेत्र की विकास योजनायें, कृषि उत्पादन में वृद्धि आदि पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। चतुर्थभाव का विश्लेषण करने पर स्पष्ट हो रहा है कि चतुर्थेश यद्यपि उच्च का है किन्तु रिपुभाव में है, चतुर्थ भाव में गुरु है किन्तु गुरु अष्टमेश भी है तथा चतुर्थेश पर रिपुभावेश शनि की भी दृष्टि है, लग्न पर भौम की दृष्टि है तथा द्वितीय भाव शनि से दृष्ट है अत: इस वर्ष समाज विरोधी, राष्ट्रविरोधी, आतंकी तत्व षड्यन्त्र रचकर इस राज्य की शांति-व्यवस्था को भंग करने का प्रयास करेंगे। पंचम भाव का अधिपति गुरु केन्द्र में स्थित होने से शिक्षा के प्रचार-प्रसार, शिक्षा के स्तर में सुधार पर विशेष ध्यान दिया जायेगा तथा विकास योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से किया जायेगा। सप्तमेश व्ययस्थ होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। निर्यात में वृद्धि भी इस वर्ष होगी। नवमाधिपति उच्च का होने से कानून व्यवस्था सुदृढ़ होगी किन्तु शनि की दृष्टि नवमेश एवं नवम भाव दोनों पर होने से कानून-व्यवस्था की समस्या कुछ भागों में उत्पन्न होने की सम्भावना है। राज्येश नवम में स्थित होने से शासक की सत्ता पर पकड़ रहेगी किन्तु शासक को अस्थिर करने के गम्भीर प्रयास विरोधी करेंगे।

दिल्ली- राशि लग्न का स्वामी व्यय भाव में स्थित है तथा लग्नेश पर शनि की दृष्टि भी है अत: यह वर्ष शान्ति-व्यवस्था की दृष्टि से अनुकूल नहीं है। द्वितीय भाव का अधिपति केन्द्र में राहु के साथ स्थित है अत: आर्थिक दृष्टि से प्रगति होगी। तृतीयेश लाभ में अस्त होकर स्थित है अत: यातायात, दूरसंचर व्यवस्था में सुधार होगा। चतुर्थभाव का स्वामी लाभ स्थान में स्थित है तथा चतुर्थ भाव में केतु स्थित है अत: आवासीय क्षेत्र का विस्तार होगा। केतु की स्थिति एवं भौम की दृष्टि कुछ अशांति एवं कष्ट व भय का वातावरण उत्पन्न करेंगे। पंचमेश भी केन्द्रस्थ है अत: विकास योजनाओं का क्रियान्वयन सुचारू रूप से होगा। शिक्षा में सुधार एवं शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं बाल विकास कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। सप्तम भाव का अधिपति उच्च का होकर नवम भाव में स्थित है इसके प्रभाववश महिला कल्याण योजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। महिलाओं की सुरक्षा एवं अधिकारों के लिए नये कानून पर विचार होगा। शनि की सप्तमेश पर दृष्टि होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। अष्टमेश भी सप्तम भाव में स्थित है अत: तलाक के मामलों में वृद्धि होगी। नवम भाव एवं दशम भाव का अधिपति पराक्रम भाव में स्थित है अत: राजनीति का धर्म में उपयोग होगा। दशमेश चर राशि में है अत: शासक की सत्ता पर पकड़ कमजोर होगी एवं शासक को विरोधियों का सामना करना पड़ेगा।

राजस्थान- राशि का स्वामी राशि लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अत: यह राज्य विकास पथ पर अग्रसर होगा। धन भाव का अधिपति उच्च का होकर चतुर्थ भाव में है अत: लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा एवं आर्थिक प्रगति होगी। तृतीय भाव का स्वामी शुभ ग्रह होने से संचार व्यवस्था, यातायात व्यवस्था में सुधार होगा। चतुर्थ भाव का स्वामी चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अत: कृषि भूमि एवं आवासीय भूमि दोनों के विकास के प्रयास होंगे एवं कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु किसानों के लिए नयी

योजनाएं लागू होंगी। पंचमेश केन्द्र में है अत: शिक्षा के स्तर में सुधार होगा तथा तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहित किया जायेगा। रोगेश की पंचमेश पर दृष्टि होने से बाल रोगों में वृद्धि होगी एवं बालशोषण की घटनाओं में वृद्धि होगी। सप्तम स्थान का अधिपति उच्च का होने से महिला कल्याण योजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। शनि की दृष्टि सप्तम भाव में होने से तलाक के मामलों में वृद्धि होगी। नवमेश पंचम में है अत: कानून व्यवस्था की स्थिति संतोष्जनक होगी। कुछ भागों की समाजविरोधी तत्व कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न करेंगे। शासक को विरोधों का सामना करना पड़ेगा तथा सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिये शासक को विशेष प्रयास करने पड़ेंगे।

महाराष्ट्र- राशि का स्वामी अष्टम भाव में स्थित है तथा केतु भी लग्न में स्थित है इसके प्रभाववश शासक को शासन चलाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। द्वितीय भाव का अधिपति सप्तम भाव में राहु के साथ स्थित है इसके प्रभाववश आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी किन्तु अशांति एवं भय का वातावरण बनाने के लिए समाज विरोधी तत्व प्रयास करेंगे। तृतीय भाव का अधिपति नवम भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप राज्य का चहुंमुखी विकास होगा। यातायात व्यवस्था एवं संचार साधनों में सुधार होगा। चतुर्थेश रिपु भाव में उच्च का होकर स्थित है तथा अष्टमेश चतुर्थ भाव में स्थित है तथा शनि की सप्तम दृष्टि चतुर्थेश पर होने से समाजविरोधी, देशद्रोही आतंकी गुट इस महत्वपूर्ण राज्य की शांति व्यवस्था को भंग करने का प्रयास करेंगे। औद्योगिक क्षेत्र एवं आवासीय क्षेत्र का द्रुतगति से विकास होगा। पंचम भाव का अधिपति गुरु केन्द्र स्थान में चतुर्थ भाव में स्थित है इसके फलस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में सुधार होगा एवं बाल विकास कार्यक्रम एवं साक्षरता अभियान पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। सप्तम भाव का अधिपति द्वादश भाव में स्थित होने से महिलाओं एवं वृद्धों पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। निर्यात में वृद्धि होगी तथा औद्योगिक व व्यापारिक विकास व निर्यात में वृद्धि होगी दशमेश नवम में स्थित है तथा शनि की दशमेश पर दृष्टि होने से यद्यपि शासक की सत्ता पर पकड़ मजबूत रहेगी किंतु शासक को विरोधों का भी सामना करना पड़ेगा तथा विपरीत स्थिति बनेगी।

बिहार- राश्याधिप द्वादश भाव में स्थित है तथा शनि से भी दृष्टि है अत: इस राज्य में शासक को नित्य नई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। धन भाव का अधिपति केन्द्र में स्थित है इसके फलस्वरूप आर्थिक दृष्टि से यह राज्य प्रगति करेगा। पराक्रम भावाधिप लाभ स्थान में स्थित होने से संचार व्यवस्था एवं यातायात व्यवस्था में सुधार होगा। सुख भाव का स्वामी लाभ स्थान में स्थित है अत: कृषिक्षेत्र का विकास होगा एवं आवासीय क्षेत्र का भी विस्तार होगा तथा औद्योगिक विकास की दर बढ़ेगी। पंचमेश केन्द्र में राहु के साथ स्थित है। शिक्षा में सुधार होगा। साक्षरता अभियान चलाकर एवं बाल विकास योजनाओं द्वारा शिक्षा का प्रचार-प्रसार होगा। बाल रोगों में वृद्धि होगी एवं बाल मृत्युदर भी बढ़ेगी। सप्तम स्थान का अधिपति उच्च का होकर नवमस्थ होने से महिलाओं को कार्यों के अधिक अवसर दिये जायेंगे तथा महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु कानून में नये प्रावधान किये जायेंगे तथा महिला कल्याण योजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। अष्टमेश के सप्तमस्थ होने से महिलाओं पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी एवं तलाक के मामलों में वृद्धि होगी। नवम भाव का अधिपति पराक्रम भाव में स्थित होने से कानून व्यवस्था की स्थिति संतोषजनक होगी किन्तु नवम भाव में मंगल स्थित होकर नवमेश शनि से समप्तक योग भी बना रहा है अत: कुछ भागों में कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न होगी। जातीय हिंसा से जन धन हानि भी इस योग के फलस्वरूप होगी। दशम भाव का अधिपति पराक्रम भाव में वक्री होकर स्थित है तथा राहु भी दशमस्थ है इसके फलस्वरूप शासक को सत्ता पर अपनी पकड़ बनाये रखने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। अपने ही लोग अप्रत्यक्ष रूप से विरोध करेंगे। जिससे विषम स्थिति उत्पन्न होने की आशंका बनेगी।

दक्षिणी राज्य- आन्ध्र, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु- आंध्र का राश्याधिप उच्च का होकर स्थित है इससे यह राज्य प्रगति पथ पर अग्रसर होगा। धन भाव का अधिपति लग्नस्थ होने से आर्थिक स्थिति अनुकूल होगी। तृतीय भाव का स्वामी लाभस्थान में स्थित होने से यातायात दूरसंचार के क्षेत्र में भारी प्रगति होगी। चतुर्थ स्थान का स्वामी व्ययस्थ है अत: कृषि-कृषि भूमि तथा आवासीय क्षेत्र की प्राकृतिक प्रकोपों से कुछ हानि होने की संभावना है। तकनीकी शिक्षा में सुधार होगा बाल विकास एवं महिला कल्याण योजनाओं पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। शासक को सत्ता पर पकड़ बनाये रखने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। कर्नाटक एवं केरल का राश्याधिप त्रिकोण में राहु के साथ स्थित है अत: ये राज्य सुनियोजित तरीके से प्रगति योजनाओं का क्रियान्वयन करेंगे। कुटुम्बेश दशमस्थ है तथा अष्टमेश कुटुम्ब भाव में स्थित है तथा मंगल-शनि का प्रतियोग भी बना हुआ है इसके फलस्वरूप आन्तरिक अशान्ति बढ़ेगी एवं कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न होगी। दुर्घटनाओं में वृद्धि होगी। कुछ बड़ी दुर्घटनाएं होने की सम्भावना है। आतंकी गुट अशांति अव्यवस्था फैलाने के लिए षड्यन्त्र रचेंगे। शिक्षा के स्तर में सुधार करने के प्रयास होंगे तथा बालमृत्युदर घटेगी। यद्यपि रोगादि प्राकृतिक कारणों से कृषि की हानि होगी किन्तु कृषि का उत्पादन पर्याप्त होगा। कृषि क्षेत्र का विस्तार होगा तथा कृषकों की समस्याओं का निराकरण करने हेतु प्रयास किये जायेंगे। आवासीय क्षेत्र का भी विकास होगा। आर्थिक दृष्टि से इन राज्यों की स्थिति संतोष जनक रहेगी। राज्य स्थान का अधिपति रिपुभाव में मित्र के घर बैठकर राज्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अत: शासक की यद्यपि सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी किन्तु

अस्थिरता उत्पन्न करने के प्रयास भी होंगे। तमिलनाडु की राशि का स्वामी अपनी राशि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अतः शासक दल की सत्ता पर पकड़ बनी रहेगी। धन भाव का स्वामी उच्च का होकर स्थित होने से आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी तथा लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। चतुर्थेश की चतुर्थ भाव पर दृष्टि तथा चतुर्थ भावस्थ भौम का शनि से प्रतियोग कुछ अशांति की ओर इंगित कर रहा है तथा कृषि उत्पादन प्राकृतिक प्रकोप के होने पर भी पर्याप्त होगा। शिक्षा, समाज कल्याण, बाल विकास कार्यक्रमों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। महिलाओं को कार्यों के अधिक अवसर प्रदान होंगे। विकास द्रुत गति से होगा।

बंगाल, आसाम, उड़ीसा, अरुणाचल प्रदेश- उड़ीसा एवं बंगाल राश्याधिप व्यय भाव में चर राशि में स्थित है तथा शनि जो कि दशमाधिप है वक्री होकर पराक्रम भाव में स्थित है व्ययस्थ लग्नेश को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है अतः शासक को सत्ता पर पकड़ बनाये रखने के लिए विशेष प्रयास करने पड़ेंगे। धन भाव का अधिपति दशमभाव में स्थित है इसके फलस्वरूप राज्य के लोगों का जीवन स्तर सुधरेगा। पराक्रमेश लाभस्थ होने से यातायात, दूरसंचार के क्षेत्र में यह राज्य प्रगति करेगा। सुखभाव का अधिपति लाभ भाव में स्थित है तथा सुखभाव में केतु स्थित है। अतः कृषि एवं भूमि विकास पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। कुछ भागों में प्राकृतिक प्रकोपों से कृषि की हानि भी होगी किन्तु कुल मिलाकर कृषि उत्पादन पर्याप्त होगा। पंचम भाव का स्वामी भी केन्द्रस्थ है अतः विकास योजनाएं सुविचारित होंगी एवं उनका क्रियान्वयन प्रभावी ढंग से किया जायेगा। शिक्षा के प्रचार-प्रसार एवं सबको शिक्षा प्रदान करने हेतु साक्षरता अनुपात बढ़ाने हेतु गम्भीर प्रयास किये जायेंगे बाल विकास कार्यक्रमों पर जोर दिया जायेगा। शनि की तृतीय दृष्टि भी पंचम भाव पर होने से भ्रूण हत्या बढ़ेगी एवं बच्चों पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि होगी। सप्तम भाव का अधिपति उच्च का होकर नवमस्थ है अतः महिला कल्याण योजनाएं चलायी जायेंगी तथा महिलाओं को रोजगार के अधिक अवसर प्रदान होंगे।

अरुणाचल एवं आसाम का राश्याधिप उच्च का होकर केन्द्र में स्थित है तथा शुक्र राशि लग्न में स्थित है इसके प्रभावस्वरूप इन राज्यों का चहुंमुखी विकास होगा। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी एवं लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। औद्योगिक विकास की दर बढ़ेगी, दूर संचार एवं यातायात व्यवस्था में सुधार होगा। कृषि क्षेत्र एवं कृषि को इस वर्ष प्राकृतिक प्रकोपों, अतिवर्षण, अल्पवर्षण, रोगादि कारणों से हानि होगी तथा प्राकृतिक प्रकोप से आवासीय क्षेत्र भी प्रभावित होंगे एवं किसी भाग विशेष से लोगों को सुरक्षा की दृष्टि से विस्थापित होना पड़ सकता है अतः आवासीय समस्या उत्पन्न होगी।

पंचमेश व्यय में है एवं पंचम भाव में केतु भी स्थित है अतः बाल रोग अधिक होंगे एवं बाल मृत्युदर में वृद्धि होगी। शिक्षा में अपेक्षित सुधार नहीं होगा। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार होगा। शासक की सत्ता पर पकड़ रहेगी लेकिन शासक को विरोधों का भी सामना करना पड़ेगा।

खाद्यान्न समस्या

अन्नं प्राणोबलं चान्नमन्नं सर्वार्थ साधकम्।
देवासुरमनुष्याश्च सर्वे धान्योपजीविनः।

गेहूँ आदि खाद्य पदार्थों की महंगाई निरन्तर बढ़ते जाने की भविष्यवाणी गत ४० वर्षों से इस पंचांग में करते आ रहे हैं स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शनैः-शनैः महंगाई बढ़ती गई और विगत अनेक वर्षों से तो सुरसा के मुख की भांति विकराल रूप से बढ़ती जा रही है। १०-११ वर्ष पूर्व गेहूँ चावल, चना, चीनी, चांदी, सोना आदि का जो भाव था वह दुगने तिगुने से भी अधिक हो गया है। मंहगाई रोकने और गरीबी दूर करने की राजनेताओं की चुनावी घोषणाएं निरर्थक सिद्ध हुई। भारत के प्राचीन महर्षियों ने अन्न की महिमा में कहा है कि राजा या राष्ट्रनायक को अपने राजकीय अन्न भंडार में तीन वर्ष तक राष्ट्र के पोषण योग्य संग्रह रखना चाहिए। सोना, चांदी, माणिक्य आदि रत्नों की ओर न भाग कर जैसे और जिस विधि से भी हो अधिक अन्न उपजाकर अपना तथा राष्ट्र का हित करना चाहिए।

वायु परीक्षा

यहाँ वर्षा दुर्भिक्ष उत्पातादि का विचार ग्रहयोगानुसार लिखा गया है। आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा और अन्य दिव्य अन्तरिक्ष-लक्षण जहाँ शुभ शकुन का संकेत देंगे, वहाँ अवर्षण उत्पात दुर्भिक्ष न होकर सामयिक सुवृष्टि एवं सुभिक्ष होगा। जहाँ आषाढ़ी पूर्णिमा को सूर्यास्त समय दक्षिण पश्चिम नैऋत्य कोण की वायु चलेगी वहाँ दुर्भिक्ष, उत्पात, रोग, भय, अधिक होंगे। विद्वान, दैवज्ञों को वर्ष भर के गर्भ लक्षण शकुन विचार नोट करने चाहिए। वर्ष भर के न हो सकें तो कम से कम इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा १३ जुलाई रविवार को सायं तक खुले स्थान में जाकर ध्वजा पूजन पूर्वक विधिवत वायु-परीक्षा करके अपने राष्ट्र के शुभाशुभ फल का निर्णय करें।

वाणिज्य व्यवसाय

इस वर्ष वाणिज्य व्यवसाय का प्रतिनिधि ग्रह बुध रसेश; भी है तथा वर्ष प्रवेश कुण्डली में लाभ स्थान में स्थित है। अतः व्यापारी वर्ग को रस पदार्थों के व्यापार में आर्थिक लाभ अधिक होगा एवं लाभ में वृद्धि होगी। कुण्डली में बुध राहु से युत है तथा बुध तृतीयेश एवं षष्ठेश भी है। इसके प्रभाव से व्यापारियों को विभिन्न समस्याओं का

भी सामना करना पड़ेगा। असमाजिक तत्वों से व्यापारी वर्ग को पीड़ा होगी। चोरी एवं

भी सामना करना पड़ेगा। असमाजिक तत्वों से व्यापारी वर्ग को पीड़ा होगी। चोरी एवं डैकैती की घटनाओं में वृद्धि होगी। धातु एवं लौह पदार्थ तथा तेल, खनिज आदि के भावों में भारी बढ़ोत्तरी होगी ऐसा ग्रह स्थिति संकेत दे रही है।

वायुमण्डल वर्षारोगोत्पादि

इस वर्ष की ग्रह स्थिति के आधार पर प्राचीन ग्रन्थों से सार्वत्रिक वर्षादि का सामूहिक विचार यहाँ लिख रहा हूँ। भौमान्तरिक्ष दिव्य निमित्तानुसार वर्षा वायु भिन्न प्रान्तों में विभिन्न रूपों में होती है। भारतीय वायुशास्त्र में प्रत्येक नगर या मंडल में प्रतिदिन की वायु मेघगर्जना बादल विद्युतादि की परीक्षा द्वारा व वृष्टि-गर्भ लक्षण का उल्लेख है। जैसे- आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा द्वारा तत्रदेशीय दुर्भिक्ष-सुभिक्ष का ज्ञान होता है, वैसे ही प्रत्येक मास की प्रमुख तिथियों की वायु वर्षा मेघ-गर्जन आदि अन्तरिक्ष निमित्त से भावी वर्षा का ज्ञान होता है। इस कार्य के लिए प्रत्येक प्रान्त व मंडल में एक वायु-वृष्टि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हो जिसमें प्रतिदिन की वायु-वर्षा का रिकार्ड रखा जाये, उस अन्तरिक्ष दिव्य निमित्त और ग्रह योगों का मिलान करके वर्षादि की जो भविष्यवाणी की जायेगी वह उस स्थान के लिए सत्य सिद्ध होगी। भौमान्तरिक्ष दिव्य निमित्तों के बिना केवल ग्रहयोगों से की गई भविष्यवाणी सर्वत्र शतप्रतिशत सही हो यह निश्चित नहीं। यह बात विगत कई वर्षों से इस पंचांग में निरन्तर लिखी जा रही है परन्तु केन्द्रीय शासन ने राष्ट्र के लिए परमोपयोगी इस विषय पर ध्यान नहीं दिया। प्रतिवर्ष बाढ़ और सूखा से यत्र-तत्र भयंकर विनाश हो रहा है।

वर्षा योग

सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से दस नक्षत्र वर्षाकारक माने गये हैं। भारत में २१ जून से मेघागमन (मानसून का प्रारम्भ) माना जाता है। समुद्र तटवर्ती दक्षिणवर्ती भारत में मृगशीर्ष नक्षत्र में सूर्य प्रवेश होने पर १० जून के लगभग मानसून सक्रिय हो जाता है। वर्षा एवं कृषि उत्पादन के लिए सूर्य आर्द्रा प्रवेश का विशेष महत्व है।

आर्द्रा प्रवेशे यदि भास्करस्य चन्द्रस्त्रिकोणे यदि केन्द्रगोवा।
जलाश्रये सौम्यनिरीक्षिते च सम्पूर्ण सस्या वसुधा तदा स्यात्।।

भारत में वर्षा के दिन

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के दिन २२ जून से २३ अगस्त तक पूरी वर्षा ऋतु की अवधि में शुक्र एवं शनि शुभ एवं पाप ग्रह सूर्य के आगे भ्रमण करेंगे। पूरे मानसून की अवधि में यह अशुभ योग होने से अतिवर्षण अल्पवर्षण, प्राकृतिक प्रकोप होगा। कहीं-कहीं अधिक वर्षा से लोग त्रस्त होंगे। अप्रैल मास में कहीं हल्की बूंदाबांदी एवं कहीं-कहीं अच्छी वर्षा होगी। जून मास के उत्तरार्ध में कहीं छिटपुट बूंदाबांदी होगी। १ से १४ जुलाई के मध्य हल्की वर्षा व कहीं तेज बौछार पड़ेगी। १५ जुलाई से ३० जुलाई के मध्य कहीं अच्छी वर्षा, कहीं खण्ड वृष्टि होगी। ३१ जुलाई से १२ अगस्त के मध्य व्यापक वर्षा होगी। कुछ स्थानों में वर्षा का अवरोध या कम वर्षा होगी। १३ से २८ अगस्त के मध्य भी कहीं भारी वर्षा, कहीं हल्की वर्षा एवं तेज बौछार व कहीं-कहीं तेज आंधी चलेगी। २९ अगस्त से ११ सितम्बर के मध्य भी तेज वर्षा व तेज वायु की कहीं-कहीं सम्भावना है। कुछ स्थानों पर खण्डवृष्टि व हल्की वर्षा होगी। १२ से २६ सितम्बर के मध्य वर्षा में कमी होगी। कहीं-कहीं हल्की वर्षा होगी। २७ सितम्बर से २६ अक्टूबर के मध्य छिटपुट बूंदाबांदी या हल्की वर्षा होगी। २७ अक्टूबर से ९ नवम्बर के मध्य शीत में वृद्धि होगी व तेज बादल चाल व बूंदाबांदी होगी। १० से २४ नवम्बर के मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में वर्षा की सम्भावना है। २५ नवम्बर से ९ दिसम्बर के मध्य शीत लहर के साथ छिटपुट बूंदाबांदी होगी। १० से २३ दिसम्बर के मध्य शीत बढ़ेगी। २४ दिसम्बर से ८ जनवरी के मध्य तेज शीत लहर के साथ भारी वर्षा की सम्भावना है। ९ से २२ जनवरी के मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में ओलावृष्टि की सम्भावना है तथा कहीं-कहीं वर्षा होगी। २३ जनवरी से ७ फरवरी के मध्य बूंदा-बांदी व ओलावृष्टि या हल्की वर्षा होगी। ८ से २१ फरवरी के मध्य मैदानी भागों में शीत लहर चलेगी। २२ फरवरी से ७ मार्च के मध्य बादल गर्जना के साथ खण्ड वृष्टि होगी। पर्वतीय क्षेत्रों में ओलावृष्टि या हल्की वर्षा की संभावना है। ८ से २१ मार्च के मध्य बादल चाल के साथ हल्की बूंदा-बांदी की सम्भावना है। २२ मार्च से ६ अप्रैल के मध्य पर्वतीय क्षेत्रों में हल्की बूंदा-बांदी होगी। मैदानी भागों में गर्मी बढ़ेगी।

वर्तमान २१वीं शती का यह प्रथम चरण ग्रह-गणनानुसार संसार के इतिहास में अभूतपूर्व भयंकर उलटफेर कारक है। महामाया से प्रार्थना है कि वे युद्धोन्मादी राष्ट्रनायकों को सद्बुद्धि दें और विश्व को विनाश के गर्त में ले जाने से बचावें। भारत की तपोधन, आध्यात्मिक महान विभूतियाँ ही विश्व का कल्याण करेंगी।

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येनमार्गेण महीं महीपाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकास्समस्ताः सुखिनो भवन्तु।

मंगलाकांक्षी

गीता जयंती, मार्गशीर्ष शुक्ल ,११
शुक्रवार, संवत् २०६३ विक्रमी
दिनांक: १-१२-२००६ ई.

पं० सुधाकर शर्मा त्रिवेदी
ज्योतिष्मती निकेतन, सोलन (हि.प्र.)
फोन/ फैक्स- ०१७९२-२२०५९६
E-mail : rohitashw@gmail.com
web site : www.shrivishwavijay.com

संवत् २०६४ विक्रमी का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक- विश्वबन्धु शर्मा सुपुत्र श्री ओंकार दैवज्ञ, (व्यापार अनुसंधान केन्द्र), हापुड़

अथ सम्वत् विचार:- सम्वत् २०६४ का वर्ष शर्वरी नाम का सम्वत् है। वर्ष का राजा चन्द्र, मंत्री- शनि, सस्येश- चन्द्र, धान्येश- सूर्य, मेघेश- शुक्र, रसेश- बुध, नीरसेश- चन्द्र, फलेश- शुक्र, धनेश चन्द्र, दुर्गेश- शुक्र हैं। इस प्रकार आकाशीय चक्र में दस अधिकारी विद्यमान हैं।

राजा- चन्द्र हैं साथ ही सस्येश और नीरसेश भी चन्द्र ही हैं। इस प्रकार तीन प्रमुख स्थानों पर चन्द्र का होना वर्ष को श्रेष्ठ फल देने वाला बनायेगा। मेघेश- शुक्र श्रेष्ठ वर्षाकारक होंगे। धान्यों की अच्छी उत्पत्ति होगी। शनि का मंत्री होना शुभ नहीं है। राजा और मंत्री के मध्य यदा-कदा तनाव की स्थिति बनती रहेगी। मंत्री पद पर शनि के विद्यमान होने से आतंकवादियों से मंत्रीगणों के सम्बन्ध अन्दरूनी तौर पर रहेंगे और आतंकवादी घटनाओं का जोर रहेगा। तथापि पूर्व वर्षों की अपेक्षा घटनाएं कम ही हो पायेंगी साथ ही धर्म परिवर्तन की घटनाएं बढ़ेंगी। अच्छे भले लोग भी मायावी चमत्कारों के आकर्षण में जकड़ा होने के कारण धर्म परिवर्तन करके निम्न कोटि के धर्म का अनुसरण करने का प्रयास करेंगे। धान्येश सूर्य होने से धान्यों के भावों में अधिक उतार-चढ़ाव न होगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

चैत्र शुक्ल सम्वत् २०६४ में प्रतिपदा तिथि का क्षय होना और मंगलवारी चन्द्र दर्शन का होना विशेष रूप से हाजिर व वायदा वस्तुओं में तेजीकारक होगा। यह माह दि. २० मार्च से आरम्भ होकर २ अप्रैल को समाप्त होगा। दि. २० मार्च की रात्रि में धनिष्ठा में मंगल लाल रंग के पदार्थों में विशेष तेजीकारक होगा। अत: वायदा वस्तुओं में मन्दी रहने पर नीचे भावों में विशेष रूप से लाल रंग की वस्तु, लाल मिर्च, मसूर, गुड़, तांबा, मूंगा, लाल राजमा, बादाम आदि के भावों में खरीद करनी लाभ देगी। यहां पर एक सप्ताह में ही लाभ उठा लेना चाहिए। आगे चैत्र शुक्ल एकादशी की शाम को कुम्भ राशि में मंगल के प्रवेश के प्रभाव से मंगल के अधिकार की वस्तुओं में विशेष उतार-चढ़ाव होंगे अत: रुख देखकर व्यापार करें। यहां पर यह अवश्य ध्यान रखें कि दि. २९ मार्च व ३० मार्च के मध्य बने हाईएस्ट व लोएस्ट भावों में जो भी सबसे ऊँचा या सबसे नीचा हो, उसे काटकर जिस ओर दि. ३१ मार्च को या बाद मार्केट चले तब उसी ओर व्यापार करके लाभ उठाना चाहिए। यहाँ की चाल वैशाख बदी प्रतिपदा तक चलेगी। हाजिर गेहूं, जौ, चना, बाजरा, मटर, मूंग, मोंठ में मन्दी होगी। सोना-चांदी, तांबा आदि धातु गुड़, खांड, चीनी में तेजी का रुख इस माह में रहेगा। आलू स्टॉक करना लाभप्रद होगा।

वैशाख सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में पांच मंगलवार तथा पांच ही बुधवार हैं। दि. ३ अप्रैल से यह माह आरम्भ होकर दि. २ मई तक समाप्त होगा। पांच मंगलवारों का होना तेजी के बल की वृद्धि करने वाला तथा पांच बुधवार भी तेजीकारक ही सिद्ध होगा। इस माह की विशेष घटना गुरु का चतुर्थी शुक्रवार की रात्रि में वक्री होना है। यह वक्री अवस्था गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा के भावों में मन्दीकारक है। गुड़, खांड, चीनी के स्टाक में हाथ डालना लाभप्रद होगा। दि. ६ अप्रैल की रात्रि में वृष राशि पर शुक्र का संचरण रस पदार्थ, गुड़, खांड, चीनी, चांदी, कपास, रुई, ग्वार के भावों में तेजीकारक होने से नीचे स्तर पर भाव मिलने पर स्टाक करें। वायदा की इन्हीं वस्तुओं में लिवाली करनी चाहिए। यहां पर विशेष ध्यान यह रखें कि जिस वायदा वस्तु में दि. ७ अप्रैल को दि. ६ के बनें नीचे भाव से मार्केट टूट जाए तब डबल बेचकर दि. १० अप्रैल तक लाभ उठाना। हाजिर में रुई, कपास, सूत, सूती वस्त्र व नशे के पदार्थों के भावों में २६ दिन में मन्दी का ट्रेन्ड रहेगा।

आगे मेष संक्रांति के प्रभाव से दि. १५ अप्रैल से २० दिन में सोना-चांदी, चावल, तिलहन पदार्थ, वाहन, शेयर, धातु पदार्थ, लोहा, मशीन, चाय, कॉफी, चना, गेहूं के भावों में यहीं से तेजी बन जायेगी। अत: नीचे भावों में स्टाक करना लाभ्रद होगा। वैशाख शुदी में पंचमी शनिवार को बुधास्त के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, जूटपाट, बारदाना, ग्वार, चना, गेहूं, जौ के भावों में २० दिन में श्रेष्ठ तेजी की चाल बनेगी। वायदा मार्केटों के व्यापारियों हेतु विशेष सलाह है कि दि. २१ अप्रैल को २२ अप्रैल के बने ऊँचे भाव से जिस वस्तु के भाव ऊँचे हो उसमें विशेष तेजी एक सप्ताह की चलेगी।

प्रथम ज्येष्ठ सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

प्रथम ज्येष्ठ माह में पांच गुरुवारों का होना विशेष मन्दीकारक होने से यह ध्यान रखना कि चालू फसल की वस्तुओं में अगर शुरुआती तीन दिन मन्दी में रह जाएं तब उनमें विशेष नरमी की धारणा बनेगी। माह के आरम्भ होने की प्रात: से पूर्व मिथुन राशि में शुक्र के संचरण के प्रभाव से सफेद रंग की वस्तुओं के भावों में विशेष तेजी का दौर चलेगा। यहां पर चांदी, कपूर, ग्वार, उड़द, कपास, रुई के वायदा मार्केटों में तीन ही दिन में विशेष तेजी होगी। आगे मीने भौम दि. ७ मई की रात्रि में होने से सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, ग्वार, काष्ठ निर्मित वस्तुएं व सफेद व पीले रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी का दौर चलेगा। वायदा मार्केटों में दि. ८ मई को वृष बुध का प्रभाव व्यापारियों को विशेष लाभ देने वाला होगा। तिल, तेल, सूत, रुई, कपास, गेहूं, जौ, चना, मटर व धान्य के भावों में तेजी की धारणा बनेगी। आज के बने ऊँचे भाव से दि. ९ मई को जिस वायदा वस्तु के भाव कटेंगे उसी में जोरदार तेजी चार दिन में बन जायेगी। दि. १५ मई को वृष संक्रांति के प्रभाव से जूट, पाट, बारदाना, शेयर मार्केट, रुई, सूत, वस्त्र, चावल, गेहूं, शक्कर, कपूर, इलायची, बिनौला के भावों में तेजी का वातावरण बनेगा। आगे विशेष धारणा है कि दि. १४ मई से २० मई के बीच बने हाईएस्ट तथा लोएस्ट भाव नोट करें अगर हाईएस्ट भाव जिस वायदा या हाजिर वस्तु में क्रॉस हों तब तेजी की लम्बी लाईन उसी वस्तु में द्वितीय ज्येष्ठ बदी चतुर्थी मंगलवार तक बनेगी। दि. १४ मई को बुधोदय होने से वायदा मार्केटों

में आज दोपहर में बारह बजे के बाद दुतर्फा गली लगानी लाभ देगी। माह के दौरान शनि गुरु का नवपंचम दृष्टि योग चल रहा है। इसके प्रभाव से लौह पदार्थों में नरमी का प्र रहेगा। सोना-चांदी, हल्दी केशर में तेजी का वातावरण बना रहेगा। प्रथम ज्येष्ठ शुदी अष्टमी गुरुवार को शाम को मिथुन राशि में बुध के प्रभाव से हरे रंग की वस्तुओं के भावों में विशेष तेजी होगी। सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास, ग्वार के भावों में मन्दी होगी जो आगामी बारह दिन चलेगी।

द्वितीय ज्येष्ठ सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

द्वितीय ज्येष्ठ माह में पांच शुक्रवार व पांच शनिवार हैं जो कि माह में मन्दी की प्रधानता को दर्शित करते हैं। यह महीना दि. १ जून को आरम्भ होकर दि. ३० जून को समाप्त होगा। इस माह में खास ग्रह योग अष्टमी शुक्रवार दि. ८ जून को शाम को मृगशिर में सूर्य का प्रवेश तथा मिथुन संक्रांति का १५ जून को होना तथा दि. १९ जून की शाम को बुधास्त का होना है। दि. ८ जून को मृगशिर में सूर्य के संचरण के प्रभाव से चौदह दिन में जलीय पदार्थ नारियल, फल, रुई, घी देसी, रेशम, वस्त्र, कपूर, चन्दन, सुगंधित पदार्थ, चना, धान्यों के भावों में तेजी का रुख बनेगा। बाद दि. १५ जून को वृष संक्रांति के प्रभाव से ग्वार, जीरा, घी, अजवायन, सौंफ, जायफल, कागज, बाजरा, ज्वार शेयरों के भावों में तेजीकारक होगा। दि. १६ जून को मेष में मंगल का प्रभाव दि. १८ जून से गेहूँ, जौ, चना, मटर, मूंग, मोंठ, अरहर, बाजरा के भावों में मन्दीकारक होगा। सोना-चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु मूंगा, मोती आदि रत्न रसादि पदार्थ, गुड़, खांड, जूट, पाट, बारदाना के भावों में विशेष तेजी की चाल चलेगी। आगे बुधास्त दि. १९ जून को उपरोक्त वस्तुओं के साथ रुई, कपास में विशेष तेजीकारक होगा। वायदा मार्केटों में अचूक चांस हैं कि दि. २० जून को दि. १९ के बने ऊँचे भाव से जिस वस्तु में मार्केट बढ़ जाए तथा ऊँचा ही बन्द हो तब उसमें विशेष तेजी की धारणा बनाकर चार दिनों में ही लाभ उठा लेना चाहिए। इस माह में लोहा व काले रंग के पदार्थों में एक विशेष ध्यान रखने योग्य बात यह है कि दि. १८ जून को जिस काले रंग की वस्तु के भाव दि. १६ के बने ऊँचे भाव से बढ़ेंगे तब उसी में विशेष तेजी होगी। तमाम माह में ग्रह अलग-अलग छितराये रहेंगे जो भावों में विशेष उठा-पटक देंगे। दि. १९ जून की शाम को दुतर्फा गली लगानी विशेष लाभकारी होगी।

आषाढ़ सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में पांच रविवार तथा पांच ही सोमवार हैं अतः प्रजा में सुख की विशेष अनुभूति होगी। आतंकवाद कम होगा। पांच रविवार तेजीकारक हैं साथ ही पांच सोमवार मन्दीकारक भी हैं। अतः विशेष तेजी आ जाने पर मन्दी के चांस भी रियेक्शन के रूप में आयेंगे। आषाढ़ बदी तीज की रात्रि में सिंह शुक्र के प्रभाव से सोना-चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु गुड़, खांड, चीनी, गेहूं, जौ, चना, मटर, मूंग, मोंठ, चना, ग्वार, लाल मिर्च व लाल रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी होगी। दि. ८ जुलाई को १६ घटी १४ पल पर बुधोदय होने से पहले तो तेजी बाद मन्दी का चांस वह सभी वस्तुएं पकड़ेंगी जो पहले से तेज चली आ रही होंगी। इस माह की विशेष घटना आषाढ़ शुदी प्रतिपदा को शनि का सिंह राशि में प्रवेश होना है जो केतु के साथ हो जायेंगे। शुक्र भी साथ में रहेंगे। इसी दिन चन्द्रदर्शन का भी होना वायदा मार्केटों में उथल-पुथल कारक होगा। अति तेजी और अति मन्दी की चाल चलेगी जो आगामी एक सप्ताह में घटित होगी। दि. १६ जुलाई को रात्रि में कर्क संक्रांति के प्रभाव से चांदी, सोना, चाय, नारियल, धान्यों, गेहूं, जौ, चना, मटर, ग्वार व जल से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के भावों में मन्दी का वातावरण रहेगा। तथापि रुख दो दिन का अवश्य देखना चाहिए। यहां पर दि. १३ जुलाई से १९ जुलाई तक तिलहनों में विशेष चाल चलेगी। धारणा तेजी की है। आगे आषाढ़ शुदी चतुर्दशी को शाम को वृष में मंगल के संचरण के प्रभाव से जूट, पाट, बारदाना, रुई, सूत, कपास, अनाज, कपूर, सोना, चांदी, तांबा के भावों में तेजी होगी। शेयर मार्केट तेजी पर जायेगा।

श्रावण सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

श्रावण माह के प्रारम्भ में प्रतिपदा तिथि का क्षय होना तथा बाद में कृष्ण पक्ष में ही त्रयोदशी क्षय भारी उथल-पुथल कारक होंगे। माह में पांच मंगलवार विशेष तेजी बहुधा व्यापारिक वस्तुओं में करेंगे। श्रावण बदी तीज बुधवार को कर्क बुध के प्रभाव से गुड़, खांड, धान, दूध, दही, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी, मूंगफली, सोयाबीन के भावों में तेजी की चाल एक माह लगभग की चलेगी। श्रावण बदी पंचमी दि. ३ अगस्त को बुधास्त के प्रभाव से रुई, सूत, कपास, गुड़, सोना, चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु जूट, पाट, बारदाना, सण के भावों में मन्दी की चाल दो सप्ताह की बनेगी। उपरोक्त वस्तुओं के वायदा मार्केटों में यह विशेष नोट अवश्य रखें कि दि. ४ अगस्त को दि. ३ के बने ऊँचे भाव से जिस वस्तु के भाव कटें और बढ़ जाएं तब उसी वस्तु में तेजी की चाल एक सप्ताह की बनेगी। दि. ४ अगस्त की प्रातः शनि के अस्त होने के प्रभाव से सोना, चांदी, लोहा, शेयर बाजार में तेजी की चाल बनने की धारणा है। यहां पर यह अवश्य ध्यान रखें कि दि. ४ अगस्त को दि. ३ के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़े और ऊँचा ही बन्द हो तब तेजी लम्बी लाईन के रूप में चलेगी। आगे श्रावण शुदी चौथ शुक्रवार को सिंह संक्रांति का संचरण धान्यों के भावों में मन्दीकारक है। सोना-चांदी, तांबा, चना, सोंठ, केसर के भावों में तेजी का रुख बनेगा। गुड़, खांड के भाव में घटबढ़ साथ पूर्व रुख ही चलेगा। ग्वार, चना, उड़द, तुवर, सोयाबीन, सोयाबीन तेल, कालीमिर्च, जीरा, मेंथा, तांबा, क्रूड आयल, प्राकृतिक गैस, ग्वार, कपास, खल, बिनौला, चीनी के वायदा मार्केटों में विशेष व लम्बी लाईन के चांस बनेंगे। रुख देखें और व्यापार करें। इस माह में दि. ३ अगस्त को शाम के समय वायदा वस्तुओं में दुतर्फा गली लगानी लाभप्रद होगी। दूसरा चांस दि. १७ अगस्त को दोपहर में भी दुतर्फा गली लगानी चाहिए।

भाद्रपद सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

भाद्रपद का महीना पांच बुधवारों से युक्त है। पांच बुधवार समताकारक है। अत: इस माह में ऊँची तेजी देखने को नहीं मिलेगी। बदी पक्ष में चतुर्थी तिथि का क्षय होना विशेष मन्दीकारक है। बदी तृतीया को प्रात: पूर्वा फाल्गुनी में सूर्य का प्रवेश सोना में विशेष तेजीकारक है। चांदी, रुई, सूत, चावल, गेहूँ, गुड़, खांड, तिल, तेल, सरसों, ज्वार, घी व ऊन के भावों में तेजी का रुख बनेगा। बदी तीज को ही बुधोदय होना पिछली चाल को एक बार तेज करके फिर चाल पलट देगा। आगे दि. १ सितम्बर को शाम को कन्या राशि में बुध के प्रभाव से सोना, चांदी आदि धातु गुड़, खांड आदि रस पदार्थ, हल्दी, गेहूं, जौ, चना के भावों में तेजी होगी। रुई, सूत, कपास में मन्दी विशेष एक पक्ष में ही बनेगी। भाद्रपद बदी द्वादशी को रात्रि में शनि उदय के प्रभाव से तेजी का रुख बनेगा। शनि व सिंह राशि को लाल व काले रंग की वस्तुओं में तेजी का रुख बनेगा। आलू का स्टाक इस माह के प्रारम्भ में अवश्य बाहर कर देना चाहिए। भाद्रपद शुक्ल पक्ष में दि. १३ सितम्बर को चन्द्रदर्शन के प्रभाव से विशेष चाल मन्दी की हल्दी, केसर, स्वर्ण, कालीमिर्च, जीरा, अरहर, उड़द, तुवर के भावों में बनेगी। भादों शुदी पंचमी रविवार को मिथुन भौम के प्रभाव तथा सूर्य मंगल के चर्तुदश दृष्टि सम्बन्ध के प्रभाव से तिलहन पदार्थों में विशेष तेजी का रुख अगले ही दिन कन्या संक्रांति लगते ही बन जायेगा। यह तेजी विशेष प्रभावशाली होगी। कन्या संक्रांति भाद्रपद शुदी षष्ठी को लगेगी जो कि विशेष मन्दीकारक सिद्ध होगी। गुड़, खांड, चीनी, चावल, मेवा, लाल वस्तु, सोना, चांदी, लोहा, तांबा, पीतल व शेयर बाजारों में मन्दी होगी। तथापि तीन दिन का रुख अवश्य देखते हुए व्यापार करना चाहिए। अगर दि. १० सितम्बर से १७ के मध्य बने हाईएस्ट भाव जिस वायदा मार्केट में कटें तब उसी में तेजी जोरदार होगी। वायदा बाजार दि. १ सितम्बर से पलटकर चलेंगे बाद में दि. ५ सितम्बर से पलट होकर दि. ११ तक चलकर १२ से पुन: पलटेंगे।

आश्विन सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आश्विन माह में पांच गुरुवार व पांच ही शुक्रवार हैं। यहां पर दोनों वार ही मन्दी के सूचक हैं। इस पक्ष में विशेष बात कृष्ण पक्ष की यह है कि प्रथम षष्ठी क्षय बाद चतुर्दशी वृद्धि है। यह वस्तुओं के रुख को मन्दी होकर तेजी की ओर इंगित करती है। अत: नीचे भावों में वस्तुओं की खरीद लाभप्रद होगी। आश्विन बदी तीज को सिंह राशि में शुक्र के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, मजीठ, लाल चन्दन, लाल मिर्च, लाल रंग की वस्तुएं गुड़, खांड, चीनी के भावों में सरकारी प्रभाव से वृद्धि होगी। सोना, चांदी आदि धातुएं भी तेज होंगी। शेष वायदा वस्तु दि. १ अक्टूबर तक मन्दी होकर तेज होनी आरम्भ हो जायेंगी। जो वस्तुएं दि. ३ अक्टूबर से तेज चलें उन्हें खरीदना लाभप्रद होगा। तथापि दि. ३ अक्टूबर को दि. १ अक्टूबर के बने नीचे भाव से टूटें उनमें लम्बी मन्दी चलेगी जो कम से कम एक सप्ताह की होगी। आगे दि. १० अक्टूबर को रात्रि में वक्री बुध होंगे जो क्रूड ऑयल, कपास, चांदी, सोना, गुड़, रुई, सूत, ग्वार, उड़द, जूट, पाट, बारदाना में तेजी की चाल देंगे। आगे दि. १८ अक्टूबर से तुला संक्रांति के प्रभाव से जोरदार घटबढ़ के साथ जोरदार तेजी की चाल गेहूँ, जौ, चना, उड़द, बाजरा, ज्वार, सोना के भावों में चलेगी। नारियल, सुपारी, लाल चन्दन तेज ही रहेंगे। रुई व चांदी में रुख देखकर व्यापार करना ठीक रहेगा। दि. १८ अक्टूबर को बुधास्त का प्रभाव विशेष रूप से पड़ेगा। यह बुधास्त तूफानी तेजी के चांस देने वाला होगा। खास तौर से सोना-चांदी, तांबा, पीतल आदि धातु गुड़, चीनी, रुई, पाट, कपास, गेहूँ, जौ, चना में विशेष तेजी तेरह दिनों में ही आयेगी। यहां पर दुतर्फा गली लगानी लाभ देगी।

कार्तिक सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में पांच शनिवारों का होना खाद्यान्नों के भावों में तेजीकारक है। लौह पदार्थों में तेजी देखने में आयेगी। प्रतिपदा का क्षय माह के लगते ही होने से मन्दी का प्रभाव बढ़ायेगा। अत: जो वायदा वस्तुएं दि. २६ अक्टूबर तक तेजी में हों और दि. २७ को भी भाव बढ़ें तब तेजी में और २६ के नीचे भावों को काटकर मार्केट चले तब मन्दी में आगामी चार दिन रहेगी। कार्तिक बदी चतुर्थी की रात्रि में बुधोदय किराने की वस्तुओं में मन्दी कारक होगा। यहां पर जिन वस्तुओं में पहले से तेजी चली आ रही हो उनमें तेजी लगाना लाभप्रद होगा। आगे कार्तिक बदी पक्ष में दि. ३ नवम्बर को कन्या राशि में शुक्र के प्रवेश के प्रभाव से कपूर, चांदी, रुई, कपास, ऊन, जूट, पाट में तेजी बनेगी जो पन्द्रह दिन रहेगी। तब भी दो दिन तेजी रहने पर ही तेजी पक्की जानना। आगे दि. ४ नवम्बर को तुला में बुध का प्रभाव विशेष रूप से तूफानी चाल देगा। रुख नरमी का रहने की धारणा हरे उड़द, मूंग, जीरा, धनिया व किराना की वस्तुओं में रहने की है। कार्तिक शुक्ल पक्ष में रविवारी चन्द्रदर्शन तिलहन पदार्थों में विशेष तेजीकारक है। साथ ही अन्य वस्तुएं भी तेजी का रुख पकड़ेंगी। इस पक्ष में शुदी तीज की वृद्धि और अन्त में त्रयोदशी तिथि का क्षय होना विशेष रूप से मन्दी का सूचक है अत: ऊँचे भावों में बिकवाली करनी लाभप्रद होनी चाहिए।

कार्तिक शुक्ल पक्ष में कार्तिक शुदी छठ को दि. १६ नवम्बर को वृश्चिक संक्रांति के प्रभाव से अन्नादि के भावों में घटबढ़ के साथ समता रहेगी। सोना, चांदी, तांबा, रुई, ऊन, सरसों में तेजी होगी। लाल मिर्च, बादाम, लाल चन्दन, लाल रंग की वस्तुओं के भावों में मन्दी होगी। कार्तिक शुदी एकादशी की रात्रि में धनु राशि में गुरु प्रवेश करेंगे। उनके प्रभाव से विशेष मन्दी की चाल सोना, चांदी, रुई, कपास, सण, पाट, सूत, तिल, तेल, नमक, लोहा, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खांड में लम्बी लाईन की मन्दी चलने की धारणा है। साथ ही दि. २४ नवम्बर को दोपहर पूर्व बुधास्त का होना भयंकर मन्दी का योग ही बनायेगा।

मार्गशीर्ष सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में पांच रविवार व पांच ही सोमवार हैं। कुल मिलाकर पांच रविवार तेजी

कारक हैं तो पांच सोमवार मन्दीकारक हैं। निष्कर्ष रूप में बढ़े भावों में बिकवाली करनी लाभ देगी। लगते मंगशिर बदी तृतीया को वृश्चिक बुध के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, मटर, सरसों, तिल, तेल, घी के भावों में मन्दी होगी। सोना, चांदी के भावों में स्थिरता या नरमी रहेगी। रुई, कपास में घटबढ़ ही होगी। मंगशिर बदी पंचमी का क्षय होना मन्दी के प्रभाव को बढ़ाएगा। मन्दी की लाईन लम्बी चलेगी। शुदी पक्ष में चन्द्र दर्शन मंगलवारी चलती मन्दी में तेजी के रियक्शन देगा जोकि बुधवार से तीन दिवसीय तेजी के रूप में सामने आयेगी। बाद पुन: चाल मंगशिर शुदी दोज की रात्रि में गुरु अस्त के प्रभाव से सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर, ज्वार, बाजरा आदि धान्यों में जोरदार मन्दी होगी। तिल, तेल, घी, सरसों में मन्दी की विशेष चाल चलेगी। कपास सण, सोना आदि धातुएं मन्दी होंगी। आगे दि. १६ दिसम्बर को धनु संक्रांति के प्रभाव से अन्नादि के भावों में मन्दी ही होगी। सोना, चांदी, रुई, तिल, तेल, कपास में तेजी बनेगी। अत: नीचे स्तर पर लिवाली लाभ देगी। नोट- अगर दि. १७ दिसम्बर को दि. १५ के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़े तब तेजी का चांस ही सम्पन्न होगा। आगे मार्गशीर्ष शुदी एकादशी को शनि वक्री हो रहे हैं जो धान्यों के भावों में तेजी कारक है अत: नीचे स्तर पर स्टाक करके बेचना लाभप्रद होगा। तथापि रुख अवश्य देखना चाहिए। देशी घी का स्टाक न रखें।

पौष सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

पौष माह में पांच मंगलवारों का होना जोरदार तेजी कारक है। इस माह के प्रथम पक्ष में जो वस्तु निम्न स्तर पर हों उनका स्टाक व खरीद करना लाभप्रद होगा। बदि प्रतिपदा का क्षय प्रारम्भ में मन्दी कारक है बदी दोज को शाम बाद वृश्चिक राशि में शुक्र का प्रवेश विशेष तौर पर मन्दी की चाल देगा। गेहूँ, जौ, चना, उड़द, ज्वार, बाजरा के भावों में मन्दी की चाल तेरह दिन की चलेगी। पौष बदि दशमी की वृद्धि के प्रभाव से धीरे-धीरे मन्दी से तेजी का रुख बनना प्रारम्भ हो जायेगा। बाद गुरु के पौष बदी एकादशी रविवार को उदय होने के बाद तेजी का प्रभाव बढ़ेगा। बुध अमावस्या के दिन उदय होगा, यहाँ से विशेष तेजी गेहूँ, जौ, चना, ग्वार, बाजरा, गुड़, खांड, चीनी, रुई, कपास, बिनौला के भावों में होगी। देशी घी में मन्दी का बिगुल बजेगा। क्रूड ऑयल, नेचुरल गैस, मेंथा ऑयल में नरमी रहेगी। रुख अवश्य देखते हुए ही व्यापार करना हितकारक रहेगा।

पौष शुदी षष्ठी को मकर संक्रांति के प्रभाव से रुई, सूत, कपास, तेल, तिल, सोयाबीन, घी, गुड़, खांड, शक्कर के भावों में अच्छी तेजी होगी। गेहूँ, जौ, चना, बाजरा, ग्वार, उड़द, मूंग, मोठ, तुवर में नरमी होगी। सोना, चांदी शेयर मार्केट व जूट, पाट, बारदाना में मन्दी होगी। तेजी की वस्तुओं में विशेष तेजी होगी। मन्दी वाली वस्तुओं में दो दिन रुख अवश्य देखना चाहिए। हल्दी का स्टाक अवश्य बाहर करना चाहिए। पौष शुदी द्वादशी दि. १९ जनवरी सन् २००८ को धनु राशि में शुक्र के प्रभाव से रुई, कपास, सूत वस्त्र, गेहूं, चना, सोना, चांदी, तांबा आदि धातुओं के भावों में तेजी होगी। इस माह में दि. २ जनवरी की प्रात: व दि. १८ जनवरी को प्रात: दुतर्फा गली लगानी लाभप्रद होगी।

माघ सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

माघ माह में वायदा बाजारों में भारी उथल पुथल चलेगी। तेजी को देखकर ऊँची तेजी में मत आना और भारी मन्दी को देखकर और मन्दी में भी नहीं आना चाहिए। पांच बुधवार व पांच गुरुवार बुध गुरु पचैकम योग बना रहे हैं। जो विशेष मन्दी का सूचक हैं। तथापि विशेष रूप से रुख को देखते हुए व्यापार करना लाभ देगा। माघ बदी पंचमी की रात्रि में वक्री बुध होकर माघ बदी नवमी की दोपहर में बुधास्त का होना, सोना, चांदी, गुड़, खांड, गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ग्वार, जीरा, धनियां, रुई, सूत, कपास, जूट, पाट, बारदाना के भावों में तेजी जोरदार होगी। आगे दि. १ फरवरी की शाम को मार्गी भौम का होना लाल मिर्च, छुआरा, मैथी, मूंगफली, बादाम, किशमिश, मसूर, केशर, व लाल रंग की वस्तुओं में मन्दी होगी। माघ शुदी प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन चांदी, रुई, कपूर, वस्त्र, सूती, स्फटिक के भावों में मन्दीकारक होगा। शुदी तीज का क्षय विशेष तेजीकारक है यह तेजी साधारण से अधिक ही होगी। शुदी षष्ठी को बुधोदय के प्रभाव से मन्दी की चाल चलेगी। तथापि मन्दी रियक्शन मात्र ही समझनी चाहिए। विशेष यहां पर यह विशेष नोट है कि दि. १३ फरवरी को दि. १२ के बने नीचे भाव से जिस वस्तु के भाव वायदा मार्केट में एन.सी.डी.ई.एक्स या एम.सी.एक्स. में टूटें उनमें मन्दी भयंकर चालू होगी। जो चार दिन में मोटा मुनाफा देगी। दि. १३ फरवरी की दोपहर में कुम्भ संक्रांति के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, ग्वार, बाजरा, जई, रुई, पाट, बारदाना, गुड़, खांड, शक्कर के भावों में मन्दी जोरदार होगी। जो माह के अन्त तक चलती रहेगी। दि. १२ फरवरी की शाम को रुई, कपास, सरसों, गुड़, चीनी, चांदी, सोना, ग्वार, उड़द, तुवर में दुतर्फा गली लगानी लाभप्रद होगी।

फाल्गुन सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में पांच शुक्रवार हैं जो कि किराना मार्केट में भारी उथल-पुथल के बाद भारी मन्दीकारक हैं। अधिकांश मार्केटों में पिछले रुख पर ही प्रथम पक्ष में बाजार चलते रहेंगे। इस माह में वायदा बाजारों में दि. २२ फरवरी की चालू चाल दि. २७ फरवरी तक चलकर दि. २७ से ही चाल पलट जायेगी और पलटकर ही चलेगी। फाल्गुन बदी दशमी को धनिष्ठा में शुक्र के प्रभाव से जोरदार तेजी होगी विशेष रूप से गुड़, चांदी, ग्वार में चलेगी। आगे दि. ४ मार्च को पूर्वाभाद्रपद में सूर्य के प्रभाव से गेहूं, जौ, चना, रुई, कपास, सूत, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, तिल, तेल, गुड़, खांड, घी, चावल, ज्वार, बाजरा, गुग्ल, रेशम के भावों में तेजी होगी। फाल्गुन शुक्ल पक्ष में बदी दोज को चन्द्रदर्शन का होना बहुधा वस्तुओं के भावों में तेजी का रुख बनेगा। फाल्गुन शुदी प्रतिपदा को कुम्भ राशि में शुक्र के संचरण का प्रभाव पड़ेगा जोकि विशेष रूप से चांदी, रुई, कपास, सूत, गेहूं, जौ, चना, उड़द, ज्वार, बाजरा आदि अनाजों के भावों में मन्दी होगी। बाद १० मार्च को कुम्भ राशि में बुध प्रविष्ट होंगे। यहां पर सोना, चांदी, रुई, कपास में तेजीकारक है। वायदा मार्केटों में दि. १० मार्च को दि. ८ मार्च के बने नीचे भाव से जिस वस्तु में भाव टूटें तब उसी में दो दिन में विशेष मन्दी की चाल चलेगी और ऊँचे भाव से बढ़े तब तेजी की धारणा

बनाकर व्यापार करें। बदी अष्टमी की प्रात: मीन संक्रांति सरसों, तिल, तेल, अलसी, रुई, सूत, कपास, बिनौला, चांदी, सोना, गुड़, खांड में अच्छी तेजी कारक हैं। तथापि अन्नादि के भावों में तेजी के उछालों को देखकर घनी तेजी में नहीं आना चाहिए। द्वितीय पक्ष में लाल रंग की वस्तुओं का स्टॉक कतई नहीं करना चाहिए साथ ही अगर पीले रंग की वस्तु माह के प्रारम्भ में नीचे स्तर पर मिले तब उनका स्टॉक करना लाभप्रद होगा। इस माह में दि. ७ मार्च को बने ऊँचे भाव जिस वस्तु में दि. ८ मार्च को कट जाएं तब उसी वस्तु में तेजी का चांस दि. १२ मार्च तक सम्पन्न होगा।

चैत्र बदी सं. २०६४ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में पांच रविवार व पांच ही शनिवार हैं जिनका प्रभाव परस्पर विरोधी है। अर्थात् तेजी और मन्दी का द्वन्द युद्ध चलेगा। अत: खींचतान रहने से मोटी मन्दी या तेजी तो नहीं होगी। हां खींचातानी अवश्य होगी। यद्यपि रुख कुल मिलाकर तेजी का ही रहेगा। चैत्र बदी पक्ष में बदी तीज को पूर्वा भाद्रपदा में बुध के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा आदि धातु तथा धान्यों के भावों में मन्दी होगी। रुई में घटबढ़ होगी। नोट:- जिस वायदा वस्तु में दि. २२ मार्च को दि. २१ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटे तब उसी में मन्दी जोरदार एक सप्ताह चलेगी। आगे दि. ३० मार्च रविवार को मीने बुध का प्रभाव गेहूँ, गुड़, खांड के भावों में मन्दी कारक होगा। रुई में तेजी होगी। सोना चांदी में पहले तेजी बाद मन्दी का रुख बनेगा।

संवत् २०६४ विक्रमी का द्वादश राशिफल

लेखक- **महेश चंद राजेश चंद ज्योतिषी**, पं. मानचंद अमरचंद मार्ग, पुंगलवाड़ा, जोधपुर, फोन- ०२९१-२६२४८६४, मोबाइल- ९४१४४७५११३

मेष राशि :- (चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ)

इस वर्ष में ११ मई तक आपका भाग्य हर कार्य में आपका साथ देगा। सोचे हुए कार्य की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवादों का समाधान निकल आयेगा, जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। मित्र वर्ग आपके सहयोग का आभार मानेंगे। १२ मई से २९ जून तक सोच समझ कर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। अपनी ही वाणी पर नियन्त्रण रखना हितकर रहेगा अन्यथा परेशानी रहेगी। रोजगार में अस्थिरता सी रहेगी। विरोधी पक्ष हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा, सावधान रहें। ३० जून से ११ अगस्त तक अधिकारी वर्ग आपके कार्यों से प्रभावित रहेगा। आत्म विश्वास के साथ में कार्य करते रहें। योजना क्रियान्वित हो सकेगी। भविष्य उज्जवल है। पुराने विवादों का समाधान निकल आयेगा। अपने ही पराक्रम व पौरुष से धन, यश प्राप्त करेंगे। १२ अगस्त से २९ सितम्बर तक हर कार्य में सतर्कता रखें अन्यथा परेशानी रहेगी। सोच समझ कर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। दाम्पत्य जीवन में रुकावटें आयेंगी। लम्बी यात्रा रद्द हो जाने से चिन्ता रहेगी। आय से खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक कमी महसूस करेंगे। ३० सितम्बर से २७ नवम्बर तक शुभ कार्य करने के आयोजन की भूमिका बनेगी। धार्मिक कार्यों के प्रति भावना जाग्रत होगी। कार्य क्षेत्र का विस्तार होगा। संबंधित व्यक्तियों के सहयोग से आपकी योजना सफल होगी। नया परिचय मित्रता में परिवर्तन होने से हर्ष रहेगा। २८ नवम्बर से २१ जनवरी तक घरेलू कार्यों में व्यस्त रहेंगे। दूसरों का सहयोग करने पर भी यश नहीं मिलेगा। किसान वर्ग को हानि होने का भय महसूस रहेगा। राजनैतिक वर्ग परस्पर विरोध उग्र रूप धारण कर सकता है। २२ जनवरी से वर्षोपरान्त तक सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। विद्यार्थी वर्ग अपनी सफलता से उत्साहित रहेगा। इच्छित पद प्राप्त होने का योग बनता है। आय के नए स्रोत सामने आयेंगे जो लाभप्रद सिद्ध होंगे।

वृष :- (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो)

इस वर्ष में २० मई तक आपके ही क्रोध से बनता-बनता कार्य रुक जाने से परेशानी रहेगी। आरोप प्रत्यारोप का सामना करना पड़ेगा। अपनी ही क्षमता से बढ़कर कार्य करना हितकर नहीं रहेगा। पारिवारिक समस्या उग्ररूप धारण कर सकती है। २१ मई से ७ जुलाई तक आप द्वारा लिया गया निर्णय लाभप्रद रहेगा। वैवाहिक अड़चने समाप्त होंगी। व्यापारिक वर्ग अपनी ही सफला से सन्तुष्ट रहेगा। योजना क्रियान्वित होगी। भविष्य उज्जवल रहेगा। ८ जुलाई से ३ सितम्बर तक आपकी सन्तान को राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। विद्यार्थी व किसान वर्ग अपने ही कार्यों की सफलता से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। मुकदमाबाजी से छुटकारा मिलेगा। समझौते द्वारा आपसी कटुता समाप्त होगी। ४ सितम्बर

से १ दिसम्बर तक आप प्रतिद्वन्दियों के लिये सिर दर्द बने रहेंगे। कारोबार में अपनी ही आशा से अधिक प्रगति होगी। अपने ही कार्यों की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त होगा। समाज में आपके गुणों की प्रशंसा होगी। २ दिसम्बर से २५ जनवरी तक आपका जरूरी कार्य अपूर्ण ही रहेगा। दाम्पत्य जीवन में परेशानी महसूस होगी। लम्बी यात्रा करना उचित नहीं रहेगा। मुकदमाबाजी से दूर रहना हितकर रहेगा। २६ जनवरी से १३ मार्च तक दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवाद निपट जायेंगे। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। अधिकारी वर्ग अपने ही कार्यों से प्रभावित रहेगा। १४ मार्च से वर्षोपरान्त तक शत्रु पक्ष की कुचेष्टा आपको संघर्षमय रखेगी। आपकी उदासीनता मित्रों को अखरेगी। व्यर्थ के विवाद से दूर रहना हितकर रहेगा। लेन-देन के मामलों में सावधानी रखें। कोई वस्तु खोई जा सकती है।

मिथुन राशि :- (क, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह)

इस वर्ष में १३ मई तक आपके भाग्य का सितारा फिर से चमकने लगेगा। आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। विरोधी पक्ष पराजित रहेगा। अधिकारी वर्ग आपके कार्यों से प्रभावित रहेगा। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा। समझौते द्वारा आपसी कटुता समाप्त होगी। १४ मई से ३ जुलाई तक दौड़धूप ज्यादा रहेगी। मुकदमाबाजी से दूर रहना हितकर रहेगा। आय में कमी महसूस होगी। आपका विश्वासपात्र व्यक्ति ही आपके साथ में विश्वासघात कर सकता है। ४ जुलाई से २७ अगस्त तक अपने ही बुद्धिबल से अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। व्यापारिक वर्ग अपने ही कार्यों से सन्तुष्ट रहेगा। शुभ कार्य की भूमिका बनने से हर्ष रहेगा। मित्र वर्ग आपके सहयोग का आभार मानेंगे। किसान वर्ग अपनी ही सफलता से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। परिवार में सुख समृद्धि होगी। २८ अगस्त से ९ अक्टूबर तक विरोधी पक्ष आपके लिये नई समस्या उत्पन्न कर सकता है। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। लम्बी यात्रा करना हितकर नहीं है। पारिवारिक समस्या से आपकी प्रगति में कमी आयेगी। लम्बी यात्रा करना हितकर नहीं है। खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक समस्या बनी रहेगी। १० अक्टूबर से २० दिसम्बर तक सरकारी कर्मचारी अपने ही कार्यों की सफलता से प्रसन्न रहेंगे। सोचे हुए कार्य की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवाद निपट जायेंगे। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से मन में हर्ष रहेगा। २१ दिसम्बर से २९ जनवरी तक व्यर्थ के विवाद में उलझना उचित नहीं है। भाग्यवादी कार्यों में रुकावटें आने से परेशानी रहेगी। घरेलू खर्च ज्यादा रहने से कर्ज लेना पड़ सकता है। ३० जनवरी से वर्षोपरान्त तक नये कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। किसान वर्ग इच्छानुसार लाभ मिलने से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। गणमान्य व्यक्ति आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे।

कर्क राशि (ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

इस वर्ष में २३ मई तक जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। योजना क्रियान्वित हो सकेगी। भविष्य उज्जवल है। पुराने विवाद निपटाने में सफलता मिलेगी। सन्तान सम्बन्धित कार्य सफल होगा। आत्म विश्वास जाग्रत होगा। व्यापारी वर्ग अपनी ही सफलता से सन्तुष्ट रहेगा। आप द्वारा लिया गया निर्णय लाभप्रद रहेगा। २४ मई से १७ जून तक खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक तंगी महसूस होगी। मित्रों की गतिविधियों से मानसिक तनाव बढ़ेगा। दाम्पत्य जीवन में रुकावटे आयेंगी। किसी भी विवाद में उलझना हितकर नहीं रहेगा। कोई नया व्यक्ति आपको प्रलोभन देकर विश्वासघात कर सकता है। १८ जून से १२ अगस्त तक आप अपने ही कार्यों की सफलता से प्रफुल्लित रहेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा। सोचा हुआ कार्य वक्त पर बन जाने से मन में हर्ष व उत्साह रहेगा। परिवार में सुख शांति रहेगी। १३ अगस्त से ३ अक्टूबर तक कोई वस्तु खोई जा सकती है, ध्यान रखें। इच्छानुकूल स्थानान्तरण होता-होता रुक जायेगा। लेनदेन के मामलों में सावधानी रखें। जमीन सम्बन्धित विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है। ४ अक्टूबर से २९ नवम्बर तक वैवाहिक अड़चने समाप्त होंगी। विशेष कार्य निपटाने में सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होने से आर्थिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। शुभ कार्य तय हो जाने से मन में हर्ष रहेगा। ३० नवम्बर से २८ जनवरी तक अपने ही कार्यों की सफलता से आप फूले न समायेंगे। विरोधी पक्ष आपसे समझौता करने की इच्छा प्रकट करेंगे। कामकाज में वृद्धि होगी। यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी। २९ जनवरी से वर्षोपरान्त तक विरोध व संघर्ष करते हुए समय व्यतीत होगा। व्यर्थ की पंचायती करना हितकर नहीं रहेगा। धर्मपत्नी से विवाद आपकी परेशानी में वृद्धि करेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह समय अनुकूल नहीं है।

सिंह राशि (मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

इस वर्ष में २ मई तक सोच समझकर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक कमी महसूस होगी। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। पारिवारिक समस्या से चिन्ताग्रस्त रहेंगे। ३ मई से २८ जून तक शुभ कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। आप द्वारा लिया गया निर्णय लाभप्रद सिद्ध होगा। जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। खोई हुई वस्तु मिल जाने से मन में हर्ष रहेगा। सन्तान की सफलता से आप प्रफुल्लित रहेंगे। २९ जून से १५ अगस्त तक हर कार्य में सतर्कता रखना हितकर रहेगा। सन्तान के साथ में आपसी विवाद से परेशानी रहेगी। राजनैतिक वर्ग को विरोध का सामना करना पड़ेगा। रोजगार में अस्थिरता सी रहेगी। १६ अगस्त से २ अक्टूबर तक आत्म विश्वास जाग्रत होगा। मजदूर वर्ग रुके कार्य बन जाने से उत्साहित रहेंगे। इच्छित पद प्राप्ति हेतु व्यवधान समाप्त हो जायेगा। योजना क्रियान्वित होगी। विदेश जाने का योग भी बन सकता है। ३ अक्टूबर से १७ नवम्बर तक आपका जरूरी कार्य अपूर्ण रहेगा। घरेलू खर्च ज्यादा रहेगा। सन्तान से वाद-विवाद सा रहेगा। विरोधी पक्ष आपके लिये नई समस्या उत्पन्न कर सकता है। १८ नवम्बर से २ जनवरी तक आपका भाग्य हर कार्य में आपका साथ देगा। विरोधी पक्ष गुप्त रूप से आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। सुख सुविधा के साधनों में खर्च रहने से मन में हर्ष रहेगा। समझौते द्वारा आपसी कटुता समाप्त होगी। ३ जनवरी से २५ फरवरी तक आपका सहयोगी मित्र आपके साथ में विश्वासघात कर सकता है, ध्यान रखें। आपको संयम रखना जरूरी है अन्यथा कटु आलोचना होगी। क्षमता से बढ़कर व्यापार करना उचित नहीं है। दौड़धूप व विवादों के साथ

में समय व्यतीत होगा। योजना बनाते रहें सफलता में देरी है। २६ फरवरी से वर्षोपरान्त तक सोचे हुए कार्य की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। दाम्पत्य सम्बन्धित विवादों का समाधान निकल आयेगा। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। धार्मिक कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी।

कन्या राशि (टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

इस वर्ष में २० मई तक पारिवारिक समस्याओं से आपकी प्रगति में कमी आयेगी। खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक समस्या बनी रहेगी। विरोधी पक्ष आपके लिये नई समस्या उत्पन्न कर सकते हैं। मित्रों से मन मुटाव रहेगा। २१ मई से ११ जुलाई तक सरकारी कर्मचारी अपने ही कार्यों की सफलता से उत्साहित रहेंगे। सोचा हुआ कार्य सफल होगा। दाम्पत्य जीवन सम्बन्धित विवाद निपट जायेंगे। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से मन में हर्ष रहेगा। १२ जुलाई से ५ सितम्बर तक व्यर्थ के विवादों में उलझना उचित नहीं है। भाग्यवादी कार्यों में रुकावटें आने से परेशानी रहेगी। खरेलू खर्च ज्यादा रहने से कर्ज लेना पड़ सकता है। आपका बनता-बनता कार्य भी रुक सकता है। ६ सितम्बर से २९ अक्टूबर तक नये कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। किसान वर्ग इच्छानुसार लाभ मिलने से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। गणमान्य व्यक्ति आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। ३० अक्टूबर से २५ दिसम्बर तक दौड़धूप ज्यादा रहेगी। मुकदमाबाजी से दूर रहना हितकर रहेगा। आय में कमी महसूस होगी। आपका विश्वासपात्र व्यक्ति ही आपके साथ में विश्वासघात कर सकता है। २६ दिसम्बर से २१ फरवरी तक आपके भाग्य का सितारा फिर से चमकने लगेगा। आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। विरोधी पक्ष पराजित रहेगा। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा। समझौते द्वारा आपसी कटुता समाप्त होगी। मित्र वर्ग आपके सहयोग का आभार मानेंगे। शुभ व सुखद कार्यों में खर्च करने की भूमिका बनेगी। २२ फरवरी से वर्षोपरान्त तक क्षमता से बढ़कर कार्य न करें। स्वास्थ्य के प्रति कमजोरी महसूस करेंगे। बनता-बनता कार्य रुक जाने से मानसिक चिन्ता रहेगी। पारिवारिक सदस्यों से मन-मुटाव सा रहेगा।

तुला राशि (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

इस वर्ष में १७ मई तक आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। नया कार्य आरम्भ करने की योजना बनेगी जो सफल होगी। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा, राजनेता अपने ही क्षेत्र में यश प्राप्त करेंगे। १८ मई से ५ जुलाई तक आत्म विश्वास में कमी आयेगी। स्वास्थ्य की कमजोरी से आपकी प्रगति रुक सकती है। कोई अप्रिय समाचार मिलने से मानसिक चिन्ता रहेगी। ६ जुलाई से २९ अगस्त तक शुभ खर्च करने के आयोजन का सौभाग्य प्राप्त होगा। देव, गुरु, ब्राह्मणों के प्रति भक्ति भावना जाग्रत होगी। पारिवारिक समस्या का समाधान हो जायेगा। अपने ही कार्यों की प्रशंसा से फूले न समायेंगे। ३० अगस्त से २१ अक्टूबर तक जोखिम उठाकर कोई भी कार्य करना उचित नहीं रहेगा। सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी। मित्रों से मनमुटाव सा रहेगा। सट्टा या शेयरों में धन लगाना उचित नहीं है। राजनैतिक वर्ग अपनी ही कटु-आलोचना से परेशान रहेगा। २२ अक्टूबर से १९ दिसम्बर तक जन सम्पर्क में वृद्धि होगी। शुभ सन्देश मिलने से चिन्ता का निवारण होगा। आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। नये कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। परिवार में सुख समृद्धि होगी। २० दिसम्बर से ७ फरवरी तक आपका जरूरी कार्य अपूर्ण रहेगा। लम्बी यात्रा करना उचित नहीं है। मुकदमाबाजी से दूर रहना हितकर रहेगा। दाम्पत्य जीवन में परेशानी महसूस करेंगे। बिना विशेषता के साथ में समय व्यतीत होगा। ८ फरवरी से वर्षोपरान्त तक खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त होगा। सत् पुरुषों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा। बिगड़ा हुआ कार्य बनने से मन में हर्ष रहेगा।

वृश्चिक राशि (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

इस वर्ष में २९ अप्रैल तक आपकी उदासीनता मित्रों को अखरेगी। आपके मित्र ही आपके शत्रु बन जायेंगे। व्यर्थ के विवाद से दूर रहना हितकर रहेगा। सोच समझ कर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। ३० अप्रैल से २५ जून तक आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। शुभ सन्देश मिलने से चिन्ता का निवारण होगा। विरोधी पक्ष गुप्त रूप से आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। कारोबार में ज्यादा धन लगाना लाभप्रद रहेगा। २६ जून से १० अगस्त तक आपको अपनी ही क्षमता से बढ़कर निर्णय लेना उचित नहीं है। किसान वर्ग चिन्ताग्रस्त रहेगा। शुभ कार्यों में रुकावटें आने से परेशान रहेगा। कोई वस्तु खोई जा सकती है। विरोधी पक्ष हानि पहुंचाने का प्रयास करेगा, सावधान रहें। ११ अगस्त से ४ अक्टूबर तक आप प्रतिद्वन्द्वियों के लिये सिर दर्द बने रहेंगे। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त करेंगे। कारोबार अच्छा चलेगा। योजना क्रियान्वित होगी। भविष्य उज्ज्वल है। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। ५ अक्टूबर से २९ नवम्बर तक भाईयों से विवाद उग्ररूप धारण कर सकता है। व्यर्थ की पंचायती करना उचित नहीं है। आपका जरूरी कार्य बनता-बनता रुक सकता है। मित्रों से मनमुटाव सा रहेगा। आपको संयम जरूरी है अन्यथा कटु आलोचना होगी। ३० नवम्बर से २१ जनवरी तक नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से हर्ष रहेगा। सत्कर्म में अभिरुचि बढ़ेगी। आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। समय अनुकूल होने से लाभ उठाने में भूल न करें। २२ जनवरी से वर्षोपरान्त तक विरोधी पक्ष से टकराव सा रहेगा। जोखिम उठाकर कोई कार्य न करें। अधिकारी वर्ग से मन मुटाव सा रहेगा। अप्रिय समाचारों से आप चिन्ताग्रस्त रहेंगे।

धनु राशि (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे)

इस वर्ष में २१ मई तक कामकाज में दिलचस्पी बढ़ेगी। अशुभ फलों में कमी आयेगी। आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। विद्यार्थी व किसान वर्ग अपने ही कार्यों की सफलता से प्रसन्न व उत्साहित रहेगा। शुभ कार्य करने की भूमिका बनेगी। २२ मई से ११ जुलाई तक आपके मित्र ही आपके शत्रु बन जायेंगे। व्यर्थ की पंचायती करना उचित नहीं है। स्वास्थ्य नर्म-गर्म सा रहेगा। विरोध व संघर्ष के कारण उत्साह में कमी आयेगी। बिना विशेषता के साथ में समय व्यतीत होगा। १२ जुलाई से ९ अगस्त तक सतपुरुषों से मिलने पर मन में प्रसन्नता रहेगी। उच्चाधिकारियों की कृपा से आपका कार्य बन जायेगा। १० अगस्त से २ अक्टूबर तक मित्रों से मन मुटाव सा रहेगा। लेन-देन के

मामलों में सावधानी रखें। व्यय की अधिकता से कर्ज लेना पड़ सकता है। पारिवारिक क्लेश से मन में अशांत वातावरण रहेगा। जरूरी कार्य बनते-बनते रुक जायेगा। ३ अक्टूबर से २७ नवम्बर तक व्यापारिक वर्ग के कारोबार में निरन्तर प्रगति होगी। आप अपने ही कार्य कुशलता से औरों को प्रभावित करेंगे। राजनैतिक वर्ग का जनता में मान-सम्मान बढ़ेगा। खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त कर पायेगा। पारिवारिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। २८ नवम्बर से २ फरवरी तक अधिकारी वर्ग से विचारों में भिन्नता रहेगी। पुराने विवाद फिर से आरम्भ होने से परेशानी रहेगी। नये परिचय पर ज्यादा विश्वास न करें। अपनी ही क्षमता से बढ़कर कारोबार में धन लगाना हितकर नहीं है। ३ फरवरी से वर्षोपरान्त तक सोचा हुआ कार्य सफल होगा। शुभ खर्च होने से मन में प्रसन्नता रहेगी। मित्र मिलन से मन में हर्ष रहेगा। जमीन सम्बन्धित विवादों का समाधान निकल आयेगा। यात्रा लाभप्रद रहेगी।

मकर राशि (भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी)

इस वर्ष २४ मई तक नया कार्य आरम्भ होने के पहले कोई व्यवधान उत्पन्न होगा। व्यर्थ की लेन-देन करना उचित नहीं है। विरोध व संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। आशा निराशा में परिवर्तित होगी। २५ मई से ९ जुलाई तक गणमान्य व्यक्ति आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। सोचा हुआ कार्य वक्त पर बन जाने से मन प्रफुल्लित रहेगा अपने ही बुद्धि बल से अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। कामकाज में प्रगति होगी। रुकी रकम प्राप्त होने से कर्जदारी में कमी आयेगी। १० जुलाई से ७ सितम्बर तक सोच समझकर कर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। विरोधी पक्ष आपकी प्रगति में रुकावटें लायेगा। आपका विश्वासपात्र व्यक्ति आपके साथ में विश्वासघात कर सकता है। व्यर्थ की पंचायती करना उचित नहीं है। ८ सितम्बर से ३ नवम्बर तक का समय महिलाओं के लिये सफलता का रहेगा। लम्बी यात्रा लाभप्रद रहेगी। शुभ अवसर से लाभ उठाने में भूल न करें। पारिवारिक समस्या का समाधान निकल आयेगा। शुभ खर्च करने की भूमिका बनेगी। ४ नवम्बर से २९ दिसम्बर तक अपनी क्षमता से बढ़कर कार्य न करें। व्यर्थ के विवाद से दूर रहना हितकर रहेगा। भाईयों से मन मुटाव सा रहेगा। नई समस्या उत्पन्न होने से आप चिन्ताग्रस्त रहेंगे। ३० दिसम्बर से ४ फरवरी तक शुभ कार्य की भूमिका बनने से चिन्ता का निवारण होगा। आत्म विश्वास के साथ कार्य करते रहें। योजना क्रियान्वित होगी। पुराने विवादों का समाधान निकल आयेगा। ५ फरवरी से २७ फरवरी तक सोच समझ कर कार्य करना ही हितकर रहेगा। व्यर्थ के खर्च से परेशानी रहेगी। २८ फरवरी से वर्षोपरान्त तक अधिकारी वर्ग के सहयोग से इच्छानुकूल स्थानान्तरण हो जायेगा। साहस से आगे बढ़ते रहें। भाग्य आपके साथ है। विरोधी पक्ष भी गुप्त रूप से आपके गुणों की प्रशंसा करेगा।

कुम्भ राशि (गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

इस वर्ष में २९ मई तक अपने ही बुद्धिबल से किसी समस्या का समाधान कर पायेंगे। जमीन सम्बन्धित विवाद निपट जायेंगे। आपका भाग्य हर काम में आपका साथ देगा। आपकी निराशा आशा में परिवर्तित होगी। पुराने विवाद निपट जाने की आशा बनेगी। ३० मई से १७ जुलाई तक कारोबार में ज्यादा धन लगाना उचित नहीं है। आपका जरुरी कार्य अपूर्ण रहेगा। कोई अप्रिय समाचार मिलने से आप चिन्ताग्रस्त रहेंगे। अपनी ही क्षमता से बढ़कर निर्णय लेना हितकर नहीं है। १८ जुलाई से ९ सितम्बर तक भाग्यवादी प्रयास सफल होंगे। नया परिचय मित्रता में परिवर्तित होने से मन में हर्ष रहेगा। यात्रा लाभप्रद सिद्ध होगी। आत्मविश्वास जाग्रत होगा। अपने ही कार्यों की सफलता से आप उत्साहित रहेंगे। १० सितम्बर से व्यापारिक वर्ग सरकारी अधिकारियों से परेशान रहेगा। आपकी उदासीनता मित्रों को अखरेगी। रुकी रकम प्राप्त न होने से मानसिक चिन्ता रहेगी। अधिकारी वर्ग से मन मुटाव सा रहेगा। ११ सितम्बर से ५ नवम्बर तक इच्छित पद प्राप्ति हेतु व्यवधान समाप्त हो जायेगा। विद्यार्थी वर्ग अपने ही कार्यों से सन्तुष्ट रहेगा। धार्मिक कार्यों में दिलचस्पी बढ़ेगी। कामकाज में प्रगति होगी। ६ नवम्बर से २७ दिसम्बर तक विशेष कार्य निपटाने में ही समय बीत जायेगा। आय से खर्च ज्यादा रहने से आर्थिक कमी महसूस रहेगी। मन में भय का वातावरण रहेगा। २८ दिसम्बर से १० फरवरी तक राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। शुभ सन्देश मिलने से चिन्ता का निवारण होगा। सम्बन्धित वर्ग आपके सहयोग का आभार मानेंगे। ११ फरवरी से वर्षोपरान्त तक राजनैतिक वर्ग अपनी ही कटु आलोचना से परेशान रहेगा। योजना बनाते रहे। सफलता में देरी रहेगी। पारिवारिक परेशानी रहेगी।

मीन राशि (दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची)

इस वर्ष में ७ मई तक देव, गुरु, ब्राह्मणों के प्रति भक्ति भावना जाग्रत होगी। राजनेता अपने ही क्षेत्र में यश प्राप्त करेंगे। प्रतिद्वन्द्वियों के लिये आप सिर दर्द बने रहेंगे। सुखद समाचारों से चिन्ता का निवारण होगा। ८ मई से २ जुलाई तक भाईयों से विवाद उग्र रूप धारण कर सकता है। भाग्यवादी कार्यों में रुकावटें आने से परेशानी रहेगी। शत्रु पक्ष की कुचेष्टा आपको संघर्षमय रखेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह समय परेशानी का रहेगा। ३ जुलाई से २९ अगस्त तक शुभ कार्य आरम्भ करने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आय के नये स्रोत सामने आयेंगे। किसान वर्ग उचित लाभ मिलने से उत्साहित रहेगा। समाज, परिवार में आपके गुणों की प्रशंसा होगी। ३० अगस्त से १९ अक्टूबर तक सोच समझकर आगे कदम बढ़ाना उचित रहेगा। इच्छानुकूल स्थानान्तरण में रुकावटें आना सम्भव है। आरोप प्रत्यारोप का सामना करना पड़ेगा। सट्टा या लाटरी में धन लगाना उचित नहीं है। २० अक्टूबर से १७ दिसम्बर तक रुकी रकम प्राप्त होगी। मुकदमाबाजी से छुटकारा मिल जायेगा। व्यापारिक वर्ग लाभान्वित रहेगा। साहस से आगे बढ़ते रहें। भाग्य आपके साथ है। नया परिचय लाभप्रद रहेगा। सन्तान सम्बन्धित कार्य सफल होंगे। १८ दिसम्बर से २१ जनवरी तक आय में उतार-चढ़ाव सा रहेगा। दाम्पत्य जीवन में नई समस्या उत्पन्न हो सकती है। आवेश में आकर कम लाभ या अपनी हकदारी छोड़ना उचित नहीं है। २२ जनवरी से ७ मार्च तक आप अपनी ही कार्य कुशलता से औरों को प्रभावित करेंगे। नये कार्य की भूमिका बनेगी जो पूर्ण रूप से सफल होगी। विरोधी पक्ष भी गुप्त रूप से आपके गुणों की प्रशंसा करेंगे। ८ मार्च से वर्षोपरान्त तक व्यर्थ की दौड़धूप व आय से खर्च ज्यादा रहेगा। कोई वस्तु खोई जा सकती है ध्यान रखें। विशेष कार्य निपटाने में रुकावटे आने से परेशानी रहेगी।

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

परिलेखकर्ता- *श्री अखिलेश कुमार जैन,* पोरसा वाले

मार्च २००७

१ मार्च से ११ मार्च के बीच सरसों, अरण्ड, अलसी कडी, बिनौला तेल में भारी मंदी, तो ११ मार्च से २३ मार्च के बीच, तेल तिलहन में अच्छी तेजी, गुवार, कलौंजी में तेजी, चावल, हल्दी में तेजी आ सकती है तो २३ मार्च से २९ मार्च तक तेलों में एक बार अच्छी मंदी का झटका लग सकता है। २१ फरवरी २००७ से ५ अप्रैल के बीच लौंग, कालीमिर्च २७०७, हल्दी, धनियां, जीरा में तेजी आ सकती है। ७ से १८ मार्च तक चना में तेजी आ सकती है। गत् वर्ष के चना भाव जो ३३०० वाले नीचे में १४०१ और ऊँचे में २५०० फिर घटकर दो वर्ष में १२७५ के भाव रह सकते हैं। पिपरमेंट एक बार २१ जनवरी २००६ को ग्वालियर मण्डी में जो ९३५ के भाव थे वो एक बार कभी १२७५ या १६९९ रुपये/किलो के भाव होकर वापिस ३५५ के भाव रह सकते हैं। मूँग ४३०० वाली एक बार ११००-१२०० के भाव रह सकते हैं। जीरा नीचे से ६५-७५ ऊपर में ढाई साल में २११, सौंफ ९० वाली २५-३० रुपये रह सकती हैं। सन् २०१० में सूखा पड़ने की संभावना है। दालचीनी नीचे में ७५ रुपये/किलो व तीन साल में २७५ रुपये/किलो होने की संभावना है। गत् वर्ष काली मिर्च ७०-७५ रुपये/किलो वाली १२५ रुपये/किलो हो गयी। तीन वर्ष में कभी भी ३०१ से ५०१ होने की संभावना है। २५ अक्टूबर २००७ तक के बीच कभी भी चाँदी के नीचे भाव ८४९९ से ९२५५ रह सकने की संभावना है व सोना १२००० रुपये/तोला वाला ७५००-८१०० के नीचे भाव टच होने की संभावना है।

अप्रैल २००७

२० मार्च से १९ अप्रैल तक सींगदाना तेल २९९ की भड़कती तेजी, सरसों १५९, अलसी १९९, सोयाबीन तेल में तेजी आकर फिर बाद में मंदी आयेगी। १९ अप्रैल से ७ मई के बीच सरसों, तिल, अलसी, अरण्ड, कैस्टर, सोयाबीन, बिनौला में भारी मंदी आ सकती है। ५ अप्रैल से ५ मई तक लौंग में ३५ से ६५ की भारी तेजी आ सकती है। ११ मई से २१ मई तक मंदी, २७ मई तक तेजी आकर, १५ जून लौंग में जोरदार मंदी चल सकती है। १ से ७ अप्रैल तक चना में ४५ की, मसूर ६५, अरहर ४५ की मंदी तो २१ अप्रैल तक चना में ६५ की तेजी, अरहर ४५ की तेजी आ सकती है। २१ अप्रैल से ७ मई तक चना में ८५ की मंदी, अरहर, मस्टर लेंटिल में ६५ की मंदी चल सकती है। ३ से १६ अप्रैल तक चावल ७५ , जौ ४५, बाजरा २५, मूंग ४५ मंदी तो पिस्ता ३६, शक्कर ७५, तेल अरण्ड १०५ की भड़कती तेजी आ सकती है। ७ से ११ अप्रैल तक काली मिर्च २०५ तेज, सुपारी २०५ की मंदी, डालडा, तेल, बिनौला में भारी तेजी आ सकती है। ११ से २३ अप्रैल तक सौंठ ३०६ की तेजी, लाल मिर्च ५०५ की तेजी, सूजी २५ तेजी, तो २३ से ३० अप्रैल तक भारी मंदी चल सकती है। मगर हल्दी, जीरा में तेजी आ सकती है। १९ अप्रैल से १ मई तक, गुड़ ७५, चीनी ७५ की मंदी, किशमिस ४०५ की जोदार मंदी चल सकती है। इसके साथ साथ मूंग, उड़द में मंदी का दौर चल सकता है।

मई २००७

२७ अप्रैल से ४ मई तक या १२ मई तक तेल, तिलहन में भारी मंदी का झटका एक बार कभी भी आ सकता है। १६ से ३१ मई तक अरण्ड, अलसी, सरसों में तेजी आ सकती है। २९ मई से ११ जून के बीच तेलों में भारी मंदी आ सकती है। २३ अप्रैल से ११ मई के बीच कभी भी गोला २७५ की भड़कती तेजी, अरहर ७५, मक्का ३५, हल्दी में तेजी बन सकती है। १ से १५ मई तक चीनी ६५, गुड़ ५५ की तेजी आ सकती है। २७ अप्रैल से ५ मई तक सरसों ७५ की मंदी तो १ से १६ मई तक धनिया २०५ की मंदी, सोयाबीन तेल ६५ मंदी, मगर तिल २५० तेज, इमली १५५ बादाम ९९, चना ७५ तेजी, मसूर ५५ आ सकती है। ३ से १५ मई तक जौ ६५, गेहूं १९, गुड़, काली मिर्च ५००, मक्का ४५, गोला ५०१ तेज, इमली ५०५ की भड़कती तेजी, किशमिस ५०५, जीरा ५०५ की तेजी बन सकती है। १५ से २१ मई तक तिल तेल ५००, मसूर ६५, चावल ७५, काली मिर्च में ९०५ की भड़कती तेजी तो उड़द,मूंग में भारी मंदी आ सकती है। ११ से २३ मई के बीच जीरा, लाल मिर्च में मंदी का झटका लग सकता है। गेहूं ३५, चीनी में तेजी बन सकती है। २१ से ३१ मई के बीच कभी भी हल्दी ५०५ , पिस्ता २५, चावल ५५, सोयाबीन ७०७ तेजी आ सकती है। २३ से २९ मई तक गेहूं, चीनी ४५, जावित्री, उड़द में १७५, मोठ २०५, मूंग २९९ की जोरदार मंदी चल सकती है। २१ से ३१ मई तक पिस्ता ५५, राजमां १७५, इमली ५५१, चावल २५ तेजी तो मसूर ४५, अमचूर ९९९ की जोदार मंदी चल सकती है।

जून २००७

१९ मई से ३ जून के बीच सरसों ९९ की मंदी, ३ जून से ११ जून तक सरसों, फली तेल में तेजी, तो १८ जून तक मंदी आयेगी। २१ जून से १५ जुलाई के बीच फली तेल ३७७ की भड़कती तेजी, सरसों २७५, अरण्ड २०५ की तेजी आ सकती है। २५ मई से ७ जून के बीच हल्दी ५०७, गेहूं ५५, टरमरिक ५०७, उड़द, मूंग में मंदी चल सकती है। २७ मई से ५ जून तक चना ६५, इमली, मसूर में मंदी चल सकती है। १ से १५ जून के बीच सौंठ १५९९ की तेजी (१०० किलो पर होगी), लालमिर्च ७०७, अरहर पिगन पी २९९, मसूर १८७, किसमिश ५०५, इमली ५०५, चीनी ९९, गुड़ १०५ की तेजी आ सकती है मगर सोयाबीन डी ओ सी ४०५ की मंदी आ सकती है। ११ से १८ जून तक जीरा ५०५ की मंदी का झटका लग सकता है। ९ से २५ जून तक गेहूं, दड़ा ६५, अरहर में ९९ की भड़कती तेजी, इमली २०५, हल्दी ११९९ तेजी, अमचूर ९०९, चीनी ६५, सौंठ २७२७ की तूफानी तेजी, चावल, मटर १९९, काबली चना में तेजी आ सकती है। कालीमिर्च, लाल मिर्च में मंदी आ सकती है। २३ जून से १ जुलाई के बीच जीरा ७०७, कालीमिर्च ५०५, अरहर ७७, गेहूं ५५ की तेजी आ सकती है मगर उड़द, मूंग में मंदी चल सकती है। २३ से २९ जून तक चीनी ४५, खोपरा गोला ९९, राजमां में मंदी तो सौंठ ५००-७०७, अमचूर ९९९ की भड़कती तेजी, गुड़ ७१ की तेजी आ सकती है।

जुलाई २००७

२३ जून से ३ जुलाई २००७ तक फली तेल में १३६ की प्रचण्ड तेजी, सरसों ७७, सोयाबीन आदि में अच्छी तेजी, तो ९ जुलाई तक मंदी का झटका, तो ११ से १८ जुलाई तक सरसों फली तेल, अलसी, अरण्डी १७५ की भीषण तेजी, २० से २९ जुलाई तक फली तेल १७५, सरसों १५५ तथा अलसी, अरण्ड में अच्छी मंदी। २९ जुलाई से ७ अगस्त तक सरसों, सोयाबीन तेल में अच्छी तेजी आ सकती है। १ से ११ जुलाई तक गुड़ ७५, उड़द ७५, तेल गोला ५५, अरहर ७५, गेहूं ७७, मक्का ५५, काबली चना ५५, सोयाबीन ६०५ की जोरदार तेजी, जीरा २०५, सौंठ, चना ७९, हल्दी ५०५ की तेजी। चावल ३६ की मंदी, मसूर ५५ की मंदी आकर ७ से १८ जुलाई तक मसूर में ९९ की जोरदार तेजी आ सकती है। ३ से १५ जुलाई तक सौंठ, बादाम, खोपरा गोला, अरहर, तिल २५०, काली मिर्च १९०९ की भड़कती तेजी, किशमिस में अच्छी तेजी आ सकती है। ११ से १८ जुलाई तक इमली ९९ तेज, बादाम २०५ मंदी, धनिया, हल्दी, काली मिर्च में तेजी बन सकती है। खोपरा गोला ५५१ की जोरदार मंदी आ सकती है। १२ से २१ जुलाई तक सोयाबीन डीओसी ४०५ मंदी मगर लाल मिर्च में ५०७ तक तेजी आ सकती है। १५ से २७ जुलाई तक, अरहर, मसूर, मूंग, गेहूं, मक्का, मौंठ, चना में मंदी आ सकती है। २१ से ३१ जुलाई तक धनिया ५०५, इमली में मंदी आ सकती है।

अगस्त २००७

१ से ७ अगस्त तक तेलों में तेजी तो १५ अगस्त तक फली तेल ११५, सरसों ४५, सोयाबीन तेल १२१ की मंदी। १५ से २३ अगस्त तक फली तेल १६५, सरसों ७७ तेज, अलसी, अरण्डी, सोयाबीन में तेजी बनने की आशा है। २३ अगस्त से सितम्बर के मध्य तेलों में अच्छी मंदी चल सकती है। २५ जुलाई से ५ अगस्त के बीच सोयाबीन डी ओ सी ११०९ की जोरदार मंदी, मूंग २९९, उड़द ७५, काबली चना २५५ मंदी तो अमचूर में ७०७ की मंदी, छोटी इलायची में मंदी तो इमली ५०५ तेज, हल्दी ३०६, किशमिस ५०५, गुड़ ७७ तेजी आ सकती है। १५ से २१ अगस्त तक सोयाबीन डी ओ सी २०५, गेहूं २५, मक्का ३५, जई ६५, जौ ५९ मंदी। बादाम ९९ तेज, जीरा ९०५ तेज, हल्दी ७०७ की भड़कती तेजी आ सकती है। २१ अगस्त से २९ अगस्त के बीच कभी भी अरण्ड तेल में ४०७ की भारी तेजी बन सकती है। २१ अगस्त से १ सितम्बर २००७ के बीच उड़द ९१ तेजी, चीनी ७५ तेजी, सोयाबनी १०९९ की तूफानी तेजी, कालीमिर्च ९०९ की तेजी, गुड़ ७५ तेज, गेहूं ३५ तेज, अरहर ६५ तेजी, मसूर में ९५ तेजी मक्का में २५ की तेजी बन सकती है। १६ अगस्त से ७ नवम्बर तक तेलों में धमाके की मंदी आ सकती है।

सितम्बर २००७

२५ अगस्त से २१ सितम्बर के बीच अरण्ड १७५ तेज, जीरा ३९७५ की भारी तेजी, कलौंजी ९०९, लहसुन २५७७ की तूफानी तेजी, लाल मिर्च २७९९ तेज, चावल ६५ तेज, जौ ६५ की तेजी आ सकती है। ८ से १६ सितम्बर के बीच, जौ-जई, सरसों २७७ की भारी तेजी, बाजरा ५५ तेजी, गेहूँ ७७ तेज, हल्दी ११७७ की तेजी आ सकती है। २५-९-२००७ से ११-१०-२००७ के बीच मूंग, मक्का, बाजरा, गेहूँ, उड़द, सोयाबीन, चीनी में भारी मंदी का धमाका हो सकता है।

अक्टूबर २००७

१ से १५ अक्टूबर के बीच मूँगफली तेल ७०७ की भारी मंदी, मक्का, ज्वार, बाजरा ४५ मंदी, पिस्ता ५५ की मंदी, जीरा ११९९ की मंदी, मगर मगज तरबूज १४०१, कलौंजी, लहसुन, राजमा, बादाम, बड़ी इलायची में भारी तेजी आ सकती है। १६ से ३१ अक्टूबर तक सोयाबीन डीओसी ७०७ की भारी तेजी, लौंग १७५, मैदा १७५ तेज, तो मगज तरबूज, चीनी, जौ, गुड़ में भारी मंदी। गुवार में भारी मंदी आ सकती है। १८ से २५ अक्टूबर तक फली तेल, सोयाबीन ७५ मंदी, उड़द ३७७ जोरदार मंदी चल सकती है।

नवम्बर २००७

२७ अक्टूबर से ११ नवम्बर के बीच सरसों २७७ तेज, लहसुन में तेजी, अरण्डी १७५, सोयाबीन तेल २०७ तेज, बिनौला तेल १६१ की भारी तेजी आ सकती है। २५ अक्टूबर से १६ नवम्बर के बीच उड़द ३०५ तेजी, मगज तरबूज २५७५ तेज, बाजरा-मक्का, काली मिर्च ३९९९ की भारी तेजी, बड़ी इलायची, छोटी इलायची में तेजी आ सकती है। १५ से ३० नवम्बर तक गुवार, पिपरमेंट में भारी मंदी। सोयाबीन डोओसी, उड़द, मूँग, राजमा में मंदी, तेलों में घटबढ़ से मंदी चल सकती है तो चीनी, सौंठ ७०७, कलौंजी, लहसुन में तेजी बन सकती है। ११ नवम्बर से ५ दिसम्बर के बीच बड़ी इलायची, लहसुन में तेजी आ सकती है। १७ अक्टूबर से १५ नवम्बर के बीच काली मिर्च में अच्छी तेजी आ सकती है।

दिसम्बर २००७

३ से ११ दिसम्बर तक सरसों, अरण्ड, अलसी, सोयाबीन, करडी तेलों में भारी तेजी तथा काबली चना, चावल, जावित्री, बाजरा, लहसुन में अच्छी तेजी आ सकती है। २७-१०-२००७ से ५ जनवरी २००८ के बीच तिल ९९९ की भारी तेजी आ सकती है। पोस्तादाना, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, चीनी, बाजरा, मक्का में तेजी। १५-१२-२००७ से २७ जनवरी २००८ के बीच सरसों २७७ की तूफानी मंदी, मूँगफली तेल ९९९ की तूफानी मंदी का दौर चल सकता है। २१ दिसम्बर २००७ से १ जनवरी २००८ के बीच जौ-जई में तेजी आ सकती है।

जनवरी २००८

२५ दिसम्बर २००७ से ११ जनवरी २००८ तक तिल ५०५ की भारी तेजी, बिनौला, अरण्ड, सोयाबीन में अच्छी तेजी आ सकती है। तो १५ जनवरी से ५ फरवरी तक अलसी, अरण्ड, सरसों में भयंकर मंदी का दौर चल सकता है। २७ दिसम्बर २००७ से ७-१-२००८ के बीच गुड़, सौंठ में भारी मंदी तो छोटी-बड़ी इलायची, गेहूँ, जावित्री में अच्छी तेजी चल सकती है। साथ लहसुन में तेजी आकर बाद में लहसुन में जोरदार मंदी चल सकती है। ३

से १५ जनवरी तक सोयाबीन डी ओ सी २०७ की मंदी चल सकती है। ३ से ३१ जनवरी तक मक्का ६५ तेज, पिस्ता ७५ खोपरा गोला, पोस्तादाना, बड़ी इलायची में भारी तेजी आ सकती है। ११ जनवरी से ५ फरवरी तक बाजरा, बादाम, ज्वार १२१, छोटी-इलायची में ७५ की भारी तेजी तो पिपरमेंट में मंदी आ सकती है।

फरवरी २००८

५ से ११ फरवरी तक फली, तेल, बिनौला तेल, अरण्ड में भारी तेजी तथा इसके साथ काली मिर्च १५७५ की भारी तेजी, जायफल, जावित्री, मगज तरबूज में अच्छी तेजी तो लहसुन में भारी मंदी का दौर चल सकता है। ३ फरवरी से १५ फरवरी तक मूंग, उड़द में तेजी, सोयाबीन ७७७ की भयंकर मंदी, किसमिस, गुड़ में मंदी आ सकती है। गुवार, पिपरमेंट में मंदी आ सकती है। ११ फरवरी से १८ मार्च तक कालीमिर्च, जीरा, लौंग, बड़ी इलायची में अच्छी तेजी आ सकती है।

मार्च २००८

२१ फरवरी से ९ मार्च के बीच कभी भी अरहर ४५ तेज, उड़द ९५, गेहूँ ४५ तेज, जीरा ९०५ की भारी तेजी तो इमली, सौंठ, अरण्ड, गुवार में जोरदार मंदी आ सकती है। २३ मार्च से १ अप्रैल के बीच बड़ी इलायची, जीरा, काली मिर्च, तिल, अरण्ड में भारी तेजी आ सकती हैं। ९ मार्च या १५ मार्च से २९ मार्च तक, अलसी, अरण्ड, सोयाबीन तेल, गुवार में भारी तेजी चल सकती है।

अप्रैल २००८

२३ मार्च से ९ अप्रैल के बीच गुवार ३०७ की भारी तेजी, मूंग ३०७, बाजरा, मक्का, गेहूं में भारी तेजी आ सकती है। मगर अरहर, इमली में मंदी तो ज्वार, मक्का ४५, गेहूं देशी ७५, मूंग ३०७, रुई में तेजी आ सकती है। २५ मार्च से १५ अप्रैल तक काली मिर्च, जीरा, गुवार, चावल, चांदी में तेजी आ सकती है।

तिलहन गोल्डन चांस

(१) १५ मार्च २००७ से ७ दिन पूर्व या १७ दिन बाद तक, सरसों हापुड़, तेल सोयाबीन इन्दौर में, बम्बई फलीतेल, बिनौलातेल में जोरदार तेजी चलने की संभावना है। मगर ७ मार्च के आसपास नीचे भाव हो तो आगे ११ दिन में तेलों व तिलहन में अच्छी तेजी आयेगी। मगर बाजार लाइन जैसे चल पड़े तो ५-७ दिन में व्यापार करके व्यापार से लाभ लेवें।

(२) २५ मार्च २००७ के आसपास २-३ दिन बाजार जोरदार चलेंगे। (३) १९-१२-२००७ (४) १५ फरवरी २००८ (५) २३ अगस्त २००८, (६) २१-१०-२००८ उपरोक्त लिखी विधि को उपयोग में लावें व नीचे और ऊंचे तेल के बाजार टच भी होने की संभावना है। उसके बाद लाइन बदल कर चलेगी।

खाद्य तेलों के स्पेशल चांस

१) १९ जनवरी २००७ से ५ फरवरी तक तेलों में भयंकर मंदी नीचे के भाव। २) ३ मार्च २००७ से १५-३-२००७ एडिबल ऑयल में कोई इकतरफा जोरदार झड़पी लाइन चलेगी। ३) ११ मई से २१ जून २००७ तक सरसों, एरण्ड, सोयाबीन में तूफानी चाल निकल सकती है। ४) ५ अगस्त २००७ से १६ अगस्त के बीच, ५) ७-९-२००७ से १९ सितम्बर तक तेलों में भयंकर मंदी आयेगी। ६) ३ या २३ जनवरी से ७ फरवरी २००८ तक तेल मंदी। ७) ३ मार्च से २००८ से ९ मार्च तक मंदी। ८) २९ अप्रैल २००८ से २७ मई २००८। ८) ७ जून से १८ जून २००८ तक, नीचे या ऊंचे बाजार टच हो सकते हैं। १०) ११ अगस्त से २३-८-२००८ तक कोई लाईन निकलेगी। ११) १५ जनवरी २००९ से ११ मार्च २००९ तक कोई लाईन निकल सकती है।

शेयर्स मार्केट

इंडेक्स बी.एस.ई. शेयर्स २९-४-२००३ को २९०९ था वो ११ मई २००६ को १२६७१ होकर जुलाई में ८९५०, यानी ३६०० प्वाइंट की मंदी होकर पुन: अक्टूबर २००६ में १२५७५ हो गया है। आशा है कि १२ फरवरी २००८ के बीच कभी भी इंडेक्स १७७७७ होकर वापिस ४९९९ के नीचे के स्तर को छूने की संभावना है। बीच में २५००-३८११ प्वाइंट भयंकर गिरावट भी हो सकती है। सावधानी से व्यापार करें।

१. २७ दिसम्बर २००६ से २३ जनवरी २००७ के बीच रिलायंस में ४५ की मंदी। ए.सी. सी. ४१ की मंदी, बी.एस.ई. इंडेक्स में ३७५ प्वाइंट की गिराबट आ सकती है। अथवा ये मंदी १८ फरवरी २००७ तक चल सकती है। बी.एस.ई. इंडेक्स में ७९९ प्वाइंट की जोरदार गिरावट आ सकती है।

२. २१ फरवरी २००७ से ७ मार्च २००७ तक, इंडेक्स में ३९९ प्वाइंट की भारी तेजी, रिलायंस इण्डस्ट्रीज में ४७ तेजी, ए.सी.सी. ५५ तेजी बनने की संभावना है। ७ से १५ मार्च २००७ तक शेयर्स मार्केट में भारी मंदी का झटका लग सकता है। १५ मार्च २००७ से ५ अप्रैल तक बी. एस.ई. इंडेक्स में ७८९ प्वाइंट की भारी तेजी आ सकती है। ५ अप्रैल २००७ से २१ अप्रैल तक रिलायंस शेयर ६५ की जोरदार मंदी, फिर बाजार लाईन जैसी चले वैसा ही व्यापार करें।

३. २३ अप्रैल २००७ से ५ मई तक शेयर्स मार्केट में तेजी का उछाला तो ९ तक मंदी तो १० मई २००७ से १८ मई तक रिलायंस शेयर्स २५ तेजी, ३१ मई तक ए.सी.सी. ४५ की मंदी बन सकती है। ३ जून २००७ से १ जुलाई के बीच, ए.सी.सी. ६५ तेज, रिलायंस १२५ तेज, इंडेक्स ३७७ प्वाइंट की बढ़ोतरी हो सकती है। बाजार रुख देखकर सदैव व्यापार करें। ७ जुलाई से २९ जुलाई के बीच कभी भयंकर मंदी का झटका लग सकता है। अथवा ये मंदी ९ अगस्त २००७ तक चल सकती है। ९ अगस्त २००७ से २७ अगस्त तक शेयर्स मार्केट में भारी तेजी २७ से ५ सितम्बर तक भारी मंदी आ सकती है।

४. ५ सितम्बर से ११ अक्टूबर २००७ के बीच ए.सी.सी. ७५ तेज, रिलायंस शेयर्स ८७ तेजी आ सकती है। तो ११-१०-२००७ से ७ नवम्बर २००७ तक भारी मंदी बी.एस.ई. इंडेक्स

७९९ प्वाइंट की भारी गिरावट का दौर चल सकता है।

५. ७ नवम्बर से ३१ दिसम्बर २००७ तक बी.एस.ई. इंडेक्स में ५७९ प्वाइंट की भारी तेजी आ सकती है। फिर यदि मंदी चले तो मंदी का व्यापार करें।

६. १ जनवरी २००८ से १७ जनवरी २००८ तक रिलायंस शेयर्स ३५ की मंदी तो २२ तक तेजी, २३ जनवरी २००८ से १९ फरवरी तक मंदी, १९ फरवरी २००८ से ३ मार्च तक तेजी, ७ मार्च तक मंदी, ९ मार्च २००८ से १५ मार्च तक तेजी, १५ मार्च से १ अप्रैल तक मंदी तो ३ अप्रैल २००८ से २१ अप्रैल २००८ तक, बी.एस.ई. इंडेक्स ३७७ प्वाइंट की भारी तेजी बन सकती है तो ७ मई तक मंदी आने की संभावना है।

७. क्रूड ऑयल अमेरिकन जो कभी अगस्त २००६ में ७५-७८ डालर के प्रति बैरल के भाव थे। वो १५-११-२००७ या १५-३-२००८ तक २९ से ३३ डालर के नीचे स्तर के भाव क्रूड ऑयल प्रति बैरल के रह सकते हैं। अत: सोनी-चांदी, पेट्रोल, डीजल के भाव एक बार जोरदार रूप से घट सकते हैं। सावधानी से बाजार रुख देखकर व्यापार करें।

८. तिल में नीचे में २३९९ ऊंचे में डेढ़ साल में कभी भी तिल ४५४५ से ५०१५ के टॉप भाव बन सकते हैं।

गुवार सीड में तेजी मंदी की इकतरफा लाइनें

९ फरवरी २००७ तक, ३९९ की गुवार में जोरदार मंदी तो ५ मार्च २००७ तक घटबढ़ से तेजी तो ९ मार्च तक गुवार में मंदी, ९ मार्च २००७ से १५ मार्च तक एकदम तेजी तो २५ मार्च २००७ के बीच गुवार २५५ से ७७९ की जोरदार मंदी, २५ मार्च से ७ अप्रैल २००७ तक, तेजी फिर जैसा बाजार चले वैसा ही व्यापार करें। ९ अप्रैल से १५ अप्रैल तेजी तो १५ अप्रैल से २१ अप्रैल मंदी। ७ मई २००७ से २१ मई तक गुवार में प्रचण्ड मंदी तो २३ मई तक तेजी बन सकती है।

क्रूड ऑयल तेजी मंदी (प्रति बैरल)

(१) ११ दिसम्बर २००६ से ३ जनवरी २००७ के बीच क्रूड ऑयल में ९ डालर प्रति बैरल में मंदी घटे तो २३ जनवरी २००७ तक घटे भाव एकदम बढ़ने की संभावना है। तो ३ फरवरी २००७ तक ७ डालर की मंदी आ सकती है।

(२) ३ फरवरी से १५ मार्च २००७ या ११ मई २००७ तक क्रूड ऑयल में १५ की जोरदार तेजी चल सकती है। १५ मार्च २००७ से ५ अप्रैल के बीच जोरदार मंदी आ सकती है। ५ अप्रैल से २५ अप्रैल या १५ जून २००७ तक क्रूड ऑयल में १०-२५ डालर की भारी तेजी बाद में अधिकतर अमेरिकन क्रूड ऑयल में मंदी आवेगी।

(३) २७ अप्रैल या २० जून २००७ से १५-२० दिन में कोई इकतरफा लाइन जैसी चले वैसा ही व्यापार करें। १५ जुलाई से २१ अगस्त २००७ के बीच भारी तेजी तो २० सितम्बर २००७ तक जोरदार मंदी चल सकती है।

(४) २० सितम्बर से २७ अक्टूबर २००७ तक, क्रूड ऑयल में भारी तेजी या मंदी चले तो मंदी का व्यापार करें। २७ अक्टूबर से ११ दिसम्बर २००७ तक भारी मंदी चल सकती है।

(५) १५ दिसम्बर २००७ से २१ मार्च २००८ तक, क्रूड ऑयल अमेरिकन के तेलों में २५ डालर/प्रति बैरल की भारी तूफानी तेजी, तो २१ मार्च से ११ मई २००८ तक २५-३१ की भारी मंदी, ११ मई से ३१ अगस्त २००८ तक २१-३३ की भारी तेजी तो ३१ अगस्त से ५ नवम्बर २००८ तक में भारी मंदी आ सकती है।